हृदन्तरज्ञान-तमा-पिधान-निवारणं ... मण्डलाङ्घ्रम्। ...कालदर्शि प्रसन्न... चकास्तु॥

MARTANDA

श्री शंकरः शं करोतु



मीमाय व्योमरूपाय शब्दमात्राय ते नमः।
महादेवाय सोमाय अमृताय नमोऽस्तु ते॥

राजा चन्द्र

ॐ

भारतीय एवं पाश्चात्य ज्योतिष के विषयों से अलंकृत

सूर्य

चित्रापक्षीय निरयण, दृक्सिद्ध

वि. सं. २०५१

श्री मार्तण्ड पञ्चाङ्गम्

वि. सं. २०५१, शक सं. १९१६, सन् १९९४-९५
जय हिन्द सं ४७-४८

अखिलभारतोपयोगी

PANCHANGA

पंचांगप्रवर्तकः



दैवज्ञरत्न राजज्योतिषी
स्व. पं. श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य
कुराली (पं.)

मंत्री बुध

पञ्चांगप्रवर्तकः – अनेक ग्रंथों के यशस्वी लेखक स्व० पं० श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

सम्पादक मण्डल : श्री प्रियव्रत शर्मा, M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), साहित्याचार्य (स्वर्ण-रजत पदक प्राप्त)
दृक्सिद्धान्तभास्कर डॉ० शक्तिधर शर्मा M.Sc. Ph.D. (Nuclear Physics), (U.S.A.), F.R.A.S. (LONDON), M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), (तीन स्वर्ण पदक प्राप्त),
ज्योतिर्भूषण श्री इन्दुशेखर शर्मा शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,

स्था. वि. सं. १९८४

नीलम पब्लिशर्स अड्डा टांडा, जालन्धर, ४४५१, नई सड़क, दिल्ली।

वर्ष ६७ वां

मूल्य रु.

इस पञ्चाङ्ग में प्रयुक्त ज्ञातव्य सांकेतिक शब्द

अ.–अस्त, अश्विनी, अनुराधा (नक्षत्र)।
अतिगण्ड (योग), अग्नि (बाण)।
अं.–अंग्रेजी (तारीख, मास), अंश।
आव.–आवश्यकता में।
उ.–उपरान्त, उदित, उत्तर।
उ.गो.–उत्तर गोल।
क.–करण, कर्क, कला।
कृ.–कृष्णपक्ष, कृत्तिका (नक्षत्र)
क्रां. सा.–क्रान्तिसाम्य (महापात)
गोधू.–गोधूलि (लग्न)
घ.–घड़ी।
घं.–घण्टा।
चौ.–चौर (बाण)
ति.–तिथि।
द.–दक्षिण।
द. गो.–दक्षिण गोल।
दा.–दान, पूजन।
दि.–दिन।
दि. मा.–दिनमान।
दि. ल.–दिन का लग्न।
न.–नक्षत्र।
निं.–निम्बार्कों के लिए।
ने.–नेप्च्यून।
नृ.–नृप (बाण)।
प.–पल, परिघ (योग), पश्चिम।
प्र.–प्रविष्टा (पंजाबी तारीख)।
प्रा.–प्रारम्भ।
भ.–भद्रा, भरणी (नक्षत्र)।
भा.–भाद्रपद।
मा.–मार्गी।
मि.–मिनट, मिथुन।
मृ.–मृगशिरा, मृत्यु (बाण)।
या.–यावत् (= तक)।
रा.–रात्रि, राशि।
रो.–रोग (बाण), रोहिणी।
ल.–लग्न।
व.–वक्री, वक्रगति से, वणिक्, वज्र,
वरीयान् (योग)
वा.–वार
वि.–विकला, विष्टि (करण), विष्कम्भ,
विशाखा।
वि. मु.–विवाहमुहूर्त।
वै.–वैष्णवों के लिए, वैधृति (योग)
वैशाख।
व्र. स.–व्रत सबके लिए।
शु.–शुक्लपक्ष, शुक्रवार, शुक्र (ग्रह)
शुभ, शुक्ल (योग)।
श.–भारत सरकार द्वारा संचालित
शक संवत्, तारीख-मास।
स.–समाप्त।
सं.–संक्रान्ति, संवत्।
सां. का.–साम्पातिक काल।
सा.–सायन।
स्मा.–स्मार्तों के लिए।
ल.–लग्न

इस पंचाग के तिथि, नक्षत्र, योग, ग्रह भोगांश और ग्रहों के क्रान्ति-शर की गणित डा. शक्तिधर शर्मा द्वारा विकासित Computer program से की जाती है।

इस पञ्चाङ्ग के लिए आवश्यक निर्देशन

(१) इस पञ्चाङ्ग का निर्माण ग्रीन्विच से पूर्व रेखांश ७६°। ५२′ एवं उत्तर अक्षांश ३०°। ४४′ के आधार पर किया गया है, अत: यहां जहां, विशेष निर्देश न किया गया हो वहां 'सूर्योदय' से हमारा अभिप्राय इसी स्थल के सूर्योदय से रहता है।

(२) यहां सर्वत्र निरयणपद्धति को अपनाया गया है। जहां सायनगणना की गई है, वहां निर्देश कर दिया गया है। चित्रापक्षीय अयनांश प्रामाणिक माने हैं। इस पञ्चाङ्ग में दिए गए अयनांश धूनन-संस्कार-संस्कृत (स्पष्ट) हैं।

(३) तिथि, नक्षत्र एवं करणों के सम्मुख दिए गए घटी-पल उनका सूर्योदय से समाप्तिकाल बतलाते हैं।

(४) इस पंचांग में केवल सूर्योदयव्यापी ही करण लिखे गए हैं, दूसरे नहीं।

(५) चन्द्रसञ्चार वाले कालम में राशियों के साथ दिए गए घड़ी-पल चन्द्रमा के राशिप्रवेश का काल बतलाते हैं।

(६) चंन्द्रसंचार के आगे वाले काल[illegible] सूर्य के उदयास्त, जोकि भा. स्टैं. टा. में हैं, उपरोक्त स्थल के ही हैं। इनका सम्बन्ध सूर्यकेन्द्र से है। ये सूर्योदयास्तकाल किरण-वक्री-भवन संस्कार रहित हैं। प्रत्यक्ष देखने के लिए दो मिनट सूर्योदय में घटाएं एंव सूर्यास्त में जोड़ें।

(७) घड़ी-पलों वाले २४ पक्षों के लस्टर में पंचक-भद्रा की प्रारम्भ-समाप्ति, ग्रहों के उदयास्त, वक्र-मार्ग तथा राशि-नक्षत्र-प्रवेश आदि के सभी काल भी घड़ीपलों में ही हैं। ये घड़ीपल उपरोक्त स्थल के सूर्योदय से बीता काल बतलाते हैं।

(८) पंक्तियों (अष्टमी, पूर्णिमा, अमावस्या) के स्पष्टग्रहों के नीचे दैनिक-गति, उसके नीचे मार्गी या वक्री, उसके नीचे उदित या अस्त, फिर चरण सहित नक्षत्र का (जिस में ग्रह है उसका) निर्देश किया गया है।

(९) पंक्तियों की सभी कुण्डलियां सूर्योदय-कालिक हैं।

(१०) पञ्चाङ्ग की गणित, आचार्यों एवं ऋषियों द्वारा अनुमोदित सूक्ष्म दृक्तुल्य पद्धति द्वारा की गई है।

(११) यहां दिए गए ग्रह एवं शर भूमध्य दृश्य हैं।

(१२) जिस घटीपलात्मक तिथि, योग, नक्षत्र के आगे (६०। ०) लिखा है, उस तिथि योग नक्षत्र की वृद्धि समझें। घण्टामिनटात्मक तिथि, नक्षत्र योग के आगे (. . . . .) ऐसा चिह्न उस तिथि, नक्षत्र, योग की वृद्धि बतलाता है।

(१३) यहां दिया गया भा. स्टैं. टा. (I.S.T.) 82° 30′ पूर्व-रेखांश के स्थल का स्थानीयमध्यमकाल (L.M.T.) है।

(१४) दैनिक लग्न सारणियां चण्डीगढ़ के लिए हैं, ये सारणियां चित्रा-पक्षीय निरयणलग्नों का समाप्तिंकाल (I.S.T.) बतलाती है।

– इस वर्ष के नए रोचक, ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी विषय –

इस वर्ष का विशेष लेख :– –:विदेशों में उत्पन्न जातक का जन्मपत्र बनाएं:–

[भारत से बाहर (विदेश) में उत्पन्न बच्चों की भारतीय पंचांग से जन्मपत्री बनाने की सरलतम प्रक्रिया बतलाने वाला विस्तृत लेख, जिसमें स्पष्टता के लिए अनेकों उदाहरण दिए गए हैं]

काँचीकामकोटिपीठाधिपति जगद्गुरु

श्री शंकराचार्य जी का शुभाशीर्वाद

(मुद्रा)

श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यवर्य्य-श्रीमच्छंकर-भगवत्पाद प्रतिष्ठित- श्री कांचीकामकोटिपीठाधिप-जगद्गुरु-श्रीमच्चन्द्रशेखरेन्द्र- सरस्वती-श्रीपादादेशानुसारेण श्रीमज्जयेन्द्र-सरस्वती-श्रीपादैः क्रियते नारायणस्मृतिः।

श्रीसदाशिवआप्टे-महोदयस्य शिष्यैः श्रीमुकुन्दवल्लभ शर्मभिः प्रवर्तितम् "श्रीमार्त्तण्डपञ्चांगम्" अधुना श्रीप्रियव्रतशर्म-श्रीशक्तिधरशर्म-श्रीमदिन्दुशेखर-शास्त्रिभिःतन्त्रद्वारा शुद्ध-स्फुट-गणित-रीत्या परिशोध्य स्वीकृतया दृग्गणितपद्धत्या सम्पाद्यते। एतत्पञ्चांगं धर्मशास्त्र-सम्मतैकमात्र- दृग्गणितपद्धत्यनुसारि-व्रतपर्वादि-धार्मिक - कृत्यानुष्ठाने धार्मिकैः प्रयोज्यम्-इति सम्मन्यामहे। एतस्य सम्पादकः डॉ. शक्तिधरः शर्मा ज्योतिष-गणितादि-विषयेषु महत्प्रागल्भ्यं भजते, इति अस्माभिः सः सप्रसादं "दृक्सिद्धान्तभास्करः" इति विरुदेन पूर्वमेव सभाजितः। अधुना श्रीमार्त्तण्डपञ्चांगमेतत् स्वर्णजयन्तीमहोत्सवमनुभवत् अशेषास्तिकलोकोपकारकं सत् श्रीचन्द्रमौलीश-कृपया प्रचुरं प्रचारं प्राप्नुयादित्याशास्महे।

काञ्चीक्षेत्रम् नारायणस्मृतिः

अनल चैत्रामावस्या (सन् १९७६ ई.)

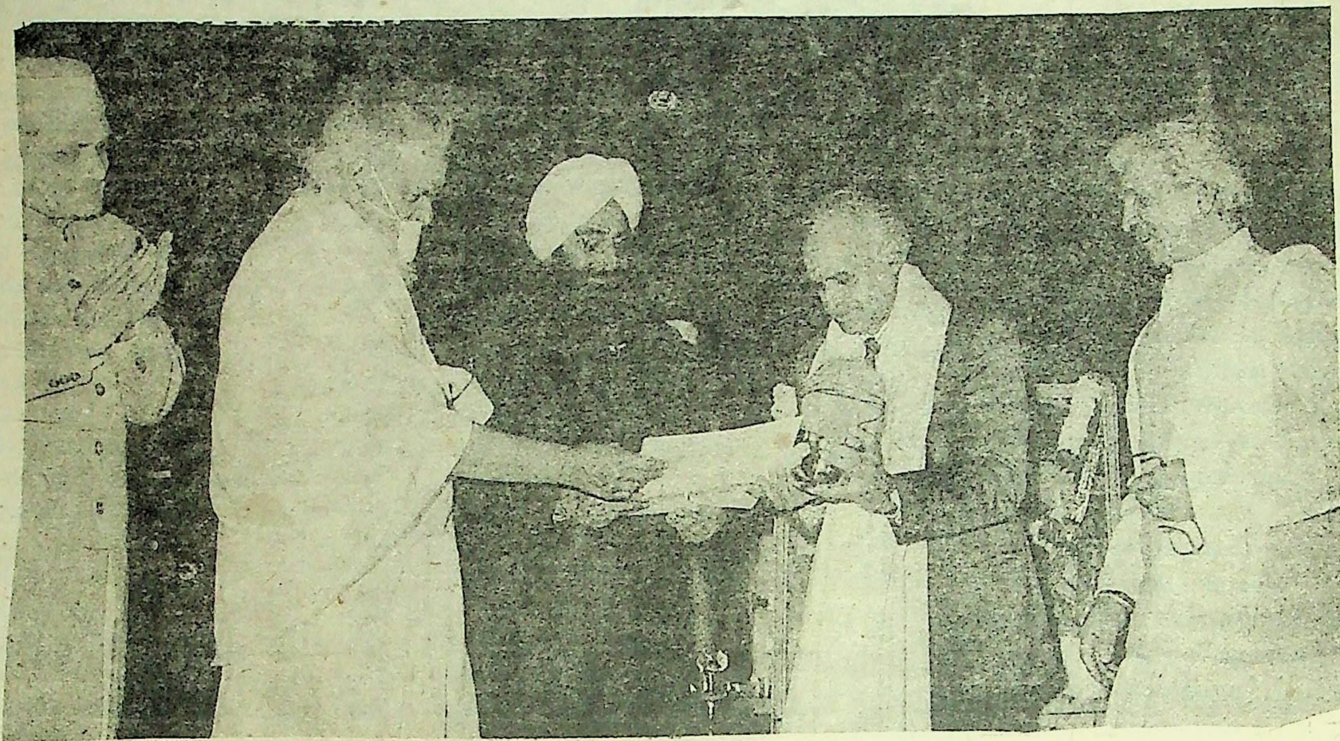
पाठकों से हम क्षमा चाहते हैं

सं. २०५० वि. के. श्रीमार्त्तण्डपंचांग की कुछ प्रतियों में मुद्रक की असावधानी के कारण स्थायी मैटर के कुछ पेज अस्त-व्यस्त हो गए, जिससे पाठकों को असुविधा हुई। एतदर्थ हम उनसे हृदय से क्षमा चाहते हैं। भविष्य में ऐसी गलती न हो-इसके लिए पंचांग के मुद्रण के समय विशेष सावधानी रखने का प्रबन्ध किया गया है।

–सम्पादक मण्डल
'श्रीमार्त्तण्डपञ्चांग'

प्रो. प्रियव्रत शर्मा "ज्योतिष सम्राट्", महाविरुद से अलंकृत

स्व. डॉ. गोस्वामी गिरिधारीलाल की पुण्य तिथि पर १ दिसम्बर १९९२ ई. को "अखिल भारतीय ज्योतिष-स्वाध्याय-संस्थान दिल्ली" द्वारा हिमाचल भवन दिल्ली में आयोजित एक विशाल भव्य समारोह में प्रो. प्रियव्रत शर्मा सिद्धान्तज्योतिषाचार्य, साहित्याचार्य, M.A. सम्पादक "श्री मार्त्तण्ड पंचांग" को उनके त्रिस्कन्ध ज्योतिषसम्बन्धी असाधारण वैदुष्य एवं मौलिक साहित्यसृजन के लिए "ज्योतिष सम्राट्" महाविरुद से अलंकृत कर सम्मानित किया गया। विरुद पत्र भू. पू. राष्ट्रपति श्री ज्ञानीजैल सिंह जी ने अर्पित किया, श्री लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ के उपकुलपति डॉ. श्री मण्डन मिश्र द्वारा उन्हें मंगल कलश, नारियल एवं शाल भेंट किया गया। अलंकरण समारोह में दिल्ली, पंजाब, राजस्थान, म. प्र. और उ. प्र. आदि के विद्वानों के अलावा पत्रकार, एवं राजनीतिज्ञ भारी संख्या में उपस्थित थे।



चित्र में भू. पू. राष्ट्रपति ज्ञानी श्री ज़ैल सिंह जी, जैन मुनि आचार्य श्री सुशील कुमार जी के साथ प्रो. प्रियव्रत शर्मा को विरुद प्रमाणपत्र अर्पित करते हुए। बाई ओर डॉ. मण्डन मिश्र तथा दाई ओर डॉ. गोस्वामी गिरधारी लाल जी के सुपुत्र पं. श्री वेणीमाधव गोस्वामी M.A., डायरेक्टर - "अखिल भारतीय ज्योतिष स्वाध्याय संस्थान दिल्ली" खड़े हैं।

प्रमुख-प्रमुख व्रत-पर्व (१ जन. १९९४ ई. से ३१ मार्च १९९५ ई. तक)

व्रत-पर्व	तारीख १९९४ ई.	वार
भौमवती अमा.	११ जन.	मं.
लोहड़ी पं.	१३ "	गु.
मकर संक्रान्ति	१४ "	शु.
गणतंत्र दिवस	२६ "	बु.
माघ स्नान प्रारंभ	२७ "	गु.
संकष्ट चतुर्थी	३० "	र.
मौनी अमावस	१० फर.	गु.
श्री (बसन्त) पंचमी	१५ "	मं.
रथ सप्तमी	१७ "	गु.
आरोग्य सप्तमी	१८ "	शु.
भीष्माष्टमी	१८ "	शु.
भीष्म द्वादशी	२३ "	बु.
माघ स्नान समाप्त	२५ "	शु.
महा शिवरात्रि	१० मार्च	गु.
शनैश्चरी अमा.	१२ "	श.
होलाष्टक प्रारंभ	२० "	र.
होलिका दहन	२६ "	श.
होली	२७ "	र.
होलाष्टक समाप्त	२७ "	र.
चान्द्रसं. २०५० वि. पूर्ण	१० अप्रै.	र.
चान्द्र सं. २०५१ वि. प्रा.	११ "	चं.
नवरात्र प्रारंभ	११ "	चं.
वैशाखी (पं.)	१३ "	बु.
गौरी तृतीया (गणगौर)	१४ "	गु.
श्री (लक्ष्मी) पंचमी	१६ "	श.
स्कन्द षष्ठी	१७ "	र.
श्री दुर्गाष्टमी	१९ "	मं.
श्रीराम नवमी	२० "	बु.
नवरात्र समाप्त	२० "	बु.
दमनक चतुर्दशी	२४ "	र.
हनुमान् जयन्ती (द.भा.)	२५ "	चं.
वैशाख स्नान प्रारंभ	२५ "	चं.
भौमवती अमा.	१० मई	मं.
श्री परशुराम जयन्ती	१३ "	शु.
अक्षय तृतीया	१३ "	शु.
श्री गंगा जन्म	१७ "	मं.
श्री जानकी जयन्ती	१९ "	गु.

व्रत-पर्व	तारीख १९९४ ई.	वार
श्री बुद्ध पूर्णिमा	२५ मई	बु.
वैशाखी पूर्णिमा	२५ "	बु.
वैशाख स्नान समाप्त	२५ "	बु.
भद्रकाली एकादशी (पं.)	४ जून	श.
वट सावित्री व्रत (अमा. पक्ष)	९ "	गु.
भावुका अमा.	९ "	गु.
श्री गंगा दशहरा	१८ "	श.
निर्जला एकादशी	१९ "	र.
चम्पक द्वादशी	२० "	चं.
वट सावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्ष)	२३ "	गु.
श्री जगदीश रथोत्सव (पुरी)	१० जुला.	र.
कुमार षष्ठी	१४ "	गु.
विवस्वत् सप्तमी	१५ "	शु.
गुरुपूर्णिमा, व्यासपूजा	२२ "	शु.
कोकिला व्रत	२२ "	शु.
शिव शयनोत्सव	२२ "	शु.
हरियाली अमावस	७ अग.	र.
मधुश्रवा, सन्धारातीज	१० "	बु.
नाग पंचमी	११ "	गु.
श्री दुर्गाष्टमी	१४ "	र.
ऋक् उपाकर्म	२० "	श.
रक्षाबन्धन (राखी)	२१ "	र.
यजु उपाकर्म	२१ "	र.
बहुला चतुर्थी	२४ "	बु.
दूर्वाष्टमी व्रत	२९ "	चं.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत	२९ "	चं.
गुग्गा नवमी	३० "	मं.
पिठोरी अमा.	५ सितं.	चं.
कुशोत्पाटिनी अमा.	५ "	चं.
सोमवती अमा.	५ "	चं.
साम उपाकर्म	७ "	बु.
हरितालिका व्रत	८ "	गु.
कलंक चौथ	८ "	गु.
सिद्धि विनायक व्रत	९ "	शु.
ऋषि पंचमी	९ "	श.
सूर्य षष्ठी	११ "	र.
श्री राधाष्टमी	१२ "	चं.

व्रत-पर्व	तारीख १९९४ ई.	वार
श्री महालक्ष्मी व्रत-प्रारंभ	१२ सितं.	चं.
श्रवण द्वादशी व्रत	१५ "	गु.
श्री वामन द्वादशी	१६ "	शु.
श्री अनन्त चतुर्दशी	१८ "	र.
श्राद्ध पक्ष प्रारंभ	२० "	मं.
श्री महालक्ष्मी व्रत समाप्त	२७ "	मं.
श्राद्ध पक्ष समाप्त	५ अक्तू.	बु.
शारद नवरात्र प्रारंभ	५ "	बु.
उपाङ्ग ललिता व्रत	९ "	र
सरस्वती आवाहन	१० "	चं.
सरस्वती पूजन	११ "	मं.
सरस्वती बलिदान	१२ "	बु.
श्रीदुर्गाष्टमी, महाष्टमी	१२ "	बु.
महानवमी	१२ "	बु.
सरस्वती विसर्जन	१३ "	गु.
विजया दशमी (दशहरा)	१३ "	गु.
नवरात्र समाप्त	१३ "	गु.
कोजागर व्रत	१८ "	मं.
शरत् पूर्णिमा	१९ "	बु.
कार्तिक स्नान प्रारंभ	१९ "	बु.
श्री म. बाल्मीकि जयन्ती	१९ "	बु.
करक चतुर्थी (करवा चौथ)	२३ "	र.
अहोई अष्टमी (पं.)	२७ "	गु.
गोवत्स द्वादशी	३१ "	चं.
धन त्रयोदशी	१ नवं.	मं.
नरक चतुर्दशी	२ "	बु.
श्री हनुमान् जयन्ती (उ. भारत)	२ "	बु.
दीपावली	३ "	गु.
अन्नकूट, गोवर्धन पूजा	४ "	शु.
बलि पूजा	४ "	शु.
यम द्वितीया, भाई दूज	५ "	श.
विश्वकर्मा पूजा	५ "	श.
सूर्य षष्ठी	८ "	मं.
गोपाष्टमी	१० "	गु.
कूष्माण्ड नवमी	११ "	शु.
अक्षय नवमी	११ "	शु.
देव प्रबोधनी	१३ "	र.

व्रत-पर्व	तारीख १९९४-९५ ई.	वार
भीष्म पंचक प्रारंभ	१३ नवं.	र
कार्तिक स्नान समाप्त	१८ "	शु.
तुलसी विवाह	१४ "	चं.
वैकुण्ठ चतुर्दशी	१६ "	बु.
भीष्म पंचक समाप्त	१७ "	गु.
कार्तिक स्नान समाप्त	१८ "	शु.
श्री गुरुनानक जयन्ती	१८ "	शु.
श्री काल भैरव अष्टमी	२६ "	श.
श्री गीता जयन्ती	१३ दिसं	मं.
लोहडी (पं) १९९५ ई.	१३ जन.	शु.
मकर संक्रान्ति	१४ "	श.
माघ स्नान प्रारंभ	१६ "	चं.
संकट चतुर्थी	२० "	शु.
गणतंत्र दिवस	२६ "	गु.
सोमवती अमा	३० "	चं.
* अर्धकुंभ (प्रयागराज)	३० "	चं.
तिल चतुर्थी	३ फर.	शु.
श्री बसन्त पंचमी	४ "	श.
रथ सप्तमी	६ "	चं.
आरोग्य सप्तमी	६ "	चं.
भीष्माष्टमी	७ "	मं.
भीष्म द्वादशी	१२ "	र.
माघ स्नान समाप्त	१५ "	बु.
श्री महा शिवरात्रि व्रत	२७ "	चं.
होलाष्टक प्रारंभ	९ मार्च	गु.
होलिका दहन	१६ "	गु.
होली	१६ "	गु.
होलाष्टक समाप्त	१६ "	गु.
चान्द्र सं. २०५१ पूर्ण	३१ "	शु.

*** अर्धकुंभ प्रयाग की स्नान तिथियां**

(१) पौष शुक्ल एकादशी
(२) मकर संक्रान्ति
(३) पौषी पूर्णिमा
(४) माघी अमा
(५) माघ शुक्ल पंचमी
(६) माघ शुक्ल सप्तमी
(७) कुंभ संक्रान्ति
(८) माघी पूर्णिमा

(विशेष विवरण पृष्ठ 8 पर देखें)

वर्गीकृत व्रत-पर्व (१ जन. १९९४ ई. से ३१ मार्च १९९५ ई. तक)

एकादशी व्रत

पोषकृष्ण १९९४ ई.	८ जन.
पौष शुक्ल	२३ "
माघ कृष्ण	६ फर.
माघ शुक्ल	२२ "
फाल्गुन कृष्ण	८ मार्च
फाल्गुन शुक्ल (स्मा.)	२३ "
चैत्र कृष्ण	६ अप्रै.
चैत्र शुक्ल	२२ "
वैशाख कृष्ण	६ मई
वैशाख शुक्ल	२१ "
ज्येष्ठ कृष्ण	४ जून
ज्येष्ठ शुक्ल (स्मा.)	१९ "
आषाढ़ कृष्ण	४ जुला.
आषाढ़ शुक्ल	१९ "
श्रावण कृष्ण	३ अग.
श्रावण शुक्ल	१७ "
भाद्रपद कृष्ण (स्मा.)	१ सित.
भाद्रपक्ष शुक्ल	१५ "
आश्विन कृष्ण	१ अक्तू.
अश्विन शुक्ल	१५ "
कार्तिक कृष्ण (स्मा.)	३० "
कार्तिक शुक्ल	१३ नव.
मार्गशीर्ष कृष्ण	२९ "
मार्गशीर्ष शुक्ल	१३ दिसं.
पौष कृष्ण (स्मा.)	२८ "
सन् १९९५ ई.	
पौष शुक्ल	१२ जन.
माघ कृष्ण	२७ "
माघ शुक्ल	११ फर.
फाल्गुन कृष्ण	२५ "
फाल्गुन शुक्ल	१३ मार्च
चैत्र कृष्ण	२७ "

(स्मा.) = स्मार्त्तों का व्रत। वैष्णवों का व्रत स्मार्त्तों के दूसरे दिन होता है। जिस के आगे "(स्मा.)" नहीं लिखा है, वह व्रत तिथि स्मार्त्त और वैष्णव– दोनों के लिए है।

पक्षों का प्रारंभ

सन् १९९४ ई.	
पौष शुक्ल	१२ जन.
माघ कृष्ण	२८ "
माघ शुक्ल	११ फर.
फाल्गुन कृष्ण	२६ "
फाल्गुन शुक्ल	१३ मार्च
चैत्र कृष्ण	२८ "
चैत्र शुक्ल	११ अप्रै.
वैशाख कृष्ण	२६ "
वैशाख शुक्ल	११ मई
ज्येष्ठ कृष्ल	२६ "
ज्येष्ठ शुक्ल	१० जून
आषाढ़ कृष्ण	२४ "
आषाढ शुक्ल	९ जुला.
श्रावण कृष्ण	२३ "
श्रावण शुक्ल	८ अग.
भाद्रपद कृष्ण	२२ "
भाद्रपद शुक्ल	६ सितं.
आश्नि कृष्ण	२० "
आश्विन शुक्ल	५ अक्तू.
कार्तिक कृष्ण	२० अक्तू.
कार्तिक शुक्ल	४ नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण	१९ "
मार्गशीर्ष शुक्ल	३ दिसं.
पौष कृष्ण	१९ "
सन् १९९५ ई.	
पौष शुक्ल	२ जन.
माघ कृष्ण	१७ "
माघ शुक्ल	३१ "
फाल्गुन कृष्ण	१६ फर.
फाल्गुन शुक्ल	२ मार्च
चैत्र कृष्ण	१७ "

उ. भारत में कृष्णादि और द. भारत में शुक्लादि मासों का प्रचार है।

श्री सत्यनारायण व्रत

सन् १९९४ ई.	
पौष	२७ जन.
माघ	२५ फर.
फाल्गुन	२७ मार्च
चैत्र	२५ अप्रै.
वैशाख	२४ मई
ज्येष्ठ	२३ जून
आषाढ़	२२ जुला.
श्रावण	२० अग.
भाद्रपद	१९ सितं.
आश्विन	१९ अक्तू.
कार्तिक	१७ नवं.
मार्गशीर्ष	१७ दिसं.
सन् १९९५ ई.	
पौष	१६ जन.
माघ	१५ फर.
फाल्गुन	१६ मार्च

अमावस्याएँ

(स्नान-दानार्थ)

सन् १९९४ ई.	
पौष (भौम)	११ जन.
माघ	१० फर.
फाल्गुन (शनै.)	१२ मार्च
चैत्र	१० अप्रै.
वैशाख(भौम)	१० मई
ज्येष्ठ	९ जून
आषाढ़	८ जुला.
श्रावण	७ अग.
भाद्रपद (सोम)	५ सितं.
आश्विन	५ अक्तू.
कार्तिक	३ नवं.
मार्गशीर्ष	२ दिसं.
पौष सन् १९९५ ई.	१ जन.
माघ (सोम)	३० जन.
फाल्गुन	१ मार्च
चैत्र	३१ मार्च

प्रदोष व्रत

सन् १९९४ ई.	
पौष कृष्ण	९ जन.
पौष शुक्ल (भौ.)	२५ "
माघ कृष्ण (भौ.)	८ फर.
माघ शुक्ल	२३ "
फाल्गुन कृष्ण	९ मार्च
फाल्गुन शुक्ल	२५ "
चैत्र कृष्ण	८ अप्रै.
चैत्र शुक्ल (श.)	२३ "
वैशाख कृष्ण (श.)	७ मई
बैशाख शुक्ल	२२ "
ज्येष्ठ कृष्ण (सो.)	६ जून
ज्येष्ठ शुक्ल (भौ.)	२१ "
आषाढ़ कृष्ण	६ जुला.
आषाढ़ शुक्ल	२० "
श्रावण कृष्ण	४ अग.
श्रावण शुक्ल	१८ "
भाद्रपद कृष्ण (श.)	३ सित.
भाद्रपद शुक्ल (श.)	१७ सितं
आश्विन कृष्ण	२ अक्तू.
आश्विन शुक्ल	१६ "
कार्तिक कृष्ण (भौ.)	१ नवं.
कार्तिक शुक्ल (भौ)	१५ "
मार्गशीर्ष कृष्ण	३० "
मार्गशीर्ष शुक्ल	१५ दिसं.
पौष कृष्ण	३० "
सन् १९९५ ई.	
पौष शुक्ल (श.)	१४ जन.
माघ कृष्ण (श.)	२८ "
माघ शुक्ल	१२ फर.
फाल्गुन कृष्ण (सो)	२७ "
फाल्गुन शुक्ल (भौ)	१४ मार्च
चैत्रकृष्ण (भौ.)	२८ "

(सो.) = सोमप्रदोष व्रत
(भौ.) = भौम प्रदोष व्रत
(श.) = शनि प्रदोष व्रत

श्री गणेश चतुर्थी व्रत

सन् १९९४ ई.	
पौष	१ जन.
माघ	३०जन.
फाल्गुन	२८ फर.
चैत्र	३० मार्च
वैशाख	२८ अप्रै.
ज्येष्ठ	२८ मई
आषाढ़	२६ जून
श्रावण	२६ जुला.
भादपद	२४ अग.
आश्विन	२३ सितं.
कार्तिक	२३ अक्तू.
मार्गशीर्ष	२२ नवं.
पौष	२१ दिसं०
सन् १९९५ ई.	
माघ	२० जन.
फाल्गुन	१८ फर.
चैत्र	२० मार्च

संक्रान्तियां

सन् १९९४ ई.	
माघ	१४ जन.
फाल्गुन	१२ फर.
चैत्र	१४ मार्च
वैशाख	१३ अप्रै.
ज्येष्ठ	१४ मई
आषाढ	१५ जून
श्रावण	१६ जुला.
भाद्रपद	१६ अग.
आश्विन	१६ सिंत.
कार्तिक	१७ अक्तू.
मार्गशीर्ष	१६ नवं.
पौष	१५ दिसं.
माघ सन् १९९५ ई.	१४ जन.
फाल्गुन	१२ फर.
चैत्र	१४ मार्च

ऊपर लिखे मास सौर हैं।

दशावतार जयन्तियां

सन् १९९४ ई.	
श्री मत्स्य	१३ अप्रै.
श्री राम	२० "
श्री परशुराम	१३ मई
श्री नृसिंह	२३ "
श्री कूर्म	२४ "
श्री बुद्ध	२५ मई
श्री कल्कि	१२ अग.
श्री कृष्ण	२९ "
श्री वराह	८ सित.
श्री वामन	१६ "

आश्विन कृष्णपक्ष के श्राद्ध

सन् १९९४ ई.	
पूर्णिमा	१९ सित.
प्रतिपदा	२० "
द्वितीया	२१ "
तृतीया	२२ "
चतुर्थी	२३ "
पंचमी	२४ "
षष्ठी	२५ "
सप्तमी	२७ "
अष्टमी	२८ "
नवमी	२९ "
दशमी	३० "
एकादशी	१ अक्तू.
द्वादशी	२ "
त्रयोदशी	३ "
चतुर्दशी	४ "
अमावस	४ "
सर्व पितृ	४ "

क्योंकि आश्विन कृष्ण के सभी श्राद्ध पार्वण हैं, अतः मृत्युतिथि जिस दिन अपराह्ण में व्याप्त होती है, उसी दिन श्राद्ध किया जाता है। केवल उदयव्यापिनी तिथि से इसका निर्णय करना अशास्त्रीय है।

वर्गीकृत व्रत-पर्व (१ जन. १९९४ ई. से ३१ मार्च १९९५ ई. तक)

सिक्ख पर्व

अवतार दिन

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी (१९९४ ई.)	१९ जन.
श्री गुरु हरराय जी	२४ फर.
श्री गुरु तेगबहादुर जी	३० अप्रै.
श्री गुरु अर्जुनदेव जी	२ मई
श्री गुरु अंगद देव जी	११ मई
श्री गुरु अमरदास जी	२४ मई
श्री गुरु हरगोविन्द जी	२४ जून
श्री गुरु हर किशन जी	१ अग.
श्री गुरु रामदास जी	२१ अक्तू.
श्री गुरु नानकदेव जी	१८ नवं.
श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी (१९९५ ई०)	७ जन.
श्री गुरु हरराय जी	१३ फर.

गुरयाई मिली

श्री गुरुहरराय जी (१९९४ ई.)	८ अप्रै.
श्री गुरु अमरदास जी	११ अप्रै.
श्री गुरु तेग बहादुर जी	२४ अप्रै.
श्री गुरु हरगोविन्द जी	१ जून
श्री गुरु अर्जुन देव जी	७ सितं.
श्री गुरु रामदास जी	१७ सितं.
श्री गुरु अंगददेव जी	२५ सितं.
श्री गुरु हर किशन जी	२९ अक्तू.
श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी	५ दिसं.
श्री गुरु हरराय जी (१९९५ ई०)	२९ मार्च

ज्योति ज्योत समाए

श्री गुरु अंगद देव जी (१९९४ ई.)	१५ अप्रै.
श्री गुरु हर गोबिन्द जी	१६ अप्रै.
श्री गुरु हर किशन जी	२४ अप्रै.
श्री गुरु अर्जुन देव जी	१३ जून
श्री गुरु राम दास जी	८ सितं.
श्री गुरु अमरदास जी	१९ सितं.
श्री गुरु नानक देव जी	३० सितं.
श्री गुरु हरराय जी	२९ अक्तू.
श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी	७ नवं.
श्री गुरुतेगबहादुर जी	७ दिसं.

जैन पर्व

आचार्य श्री तुलसी दीक्षा (१९९४ ई.)	२ जन.
जन्म श्री पार्श्वनाथ	७ जन.
मेरु त्रयोदशी	८ फर.
मर्यादा महोत्सव	१८ फर.
आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण	२० अप्रै.
श्री महावीर जयन्ती	२४ मई
श्री महावीर केवल ज्ञान	२० मई
श्री महावीर च्यवन	१४ जुला.
तेरा पन्थ स्थापना	२२ जुला.
चातुर्मास्य प्रारंभ	२२ जुला.
श्री जयाचार्य निर्वाण	२ सितं.
पर्युषण पर्व प्रारंभ	२ सितं.
संवत्सरी महापर्व	९ सितं.
श्रीकालू निर्वाण	११ सितं.
आचार्य श्री तुलसी पट्टारोहण	१३ सितं.
आचार्य भिक्षु निर्वाण	१७ सितं.
श्री महावीर निर्वाण	३ नवं.
जन्म आचार्य श्री तुलसी	५ नवं.
ज्ञान पंचमी	७ नवं.
चातुर्मास्य समाप्त	१८ नवं.
श्री महावीर दीक्षा	२८ नवं.
आचार्य श्री तुलसी दीक्षा	२३ दिसं.
जन्म श्री पार्श्वनाथ	२८ दिसं.
मेरुत्रयोदशी (१९९५ ई.)	२९ जन.
मर्यादा महोत्सव	६ फर.

क्रिश्चियन त्योहार

नया साल (सन् १९९४ ई.) प्रारंभ	१ जन.
गुड फ्राइडे	१ अप्रै.
ईस्टर सण्डे	३ "
क्रिस्मस डे	२४ दिसं.
नया साल (सन् १९९५ ई.) प्रारंभ	१ जन.
गुड फ्राइडे	१४ अप्रै.
ईस्टर सण्डे	१६ "

मासिक शिवरात्रि व्रत

पौष (१९९४ ई.)	१० जन.
माघ	८फर.
फाल्गुन	१० मार्च
चैत्र	९ अप्रै.
वैशाख	८ मई
ज्येष्ठ	७ जून
आषाढ़	७ जुला.
श्रावण	५ अग.
भाद्रपद	४ सितं.
आश्विन	३ अक्तू.
कार्तिक	२ नवं.
मार्गशीर्ष	१ दिसं.
पौष	३० दिसं.
माघ (१९९५ ई.)	२९ जन.
फाल्गुन	२७ फर.
चैत्र	२९ मार्च

मासिक कालाष्टमी व्रत

पौष (१९९४ ई.)	५ जन.
माघ	३ फर.
फाल्गुन	४ मार्च
चैत्र	३ अप्रै.
वैशाख	२ मई
ज्येष्ठ	१ जून
आषाढ़	१ जुला.
श्रावण	३० जुला.
भाद्रपद	२९ अग.
आश्विन	२८ सितं.
कार्तिक	२७ अक्तू.
मार्गशीर्ष	२६ नवं.
पौष	२५ दिसं.
माघ (१९९५ ई.)	२४ जन.
फाल्गुन	२२ फर.
चैत्र	२४ मार्च

महापुरुषों के जन्मदिन

नेताजी सुभाष (१९९४ ई.)	२३ जन.
लाला लाजपत राय	२८ जन.
स्वामी विवेकानन्द जी	२ फर.
श्री रामानन्दाचार्य जयन्ती	२ फर.
श्री गुरु रविदास जी	२५ फर.
महर्षि दयानन्द सरस्वती	१० मार्च
श्री रामकृष्ण परमहंस	१४ मार्च
श्री चैतन्य महाप्रभु	२७ मार्च
श्री बल्लभाचार्य	६ मई
श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर	७ मई
छत्रपति शिवाजी	१२ मई
जगद गुरु शंकराचार्य	१६ मई
श्री रामानुजाचार्य (उ. भा.)	१७ मई
श्री महाराणा प्रताप	१२ जून
लो. मा. बाल गंगाधर तिलक	२३ जुला.
गो. स्वा. तुलसीदास जी	१३ अग.
स्वा. शिवानन्द जी (दिव्य जीवन संघ ऋषिकेश)	८ सितं.
श्री महात्मा गांधी	२ अक्तू.
श्री लाल बहादूर शास्त्री	२ अक्तू.
श्री माध्वाचार्य	१४ अक्तू.
स्वा. रामतीर्थ	२२.अक्तू.
श्री जवाहरलाल नेहरू	१४ नवं.
श्री वीर वैरागी	१५ नवं
भगवान श्री सत् साईं बाबा	२३ नवं.
स्वा. विवेकानंद (१९९५ ई.)	२३ जन.
श्री रामानन्दाचार्य	२३ जन.
नेताजी सुभाष	२३ जन.
लाला लाजपतराय	२८ जन.
श्री गुरु रविदास जी	१५ फर.
महर्षि दयानन्द सरस्वती	२७ फर.
श्री राम कृष्ण परमहंस	३ मार्च
श्री चैतन्य महाप्रभु	१७ मार्च

मुस्लिम त्योहार

१९९४ ई.	
शब-ए-मिराज	१० जन.
शब-ए-बारात	२८ जन.
रमजान का पहला दिन	१२ फर.
शहादत-ए-हजरत अली	४ मार्च
जमतुल विदा	११ मार्च
इदुल फित्र	१४ मार्च
इदुज्जुहा	२२ मई
मुहर्रम (ताज़िया)	२० जून
चेहलम	२९ जुला.
आखिरी-चहार-शम्बा	३ अग.
शहादत-ए-इमाम हसन	७ अग.
ईद-ए-मिलाद	२१ अग.
ईद-ए-मौलाद	२६ अग.
फातिहा यज़दहुम	१८ सितं.
जन्म दिन श्री हजरत अली	१७ दिसं.
शब-ए-मिराज़	३१ दिसं.
(सन् १९९५ ई.)	
शब-ए-बरात	१७ जन.
रमजान का पहला दिन	२ फर.
शहादत-ए हजरत अली	२२ फर.
जमतुल विदा	२४ फर.
शब-ए-कद्र	२८ फर.
इदुल फित्र	३ मार्च

सभी मुस्लिम त्यौहार चन्द्रदर्शन (नया चान्द दिखाई देने) पर निर्भर करते हैं। कई बार स्थानभेद या आकाशीय वातावरण के कारण चन्द्रदर्शन की तारीख आगे-पीछे हो जाने पर इन मुस्लिम त्यौहारों के दिन में एक दिन का अन्तर संभव है।

भारत सरकार के अवकाश (१ जनवरी १९९४ ई. से ३१ मार्च १९९५ ई. तक

सूचना–अवकाश की इस सूची को भारत सरकार के गज़ट की सूची से मिला लेना चाहिए।

इग्लिश नव वर्ष प्रारंभ (१९९४ ई.)	१ जन.	श.
मकर संक्राति	१४ जन.	शु.
पौंगल	१४ जन.	शु.
अवतार दिन श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी	१९ जन.	बु.
गणतंत्र दिवस	२६ जन.	बु.
जन्म श्री गुरु रविदास जी	२५ फर.	शु.
श्री महा शिव रात्रि	१० मार्च	गु.
जमतुल विदा	११ मार्च	शु.
इदुल फित्र	१४ मार्च	चं.
गुड फ्राइडे	१ अप्रैल.	शु.
गुडी पडवा	११ अप्रै.	चं.
वैशाखी (१९९४ ई.)	१३ अप्रैल	बु.
विशु (केरल)	१४ अप्रै.	गु.
श्री राम नवमी	२० अप्रै.	बु.
श्री महावीर जयन्ती (जैन)	२४ अप्रै.	र.
इदुज्जुहा	२२ मई	र.
श्री बुद्ध जयन्ती	२५ मई	बु.
मुहर्रम	२० जून.	चं.
रथयात्रा (पुरी, उडीसा)	१० जुला.	र.
भारत स्वतंत्रता दिवस	१५ अग.	चं.
ओनम् (केरल)	२० अग.	श.
श्री कृष्ण जन्माष्टमी	२९ अग.	चं.
जन्म श्री महात्मा गांधी (१९९४ ई.)	२ अक्तू.	र.
श्री दुर्गाष्टमी	१२ अक्तू.	बु.
श्री महानवमी	१२ अक्तू.	बु.
दशहरा	१३ अक्तू.	गु.
महर्षि वाल्मीकि जयन्ती	१९ अक्तू.	बु.
दीपावली	३ नवं.	गु.
गोवर्धन पूजा	४ नवं.	शु.
भाई दूज	५ नवं.	श.
श्री गुरु नानक जयन्ती	१८ नवं.	शु.
बलिदान दिन श्री गुरुतेग बहादुर जी	७ दिसं.	बु.
जन्म श्री हजरत अली	१७ दिसं.	श.
क्रिसमस डे (१९९४ ई.)	२५ दिसं.	र.
इग्लिश नववर्ष प्रारंभ (१९९५ ई.)	१ जन.	र.
अवतार श्री गुरुगोबिन्द सिंह जी	७ जन.	श.
मकर सक्रान्ति	१४ जन.	श.
पोंगल	१४ जन.	श.
गणतंत्र दिवस	२६ जन.	गु.
जन्म श्री गुरु रविदास जी	१५ फर.	बु.
जमतुल विदा	२४ फर.	शु.
श्री महाशिव रात्रि	२७ फर.	चं.
इदुल फित्र	३ मार्च	शु.

पंजाब, हरियाणा, हि. प्र. व जम्मू-कश्मीर के मेले (१ जनवरी १९९४ ई. से ३१ मार्च १९९५ ई. तक)

(१९९४ ई.)		
लोहड़ी (दाऊँ, बिन्दरख, रोपड़)	१४ जन.	शु.
मुक्तसर (पं.)	१४ जन.	शु.
मस्तुआणां (पं.)	१ फर.	मं.
वसन्त पंचमी	१५ फर.	मं.
श्री महाशिवरात्रि (मंडी, हि. प्र.)	१० मार्च	गु.
होला श्री आनन्दपुर साहब (पं.)	२९ मार्च	चं.
वीरमदास, बघौछी (पटियाला)	२९ मार्च	मं.
गुरु श्री रामराय (देहरादून)	३१ मार्च	गु.
शीतला माता (कुराली, पं.)	३१ मार्च	गु.
पिहोवा (हरि.)	९ अप्रै.	श.
जन्म सन्त श्री बाबा अतर सिंह जी		
नानकसर, चीमा (पं.)	११ अप्रै.	चं.
कसाधा, नहयाणी सह (कुल्लू)	१५-१६ अप्रै.	शु. श.
माईसर खाना (पं.)	१७ अप्रै.	र.
श्री मनसा देवी (चंडीगढ़)	१९ अप्रै.	मं.
बहु फोर्ट (ज. काश्मीर)	१९ अप्रै.	मं.
श्री ज्वालामुखी, हरचोवाल (गुरदासपुर)	१४ अप्रै.	र.मं.
माता कांसा देवी, कांसल (रोपड़)	२४, २५ अप्रै.	र.चं.
मानकपुर शरीफ (पं.)	२६,२७ अप्रै.	मं.बु.
पीपल जातर (कुल्लू) (१९९४ई.)	२८,३० अप्रै.	शु.श.
आनी आऊटर सिराज (कुल्लू) प्रा.	७ मई	श.
पिंजौर (हरि.)	१० मई	मं.
ढूंगरी जातर (मनाली) हि. प्र.	१४, १५ मई	श. र.
बंजार (कुल्लू, हि. प्र.) प्रारंभ	१४ मई	श.
शाढी जातर (नगर, हि. प्र.) प्रा.	१८ मई	बु.
समागम श्री हरिहर घाट (मणिकर्ण)		
प्रारंभ	१९ मई	गु.
समागम श्री हरिहर घाट (मणिकर्ण		
हि प्र.) समाप्त.	२६ मई	गु.
भुन्तर (कुल्लू हि. प्र.) प्रा.	१५ जून	बु.
क्षीर भवानी (काश्मीर)	१७ जून	शु.
श्री गंगा दशहरा (हरिद्वार)	१८ जून	श.
सपोर यात्रा, धारलदा (ऊधमपुर)	१९ "	र.
नमाणी एकादशी (बरहे, बठिण्डा)	१९ जून	र.
पिपलू, ऊना (हि. प्र.)	१९ जून	र
शुद्ध महादेव यात्रा (ऊधमपुर)	२३ जून	गु.
बरही [illegible] सिंह जी		
नानकसर, चीमा (पं.)	९, ११ जुला.	श. चं.
शरीक भवानी (ज. का.)	१७ जुला.	र.
गुरु पूर्णिमा (नदी पार आश्रम, कुराली)	२२ जुला.	शु.
श्री नयना देवी (हि. प्र.)	१४ अग.	र.
श्री चिन्तपूरणी (हि. प्र.)	१४ अग.	र.
श्री अमरनाथ यात्रा (काश्मीर)	२१ अग.	र.
श्री कैलाश यात्रा (काश्मीर) प्रा.	३ सितं.	श.
श्री गोसाई आणां कुराली (पं.)	७ सितं.	बु.
मेलापट्ट (काश्मीर) प्रा.	१० सितं.	श.
श्री वामन द्वादशी (अम्बाला, पटियाला)	१६ सितं.	शु.
छपार (पं.)	१८ सितं.	र.
श्री गोइन्दवाल (पं.)	१९ सितं.	चं.
श्री आशापति यात्रा (ज. का.) प्रा.	४ अक्तू	मं.
श्री ज्वालामुखी, श्रीतारादेवी (हि. प्र.)	१२ अक्तू.	बु.
हरचोवाल (गुरदासपुर)	१२ अक्तू.	बु.
दशहरा (कुल्लू. हि. प्र.) प्रा.	१३ अक्तू.	गु.
श्री शाकम्भरी देवी (उ. प्र.)	१८ अक्तू	मं.
दीपावली (अमृतसर)	३ नवं	गु.
रेणुका (नाहन, हि. प्र.)	१३ नवं.	र.
[illegible] (ऊना, हि. प्र.) प्रा.	१३ नवं.	र.
बालमेला	१४ नवं.	चं.
जन्म श्री वीर वैरागी (नकोदर, पं.)	१६ नवं.	बु.
रामतीर्थ (पं.) (१९९४ई.)	१८ नवं.	शु.
कपाल मोच्चन (हरियाणा)	१८ नवं.	शु.
श्री पुष्कर राज (राज.)	१८ नवं	शु.
पुरमण्डल देविका स्नान (जम्मू)	२ दिसं.	शु.
जोड़ मेला (पं.) प्रां.	२६ दिसं.	चं.
संगीत मेला बाबा हरबलल्भ		
(जालन्धर) प्रारंभ	२७ दिसं	मं.
लोहड़ी, (दाऊं, बिन्दरख) (१९९५ ई.)	१४ जन.	श.
मुक्तसर (पं.)	१४ जन.	श.
मस्तुआणां (पं.)	१ फर.	बु.
वसन्त पंचमी	४ फर.	श.
श्री महाशिवरात्रि मण्डी (हि. प्रा.)	२७ फर.	चं.
होला श्री आनन्दपुर साहेब (पं.)	१७ मार्च	श.
श्री वीरमदास बधोछी (पटियाला)	२१ मार्च	मं.
गुरु श्री रामराय, देहरादून	२१ मार्च	मं.
शीतलामाता, कुराली (पं.)	२३ मार्च	गु.
पिहोवा (हरियाणा)	२९ मार्च	बु.

निवेदन–अपने नगर, ग्राम के प्रसिद्ध लोकप्रिय मेलों की तारीख, तिथियां हमें लिख भेजिए। हम उन्हें इस सूची में समाविष्ट करेंगे–(सम्पादक)

गण्डमूल नक्षत्रों का प्रारंभ और समाप्ति काल (भा. स्टै. टा.)

(१ जनवरी १९९४ ई. से ३१ मार्च १९९५ ई. तक)

प्रारंभ		समाप्त	
१९९४ ई.	घं. मि.	१९९४ ई.	घं. मि.
- -	- -	२ जन.	१३/५९
९ जन.	४/५९	११ जन.	३/१३
१८ जन.	११/१३	२० जन.	१७/१९
२८ जन.	०/९	२९ जन.	२१/३
५ फर	१०/५९	७ फर.	१०/१६
१४ फर	१९/१४	१७ फर	१/२०
२४ फर	१०/१९	२६ फर	६/३७
४ मार्च	१६/२६	६ मार्च	१५/४४
१४ मार्च	२/२४	१६ मार्च	८/२७
२३ मार्च	२०/३०	२५ मार्च	१७/२४
३१ मार्च	२३/२४	२ अप्रै.	२१/४२
१० अप्रै.	८/३८	११ अप्रै.	१९/४१
२० अप्रै.	५/१६	२२ अप्रै.	३/३४

प्रारम्भ		समाप्त	
१९९४ ई.	घं. मि.	१९९४ ई.	घं. मि.
२८ अप्रै.	९/१९	३० अप्रै.	५/४४
७ मई	१४/३८	९ मई	२०/५१
१७ मई	११/५२	१९ मई	११/३०
२५ मई	१९/५९	२७ मई	१५/३८
३ जून	२१/३	६ जून	३/१५
१३ जून	१७/२२	१५ जून	१७/२८
२२ जून	६/६	२४ जून	१/५६
१ जुला.	४/२४	२ जुला	७/२७
१० जुला.	२३/१९	१२ जुला.	२२/५४
१९ जुला.	१४/१३	२१ जुला.	११/३
२८ जुला.	१२/३३	३० जुला.	१८/११
७ अग.	६/५२	९ अग.	५/३३
१५ अग.	२०/१६	१७ अग.	१८/८

प्रारंभ		समाप्त	
१९९४ ई.	घं. मि.	१९९४ ई.	घं. मि.
२४ अग.	२०/४९	२७ अग.	२/९
३ सितं.	१५/५९	५ सितं.	१४/१३
१२ सितं.	१/३९	१३ सितं.	२३/४१
२१ सितं.	४/२६	२३ सितं.	९/४९
१ अक्तू.	१/३८	३ अक्तू.	०/२३
९ अक्तू.	८/२९	११ अक्तू.	५/२८
१८ अक्तू.	११/३	२० अक्तू.	१६/२९
२८ अक्तू.	१०/१९	३० अक्तू.	१०/२५
५ नवं.	१७/५५	७ नवं.	१३/२०
१४ नवं.	१६/५८	१६ नवं.	२२/४२
२४ नवं.	१७/९	२६ नवं.	१८/३८
३ दिसं.	५/१३	४ दिसं.	२३/४१
११ दिसं.	२३/११	१४ दिसं.	४/५६

प्रारंभ		समाप्त	
१९९४.९५ ई.	घं. मि.	१९९४-९५ ई.	घं. मि.
२१ दिसं.	२२/४७	२४ दिसं.	०/४२
३० दिसं.	१६/९	१ जन.	१०/५६
८ जन.	६/४०	१० जन.	११/५४
१८ जन.	४/५५	२० जन.	६/१३
२७ जन.	०/३७	२८ जन.	२०/४३
४ फर.	१५/३१	६ फर.	१९/५४
१४ फर.	१२/३९	१६ फर.	१३/१०
२३ फर.	६/३२	२५ फर.	३/४८
४ मार्च	०/३९	६ मार्च	४/२६
१३ मार्च	२१/४३	१५ मार्च	२२/७
२२ मार्च	१२/१	२४ मार्च	९/१२
३१ मार्च	८/४४		

पंचक प्रारंभ समाप्ति काल (भा. स्टै. टा.)

(१ जनवरी १९९४ ई. से ३१ मार्च १९९५ ई. तक)

प्रारंभ		समाप्त	
१९९४ ई.	घं. मि.	१९९४	घं. मि.
१४ जन.	१५/५२	१९ जन.	१४/१५
११ फर	०/८	१५ फर	२२/१२
१० मार्च	६/४६	१५ मार्च	५/२६
६ अप्रै.	१२/१८	११ अप्रै.	११/४१
३ मई	१८/२७	८ मई	१७/४३

प्रारंभ		समाप्त	
१९९४ ई.	घं. मि.	१९९४ ई.	घं. मि.
३१ मई	२/०	५ जून	००/६
२७ जून	१०/५७	२ जला.	७/१७
२४ जुला.	२०/१५	२९ जुला.	१५/११
२४ अग.	४/४२	२५ अग.	२३/१६
१७ सित.	११/३३	२२ सित.	६/५२

प्रारंभ		समाप्त	
१९९४.९५ ई.	घं. मि.	१९९४.९५	घं. मि.
१४ अक्तू.	१७/१५	१९ अक्तू.	१३/३७
१० नव.	२३/९	१५ नव.	१९/४३
८ दिसं.	६/४९	१३ दिसं.	१/५४
४ जन.	१६/३४	९ जन.	९/२
१ फर.	२/५५	५ फर	१७/२४

प्रारंभ		समाप्त	
१९९५ ई.	घं. मि.	१९९५ ई.	घं. मि.
२८ फर.	११/५६	५ मार्च	२/१४
२७ मार्च	१८/४४	- -	- -

पंचकों में घास, लकड़ी का संग्रह, खाट आदि का बुनना निषिद्ध है। दक्षिणदिशा की यात्रा भी पंचक में नहीं करनी चाहिए।

रविवार कैलेण्डर

१९९४ ई.	रविवार की तारीखें				
जनवरी	२	९	१६	२३	३०
फरवरी	६	१३	२०	२७	- -
मार्च	६	१३	२०	२७	- -
अप्रैल	३	१०	१७	२७	- -

१९९४	रविवार की तारीखें				
मई	१	८	१५	२२	२९
जून	५	१२	१९	२६	- -
जुला.	३	१०	१७	२४	३१
अग.	७	१४	२१	२८	- -

१९९४	रविवार की तारीखें				
सित.	४	११	१८	२५	- -
अक्तू.	२	९	१६	२३	३०
नव.	६	१३	२०	२७	- -
दिस.	४	११	१८	२५	- -

१९९५	रविवार की तारीखें				
जन.	१	८	१५	२२	२९
फर.	५	१२	१९	२६	- -
मार्च	५	१२	१९	२६	- -
अप्रै.	२	९	१६	२३	३०

ग्रहण-विवरण (सं. २०५१ वि.)

प्रियव्रत शर्मा - शक्तिधर शर्मा

इस वर्ष (सं. २०५१ वि. में) भूमण्डल पर निम्नांकित तीन ग्रहण होंगे:–

(१) कंकण सूर्यग्रहण (१० मई, १९९४ ई.)। **(२) खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (२५ मई, १९९४ ई.)।**

(३) खग्रास सूर्यग्रहण (३ नवं, १९९४ ई.)।

ये तीनों ग्रहण भारत में कहीं भी दिखाई नहीं देंगे। इन ग्रहणों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:–

(१) कंकण सूर्यग्रहण (१० मई, १९९४ ई.) :–यह ग्रहण वैशाखी अमा. मंगलवार को १० मई '९४ के दिन उ. अमेरिका तथा अफ्रीका के कुछ भाग में ही देखा जा सकेगा।

(२) खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (२५ मई, १९९४ ई.) :–यह ग्रहण वैशाखी पूर्णिमा, बुधवार को २५ मई '९४ के दिन ग्रीन्लैण्ड, कनाडा, उ. अमेरिका, मैक्सिको, सैण्ट्रल अमेरिका, द. अमेरिका, अफ्रीका एवं यूरोप में दिखाई पड़ेगा। इस ग्रहण का प्रारम्भ भा. स्टैं. टा. के अनुसार प्रातः ८ बजकर ७ मिनट पर और समाप्ति प्रातः ९ बजकर ५४ मिनट पर होगी। इस ग्रहण में चन्द्रबिम्ब का २८ प्रतिशत भाग ग्रस्त हो जाएगा।

(३) खग्रास सूर्यग्रहण (३ नवं. १९९४ ई.) :–यह ग्रहण कार्तिक की अमा. गुरुवार को ३ नवं. ९४ के दिन उ. अमेरिका, तथा एटलाण्टिक सागर में दिखाई पड़ेगा।

क्योंकि ये तीनों ग्रहण भारत में दृश्य नहीं है, अतः इनका यहाँ स्नानदान जपादि के लिए कोई माहात्म्य नहीं होगा।

ग्रहण से कहीं अधिक माहात्म्य वाले योग :–

इस वर्ष भारत में कोई भी ग्रहण दिखाई नहीं देगा, इससे आप अपने आपको ग्रहण में किए जाने वाले स्नान-दान-जप आदि के पुण्य से वंचित मत समझिए। हमारे शास्त्रों में क्रान्तिसाम्य, अर्धोदय एवं वारुणी योग के काल का माहात्म्य ग्रहणकाल के माहात्म्य से भी कहीं अधिक बतलाया गया है। स्नानदान, जप आदि के लिए इन महत्त्वपूर्ण योगों के काल को उपयोग में लाकर पुण्यार्जन कीजिए। इन योगों का विवरण इस प्रकार है:–

(१) क्रान्तिसाम्य :–क्रान्तिसाम्य को महापात भी कहा जाता है, जिस का शाब्दिक अर्थ "महाराहु" है। क्रान्तिसाम्य प्रतिवर्ष प्रायशः २५ बार आया करता है। इसके काल में किए गए स्नान-दान-जपादिका फल सूर्यग्रहण के समय किए गए करोड़ों स्वर्ण मुद्राओं के दान के समान है। 'वसिष्ठ सिद्धान्त' में लिखा है–

सूर्यग्रहे कुरुक्षेत्रे कोटिस्वर्णार्पणात्फलम्। तत्फलं लभते पाते स्नान-दान-जपादिना ॥

(२) अर्धोदय योग :– माघी अमा. के समय रविवार, श्रवण नक्षत्र और व्यतीपात योग मिल जाए तो अर्धोदय योग होता है। इस योग में तालाब या किसी भी नदी में स्नान का फल गंगास्नान के समान तथा दिया गया दान मेरु (स्वर्णगिरि) के दान के समान बतलाया गया है। इस योग का माहात्म्य शास्त्रों में हजारों सूर्यग्रहणों के समान लिखा है–

माघामायां व्यतीपाते आदित्ये विष्णुदैवते। अर्धोदयं तदित्याहुः सहस्रार्कग्रहैः समम् ॥
अर्धोदये तु सम्प्राप्ते सर्वं गंगासमं जलम्। शुद्धात्मानो द्विजाः सर्वे भवेयुः ब्रह्मसन्निभाः ॥

(३) वारुणी पर्व योगः–चैत्रकृष्णत्रयोदशी के समय शतभिषक् नक्षत्र होने पर 'वारुणीपर्व' योग होता है। यदि इस योग में शनिवार भी हो तो '**महावारुणी पर्व**' योग और यदि 'शुभ' नामक योग भी यहाँ सम्मिलित हो जाए तो यह "**महामहावारुणी पर्व**" योग बन जाता है। इस योग के समय गंगा में स्नान का माहात्म्य करोड़ों सूर्यग्रहण के समान माना जाता है:–

वारुणेन समायुक्ता मधौ कृष्णत्रयोदशी। गंगायां यदि लभ्येत कोटिसूर्यग्रहैः समा ॥ (स्कन्दपुराण)

क्रान्तिसाम्य तो प्रतिवर्ष अनेक बार घटित होता है (जिसका विस्तृत निर्देश इस पंचांग में दिया रहता है), लेकिन अर्धोदय व वारुणी पर्वों के योग कभी-कभी घटित होते हैं। इस वर्ष केवल वारुणी योग ही बना है। जो २८ मार्च '९५ को प्रातः ७ घं. २९ मि. (भा. स्टैं. टा.) से २९ मार्च '९५ के सूर्योदय तक रहेगा।

प्रयागराज में अर्धकुम्भ का योग :– (३० जनवरी १९९५ ई.)

माघी अमा. के समय वृश्चिक में गुरु और सूर्य-चन्द्रमा दोनों मकर में हों तो प्रयाग में अर्धकुम्भ का योग बनता है। इस योग के समय प्रयागराज में त्रिवेणी संगम पर स्नान, दान का भारी माहात्म्य है। इस वर्ष (सं. २०५१ वि. में) माघी अमा. के दिन ३० जन. ९५ को गुरु वृश्चिक में और सूर्य, चन्द्रमा मकर में होंगे, अतः इसवर्ष इस दिन प्रयाग में अर्धकुम्भ का योग बन रहा है। अर्धकुम्भ पर साधु-महात्माओं का शाही स्नान भी होगा, और षड्दर्शन के १३ अखाड़े सन्यासी, वैष्णव, उदासीन व निर्मल सम्प्रदाय के सन्त-महात्मा त्रिवेणी संगम पर शाही स्नानार्थ अवश्य पधारेंगे।

इस पर्व की मुख्य स्नानतिथियां निम्नलिखित हैं। इन तिथियों के दिन त्रिवेणी संगम में स्नान करके पुण्य अर्जित करें:–

(१) पौषशुक्ल एकादशी (१२ जन. १९९५ ई.)

(२) मकर संक्रान्ति (१४ जन. १९९५ ई.) (प्रथम शाही स्नान)

(३) पौषी पूर्णिमा (१६ जन. १९९५ ई.)

(४) माघी अमावस्या (३० जन. १९९५ ई.) –अर्धकुम्भ पर्व का मुख्य स्नान इसी दिन होगा। सोमवती अमावस होने के कारण भी इस दिन का माहात्म्य और भी अधिक हो जाता है। यह प्रमुख शाही स्नान तिथि है।

(५) माघ शुक्ल पंचमी (४ फर. १९९५ ई.)–वसन्त पंचमी। शाही स्नान की यह अन्तिम तिथि है।

(६) माघ शुक्ल सप्तमी (६ फर. १९९५ ई.) :–इस दिन रथसप्तमी है। इस सप्तमी के दिन सूर्योदय से पहिले अरुणोदय काल में त्रिवेणीसंगम में स्नान का महात्म्य पुराणों में बहुत वर्णित है।

(७) कुम्भ संक्रान्ति पुण्यकाल (१३ फर. १९९५ ई.) :–इस दिन मध्याह्न तक कुम्भ संक्रान्ति का पुण्यकाल रहेगा। इस काल में त्रिवेणी में स्नान करना चाहिए।

(८) माघी पूर्णिमा (१५ फर. १९९५ ई.) :–यह इस पर्व की अन्तिम स्नानतिथि होगी। इस दिन एक मास से चला आ रहा माघ स्नान भी समाप्त हो जाता है।

माघी अमा. के दिन तिल, शक्कर (खाण्ड) दान करने का महात्म्य शास्त्रों में लिखा है। इस दिन गरीबों को शीत ऋतु के उपयोगी कम्बल आदि वस्त्र भी दान करने चाहिएं।

शनि की साढ़ेसाती (बृहत्कल्याणी), ढैया (लघुकल्याणी) और गुरु, राहु का गोचर फल (संवत् २०५१ वि.)

शनि की साढ़ेसाती, ढैया

जन्मकुण्डली में शनैश्चर का शुभग्रह से संबंध हो अथवा महादशा का अन्तर शुभ चल रहा हो, तो ढैया और साढ़ेसाती का अशुभफल कम होता है। यदि चन्द्र, शनि जन्म में अशुभ ग्रहों से युक्त हों तो साढ़ेसाती व ढैया महान् अशुभ, चिन्ता, अवनति, धनहानि, झगड़ा, कार्य में विघ्न, रोजगार में कमी, व्यर्थ कलह एवं रोग, पशु-पीड़ा आदि का कारण बनती है। यदि जन्म-कुण्डली में शनि अष्टमेश या मारकेश भी हो तो ढैया, साढ़ेसाती विशेष अनिष्ट फलप्रद होती है। यदि जन्म में लग्नेश, पंचमेश, नवमेश होकर ३, ६, ११ में स्थित हो तो सुख-सम्पत्ति मिलती है, व्यापारादि में लाभ होता है। शनि-अष्टकवर्ग में अधिक रेखाएं हों तो शुभ, कम-रेखाएं हों तो अशुभफल निश्चित होता है। शान्त्यर्थ सतनाजा को तेल का हाथ लगाकर पक्षियों को डालना चाहिए या शनिवार को तेल में मुख देखकर उसमें मिष्टान्न, गुलगुले आदि बनाकर, गरीबों को, भैंसे या कुत्ते को दें या बन्दरों को गुड़-चने डालते रहें। अष्टगंध से शुभ मुहूर्त में बना हुआ शनियन्त्र धारण करना विशेष शान्तिप्रद है।

साढ़ेसाती में प्रत्येक राशि के लिए शनि का अशुभ फल इस प्रकार है:–

मेष राशि वालों को बीच के अढ़ाई वर्ष खराब है। वृष को पहिले अढ़ाई वर्ष, मिथुन को अन्त के अढ़ाई वर्ष, कर्क को बीच के अढ़ाई वर्ष, सिंह को पहिले ५ वर्ष, उसमें भी मध्य के अढ़ाई वर्ष खराब हैं। कन्या को पहिले ५ वर्ष, उसमें भी मध्य के अढ़ाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। तुला को आखिर के अढ़ाई वर्ष, वृश्चिक को अन्तिम ५ वर्ष नेष्ट हैं, उसमें भी पहले अढ़ाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। धनु को प्रारंभ के अढ़ाई वर्ष, मकर को पहिले ५ वर्ष, उसमें भी पहले अढ़ाई वर्ष विशेष खराब हैं। कुंभ को आदि, अन्त के अढ़ाई वर्ष, विशेषतः अन्त के अढ़ाई वर्ष अधिक अशुभ हैं। मीन को पूरे साढ़े सात वर्ष नेष्ट हैं, उनमें भी अन्त के अढ़ाई वर्ष विशेष अशुभ फल वाले होते हैं।

सं. २०५१ वि. में शनि की साढ़ेसाती एवं ढैया

शनि ९ नवं. १९९३ ई. को सिंहस्थ चन्द्र के समय कुंभ राशि में आया था, जो कि इस संवत् २०५१ वि. के अन्त तक इसी (कुंभ) राशि में ही रहेगा। इसका फल नीचे कोष्ठक में दिया गया है।

ध्यान रहे–जिन राशियों का इस कोष्ठक में निर्देश नहीं हैं, उन राशि वालों पर साढ़ेसाती या ढैया इस वर्ष नहीं है।

कुंभ राशिस्थ शनि की साढ़ेसाती, ढैया

(९ नवम्बर ९३ से संवत् के अन्त तक के लिए)

राशि	ढैया या साढ़ेसाती	पाद	साढ़ेसाती		फल
			किस अंग पर	चढ़ती या उतरती	
कर्क	ढैया	चांदी	. . .	. . .	व्यापार में लाभ, धन लाभ, प्रभाव क्षेत्र बढ़े, शासन से सम्मान, सुख-सम्पत्ति लाभ, मांगलिक कार्य हों।
वृश्चिक	ढैया	तांबा	. . .	. . .	अकस्मात् लाभ, परिवार में मांगलिक कार्य, आनन्द रहे, लाभप्रद योजनाएं, सेहत ठीक रहे।
मकर	साढ़ेसाती	लोहा	पैर	उतरती	शरीर पीड़ा, रक्त विकार, स्त्री-पुत्र को कष्ट, व्यापार हानि, राजभय, धनहानि हो।
कुम्भ	साढ़ेसाती	तांबा	हृदय	. . .	अचिन्तित धनलाभ, परिवार में आनन्द मंगल रहे, प्रगति प्रद योजनाएं, सेहत ठीक रहे।
मीन	साढ़ेसाती	सुवर्ण	मस्तक	चढ़ती	पारिवारिक कलह-क्लेश, रोगों से परेशानी हो, धनहानि, व्यवसाय में बाधा आए।

गुरु का शुभाशुभ फल

इस वर्ष संवत् के आरंभ से १० नवम्बर १९९४ ई. तक गुरु तुलाराशि में ही संचार करेगा। तत्पश्चात् ११ नवम्बर सन् १९९४ ई. से आगे संवत् के अन्त तक गुरु वृश्चिक राशि में रहेगा। गुरु के इन दोनों राशियों में संचार का शुभाशुभ फल विभिन्न राशि वाले व्यक्तियों के लिए नीचे कोष्ठकों में दिया जा रहा है:–

तुला राशि के गुरु का शुभाशुभ फल

(गत वर्ष १२ अक्तूबर ९३ से इस वर्ष १० नवम्बर' ९४ ई. तक के लिए)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
फल	सम्मान	रोग	सुख	धनहानि	शरीर कष्ट	धन लाभ	भय	आधि व्याधि	प्रगति	धनहानि	धनलाभ	धननाश

वृश्चिक राशि के गुरु का शुभाशुभ फल

(११ नवम्बर'९४ ई. से सं. २०५१ वि. के अन्त तक के लिए)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
फल	धननाश	सम्मान	रोग	सुख	धनहानि	शरीर कष्ट	धनलाभ	भय	आधिव्याधि	प्रगति	धनहानि	धनलाभ

राहु शुभाशुभ फल

संवत् के आरंभ से १७ मई १९९४ ई. तक राहु वृश्चिक राशि में रहेगा, तत्पश्चात् १८ मई १९९४ से संवत् २०५१ वि. के अन्त तक वह तुला राशि में ही रहेगा। इन दोनों राशियों में राहु के संचार का शुभाशुभ फल विभिन्न राशि वाले व्यक्तियों के लिए नीचे कोष्ठकों में दिया जा रहा है:–

वृश्चिक राशिस्थ राहु का फल

(सं. २०५१ वि. के प्रारंभ से १७ मई '९४ तक के लिए)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
फल	धननाश	राजभय	महासुख	धनक्षय	अपमान	सौभाग्य	कलह	भय	विनाश	धनलाभ	कलह	दुःख

तुला-राशिस्थ राहु का फल

(१८ मई '९४ से सं. २०५१ वि. के अन्त तक)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	राजभय	महासुख	धननाश	अपमान	सौभाग्य	कलह	भय	विनाश	धनलाभ	कलह	दुःख	धननाश

नौ ग्रहों के बुरे प्रभाव से मुक्ति

शास्त्रों में नेष्टफलप्रद ग्रहों के मूलमंत्र का जाप किंवा स्तोत्रपाठ करने का विशेष महत्त्व लिखा है। हम इसी दृष्टि से ग्रहों के नानाविध नेष्टफल शान्त्यर्थ श्रीव्यास विरचित एक नवग्रह स्तोत्र को यहाँ उद्धृत करते हैं। सन्ध्या के समय प्रतिदिन इस स्तोत्र का पाठ शीघ्र सर्वविध शान्तिकारक सिद्ध होगा।

अथ नवग्रह स्तोत्रम्

जपा-कुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।
दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसंभवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्।।
धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च मङ्गलं प्रणमाम्यहम्।।
प्रिगङ्गु कालिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।
देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।
नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्त्तण्डसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्
सिंहिकागर्भसंभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।
इति व्यासमुखोद्गीतं य: पठेत्सुसमाहित:।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति।।
नरनारीनृपाणां च भवेत् दुःस्वप्ननाशनम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यम् पुष्टिवर्धनम्।।

साढ़ेसाती, ढैया ज्ञान सारणी

–प्रियव्रत शर्मा

शनि किस राशि पर चल रहा है–"यह जान लेने पर आप इस सारणी से यह तुरंत जान सकते हैं कि उस समय आपकी राशि पर साढ़ेसाती चल रही है या ढैया। इससे आप यह भी जान लेंगे कि साढेसाती मस्तक पर (चढ़ती) है, हृदय पर है, या पैरों पर (उतरती) है। जैसे–जब शनि मिथुन राशि में हो तब वृष राशि वालों पर साढ़ेसाती पैरों पर (उतरती) मिथुन राशि वालों पर साढ़ेसाती हृदय पर, कर्क राशि वालों पर साढेसाती मस्तक पर (चढ़ती) तथा वृश्चिक और मीन राशि वालों पर ढैया चल रहा होगा।

जन्म राशि \ शनि की राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
मेष	सा. ह.	सा. पै.		ढै.				ढै.				सा. म.
वृष	सा. म.	सा. ह.	सा. पै.		ढै.				ढै.			
मिथुन		सा. म.	सा. ह.	सा. पै.		ढै.				ढै.		
कर्क			सा. म.	सा. ह.	सा. पै.		ढै.				ढै.	
सिंह				सा. म.	सा. ह.	सा. पै.		ढै.				ढै.
कन्या	ढै.				सा. म.	सा. ह.	सा. पै.		ढै.			
तुला		ढै.				सा. म.	सा. ह.	सा. पै.		ढै.		
वृश्चिक			ढै.				सा. म.	सा. ह.	सा. पै.		ढै.	
धनु				ढै.				सा. म.	सा. ह.	सा. पै.		ढै.
मकर	ढै.				ढै.				सा. म.	सा. ह.	सा. पै.	
कुंभ		ढै.				ढै.				सा. म.	सा. ह.	सा. पै.
मीन	सा. पै.		ढै.				ढै.				सा. म.	सा. ह.

सा. = साढ़ेसाती। ढै. = ढैया। ह. = हृदय पर। पै. = पैरों पर (उतरती) म. = मस्तक पर (चढ़ती)।

आकाशी कौंसिल का विचार

[विश्व की सामजिक आर्थिक, राजनैतिक स्थिति पर सं. २०५१ की ग्रहगति का प्रभाव]

* संवत् के प्रारंभ से मई '९४ तक एवं २२ नवंबर '९४ से मार्च '९५ तक का समय विश्व के देशों एवं राष्ट्राध्यक्षों के लिए विशेष उलझनपूर्ण, किसी विशिष्ट व्यक्ति का पदरिक्त बोस्निया-सोमालिया आदि में स्थिति बिगड़े।
* सं. २०५१ में भयंकर प्राकृतिक आपदाओं से जनधन हानि, कहीं भूकम्प, समुद्री तूफान, यान दुर्घटना, कहीं दुर्भिक्ष आदि से जनता को कष्ट।
* यूरोप के कुछ देशों की नीति से निजी प्रतिष्ठा को आघात, मुस्लिम देशों में बंगलादेश, पाक, अरब-गणराज्यों में आन्तरिक-अशान्ति के कारण बनें।
* स्वतंत्र भारत का जन्माङ्ग एवं वर्षलग्न एक होने से भारत की सत्तारूढ़ पार्टी के वरिष्ठ नेता के लिए वर्ष का पूर्वार्ध अग्नि परीक्ष वाला होगा एवं राजनैतिक एवं धार्मिक समस्याओं का चक्रव्यूह बना रहे, यह वर्ष विशेष उलझनपूर्ण रहे।
* भारत की प्रान्तीय समस्याएं (विशेषत: कश्मीर की समस्या) विकट हों और विदेशी तकतें भी इस समस्या को उछालें, अन्ततः सीमाप्रान्तों पर अशान्ति, कहीं सैन्यबल का प्रयोग, भारत में विघटनकारी तत्वों को मुंहजोड़ जवाब।
* भारत के आर्थिक-सुधारों में प्रगति, उदारीकरण की नीति से लाभ, निर्यात क्षेत्र में उत्साहजनक उपलब्धियां।
* भारत की राजनैतिक स्थिति एवं राजनैतिक-दलों के बारे में ग्रहस्थिति के आधार पर विश्लेषण। कुछ दल स्वार्थपरक-एकता के बाद अनेकता में बदलें। कुछ प्रान्तों के शासन तंत्र में परिवर्तन, संवर्धन।

यह सारा संसार केवल कम्पन क्रिया का ही मूर्तरूप है। देखने सुनने आदि का समस्त-ज्ञान, प्रकाश-वायु आदि में कम्पन-प्रक्रिया का ही परिणतिहै। मस्तिष्कगत विचारों के भी कम्पन होते हैं। विचारों के कम्पन 'सूक्ष्म-आकाश' (लोक) तत्व में वास व भ्रमण करते हैं। जो भी कुछ स्थूल-लोक में होता है, वह सब कुछ पहिले ही सूक्ष्म लोक में विद्यमान रहता है। उस सूक्ष्म-लोक में विद्यमान कम्पन रूप में पूर्व-भासभान प्रक्रिया को ऋषि-महर्षि सूक्ष्म लोक में गति होने से हस्तामलकवत् पहिले ही जान लेते थे। उन साक्षात् कृत्धर्मा पूर्वज-ऋषियों की उस अदृश्य-अनुभूति का ही परिणाम है यह 'ज्योतिष शास्त्र'। आज हम उनके द्वारा निर्दिष्ट ग्रह संकेत के आधार पर समस्त विश्व के क्रिया कलाप का निर्देश समय से पूर्व ही करने का प्रयास कर रहे हैं।

सं. २०५० के पंचांग से उदधृत कुछ भविष्यवाणियां जो कि आश्चर्यजनक रूप से सत्यसिद्ध हुई हैं; उनमें से कुछ यहां प्रस्तुत कर रहे हैं:-

(१) सं. २०५१ के पृ. १९ कालम २ पर लिखी गई कुछ पंक्तियां अक्षरश:उद्धृत की जा रही हैं-

"वर्षेश कुण्डली में केन्द्र में राहु-शनि-केतु ये क्रूरग्रह हैं। लग्नेश-मंगल नीच है। अतः विश्व के अनेक देशों में अघटित घटनाचक्र चलेगा, जिसकी साधारण जनता कल्पना भी न कर सकेगी। कहीं प्रधानपद संकटग्रस्त होगा, कहीं अकस्मात् लोकसभा भंग का समाचार स्तब्ध करेगा, कहीं आन्तरिक धार्मिक किंवा राजनीति से प्रेरित अशान्ति पनपेगी जिससे आन्तरिक विद्रोह की स्थिति से जनधन हानि के आसार बनेंगे। कहीं अग्निकाण्ड, चक्रवात वायुवेग, बाढ़ किंवा सूखा आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानि के समाचार मिलेंगे। यहां कुम्भराशि का शनि मुस्लिम देशों (खान देश) अफगानिस्तान, फ्रांस, बंगलादेश एवं पाकिस्तान के सिन्ध एवं बलूच प्रधान क्षेत्र के लिए विशेष संकटापन्न स्थितियों को बनाएगा। विश्व के देशों के लिए चैत्र, आषाढ़, आश्विन एवं मार्गशीर्ष विशेष घटनापूर्ण होंगे। किसी देश विशेष में दुर्भिक्ष की स्थित भी बनाने वाले योग हैं।"

उल्लिखित भविष्यवाणी अक्षरश: सत्यसिद्ध हुई है। **पाकिस्तान में 'श्री नवाज शरीफ' प्रधानमंत्री पद संकटग्रस्त हुआ,** राष्ट्रपति द्वारा लोक सभा भंग का समाचार मिला। लेकिन न्यायालय द्वारा उन्हें पुन: पदासीन कर दिया गया;-इस बात की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। **इसवर्ष उत्तरी भारत एवं देश के अन्य भागों में बाढ़ से भयंकर जनधन हानि हुई है। महाराष्ट्र में भयंकर ऐतिहासिक-भूकम्प से करोड़ों रुपए की क्षति एवं** लगभग पचास हजार लोग मृत्यु के शिकार हुए; यह प्राकृतिक प्रकोप ही था।

(२) सन् १९९३ में रूस में आन्तरिक अशान्ति की भविष्यवाणी–सं. २०५० के मार्तण्ड पंचांग पृ. २० कालम २ पर इन शब्दों में की गई थी;–

"१७ सितम्बर से शनि-शुक्र का समसप्तक योग बन रहा है। परिणाम स्वरूप पश्चिमी देशों में युद्ध के बादल मंडराएंगे। कहीं आन्तरिक-क्रान्ति विकराल रूप धारण करेगी;–यह योग ९ अक्तूबर तक (विशेष) प्रभाव करेगा।"

पाठक जानते हैं कि ठीक इन्हीं दिनों में सोमालिया आदि कुछ मुस्लिम राष्ट्रों में भयंकर युद्ध के समाचार मिले हैं और रूस में भी आन्तरिक राजनैतिक अशान्ति से प्रधानपद विवादास्पद बन गया।

(३) सं. २०५० वि. में पाकिस्तान में सत्ता परिवर्तन की भविष्यवाणी–सं. २०५० के पंचांग में **'मुस्लिम देश'** शीर्षक के अन्तर्गत पृ. २१, कालम II पर स्पष्ट घोषणा इन शब्दों में की गई थी:–

"कन्या प्रभाव राशि वाले देश 'पाकिस्तान' आदि के भावेश बुध पर शनि की दृष्टि होने से यहां अशान्ति एवं राजनैतिक-अस्थिरता के योग हैं। सीमा प्रान्तों पर हिलडुल एवं पड़ौसी देश के साथ उलझन पैदा कर सकता है। सिंध-बलूच प्रधान क्षेत्र में भारी अशान्ति पैदा होगी। परिणाम स्वरूप आगे शीघ्र ही सत्ता में परिवर्तन के संकेत भी ग्रहस्थिति से मिलते हैं।...... पाकिस्तान के लिए शनि-मंगल की पोजीशन के अनुसार जून से अगस्त के बीच . . . तक की समयावधि विशेष संकटपूर्ण मालूम देती है।"

ठीक इस भविष्य वाणी के अनुसार पहले श्री नवाज शरीफ को राष्ट्रपति ने अपदस्थ किया और बाद में न्यायालय द्वारा पुनः स्थापित हुए, तत्पश्चात् राजनैतिक अस्थिरता का चक्र पुनः चला और १८ जुलाई १९९३ ई. को लोकसभा भंग हुई और सत्ता परिवर्तन हुआ। परिणाम-स्वरूप श्रीमती बेनजीर भुट्टो प्रधानमन्त्री बनीं। काश्मीर आदि सीमा प्रान्तों पर पाकिस्तान स्थिति को गंभीर बना रहा है। यह सब ऊपर लिखी भविष्यवाणी से स्पष्ट रूप से सत्य सिद्ध हुआ है।

(४) 'भारत एवं भारत सरकार' शीर्षक के अन्तर्गत सं. २०५० के पंचांग में पृ. २३ पर देश की प्रगति एवं देश की शासन सत्ता के समक्ष उपस्थित समस्याओं की चर्चा निम्नांकित शब्दों में की गई थी;–

"४६ वें वर्ष की कुण्डली में धनेश-मंगल की धन स्थान पर पूर्ण दृष्टि है अतः देश की आर्थिक स्थिति पर विशेष ध्यान दिया जाएगा, लेकिन देश के अन्दर महंगाई और बढ़ेगी, जिससे जनसाधारण वर्ग परेशान होगा। वर्ष कुण्डली के तीसरे भाव में राहु देश की प्रगति की ओर बल देगा, समस्याओं के समाधानार्थ नई योजनाएं नए आयाम उपस्थित होंगे। चतुर्थ भावस्थ स्वक्षेत्रीय-शनि, विभिन्न देशों के साथ व्यापारिक सम्बन्धों में प्रगति का संकेत देता है। विदेश नीति में इस वर्ष विशेष उलट फेर होंगे क्योंकि सन् १९९३ ई० में शनि कुम्भ में आकर वक्रगति से पुनः मकर राशि में आ जाता है, स्वतन्त्र भारत के ४६ वें वर्ष की ग्रहस्थिति को देखें, तो स्पष्ट है, कि दशम स्थानेश चन्द्र, शनि की राशि में है, और दशम स्थान में संवत् २०५० का राजा बुध, सूर्य के नजदीक है तथा वर्षेश बुध एवं सूर्य पर शनि की दृष्टि भी है, अतः यह वर्ष प्रधाननेता के लिए विशेष उलझनपूर्ण एवं अग्निपरीक्षा का रहेगा। प्रान्तीय एवं धार्मिक समस्याओं के चक्रव्यूह में फंसी भारत की शासन सत्ता को १९९३ ई० के अगस्त तक के समय को पार करना कठिन कार्य होगा। लेकिन प्रधान नेता पुनरपि अपनी विवेकपूर्ण नीति से इसका हल निकाल ही लेंगे।"

सत्तारूढ़ दल किंवा प्रधान नेता आज भी 'अयोध्या' के धार्मिक मसले का समाधान नहीं ढूंढ़ सके। लेकिन प्रधाननेता ने विवेकपूर्ण नीति से खतरे को अभी टाल अवश्य दिया है। अनेक चीन आदि देशों के साथ भी व्यापारिक-सम्बन्ध बने है।

भारत आर्थिक दृष्टि से सुधारात्मक दृष्टिकोण को अपनाए हुए है, रुपये की कीमत कुछ बढ़ी है। विदेश नीति में (अमेरिका-रूस-चीन आदि के साथ) आश्चर्यजनक रुप से परिवर्तन का दौर चल रहा है। ये सब इस भविष्यवाणी की सफलता के ज्वलन्त उदाहरण हैं।

(५) सं. २०५० के पंचांग में 'भारत का प्रमुख नीतिक दल' शीर्षक के अन्तर्गत पृष्ठ २४ पर कालम (I) में कांग्रेस भाजपा के बारे जो भी लिखा गया था; वह किस हद तक सत्य सिद्ध हुआ है, कहने की आवश्यकता नहीं, पाठक उद्धृत पंक्तियां स्वयं पढ़ें:–

"सं. २०५० वि. की ग्रहस्थिति से केवल उलझनें ही उलझनें सत्तापार्टी के राजनीतिज्ञों के पक्ष में जाती हैं। अयोध्या में राम जन्मभूमि विवाद पर भारत के प्रमुख राजनैतिक दल आपस में इस वर्ष उलझेंगे, जिसमें सत्तारूढ़ दल अपनी छवि को यथावत् बनाए रखने में असमर्थ मालूम देगा। सत्तारूढ़ दल में आन्तरिक फूट, विवाद एवं उलझनें बढ़ेंगी जिससे कुछ अन्य प्रमुख दल लाभ उठाने का प्रयास करेंगे। श्री नरसिंहराव की नामराशि के आधार पर वृश्चिक राशि से दशम स्थान का स्वामी–सूर्य, जब तुला में आएगा तब इन्हें अधिक राजनैतिक उलझनों का सामना करना पड़ेगा। यह वर्ष देश एवं देश की सत्तारूढ़ पार्टी के लिए विशेष उपलब्धि का न होकर प्रतिष्ठा को दाव पर लगाने वाला है। भाजपा की नीति कुछ

प्रान्तों में भी अपना वर्चस्व बढ़ाने की रहेगी। अन्यदलों का भविष्य नगण्य सा ही रहेगा।"

(६) इस वर्ष उत्तर-दक्षिणी प्रान्तों में भयंकर वर्षा से जो जनधन हानि हुई है, वह सब जानते हैं। इस बारे में सं. २०५० वि. के पंचांग में पृ. २४ पर कालम (II) के प्रारम्भ में ही इस प्रकार लिखा था;–

"१२ जून से १ अगस्त तक शनि-मंगल का परस्पर दृष्टि सम्बन्ध होने से कुछ क्षेत्रों में प्राकृतिक आपदा, बाढ़ या तूफान से हानि हो या कुछ क्षेत्रों में खड़ी फसल को हानि पहुंचे।"–इस वर्ष पंजाब में पटियाला, रोपड़, हरियाणा, एवं अन्य प्रान्तों में भी बाढ़ से भारी विनाश हुआ है; यह सर्वविदित ही है।

(७) सं. २०५० के पंचांग में 'पंजाब' शीर्ष के अन्तर्गत श्री बेअन्तसिंह को पंजाब में उग्रवाद एवं अलगाववाद पर नियन्त्रण पाने के लिए 'श्रेय' प्राप्ति की भविष्यवाणी की गई थी; जो कि आश्चर्यजनक रूप से सत्यसिद्ध हुई है;–

" पंजाब की प्रभाव राशि मीन है। श्री बेअन्त सिंह जी ने २५ फरवरी १९९२ ई. को दिन में ११ बजे वृष लग्न में मुख्यमन्त्री पद की शपथ ग्रहण की है, इस समय सिंहस्थ गुरु की कर्मक्षेत्र पर पूर्ण दृष्टि थी, भाग्येश-कर्मेश शनि, भाग्यस्थान में है, अतः यह ग्रहस्थिति प्रधान नेता के लिए एवं इस प्रान्त की खुशहाली के लिए उत्तम रहेगी। यहां उग्रवाद एवं अलगाववाद पर कुछ नियन्त्रण पाने में यहां के प्रधाननेता को श्रेय मिलेगा ही। यहां औद्योगिक क्षेत्र बढ़ेंगे। कानून व्यवस्था की स्थिति बेहतर होगी।"

(८) सं. २०५० के पंचांग में हिमाचल की सत्तारूढ़ पार्टी के लिए जो भविष्यवाणी की थी, वे पृ. २४, कालम (II) की अन्तिम तीन पंक्तियां निम्नांकित है–

"अक्तूबर १९९३ ई. के बाद यहां राजनैतिक-परिवर्तन संभावित है। जून से अगस्त तक प्रधाननेता के लिए काफी राजनैतिक उलझनों वाला रहेगा। विपक्षी पार्टी कांग्रेस बल पकड़ेगी। परिणाम स्वरूप स्थिति सत्तारूढ़ पार्टी के लिए चिन्तनीय रहेगी। क्योंकि कांग्रेस (इ.) की जन्मकालिक ग्रहस्थिति के अनुसार यहां कांग्रेस में अन्तर्द्वन्द चलेगा, जिससे लक्ष्यप्राप्ति में देरी होगी।"

स्पष्ट है कि जून से अगस्त तक भाजपा (सत्तारूढ़) पार्टी को पदत्याग के लिए विवश किया गया। कांग्रेस में अन्तर्द्वन्द्व चल ही रहा है। अब अक्तूबर के बाद नवम्बर' ९३ में निर्वाचन द्वारा राजनैतिक-परिवर्तन की संभावना भी बन चुकी है।

(९) 'उत्तर प्रदेश' शीर्षक के अन्तर्गत पृ. ८२ पर सं. २०५० वि. के पंचांग में जो भी लिखा गया था, वह अक्षरशः उद्धृत कर रहे हैं; इस भविष्यवाणी की सार्थकता के बारे में कुछ कहने की आवश्यकता नहीं; पढ़ें–

"प्रान्त की प्रभावराशि मीन है। संवत् प्रारम्भ होने से कुछ मास पूर्व दिसंबर १९९२ से मार्च १९९३ ई. तक की ग्रहस्थिति भारी आन्तरिक अशान्ति को जन्म देगी। जिससे यहाँ के प्रधान पद को काफी कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़ेगा। सन् १९९३ के पूर्वार्ध में ही यहाँ मन्त्रिमण्डल भंग किंवा विशेष रद्दोबदल होने के योग हैं।"

इस भविष्यवाणी के अनुसार यहां अयोध्या विवाद के कारण भारी जातीय उपद्रव एवं अशान्ति रही है। १९९३ के पूर्वार्ध में ही यहां का मन्त्रिमंडल भंग कर दिया गया।

(१०) 'काश्मीर' शीर्षक के अन्तर्गत सं. २०५० वि. में पृष्ठ ८२ पर यहां घोर अशान्ति की भविष्यवाणी निम्नांकित शब्दों में की गई थी;–

"प्रभावराशि तुला है। ४ अक्तूबर १९९३ से पहिले यहां भारी अशान्ति का बोलबाला रहेगा। प्लूटो एवं राहु का वृश्चिक राशि में एक साथ रहना भारी उलझनें पैदा करे, राजनीतिक-हत्याएं हों, यावन देश इस क्षेत्र में मानवीय अधिकारों के दमन का आरोप लगाएंगे, आत्मनिर्णय के प्रश्न पर किसी मुस्लिम देश से सम्बन्ध बिगड़ेंगे, यह क्षेत्र इस वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय सतह पर चर्चा का विषय बन सकता है। शासन को सख्ती से काम लेना पड़ेगा।"

स्पष्ट है, कि यहां अलगाववादी तत्त्व भयानक अशान्ति फैला रहे हैं। समस्या, शासन के लिए सिरदर्द बनी हुई है। पाकिस्तान मानवीय अधिकारों के दमन का ढोल पीट रहा है। राष्ट्रकुल में भी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इसे तूल देने के प्रयास हो रहे हैं।

पाठको! ऐसी अनेकों भविष्यवाणियों सत्यता फलित ज्योतिष की वैज्ञानिकता का ज्वलन्त उदाहरण हैं। ये भविष्यवाणियां गतवर्ष २७ सितम्बर १९९२ ई. को लिखी गई थीं। जिन भविष्यवाणियों की सफलता पर पाठकगण हमें पत्र लिखकर उत्साहित करते हैं, उन सबका श्रेय पूर्वाचार्यों एवं ज्योतिष-शास्त्र-मर्मज्ञ गुरुजनों को ही जाता है, जिन्होंने हमारा आज तक मार्ग-दर्शन किया है। हम पाठकों के भी आभारी हैं, जो विभिन्न-प्रान्तों से पत्रों द्वारा भविष्यवाणियों की सफलता पर बधाई देकर भावी वर्षों के लिए भी कुछ लिखने के लिए प्रतिवर्ष प्रेरित करते रहते हैं।

इससे पहिले कि हम सं. २०५१ की ग्रहस्थिति के आधार पर घटनाचक्र का विशद विवेचन करें, गतवर्ष सं. २०५० वि. के अन्तिम चरण की ग्रहस्थिति पर दृष्टिपात करना प्रासंगिक समझते हैं।

सं. २०५० वि. में ३१ अक्तूबर को मंगल वृश्चिक-राशि में आकर राहु के साथ राशि सम्बन्ध बनाएगा; इस समय मकर राशि में शनि वक्री स्थिति में है। मकर प्रभाव राशि वाले भारत आदि देशों की राजनैतिक स्थिति की विषमता से भारत के अग्रणी नेता चिन्तित होंगे। पार्टी की सत्ता एवं प्रतिष्ठा दाव पर लगेगी। प्रधाननेता के सहयोगी एवं अन्य नेता आपसी विवादों में उलझेंगे, जिससे सत्तारूढ़ पार्टी की प्रतिष्ठा को धक्का पहुंचेगा। आगे ४ से २८ नवम्बर तक गुरु-शुक्र तुला राशि में ही रहेंगे, इसी बीच १० नवम्बर को शनि कुम्भ राशि में आकर मंगल के साथ परस्पर दृष्टि सम्बन्ध बनाते हैं; यह समय विश्व के कुछ राष्ट्रों में विशेष घटनाक्रम को जन्म देगा; कहीं आन्तरिक क्रान्ति व अशान्ति विकटरूप धारण करेगी। रुस, बंगलादेश पाकिस्तान, फ्रांस, पाक के बलूचिस्तान क्षेत्र आदि में कहीं राजनैतिक अस्थिरता से जन जीवन एवं शासकों को परेशानी का सामना करना पड़े।

आगे २६ फर. से ५ अप्रैल तक शनि-मंगल का कुम्भ राशि में एक साथ सन्निकर्ष रुस, फ्रांस, अफगानिस्तान, टर्की, इटली, पौलेण्ड एवं पाकिस्तान भारत के लिए भयावह है। कहीं राजनैतिक अस्थिरता बने। कहीं सत्ता में परिवर्तन किंवा रुस आदि में कहीं भयंकर आन्तरिक-अशान्ति, राजनैतिक-विप्लव के कारण बनें। १ जन' ९४ को मं. बुध, ११ जन' ९४ को सू. नेपच्यून, १२ जनवरी १९९४ ई. को सू. यूरे. एवं शुक्र. नेपच्यून, १३ जन' ९४ को शु. नेप; एवं ६ जन' ९४ को मं. शु. की अंशात्मकयुति विश्व में कहीं प्राकृतिक प्रकोप भूकम्प आदि से भयंकर जन-धन हानि एवं कहीं यान दुर्घटना से हानि का कारण बनेगी। आगे २८ फर को मंगल-बुध, ५ अप्रैल को पुनः मंगल-बुध, एवं १४ मार्च' ९४ को शनि-मंगल की अंशात्मक युति भी कहीं राज सत्ता में परिवर्तन, आन्तरिक-अशान्ति-क्रान्ति किंवा कहीं विशिष्ट व्यक्ति का पदरिक्त होने का संकेत देती है। कहने का तात्पर्य यह है, कि-२६ फरवरी सन् १९९४ ई. से अप्रैल तक की समयावधि विश्व के राष्ट्रों में अकल्पित दुःखद घटनाओं को जन्म देगी जिससे कहीं सत्ता परिवर्तन, कहीं मानचित्र में परिवर्तन, कहीं ज्वालामुखी विस्फोट किंवा भूकम्प आदि भयावह प्राकृतिक प्रकोप से जन-धन हानि होगी। सं. २०५० के उत्तरार्ध में भारत, रुस, बंगलादेश आदि में कहीं राजनैतिक अशान्ति एवं अस्थिरता के कारण बनेंगे। इन देशों में से किसी देश विशेष के सत्तारूढ़ व्यक्तियों को पदत्याग के लिए विवश होना पड़ेगा। कहीं राजनैतिक हत्याकाण्ड भी संभव हैं। सं. २०५० के उत्तरार्ध में शनि-मंगल का सम्बन्ध कहीं सीमा प्रान्तों पर युद्ध विभीषिका को जन्म देगा। भारत के पूर्वोत्तरी सीमाप्रान्तों पर शत्रुकृत अशान्ति से सावधान रहना चाहिए।

सं. २०५१ वि. की ग्रहस्थिति के आधार पर विश्व की स्थिति–

अखिल ब्रह्माण्ड में अलौकिक शक्ति का परिज्ञान कराने वाले अनन्तकोटि तारे आकाशमण्डल में हमें दिखाई देते हैं, उनमें जिन तारों किंवा ग्रहों का हमारी पृथ्वी से घनिष्ठ सम्बन्ध है, उन्हीं के उच्च-नीच स्थिति एवं वक्र-मार्ग आदि अष्टधा गतियों के भ्रमणवश इस पृथ्वी पर स्थित राष्ट्रों में सुभिक्ष-दुर्भिक्ष युद्ध, विग्रह, रोग, राजनैतिक उलटफेर, शांति किंवा अशान्ति का वातावरण आदि अचिन्तित अकल्पित परिवर्तन हुआ करते हैं। बृहस्पति महाराज ने इस तथ्य को स्वीकार करते हुए लिखा है–

"ग्रहाधीनं जगत्सर्वं ग्रहाधीना नरावराः।
सृष्टि-रक्षण-संहाराः सर्वे चापि ग्रहानुगाः ॥"

सं. २०५१ की ग्रहस्थिति के अनुसार घटनावक्र का विश्लेषण करने के लिए सबसे पहिले हमें सं. २०५१ वि. की नववर्ष प्रवेश कुण्डली का विचार करना होगा।

११ अप्रैल को प्रातः ५ बजकर ४९ मि. (भा. स्टै. टा.) (५९ घटी २० पल इष्ट) पर रेवती नक्षत्र एवं वैधृति योग के समय मीन लग्न में सं. २०५१ वि. का शुभारम्भ होगा।

वर्षप्रवेश कालीन ग्रहस्थिति के अनुसार लग्नेश गुरु अष्टम भाव में शत्रुक्षेत्र में अस्त होकर बैठा है। लग्नस्थ मंगल की गुरु पर विशेष दृष्टि है। लेकिन मंगल, गुरु की राशि में स्थित होने से विषेष क्रूर नहीं। अतः संकेत मिलता है, कि-दक्षिणी गोलार्ध के देशों में राजनैतिक उलझनें विशेषरूप से उपस्थित होंगी। दक्षिणी अफ्रीका, ब्रिटेन, अमेरीका एवं ईराक, ईरान, टर्की, जापान, लंका, चीन, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, बंगलादेश, इटली, स्वीडन, रुस आदि में अप्रत्याशित घटनाचक्र चलेगा। वर्ष कुण्डली के धनस्थान में स्थित शुक्र पर शनि की नीच दृष्टि है, लेकिन धन स्थान पर स्थित-शुक्र पर गुरु की दृष्टि भी है, और शनि भी गुरु से दृष्ट है, अतः भारत एवं कुछ प्रगतिशील राष्ट्रों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। मुद्रस्फीति क्षीण होगी, रुपये की कीमत बढ़ेगी, जिससे राष्ट्र प्रगति एवं उन्नति की ओर अग्रेसर होगा। दक्षिण दिशा में राजनैतिक उलझनों के बावजूद भी जनता में अमनचैन बना रहे भारत के काश्मीर, कर्णाटक, उ. प्र., बंगाल, बिहार एवं देहाती आदि प्रान्तों में कहीं प्राकृतिक प्रकोप भूकम्प आदि से जनधन हानि हो। कहीं प्रान्त विषेष में सत्ता परिवर्तन भी होंगे। मीन लग्न में वर्ष प्रवेश का फल शास्त्रों में इस प्रकार लिखा है–

" मीन लग्ने दक्षिणस्यां सुखी लोकोन्न संग्रह :।
मध्यदेशे धान्यनाशः छत्रभंगः क्वचिद्भवेत् ॥"

वर्षप्रवेश कुण्डली में सूर्य मं. चं. बुध का लग्नन्न होना वर्ष में प्राकृतिक-आपदा से कुछ स्थानों पर जनधन हानि का संकेत देता है। मध्यभारत में खड़ी फसलों को हानि हो, दक्षिणी देशों में कहीं छत्रभंग शासनसत्ता में परिवर्तन हो।

जगत् लग्न कुण्डली से प्राप्त घटनाचक्र का संकेत–

चैत्र शुक्ल द्वितीया (तात्कालिक तृतीया) बुधवार को कृत्तिका नक्षत्र एवं आयुष्मान् योग के समय ५६ घटी ८ पल पर (१४ अप्रैल को प्रातः ४ बजकर ३० मि. पर वृषस्थ चन्द्र के समय सूर्य मेष राशि में प्रवेश करेंगा, तात्कालीन लग्न कुम्भ है।

जगत् लग्न कुण्डली में शनि यद्यपि लग्नेश है, गुरु दृष्ट भी है, पुनरपि जगत् लग्न कुण्डली में केन्द्रस्थ क्रूरग्रह चिन्त्य हैं। शनि की उच्चसूर्य पर नीच दृष्टि है, सूर्य, गुरुदृष्ट है। ज्येष्ठ, श्रावण, माघ, फाल्गुन, चैत्र इस वर्ष विशेष घटनापूर्ण होंगे। मकर, कुम्भ, वृष, सिंह, वृश्चिक एवं धनु प्रभाव राशि क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाले देश जर्मनी, ब्रिटेन (आयरलैण्ड), मध्य एशिया, ईरान, अफ्रीका, अफगानिस्तान, फ्रांस, इटली, अमेरीका, अरब राष्ट्र, आस्ट्रेलिया, बंगलादेश एवं भारत आदि में कहीं प्राकृतिक प्रकोप तूफान, भू स्खलन, भूकम्प आदि से जनधन हानि हो, कहीं अग्निकाण्ड एवं राजनैतिक उथल-पुथल हो। कहीं किसी विशिष्ट व्यक्ति की हत्या किंवा यान-दुर्घटना से पदरिक्त हो। कहीं विवशता की स्थिति में किसी देशविशेष के विशिष्ट व्यक्ति को पदत्याग करने के लिए विवश होना पडेगा। कुम्भ प्रभाव राशिगत रूस में विशेष राजनैतिक संकट के बाद नए संविधान के संरक्षण में नया जीवन मिलेगा जिससे यहाँ की राजनैतिक अस्थिरता प्रायः समाप्त होगी।

इसवर्ष शनि की दृष्टि–सं. २०५१ वि. में शनि की दृष्टि उत्तरी गोलार्ध के देशों पर है। उ. भू भाग स्थित देशों में कहीं युद्ध विभीषिका बनेगी। उत्तरी गोलस्थ देशों में कहीं भूकम्प समुद्री तूफान, चक्रवात, दुर्भिक्ष, टिड्डीदल, अग्निकाण्ड किंवा ज्वालामुखी आदि विस्फोट से कहीं भयंकर हानि होगी। किसी विशिष्ट व्यक्ति के निधन से सं. २०५१ मध्य के लगभग विश्व स्तर पर शोक व्याप्त होगा। किसी विशिष्ट देश की शासन सत्ता में परिवर्तन भी ऐतिहासिक घटना वाला होगा। शनि दृष्टि का फल शास्त्रों में इस प्रकार लिखा है–

"शनैश्चरः क्रमात्पश्यन् तत्तद्देशान् प्रपीड़येत्।
दुर्भिक्ष-देशभङ्गाद्यैः विग्रहो राजविड्वरैः ॥"

सं. २०५१ की ग्रहपरिषद एवं गोचर ग्रहस्थिति का विश्व पर प्रभाव

जिस तरह पृथ्वी पर लोकतान्त्रिक-राज्य की स्थापना के लिए प्रधानमंत्री आदि के चुनाव होते हैं और उन निर्वाचित व्यक्तियों के गुण-कर्म, स्वभाव-योग्यता का प्रभाव उनके अधिकृत क्षेत्र पर पड़ता है, इसी प्रकार अखिलेश्वर प्रभु की इच्छा से निर्मित अकाशीय-शिशुमार चक्रस्थ ग्रहों की परिषद् में संसार चक्र को चलाने के लिए प्रतिवर्ष दिव्य एवं अद्भुत शक्तिमती आकाशी कौंसिल का निर्माण होता है इस आकाशीय कौंसल में ग्रहों की शुभाशुभ प्रकृति के अनुकूल संसार में जो उलटफेर एवं अघटित घटनाएं घटित होती हैं उन्हें अपनी तुच्छमति के अनुसार त्रिकालज्ञ ज्योतिषियों के ग्रन्थों के आधार पर यहां संक्षेपतः कुछ लिखने की चेष्टा कर रहे हैं।

सं. २०५१ वि. की ग्रह परिषद् के अनुसार इस वर्ष ग्रह परिषद् के निर्वाचन में ६ पद शुभग्रहों को और ४ पद अशुभ ग्रहों को प्राप्त हैं। परन्तु विचारणीय यह है, कि इस वर्ष का राजा चन्द्रमा स्त्री ग्रह है, जिसे ग्रहपरिषद् ने वर्षेश एवं रसेश रूप में स्वीकार किया है। साथ ही विचारणीय बात यह भी है, कि-इसवर्ष का मन्त्रीपद नपुंसक ग्रह किंवा बालग्रह बुध को प्राप्त हुआ है साथ ही इसे ग्रह परिषद् ने वर्षा-पानी का आधिपत्य भी प्रदान किया है। अतः स्पष्ट है कि स्त्री एवं नपुंसक किंवा बाल ग्रह के हाथ इसवर्ष की बागडोर है। इसवर्ष स्त्रियों का वर्चस्व बढ़ेगा। स्त्रीशासित देशों में विशेष रूप से हिलडुल होगी। प्रतिष्ठित देशों के प्रधान-पुरुषों को विशेष समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। अपने ही व्यक्ति उनकी प्रतिष्ठा के लिए सरदर्द बनेंगे, किसी देश में निजी पार्टी के लोग प्रधानपद में परिवर्तन कर देंगे जिससे उस देश विशेष में ऐतिहासिक घटना कहा जाएगा। क्रूर ग्रह शनि को सस्येश एवं नीरसेश पद प्राप्त हुए है और मंगल को फलेश एवं सेनापति का पद प्राप्त है, ये दोनों परस्पर शत्रु है। संकेत मिलता है कि कहीं छत्र भंग होगा। कहीं लोकसभा भंग होगी, किंवा शासन सत्ता में परिवर्तन होगा। कुछ स्थानों पर राजनैतिक हत्याकाण्ड एवं प्राकृतिक प्रकोप दुर्भिक्ष आदि से हानि भी होगी।

संवत् के आरम्भ में उच्चस्थ सूर्य, शुक्र के साथ सम्बन्ध बनाता है, इन पर गुरुदृष्ट शनि एवं गुरु की दृष्टि है अतः देश के कुछ राष्ट्रों में सुधारात्मक प्रतिक्रिया बल पकड़ेगी, कुछ राष्ट्र निरस्त्रीकरण की और प्रवृत्त होंगे। कुछ प्रगतिशील राष्ट्र अपने राष्ट्र की प्रगति हेतु निरस्त्रीकरण की प्रक्रिया को विशेष महत्त्व न देंगे। ३० अप्रैल को यूरेनस वक्री होगा, और इसीदिन वक्री प्लूटो विशाखा के चतुर्थचरण में प्रवेश करेगा, इसीदिन सूर्य-बुध की कलात्मक युति भी होगी, परिणामस्वरूप कुछ देशों में निरस्त्रीकरण किंवा अन्य किसी विशेष मुद्दे को लेकर गतिरोध पैदा होगा, जोकि विश्वस्तरीय चर्चा का विषय बनेगा। इस समय कुछ प्रमुख देश एवं कुछ प्रगतिशील देशों में वैमनस्य पैदा हो, जोकि कुछ अरसा आगे तक चलेगा। इस समय इराक पर अमेरिका का अंकुश भी चर्चा का विषय बन सकता है, अन्ततः अमेरीका की नीति से अमेरीका की प्रतिष्ठा को धक्का लगेगा।

आगे चान्द्रमास वैशाख में पांच मंगलवारों का आना भी कहीं शासन सत्ता में परिवर्तन एवं कहीं किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पदरिक्त होने का संकेत देता है।

वैशाख में बुध-केतु की कलात्मक युति भी कहीं यान दुर्घटना में हानि, प्राकृतिक प्रकोप

से क., रोगभय एवं कहीं युद्धभय से अशान्ति का संकेत करती है।

. मई से १७ मई तक बुध-शुक्र-केतु पर वक्री राहु एवं वक्री प्लूटो की दृष्टि होने से कहीं खड़ी फसलों को हानि पहुंचेगी; कहीं मंहगाई से साधारण जनता में असन्तोष दृष्टि गोचर होगा। इससे पहिले १५ मई को सू. के. की अंशात्मक युति, मेष के मंगल पर शनि की दृष्टि भी है, अतः कुछ नए रोगों से जनता को कष्ट हो कहीं खड़ी फसलों को भारी हानि हो।

१८ मई को राहु तुलाराशि में आकर राहु के साथ मेल करेगा, इस समय मेष राशि के मंगल पर राहु-गुरु (जोकि दोनों वक्री हैं) की दृष्टि है, अतः किसी प्राकृतिक आपदा से विश्व में कहीं भारी जन धन हानि होगी। रुस, चीन, पाकिस्तान, श्रीलंका, नेपाल, ब्रिटेन, द. अफ्रीका, सोमालिया, ईराक आदि यावन देशों में कहीं आन्तरिक-अशान्ति कहीं जनान्दोलन, कहीं हिंसक घटनाओं का चक्र चलेगा। तुला के राहु की मंगल पर दृष्टि कहीं भयंकर सूखा करेगा।

२३ जून को शनि कुम्भराशि में वक्री होगा। इस प्रकार २३ जून से १ जुलाई तक शनि-राहु-केतु-प्लूटो- यूरेनस-गुरु ये मेदिनी ग्रह वक्री स्थिति में एक साथ चलेंगे;–इस अवधि में विश्व के कुछ राष्ट्र विकट-समस्या में उलझ सकते हैं। कहीं युद्धमय वातावरण से अशान्ति का वातावरण बनेगा। किसी प्राकृतिक आपदा भूकम्प आदि विस्फोट आदि से भी जन-धन हानि संभावित है। इस समय किसी वरिष्ठ व्यक्ति के अपदस्थ किंवा निधन का समाचार मिलेगा। ग्रहस्थिति के अनुसार संवत् के मध्य में अमेरीका एवं उसके सहयोगी कुछ राष्ट्र मानवाधिकार संरक्षण की आड़ में कुछ प्रगतिशील देशों की आन्तरिक-समस्याओं में दखल देंगे, जिससे स्थिति बिगड़ेगी।

गुरु, जो कि २८ फरवरी' ९४ से वक्री चल रहा था २ जुलाई को मार्गी हो जाता है;–इस समय विश्व की कई समस्याओं का समाधान होने के आसार बनेंगे।

५ जुलाई को शुक्र सिंह राशि में दाखल होगा। सिंह राशि के शुक्र पर शनि एवं मंगल की दृष्टि है, जो कि ३१ जुलाई तक चलेगी। इस समय उत्तरी गोलार्ध के कुछ भागों में वर्षा की कमी अनुभव होगी, कुछ स्थानों पर भयंकर बाढ़ आदि प्राकृतिक आपदा से जनधन हानि के समाचार मिलेंगे। कुछ स्थानों पर भयंकर वायुवेग चक्रवात आदि से भी हानि हो। इस बीच १६ जुलाई को कर्क संक्रान्ति शनिवारी होने से प्रधान-नेताओं के लिए समय कुछ ठीक नहीं मालूम देता।

७ अगस्त को मंगल मिथुन में आकर मकर प्रभा... राशि वाले भारत आदि राष्ट्रों के लिए नई समस्याओं को जन्म देगा, प्रधान नेता को कुछ नए कानून बनाने पड़ें।

८ से २१ अगस्त तक कार्तिक शुक्ल पक्ष में तिथिक्षय होने से आगामी कार्तिक तक कहीं छत्रभंग, किसी राष्ट्र में शासन सत्ता में परिवर्तन किसी प्रथित-व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त होने का संकेत मिलता है।

"श्रावणे शुक्ल पक्षे च क्षीणा क्वदापि तिथिर्भवेत्।
तदैव कार्तिक मासे छत्रभंग स्तदा भवेत् ॥"

इसी बीच मंगलवारी सिंह संक्रान्ति भी किसी देश विशेष के प्रधान नेतृत्व के लिए भयावह स्थिति को जन्म देने वाली है। आगे अगस्त एवं २० सितम्बर तक का समय विश्व में प्रायः ठीक रहेगा।

२१ सितम्बर को मंगल अपनी नीच राशि कर्क में आकर पाकिस्तान के सिन्ध एवं बलूच प्रधानक्षेत्र में अशान्ति का कारण बनेगा। इस समय अफ्रीकन देश, आयरलैण्ड एवं बंगलादेश आदि मुस्लिम देशों में अशान्ति बढ़ेगी।

२ अक्तूबर को यूरेनस नेपच्यून दोनों मार्गी हो रहे हैं, साथ ही ४ अक्तूबर को शुक्र राहु की कलात्मक युति और ७ अक्तूबर को गुरु राहु की अंशयुति होगी। अक्तूबर को ९ अक्तूबर के बाद रा. के. बु. शु. शनि ये ग्रह वक्री हैं, जोकि लगभग अक्तूबर के अन्त तक रहते हैं। इस समय मंहगाई बढ़ेगी, अनेक अकल्पित उलटफेर की राजनीति से विश्व के कुछ देश प्रभावित होंगे।

१७ अक्तूबर से ४ नवम्बर तक सूर्य-गुरु-शुक्र-राहु ये चारों ग्रह तुला राशि में एक जगह रहते हैं।–यह योग चीन, तिब्बत, मिश्र, टकी, ईराक, ईरान, जापान एवं मुस्लिम देशों में हिंसात्मक घटनाओं को जन्म देगा। कहीं दो देशों में स्थिति उत्तरोत्तर बिगड़ेगी, युद्धमय वातावरण से जन जीवन कहीं।

४ नवम्बर को गुरु अस्त होगा और ७ नवम्बर को शुक्र अस्त होगा। ७ नवं. को ही सू. रा. की कलायुति होगी। यह सुभिक्ष एवं सुख शान्ति के प्रतीक हैं। २० नवम्बर के लगभग बुध-राहु एवं सूर्य-प्लूटो की युति होगी, यहां से विश्व की राजनीति में विशेष घटनाचक्र चलना प्रारम्भ होगा।

२२ नवम्बर से ८ फरवरी सन् १९९५ ई. तक शनि-मंगल का दृष्टि-सम्बन्ध बना रहेगा। मंगल अपने मित्र सूर्य क्षेत्र में हैं, शनि भी अपने क्षेत्र में प्रबल हैं। इस समय विश्व के कुछ राष्ट्रों में भयंकर जन धन हानि के योग हैं। कहीं युद्धज्वाला भड़केगी, कहीं तूफान, भूकम्प, आदि प्राकृतिक प्रकोप से विशेष विनाश होगा। इस समय किसी देश विशेष में राजनैतिक उलटफेर किसी नेता की हत्या या निधन का समाचार मिलेगा। यह समय उत्तरी गोलार्ध के देशों एवं प्रतिष्ठित व्यक्तियों के लिए नेष्ट है।

आगे १२ फर' ९५ से १३ मार्च' ९५ ई. तक शनि-सूर्य एक साथ चलेंगे और इन पर मंगल की दृष्टि भी है। ३ मार्च को प्लूटो मार्गी हो जाता है; यह ग्रहस्थिति भी विश्व की राजनीति एवं सामाजिक स्थिति के लिए सुखद नहीं है। स्पष्ट है, कि-२२ नवम्बर से संवत् के अन्त तक की ग्रहस्थिति विशेष घटनापूर्ण रहेगी, जिसमें प्राकृतिक-प्रकोप से हानि युद्धोन्माद, राजनैतिक-उलझनें, राजनैतिक-हत्याएं एवं प्रतिष्ठित व्यक्तियों के लिए उलझनें ही उलझनें दिखाई देती हैं।

यूरोप के देशों पर ग्रहगोचर का प्रभाव

सन् १९९४ की यूरोपीय-कुण्डली में धनस्थान में गुरु, पराक्रम स्थान में राहु शुभ है। यहाँ आर्थिक स्थिति के लिए सुधारात्मक प्रयोग होंगे। लेकिन चतुर्थ स्थानेश गुरु की शनि पर दृष्टि है तथा शनि, राहु को देख रहा है। अतः कुछ राष्ट्रों में आन्तरिक कलह-क्लेश बढ़ेंगे। ब्रिटेन में आयरलैण्ड की समस्या उभर कर सामने आएगी। यूरोपीय-देशों में एकता के भाव की कल्पना, एक बाजार की कल्पना को भी धक्का पहुंचेगा। अरब राष्ट्रों एवं अफ्रीकी गणराज्यों किंवा मुस्लिम राष्ट्रों के प्रति अमेरीका-ब्रिटेन की नीति से अस्पष्ट एवं उलझनपूर्ण रहेगी।

सन् १९९५ ई. की ग्रहस्थिति के अनुसार सिंह का मंगल एवं कुम्भ का शनि, आपस में समसप्तक योग बना रहे हैं; यह योग २२ नवम्बर १९९४ से प्रारम्भ होकर ८ फरवरी तक चलेगा। जिसका प्रभाव सं. २०५१ के अन्त तक रहेगा। यह समय यूरोपीय राष्ट्रों के लिए भयंकर परिस्थितियों वाला रहेगा। कुछ राष्ट्रों में आन्तरिक उलझनें विकटरूप धारण करेंगी। कहीं भयंकर भूकम्प, तूफान, अग्निकाण्ड, बम-विस्फोट, यान दुर्घटना किंवा युद्धभय से अशान्ति व्याप्त हो। जार्जिया आदि में किसी भयंकर युद्ध का सूत्रपात हो सकता है। ग्रहस्थिति के अनुसार यूरोप एवं विश्व के कुछ अन्यदेश बोस्नियाई मुस्लिम-कट्टर पन्थियों के हमले का निशाना बनेंगे, जिसके पीछे गुप्तरूप से ईरान का हाथ रहेगा; स्थिति आगे विकटरूप धारण कर सकती है। इसवर्ष संयुक्त राष्ट्र को ईराक पर से प्रतिबन्ध हटाने को बाधित होना पड़ेगा। सन् १९९४ मई के बाद ही इस बारे में संयुक्त राष्ट्र को सोचना होगा।

मुस्लिम राष्ट्रों पर गोचर ग्रहस्थिति का प्रभाव–

हिजरी सन् १४१४ (२२ जून' ९३ से १० जून' ९४ तक) की ग्रहस्थिति के अनुसार धनस्थान पर गुरु की नीच दृष्टि एवं धनेश शनि का मंगल के साथ समसप्तक योग मुस्लिम-देशों के लिए भयावह ही है। इस समय कुम्भ और सिंह राशि के प्रभाव क्षेत्र में आने वाले देश भयंकर प्राकृतिक आपदा में उलझेंगे। बंगलादेश-अफगानिस्तान, कुवैत, ईराक, ईरान, पाकिस्तान, अरब देश में कहीं भूकम्प, तूफान, समुद्री एवं वायुयान दुर्घटना से हानि होगी। कहीं शासन सत्ता में परिवर्तन सुनिश्चित होगा। यूरोप के देशों की नीति मुस्लिम राष्ट्रों के लिए स्वस्थ एवं प्रगति देने वाली नहीं कही जा सकती। बोस्निया, मलेशिया, अफगानिस्तान, बंगलादेश, सऊदी अरब, अरब अमीरात एवं अफ्रीकन देशों के लिए भी यह वर्ष सुखद घटनाओं वाला प्रतीत नहीं होता। पाकिस्तान के सिन्ध एवं बलोचिस्तान भाग में शान्तिप्रद घटनाओं वाला प्रतीत नहीं होता। अशान्ति बढ़ेगी। प्रान्तीय-दलगत किंवा जातीय या धार्मिक उन्माद से कहीं स्थिति बिगड़ेगी। कहीं आन्तरिक अशान्ति से फौजी या राष्ट्रपति शासन का सूत्रपात होगा।

हिजरी सन् १४१५ की ग्रहस्थिति के अनुसार कन्या प्रभाव राशि वाले मुस्लिम राष्ट्र में सन् १९९५ फर. से मार्च के अन्त तक कहीं सत्ता में नाटकीय परिवर्तन आए, एवं प्रधाननेता के लिए स्थिति विषम हो जाएगी। कहीं आन्तरिक क्रान्ति से गृहयुद्ध की सी स्थिति से जनता का ध्यान हटाने के लिए कोई राष्ट्र समीपी राष्ट्र की सीमाओं पर अशान्ति का वातावरण बना सकता है किसी मुस्लिम राष्ट्र में प्रधान नेता की हत्या या निधन से शोक व्याप्त होने का योग है।

भारत एवं भारत सरकार

स्वतंत्र भारत कुं. | स्वतंत्र भारत का ४७ वा वर्ष | स्वतंत्र भारत का ४८ वां वर्ष

स्वतन्त्र भारत की जन्मकालिक ग्रहस्थिति के अनुसार लग्नस्थ (वृषस्थ) राहु एवं वृश्चिकस्थ केतु के दाईं तरफ ही सभी ग्रह होने से विश्व के महानतम इस गणतन्त्र का उदय 'कालसर्प योग' में हुआ है। स्पष्ट है, के अनेकों राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय समस्याएं इसे विरासत में मिली हैं, जिन्हें इस देश के सुयोग्य कर्णधार पूर्णक्षमता के साथ हल करने में लगे हैं, लेकिन कुछ नई समस्याएं भी राहु-केतु-यूरेनस-नेपच्यून-प्लूटो-शनि-मंगल के राशिचार एवं वक्र-मार्ग के आधार पर प्रतिवर्ष सामने आ खड़ी होती हैं, जिनका समाधान

पेचीदा तो होता ही है, लेकिन प्रधान नेता के लिए परीक्षा की घड़ी भी। समयानुसार कुछ समस्याओं का रूप बदल अवश्य है, इन सब समस्याओं के बारे में ग्रहस्थितिजन्य विश्लेषण हम संक्षेप में प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहे हैं।

१५ अगस्त' ९४ के स्वतन्त्र भारत की ग्रहस्थिति के अनुसार शनि वक्री होकर कुंभस्थ है। मुंथेश-गुरु मुंथा से सप्तमस्थ है एवं चतुर्थेश आयेश-मंगल के साथ सम्बन्ध बनाए हुए है। यह ग्रहस्थिति भारत की स्वतन्त्रता एवं अक्षुण्णता के लिए सुखद ही है, परन्तु वर्ष लग्न में दशमेश-शुक्र, शत्रुस्थान में चन्द्र के साथ सम्बन्ध कर रहा है। संकेत मिलता है, कि मई १९९४ से पूर्व ही भारत के वरिष्ठ शासक के लिए समय विशेष उलझन पूर्ण है, अपने ही व्यक्तियों की राजनैतिक महत्त्वाकांक्षा एवं देश की राजनैतिक धार्मिक समस्याएं इन्हें ऐसे चक्रव्यूह में फंसा देंगी, जहां से निकलना संभव न होगा; अन्ततः सत्तातन्त्र में विशेष परिवर्तनों का संकेत मिलता है।

१० अगस्त से जनवरी' ९४ के लगभग प्रथम सप्ताह तक मुंथेश-गुरु अतिचारी रहता है; जिसका फल शास्त्रों में इस प्रकार लिखा है–

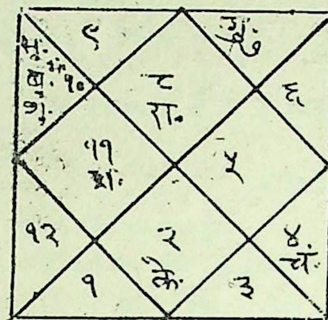
"अतिचारं गते जीवे वक्रीभूते शनैश्चरे।
हा हा भूतं जगत्सर्वं रुण्डमाला महीतले ॥"

इस फलादेश के अनुसार अगस्त से जनवरी' ९४ तक का समय भारत की सत्तारूढ़ पार्टी एवं प्रधाननेताओं के लिए विशेष उलझनपूर्ण मालूम देता है। इस समय सीमा प्रान्तों पर शत्रुदेश की गतिविधि से भी सावधान रहना चाहिए।

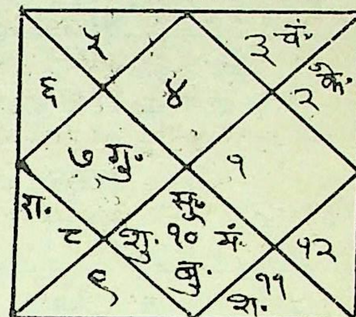
स्वतन्त्र भारत के ४८वें वर्ष की ग्रहस्थिति पर ध्यान दें। वृष लग्न में नववर्ष का उदय हुआ है। स्वतन्त्र भारत का जन्म लग्न एवं ४८ वें वर्ष लग्न (दोनों) का लग्न वृष है। इस प्रकार ४८ वां वर्ष भारत के लिए द्विजन्मा जैसा योग बनाता है। मुन्था द्वादशस्थ है। मुन्थेश-मंगल, धनस्थान में है। चन्द्रमा नीच होकर वक्री शनि से दृष्ट है। स्पष्ट है, कि-शासनतन्त्र के समक्ष विविध कूटनीतिक एवं धार्मिक-समस्याएं उपस्थित होंगी, जिससे स्थिति विकटरूप धारण करेगी। धर्मोन्माद किंवा जातीय दंगे कुछ प्रान्तों को विशेषरूप से प्रभावित करेंगे। अयोध्या रामजन्म भूमि की समस्या की भान्ति अन्य कुछ समस्याएं सामने आएगी, जिससे केन्द्र में प्रधान नेता ऐसे धर्मसंकट में फंसेंगे; जिसमें से निकलना संभव न होगा; और देश में राजनैतिक संकट अनुभव होने लगेगा। इसवर्ष पाकिस्तान काश्मीर को लेकर किसी एक और युद्ध की कल्पना कर सकता है, परन्तु यदि ये भूल पाक दोहराता है तो उसे भारी कीमत चुकानी पड़ेगी :– ऐसा राहु-[illegible] स्थिति से स्पष्ट होता है। वर्ष लग्नेश शुक्र, नीच होने से यह वर्ष गंभीर चुनौतियों वाला मालूम देता है। सर्वज्ञ तो प्रभु है।

भारतीय गणतन्त्र की ग्रहस्थिति–४४ वें वर्ष में चन्द्र को छोड़कर शेष सारे ग्रह राहु एवं केतु के बीच एक तरफ आ रहे हैं, यह योग बहुत ही कठिन परिस्थितियों का संकेत देता है। इस समय कुछ प्रान्तों में शासन सत्ता (मन्त्रि मण्डलों) में परिवर्तन होंगे और आश्चर्य नहीं, यदि कुछ राज्य भयंकर चिन्ताजनक परिस्थिति में आ जाएं और मार्च' ९४ के बाद कुछ वर्ग ऐसी रूपरेखा बनाएंगे जिससे आगे चलकर कुछ प्रान्तों में धर्म या किसी अन्य कारण से अशान्ति एवं जातीय दंगे हों, जिसमें किसी पार्टी विशेष का हाथ रहे, एदर्थ सावधान रहना आवश्यक है। इस समय केन्द्र की नीति विपक्षी पार्टियों की प्रतिष्ठा धूमिल करने की एवं अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने वाली रहेगी। परन्तु स्थिति सत्तारूढ़ दल के लिए विशेष उलझन पूर्ण बन जाएगी–ऐसा ग्रहगति से संकेत मिलता है।

४४ वां भारतीय गणतंत्र



४५ वां भारतीय गणतंत्र



४५ वें वर्ष की ग्रहस्थिति के अनुसार वर्ष लग्नेश-चन्द्र द्वादशस्थ है, जोकि धर्म निरपेक्षता के लिए नेताओं को चिन्तित रखेगा। मुंथेश मंगल-एवं सूर्य शत्रुक्षेत्र में सप्तमस्थ हैं। योजना स्थान-पंचम-भाव में राहु पर शनि की विशेष दृष्टि है।–ग्रहस्थिति कुछ चिन्ताजनक पहलुओं का संकेत देती है। दुर्भाग्यवश काश्मीर समस्या की तलवार देश के सुयोग्य कर्णधारों के सिर पर लटकती रहेगी इसके अलावा धर्म-राजनीति से सम्बन्धित कई समस्याएं और सामने आएंगी, जिससे स्थिति बिगड़ सकती है। काश्मीर, धर्म, कुछ नेताओं की राजनीतिक महत्वाकांक्षा-कुछ ऐसे ही कारण होंगे जिनसे काफी हानि पहुंचने की ग्रहस्थिति है। उपमहाद्वीप में धर्म आदि कुछ उपरोक्त कारण होंगे, जिनसे कहीं अधिक [illegible] है। लेकिन गुरु की दशमभाव पर दृष्टि एवं चतुर्थभाव में स्थिति गणतन्त्र को अक्षुण्ण रखेगी,–इसमें सन्देह नहीं।

संवत २०५१ की गोचर ग्रहस्थिति–इस वर्ष ग्रहपरिषद का राजा स्त्री यह चन्द्र को

रसेश पद भी प्राप्त है। मन्त्री पद नपुंसक किंवा बालग्रह बुध को प्राप्त है। बुध वर्षा पानी का स्वामी भी है। इस वर्ष सभी नपुंसक ग्रहों के हाथ वर्ष की बागडोर है। क्रूरग्रह मंगल को भी महत्वपूर्ण प्रतिरक्षा सोनाधिपति का पद प्राप्त है, मंगल स्वतः युद्धप्रिय है अतः इसवर्ष सीमाप्रान्तों पर विशेषरूप से सतर्क रहना होगा। जब भी शनि-मंगल परस्पर आमने सामने आएंगे तभी देश के अन्दर शान्तिभंग होगी। आकाशीय-ग्रह परिषद् में वर्षेश एवं मन्त्रीपद अशक्त-स्त्री एवं बाल किंवा नपुंसक ग्रह को प्राप्त होने से इसवर्ष भी शासन व्यवस्था सुचारुरूप से चलने में सन्देह है।

संवत् के आरम्भ में उच्च सूर्य का शुक्र से मेल है इन पर गुरु एवं गुरु दृष्ट शनि होने से अनेक आपदाओं के बाबजूद भी देश में नई प्रगतिप्रद योजनाएं लागू होंगी। देश की अर्थव्यवस्था में आश्चर्यजनक सुधार होंगे।

३० अप्रैल को यूरेनस वक्री होगा, वक्री प्लूटो विशाखा के चतुर्थ चरण में भी इसीदिन आता है, इसीदिन सूर्य-बुध की कलात्मक युति भी है। ग्रहस्थिति से संकेत मिलता है, कि-देश में कुछ विशेष समस्यात्मक पहलुओं पर विचार होगा। काश्मीर की स्थिति को बिगाड़ने में विदेशी हाथ, दिल्ली का कुप्रबन्ध एवं घाटी के लोगों की गलत धारणा ये तीनों स्थिति को बिगाड़ने में कारण हैं, जिन पर यदि इसवर्ष उपेक्षा रही तो स्थिति हाथ से बाहर होगी। अतः मेदिनी ग्रहस्थिति के हिसाब से भारत के नायक इस तरफ विशेष ध्यान देंगे, विशेष राजनैतिक दिशा पर विचार होगा, जिसकी पहुंच भारत से विदेशों तक पहुंचे।

इसवर्ष वैशाख चन्द्रमास में पांच मंगलवारों का होना कहीं प्रान्तीय शासन तन्त्र में एवं केन्द्र में विशेष परिवर्तनों का संकेत देता है।

"यत्रमासे महीसूनोः जायन्ते पंचवासराः।
रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्र भंगस्तदा भवेत्॥"

१८ मई को राहु तुला राशि में आकर राहु के साथ मेल करेगा। इस समय मेषस्थ-मंगल पर वक्री राहु-गुरु की दृष्टि है। अतः किसी प्राकृतिक आपदा से किसी उत्तरी किंवा दक्षिणी प्रान्त में भारी हानि होगी। तुला राशि के राहु की मंगल पर दृष्टि कहीं भयंकर सूखा बनाएगी। इससे पहिले १५ मई के लगभग सूर्य-केतु की अंशात्मक-युति, मेष के मंगल पर शनि की दृष्टि होने से देश में नए रोगों से जनता को कष्ट होगा। कहीं खड़ी फसलों को हानि भी पहुंचेगी।

२३ जून को कुम्भ राशि में शनि वक्री होगा; २३ जून से १ जुलाई तक शनि-राहु-केतु-प्लूटो-यूरेनस एवं गुरु-ये ग्रह वक्र स्थिति में चलेंगे। इस अवधि में कुछ प्रान्तों में सुरक्षा प्रशासन एवं आंतकवादियों के बीच झड़पें होंगी। इस समय आतंकवाद के विरुद्ध व राष्ट्रवाद के पक्ष की वकालत करने वाले कुछ दल बिखर जाएंगे। महाराष्ट्र, बिहार, बंगाल के कुछ क्षेत्रों में इन दिनों कुछ उपद्रव संभव है, लेकिन शासक स्थिति को संभालने में कामयाब रहेंगे। जनू-जुलाई में कहीं प्राकृतिक आपदा भूकम्प किंवा धर्मिक-क्रिया कलाप से प्रेरित राजनीति में भूचाल आएगा जिससे अनेक स्थानों पर भारी उपद्रव संभव हैं;-इस समय शासनतन्त्र को विशेष सावधानी से काम लेना होगा।

८ से २१ अगस्त के मध्य (श्रावण शुक्ल पक्ष में) तिथिक्षय होने से कार्तिक मास तक किसी विशिष्ट व्यक्ति के निधन से शोकव्याप्त होगा। भारत के उत्तरी क्षेत्र में भूकम्प के झटके आएं, दक्षिणी पठार भूकम्पोन्मुख रहेगा; ग्रहस्थिति के अनुसार आगामी समय किंवा आगामी वर्षों में भूकम्प आदि प्राकृतिक आपदाओं से जनधन हानि की विशेष घटनाएं घटित होंगी।

२१ सितम्बर को मंगल अपनी नीचराशि-कर्क में आकर विरोधी राष्ट्रों के साथ सम्बन्ध कुछ बिगड़ें सीमा प्रान्तों पर झगड़े होंगे। ९ अक्तूबर के बाद रा. के. बु. शु. लगभग अक्तूबर के अन्त तक वक्र चलेंगे; इस समय प्रान्तीय-समस्याएं विकट होंगी।

इस वर्ष के पूर्वार्ध की ग्रहस्थिति के अनुसार मध्य एशिया में नए गणराज्यों के साथ सम्बन्ध अवश्य सुदृढ़ होंगे, भारत की विदेश नीति से खाड़ी देशों और मध्य एशिया क्षेत्र में भारत की छवि निखरेगी।

२२ नवम्बर से ८ फरवरी' ९५ ई. तक शनि-मंगल का दृष्टि सम्बन्ध बना रहेगा। इस समय भारत के कुछ प्रान्तों में किसी विरोधी राष्ट्र की मदद से धार्मिक कट्टर पंथियों को मदद मिलेगी, जिससे कुछ क्षेत्रों में स्थिति विषम होगा। काश्मीर में इस समय कठिन समस्या का सामना करना पड़ेगा। द. भारत में कलह क्लेश बढ़ेंगे, जिसका प्रभाव उत्तर भारत पर पड़ेगा। सीमा प्रान्तें पर वातावरण अशन्त होगा।

नवम्बर से मार्च तक की अवधि में कुछ राजनीतिज्ञों का सत्तामोह भंग होगा। किसी विशिष्ट-प्रतिष्ठित व्यक्ति का पदरिक्त होगा। इस वर्ष में कुछ बड़े राज्य दो भागों में विभक्त होंगे एवं कुछ महत्वपूर्ण शहर को स्वतंत्र राज्य का दर्जा मिल सकता है। निर्यात के क्षेत्र में शनि मंगल राहु-प्लूटो की पोजीशन को दृष्टि में रखते हुए मालूम होता है कि धर्म के नाम पर इस वर्ष फिर उपद्रव होंगे, जिससे जन-धन की होनी होगी; परन्तु यह ध्यान देना नागरिकों का कर्तव्य हो जाता है, कि जब धर्म के नाम पर मौकापरस्त लोग जीवन या राष्ट्र के महत्वपूर्ण स्थलों को प्रभावित करें तो राष्ट्र को महत्व देना चाहिए क्योंकि विशुद्ध धर्मनिरपेक्ष विधिसंचना का सम्मान सर्वोपरि है।

२२ नवम्बर से संवत् के अन्त तक का समय भी कोई सुखद नहीं। यह समय प्राकृतिक

प्रकोप से हानि कहीं युद्धोन्माद, राजनैतिक उलझनें व राजनैतिक हत्याएं एवं इस अवधि में प्रतिष्ठित राजनीतिज्ञों के समक्ष समस्याएं ही सस्याएं होंगी।

प्रमुख राजनीतिक दल –

कांग्रेस (ई.) के जन्माङ्ग के अनुसार इस वर्ष इस पार्टी के लिए समय विषमताओं से भरा हुआ है। आपसी विवाद एवं नेताओं की महत्वकांक्षा पदलिप्सा आदि ऐसे कारण होंगे जिनसे स्थिति बिगड़ेगी एवं पार्टी में समय से पूर्व ही महत्वपूर्ण परिवर्तन होंगे। लग्नेश गुरु की लग्न से दृष्टि हट चुकी है अतः इस पार्टी की प्रतिष्ठा को धक्का लगेगा परन्तु पुनः संभल जाने के योग हैं।

कांग्रेस के प्रमुख नेता श्री नरसिंहाराव जी की यथालब्ध कुण्डली के अनुसार संवत् २०५१ प्रारंभ होने से पूर्व ही बृहस्पति के गोचर में अष्टमस्थ होने पर विरोधी ग्रुप प्रबल होगा और यह वर्ष विशेष धार्मिक-राजनैतिक समस्याओं को लेकर उपस्थित होगा। और अपने ही लोगों की पदलिप्सा के कारण ये ऐसे चक्रव्यूह में फंसेंगे जहां से रास्ता पाना कठिन प्रतित होता है इस समय विशेष सावधानी से राजनैतिक विषयों पर निर्णय लेना चाहिए।

भाजपा अपनी प्रतिष्ठा को बढ़ाने में सफल रहेगी। कर्नाटक, उ. प्र., दिल्ली, राजस्थान एवं कुछ अन्य स्थानों पर भी अपने वर्चस्व को बढ़ाऐगी। जनता दल की एकता मार्च १९९४ के बाद जून तक पुनः अनेकता में बदल जाएगी। अन्य पार्टियों का आपसी सहयोग भी राष्ट्रीय विकल्प न बन सकेगा।

भारत की जलवायु एवं वर्षा–इस साल वर्षा पानी का स्वामीं (मेघेश) बाल ग्रह बुध है, अतः समयानुसार अभीष्ट वर्षा कारक न होगा। परन्तु रोहिणी का वास समुद्र में होने से अनेकत्र ऐसे स्थलों पर भी इसवर्ष जल से राहत मिलेगी जहां वर्षा की अत्यन्त कमी अनुभव होती रहती है जैसे राजस्थान के बागड़ आदि।

आर्द्रा प्रवेश कुण्डली

सू. बु.
५ ४ ३
६ शु. २
गु. ७ रा.
मं. १ के.
८ चं.
१२
शा.

मई में बम्बई आदि प्रान्तों में वर्षा होगी। तत्पश्चात् जून १२, १२, १५, १६, १७, १२०, २२, २३ को हि. प्र. बम्बई, ट्रावनकोर एवं उ. भारत के कुछ भाग में सामान्य वर्षा हो। ५ जुलाई से १ अगस्त तक सिंह राशि के शुक्र पर वक्र शनि की दृष्टि भारत के कुछ भागों में वर्षा में रुकावट करेगी, बादल आएंगे, मामूली बूंदाबांदी करेंगे, इस समय दक्षिण भारत कुछ भाग में कहीं तक उ. भारत एवं भारम के अन्य भागों में भी व्यापक वर्षा के योग हैं।

आर्दा प्रदेश कुण्डली के अनुसार इस वर्ष कहीं भयंकर बाढ़ आए परिणाम स्वरूप खड़ी फसलों को हानि होगी। लेकिन 'शुभ' नामक योग में आर्द्रा नक्षत्र में सूर्य का प्रवेश होने से अनेकत्र सुभिक्ष का ही संकेत मिलता है। आर्द्रा प्रवेश कुण्डली में मेघेश बुध स्वस्थ है, गुरु दृष्ट है अतः इस वर्ष वर्षा अच्छी होगी।

आगे सितम्बर-अक्तूबर में गुरु-शुक्र का योग कई जगह बाढ़ का संकेत देता है। नवम्बर से मार्च' ९५ तक शनि-मंगल की पोजीशन कहीं दुर्भिक्ष एवं कहीं अतिवर्षण या प्राकृतिक प्रकोप से हानि का संकेत देती है।

भारत के कुछ प्रान्त

पंजाब–प्रभाव राशि मीन है। यहाँ कांग्रेस (इ.) का प्रभुत्व है। इन्दिरा कांग्रेस का जन्म लग्न भी मीन होने से यहाँ मीन लग्न प्रधान शासन ही सफल सिद्ध हुआ है। श्री बेअन्त सिंह जी, मुख्यमन्त्री महोदय ने यहां उग्रवाद पर नियन्त्रण पाकर जो सफलता प्राप्त की है, वह निस्सन्देह प्रशंसनीय है। अब संवत् २०५१ की ग्रहगोचर के अनुसार शनि, मंगल, राहु-प्लूटो एवं युति प्रतियुति को ध्यान में रखते हुए यह स्पष्ट मालूम देता है, कि यहां फरवरी १९९५ ई. से मई १९९५ ई. के लगभग आतंकवाद की एक और लहर आएगी, जोकि आखरी होगी। ग्रहगोचर के अनुसार परिस्थिति पूर्णतया अनुकूल आने में अभी डेढ वर्ष के लगभग और लगेगा। मेदिनी ज्योतिष के अनुसार अभी आत्म संतुष्टि की भावना को तिलांजलि देकर पूर्ववत् सुरक्षा सम्बन्धी सावधानियों पर सख्ती से अमल करते रहें;–यही सावधानी है। वैसे आर्थिक दृष्टिकोण से पंजाव में आशातीत प्रगति होगी। नए उद्योग लगेंगे। सामाजिक दृष्टि से जनता का मनोबल प्रबल होगा। यहां के प्रधाननेता को विशेष यश एवं सम्मान प्राप्त होगा; ऐसा ग्रहस्थिति से संकेत मिलता है। संवत् के उत्तरार्ध में प्रधाननेता को अचानक कष्ट योग बनता है। भगवान इन्हें दीर्घायु दें ताकि पंजाब को प्रगति एवं उचित गति मिल सके।

हरियाणा–प्रभाव राशि मिथुन है। दशम भाव का स्वामी मंगल है। संवत् के अन्त में शनि-मंगल का समसप्तक यहां के शासनतन्त्र के लिए कठिन परिस्थितियों वाला होगा। अप्रैल १९९४ के लगभग इस प्रान्त में विशेष परिवर्तन संभावित हैं। आगे अगस्त-सितम्बर में मिथुन राशि पर मंगल का संचरण सत्तारूढ़ दल के लिए चुनौतियों भरा होगा। कृषि, लघु उद्योग तथा सार्वजनिक व्यापारिक-प्रतिष्ठानों के लिए समय प्रगतिप्रद है।

हिमाचल प्रदेश–प्रभावराशि मीन है। *मीन राशि का स्वामी गुरु वक्री स्थिति में संवत्*

फरवरी' ९५ से मार्च तक की समयावधि इस प्रान्त की शासन सत्ता के लिए कठिन है। गतवर्ष की अपेक्षा प्रगत्याधायक योजानाएं क्रियान्वित होंगी। जून के बाद की ग्रह स्थिति यहां कृषकों के लिए एवं फसलों के लिए सुखद-अनुकूल नहीं है। गुरु ग्रह की स्थिति, गति के अनुसार यहां जड़ी बूटियों के विकास के लिए बड़ी योजना बनाई जाएगी, जिससे इस प्रान्त की आर्थिक स्थिति को बल मिलेगा।

काश्मीर–प्रभावराशि तुला है। गुरु वक्र स्थिति में २८ फर.' ९४ से १ जुलाई' ९४ तक चलेगा और यह तुला राशि में ही रहेगा। मई १९९४ से राहु भी तुला राशि में आएगा। इस समस्या का समाधान सहज संभव न होगा। सन् १९९४ के पूर्वार्ध में अलगाववादी-व्यक्तियों की गतिविधियां तीव्र होंगी, यह एक बहुमुखी समस्या बनकर भारत के कर्णधारों के लिए सरदर्दी बना रहेगा और इसमें राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दे शामिल होंगे। पाकिस्तान के साथ इस विषय पर विवाद तीव्र होगा, सरहदों पर युद्धविभीषिका व्याप्त हो। इस समस्या का हल मेष के बृहस्पति में ही हो सकेगा।

उत्तर प्रदेश–प्रभावराशि धनु है। गुरु-शनि-राहु की गोचर स्थिति को ध्यान में रखते हुए यहां की राजनीति उत्तर प्रदेश को स्थायी शासन प्रदान करने में निरुत्तर सी ही रहेगी। श्री मुलायम सिंह जी की ग्रहस्थिति के अनुसार सप्तमस्थ शनि इन्हें पार्टी प्रमुख के रूप में उभारेगी। लेकिन भाजपा का पक्ष प्रबल रहेगा। आगामी दो वर्षों में इस प्रान्त के विभक्त होने के योग है, यहां राजनैतिक एवं धार्मिक समस्याएं मार्च १९९४ के बाद पुनः उभरेंगी, जिससे केन्द्रीय शासन तन्त्र भी प्रभावित हुए बिना न रहेगा। इसवर्ष भी यहां राजनैतिक अस्थिरता बनी रहेगी।

दिल्ली–प्रभाव राशि वृष है। मई' ९४ तक राहु की स्थिति वृश्चिक राशि में होने से यहाँ अवांछित व्यक्तियों की गतिविधियों के कारण कुछ अशान्ति का वातावरण बन सकता है। राहु की वक्रगति को ध्यान में रखते हुए यह लिखना उचित समझते हैं, कि दक्षिणी दिल्ली में आतंकवादियों का प्रभाव गुप्तरूप से बन सकता है,, सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत रखना चाहिए। आने वाले दिन राजधानी के लिए बड़े ऐतिहात के मालूम देते हैं, विस्फोट आदि से जनधन हानि के योग हैं। अप्रैल' '९४ से अगस्त '९४ के लगभग दिल्ली को पूर्ण राज्य का दर्जा मिलने का योग है। यहां भाजपा का वर्चस्व बना रहेगा।

पाठकों ! अतर्क्य भविष्य देखेने की क्षमता इस कलियुग में कठिन ही है। पुनरपि ज्योतिष-विज्ञान-दृष्ट्या एवं श्री प्रभुकृपावशात् राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय जो शुभाशुभ घटनाएं मेरी अल्प विषयामति में प्रस्फुटित हुई हैं, आपके समक्ष उपस्थित कर दी है। आगे कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तुसमर्थ भविष्य के निर्धारक स्वयं प्रभु ही हैं। उनकी प्रबल मायाशक्ति के सम्मुख मुझ जैसे अल्पज्ञ की भविष्य लेखन में प्रवृत्ति बाल चापल ही तो है:–"तत्वं चात्रेश्वरो वेत्ति नाहं वेद्मि कदाचन"

लेख पूर्ण होने की तिथि–२७ सितम्बर १९९३ ई.

इन्दुशेखर,
मार्त्तण्ड पंचांग एवं ज्योतिष
कार्यालय, मु. पो. कराली (रोपड़) पंजाब

व्यापार-विमर्श

– संवत् २०५१ वि. की ग्रहस्थिति के आधार पर व्यापारिक तेजी मन्दी का मासिक विवेचन –

सं. २०५१ वि. में भी हम बहुत ही सुन्दर ढंग से विचार पूर्वक तेजी मन्दी का वेरवा नीचे दे रहे हैं। हम समझते हैं, कि हरेक महीने में आने वाले प्रबल योगों को ध्यान में रखकर जो तेजी मन्दी हमने इस साल लिखी है, वह वायदा और हाजर व्यापारियों को लिए वरदान सिद्ध होगी, और उत्तम लाभ मिलेगा।

नोट : वायदा व्यापार या हाजर सौदों के व्यापार की लाईन अगर हमारे लिखे या बताए गए विचार के विपरीत चले तो तुरन्त सौदा काटकर नुकसान से बचें और ताजा मशवरा हासिल करें। ऐसी स्थिति में किसी भी प्रकार के नुकसान (हानि) की जिम्मेदारी हम नहीं लेते; अर्थात्–व्यापार में हानि होने पर हम या हमारी फर्म जिम्मेदार न होंगे, यह नोट कर लें।

अप्रैल

अप्रैल के प्रारम्भ में बाजार सामान्यत: तेज रहेंगे। ५ अप्रैल का मंगल-बुध की कलात्मक-युति होगी; साथ ही बुध मीन में प्रवेश करेगा। मीन राशि में बुध का मेल सूर्य से होगा। ६ अप्रैल को मंगल भी बुध के साथ राशि-सम्बन्ध बना रहा है:–यह ग्रहस्थिति निश्चय ही बाजारों में बड़ी तेजी का संचार करेगी। बुध अपनी प्रकृति के अनुसार पाप (क्रूर) ग्रहों से मेल करके अच्छी तेजी किया करता है। मीन राशि का बुध वैसे भी तेजी कारक अनुभव किया है। क्योंकि बुध में बड़ी तेजी और मन्दी लाने की क्षमता तो नहीं है, जब जब यह क्रूर ग्रहों के साथ सम्बन्ध करता है तो यह तेजीकारक हो जाता है। इस समय सूरजमुखी, बिनौला, सरसों, अरण्डी, मुंगफली, सोयाबीन आदि में एवं तेलों में विशेष तेजी आएगी, साथ ही रुई, गुड़, दालदाना में भी अच्छी तेजी से लाभ मिलेगा।

मासारम्भ से ६ अप्रैल तक एक तरफा तेजी से लाभ मिलेगा।

७ अप्रैल को भरणी नक्षत्र के शुक्र पर बृहस्पति एवं शनि दोनों की नजर है, अत: ७ अप्रैल को पहले कुछ मन्दे का रिएक्शन आकर फिर तेजी बनेगी, वायदा व्यापारी सावधानी से काम करें, क्योंकि उसी दिन बुध उ. भा. नक्षत्र में आकर तुरन्त चांदी सोना एवं वायदा व्यापार में तेजी का ही वातावरण बनाएगा। इस समय नमक तिलहन तेल में अच्छी तेजी बनेगी।

११ अप्रैल को मंगल भी उ. भा. में आकर बुध के साथ नक्षत्र सम्बन्ध भी बना लेता है। सोना, चांदी, रुई, गेहूं, जौ, चना एवं सर्वविध दालवाना में तेजी का ही बोलबाला रहेगा।

१७ अप्रैल तक बाजारों में उत्तम मध्यमरूप से तेजी प्रधान रहेगी, लेकिन व्यापारी लोग इससे आगे सावधानी से काम करें।

१८ अप्रैल को बुध पूर्व में अस्त होगा, इस समय अचानक बाजारों का रुख बदल सकता है। क्योंकि बुध बालग्रह है, जब भी वक्री मार्गी, उदय-अस्त होता है, तभी अफवाहों के प्रभाव से बाजारों में तेजी मन्दी के उतार चढ़ाव आया करते है। अत: इस समय अनाज, घी, तेल, तिलहन में मन्दे के अच्छे रिएक्शन आ सकते हैं। वायदा एवं हाजर के व्यापारी सावधानी से काम करें।

इससे पहिले १३ अप्रैल को सूर्य मेष-राशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा। इस समय शुक्र-सूर्य पर शनि बृहस्पति की दृष्टि है। अत: बाजार दुतरफा चलेंगे, इस समय जब भी मन्दी आए तभी खरीदें और तेजी आते ही सौदा सैटल करके लाभ लें। इस समय बाजार एकतरफा नहीं चलेंगे, अत: सावधानी से काम करें।

२१ अप्रैल को शुक्र अपनी राशि वृष में प्रविष्ट होगा। इस राशि में आकर शुक्र का मेल केतु से होगा, और इस समय शुक्र एवं केतु पर मंगल की विशेष दृष्टि भी होगी। शुक्र का राशि व नक्षत्रचार चांदी एवं सोने के बाजार को विशेषत: प्रभावित करता है। शुक्र का केतु के साथ मेल एवं इन पर मंगल-राहु की दृष्टि बाजारों में तूफानी तेजी बनाने वाली मालूम देती है। लोगों की क्रयशक्ति एवं खरीद की मनोवृत्ति प्रबल होगी कपड़ा-सूत-रुई के व्यापार में तेजी आती है। इस समय गुड़, खाण्ड, चीनी, रुई, कपास, पाट, वारदाना, तिलहन सोना चांदी के व्यापारी बड़ी सावधानी से काम करें। तेजी आने की स्थिति में तुरन्त माल पकड़े और अच्छा लाभ मिलते ही लाभ लें।

२२ अप्रैल को शुक्र एवं केतु की समकल युति होगी; इस समय वायदा व्यापारी सोना, चांदी, चीनी, चावल, तेल, तिलहन में तेजी का व्यापार करके लाभ ले सकते है। ध्यान दें, कि–२२ अप्रैल को ही बुध अश्विनी मेष में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा, लेकिन इन पर इस समय गुरु की पूर्ण दृष्टि एवं शनि की विशेष दृष्टि होगी अत:–जोरदार तेजी और मन्दे के रिएक्शन आएंगे, बाजार एक जगह खड़ेगे नहीं, इस समय एक तरफा व्यापार करना हानिप्रद रहेगा। मन्दे में खरीदें और तेजी में बेचकर लाभ लेते रहे।

तरफ नहीं चलेंगे–इस समय बाजार के रुख को देखकर चलने वाले व्यापारी लाभ ले सकेंगे।

२७ अप्रैल को भरणी नक्षत्र में सूर्य आता है। सोना, चांदी, तांबा, मूंगा, पीतल, गेहूं, जौ, चना, चावल, मोठ, अलसी, रुई, गुड़, खाण्ड, घी तेज हों। २८ अप्रैल का गेहूं, चना, मूंग, मोठ, जौ, ज्वार, बाजरा में मन्दे का माहौल बने क्योंकि इस दिन मंगल रेवती नक्षत्र में आता है, इस दिन चांदी में विशेष तेजी का झटका आ सकता है, बाजार के रुख को देखकर काम करें।

२९ अप्रैल को बुध भरणी में एवं शुक्र रोहिणी नक्षत्र में आएगा। इस समय चावल, गेहूं आदि अनाजों में तेजी का वातावरण रहे, लेकिन चांदी, सोना आदि धातु, अलसी, एरण्ड, सरसों, घी, तेल, गुड़, खाण्ड, दाख, छुहारा, सुपारी, नारियल एवं ऊन में मन्दा आता है।

३० अप्रैल का दिन व्यापारियों के लिए विशेष महत्त्वपूर्ण है, इस दिन यूरेनस वक्री होगा और प्लूटो वक्री होकर विशाखा के चतुर्थचरण में आ जाता है, ध्यान दें, इसी दिन सूर्य एवं बुध की कलात्मक युति भी हो रही है। राहु भी इस समय वृश्चिक राशि में है। राहु-प्लूटो पर शनि की विशेष दृष्टि है। इस समय राजनैतिक दृष्टि से बाजारों में तेजी मन्दी होगी, इस समय तेल, तिलहन, दालवाना, पाट, वारदाना, रूई, कपास, रेशम, रेयान, एवं गुड़, घी, खाण्ड में विशेष तेजी बनेगी–ऐसा हमारा विचार है।

मई

मई के आरम्भ से बाजारों में तेजी का ही वातावरण रहे। ५ मई को कृत्तिका नक्षत्र में बुध एवं शनि, शतभिषा के चौथे चरण में दाखल होगा। इस समय चान्दी तथा अफीम में खास घटाबढ़ी होकर मन्दी हो चावल आदि अनाज, रुई, खाण्ड, घी, लौंग एवं किरयाना की चीजों में तेजी का वातावरण रहेगा।

६ मई को बुध वृष राशि में आकर शुक्र एवं केतु के साथ मेल करेगा। जब बुध वृष राशि में संचार करता है तब अफवाहों से बाजारों में मन्दे के झटके आया करते हैं। बुध एवं शुक्र दोनों ग्रह बाजारों में विशेष घटा बढ़ी लाने वाले हैं। अत: इस समय एक दो दिन बाजार के रुख को देखकर व्यापार बढ़ावें, अगर बाजार में मन्दा चले तो मन्दे का व्यापार करें। यदि बाजार तेज रहें तो तेजी का व्यापार करें; बाजार के रुख के विपरीत काम करने वाले व्यापारी हानि में रहेंगे–ऐसा विचार है। हमारे विचार से इस समय तेजी आएगी, रुई, कपास, पाट, वारदाना, हल्दी आदि के बाजार तेज रहेंगे। गेहूं, जौ, चना, चावल, मटर, रुई, कपास, सूत, अफीम एवं तेल तिलहन भी तेज रहें।

७ मई को अस्त बुध एवं केतु की कलात्मक-युति होगी, इस दिन शनिवार भी है, कुछ राजनैतिक दृष्टिकोण एवं किसी खास पब्लिसिटी के कारण बाजारों में उठक पटक होगी। इस समय शेयर बाजारों में विशेष तेजी मन्दी के रिएक्शन आएंगे, प्रत्यक्ष मिलें, विशेष लाभ उठा सकेंगे। छोटे-मोटे अनाजों तेलों, तिलहनों में एकदम तेजी से बाजार गर्म होंगे, फिर भी अनुभवी व्यापारियों का विचार जानकर काम करें। इस तेजी का प्रभाव एक सप्ताह तक चलेगा।

१० मई को मृगशिरा नक्षत्र में शुक्र का प्रवेश भी बाजारों में तेजी का सूचक है। गेंहू, चना, ज्वार में मन्दी तथा गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी रहे। ११ मई को कृत्तिका नक्षत्र का सूर्य, संकेत देता है। ११ मई को वायदा व्यापारी सावधानी से काम करें। क्योंकि सूर्य-बुध दोनों पर गुरु की दृष्टि है। कृत्तिका का सूर्य तेजी कारक है, बुध का उदय मन्दे का संकेत देता है। इसलिए कुछ तेजी एवं कुछ मन्दे की प्रतिक्रिया होगी। ग्रहस्थिति के अनुसार घी, सोना, चांदी, अलसी, एरण्ड, गेहूं, जौ चना, मूंग, मोठ, चावल, रुई, सरसों, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड में कुछ तेजी बने, रुई में पहले तेजी होकर फिर मन्दी हो।

१४ मई को वृष राशि का सूर्य बुध शुक्र के साथ मेल करेगा। चांदी, सोना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, रुई, बादाम, सूत, सुपारी, नारियल, तिल, तेल, सरसों आदि तेज होंगे। जौ, चना, गेहूं, मटर, अरहर, मूंग एवं चावल में कुछ मन्दे का अस्थायी रिएक्शन आ सकता है।

१५ मई को सूर्य-केतु की अंशात्मक युति होगी, इसी दिन मंगल अपनी राशि मेष में दाखल होगा और शुक्र भी इस दिन मिथुन राशि में आएगा। मेष राशि के मंगल पर शनि एवं गुरु की नजर है। मिथुन राशि में अकेला शुक्र प्राय: मन्दीकारक माना गया है। यहां तो शुक्र पर गुरु की विशेष नजर होने से रुई कपास, सूत, पाट, वारदाना, एरण्डी, तिल, तेल, सरसों, अरहर, गुवार आदि में काफी मन्दी बन सकती है। लेकिन सूर्य-केतु की अंशात्मक युति एवं मेष का मंगल कुछ चीजों में जोरदार तेजी बनाएगा। सोना, चांदी आदि धातु मूंगा मोती आदि रत्न, ऊन, रुई, कपास, पाट, वारदाना, गुड़, खाण्ड, शक्कर सुपारी, नारियल, तिल, तेल, सरसों आदि में तेजी रहे। गेहूं आदि प्रत्येक जाति के अनाजों का भाव मन्दा रहे।

१७ मई को विशाखा ३ तुला में राहु एवं कृत्तिका १ मेष में केतु का पदार्पण लगभग १८ वर्ष बाद हो रहा है। तुला के राहु पर मेषस्थ मंगल की दृष्टि है, लेकिन राहु के साथ तुला राशि में गुरु का राशि-सम्बन्ध बना है। कहीं खड़ी फसल को हानि पहुंचे। चना, दालवाना, चावल, मक्का गेहूं में तेजी बने। सोना, चांदी, तांबा, तेल, तिलहन में भी तेजी आए।

१९ मई को ८ दिन के अन्दर रुई तेज हो, चांदी में घटाबढ़ी होकर मन्दी आए, गेंहू, तिल, सरसों, उड़द मन्दे हों। २१ मई को शुक्र आर्द्रा नक्षत्र में आएगा। शुक्र पर गुरु की दृष्टि है, अत: इस समय गेहूं आदि में, दालवाना एवं ज्वार-बाजरा, आदि में अचानक अच्छी मन्दी बनने का योग है।

२२ मई को वक्री गुरु स्वाती २ में आकर रुई में एवं प्रत्येक तिलहन में विशेष मन्दे का झटका आने का योग है; हां बीच में थोड़ी तेजी का रिएक्श मंगल-राहु के कारण आ सकता है, जो कि ठहरेगा नहीं।

मास के प्रारम्भ से १८ मई तक बाजार प्राय: तेज रहेंगे। बाद में १९ मई से बाजार मन्दे चलेंगे,–ऐसा विचार है।

२३ मई को बुध मिथुन-राशि में दाखल होगा। मिथुन राशि में बुध का सम्बन्ध शुक्र के साथ होगा। मिथुन राशि के अन्तर्गत तेलवाना, पाट, वारदाना, हल्दी एवं सभी प्रकार की रुई की किस्में आती है। बुध ग्रह शुक्र से भी अधिक तेजी मन्दी बाजारों में लाया करता है। **अनुभव किया गया है, कि अकेला शुक्र ही जोरदार मन्दा बना देता है, परन्तु जब मन्दे के वातावरण में शुक्र के साथ बुध मेल करता है तो मन्दे की लाईन और जोर पकड़ जाती है। इस समय यदि बाजार मन्दे के चल रहे हों तो तूफानी मन्दा बन सकता है लेकिन यदि बाजार तेजी के चल रहे हों तो बाजारों में तूफानी तेजी बनेगी;–यह सोचकर व्यापार को बढ़ावें।** क्योंकि यहां इस समय बुध-शुक्र पर बृहस्पति की विशेष दृष्टि है अत: इस समय रुई, सोना, चांदी, तेल, तिलहन, पाट, वारदाना एवं हल्दी में जबरदस्त मंदा बनेगा,–ऐसा विचार है, फिर भी सोच समझकर काम करें।

२५ मई को रोहिणी नक्षत्र में सूर्य दाखिल होगा; इस समय वृष राशि के सूर्य पर नीच चन्द्रमा की दृष्टि है; तिल, तेल, एरण्ड, अलसी, सरसों, गुड़, खाण्ड, घी, गेहूं, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, ऊन, सूत, सुपारी एवं मिर्च तेज़ हों। इस समय चांदी में मन्दा बनेगा। यह तेजी सामान्यतया २७ मई तक चलेगी; वायदा व्यापारी लाभ ले सकेंगे।

२८ मई को बुध आर्द्रा नक्षत्र में आएगा। ध्यान दें, शुक्र पहले से ही आर्द्रा नक्षत्र में चल रहा है। स्पष्ट है, किं-मासान्त में गेहूं, तिल, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, ग्वारा, मूंग, मोठ एवं अन्य दालवाना में अच्छे मन्दे का वातावरण बनेगा, इस समय मन्दा आने पर स्टाक करना लाभप्रद रहेगा। यह मन्दा उत्तम-मध्यम रूप से आगे १०, १५ दिन तक चल सकता है, विचार पूर्वक काम करें।

जून

ग्रहचाल के अनुसार मासारम्भ में बाजारों में कुछ मन्दे का वातावरण रहेगा। १ जून को शुक्र पुनर्वसु नक्षत्र में आकर मोटे अनाजों, दालवाना धान एवं बिनौला में २ जून को ही भरणी नक्षत्र का मंगल गेहूं आदि अनाजों व सोना चांदी और रुई में तेजी का रिएक्शन बनाएगा; इस समय वायदा व्यापारी लगभग एक सप्ताह तक मन्दे में खरीदें और तेजी में बेचकर लाभ लेते रहें।

८ जून को सूर्य मृगशिरा नक्षत्र में प्रवेश करेगा; रुई, सूत, रेशम, सण, कपूर, कस्तूरी, चन्दन, सोना, चांदी, उड़द, मूंग, मोठ, चना, बाजरा अलसी तथा जलोत्पन्न पदार्थ नारियल एवं सभी फल तेज हों।

१० जून को शुक्र कर्क राशि में प्रवेश करेगा। शुक्र का राशि व नक्षत्र चार का प्रभाव सबसे अधिक विशेषत: सोना और चांदी के बाजारों पर पड़ता है; परन्तु गुड़, खाण्ड, रुई, कपास, पाट, वारदाना एवं तिलहन की घटा बढ़ी पर भी इसका विशेष प्रभाव अनुभव किया गया है। राशि भोग के समय रुई में पहले अच्छी मन्दी आकर बाद में तेजी बनेगी। अलसी, एरण्ड, तेल, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी बनेगी। सोना, चांदी, गेहूं, जौ, चना, मटर एवं अरहर में मन्दे का वातावरण रहेगा;–ऐसा विचार है; फिर भी बाजार के रुख को देखकर काम करें।

१२ जून को मिथुन राशि में बुध वक्री हो रहा है, इस पर गुरु की विशेष दृष्टि है। मूंग, मोठ, चना, रुई, घी, गुड़, खाण्ड शक्कर में तेजी का वातावरण बनेगा। पहले चली आ रही मन्दे की लाईन बदल जाएगी और इस समय अनाजों में सामान्य मन्दे की प्रतिक्रिया संभव है। १२ जून को ही पुण्य नक्षत्र का शुक्र भी रुई, सूत, सण, रेशम, ऊन व धान्य में तेजी का संकेत देता है। लाख, कपड़ा, कपूर, पारा शिंगरफ, हींग, गुड, खाण्ड, शक्कर में मन्दे का योग है।

१५ जून को सूर्य मिथुन राशि में आकर बुध के साथ राशि-सम्बन्ध बनाएगा। इस समय बुध की प्रकृति तेजीकारक हो जाएगी। मिथुन राशि रुई, कपास व तेलवाना बाजारों की प्रमुख है। इसलिए रुई, कपास, तेलवाना, पाट, वारदाना, हल्दी, कपासिया आदि बाजार विशेष रूप से प्रभावित होंगे। कन्दमूल, फल, पाट, वारदाना, रेशम, सूत, कपास, रुई, सरसों, लोहा, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी, घी, मूंग, उड़द, गेहूं, चना, चावल आदि प्रत्येक जाति के अनाज एवं सोना चांदी में भी तेजी का रुख रहे।

१६ जून को बुध के पश्चिम में अस्त होने पर रुई में झटके के साथ अच्छी मन्दी, चांदी तेज, पाट, हैसियन, और शेयर बाजारों में मन्दा बने।

२० जून के लगभग मंगल के कृत्तिका नक्षत्र में आने पर गेहूं, मूंग, मोठ, चावल, तिल, तेल, सरसों, घी, चांदी सूती वस्त्र में तेजी, रुई में पहले तेजी आकर फिर मन्दी आए। क्योंकि इस समय मंगल एवं केतु-ये दोनों कृत्तिका के प्रथम चरण में चल रहे हैं। और इन पर बृहस्पति की नजर भी है, अत: यहां तेजी और मन्दी के अच्छे रिएक्शन आएंगे। बाजार के रुख को देखकर काम करने वाले व्यापारी लाभ ले सकेंगे।

२२ जून को सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में आता है, बुध पहिले ही आर्द्रा नक्षत्र में चल रहा है इसी २३

जून को कुम्भराशि को शनि वक्री हो रहा है। कुम्भस्थ शनि और सूर्य पर गुरु की **दृष्टि है। अतः यहां तेजी की उम्मीद होने पर भी बाजारों में साधारणतया मन्दे का ही प्रभाव रहेगा।** रुई सूत कपास, खल, अलसी, एरण्ड, मोती, गेहूं, चावल, चना, जौ, चांदी, सिक्का, कली, पीतल, घी, तेल में सामान्य तेजी के बाद मन्दा आए।

२४ जून को आश्लेषा नक्षत्र का शुक्र रुई में कुछ मन्दी, तूअर, चावल में भी मन्दा करेगा। **२५ जून को सूर्य बुध की अंशात्मक युति होगी; बुध वक्री होकर सूर्य से युति कर रहा है, इसे इन्फीरियर कंजेक्शन कहते है। अनुभव में आता है, कि जब वक्री बुध सूर्य के साथ कलात्मक युति करता है तो बाजारों में धमाके की तेजी करता है। यहां बुध का अधिक असर तिलहन बाजारों की घटाबढ़ी पर अनुभव होगा। ध्यान दें, कि २५ जून को मंगल वृषराशि में आ रहा है। इस समय बुध-गुरु शनि-राहु-केतु वक्र है। अतः यह योग बाजारों में तूफानी तेजी का मालूम देता है। इस समय तेजी का काम करके लाभ लें। पुनरपि हमारा व्यापारियों से आग्रह है, कि-यदि वृष राशि के मंगल में बाजार तेजी की ओर रहें तो तेजी का काम बढ़ावें, वरना मन्दे में रहें। लेकिन हमारा विचार यहां तेजी का है।** लाल चन्दन लाल वस्त्र, लाल मिर्च, गुड़; खाण्ड, शक्कर, रुई, कपास, सूत, केसर, तेल, एरण्ड, सोयाबीन, सूरजमुखी, मूंगफली, सरसों, बिनौला आदि तिलहन, सोना, चांदी, तांबा, जस्ता, धातु व शेयरों में तेजी आती है। यह तेजी २८ जून तक एक तरफा चल सकती है, लाभ लें।

२९ जून को अचानक बाजारों में तबदीली आ सकती है, इस समय सावधानी से काम करें। अन्यथा हानि संभव है। कहने का तात्पर्य यह है, कि जून मास के अन्तिम दिनों में अचानक मन्दे या तेजी की प्रतिक्रिया से व्यापारी हानि में आ सकते हैं, अतः अन्धाधुन्ध काम न करें, अन्यथा भारी हानि में रहेंगे। इस समय बाजार के रुख को दृष्टि में रखकर यथोचित काम करें।

जुलाई

मास के प्रारम्भ में वक्री बुध मृगशिरा नक्षत्र में आता है; रुई में तेजी, चांदी में घटाबढ़ी होकर मन्दी, गेहूं, तिल, सरसों, उड़द भी मन्दे हों। २ जुलाई को गुरु के मार्गी होने पर रुई में मन्दी होकर फिर तेजी बने। चांदी मन्दी, चावल, अलसी, सरसों, गुड़, तमाखू तेज हों। इस समय घी तेज तिलहन में भी मन्दे का रिएक्शन आ सकता है।

४ जुलाई को बुध के पूर्व में उदय होने पर रुई में पहले मन्दा बनेगा, बाद में तेजी बनेगी, गेहूं, चना आदि में साधारण तेजी चलने पर अच्छी तेजी की आशा है, तिल घी लाल मिर्च भी तेज हो।

५ जुलाई को शुक्र मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में संचार करेगा। **सिंह राशि में स्थित शुक्र पर शनि की पूर्णहानि एवं मंगल की विशेष दृष्टि है। इस समय व्यापारियों को बड़ी सावधानी से काम करना चाहिए। यह समय मोटा लाभ कमाने का है।** इस समय सोना, चांदी के बाजारों में विशेष तेजी आएगी, नोट करलें। तांबा जौ, चना, गेहूं, लाल चन्दन, ममजीर, लाल मिर्च, गुड़, खाण्ड, रुई, कपास, सूरजमुखी, बिनौला, सरसों आदि तिलहन, सब प्रकार के खाने वाले तेल, पार, बारदाना में भी तेजी बनेगी। **नोट करें–यदि रुई और चांदी में ५ जुलाई के लगभग ३, ४ दिन के लिए कुछ मन्दा भी बनता है तो तुरन्त स्टॉक करें, आगे शीघ्र ही अच्छी तेजी से उत्तम लाभ मिलेगा।**

६ जुलाई को सूर्य पुनर्वसु में आकर रुई सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, कपास, बिनौला, एरण्ड, अलसी, सरसों, लाख, देवदारु, तिल, ज्वार, मोठ, बाजरा, उड़द, चावल, नमक, सज्जी, हरड़, सुपारी, नारियल, माजू, केसर मजीठ, नील, सोंठ, एवं गुग्गल आदि सुगन्धित पदार्थों में तेजी का वातावरण बनाता है। यदि तेजी का बाजार है तो आप वायदा व्यापार में ७ जुलाई तक लाभ लें, आगे बाजारों का रुख एकदम बदलने का योग है।

८ जुलाई के लगभग रुई में पहले मन्दी, बाद में तेजी, चांदी में घटाबढ़ी होकर तेजी बनेगी। गेहूं, जौ, चना आदि अनाज तेज हों। रेशम, तेल, अलसी, एरण्ड, गुड़, बिनौला, मूंगफली, कपूर, चन्दन एवं अगर आदि सुगन्धित चीजों में मन्दे का रिएक्शन आएगा।

९ जुलाई को रोहिणी नक्षत्र का मंगल रुई, कपास, सूत, वस्त्र, रेशम, सरसों, तिल, तेल, लाल मिर्च, हींग में तेजी करेगा। इस समय शेयर बाजार भी तेज रहेंगे। इसके बाद बाजार का रुख की उपेक्षा न करे, बाजारों का रुख बदलने का योग हैं। अचानक मन्दे की लाईन बन सकती है। १० से १५ जुलाई तक बाजारों में मन्दा प्रधान रहेगा।

१० जुलाई इतवार को पुण्य नक्षत्र में चन्द्रदर्शन एवं १२ जुलाई को आर्द्रा नक्षत्र में बुध का प्रवेश बाजारों में मन्दे का संकेत देता हैं। गेहूं, उड़द, जौ, चना, मूंग, मोठ आदि दालों में एवं तेल तिलहनों में कुछ मन्दे का ही अनुमान है।

१६ जुलाई को सूर्य कर्क राशि में प्रवेश करेगा। सूर्य ग्रह का प्रभाव प्रत्येक वायदा और हाजर के बाजारों पर पड़ता है। विशेषरूप से सूर्य ग्रह का असर रुई, एरण्ड, अलसी, मूंगफली, तेल, अनाज, सोना, हल्दी, काली मिर्च एवं शेयर बाजार पर पड़ता है। हमारे विचार से कर्क राशि का सूर्य बरसात की खबरों से अपने अधिकार क्षेत्र की चीजों पर मन्दे का ही वातावरण बनाएगा। १७ जुलाई को पू. फा. नक्षत्र में शुक्र का प्रवेश भी बाजारों को मन्दे की ओर ले जाएगा। गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, उड़द, मूंग, चना में कुछ मन्दा बनेगा।

(१० से १९ जुलाई तक बाजारों में उत्तम-मध्यमरूप से मन्दे को बोलबाला रहेगा।)

२० जुलाई को सूर्य पुष्य नक्षत्र में प्रविष्ट होगा, साथ ही विशाखा नक्षत्र के चरण में राहु और केतु भरणी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में प्रवेश करेगा। तिल, तेल, सरसों, मघ, गुड़, खाण्ड, चावल, गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, सुपारी, सोंठ, गुग्गल, कपास, सोना, चांदी में तेजी का रुख बने। यदि इस समय तेजी बनती है तो २४ जुलाई तक तेजी से लाभ मिलेगा।

२५ जुलाई के लगभग (बुध के पुनर्वसु नक्षत्र में आने पर) चांदी, रुई, कपास, सूत, सण, में धमाके की मन्दी बनने का योग है, इस समय वायदा व्यापारी तेजी मन्दी लगाकर लाभ ले सकते हैं। यह मन्दी घटाबढ़ी के साथ मासान्त तक चल सकती है। फिर भी व्यापारी हमारे आगे लिखे गए विचार को ध्यान में रखें :–

२८ जुलाई को मृगशिरा नक्षत्र का मंगल तिल, चांदी में तेजी करे। रुई में पहले मन्दी आकर फिर तेजी बने, अन्य व्यापारिक-वस्तुओं को प्राय: मन्दे की तरफ झुकाव रहता है। २९ जुलाई को उ. फा. का शुक्र गेहूं आदि अनाज व रुई में तेजी करेगा। इस समय सोना चांदी में घटाबढ़ी चलेगी।

३१ जुलाई की तारीख को व्यापारी लोग सावधानी से काम करें, इसदिन तेजी मन्दी लगाने वाले व्यापारी मोटी रकम कमा सकते हैं, इस समय यदि ताजा मशबरा लें तो अधिक अच्छा रहेगा। ३१ जुलाई को बुध, कर्क राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। चन्द्रमा की राशि का बुध तेजी देने वाला माना जाता है और सूर्य के साथ होने से तेजी बनाने की ताकत बुध में विशेष हो जाती है। ध्यान दें, कि–इसी दिन यूरेनस वक्री होकर उ. षा. नक्षत्र के चतुर्थ चरण में भी आ रहा है। अत: खाद्य तेल, रुई, कपास, सभी तिलहन, चना, गेहूं, दालवाना, गुड़, तेल, मूंगफली, सरसों, सोना में अच्छी तेजी बनेगी, परन्तु यह तेजी ठहरेगी नहीं, तुरन्त लाभ ले लेना चाहिए, क्योंकि ३१ जुलाई को ही बुध पूर्व में अस्त हो रहा है, अत: अच्छे तेजी मन्दी के रिएक्शन आने के बाद अनाज, घी, तेलों में अचानक मन्दा बने, रुई में घटाबढ़ी–पहले तेज, बीच में मन्दा, अन्त में फिर तेज बने। सोना में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने।

व्यापारी ध्यान दें,–इस मास में १० जुलाई के बाद मासात तक तेजी एवं मन्दी के जबरस्त रिएक्शन आते रहेंगे, बाजार के रुख को देखकर काम करें। मन्दा आते ही खरीदें, तेजी में माल छोड़कर मौके पर ही लाभ लेते रहें। एक तरफा लाईन प्राय: इन दिनों नहीं चलेगी। हां, ३१ जुलाई को बड़ी होश्यारी से काम करें, इसदिन अच्छी तेजी बनकर तुरन्त बाजार टूट सकते हैं, यदि पहले मन्दे आए तो बाद में जल्दी बनेगी, घबराएं नहीं। परन्तु हमारे विचार से इसदिन तेजी का अच्छा झटका जरुर आएगा, और मन्दा भी।

अगस्त

इस दिन बुध पुष्य नक्षत्र में एवं शुक्र अपनी नीच राशि कन्या में दाखल होगा। इस नीच शुक्र पर मंगल की दृष्टि है, परन्तु मंगल पर गुरु की दृष्टि होने से यह तेज़ी को प्रोमोट नहीं कर गेहूं आदि सभी अनाज, गुड़, खाण्ड में भी तेजी, एवं चावलों में अच्छी तेजी का झटका आए। सोना, चांदी में रुई में मन्दे का रिएक्शन आए।

२ अगस्त को सूर्य आश्लेष में आकर सोना, चांदी, रुई, बिनौला, गेहूं, चावल, उड़द, चना, गुड़, शक्कर, घी, तिल, तेल, सरसों, ऐरण्ड, लालमिर्च, अलसी, मजीठ एवं नील में तेजी का रुख बनाएगा।

५ अगस्त को प्लूटो के मार्गी होने पर बाजारों का रुख एकदम बदलने का संकेत मिलता है। यदि इससे पहले बाजार मन्दे चल रहे हों तो बाजार तेज होंगे, यदि बाजार तेजी में चल रहे होंगे तो बाजारों में मन्दा आएगा :–इसलिए विचारपूर्वक काम-काम करके हानि से बचें। इस समय हमारा विचार मन्दे का है।

७ अगस्त को मंगल मिथुन राशि में आकर भारी वर्षा का कारण बनेगा। अत: बाजांर कभी मन्दे कभी तेज होंगे, इस समय मन्दे में खरीद करें, और तेजी में बेचकर लाभ लें। इस समय यह बात ध्यान में रखें, **कि–मिथुन राशि के मंगल पर बृहस्पति की नजर है। जब मंगल पर शुभग्रह की दृष्टि होती है तो मंगल के प्रभाव क्षेत्र में आने वाले चीजों में प्राय: मन्दा आया करता है। लेकिन लाल रंग की चीजों में विशेष मन्दा न आकर कुछ तेजी ही रहती है।** रुई, कपास, जूट, चाँदी, अफीम, कुसुम्भ, मजीठ एवं आदि में आमतौर पर मन्दा रहे। सोना, गुड़, खाण्ड, तांबा एवं लाल मिर्च में कुछ तेजी रहे।

८ अगस्त को आश्लेषा नक्षत्र का बुध तिल तेल सरसों, गुड़, खाण्ड, उड़द, मूंग, मोठ एवं मूंगफली में तेजी बनाएगा। यह तेजी १० अगस्त तक चल सकती है।

११ अगस्त को गुरु स्वाती नक्षत्र के तीसरे चरणँ में एवं शुक्र हस्त नक्षत्र में प्रवेश करेगा, इस समय बाजारों अच्छे मन्दे के रिएक्शन आएंगे। इस समय रुई में जबरदस्त धमाके से मन्दी आए, तेल, तिलहन में भी काफी मन्दी आए। अनाजों का बाजार भी मन्दा रहे,–ऐसा विचार है। यहां यह नोट करें, **कि–रुई, तिलहन, चावल, दालवाना आदि में यदि इस समय मन्दा आए तो स्टाक से निश्यच ही आगे तेजी आते ही लाभ मिलेगा।** इस समय गुड़ खाण्ड शक्कर में घटाबढ़ी चलेगी।

१३ अगस्त को सूर्य-बुध की अंशात्मक युति होगी, इस समय बुध अतिचारी है। इस समय [illegible] से बाजार तेजी की तरफ बढ़ेंगे। जब अतिचारी होकर बुध सूर्य के साथ युति करता है। तो तिलहन बाजारों में तूफानी तेजी आया करती है। अत: इस समय तेल, तिलहन, रुई, कपास, रेयान, ऊन, दालवाना आदि में अच्छी तेजी

शुरू होगी।

१४ अगस्त को बुध मघा सिंह में आकर सूर्य के साथ राशि सम्बन्ध बना लेगा। इस समय बुध पर शनि की पूर्ण दृष्टि है। जब बुध सूर्य की (सिंह) राशि में होता है। तो बुध तेजी कारक हो जाता है, यहां बुध अभी अतिचारी पोजीशन में भी है, अतः सोयाबीन, बिनौला, सरसों, सूरजमुखी, एरण्ड, अलसी आदि तिलहन एवं गुड़, खाण्ड, रसकस, चाँदी, सोना, सूत, रुई, ऊनी वस्त्र चना, दालवाना आदि में बड़ी अच्छी तेजी से लाभ की आशा है, सावधानी से काम करके लाभ लें।

१६ अगस्त को सूर्य भी मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। इस समय सूर्य-बुध पर शनि की दृष्टि है। अतः इन दिनों बाजारों में उत्तम तेजी बनेगी। चाँदी, सोना, रुई गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, तेल एरण्ड, सरसों, मूंग, ज्वार, बाजरा, दाख एवं लाल मिर्च में तेजी आएगी। १३ से १६ अगस्त तक वायदा एवं हाजर के व्यापारी तेजी से उत्तम लाभ प्राप्त कर सकेंगे।

१७ अगस्त को आर्द्रा नक्षत्र का मंगल रुई, सूत, कपास, अलसी, एरण्ड, गुड़ खण्ड तिल तेल एवं नमक में कुछ तेजी के बाद अच्छा मन्दा आएगा। इस समय चाँदी में उत्तम मन्दे का रिएक्शन आएगा।

२१ अगस्त को उ. फा. नक्षत्र का बुध उड़द, मूंग, मोठ, मसूर, अरहर में कुछ तेजी, रुई में घटाबढ़ी के बाद मन्दी, चाँदी में भी मन्दा रहे।

२४ अगस्त को चित्रा नक्षत्र का शुक्र सोना, चाँदी एवं अनाजों के भावों को यथावत् बनाए रखेगा। २७ अगस्त को बुध पश्चिम में उदित होगा। वस्त्र, रुई, ऊन, रेयान व शेयरों में १५ दिन में अच्छा मन्दा आए। २९ अगस्त को बुध उ. फा. में आकर उड़द, मूंग, मोठ, मसूर, अरहर में कुछ तेजी बनेगी। इस समय रुई में घटाबढ़ी होकर मन्दी हो, चाँदी में भी मन्दा रहे।

३० अगस्त को सूर्य यू. फा. नक्षत्र में आएगा। इस समय जीरा, सोना, गुड़, खाण्ड, सरसों, तिल, तेल, घी, गेहूं, ज्वार, चावल, रुई सूत तेज हों, चाँदी में घटाबढ़ी चलेगी।

३१ अगस्त को शुक्र, तुला राशि में आकर गुरु एवं राहु के साथ मेल करेगा। गुरु के साथ शुक्र का मेल मन्दे का संकेत देता है, और राहु के साथ तेजी का संकेत देता है। परन्तु वह पोजीशन सामान्यतया तेजी का ही संकेत करती है। क्योंकि गुरु-शुक्र परस्पर शत्रु होने से शुक्र पर गुरु का मन्दी कारक प्रभाव कम ही स्वीकार किया जाएगा। अतः रुई, चांदी, सोना, स्टील में पहले तेजी बाद में कुछ मन्दा बनेगा। चीनी, गुड़, खाण्ड में तेजी बनेगी।

सितम्बर

मास के आरम्भ में २ सितम्बर को बुध अपनी उच्च राशि कन्या में पदार्पण करेगा। कन्या राशि रुई, कपास, तेलवाना आदि जिंसों की पैदावार एवं फसल की राशि मानी गई है। कन्या राशि में स्थित बुध पर मंगल की विशेष दृष्टि है। रुई और चाँदी में कुछ मन्दे का रिएक्शन आए। गेहूं, जौ, चना, गुड़, शक्कर, खाण्ड एवं हल्दी में तेजी आती है। ४ सितम्बर को गुरु स्वती नक्षत्र के चौके चरण में आकर रुई में अच्छे मन्दे का झटका ला देगा। अनाजों का रुख भी मन्दे की तरफ रहे। ६ सितम्बर को हस्त नक्षत्र का बुध भी अनाज दालवाना आदि में मन्दे का रुख बनाएगा। मास के प्रारम्भ से ६ सितम्बर तक गेहूं आदि अनाज, दालवाना एवं रुई चाँदी में मन्दा प्रधान रहेगा।

७ सितम्बर को पुनर्वसु नक्षत्र का मंगल कुछ तेजी की उम्मीद बनाएगा, लेकिन मंगल पर गुरु की नजर होने से तेजी बहुत साधारण रहे। रुई, चांदी, नमक, खाण्ड, तिल, तेल सरसों में तेजी को आसार बनेंगे। एक दिन की तेजी-मन्दी लगाने वाले इसदिन कुछ लाभ ले सकते हैं।

८ सितम्बर को स्वाती नक्षत्र का शुक्र गुड़ खाण्ड में आगे तेजी करें एवं अनाजों के भाव में मन्दा करेगा। १३ सितम्बर के उ. फा. नक्षत्र का सूर्य बाजारों में तेजी करेगा। क्योंकि इस दिन सिंह राशि के सूर्य पर शनि की पूर्ण दृष्टि है। अतः रुई, कपास, रेशम, सूत, सोना, चाँदी, लोहा, घी, अलसी, सरसों, एरण्ड, चावल, उड़द, ज्वार, सुपारी, नारियल एवं तेलों में तेजी से लाभ मिलेगा। मास के प्रारम्भ से १२ सितम्बर तक साधारणतया तेजी मन्दी के रिएक्शन आएंगे। इन दिनों मन्दे में खरीदें एवं तेजी में बेचें। १३ तारीख से बाजारों में तेजी से लाभ रहेगा।

१६ सितम्बर को चित्रा नक्षत्र का बुध रुई चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी करे एवं अनाजों में भी कुछ तेजी का ही वाातावरण रहे। १६ सितम्बर को ही सूर्य कन्या राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। इस समय सूर्य-बुध पर मंगल की विशेष दृष्टि है। जब बुध का सूर्य के साथ सम्बन्ध होता है। तो बुध में तेजी लोन की ताकत बढ़ जाती है। यह चीज अच्छी तेजी का मालूम देता है, व्यापारी लोग इस समय उत्तम लाभ ले सकते है। इस समय रुई, नारियल, तिल, बिनौला, सरसों, सूरजमुखी, मूंगफली आदि तिलहनों, तेलों, पाट, वारदाना, सुपारी, मजीठ, कपास, हल्दी एवं गुड़, खाण्ड, लाल मिर्च आदि में अच्छी तेजी बनेगी। १३ से २० सितम्बर तक बाजारों में उत्तम-मध्यम रूप से तेजी बनेगी,-ऐसा विचार है। १६ सितम्बर के बाद बाजारों में ग्रहगतिवश तेजी मन्दी इस प्रकार है,-

२१ सितम्बर को मंगल कर्क राशि में आकर नीच हो जाता है। नीच का मंगल मन्दा **लाने वाला माना गया है। रुई में झटके के साथ मन्दा बनेगा। सरसों, एरण्ड, अलसी, तेल आदि में मन्दा आवे, चाँदी में घटाबढ़ी चले। लेकिन गेहूं आदि अनाज, दालवाना, गुड़, शक्कर खण्ड आदि में तेजी बनेगी।**

२१ सितम्बर का दिन विशेष ध्यान देने लायक है, इस दिन मंगल कर्क में, बुध तुला में एवं राहु विशाखा १ में, केतु भरं. ३ में आता है। इसदिन गुड़, खाण्ड, सोना में तेजी एवं चाँदी, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला एवं मूंगफली आदि तिलहन में मंदा बने-ऐसा विचार है। फिर भी बाजार का रुख देखकर काम करें।

२४ सितम्बर को गुर विशाखा एक में आ रहा है, इस समय राहु भी विशाखा के प्रथम चरण में चल रहा है, रुई में मन्दी एवं गेहूं चावल आदि अनाजों में तेजी का वातावरण बनेगा।

२४ से २६ तक बाजारों में साधारण तेजी बनेगी। आगे २७ सितम्बर को हस्त नक्षत्र में सूर्य आयेगा। साकी बुध स्वाती में एवं शुक्र विशाखा में भी इसी दिन आ रहा है। गेहूं जौ, ज्वार, गुड, खाण्ड, कपास, जूट, हरड, हींग, धनिया, हल्दी में तेजी का रुख रहे। रुई व अनाज मन्दे हों।

२८ सितम्बर को वक्रीशनि शतमिषा के दूसरे चरण में आता है, इस समय अनाज मन्दे हों और घी तेलों में कुछ तेजी रहे। २९ सितम्बर को मंगल पुष्य नक्षत्र में आकर चान्दी व रुई में घटाबढ़ी चले। इस समय सोने में काफी तेजी का झटका आ सकता है, वायदा व्यापारी लाभ ले सकते है।

३० सितम्बर को अपनी डायरी में नोट कर लें, अतः जब गुरु के साथ शुक्र का सम्बन्ध होता है तो बाजारों में अचानक मन्दे का वातावरण बन जाता है। इस समय बाजार के रुख को अच्छी तरह जांच करके काम करने वाले व्यक्ति ही लाभ ले सकेंगे।

अक्तूबर

यह मास व्यापारियों के लिए विशेष सावधानी का है। क्योंकि २ अक्तूबर को यूरेनस मार्गी हो रहा है जो कि बाजारों में मन्दा करेगा। ४ अक्तूबर को शुक्र एवं राहु की अंशात्मक-युति हो रही है, शुक्र राहु पर मंगल की विशेष दृष्टि भी है। इस समय मास के शुरु की १ से ३ तारीख तक मन्दे के वातावरण में माल पकड़ें और ४ अक्तूबर से बन रही तेजी से उत्तम लाभ मिल सकेगा। गुड़, खाण्ड, चीनी, सोना, चाँदी, रुई, कपास, तिलहन के व्यापारी सतर्कता से काम करें तो उत्तम लाभ मिल सकेगा। इस समय लोगों की खरीदशक्ति बढ़ेगी, कपड़े व सूत के उठाय अधिक होगा। विदेश को रुई आदि के निर्यात की खबर से बाजार चढ़ेंगे। ९ अक्तूबर को बुध वक्री होगा। बुध पर मंगल की दृष्टि भी है। इस समय रुई में झटके के साथ तेजी आकर मन्दा बनेगा। घी, गुड़, खाण्ड शक्कर तेज होंगे और गेहूँ, जौ, चना आदि अनाजों में मन्दे का रुख रहेगा। ऐसा भद्रबाहु संहिता के अनुसार लिखा है। लेकिन ग्रह गोचर के अनुसार हमारा विचार तो यहां हरेक चीज में तेजी का ही है, फिर भी बाजार की चाल के अनुसार काम करें।

१० अक्तूबर को चित्रा नक्षत्र का सूर्य रुई, सूत, सोना, चाँदी, मोती आदि रत्न, गुड़, खाण्ड, अरहर, गेहूं, जौ, चना, तिल, नारियल, सण, केसर, कपूर एवं लालमिर्च में तेजी ही रहे। ११ अक्तूबर को गुरु विशाखा के दूसरे चरण में प्रवेश करेगा, जोकि रुई में मन्दे का भाव बना देगा। अनाजों के भाव में तेजी का वातावरण बनेगा।

१३ अक्तूबर को शुक्र भी वक्री हो जाता है। इस प्रकार १३ अक्तूबर से बुध-शुक्र शनि-राहु-केतु ये ५ ग्रह एक साथ वक्री हालत में चल रहे हैं, इनमें बुध शु. रा. ये तीनों एक ही राशि में इकट्ठे चल रहे हैं, हमारे विचार से यह समय तूफानी तेजी का बन गया है, इस समय व्यापारी तेजी का व्यापार करके लाखों रुपया लाभ ले सकते हैं। तेजी की यह लाईन लम्बी चलेगी। नोट-यदि इस समय बाजार उल्टे चलें तो तुरन्त सौदा काट दें, हानि से बचें। लेकिन हमारा विचार तो यह समय निश्चित रूप से लम्बी तेजी का ही है। क्योंकि ये सभी ग्रह इस समय परम मन्दगति से चल रहे हैं। घी, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं, जौ, चना आदि तेज हों। रुई में भी अच्छी तेजी बनेगी। रुई में अचानक तेजी या मन्दे के जबरदस्त रिएक्शन आएंगे, सावधानी से काम करें। चांदी तेज हो, जूट, हैसियन एवं शेयर बाजारों में अनिश्चितता की स्थिति बनेगी।

१५ अक्तूबर को गुरु-शुक्र की अंशात्मक युति होगी। शुक्र ने वक्र होकर युति की है शुक्र एवं गुरु ये दोनों ग्रह मन्दी प्रधान माने जाते हैं। इस समय ये विचित्र ढंग से बाजारों को प्रभावित करेंगे। कुछ प्रमुख बाजारों पर तो शुक्र ग्रह का विशेष प्रभाव होता है। अतः इस समय प्रत्यक्ष मिलकर ताजा मशवरा प्राप्त करें, अन्यथा हानिमय है।

१७ अक्तूबर को सूर्य तुला राशि में संक्रमण करेगा। तुला राशि में इससे पहिले बु. शु. गु. रा. एक साथ बैठे है। इनके साथ सूर्य का मेल अच्छी तेजी का संकेत देता है। गेहूं, जौ, चना, चावल, मक्का, दालवाना, अलसी, सोना, तांबा, लाल चन्दन, मजीठ, श्रीफल, सुपारी एवं सोना, चांदी, चीनी, गुड़ खाण्ड, तेल तिलहन में तेजी रहे।

१८ अक्तूबर को वक्री बुध चित्रा में आकर रुई, चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी, अनाज भी

कुछ तेज हों।

२१ अक्तूबर को सूर्य-बुध का अंशात्मक युति होगी। बुध ने वक्री होकर यह युति बनाई है। अतः इस समय बाजारों में धमाकेकी तेजी आएगी। हाजर के व्यापारी इस समय अच्छी तेजी में सौदा सैटल करके लाभ लेलें, अन्यथा आगे हानि का भय है। इस समय तेल-तिलहन के व्यापारी विशेष लाभ ले सकते हैं।

२३ अक्तूबर को आश्लेषा नक्षत्र का मंगल चांदी, रुई में मन्दी, अनाज तेज करे। २४ अक्तूबर को स्वाती नक्षत्र का सूर्य और वक्री बुध का कन्या राशि में प्रवेश बाजारों में फिर से अच्छे तेजी ला देगा,-ऐसा विचार है। रुई, सूत, सण, रेशम, कपड़ा, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, बिनौला, सुपारी, मिर्च, अलसी, सरसों, गेहूं, जौ, चना एवं हल्दी में अच्छी तेजी से लाभ मिलेगा।

२५ अक्तूबर को शुक्र एवं राहु की कलात्मक युति होगी। ध्यान दें शुक्र वक्री है और राहु तो वक्री ही रहता है। इस समय इन पर मंगल की नजर भी है। अतः हरेक बाजार में एक-दो दिन में लिए बड़ी तेजी बन सकती है, वायदा व्यापारी एवं रोजाना की तेजी मन्दी लगाने वाले लोग इस समय अच्छा लाभ ले सकते है, हां यदि बाजार उल्टे चलें तो फौरन सौदा काट दें, हानि से बचें, लेकिन हमारा विचार इस समय तेजी का है।

२६ अक्तूबर को गुरु विशाखा ३ में आकर रुई में मन्दे की प्रतिक्रिया ला सकता है। अनाज तेज रहेंगे।

२७ अक्तूबर को वक्री शुक्र स्वाती के चतुर्थ चरण में प्रवेश करेगा। इसीदिन शुक्र पश्चिम में अस्त होगा और बुध पूर्व में उदय होगा। इस समय ग्रहों की पोजीशन अजीब सी बन रही है, अतः बाजार के रुख को ध्यान में रखकर काम करें, अन्यथा हानि में रहेंगे। रुई, दाले, सोना, चांदी, गुड़, सूत, सण, कपड़ा, घी, तेल अलसी एरण्ड, बिनौला, मूंगफली आदि में मन्दे का झटका आएगा। जो बाजार का रुख पहले चला आ रहा था, वह अचानक बदल जाएगा,-ऐसा विचार है।

३० अक्तूबर को बुध मार्गी होगा। इस समय बहुत विचार से काम करें, बाम्पर अनिश्चित स्थिति में रहेंगे। रुई और चाँदी में मन्दे के बाद तेजी हो, अनाज तेज रहें। रेशम, तेल, अलसी, एरण्ड, गुड़, बिनौला, मूंगफली, कपूर चन्दन आदि सुगन्धित चीजों में मन्दा आए। रसकस मन्दे एवं सोना तेज रहे।

नवम्बर

मासारम्भ में ३ नवम्बर को सूर्य-शुक्र की अंशात्मक युति हो रही है। इस समय रुई और चांदी सोने के बाजारों में तेजी का विशेष जोश आएगा। लाभ लें ४ नवम्बर का गुरु अस्त हो रहा है। इस समय शुक्र भी अस्त है।-इस समय जो व्यापारी बाजार के रुख को ध्यान में नहीं रखेंगे निश्चय ही हानि में रहेंगे। इस वक्त हमारा विचार हजार व्यापार में अच्छा मन्दा बनने का है। तेलवाना, रुई, कपास, चाँदी, सोना, गुड़, खाण्ड, और सब बाजारों में तकड़ी मन्दी बनेगी।

५ नवम्बर को बुध फिर से तुला में आकर मन्दे को बढ़ावा दे सकता है, विचारपूर्वक काम करें। रुई, गुड़, खाण्ड, सोना में तेजी एवं चाँदी, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली में मन्दे का ही वातावरण रहेगा।

६ नवम्बर को विशाखा नक्षत्र का सूर्य जौ, चावल, गेहूं, मसूड़, गुड़, खाण्ड, रुई, सूत, सरसों, तिल एरण्ड में तेजी हो। अलसी, चाँदी में घटाबढ़ी होकर तेजी है।

७ नवम्बर को सूर्य-राहु की कलात्मक युति होगी और इसीदिन शुक्र पूर्व में उदित होगा। यह चांस वायदा व्यापारियों के लिए तेजी का है। दालवाना, गुड़, शक्कर, चीनी, चाँदी, रुई, सोना, तेल, घी एवं तिलहन में अच्छी तेजी से लाभ मिलेगा।

९ नवम्बर को शनि के मार्गी होने पर रुई में मन्दी होकर फिर तेजी हो। तिल, तेल, तिलहन, हींग, काली मिर्च में अच्छी तेजी से लाभ मिलेगा। १० नवम्बर को स्वाती नक्षत्र का बुध रुई में मन्दा करता है।

११ नवम्बर की तारीख को व्यापारी अपनी डायरी में नोट कर लें; इसदिन गुरु ग्रह विशाखा के चतुर्थचरण एवं वृश्चिक राशि में प्रवेश करेगा। वृश्चिक राशि में बैठे गुरु का शनि की विशेष दृष्टि है, वृश्चिक राशि का गुरु मूलरूप से तेजी लाने वाला माना गया है। इस समय व्यापारियों को मन्दे का व्यापार करना खतरनाक होगा, अब व्यापारी तेजी में रहकर लाभ ले सकेंगे। गुड़, खाण्ड, चीनी, सोना, चांदी, कपास, रुई, तांबा, कांसी, घी, तेल, सुपारी, सरसों, उड़द आदि दालों में, ऊन में भी उत्तम तेजी बनेगी। इस समय प्रत्यक्ष मिलकर ताजा मशबरा पाने वाले व्यापारी उत्तम लाभ ले सकेंगे।

वृश्चिक का गुरु कपास में अनाजों में, नमक एवं दालवाना में विशेष तेजी का संकेत देता है।

१३ नवम्बर को बुध-शुक्र की अंशात्मक युति होगी। इस समय बुध-शुक्र का मेल राहु के साथ है, इन पर मंगल की विशेष दृष्टि भी है। क्रूरग्रह दृष्टि एवं क्रूरग्रह योग से यह युति तेजीकारक ही है। सोना चाँदी के बाजारों में जबरदस्त तेजी बनेगी लाभ लें। इस समय अनाज, घी, गुड़, तेल, तिलहन में भी अछी तेजी बनेगी।

१६ नवम्बर को **सूर्य वृश्चिक में** आएगा, तुरन्त दूसरे दिन ही (१७ नवम्बर को) **सूर्य गुरु**

की अंशात्मक युति भी हो रही है, रुई, तांबा, चांदी, सोना एवं ऊन, ऊनी वस्त्रों में अच्छी तेजी बनेगी। लाल रंग की चीजों में कुछ मन्दे का प्रभाव रहेगा।

१९ नवम्बर को अनुराधा नक्षत्र का सूर्य जौ, चना आदि धान्यों में ऊन व धातुओं में तेजी करेगा। गेहूं अलसी मिर्च में तेजी होकर मन्दा हो। सोना, चांदी मन्दे रहें। इसी दिन अर्थात् १९ नवम्बर को बुध विशाखा नक्षत्र में आकर रुई में विशेष मन्दे का झटका ला देगा।

लगभग २०, २१ नवम्बर को **बुध-राहु एवं सूर्य-प्लूटो की अंशात्मक युति** होगी, इसदिन बुध पूर्व में अस्त हो जाएगा। बुध सूर्य प्लूटो पर शनि-मंगल की दृष्टि भी है अत: तेल तिलहन, गुड़, खाण्ड, रुई, चांदी, सोना, दालदाना में विशेष तेजी से लाभ ले सकते है।

२२ नवम्बर को मंगल मघा सिंह में आकर शनि के साथ समसप्तक योग बनाएगा इस समय राजनैतिक गतिविधि किंवा सरकारी आर्थिक नीति के तहत किसी घोषणा से बाजारों में जबरदस्त तेजी का संचार होगा। इस समय बिनौला, सरसों, सूरजमुखी, **मूंगफली, तिल** आदि तिलहनों, ग्वारा, तेल, घी, दालवाना, सोना, चांदी में उत्तम तेजी की लाईन **चलेगी। इस समय** लाल मिर्च में भी तेजी बनेगी।

२३ नवम्बर को शुक्र मार्गी होगा। धान्य गुड़, घी के स्टाक से आगे अच्छा लाभ हो, रुई **मन्दी एवं चांदी,** सोना में तेजी आए। २३ नवम्बर को ही राहु स्वाती ४ में और केतु भरणी २ में पदार्यण करेगा। कपास, गुड़, खाण्ड, घी, तेल तेज रहें।

२६ नवम्बर को बुध वृश्चिक में आकर सूर्य के साथ राशि सम्बन्ध बनाएगा। और इसीदिन **गुरु अनुराधा नक्षत्र के** प्रथम चरण में भी आता है। वृश्चिक राशि का बुध तेजी कारक है। जब **बुध सूर्य के साथ** राशि-सम्बन्ध बनाता है। तो स्वत: तेजी कारक हो जाता है। इस समय घी, तेल, सरसों, रुई, चांदी, सोना, दालवाना में तेजी का ही वातावरण रहेगा।

२८ नवम्बर को बुध-गुरु की अंशात्मक-युति एवं बुध का अनुराध में प्रवेश भी तेजी के रिएक्शनों के साथ मन्दे का भी वातावरण बनेगा।

२९ नवम्बर को **बुध-प्लूटो की अंशात्मक युति** होगी साथ ही **यूरेनस** उ. षा. २ में एवं **गुरु उदित** भी होगा। चांदी, तिल, तिलहन, तेल, घी एवं दालवाना आदि अनाज तेज रहें। इस समय सोने में तेजी के बाद मन्दे की प्रतिक्रिया होगी।

दिसम्बर

२ दिसम्बर को गुरु एवं प्लूटो की अंशात्मक युति होगी और इसीदिन सूर्य ज्येष्ठा नक्षत्र में आता है। ऊनी वस्त्र, सोना, चांदी, चावल, गेहूं, जौ, चना, अलसी, सरसों, एरण्ड, हींग, गुड़, खाण्ड तेज हों। रुई में पहले मन्दी होकर बाद में तेजी हो।

६ दिसम्बर को बुध भी ज्येष्ठा नक्षत्र में आ रहा है, सूर्य पहिले ही ज्येष्ठा नक्षत्र में है, घी, गुड, खाण्ड और चावल तेज होंगे ११ दिसंबर को गुरु अनुराधा के दूसरे चरण में आकर सोना, चांदी, अनाज एवं रुई, कपास में मन्दे का रुख बनेगा। १४ दिसंबर को सूर्य-बुध की कलायुति हो रही हे। इस समय दालवाना, गुड़, खाण्ड, चीनी, चांदी, सोना, तेल, तिलहन में अच्छी तेजी का झटका आएगा।

१५ दिसम्बर को सूर्य मूल धनु में एवं इसी दिन बुध मूल धनु में आएगा। धनु राशि का बुध तेजी-मूलक है। रुई, कपास, सूत, सोना, चांदी एवं आलसी में अच्छी तेजी बनेगी। इस समय कदाचित बाजार मन्दे के बनें तो मन्दे में ही रहें। १८ दिसम्बर को शुक्र-राहु की अंशात्मक युति होगी। इस समय बाजारों में बड़ी अच्छी तेजी का झटका आएगा। वायदा व्यापारी लाभ ले सकेंगे।

११ दिसम्बर के लगभग मन्दा आते ही खरीदें और १४ से १८ दिसम्बर तक सौदा तेजी में सैटल करके लाभ लें।

१९ दिसम्बर को शुक्र विशाखा में एवं २० दिसम्बर को शनि शतभिषा ३ में आएगा। इस समय बाजारों में मन्दे का रुख बनेगा, सावधानी से काम करें। गुड़, खाण्ड, घी में तेजी बने, लेकिन रुई व अनाजों में मन्दे का वातावरण रहे।

२३ दिसम्बर को पू. षा. नक्षत्र में बुध बिनौला आदि तिलहनों एवं तेलों में तेजी करेगा, लेकिन दालवाना आदि अनाजों में मन्दा तथा सोना-चांदी में इस समय जोरदार मन्दे का झटका आने का योग है। २७ दिसम्बर को गुरु अनुराधा नक्षत्र के तीसरे चरण में आकर सोना, चांदी, रुई-कपास एवं अनाजों में मन्दे का ही सूचक है। **(१९ दिसं. से २७ दिसम्बर तक उत्तम-मध्यमरूप से मन्दे का ही रुख रहेगा।)**

२९ दिसम्बर को सूर्य पू. षा. नक्षत्र में आकर तिल, तेल, सरसों, बिनौला, गुड, खाण्ड, हल्दी, ऊनी-वस्त्र, सण एवं चांदी में तेजी का रुख बनेगी।

३१ दिसम्बर को शुक्र वृश्चिक राशि में आकर गुरु के साथ मेल करेगा, इस समय गुरु-शुक्र पर शनि एवं मंगल की विशेष दृष्टि है और इसीदिन बुध उ. षा. नक्षत्र में प्रवेश करेगा। पाप ग्रहों की शुक्र गुरु पर दृष्टि होने से यहां बाजारों में मन्दे की आशा होने पर भी कुछ तेजी ही रहेगा। रुई शेयर चाँदी एवं अफीम में मन्दे एवं तेजी के अच्छे रिएक्शन आएंगे। यदि किसी चीज में मन्दा आए तो तुरन्त खरीदें, जल्द ही तेजी से लाभ मिलेगा। गुड़ में भी घटाबढ़ी रहे। गेहूं, जौ, चना, उड़द, मूंग, मोठ, बाजरा आदि अनाज एवं अलसी, बिनौला, तेल तेज रहें।

जनवरी (१९९५ ई.)

मास के प्रारम्भ में २ जनवरी को बुध मकर राशि में आकर अचानक बाजारों में मन्दी ला सकता है, सावधानी से काम करें। **क्योंकि बुध अकेला यदि शनि की राशि-मकर में संचार करता है तो मन्दा बनाया करता है। लेकिन गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार शनि-मंगल का परस्पर दृष्टि सम्बन्ध किसी विशेष घटना को जन्म दे सकता है, जिससे बाजारों में तेजी का वातावरण बनेगा। अत: यहाँ शनि की राशि में बुध का आना विशेष महत्व नहीं रखता; फिर भी व्यापारियों को हिदायत है, कि बाजार के रुख को देखकर व्यापार बढ़ावें।** हमारे विचार से रुई, सोना, चांदी में तेजी एवं, गुड़, खाण्ड, तेल, तेज, अनाजों का भाव पूर्ववत् रहेगा।

३ जनवरी को मंगल वक्री हो जाएगा। मंगल पर शनि की दृष्टि चल ही रही है। यद्यपि सिंह राशि का मंगल मूलरुप से मन्दा करता है, परन्तु शनि की दृष्टि मन्दा नहीं बनने देती। अत: रुई, सोना, चांदी, अलसी, गेहूं, लालमिर्च, काली मिर्च, गुड़, खाण्ड, तेल, तिलहन में अच्छी तेजी बनेगी। नोट–मंगल जिस राशि में वक्री होता है, उस राशि के **अधिकार क्षेत्र मे आने वाली चीजों में तेजी अवश्य लाता है;** यह अनुभव है। अत: सोना, **तांबा, मणि, सरसों, लाल रंग की चीजें,** रेशम आदि में तेजी बनेगी।

४ जनवरी को शुक्र अनुराधा में आकर २२ दिन के अन्दर गुड़, खाण्ड, चावल, नमक आदि में मन्दा आए। ५ जनवरी को **बुध पश्चिम में उदित** होगा; इस समय बाजारों का रुख बदल सकता है, सावधानी से काम करें। रुई, वस्त्र, शेयर बाजारों में १५ दिन मन्दा बनेगा। ९ जनवरी को बुध श्रवण में गुड़, खाण्ड, सोना, चाँदी तथा अनाजों में मन्दा बनेगा।

११ जनवरी को उ. षां. नक्षत्र का सूर्य उड़द, मूंग, चावल, चना, गेहूं, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, सरसों आदि में तेजी करेगा। १३ जनवरी को अनुराधा के चतुर्थचरण में गुरु सोना, चांदी, अनाज, रुई, कपास में मन्दे का रुख बना सकता है।

१४ जनवरी के सूर्य मकर राशि में प्रवेश करके बुध के साथ राशि सम्बन्ध बनाएगा। बुध इस समय कुछ तेजी लाने वाला हो जाता है। घी, तेल, अलसी, गुड़, खाण्ड, शक्कर एवं रुई में इस समय अच्छी तेजी की उम्मीद है।

१७ जनवरी को शुक्र ज्येष्ठा नक्षत्र में आकर कुछ चीजों में तेजी और कुछ चीजों में मन्दा करेगा। अनाजों में कुछ तेजी, सोना, चांदी, चावल, सरसों, तेल, तिलहन और हींग में मन्दे का रुख बनेगा। १८ जनवरी को बुध घनिष्ठा में आकर चावल स्वांक में तेजी, सोना चान्दी में मन्दा एवं रुई में घटाबढ़ी होगी।

२४ जनवरी को श्रवण नक्षत्र का सूर्य गेहूं, जौ, चावल, रुई, सूत, सण, सोना, चाँदी, गुड़, ...अलसी, छुहारा एवं लौंग में तेजी करें।

२५ जनवरी को राहु स्वाती ३ में एवं केतु भरणी १ में आएगा साथ ही इस दिन **बुध वक्री** भी हो रहा है। बुध, सूर्य के साथ है। **जब मकर राशि में बुध वक्री होता है तो गुड़, खाण्ड, सोना, चाँदी, घी, तेल एवं तिलहन बाजारों में अच्छी तेजी का झटका आया करता है।** इस समय अनाजों में कुछ मन्दा आ सकता है। **इस समय रुई में जबरदस्त तेजी का उछाला आने की उम्मीद है।** विचारपूर्वक काम करें।

२६ जनवरी को शनि, शतभिषा के चतुर्थचरण में आएगा। चावल, खाण्ड, घी, लौंग आदि किरयाना में तेजी हो।

२८ जनवरी को बुध पश्चिम में अस्त होगा; इस समय बाजारों का रुख अचानक बदल सकता है; होश्यारी से काम करें। रुई में झटके के साथ काफी मन्दा आएगा, चाँदी तेज रहे, पाट, हैसियन एवं शेयरों के भाव मन्दे हों।

२९ जनवरी को यूरेनस उ. षा. ३ में एवं ३० जनवरी को वक्री पोजीशन में शुक्र मूल नक्षत्र एवं धनु राशि में आएगा। धनु राशि का शुक्र कुछ बाजारों में मन्दे के रिएक्शन देगा, लेकिन इस समय मन्दा ठहरेगा नहीं, अत: तेजी का विचार रखकर ही व्यापार करें। गेहूं, जौं, चना आदि अनाज, चाँदी, तांबा आदि धातु, ऊनी व सूती वस्त्र एवं शेयर बाजारों में तेजी का रुख रहेगा। रुई, सूत, कपास में पहले मन्दी होकर पीछे तेजी हो। सोने में घटाबढ़ी रहे। मजीठ, दाख, छुहारे में भी तेजी का वातावरण रहे।

फरवरी

१ फरवरी को वक्री बुध श्रवण में आएगा और गुरु ज्येष्ठा नक्षत्र में दाखल होगा। इस समय चांदी में मन्दा एवं गुड़ खाण्ड अलसी, चना, चावल में तेजी का ही रुख रहेगा। २ जून को नेपच्यून उ. षा. के प्रथम चरण में आएगा; अनाज, रुई, कपास, लोहा, चन्दन, मजीठ, दाख एवं छुहारा में तेजी बनेगी।

६ फरवरी को सूर्य धनिष्ठा में आकर सोना चांदी, मोती आदि जवाहरात, मूंग, मसूर, गेहूं आदि अनाजों व अलसी रुई में तेजी करे।

९ फरवरी को मंगल उल्टी चाल (वक्र गति) से चलते हुए फिर से कर्क राशि में दाखल होगा, इस प्रकार नीच राशि के मंगल पर बुध एवं गुरु की नजर रहेगी। इस समय तेजी एवं मन्दे के झटके आएंगे। समझ से काम लें। इस समय एक तरफा लाईन न चले। अच्छा हो, कि-मन्दे में खरीद कर तेजी में बेचकर लाभ लेते रहें। इस समय नीच मंगल राहु एवं शनि को देखेगा। अत: कुछ चीजों में अच्छी तेजी के झटके आएंगे। इस

समय वायदा व्यापारी उत्तम लाभ ले सकेंगे, प्रत्यक्ष आकर जानकारी लें। आमतौर पर चांदी, रुई में मन्दे के बाद तेजी बने, लेकिन चांदी के व्यापारी बड़ी मन्दी का विचार रखें, तेजी में रहने पर हानिमय है। दालवाना, गुड़, खाण्ड, चीनी, तेल-तिलहन में इस समय तेजी आते ही लाभ लें।

१० फरवरी को बुध पूर्व में उदय होगा बुध वक्री है। रुई में पहले मन्दी होकर लगभग २ सप्ताह बार जोरदार तेजी बनेगी। गेहूं, चना आदि में आगे तेजी बने। तिल, घी, पाट, हैसियन एवं लालमिर्च में तेजी बनेगी।

११ फरवरी को शुक्र पू. षा. में आएगा एवं इसीदिन प्लूटो अनुराधा के दूसरे चरण में आएगा। इस समय शुक्र-बुध प्लूटो वक्री हैं। मूंग, मोठ, उड़द, तिल, तेल, सरसों, नमक अचानक मन्दा बनकर तेजी बने, सावधानी से व्यापार करें। काली मिर्च, केसर, चन्दन, कपूर आदि में तेजी हो, कपास भी तेज हो।

१२ फरवरी को सूर्य कुम्भ राशि में आकर शनि के साथ राशि-सम्बन्ध बनाएगा। सूर्य-शनि पिता पुत्र हैं परन्तु आपस में शत्रुभाव रखते हैं। इस समय इन पर नीच मंगल की दृष्टि भी है। अतः प्राकृतिक-प्रकोप से या रोग-विशेष से खड़ी फसलों को भारी नुकसान पहुंचने से या कसी राजनैतिक कारण से जबरदस्त-तेजी या मन्दे की लाईन बनेगी, इस समय बड़ी सूझबूझ से काम करें। हमारा विचार यहां बड़ी तेजी का है। फिर भी बाजार के रुख को ध्यान में रखकर काम करें। घी, तेल, सूरजमुखी, बिनौला, सरसों, तिल, मूंगफली आदि तिलहन, खल में उत्तम तेजी से लाभ मिलेगा। गेहूं एवं दालवाना, मकई आदि अनाजों में सामान्य तेजी गुड़, शक्कर खाण्ड के बाजार कुछ नर्म रहें।

१६ फर. को मार्गी होने पर बाजारों की चाल बदल सकती है, होश्यारी से काम करें। चना, गेहूं आदि अनाज, दालवाना में तेजी बनेगी। रेशम, तेल, अलसी, एरण्ड, गुड़, बिनौला, मूंगफली, कपूर, चन्दन-अगर आदि सुगन्धित चीजों में कुछ मन्दा बन सकता है, यदि मन्दा आता है, तो ठहरेगा नहीं।

१७ फरवरी को शनि के अस्त होते ही सूती व ऊनी वस्त्र, रुई, शेयर एवं सोने के बाजारों में मन्दे क झटका आने का योग है, छोटे मोटे अनाज इस समय तेज रहेंगे। १९ फरवरी को शतभिषा नक्षत्र का सूर्य, कुछ दिनों में ही सोना, चांदी, सूत, सण, कपड़ा, तिल, तेल एरण्ड, सरसों, हींग, जायफल, दाख, छुहारा, सोंठ, हल्दी गेहूं एवं गुड़ में तेजी का रुख बनेगा।

२२ फरवरी को उ. षा. नक्षत्र का शुक्र गुड़, खाण्ड, सोना, चांदी, अलसी, एरण्ड में अचानक मन्दे का रुख बने; अनाज तेज, रुई में घटाबढ़ी होकर तेजी हो। २४ फरवरी को शनि के पू.

उड़द आदि दालवाना में तेजी बने।

२५ फरवरी को शुक्र मकर राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा, मकर राशि का बुध मन्दा करता है और इस राशि में शुक्र तेजी करता है, इन पर इस समय मंगल की पूरी नजर होने से हमें तेजी ही जंचती है। शेयर बाजार, गुड़, खाण्ड, घी, गेहूं, चना, जौ, ज्वार, ग्वारा, मक्का एवं दालों में तेजी का चांस बन रहा है। रुई और चांदी में पहले घटाबढ़ी होकर बाद में तेजी रहेगी।

मार्च

३ मार्च को वेंकटेश (प्लूटो) वक्री होगा, इस समय प्लूटो वृश्चिक राशि में गुरु ग्रह के साथ है, इन पर शनि की दृष्टि है। इस समय तेल तिलहन में जबरदस्त तेजी का उछाला आएगा। रेशम, सोना, चांदी, गेहूं, चना, उड़द, चावल, ज्वार, बाजरा, घी, बिनौला, सूरजमुखी, तिल, एरण्ड, सरसों, तोड़िया एवं सभी प्रकार के खाद्य तेलों में तेजी का काम करके लाभ ले सकते है। ६ मार्च के लगभग बाजारों में मन्दे की प्रतिक्रिया से डरें नहीं, यदि ६ मार्च से ९ मार्च के मध्य मंदा बनता है तो तुरन्त स्टाक करें आगे १० से १४ मार्च तक तुरन्त लाभ लें। **ध्यान दें** :–६ मार्च को शुक्र श्रवण नक्षत्र में आकर चांदी, सोना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, मूंग, मोठ, उड़द आदि अनाजों में मन्दा करे। तिल तेल तेज हों, रुई में मन्दे के बाद तेजी हो। इस तरह बाजारों में ऊँचा नीचा ९ मार्च तक चले का योग है।

१० मार्च को बुध, कुम्भराशि में आकर १३ मार्च तक सूर्य के साथ एक आगे तक शनि के साथ रहेगा। इन पर इस समय मंगल की दृष्टि भी है। अतः यह चार दिन बड़ी तेजी का योग है। इस तूफानी तेजी में वायदा-हाजर के व्यापारी उत्तम लाभ उठाएंगे। घी, तेल, रसकस, गुड़, खाण्ड, चीनी, बिनौला, सरसों, मूंगफली, तिल, आदि में हमें बड़ी उत्तम तेजी मालूम देती है; फिर भी व्यापारियों से अनुरोध है, कि-बाजार के उल्टा चलने पर व्यापार को न बढ़ावें।

१४ मार्च को सूर्य मीन राशि में आकर शनि-बुध से अलग हो जाएगा और मंगल की नजर से भी ओझल हो जाएगा। इस समय तिल, तेल, अलसी, सरसों, खाण्ड, गुड़, शक्कर, रुई, सोना में तेजी और प्रत्येक जाति के अनाजों में पहले तेजी बाद में मन्दा बनेगा। चांदी में मन्दे का झटका आ सकता है। १५ मई को शतभिषा का बुध चांदी, सोने में मन्दा अन्न में कुछ तेजी करेगा।

१७ मार्च को शुक्र धनिष्ठा में आकर चावल, मूंग, मोठ, उड़द, ज्वार, बाजरा, चांदी, सोना,

गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं, तेल तेज हों।

२२ मार्च का दिन वायदा व्यापारियों के लिए महत्त्वपूर्ण है। इसदिन शुक्र कुम्भ में वक्री प्लूटो अनुराधा १ में एवं शनि का उदय हो रहा है। ध्यान दें, कि यहां कुम्भ का शुक्र, शनि के साथ मेल करता है और इन पर मंगल की दृष्टि भी है। इस समय रुई, चांदी, गुड़, खाण्ड, गेहूं, चना, जौं, मूंग, ज्वार, बाजरा, चीनी, चावल एवं शेयर बाजारों में अचानक तेजी और मन्दे के अच्छे रिएक्शन आएंगे; **सावधानी से काम करें, समय से पहिले प्रत्यक्ष मिलें, अच्छे लाभ का चांस है। इस समय यदि बाजार मन्दे होने लगे तो मन्दे में रहें, तेजी में चलें तो तेजी में रहें, यही सावधानी बरतें। वैसे शनि के उदित होने पर एवं कुम्भ का शुक्र मन्दे का वातावरण बनाता है, परन्तु शनि के साथ शुक्र का मेल, इन पर मंगल की दृष्टि तथा वक्री प्लूटो का अनुराधा में प्रवेश, ये योग मन्दे की जगह तेजी ला देंगे, ऐसा विचार है, फिर भी विचारपूर्वक काम करें।**

२३ मार्च को बुध पू. भा. में आएगा शनि भी इस समय पू. भा. के दूसरे चरण में आ रहा है। गेहूं आदि अनाज, अलसी, तिल, तेल, सरसों, मूंग, उड़द में तेजी की प्रतिक्रिया होगी। क्योंकि बुध पर मंगल की विशेष दृष्टि है और बुध-शनि के साथ है।

२४ मार्च को मंगल मार्गी हो रहा है। वायदा बाजार में जो वस्तु मन्दी हो वह तेज होगी, तेज चीजों के बाजार मन्दे होंगे, ऐसा विचार है। लगभग ३ दिन बाद रुई में विशेष (खास) मन्दी आ सकती है। तेल, चाँदी में तेजी रहे।

२८ मार्च को शुक्र शतभिषा में आएगा, गुड़, खाण्ड, चावल, घी, सरसों, रुई, सोना चांदी में कुछ तेजी का रुख बने।

२९ मार्च को बुध मीन में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा, लेकिन इन पर गुरु की विशेष दृष्टि है। क्योंकि बुध ग्रह अपनी प्रकृति के अनुसार शुभ ग्रहों की दृष्टि होने पर या सम्बन्ध होने पर मन्दा करता है, अशुभ ग्रह की दृष्टि या सम्बन्ध से तेजी करता है, अतः यहां हमें बाजारों में मन्दे की अच्छी चाल बनती लगती है, फिर भी बाजार के रुख को ध्यान में रखकर काम करें। रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मन्दा हो, बिनौला तेज रहे। २९ मार्च को ही राहु स्वाती २ में एवं केतु अश्विनी ४ में आकर भी सामान्यतया बाजारों में मन्दा ही करेगा।

३१ मार्च को रेवती नक्षत्र का सूर्य एवं उ. भ. नक्षत्र का बुध अलसी, सरसों, एरण्ड, मूंगफली, लहसुन, मोती, लाख, रुई, गेहूं, जौ, चना, चावल में तेजी का वातावरण बना सकता है; हमें इस समय बाजार अनिश्चित मालूम देते हैं, सावधानी से काम करें।

ताजा मशवरा प्राप्त करने या अचूक चांस प्राप्त करने के लिए मिलें या पत्र-व्यवहार करें

इस साल व्यापार के धन कमाने के कुछ सर्वोत्तम चांस आ रहे हैं, ये चांस हम केवल उन व्यापारियों को ही भेजते हैं, जो १२५ रु. भेजकर अपना नाम हमारे रजिस्टर में दर्ज करवा चुके हैं। साथ ही लाभ होने पर लाभांश का दशमांश भेजने की प्रतिज्ञा भी ईश्वर को साक्षी रखकर करते हैं। ताजा मशवरा प्राप्त करने के लिये लिफाफे पर अपना पता लिखकर अवश्य भेजें ताकि तुरन्त जवाब दे सकें। पत्र-व्यवहार हिन्दी में ही करें, अन्यथा उत्तर न मिलेगा। ताजा मशवरा भी उन व्यापारियों को ही भेजेंगे, जिनकी फीस जमा है। **वायदा व्यापारी हरेक मास की ताजा रिपोर्ट प्राप्त करने के लिए प्रत्येक मास १२५ रुपये भेजें, यह योजना इस अप्रैल १९९४ से ही प्रारम्भ कर रहे हैं।**

नोट–जो व्यापारी लाभ होने पर कोई पत्र नहीं देते और लाभंश नहीं भेजते, उन्हें आगे चांस नहीं भेजे जाते। वायदा व्यापारी यदि प्रत्यक्ष मिलें, तो उत्तम लाभ उठा सकेंगे।

पत्र-व्यवहार के लिए पता:–पं. इन्दु शेखर शर्मा शास्त्री, ज्योतिषाचार्य M.A.

(सुपुत्र पं. मुकुन्द बल्लभ जी ज्योतिषाचार्य)

मार्त्तण्ड भवन, रेलवे स्टेशन-मण्डी

मु. पो. कुराली

जि. रोपड़ (पंजाब)

"यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र साधना के लिए महत्त्वपूर्ण काल"

जप एवं यन्त्र मन्त्र आदि की साधना के लिए शास्त्रों द्वारा बारह सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल तथा सूर्य चन्द्र के क्रान्तिसाम्य (महापात) के काल को ठीक सूर्य चन्द्र ग्रहण के समान ही महत्त्वपूर्ण माना गया है। संहिता और ज्योतिष ग्रन्थों में इस विषय में अनेक बचन उपलब्ध हैं। क्रान्तिसाम्य को तन्त्रादि की सिद्धि के लिए ऋषियों ने स्पष्ट रूप से फलप्रद माना है। आचार्य भास्कर ने भी सिद्धान्तशिरोमणि में कहा है कि–यदि क्रान्तिसाम्य के समय जप, अनुष्ठानादि किया जाए तो उसकी वृद्धि होती है–"**पातस्थितिकालान्तर्गतमंगलकृत्यं न शस्यते तज्ज्ञैः। स्नान-जप-होमदानादिकमत्रोपैति खलु वृद्धिम्।**" यन्त्र मन्त्र तन्त्रों की साधना में विशेष रुचि रखने वाले पाठकों के लिए हम नीचे १ जनवरी १९९४ ई. से ३१ मार्च १९९५ ई. तक की सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल तथा क्रान्तिसाम्य के प्रारंभ और समाप्तिकाल (भा. स्टै. टा.) दे रहे हैं। इन कालों में यंत्र तंत्रों के निर्माण से एवं मंत्रजाप से वे अभीष्ट सिद्धि प्राप्त कर सकेंगे।

सायन संक्रान्तिपुण्यकाल, क्रान्तिसाम्य और सूर्य-चन्द्र ग्रहण के अलावा मन्त्रादि साधना के लिए अर्धोदय, महोदय महामहावारुणी पर्व, महावारुणी पर्व, वारुणी पर्व, और षडशीतिमुख पुण्यकाल भी महत्त्वपूर्ण माने गये हैं। षडशीतिमुख पुण्यकाल प्रतिवर्ष चार बार घटित होता है, जबकि शेष अर्धोदय योग आदि कभी-कभी आते हैं। नीचे कोष्ठक में साधकों के लिए सभी का निर्देश किया गया है।

सावधान–यंत्र मंत्र तंत्रों के प्रयोग को प्रभावशाली रूप में साय: फलप्रद बनाने के लिए शास्त्रविहित काल में साधना कीजिए, अन्यथा आगमशास्त्र पर साधक की निराधार अनास्था होने की पूर्ण आशंका है।

सायन संक्रान्ति पुण्य काल

(१ जन. '९४ से ३१ मार्च '९५ तक)

प्रारंभ		समाप्त	
तारीख	घं. मि.	तारीख	घं. मि.
१९९४ ई.			
२० जन.	६/१४	२० जन.	१९/२
१८ फर.	२०/२८	१९ फर.	९/१६
२० मार्च	१९/३४	२१ मार्च	८/२२
२० अप्रै.	७/५	२० अप्रै.	१९/५
२१ मई	६/१८	२१ मई	१८/१८
२१ जून	१४/१७	२२ जून	२/१७
२३ जुला.	१/१२	२३ जुला.	१३/१२
२२ अग.	८/१४	२२ अग.	२०/१४
२३ सितं.	५/५०	२३ सितं.	१७/५०
२३ अक्तू.	१५/७	२४ अक्तू.	३/७
२२ नवं	१२/३७	२३ नवं.	०/३७
२२ दिसं.	१/५३	२२ दिसं.	१३/५३
१९९५ ई.			
२० जन.	१२/३१	२१ जन.	०/३१
१९ फर.	२/४१	१९ फर.	१४/४१

क्रान्तिसाम्य का प्रारंभ-समाप्ति काल

(१ जन. १९९४ ई. से ३१ मार्च १९९५ ई. तक)

प्रारंभ		समाप्त	
तारीख	घं. मि.	तारीख	घं. मि.
सन् १९९४ ई.			
२२ जन.	२/४०	२२ जन.	१२/५
३ फर.	४/०	३ फर.	११/१७
१५ फर.	२३/११	१६ फर.	५/५५
२८ फर.	१२/१८	२८ फर.	१७/२१
२६ मार्च	१/२७	२६ मार्च	६/११
६ अप्रै.	२२/१	७ अप्रै.	३/३४
२० अप्रै.	९/५४	२० अप्रै.	१५/३८
१ मई	२०/२४	२ मई	३/२६
१५ मई	२/२२	१५ मई	१४/३५
१ अग.	०/४२	१ अग.	५/४०
१३ अग.	७/२	१३ अग.	१३/५०
२५ अग.	१७/१	२५ अग.	२३/३५
७ सितं.	[illegible]	७ सितं.	[illegible]
३ अक्तू.	१/१२	३ अक्तू.	६/७
१४ अक्तू.	१७/१७	१४ अक्तू.	२२/५५
८ नव.	१२/९	८ नवं.	२०/४०
सन् १९९५ ई.			
२६ जन.	३/३०	२६ जन.	१७/४१
७ फर.	५/६	७ फर.	१२/३२
२० फर.	०/३०	२० फर.	६/४८
४ मार्च	०/४४	४ मार्च	६/३२
२९ मार्च	१/१८	२९ मार्च	६/४७

ध्यान दें :– मई के अन्तिम सप्ताह से जुलाई के मध्य तक एवं नवम्बर के अन्तिम सप्ताह से जनवरी के मध्य तक सूर्य की क्रान्ति प्रतिवर्ष २१ से २३.५ अंश तक रहती है। लेकिन चन्द्रमा की परम क्रान्ति पात (राहु) की स्थिति के अनुसार प्रतिवर्ष न्यूनाधिक होती रहती है। इस वर्ष चन्द्रमा की परम क्रान्ति २०.७५ अंश से कम चल रही है। अत: उपरोक्त दिनों में (जबकि सूर्य की क्रान्ति २१ अंश से अधिक रहती है तब) चन्द्रक्रान्ति सूर्यक्रान्ति के बराबर नहीं हो सकती। यही कारण है– इस वर्ष इन उपरोक्त दिनों में क्रान्तिसाम्य नहीं हो पाया है। यह स्थिति राहु के भोगांशों के अनुसार कुछ वर्षों बाद घटित होती

षडशीतिमुख संक्रान्ति पुण्यकाल

(१ जन. '९४ से ३१ मार्च '९५ तक)

प्रारंभ		समाप्त	
तारीख	घं. मि.	तारीख	घं. मि.
१९९४ ई०			
१० जन.	५/५४	१० जन.	१७/५४
५ अप्रै.	१९/१	६ अप्रै.	७/१
३ जुला.	२२/५४	४ जुला.	१०/५४
१ अक्तू.	४/१२	१ अक्तू.	१६/१२
१९९५ ई.			
१० जन.	१२/३	११ जन.	०/३
वारुणी पर्व			
१९९५ ई.			
२८ मार्च	७/२९	२९ मार्च	सू. उ.

निरयण संक्रान्ति पुण्यकाल–सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल की भान्ति निरयण संक्रान्ति के पुण्यकाल में भी यंत्र-मंत्रादि की साधना की जा सकती है। लेकिन सायन संक्रान्तियों का पुण्यकाल इसके लिए विशेष महत्त्व रखता है।

सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य–क्रान्तिसाम्य का काल सभी प्रकार के विवाहादि मांगलिक कृत्यों के लिए सर्वथा निषिद्ध है। लेकिन यंत्र साधना के लिए इसे ग्रहणकाल की भान्ति महत्त्वपूर्ण माना गया है। सूर्य-चन्द्र की राशियों के अनुसार निर्धारित किया जाने वाला क्रान्तिसाम्य का प्रारंभ-समाप्तिकाल नितान्त स्थूल होता है। इसे सूक्ष्मतापूर्वक जानने के लिए महापात गणित का प्रयोग किया जाता है। यह गणित सिद्धान्तज्योतिष के सभी ग्रन्थों में विस्तार से निर्दिष्ट है। यहां दिया गया क्रान्तिसाम्य का समाप्तिकाल काल महापात गणित द्वारा स्पष्ट किया गया है। विवाहादि मुहूर्तों में भी क्रान्तिसाम्य

यन्त्र-मन्त्र एवं तन्त्रों का चमत्कार

इस स्तंभ के अन्तर्गत कुछ अनुभूत यंत्र-मंत्र तंत्र गत वर्षों से देते आ रहे हैं। मन्त्रों को शुभ मुहूर्त में गुरुमुख से प्राप्त करके दृढ़ निश्चय से ग्रहणादि के अवसर व किसी महत्त्वपूर्ण अवसर पर जाप अनुष्ठानादि करके सिद्ध कर लेना चाहिए। ध्यान रहे—दीपमाला की रात्रि, क्रान्तिसाम्य काल, सायन एवं निरयण संक्रान्तिकाल या सूर्य-चन्द्र ग्रहण के समय यन्त्रों को विधिवत् लिखकर मंत्रों का विधिपूर्वक जाप करके सिद्ध कर लेना चाहिए, तभी इनका चमत्कार आप अविलम्ब देख सकेंगे। यन्त्र-मन्त्रों के बल पर ही दैवज्ञ अपने वैदुष्य से अक्षुण्ण यश को प्राप्त करता है;–"सिद्धिर्भूषयते विद्याम्।"

भुवनेश्वरी कर्णपिशाचिनी मन्त्र

अधोलिखित मन्त्र को विधिवत् सिद्ध करके मनुष्य त्रिकालज्ञ हो सकता है। भुवनेश्वरी कर्णपिशाचिनी-अत्यधिक चमत्कारी प्रयोग है; अनेक सन्त-महात्माओं के पास इस सिद्धि को अनुभव किया है, जो सम्मुखस्थ व्यक्ति का भूत, भविष्य एवं वर्तमान ऐसे बता देते हैं जैसे सब सामने देख रहे हैं। वस्तुतः यह भुवनेश्वरी भगवती साधक के कान में स्पष्ट रूप से सब कुछ बता देती है। मन्त्र को सिद्ध करके अनुभव करें।

मन्त्र–"ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं भुवनेश्वरी वाग्वादिनी कर्णपिशाचिनी साधकाय सिद्धिदातार्यै नमः ॐ।"

विधि–इस मन्त्र को बहते हुए जल में खड़ा होकर पांच सौ बार जपने के बाद इस मन्त्र से हवन करें, आहूतियां डालें। बाद में ब्रह्म भोजन करें। तत्पश्चात् निम्नांकित यन्त्र को शुद्ध भूमि किंवा पलाश या आम के पट्टे पर रोला बिछा कर दस हजार बार लिखे। तब साधक की वाणी में अवन्ध्य प्रभाव आता है। उस समय जो वचन निकलेगा सत्य ही होगा। भूत, भविष्यत्, वर्तमान का ज्ञान हस्तामलकवत् हो जाता है। साधक का मनोबल प्रबल हो जाता है, राजा-प्रजा उसके वशंवद हो जाते हैं।

ह्रीं ८	१ ह्रीं	६ ह्रीं
ह्रीं ३	५ ह्रीं	७ ह्रीं
ह्रीं ४	९ ह्रीं	२ ह्रीं

मन्त्र साधन के बाद लिखा जाने वाला यन्त्र यह है–

भविष्य कथन के लिए अद्भुत अनुभूत

सिद्ध साबर (शाबर) मन्त्र

मन्त्र–"ॐ नगरी वाला बलवन्त की सिमरूं पवनकुमार रोज्जी देवे चौगुनी दूने देवे महन्त, आद्र घाटी विषभरे भैरों बसे ललाट, तीन खुंटकी मोहनी पिण्डी बसे ललाट, हंकी काली रूप किया विकराल, आधी रैण फिरे मतवाली भजदी आवे, ऋद्धि-सिद्धि सब ल्यावे, दर मोहूं दरम्यान मोहूं, पीड़े बैठी पटराणी मोहूं, घी-सिंदूर मस्तक चढ़े, राजा प्रजा सब नाथ जी के चरणों में पड़े, नाथ जी का आदेश।"

विधि–इस मन्त्र का जाप शुक्ल द्वितीया के चन्द्रदर्शन के बाद आने वाले मंगलवार से शुरु करें। मंगलवार वाले दिन मीठी रोटी (मन्नी) बना कर खाएं, यदि, पूरी न खा सकें, तो बचे टुकड़े (अंश) को किसी को भी न दें, उसे शुद्ध जगह पृथ्वी में दबा दें। मन्त्रजाप के दिनों में ब्रह्मचर्यपूर्वक रहें, भूमिशयन करें, और क्षौर (शेव आदि) न करें। ३१ हजार जप जितने दिनों में निष्ठापूर्वक कर सकें, पूरा करें। ध्यान रहे,–जितना मन्त्रजाप पहले दिन करें उतना ही प्रतिदिन नियमपूर्वक समय पर करें, मन्त्र जाप न्यूनाधिक नहीं होना चाहिए। मन्त्रसिद्ध होने पर साधक त्रिकालज्ञ होता है। सभी के मन की बात स्वतः स्फुरण हो जाती है, मन्त्रजाप पूर्वक अनुभव करें।

बिच्छू विषनाशक, गारुड़ मंत्र

"ॐ सुपर्णोऽसि गरुत्मान् स्त्रीवृते शिरागायत्रं चक्षुर्बृहद्रथन्तरे वक्षी। सोम आत्माच्छेन्दां स्याद्भानि यजूंषि नाम। साम ते तनुर्वाम देव्यं यज्ञयज्ञि यम्पुच्छंधिष्टायाऽशव्या सुपर्णोऽसि गुरुत्मान् दिवं गच्छ स्वः पत ॐ।"

इस मंत्र को संस्कृत की दृष्टि से शुद्ध करने का प्रयास न करें। गारुड़मंत्र का जाप ग्रहण में करके सिद्ध करें। बिच्छू विषाक्त व्यक्ति को नीम की डाली या अपामार्ग (पुठकण्डा) से झाड़े, तुरन्त शान्ति मिलेगी।

विषशान्त्यर्थ प्राचीन शास्त्रोक्त औषध

"दधि मधु नवनीत पिप्पली शृङ्गवेरम्।
मरिचमपि कूटे प्रतिहन्सा सुकेशी।।
यदि दंशति सरोषो तक्षको वासुकिर्वा।
यम सदन गतानां नास्ति मृत्युर्नराणाम्।।"

अर्थात्–गाय के दूध से प्राप्त ताजा मक्खन, गाय का दही, शहद, पिप्पली, अदरक, काली मिर्च, और कूट, प्रतिहंसा, सुकेशी–ये सभी बराबर मात्रा में मिलाकर सर्प से डंसे हुए व्यक्ति को खिला दें, विष उतर जाएगा। यह शास्त्रों में से उद्धृत है, अनुभूत नहीं।

सुख प्रसव के लिए जलमंत्र

"आकाश टले पर्वत टले, राम-लक्ष्मण दुई लाला सुन की कर कोका कोकां रिक्त कुण्डली वसिया बाहरी हव असिया, सिद्ध गुरु कालिका चण्डी रवरे शीघ्र करिया भूमे वे पड़े।"

ताजा शुद्ध जल को सातवार मन्त्र पढ़कर (जल को चम्मच से हिलाकर) प्रसव पीड़ाग्रस्त स्त्री को पिला दें, प्रसव तुरन्त सुखपूर्वक होगा।

धन-धान्य समृद्धि के लिए अन्नपूर्णा मंत्र

"ॐश्रीं ह्रीं क्लीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा, क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ।"

इस मंत्र के प्रभाव से घर में धन धान्य समृद्धि बनी रहती है। इस मंत्र को सिद्ध करने के लिए दो लाख बार जाप करें। तिल, लाल-धान की लाई, खील, दाख एवं गोघृत से बाद में हवन करें।

सर्वसिद्धिप्रद श्री हनुमान् जी का अष्टादशाक्षर मंत्र

"ॐ नमो भगवते आंजनेयाय महाबलाय स्वाहा।"–इस मंत्र का एक लाख जाप करने से सिद्धि मिलती है। मंत्र जाप पूर्ण होने पर खाण्ड, दाल, [illegible] रस, पलाश (ढाक) पीपल या खैर की लकड़ी से दशांश हवन करें।

पशुओं में रोग शान्ति के लिए

गांव में पशुओं की बीमारी से मुक्ति के लिए गुरु पुष्य, रवि पुष्य, हस्तार्क या किसी उत्तम समय में मिट्टी के कोरे कसोरे (परई) के भीतर इस मन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर धूप देकर डाल दें। मन्त्र से युक्त हांडी या कसोरे को भी धूप देकर लाल कपड़े से पशु-शाला में लटका दें, बीमारी नहीं रहेगी।

मन्त्र–"अर्जुनः फाल्गुनो जिष्णुः किरीटी श्वेत वाहनः।
बीभत्सुः विजयी पार्थः सव्यसाची धनञ्जयः।।
कपिध्वजो गुडाकेशो गांडिवी कृष्ण सारथिः।
एतान्यर्जुन नामानि गवां गोष्ठे च यो लिखेत्।
निश्चितं पशु रोगादे र्नाशः शीघ्रं प्रजायते।।"

कुपथगामी पति किंवा पत्नी के वशीकरण के लिए मन्त्र

"ॐकामातुरे काममेखले विद्योषिणि नीललोचने!
"अमुकं" मे वश्यं कुरु कुरु ह्रीं स्वाहा।"

इस मन्त्र में जहां 'अमुक' लिखा है, वहां कुमार्गगामी व्यक्ति का नाम बोलना चाहिए।

विधि–इस उल्लिखित मन्त्र से मिठाई या किसी मीठी भक्ष्य वस्तु को सात बार अभिमंत्रित करे, फिर दुबारा उस व्यक्ति का नाम लेकर उस व्यक्ति का ध्यान करे कि वह व्यक्ति आपके-चरणों में गिर रहा है, क्षमा याचना कर रहा है, ऐसा ध्यान करके इस मंत्र से अभिमन्त्रित करे और उस चीज को खाले। ऐसा ही चालीस दिन करे, व्यक्ति अवश्यमेव वश में हो जाएगा।

पुत्र या अन्य किसी भी व्यक्ति के वशीकरण के लिए अनुभूत सूर्यमन्त्र

आजकल पति-पत्नी, पिता पुत्र, आदि में वैमनस्य देखा गया है, एतदर्थ आप पारस्परिक सम्बन्धों को मधुर बनाने के लिए इस मन्त्र का प्रयोग कर सकते हैं–

मन्त्र–"ॐ नमो भगवते श्री सूर्याय ह्रीं सहस्त्रकिरणाय, ऐं अतुल बल पराक्रमाय नवग्रह दशदिक्पाल-लक्ष्मी-दैवताय, धर्मकर्म सहिताय 'अमुक नाम' नाथय नाथय, मोहय मोहय, आकर्षय-आकर्षय, दासानुदासं कुरु कुरु क्षिप्रं वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।"

इस मन्त्र में जहां 'अमुक नाम' शब्द का प्रयोग किया गया है, वहां जिसे अनुकूल करना हो उस व्यक्ति का नाम लेना चाहिए। वश्य व्यक्ति का ध्यान करके प्रतिदिन इस मंत्र को एक सौ आठ बार, पढ़ना चाहिए, और बाद में ध्यान करें कि वह व्यक्ति आपके सामने झुक गया है; ४१ दिन में ही व्यक्ति वशंवद हो जाएगा।

ध्यान दें–वशीकरण मन्त्रों का प्रयोग उचित कार्य के लिए ही करें, बुरे उद्देश्य से मन्त्र का अनुचित प्रयोग फलीभूत न होगा, पाप के भागी भी होना पड़ेगा।

लक्ष्मी प्राप्ति के लिए अनुभूत मन्त्र

मूलमंत्र–"ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।"

विनियोगादि सहित विधि–ॐ अस्य श्री अष्टविंशत्यक्षर सर्वसिद्धिकरण रमा मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः, श्री महालक्ष्मीर्देवता, श्रीं बीजम् ह्रीं शक्तिः, लक्ष्मीप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ऋष्यादिन्यासः–ॐ [illegible]

ह्रीं श्रीं अंगुष्ठाभ्याम् नमः (हृदयाय नमः)। श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये श्रीं ह्रीं श्रीं तर्जनीभ्यां नमः (शिरसे स्वाहा)। श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं मध्यमाभ्यां नमः (शिखायै वषट्)। श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं अनामिकाभ्यां नमः (कवचाय हुं)। श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै श्रीं ह्रीं श्रीं करतल पृष्ठाभ्यां नमः (अस्राय फट्)।

करन्यास पूर्ण करके बाद में हृदयादि न्यास करे। इस प्रकार मानस उपचार से श्री महालक्ष्मी की पूजा करके मन्त्रजाप करे। मन्त्रजाप से पूर्व महालक्ष्मी का ध्यान इस प्रकार करे–

"सिन्दूरारुण कान्तिमब्ज वसतिं सौन्दर्यवारांनिधिम्
कोटीराङ्गद-हार-कुण्डल कटिसूत्रादिभिर्भूषिताम्।
हस्ताब्जै र्वसुपात्रमब्ज युगलादर्शौ वहन्तीं परा
माबीतां परिचारिकाभिरनिशं ध्यायेत् प्रियां शार्ङ्गिणः।।"

ऐसी महालक्ष्मी का ध्यान करके सवालाख महालक्ष्मी मन्त्र का जाप करे। इस मन्त्र की सिद्धि से व्यापारादि में अतुल धनराशि प्राप्त होती है।

इच्छाप्राप्तिकर यन्त्र

वं	वं	वं	वं
पं	पं	पं	पं
दं	दं	दं	दं
लं	लं	लं	लं

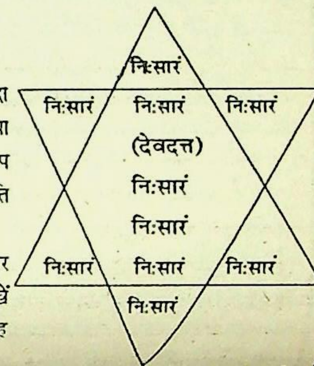
इस इच्छा प्राप्तिकर यन्त्र को भगवान् शंकर का स्मरण करके विल्ववृक्ष के पत्ते पर लिखकर श्रावण में ३० दिन शिवलिंग पर चढ़ावे, मन में मनोकामना पूरी करने की प्रार्थना भी करे। ऐसा करने से भगवान् शंकर प्रसन्न होकर धन सम्पत्ति सहित सभी भोगों का अधिकारी बना देते है।

राज कोप निवारण यंत्र

ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	नाम		ही
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

इस राजकोप निवारण यन्त्र को गोरोचन, केसर, चन्दन एवं अनामिका का रुधिर मिला कर लिखें। बाद में पुष्पादि से पूजा करके कन्या को यथाशक्ति मिष्टान्न आदि दें। फिर योगिनियों को कुलथी के भल्ले देकर नमस्कार करके यन्त्र को मुट्ठी में दबा ले, राजसभा या कचहरी आदि में जावे तो तुरन्त निर्णय हक में हो। यहां यन्त्र में जहां 'नाम' शब्द लिखा है, वहां व्यक्ति का नाम लिखें।

वैराग्योत्पत्तिकर यन्त्र



यह यन्त्र साधु-सन्यासियों के लिए है। अनेकदा साधु-सन्यासियों का मन भौतिक वस्तुओं में किंवा शिष्यों में या भूतपूर्व पारिवारिक जनों में उलझता देखा गया है, परिणामस्वरूप वे अपने आपको उभयभ्रष्ट अनुभव करने लगते हैं। ऐसी स्थिति में यह यन्त्र उन्हें वरदान सिद्ध होता है–अनुभव करें।

इस वैराग्योत्पत्ति यन्त्र को चन्दन से भोजपत्र पर लिखकर लोहे के तावीज में बन्द करके सिर पर (सिरहाने के नीचे) रखें तो धीरे धीरे चित्त में वैराग्य उत्पन्न होने लगेगा। पुत्र-पुत्री से मोह छूट कर योगीरूप में इच्छापूर्वक विचरण करेगा।

व्यापार वर्धक यन्त्र

१६	[illegible]	[illegible]	५
३	६	१५	१०
१३	१२	१	८
२	७	१४	११

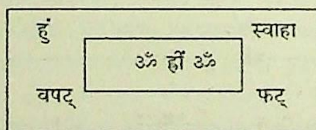
बड़ी मेहनत करने पर भी व्यापारी व्यापार में हानि उठाते हैं, ऐसी स्थिति में इस यन्त्र को दीपावली की रात्रि में सिद्ध करें और चमत्कार अनुभव करें।

इस यन्त्र को रविपुष्य योग में केसर की स्याही से २१०० बार लिखे। बाद में धूप देकर नदी में प्रवाहित कर दे। यन्त्र लेखन के समय पीले वस्त्र धारण करे, घी की ज्योति का प्रकाश करें। यन्त्र लिखते समय "ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सौं जगत्प्रसूत्यै नमः" इस मन्त्र का जाप सवा लाख करे। तत्पश्चात् घी, खीर एवं कमलगट्टा से दशांश हवन, तर्पणादि करें। अनुष्ठान पूर्ण होने तक एक समय भोजन करे एवं भूमि पर शयन करें। निश्चय ही व्यापार में आश्चर्यजनक वृद्धि होगी।

पुत्रदाता यन्त्र

इस यन्त्र को शुभदिन शुभमुहूर्त में गोरोचन, कपूर, केसर एवं कस्तूरी से अनार की कलम से भोजपत्र पर लिखें। यन्त्र की विधिवत् पूजा किंवा प्राणप्रतिष्ठा करके निस्सन्तान स्त्री एवं पुरुष के गले, कमर या बाईं भुजा में बांधने से सद्यः सन्तान का सुख होता है।

यन्त्र



चोरभय दूर हो

नीचे लिखे मन्त्र को रात्रि में तीन बार पढ़कर सो जाने पर भी चोर से हानि नहीं होती:-

मन्त्र- "तिस्त्रो भार्याःकफल्लस्य दाहिनी मोहिनी सती।
तासां स्मरणमात्रेण चौरो गच्छति निष्फलः।।
कफल्लकः कफल्लकः कफल्लकः , नन्दीश्वराय नमः
नन्दीश्वराय नमः, नन्दीश्वराय नमः।"

जिस घर में रात को इस मन्त्र का पाठ होता है, उस घर में यदि चोर आ भी जाए तो चोर को निष्फल ही जाना पड़ता है।

नोट-पण्डित लोग अपने यजमान के लिए गुग्गल-लौंग एवं लोबान को मिलाकर बनाई गई धूप को उल्लिखित मंत्र से अभिमन्त्रित करके चोरादि से रक्षार्थ दे सकते हैं।

गाय या भैंस खूब दूध दे

गाय या भैंस दूध न दे तो निम्नांकित मन्त्र को २१ बार मीठे पेड़े पर अभिमंत्रित करके गाय, भैंस को एक सप्ताह खिला दे, वह दूध देने लगेगी।

मन्त्र-"ॐ ह्रीं करालिनी पुरुष सुखं मुखं ठः ठः।"

कुछ तान्त्रिक प्रयोग

(१) नागफनी की जड़ को बच्चे के गले में पहिना दें तो जिगर व तिल्ली का रोग समाप्त हो जाएगा।

(२) जादूमंत्र व डरावने स्वप्नों से मुक्ति-

यदि किसी व्यक्ति पर जादु मंत्र किया हो, डरावने स्वप्न आते हों, या कोई मंत्रपढ़ी वस्तु खिला दी हो तो निम्नांकित प्रयोग से तुरन्त राहत मिलती है, यह अनुभूत है:-

छोटी इलायची, काकड़ासिंगी, कालीमिर्च, नीम के पत्ते (सूखे) बराबर मात्रा में लेकर पीस लें। फिर गोधूलि वेला (सायंकाल) में सातबार ऊपर उसार कर मिट्टी के सकोरे में आग लेकर पीसे हुए चूर्ण को आग पर डाल दे, जहां वह व्यक्ति रहे उस कमरे में अवश्य करे ताकि वह व्यक्ति अच्छी तरह सूंघ सके। तीन दिन यही प्रक्रिया करने से अवश्यमेव लाभ होगा।

(३) सर्ववशीकरण तन्त्र-

(i) "अपामार्गस्य मूलं तु गोरोचनेन पेषयेत् ।
ललाटे तिलक कुर्याद् वशीकुर्याज्जगत्त्रयम्।।"

अपामार्ग (पुठकण्डा) की जड़ को रगड़ कर गोरोचन मिलाकर मस्तक पर तिलक करने से निश्चय ही सबको वश में किया जा सकता है।

(ii) बिल्व पत्र को कपिला गाय के दूध में रगड़ कर तिलक करके कचहरी आदि में जाने पर पूर्ण सफलता मिलती है।

(48 पृष्ठ का शेष)

पूछताछ कर लेनी चाहिए कि बच्चे के जन्मकाल के घं. मि. कहीं समरटाईम के तो नहीं है। यदि वे समरटाईम के हैं तो बच्चे के उस जन्मकाल में से एक घण्टा घटाकर उसे देश/कालक्षेत्र का वास्तविक स्टैण्डर्ड टाईम समझना चाहिए, और उसीसे उपरोक्त प्रक्रिया द्वारा उसके जन्मपत्र की गणित करनी चाहिए-यह आवश्यक निर्देश है।

ध्यान रहे-अलग-अलग देशों में उन देशों के लोगों की सुविधा के अनुसार समरटाईम के प्रारम्भ और समाप्ति के दिन लगभग प्रतिवर्ष निर्धारित किए जाते हैं, अतः समर टाईम की अवधि में, जो ऊपर बतलाई गई है, कई बार कुछ अन्तर हो जाता है।

इस प्रकार विदेश में उत्पन्न जातक का जन्मपत्र बनाने की प्रक्रिया पूरी तरह स्पष्ट कर दी गई है। इसमें कहीं कोई शंका या अस्पष्टता किसी को हो तो वह मुझसे उसका समाधान उपरोक्तपते पर पत्र देकर मांग सकता है।

यह लेख भी हमारे अप्रकाशित ग्रन्थ **"गणक मार्त्तण्ड"** से संक्षिप्त करके उद्धृत किया गया है। इस ग्रन्थ में विश्व के सभी (सैकड़ों) छोटे-मोटे राष्ट्र, द्वीप, उपद्वीपों के स्टैण्डर्ड मेरिडियन्स और विश्व के सभी अक्षांशों की सूक्ष्म लग्नसारणियां तथा प्रसिद्ध-प्रसिद्ध सभी नगरों के अक्षांश, रेखांश आदि विस्तार से दिए गए हैं।

विश्व के नगरों का सूर्योदयास्त काल

लेखक :-प्रो० प्रियव्रत शर्मा M.A. सिद्धान्त ज्योतिषाचार्य, ५९/६, पंचकूला (हरियाणा)

(नगरों का लेख हम इसी सं २०३४ के पंचांग में पहिले भी दे चुके हैं, लेकिन बहुत से ज्योतिष प्रेमियों के आग्रह पर इसी लेख को इस वर्ष अनेक अपेक्षित अन्य ज्ञातव्य सामग्री के साथ और अधिक स्पष्टीकरण तथा अनेक उदाहरणों द्वारा सरल एवं सुबोध बनाकर यहाँ दे रहे हैं। यह लेख भी हमारे अप्रकाशित ग्रन्थ 'गणकमार्त्तण्ड' से संक्षिप्त करके उद्धृत किया गया है-प्रियव्रत शर्मा)

आज के इस वैज्ञानिक युग में जहाँ वायुयान, जैसे द्रुतगति वाहनों, रेडियो, टी० वी०, Wirerless, Fax आदि के प्रयोग ने राष्ट्र के नगरों ग्रामों की दूरी को लगभग समाप्त ही कर डाला है, वहाँ स्थानीय काल (या स्थानीय मध्यम काल (L.M.T.) का प्रयोग अनेक समस्याएं उत्पन्न करता है। क्योंकि यह काल प्रत्येक स्थान (नगर ग्राम) के लिए लगभग भिन्न भिन्न होता है, अत एवं आज के वैज्ञानिक नक्षत्रविदों ने एक ऐसे काल का सिद्धान्त अपनाया है जो एक राष्ट्र के नगरों, ग्रामों में एकरूप में प्रयुक्त होता है। इसी काल को स्टैण्डर्ड टाइम का नाम दिया गया है। अब विश्व के सभी राष्ट्रों में स्टै. टा. (स्टैण्डर्ड टाईम) का ही सर्वत्र प्रयोग होता है। प्रत्येक राष्ट्र अपने क्षेत्र (Area) के किसी लगभग मध्यस्थान (केन्द्र स्थल) के स्थानीय काल (स्थानीय मध्यम काल) को, जिसे उस देश का स्टैण्डर्ड टाईम कहा जाता है, अपने समस्त प्रान्तों, नगरों, ग्रामों में सभी जगह एकरूप में प्रयोग में आता है, और उसी काल को उस देश की सभी घड़ियां बतलाती हैं। जैसे-भारत का केन्द्र स्थल, जहाँ का स्था. म. का (स्थानीय मध्यम काल) पूरे भारत में भा. स्टै. टा. के रूप में प्रयुक्त होता है, ८२°। ३०' (पूर्व) रेखांश वाला स्थल है। जिस स्थल का स्था. म. का. स्टैण्डर्ड टाईम के रूप में इस्तेमाल किया जाता है, उस स्थल के रेखांश (longitude) को उस देश की स्टैण्डर्ड मेरिडियन (Standard Meridian) का रेखांश कहा जाता है। इस प्रकार भारत की स्टैण्डर्ड मेरिडियन का रेखांश ८२°। ३०' (पू.) है।

क्योंकि सभी जनव्यवहार स्टै. टा. के अनुसार ही होता है, रेल गाड़ियां, वायुयान, टी. वी; रेडियो, आफिस, कालेज, स्कूल आदि से सम्बद्ध शत प्रतिशत कालव्यवहार में इसी (स्टै. टा.) को ही सरकार एवं जनसाधारण प्रयोग में लाता है, अतः यह भी आवश्यक है कि सूर्योदय, सूर्यास्त को बतलाने वाला काल भी, भले ही वह किसी स्थान (नगर, ग्राम) विशेष से ही सम्बन्ध रखता है, इसी स्टै. टा. में ही प्रयुक्त किया जाए, अन्यथा इसके लिए स्था. म. का. को प्रयुक्त करने पर इसके (सूर्योदयास्त के) काल का स्टै. टा. से (जिसे हमारी सभी घड़ियां बतलाती हैं), समन्वय (Co-ordination) नहीं हो पाएगा। उदाहरणार्थ यदि हम प्रत्येक नगर-ग्राम का सूर्योदय, सूर्यास्त उस नगर ग्राम के स्थानीय काल में ही इस्तेमाल करने लग जाएं तो हम स्टै. टा. बतलाने वाली अपनी घड़ी से उस काल को समझ नहीं सकेंगे। अत एव सूर्योदय, सूर्यास्त जैसी स्थानीय घटनाओं को भी हम स्टै. टा. में ही प्रकट करते हैं, ताकि हम इन स्थानीय आकाशीय घटनाओं के काल को भी अपनी इन (स्टै. टा. बतलाने वाली) घड़ियों से जान सकें।

विश्व के किसी भी नगर का सूर्योदय, सूर्यास्त काल स्टै. टा. में जानने के लिए सबसे पहिले हमें निम्नलिखित तीन पदार्थ ज्ञात होने चाहिए :-

(१) अभीष्ट नगर के अक्षांश, रेखांश।

(२) अभीष्ट नगर, जिस देश में स्थित है, उस देश की स्टैण्डर्ड मेरिडियन के रेखांश।

इन तीनों पदार्थों को ज्ञात करने का प्रकार यह है-

(१) नगर के अक्षांश रेखांश :-अपने अभीष्ट नगर के अक्षांश, रेखांश किसी प्रामाणिक एटलस से ज्ञात करने होंगे। इसके लिए ऑक्सफोर्ड, या मैकमिलन के एटलसों का प्रयोग किया जा सकता है। इन एटलसों के अन्त में विश्व के प्रसिद्ध प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखाओं की सूची दी रहती है।

(२) देश की स्टैण्डर्ड मेरिडियन के रेखांश :-यहाँ हमने "स्टैण्डर्ड मेरिडियन सारणी" दी है। इसमें विश्व के खास खास कुछ देशों के स्टैण्डर्ड मेरिडियनों के रेखांश दिए हैं। इससे अपने अभीष्ट देश की मेरिडियन के रेखांश ज्ञात करलें। जैसे-जापान की स्टैण्डर्ड मेरिडियन के रेखांश, जैसाकि सारणी में लिखा है, १३५ अंश ०० कला, [=१३५°/००' (पू.).] हैं। अर्थात् जापान में सर्वत्र प्रयोग में लाया जाने वाला जापानी स्टै. टा. इसी रेखांश वाले स्थान का स्था. म. का. है।

अमेरिका, कनाडा, आस्ट्रेलिया आदि बड़े-बड़े देशों को सुविधार्थ चार-चार, पांच पांच आदि कालक्षेत्रों (Time Zones) में बांटा गया है। इन कालक्षेत्रों में अलग-अलग स्टै. टा. प्रयोग में आते हैं। जैसे-अमेरिका ४ कालक्षेत्रों में बंटा है। इन कालक्षेत्रों में इस्तेमाल होने वाले कालो (स्टै. टाईमों) के नाम ये हैं:-

(१) E.T. (Eastern time)
(२) C. T. (Central time)
(३) M.T. (Mountain time)
(४) P.T. (Pacific time)

यहां दी गई 'स्टैण्डर्ड मेरिडियन सारणी' में इन बड़े देशों के कालक्षेत्रों की स्टैडर्ड मेरिडियनों के रेखांश अलग अलग दिए गए हैं। किस कालक्षेत्र में कौन-कौन से प्रदेश नगर पड़ते हैं, यह जानना भी जरूरी है। जैसे अमेरिका के कैलिफोर्निया, नेवाडा आदि राज्य 'P.T.' कालक्षेत्र में और वाशिंगटन, फ्लोरिडा आदि 'E.T.' कालक्षेत्र में पड़ते हैं। सभी बड़े देशों (अमेरिका, कनाडा, आस्ट्रेलिया आदि) के भिन्न-भिन्न कालक्षेत्रों में पड़ने वाले प्रदेशों का विस्तृत विवरण हमने अपने 'गणकमार्त्तण्ड' में दिया है। इन बड़े देशों में उत्पन्न बच्चे की जन्मपत्री आदि बनाने हेतु वहां का सूर्योदयास्त जानने के लिए यह ज्ञात करना जरूरी है, कि-वह नगर उस बड़े देश के किस 'कालक्षेत्र' में पड़ता है। उसका कालक्षेत्र जानकर उस कालक्षेत्र की स्टैण्डर्ड मेरिडियन के रेखांश "स्टैण्डर्ड मेरिडियन सारणी" से ज्ञात कर लेने चाहिए। जैसे कोई बच्चा न्यूयार्क (अमेरिका) में उत्पन्न हुआ है। न्यूयार्क E.T. (ईस्टर्न टाईम) वाले काल क्षेत्र में पड़ता है, अतः इस बच्चे की जन्मपत्री बनाने के लिए "स्टैण्डर्ड मेरिडियन सारणी" से इस नगर के कालक्षेत्र (E.T.) की स्टैण्डर्ड मेरिडियन के रेखांश-७५°। ००' लेने होंगे। न्यूयार्क का सूर्योदयास्त जानने के लिए इसी को प्रयोग में लाया जाएगा। इस "स्टैण्डर्ड मेरिडियन सारणी" के अन्तिम कालम में यह भी बतलाया गया है कि इस देश या देश के कालक्षेत्र का टाईम भा. स्टै. टा. से कितना आगे (+) या पीछे (-) रहता है। इन काल क्षेत्रों के किसी भी नगर में उत्पन्न बच्चे का जन्मकाल (P.T., E.T. आदि) बतलाने वाला व्यक्ति यह भी आपको बतलाएगा (अथवा आप स्वयं भी उससे यह पूछ सकते हैं) कि बच्चे के जन्म का यह विदेशी काल भा. स्टै. टा. से कितना आगे या पीछे रहता है। यह ज्ञात हो जाने पर आप 'स्टैण्डर्ड मेरिडियन सारणी' के अन्तिम कालम में दिए गए उस विदेशी

कालक्षेत्र का है। उदाहरणार्थ मान लीजिए कोई बच्चा अमेरिका के सेनफ्रांसिस्को (कैलिफोर्निया) में उत्पन्न हुआ। कैलिफोर्निया अमेरिका के किस 'कालक्षेत्र' में पड़ता है,–यह हमें मालूम नहीं है। लेकिन यह हमें ज्ञात है कि सेनफ्रांसिस्को में इस्तेमाल होने वाला टाइम भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम से १३ घन्टा ३० मि. पीछे है। इतना ज्ञात होने से हमें मालूम हो जाएगा, कि सेनफ्रांसिस्को शहर 'P.T' (Pacific Time) के कालक्षेत्र में है, क्योंकि यहां दी गई 'स्टैण्डर्ड मेरिडियन सारणी' में लिखा है कि अमेरिका देश के 'P.T.' कालक्षेत्र का टाईम ही भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम से १३ घं. ३० मि. पीछे है। ''स्टैण्डर्ड मेरिडियन सारणी' में दिए गए स्टैं. मेरिडियनों के रेखांशों के साथ लगाया धन (+) चिह्न पूर्व दिशा और ऋण (-) चिह्न पश्चिम दिशा को बतलाता है।

(३) **नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर**–अभीष्ट देश/काल क्षेत्र के स्टैण्डर्ड मेरिडियन के रेखांश ज्ञात हो जाने पर उस देश/कालक्षेत्र के किसी भी नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर जानना आसान है। अभीष्ट नगर के रेखांश और उस नगर के देश/कालक्षेत्र की स्टैण्डर्ड मेरिडियन के रेखांशों का अन्तर करने पर जो अंश कलाएं मिलें उन्हें ४ से गुणा करें। गुणनफल मिनट और सैकण्ड होंगे। (अंशों को ४ से गुणा करने पर मिनट और कलाओं को ४ से गुणा करने पर सैकण्ड मिलेंगे।)

जैसे–टोकियो (जापान) का स्टैण्डर्ड अन्तर ज्ञात करना है। टोकियो के रेखांश १३९ अंश ३२ कला (पूर्व) हैं और स्टैण्डर्ड मेरिडियन सारिणी में जापान की स्टैण्डर्ड मेरिडियन के रेखांश +१३५°। ००' [= १३५°। ००'(पूर्व),] हैं। इन दोनों रेखांशों का अन्तर ४ अंश ३२ कला है। इसे ४ से गुणा करने पर १८ मि. ८ से. मिले। यह टोकियो का स्टै. अन्तर है। यदि नगर स्टैण्डर्ड मेरिडियन से पूर्व में है तो उसका स्टैण्डर्ड अन्तर धन (+) चिह्न वाला, अन्यथा ऋण (-) चिह्न वाला होगा। नगर स्टैण्डर्ड मेरिडियन से पूर्व में है या पश्चिम में,–इसका निर्णय मानचित्र (नक्शा) देखकर किया जा सकता है। वैसे इसे जानने का दूसरा प्रकार यह भी है–यदि नगर के रेखांश पूर्व दिशा वाले हैं और वे रेखांश स्टैण्डर्ड मेरिडियन के रेखांश से अधिक हों तो वह नगर स्टैण्डर्ड मेरिडियन से पूर्व में होगा, अन्यथा पश्चिम में। पश्चिम रेखांश वाले नगरों के लिए इससे उल्टा समझना चाहिए। (यह नियम लगभग शत प्रतिशत स्थलों के लिए ठीक बैठता है।) इस नियम से स्पष्ट है, कि–टोकियो अपने देश (जापान) की स्टैण्डर्ड मेरिडियन से पूर्व में है, क्योंकि इसके रेखांश पूर्व हैं और ये जापान की स्टैण्डर्ड मेरिडियन से अधिक हैं। अत एव इसका स्टैण्डर्ड अन्तर धन (+) चिह्न वाला होगा।

स्टैण्डर्ड अन्तर जानने का एक और उदाहरण उस नगर का ले लेते हैं, जो अनेक कालक्षेत्रों में बंटी अमेरिका का है। हम यहां लॉसऐंजलस का स्टैं. अं. निकालेंगे। यह शहर अमेरिका के कैलिफोर्निया स्टेट में स्थित है। इस स्टेट में 'P.T.' (Pacific Time) प्रयोग में आता है। स्टै० मेरिडियन सारणी में 'P.T.' कालक्षेत्र की स्टैं. मेरिडियन के रेखांश –१२० अंश ० कला [–१२०° /००' (प.)] हैं। लासऐंजलस के रेखांश ११८ अंश १७ कला (प.) है। इन दोनों का अन्तर १ अंश ४३ कला है। इसे ४ से गुणा करने पर ६ मि. ५२ से. मिले। यह लॉसऐंजलस का स्टै. अन्तर है। क्योंकि लॉसऐंजलस अपने कालक्षेत्र की स्टै. मेरिडियन से पूर्व में स्थित है, अतः इसके स्टैं. अन्तर का चिह्न धन (+) होगा।

सूर्योदयास्त काल जानना :–

उपरोक्त तीन पदार्थ (अक्षांश, स्टैं. मेरिडियन, स्टैं. अन्तर) ज्ञात हो जाने पर अभीष्ट नगर का सूर्योदय एवं सूर्यास्त काल उस देश या कालक्षेत्र के स्टैं. टाईम में नीचे लिखे प्रकार से सरलतापूर्वक जाना जा सकता है। यहां दो पृष्ठों पर विश्व के लगभग सभी अक्षांशों के सूर्योदय और सूर्यास्त का स्थानीय मध्यम काल (स्था. म. का.) बतलाने वाली सारणी दी गई है। इसमें कुछ सूर्योदयास्त काल १०-१० अक्षांशों के अन्तर पर और कुछ ४ अक्षांशों के अन्तर पर दिए गए हैं। यहां तारीखें भी ४-४, ५-५, ६-६ दिनों के अन्तर पर दी हुई हैं। इस सारणी से आप अपने अभीष्ट अक्षांश और अभीष्ट तारीख का सूर्योदय, सूर्यास्त मौखिक त्रैराशिक द्वारा ज्ञात कर सकते हैं। यदि आपका अभीष्ट नगर उत्तर अक्षांश वाला है तो अपनी अभीष्ट तारीख इस सारणी के बाईं ओर वाले पहले कालम में देखें। यदि वह दक्षिण अक्षांश वाला नगर है तब इसके दाईं ओर वाले कालम वाली तारीखों का प्रयोग किया जाएगा, यह ध्यान रखें।

इस सारणी से प्राप्त होने वाला सूर्योदय, सूर्यास्त का. स्था. म. का. में होगा, जो जनव्यवहार में नहीं आता। अतः उनमें स्टैं. अन्तर का संस्कार (जोड़, घटाव) करके उन्हें स्टैं. टाईम में बदलना जरूरी है, क्योंकि जनव्यवहार में सभी जगह स्टैं. टाईम से ही काम होता है। यदि अभीष्ट नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर धन (+) चिह्न वाला है तो उसे सूर्योदय सूर्यास्त के स्था. म. का. में से घटाने पर, अन्यथा जोड़ने पर सूर्योदय सूर्यास्त काल उस देश / कालक्षेत्र के स्टैं. टाईम में बदल जाएंगे।

सूर्योदय, सूर्यास्त के इस स्टैं. टाईम में एक और छोटा सा संस्कार करना होगा। यहां एक 'केन्द्रोदय संस्कार सारणी' दी गई है। इस सारणी से अपनी अभीष्ट तारीख, मास और नगर के अक्षांशों द्वारा मिनट प्राप्त करें। इन्हें सूर्योदय काल में जोड़ें और सूर्यास्त काल में से घटाएं। इस प्रकार प्राप्त होने वाला सूर्योदय-सूर्यास्त काल ज्योतिष शास्त्रीय (जन्मपत्र आदि की) गणित में इस्तेमाल करने योग्य हो जाएगा।

यदि आपका अभीष्ट नगर दक्षिण अक्षांश वाला है, तब उसके सूर्योदय, सूर्यास्त काल में, जो उपरोक्त विधि से बनाया गया है, दक्षिण अक्षांश संस्कार के मिनट चिह्नानुसार जोड़ना, घटाना जरूरी है। यह संस्कार सूर्योदयास्त सारणी के दाईं ओर अन्तिम कालम में दिया गया है।

स्पष्टता के लिए कुछ उदाहरण लीजिए–

(१) काबुल (अफगानिस्तान) में १० अप्रैल को सूर्योदय सूर्यास्त काल (अफगान स्टै० टाईम) में जानना है। काबुल के अक्षांश ३४ अंश ३१ कला (उत्तर) और रेखांश ६९ अंश १२ कला (पूर्व) है। काबुल का स्टै. अन्तर + ६ मिनट ४८ से. है (काबुल का यह स्टैं. अं. काबुल के रेखांश और अफगानिस्तान की स्टैं. मेरिडियन के रेखांशों के अन्तर से पूर्वोक्त विधि द्वारा बनाया गया है)। 'सूर्योदयास्त सारणी' से १० अप्रैल को ३४ अंश ३१ कला का सूर्योदय ५ घं. ३६ मि. और सूर्यास्त १८ घं. २८ मि. मिला। यह 'स्था. मध्यम काल' है। इसमें से काबुल का स्टै. अन्तर ७ मि. धन (+) होने से चिह्न के विपरीत घटाया तो ५ घं. २९ मि. और १८ घं. २१ मि. क्रमशः सूर्योदय एवं सूर्यास्त काल हुए। 'केन्द्रोदय संस्कार सारणी' से काबुल के अक्षांश ३५ अंश और १० अप्रैल द्वारा प्राप्त ४ मि. सूर्योदय में जोड़ने और सूर्यास्त में से घटाने पर काबुल में १० अप्रैल को ५ घं. ३३ मि. और १८ घं. १७ मि. क्रमशः सूर्योदय एवं सूर्यास्तकाल प्राप्त हुए। यह काल अफगानिस्तान के स्टै. टाईम में है।

(२) नैरोबी (केन्या, पूर्वी अफ्रीका) में ६ मई को सूर्योदय-सूर्यास्तकाल (केन्या स्टै. टाईम में) बतलाइये। नैरोबी के अक्षांश १°। २०' (द.) और रेखांश ३६°। ४९' (पू.) हैं। इसका स्टैं. अं. –३२ मि. ४४ से. है। सूर्योदयास्त सारणी से १ अंश २० कला अक्षांश और ६ मई से सूर्योदय और सूर्यास्त क्रमशः ५ घं. ४१ मि. और १७ घं. ४६ मि. मिले। (ध्यान दें, क्योंकि नैरोबी के अक्षांश दक्षिण दिशा के हैं अतः ६ मई को सारणी के दाईं ओर के तारीख वाले कालम में देखा गया है।) इन दोनों उदयास्त कालों में ६ मई का दक्षिण अक्षांश संस्कार + १४ मि. चिह्नानुसार जोड़ा तो उदय और अस्तकाल क्रमशः ५ घं ५५ मि. और १८ घं. ०० मि. हुए। इनमें नैरोबी का स्टैण्डर्ड अन्तर ३३ मिनट चिह्न के विपरीत जोड़ने पर ६ घं. २८ मि. और १८ घं. ३३ मि. क्रमशः उदय एवं अस्तकाल हुए। इनमें नैरो. के अक्षांश १ अंश और ६ मई द्वारा 'केन्द्रोदय संस्कार सारणी' से प्राप्त

३ मि. उदयकाल में जोड़ने और अस्तकाल में से घटाने पर ६ घं. ३६ मि. और १८ घं. ३० मि. नेरोबी में ६ मई को क्रमशः सूर्योदय एवं सूर्यास्त काल (केन्या स्टैण्डर्ड टाईम) में निकल आए।

(३) न्यूयार्क (U.S.A) में १ मार्च को सूर्योदयास्त काल ज्ञात करना है। न्यूयार्क के अक्षांश ४०°। ४३′ (उ.) और रेखांश ७४°। ००′ (प.) है। न्यूयार्क अमेरिका के E.T. (Eastern time) वाले कालक्षेत्र में पड़ता है। E.T. के कालक्षेत्र का स्टैं. मेरिडियन के रेखांश ७५°। ००′ है। न्यूयार्क और E.T. की स्टैण्डर्ड मेरिडियन के रेखांशों का अन्तर १ अंश ० कला है। इसे ४ से गुणा करने पर ४ मि. न्यूयार्क का स्टैण्डर्ड अन्तर हुआ। न्यूयार्क शहर E.T. की स्टैण्डर्ड मेरिडियन के रेखांश से पूर्व में स्थित है। इसलिए इसका स्टैं. अन्तर धन (+) चिह्न वाला होगा।

अब सूर्योदयास्त सारणी से अक्षांश ४० अंश ४३ कला और तारीख १ मार्च द्वारा सूर्योदय एवं सूर्यास्तकाल क्रमशः ६ घं. ३६ मि. और १७ घं. ५० मि. प्राप्त किए। इनमें न्यूयार्क का स्टैण्डर्ड अन्तर ४ मिनट चिह्न के विपरीत घटाने पर सूर्योदय और सूर्यास्तकाल क्रमशः ६ घं. ३२ मि. तथा १७ घं. ४६ मि. हुए। न्यूयार्क के अक्षांश ४१° और १ मार्च द्वारा 'केन्द्रोदय संस्कार सारणी' से प्राप्त ४ मिनट उपरोक्त नियमानुसार सूर्योदयकाल में जोड़ने और सूर्यास्त काल में घटाने पर ज्योतिषगणितोपयोगी सूर्योदय एवं सूर्यास्त क्रमशः ६ घं ३६ मि. तथा १७ घं ४२ मि. हुए। ये काल E.T. (Eastern Standard time) में हैं।

इस उपरोक्त पद्धति से प्राप्त स्वदेशीय या स्वकालक्षेत्रीय स्टैण्डड टाईम वाले सूर्योदय काल द्वारा ही इष्टकाल बनाकर लग्नादि स्पष्ट करने चाहिएं।

यदि सूर्योदयास्त सारणी में अनुपात ठीक से किया जाए और स्टैं. अं. तथा "केन्द्रोदय संस्कार सारणी" से प्राप्त संस्कार के सैकण्डों की भी उपेक्षा न की जाए तो इस पूर्वोक्त प्रक्रिया से उपलब्ध सूर्योदयास्त काल में १ मिनट से अधिक की स्थूलता नहीं हो सकती।

75.00 +39.30 35.22 141-23

स्टैण्डर्ड मेरिडियन सारणी

देश / काल क्षेत्र	स्टैण्डर्ड मेरिडियन (रेखांश) अं. क.	भा. स्टैं. टा. से* अन्तर घं. मि.
अफगानिस्तान	+६७/३०	-१/००
अमेरिका के काल क्षेत्रः-		
(i) E.T. (ईस्टर्न टाईम)	-७५/००	-१०/३०
(ii) C.T. (सेण्ट्रल टाईम)	-९०/००	-११/३०
(iii) M.T. (माउण्टेन टाईम)	-१०५/००	-१२/३०
(iv) P.T. (पेसिफिक टाईम)	-१२०/००	-१३/३०
आस्ट्रेलिया के काल क्षेत्र :-		
(i) विक्टोरिया आदि प्रदेश	+१५०/००	+४/३०
(ii) द. आस्ट्रेलिया आदि	+१४२/३०	+४/००
(iii) वेस्टर्न आस्ट्रेलिया	+१२०/००	+२/३०
इंग्लैण्ड	००/००	-५/३०
इण्डोनेशिया के कालक्षेत्र :-		
(i) सुमात्रा आदि द्वीप	+१०५/००	+१/३०
(ii) बोर्नियो आदि द्वीप	+१२०/००	+२/३०
(iii) केई आदि	+१३५/००	+३/३०
इथोपिया	+४५/००	-२/३०
इराक	+४५/००	-२/३०
इरान	+५२/३०	-२/०
कनाडा के काल क्षेत्र :-		
(i) A.T. (एटलाण्टिक टाईम)	-६०/००	-९/३०
(ii) E.T. (ईस्टर्न टाईम)	-७५/००	-१०/३०
(iii) C.T. (सैण्ट्रल टाईम)	-९०/००	-११/३०
(iv) M.T. (माउण्टेन टाईम)	-१०५/००	-१२/३०
(v) P. T. (पेसिफिक टाईम)	-१२०/००	-१३/३०
कुवैत	+४५/००	-२/३०

देश / काल क्षेत्र	स्टैण्डर्ड मेरिडियन (रेखांश) अं. क.	भा. स्टैं. टा. *से अन्तर घं. मि.
केन्या (पू. अफ्रीका)	+४५/००	-२/३०
घाना	००/००	-५/३०
जर्मनी	+१५/००	-४/३०
जापान	+१३५/००	+३/३०
टर्की	+३०/००	-३/३०
तंजानिया	+४५/००	-२/३०
थाईलैंड	+१०५/००	+१/३०
नाईजीरिया	+१५/००	-४/३०
नेपाल	+८२/३०	००/००
न्यूजीलैण्ड	+१८०/००	+६/३०
पाकिस्तान	+७५/००	-०/३०
फ्रांस	+१५/००	-४/३०
बंगलादेश	+९०/००	+०/३०
बर्मा	+९७/३०	+१/००
भारत	+८२/३०	००/००
भूटान	+८२/३०	००/००
मलेशिया	+११२/३०	+२/००
मारिशस	+६०/००	-१/३०
मिश्र	+३०/००	-३/३०
युगाण्डा	+४५/००	-२/३०
श्रीलंका	+८२/३०	००/००
सिंगापुर	+११२/३०	+२/००
स्विट्जर लैण्ड	+१५/००	-४/३०
हांग कांग	+१२०/००	+२/३०

* यह कालम देशों/काल क्षेत्रों के स्टै. टा. का भा. स्टै. टा. से अन्तर बतलाता है। यदि यह अन्तर धन (+) चिह्न वाला है तो समझना चाहिए कि उस देश/काल क्षेत्र का स्टैं. टा. भा. स्टै. टा. से उतना आगे, अन्यथा पीछे रहता है।

केन्द्रोदय-संस्कार सारणी

मास-तारीख				० अक्षांश मि. से.	१० अक्षांश मि. से.	२० अक्षांश मि. से.	३० अक्षांश मि. से.	४० अक्षांश मि. से.	५० अक्षांश मि. से.	५४ अक्षांश मि. से.
मार्च २१	- -	सितं. २३	- -	३/८	३/११	३/२०	३/३७	४/५	४/५३	५/२०
मार्च ८	अप्रै. ५	सितं. १०	अक्तू. ६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३/३८	४/७	४/५५	५/२४
फर. २४	अप्रै. १६	अग. २७	अक्तू. १९	३/११	३/१४	३/२४	३/४२	४/१३	५/४	५/३५
फर. ९	मई १	अग. १२	नवं. ३	३/१५	३/१८	३/२८	३/४७	४/२१	५/१९	५/५७
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३/५६	४/३४	[illegible]	[illegible]

उत्तर अक्षांश के लिए		सूर्योदय (स्था. म. का.) अक्षांश							सूर्यास्त (स्था. म. का.) अक्षांश							दक्षिण अक्षांश के लिए		
		०°	+ १०°	+ २०°	३०°	४०°	५०°	५४°	०°	+ १०°	+ २०°	+ ३०°	+ ४०°	+ ५०°	+ ५४°	तारीख		संस्कार
तारीख		घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.			मि.
दिसं.	३१	५ ५९	६ १६	६ ३५	६ ५६	७ २२	७ ५९	८ १९	१८ ०७	१७ ४९	१७ ३१	१७ १०	१६ ४४	१६ ०७	१५ ४७	जुला.	१	+ १
जन.	५	६ ०२	६ १८	६ ३६	६ ५७	७ २२	७ ५८	८ १८	१८ ०९	१७ ५२	१७ ३४	१७ १४	१६ ४८	१६ १३	१५ ५३		७	- १
	१०	६ ०४	६ २०	६ ३७	६ ५७	७ २२	७ ५६	८ १५	१८ ११	१७ ५५	१७ ३८	१७ १८	१६ ५३	१६ १९	१६ ००		१२	- २
	१५	६ ०६	६ २१	६ ३८	६ ५७	७ २०	७ ५३	८ ११	१८ १३	१७ ५७	१७ ४१	१७ २२	१६ ५९	१६ २६	१६ ०८		१७	- ३
	२०	६ ०७	६ २२	६ ३८	६ ५६	७ १८	७ ४९	८ ०६	१८ १५	१८ ००	१७ ४४	१७ २६	१७ ०४	१६ ३३	१६ १६		२३	- ५
	२५	६ ०९	६ २३	६ ३७	६ ५४	७ १५	७ ४४	७ ५९	१८ १६	१८ ०२	१७ ४७	१७ ३१	१७ १०	१६ ४१	१६ २६		२८	- ६
	३०	६ १०	६ २३	६ ३६	६ ५२	७ ११	७ ३८	७ ५२	१८ १७	१८ ०४	१७ ५०	१७ ३५	१७ १६	१६ ५०	१६ ३६	अग.	२	- ७
फर	४	६ १०	६ २२	६ ३५	६ ४९	७ ०७	७ ३०	७ ४३	१८ १७	१८ ०६	१७ ५३	१७ ३९	१७ २२	१६ ५८	१६ ४६		८	- ८
	९	६ ११	६ २१	६ ३३	६ ४६	७ ०१	७ २२	७ ३४	१८ १८	१८ ०७	१७ ५६	१७ ४३	१७ २८	१७ ०७	१६ ५६		१३	- ९
	१४	६ ११	६ २०	६ ३०	६ ४२	६ ५५	७ १४	७ २४	१८ १८	१८ ०८	१७ ५९	१७ ४७	१७ ३४	१७ १५	१७ ०६		१८	- १०
	१९	६ ११	६ १९	६ २७	६ ३७	६ ४९	७ ०५	७ १३	१८ १७	१८ ०९	१८ ०१	१७ ५१	१७ ४०	१७ २४	१७ १६		२३	- ११
	२४	६ १०	६ १७	६ २४	६ ३२	६ ४२	६ ५५	७ ०२	१८ १७	१८ १०	१८ ०३	१७ ५५	१७ ४५	१७ ३३	१७ २६		२९	- १२
मार्च.	१	६ ०९	६ १५	६ २०	६ २७	६ ३५	६ ४५	६ ५०	१८ १६	१८ ११	१८ ०५	१७ ५९	१७ ५१	१७ ४१	१७ ३६	सितं.	३	- १३
	६	६ ०८	६ १२	६ १७	६ २१	६ २७	६ ३५	६ ३९	१८ १५	१८ ११	१८ ०७	१८ ०२	१७ ५६	१७ ४९	१७ ४५		८	- १४
	११	६ ७'	६ १०	६ १३	६ १६	६ १९	६ २४	६ २७	१८ १३	१८ ११	१८ ०८	१८ ०५	१८ ०२	१७ ५७	१७ ५५		१३	- १४
	१६	६ ०६	६ ०७	६ ०८	६ १०	६ ११	६ १३	६ १४	१८ १२	१८ ११	१८ १०	१८ ०८	१८ ०७	१८ ०५	१८ ०५		१८	- १५
	२१	६ ०४	६ ०४	६ ४	६ ०४	६ ०३	६ ०२	६ ०२	१८ ११	१८ ११	१८ ११	१८ १२	१८ १२	१८ १३	१८ १४		२३	- १५
	२६	६ ०३	६ ०१	६ ००	५ ५८	५ ५५	५ ५२	५ ५०	१८ ०९	१८ ११	१८ १३	१८ १५	१८ १७	१८ २१	१८ २३		२८	- १५
अप्रै.	३१	६ ०१	५ ५८	५ ५५	५ ५२	५ ४७	५ ४१	५ ३७	१८ ०८	१८ ११	१८ १४	१८ १८	१८ २३	१८ २९	१८ ३३	अक्तू.	४	- १५
	५	६ ००	५ ५५	५ ५१	५ ४६	५ ३९	५ ३०	५ २५	१८ ०६	१८ ११	१८ १५	१८ २१	१८ २८	१८ ३७	१८ ४२		९	- १५
	१०	५ ५८	५ ५३	५ ४७	५ ४०	५ ३१	५ १९	५ १३	१८ ०५	१८ ११	१८ १७	१८ २४	१८ ३३	१८ ४५	१८ ५१		१३	- १५
	१५	५ ५७	५ ५०	५ ४३	५ ३४	५ २३	५ ०९	५ ०१	१८ ०४	१८ ११	१८ १८	१८ २७	१८ ३८	१८ ५३	१९ ०१		१८	- १५
	२०	५ ५६	५ ४८	५ ३९	५ २९	५ १६	४ ५९	४ ४९	१८ ०२	१८ ११	१८ २०	१८ ३०	१८ ४३	१९ ०१	१९ १०		२३	- १५
	२५	५ ५५	५ ४५	५ ३५	५ २४	५ ०९	४ ४९	४ ३८	१८ ०१	१८ ११	१८ २१	१८ ३३	१८ ४८	१९ ०८	१९ १९		२८	- १४
	३०	५ ५४	५ ४३	[illegible] ३२	५ १९	५ ०२	४ ४०	४ २७	१८ ०१	१८ ११	१८ २३	१८ ३६	१८ ५३	१९ १६	१९ २९	नवं.	२	- १४
मई	५	५ ५३	५ ४२	५ २९	५ १४	४ ५६	४ ३१	४ १७	१८ ००	१८ १२	१८ २५	१८ ३९	१८ ५८	१९ २४	१९ ३८		७	- १३
	१०	५ ५३	५ ४०	५ २६	५ १०	४ ५१	४ २३	४ ०७	१८ ००	१८ १३	१८ २७	१८ ४३	१९ ०३	१९ ३१	१९ ४७		१२	- १२
	१५	५ ५३	५ ३९	५ २४	५ ०७	४ ४६	४ १५	३ ५८	१८ ००	१८ १४	१८ २९	१८ ४६	१९ ०८	१९ ३८	१९ ५५		१७	- ११
	२०	५ ५३	५ ३८	५ २२	५ ०४	४ ४१	४ ०८	३ ५०	१८ ००	१८ १५	१८ ३१	१८ ४९	१९ १२	१९ ४५	२० ०३		२१	- ११
	२५	५ ५३	५ ३८	५ २१	५ ०२	४ ३७	४ ०३	३ ४३	१८ ००	१८ १६	१८ ३३	१८ ५२	१९ १७	१९ ५२	२० ११		२६	- १०
	३०	५ ५४	५ ३८	५ २०	५ ००	४ ३४	३ ५८	३ ३७	१८ ०१	१८ १७	१८ ३५	१८ ५५	१९ २१	१९ ५७	२० १८	दिसं.	१	- ८
जून	४	५ ५४	५ ३८	५ २०	४ ५९	४ ३२	३ ५४	३ ३३	१८ ०२	१८ १९	१८ ३७	१८ ५८	१९ २४	२० ०३	२० २४		६	- ८
	९	५ ५५	५ ३८	५ २०	४ ५८	४ ३१	३ ५२	३ २९	१८ ०३	१८ २०	१८ ३८	१९ ००	१९ २७	२० ०७	२० २९		१०	- ७
	१४	५ ५६	५ ३९	५ २०	४ ५८	४ ३०	३ ५०	३ २७	१८ ०४	१८ २१	१८ ४०	१९ ०२	१९ ३०	२० १०	२० ३३		१५	- ५
	१९	५ ५७	५ ४०	५ २१	४ ५९	४ ३१	३ ५०	३ २७	१८ ०५	१८ २२	१८ ४१	१९ ०३	१९ ३२	२० १२	२० ३५		२०	- ४
	२४	५ ५९	५ ४१	५ २२	५ ००	४ ३२	३ ५१	३ २८	१८ ०६	१८ २३	१८ ४२	१९ ०५	१९ ३३	२० १३	२० ३६		२४	- ३
	२९	६ ००	५ ४२	५ २३	५ ०१	४ ३३	३ ५३	३ ३०	१८ ०७	१८ २४	१८ ४३	१९ ०५	१९ ३३	२० १३	२० ३६		२९	- १
जुला.	४	६ ०१	५ ४३	५ २५	५ ०३	४ ३६	३ ५६	३ ३४	१८ ०८	१८ २५	१८ ४४	१९ ०५	१९ ३२	२० १२	२० ३४	जन.	२	०

उत्तर अक्षांश के लिए	सूर्योदय (स्था. म. का.) अक्षांश							सूर्यास्त (स्था. म. का.) अक्षांश							दक्षिण अक्षांश के लिए	
	०°	+१०°	+२०°	+३०°	+४०°	+५०°	+५४°	०°	+१०°	+२०°	+३०°	+४०°	+५०°	+५४°	तारीख	संस्कार
तारीख	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.		मि.
जुला. ४	६ ०१	५ ४३	५ २५	५ ०३	४ ३६	३ ५६	३ ३४	१८ ०८	१८ २५	१८ ४४	१९ ०५	१९ ३२	२० १२	२० ३४	जन २	०
९	६ ०१	५ ४५	५ २७	५ ०६	४ ३९	४ ००	३ ३९	१८ ०९	१८ २५	१८ ४३	१९ ०४	१९ ३१	२० ०९	२० ३१	६	+ १
१४	६ ०२	५ ४६	५ २८	५ ०८	४ ४२	४ ०५	३ ४५	१८ ०९	१८ २६	१८ ४३	१९ ०३	१९ २९	२० ०५	२० २६	११	+ ३
१९	६ ०३	५ ४७	५ ३०	५ ११	४ ४६	४ ११	३ ५१	१८ १०	१८ २५	१८ ४२	१९ ०१	१९ २६	२० ०१	२० २०	१६	+ ४
२४	६ ०३	५ ४८	५ ३२	५ १४	४ ५०	४ १७	३ ५९	१८ १०	१८ २५	१८ ४१	१८ ५९	१९ २२	१९ ५५	२० १३	२१	+ ५
२९	६ ०३	५ ४९	५ ३४	५ १७	४ ५५	४ २४	४ ०७	१८ १०	१८ २४	१८ ३९	१८ ५६	१९ १८	१९ ४८	२० ०५	२६	+ ६
अग. ३	६ ०३	५ ५०	५ ३६	५ २०	४ ५९	४ ३१	४ १५	१८ १०	१८ २३	१८ ३६	१८ ५२	१९ १२	१९ ४१	१९ ५६	३१	+ ७
८	६ ०२	५ ५०	५ ३७	५ २२	५ ०४	४ ३८	४ २४	१८ ०९	१८ २१	१८ ३४	१८ ४८	१९ ०७	१९ ३२	१९ ४६	फर. ४	+ ९
१३	६ ०२	५ ५१	५ ३९	५ २६	५ ०९	४ ४५	४ ३३	१८ ०८	१८ १९	१८ ३१	१८ ४४	१९ ००	१९ २३	१९ ३६	९	+ ९
१८	६ ०१	५ ५१	५ ४१	५ २९	५ १४	४ ५३	४ ४२	१८ ०७	१८ १७	१८ २७	१८ ३९	१८ ५४	१९ १४	१९ २५	१४	+ १०
२३	५ ५९	५ ५१	५ ४२	५ ३१	५ १८	५ ००	४ ५१	१८ ०६	१८ १४	१८ २३	१८ ३४	१८ ४६	१९ ०४	१९ १४	१९	+ ११
२८	५ ५८	५ ५१	५ ४३	५ ३४	५ २३	५ ०८	५ ००	१८ ०५	१८ ११	१८ १९	१८ २८	१८ ३९	१८ ५४	१९ ०२	२३	+ १२
सितं. २	५ ५७	५ ५१	५ ४४	५ ३७	५ २८	५ १५	५ ०९	१८ ०३	१८ ०९	१८ १५	१८ २२	१८ ३१	१८ ४४	१८ ५०	२८	+ १३
७	५ ५५	५ ५०	५ ४५	५ ४०	५ ३३	५ २३	५ १७	१८ ०२	१८ ०६	१८ ११	१८ १६	१८ २३	१८ ३३	१८ ३८	मार्च ५	+ १४
१२	५ ५३	५ ५०	५ ४७	५ ४२	५ ३७	५ ३०	५ २६	१८ ००	१८ ०३	१८ ०६	१८ १०	१८ १५	१८ २२	१८ २६	१०	+ १४
१७	५ ५२	५ ५०	५ ४८	५ ४५	५ ४२	५ ३८	५ ३५	१७ ५८	१८ ००	१८ ०२	१८ ०४	१८ ०७	१८ ११	१८ १३	१५	+ १४
२२	५ ५०	५ ४९	५ ४९	५ ४८	५ ४७	५ ४५	५ ४४	१७ ५६	१७ ५७	१७ ५७	१७ ५८	१७ ५९	१८ ००	१८ ०१	२०	+ १५
२७	५ ४८	५ ४९	५ ५०	५ ५१	५ ५२	५ ५३	५ ५३	१७ ५४	१७ ५३	१७ ५२	१७ ५१	१७ ५०	१७ ४९	१७ ४८	२५	+ १५
अक्तू. २	५ ४६	५ ४९	५ ५१	५ ५३	५ ५६	६ ००	६ ०२	१७ ५३	१७ ५०	१७ ४८	१७ ४५	१७ ४२	१७ ३८	१७ ३६	२९	+ १५
७	५ ४५	५ ४८	५ ५२	५ ५६	६ ०१	६ ०८	६ ११	१७ ५१	१७ ४८	१७ ४४	१७ ३९	१७ ३४	१७ २७	१७ २४	अप्रै. ४	+ १५
१२	५ ४३	५ ४८	५ ५४	५ ५९	६ ०६	६ १६	६ २१	१७ ५०	१७ ४५	१७ ३९	१७ ३३	१७ २६	१७ १६	१७ १२	९	+ १५
१७	५ ४२	५ ४९	५ ५५	६ ०३	६ १२	६ २४	६ ३०	१७ ४९	१७ ४२	१७ ३६	१७ २८	१७ १९	१७ ०६	१७ ००	१४	+ १५
२२	५ ४१	५ ४९	५ ५७	६ ०६	६ १७	६ ३२	६ ४०	१७ ४८	१७ ४०	१७ ३२	१७ २३	१७ १२	१७ ५७	१६ ४९	१९	+ १५
२७	५ ४१	५ ४९	५ ५९	६ १०	६ २३	६ ४०	६ ४९	१७ ४७	१७ ३८	१७ २९	१७ १८	१७ ०५	१६ ४७	१६ ३८	२४	+ १४
नवं. १	५ ४०	५ ५०	६ ०१	६ १३	६ २८	६ ४८	६ ५९	१७ ४७	१७ ३७	१७ २६	१७ १४	१६ ५९	१६ ३८	१६ २७	२९	+ १४
६	५ ४०	५ ५२	६ ०४	६ १७	६ ३४	६ ५७	७ ०९	१७ ४७	१७ ३६	१७ २४	१७ १०	१६ ५३	१६ ३०	१६ १८	मई ४	+ १५
११	५ ४०	५ ५३	६ ०६	६ २१	६ ४०	७ ०५	७ १९	१७ ४८	१७ ३५	१७ २२	१७ ०७	१६ ४८	१६ २२	१६ ०९	९	+ १२
१६	५ ४१	५ ५५	६ ०९	६ २५	६ ४५	७ १३	७ २८	१७ ४८	१७ ३५	१७ २०	१७ ०८	१६ ४४	१६ १६	१६ ००	१४	+ १२
२१	५ ४२	५ ५७	६ १२	६ २९	६ ५१	७ २१	७ ३८	१७ ४९	१७ ३५	१७ १९	१७ ०२	१६ ४०	१६ १०	१५ ५३	२०	+ ११
२६	५ ४३	५ ५९	६ १५	६ ३४	६ ५७	७ २९	७ ४६	१७ ५१	१७ ३५	१७ १९	१७ ०१	१६ ३७	१६ ०५	१५ ४८	२५	+ १०
दिसं. १	५ ४५	६ ०१	६ १८	६ ३८	७ ०२	७ ३६	७ ५५	१७ ५३	१७ ३६	१७ १९	१७ ००	१६ ३६	१६ ०२	१५ ४३	३०	+ ८
६	५ ४७	६ ०४	६ २१	६ ४२	७ ०७	७ ४२	८ ०२	१७ ५५	१७ ३८	१७ २०	१७ ००	१६ ३५	१५ ५९	१५ ४०	जून ५	+ ७
११	५ ४९	६ ०६	६ २४	६ ४५	७ ११	७ ४८	८ ०८	१७ ५७	१७ ४०	१७ २२	१७ ०१	१६ ३५	१५ ५८	१५ ३८	१०	+ ६
१६	५ ५२	६ ०९	६ २७	६ ४९	७ १५	७ ५२	८ १३	१७ ५९	१७ ४२	१७ २३	१७ ०२	१६ ३६	१५ ५८	१५ ३८	१५	+ ५
२१	५ ५४	६ ११	६ ३०	६ ५१	७ १८	७ ५५	८ १७	१८ ०१	१७ ४४	१७ २५	१७ ०४	१६ ३८	१६ ००	१५ ३९	२०	+ ३
२६	५ ५७	६ १४	६ ३२	६ ५४	७ २०	७ ५८	८ १९	१८ ०४	१७ ४६	१७ २७	१७ ०७	१६ ४०	१६ ०३	१५ ४२	२६	+ २

"गणकमार्त्तण्ड" से उद्धृत–

विदेश में उत्पन्न जातक का जन्मपत्र बनाएँ :–

लेखक :–प्रो. प्रियव्रत शर्मा, कोठी नं. ५९, (अभिजित्), सैक्टर ६, P.O. पंचकूला (हरियाणा)

मुझे प्रतिवर्ष ऐसे असंख्य ज्योतिषियों और ज्योतिष प्रेमियों के पत्र आते हैं, जो भारत में उत्पन्न जातकों (बच्चों) का जन्मपत्र तो बना लेते हैं, लेकिन विदेश (भारत से अन्य देश) में उत्पन्न जातक का जन्मपत्र बनाने की प्रक्रिया उन्हें ज्ञात नहीं है। उनके आग्रह के कारण ही विदेश में उत्पन्न जातक का जन्मपत्र बनाने का सरलतम प्रकार अनेक उदाहरणों सहित यहाँ दिया जा रहा है। यदि आप भारत में उत्पन्न जातक का जन्मपत्र बनाना जानते हैं, तो विदेश में उत्पन्न जातक का जन्मपत्र बनाने का यह प्रकार, जिसे हम नीचे लिख रहे हैं, समझने में आपको किसी प्रकार की कठिनाई नहीं होगी।

विदेश में उत्पन्न जातक की जन्मपत्री बनाने की विधि जानने के लिए सर्वप्रथम निम्नलिखित ये चार पदार्थ आप को ज्ञात होने चाहिएं :–

(१) अभीष्ट नगर के अक्षांश, रेखांश।

(२) अभीष्ट देश/कालक्षेत्र की स्टैण्डर्ड मेरिडियन के रेखांश।

(३) अभीष्ट देश/कालक्षेत्र के स्टैं. टा. का भा. स्टैं. टा. से अन्तर।

(४) अभीष्ट नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर।

इन पदार्थों को कैसे ज्ञात करें–यह हमने इसी पंचांग में पृष्ठ 38 पर **"विश्व के नगरों का सूर्योदयास्त काल"** शीर्षक लेख में विस्तार से लिखा है, वहाँ पढ़ें। वह लेख इस लेख का ही एक अत्यन्त आवश्यक भाग है, अतः इस लेख को समझने के लिए वह लेख पढ़ना नितान्त आवश्यक है। यह समझकर कि आपने वह लेख पढ़ लिया है, हम समझ लेते हैं, कि ऊपर लिखे चारों पदार्थ आप ज्ञात कर सकते हैं। अभीष्ट देश, नगर के ये चारों पदार्थ ज्ञात कर लेने के बाद विदेशी नगर में उत्पन्न जातक का जन्मपत्र बनाने की प्रक्रिया समझना नितान्त सरल है। क्योंकि हम भारतीय पंचागों को ही प्रयोग में लाते है, अतः किसी भी भारतीय पंचाग से विदेश में उत्पन्न जातक का जन्मपत्र बनाने का प्रकार हम यहाँ बतलाएंगे।

भारतीय पंचाग से विदेशी जन्मपत्र बनाने के लिए हमें भारतीय पंचाग में दिए गए तिथि आदि के काल को अभीष्ट देश/कालक्षेत्र के टाईम में परिवर्तित करना होगा। इसे ही "पंचाग परिवर्तन" कहते हैं। पंचाग परिवर्तन की दो पद्धतियाँ है :–

(१) स्टैं. टा. द्वारा पंचांगपरिवर्तन।

(२) घटी–पलात्मक काल द्वारा पंचांगपरिवर्तन।

इन दोनों पद्धतियों में से पहली पद्धति नितान्त सरल है। दूसरी पद्धति से पंचांग-परिवर्तन की प्रक्रिया अपेक्षाकृत बहुत लम्बी और उलझाने वाली है। जबकि दोनों पद्धतियों से परिणाम एक से ही मिलते हैं, तब सरलतम प्रक्रिया वाली प्रथम पद्धति को अपनाना ही बुद्धिमत्ता है। अतः हम इसी पद्धति से पंचांगपरिवर्तन की प्रक्रिया यहाँ पाठकों को बतलाएंगे।

पंचांगपरिवर्तन का प्रकार :–स्थानीय (अभीष्ट देश/कालक्षेत्र का) स्टैं. टा. भारतीय स्टैं. टा. से कितना आगे (+) या पीछे (–) है–यह पृष्ठ 40 पर दी गई "स्टैण्डर्ड मेरिडियन सारिणी" से ज्ञात करें। स्थानीय (अभीष्ट देश/कालक्षेत्रीय) स्टैं. टा. और भा. स्टै. टा. के अन्तर को हम यहाँ संक्षेप में "अभीष्ट स्टैं. टा. अन्तर" कहेंगे। यदि "अभीष्ट स्टैं. टा. अन्तर" धन (+) है, (अर्थात् अभीष्ट देश/कालक्षेत्र का स्टैं. टा. भा. स्टैं. टा. से आगे है) तब भारतीय पंचाग में दिए गए तिथि, नक्षत्र, योग, करण, भद्रा, ग्रहों के राशि, नक्षत्र, नक्षत्र-चरण प्रवेश तथा वक्र, मार्ग के भा. स्टैं. टा. में "अभीष्ट स्टैं. टा. अन्तर" के घण्टा, मिनट जोड़ने, अन्यथा घटाने पर तिथि, नक्षत्र आदि का यह काल अभीष्ट देश/कालक्षेत्र सम्बन्धी स्टैं. टा. में बदल जाएगा। भारतीय पंचांग में ग्रह-स्पष्ट जिस भा. स्टैं. टा. के दिए रहते है, उस काल में भी अभीष्ट स्टैं. टा. अन्तर के यह घण्टा, मिनट चिन्हानुसार जोड़ने या घटाने पर वह काल भी अभीष्ट देश/काल क्षेत्रीय स्टैं. टा. में बदल जाएगा।

"अभीष्ट स्टैं. टा. अन्तर" को भा. स्टैं. टा. में जोड़ते या घटाते समय भारतीय स्टैं. टा. के साथ भारतीय तारीख भी लिखना कई बार आवश्यक हो जाता है, क्योंकि जब हम "अभीष्ट स्टैं. टा. अन्तर" को भारतीय स्टैं. टा. में जोड़ते या घटाते हैं, तब कई बार तारीख भी बदल जाती है। उदाहरणों को दखने से यह सब कुछ स्पष्ट हो जाएगा। उदाहरण देने से पहिले यहाँ एक यह बात बतलाना जरूरी है, कि इस पंचागपरिवर्तन प्रक्रिया में सर्वत्र पाश्चात्त्य प्रणाली के अनुसार ही तारीख की प्रवृत्ति अर्धरात्रि से (रात्रि के ०० घं. ०० मि. पर) मानी जाए, और तारीख की प्रवृत्ति (प्रारंभ) से दोपहर के बारह बजे तक के घण्टों को क्रमशः ० से १२ तक तथा दोपहर के १२ बजे से अर्धरात्रि तक (अर्ध रात्रि के बारह बजे तक) के घण्टों को क्रमशः १३ से २४ लिखा जाए।

अब हम स्पष्टता के लिए पंचाग-परिवर्तन के विभिन्न प्रकार के उदाहरण यहां देते हैं–

उदाहरण (१)–इसी श्रीमार्त्तण्डपंचाग में ७ जून '९४ को ज्ये. कृ. त्रयोदशी का समाप्ति काल ९ घं. ५२ मि., भरणी नक्षत्र का समाप्ति काल ६ घं. २० मि., अतिगण्ड योग का समाप्ति काल ८ घं. १९ मि., चन्द्रमा का वृष में प्रवेशकाल १३ घं. ६ मि. और भद्रा का प्रारंभ ९ घं. ५२ मि. एवं समाप्ति २२ घं. ५९ मि. लिखा है। ये सभी काल भा. स्टैं टा. में हैं। इन कालों को ईरान के स्टै. टा. में बदलना है। "स्टैण्डर्ड मेरिडियन सारिणी" में ईरानी स्टैं. टा. का भा. स्टैं. टा. से अन्तर–२ घं. ०० मि. लिखा है। यह "अभीष्ट स्टैं. टा. अन्तर" ऋण (-) चिन्ह का है, अत: इसे भा. स्टै. टा. के उपरोक्त तिथि आदि के सभी कालों में से घटाने पर ईरानी स्टै. टा. के अनुसार ७ जून '९४ को त्रयोदशी तिथि का समाप्ति काल ७ घं. ५२ मि., भरणी नक्षत्र का समाप्ति काल ४ घं. २० मि., अतिगण्ड का समाप्ति काल ६ घं. १९ मि., चन्द्रमा का वृष में प्रवेश काल ११ घं. ६ मि. तथा भद्रा के प्रारम्भ और समाप्ति का काल क्रमश: ७ घं. ५२ मि. एवं २० घं. ५९ मि. हुआ।

ध्यान रहे-तिथि, नक्षत्र, योग, करण, भद्रा, ग्रहों के राशि नक्षत्र, नक्षत्र-चरण आदि प्रवेश का काल जिस देश/कालक्षेत्र के स्टै. टा. में होता है, उस देश/कालक्षेत्र के प्रत्येक नगर, ग्राम के लिए उस तिथि, नक्षत्र आदि का वही काल माना जाता है। उदाहणार्थ–ज्येष्ठ कृष्ण त्रयोदशी भा. स्टैं. टा. के अनुसार ७ जून '९४ को ९ घं. ५२ मि. पर समाप्त होगी, इस लिए भारत के प्रत्येक नगर, ग्राम के लिए त्रयोदशी का समाप्ति काल (भा. स्टैं. टा.) यही होगा। इसी प्रकार ७ जून ९४ को त्रयोदशी का समाप्ति काल ईरानी स्टैं. टा. के अनुसार ७ घं. ५२ मि. है, अत: ईरान के प्रत्येक नगर, ग्राम के लिए त्रयोदशी का समाप्ति काल ईरानी स्टैं. टा. के अनुसार यही रहेगा। इस प्रकार यह समझ लेना चाहिए, कि ईरानी स्टैं. टा. के अनुसार त्रयोदशी तिथि, भरणी नक्षत्र, अतिगण्ड योग, चन्द्र के वृष में प्रवेश तथा भद्रा की प्रारम्भ-समाप्ति के जो काल ऊपर हमने निकाल कर बतलाए हैं, वे ईरान के सभी नगर, ग्रामों में उत्पन्न जातक की जन्मपत्र की गणित के लिए बिना किसी परिवर्तन के स्वीकार किए जाएंगे। कहने का अभिप्राय यह है, कि स्टैं. टा. में बतलाए गए तिथि, नक्षत्र, योग, करण, ग्रहों के राशि-नक्षत्र, नक्षत्र-चरण प्रवेश तथा वक्रमार्ग के काल स्थानीय सूर्योदय काल की भिन्नता से कदापि प्रभावित नहीं होते। उन्हें उस देश/कालक्षेत्र के सभी नगर-ग्रामों में वैसे ही (बिना किसी परिवर्तन के) प्रयोग में लाना चाहिए, जिस देश/कालक्षेत्र के स्टै. टा. में उन्हें लिखा गया है।

ध्यान रहे–यह नियम ग्रहों के उदयास्त (सूर्योदय, सूर्यास्त, चन्द्रोदय, चन्द्रास्त आदि) तथा लग्नों के प्रारम्भ, समाप्ति काल के लिए कदापि नहीं है। अर्थात् ग्रहों और लग्नों का उदयास्तकाल प्रत्येक नगर, ग्राम के लिए भिन्न-भिन्न होता है, यह बात अलग है कि हम उन्हें भी स्टैं. टा. में ही प्रकट किया करते हैं। उदाहरणार्थ–चण्डीगढ़ में ७ जून '९४ को भा. स्टैं. टा. के अनुसार सूर्योदय ५ घं. २४ मि., सूर्यास्त १९ घं. १९ मि. और सिंह लग्न का उदय १० घं. ३० मि. पर होगा। यद्यपि सूर्योदय आदि के ये काल भा. स्टैं. टा. में हैं, पुनरपि इन्हें चण्डीगढ़ के इलावा अन्य किसी भी नगर, ग्राम के लिए प्रयोग में नहीं लाया जा सकता और न ही इन कालों में किसी "अभीष्ट स्टैं. टा. अन्तर" के घं. मि. जोड़-घटा कर अन्य देश के नगर, ग्राम के लिए इन्हें प्रयोग में लाया जा सकता है। इनके लिए तो गणक को अपने अभीष्ट नगर के ग्राम के ही अक्षांश, रेखांश के आधार पर अलग से गणित करनी होगी। किसी विदेशी नगर, ग्राम का सूर्योदयास्त काल उस देश/कालक्षेत्र के स्टैं. टा. में जानने का प्रकार हमने "विश्व के नगरों का सूर्योदयास्त काल" लेख में विस्तार से दे ही दिया है। विदेशी नगर, ग्राम में अभीष्ट समय पर लग्न स्पष्ट करने का प्रकार हम इसी लेख के अन्त में बतलाएंगे।

पंचांगपरिवर्तन के कुछ और उदाहरण हम यहाँ देंगे–

उदाहरण (२)–१० जुलाई '९४ को आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा भा. स्टैं. टा. के अनुसार ३ घं. १२ मि. पर समाप्त होगी। इग्लैण्ड में इसका समाप्ति काल वहाँ के स्टैं. टा. (जिसे G.M.T भी कहा जाता है) में बतलाएँ?

इग्लैण्ड के स्टैं. टा. (G.M.T.) का भारतीय स्टैं. टा. से अन्तर-५ घं. ३० मि. है। यहाँ ३ घं. १२ मि. (भा. स्टै. टा.) में से ५ घं. ३० मि. घटाने पर तारीख बदलेगी–यह स्पष्ट है। अत: हम ३ घं. १२ मि. को १० तारीख के साथ लिखकर उसमें से ५ घं. ३० मि. इस प्रकार घटाएंगे–

ता.	घं.	मि.
१०	३	१२
–	५	३०
९	२१	४२

इस प्रकार स्पष्ट है–यह प्रतिपदा इग्लैण्ड में G.M.T. के अनुसार ९ जुलाई '९४ को २१ घं. ४२ मि. पर समाप्त होगी।

ऐसा ही एक और उदाहरण लीजिए–

उदाहरण (३)–२८ सितम्बर, ९४ को बुध स्वाती नक्षत्र में भा. स्टैं. टा. के अनुसार २ घं. ४ मि. पर प्रविष्ट होगा। युगाण्डा (पू. अफ्रीका) में युगाण्डा स्टैं. टा. के अनुसार बुध की स्वाती में प्रवेश की तारीख और काल बतलाइए–युगाण्डा के स्टैं. टा. का भारतीय स्टै. टा. से अन्तर–२ घं. ३० मि. है। पूर्वोक्त पद्धति के अनुसार प्रक्रिया इस प्रकार की जाएगी–

ता. घं. मि.
२८। २। ४
− २। ३०
२७। २३। ३४

इससे ज्ञात हुआ कि बुध का स्वाती में प्रवेश युगाण्डा स्टैं. टा. के अनुसार २७ सितम्बर '९४ को २३ घं. ३४ मि. पर होगा।

दूसरे प्रकार के कुछ और उदाहरण भी लीजिए–

उदाहरण (४)–११ जुला. ९४ को चन्द्रमा भा. स्टै. टा. के अनुसार सिंह राशि में २३ घं. १७ मि. पर प्रवेश करेगा। न्यूज़ीलैण्ड में चन्द्रमा का सिंह राशि में यह प्रवेश वहाँ के स्टैं. टा. के अनुसार किस तारीख को किस समय होगा-यह जानना है।

न्यूज़ीलैण्ड के स्टैं. टा. का भा. स्टैं. टा. से अन्तर +६ घं. ३० मि. है। अत: यहाँ कालपरिवर्तन की प्रक्रिया इस प्रकार करनी होगी–

ता. घं. मि.
११। २३। १७
+ ६। ३०
१२। ५। ४७

इससे स्पष्ट हुआ कि चन्द्रमा न्यूज़ीलैण्ड स्टैं. टा. के अनुसार १२ जुला. '९४ को ५ घं. ४७ मि. पर सिंह राशि में प्रवेश करेगा।

उदाहरण (५)–३० अगस्त '९४ को सूर्य पू. फा. में २३ घं. १६ मि. (भा. स्टैं. टा.) पर प्रविष्ट होगा। आस्ट्रेलिया के विक्टोरिया-कालक्षेत्र (Time zone) के स्टैं. टा. के अनुसार सूर्य की पू. फा. में प्रवेश की तारीख व समय बतलाइए?

आस्ट्रेलिया के विक्टोरिया कालक्षेत्र के स्टैं. टा. का भा. स्टैं. टा. से अन्तर + ४ घं. ३० मि. है। इसके लिए गणित प्रक्रिया इस प्रकार है।–

ता. घं. मि.
३०। २३। १६
+ ४। ३०
३१। ०३। ४६

इस तरह ज्ञात हो गया कि विक्टोरिया कालक्षेत्रीय स्टैं. टा. के अनुसार सूर्य का पू. फा. में प्रवेश ३१ अगस्त '९४ को ३ घं. ४६ मि. पर होगा।

एक और उदाहरण यहाँ देना आवश्यक है–

उदाहरण (६)–'मार्त्तण्ड पंचाग' में दिए जाने वाले दैनिक स्पष्ट ग्रह भा. स्टैं. टा. के अनुसार प्रात: ५ घं. ३० मि. के होते हैं। इग्लैण्ड स्टैं. टा. (G.M.T.), जापानी स्टैं. टा. तथा अमेरिका के ईस्टर्न टाईम (E.T.) के अनुसार ये स्पष्ट ग्रह किस-किस समय के माने जाएंगे-यह पृथक्-पृथक् बतलाइए–

(i) G.M.T. का भा. स्टैं. टा. से अन्तर– ५ घं. ३० मि. है। अत: स्पष्ट है ये दैनिक स्पष्ट ग्रह G.M.T के अनुसार ० घं. ० मि. के हैं। (यहाँ "अभीष्ट स्टैं. टा. अन्तर" ५ घं. ३० मि. को चिह्नानुसार ५ घं. ३० मि. से घटाया गया है।)

(ii) क्योंकि जापानी स्टै. टा. का भारतीय स्टै. टाईम से अन्तर + ३ घं. ३० मि. है, अत: मार्त्तण्ड पंचांग में दिए गए ये ५ घं. ३० मि. (भा. स्टैं. टा.) के दैनिक स्पष्ट ग्रह जापानी स्टैं. टा. के अनुसार ९ घं. ० मि. के माने जाएंगे। (यहाँ "अभीष्ट स्टैं. टा. अन्तर" को उसके चिन्ह के अनुसार ५ घं. ३० मि. में जोड़ा गया है)।

(iii) अमेरिका के ईस्टर्न टाईम (E.T.) का भारतीय स्टैं. टा. से अन्तर-१० घं. ३० मि. है, अत: स्पष्ट है कि पंचाग में दिए गए ५ घं. ३० (भा. स्टैं. टा) के दैनिक स्पष्ट ग्रह E.T. के अनुसार एक तारीख पहले (पिछली तारीख) के १९ घं. ० मि. के होंगे। उदाहरणार्थ–जो स्पष्ट ग्रह मार्त्तण्ड पंचाग में १२ अप्रैल'९४ की सुबह ५ घं. ३० मि. (भा. स्टैं. टा.) के हैं, वे E.T. के अनुसार ११ अप्रैल के १९ घं. ० मि. के माने जाएंगे।

इस प्रकार पाठक यह भी समझगए होंगे कि यदि किसी विदेशी स्टैं. टा. के तिथि, नक्षत्र आदि के काल को भारतीय स्टैं. टा. में बदलने की अपेक्षा हो तो "स्टैण्डर्ड मेरिडियन सारिणी" में दिए गए "अभीष्ट स्टैं. टा. अन्तर" को चिन्ह के विपरीत उस विदेशी स्टैं. टा. में जोड़ना या घटाना होगा। इस तरह किसी भी विदेशी स्टैं. टा. को भारतीय स्टैं. टा. में और भा. स्टैं. टा. को विदेशी स्टैं. टा. में बदला जा सकता है। जैसे-कोई बच्चा टर्की में वहाँ के स्टैं. टा. के अनुसार ११ घं. ३५ मि. पर पैदा हुआ। यहाँ "अभीष्ट स्टैं. टा. अन्तर" -३ घं. ३० मि. है। इसे चिन्ह के विपरीत ११ घं. ३५ मि. में जोड़ने पर १५ घं. ५ मि. बने जो कि उस बच्चे के जन्म का भा. स्टैं. टा. है। इसी प्रकार कोई बच्चा यदि भारत में भी स्टैं. टा. के अनुसार, १० घं. ४५ मि. पर पैदा हुआ हो तो हांगकांग स्टै. टा. के अनुसार उस का जन्म १३ घं. १५ मि. पर माना जाएगा। इस तरह अपेक्षा होने पर किसी भी देश/कालक्षेत्र के स्टैं. टा. को अन्य किसी भी देश/कालक्षेत्र के स्टैं. टा. में व्यक्त करने के लिए आप स्वतन्त्र हैं।

मैं समझता हूं कि ऊपर दिए गए सोदाहरण विवरण से पंचाग-परिवर्तन या काल-परिवर्तन की प्रक्रिया पाठकों को पूरी तरह समझ में आ गई होगी। अत: अब इस

बारे और कुछ लिखना अनावश्यक है।

उपरोक्त विवरण समझ लेने पर विदेश में उत्पन्न जातक का जन्मपत्र बनाने की प्रक्रिया समझना सचमुच अत्यन्त सरल है।

विदेशी जन्मपत्र बनाने की प्रक्रिया :–

विदेश में उत्पन्न जातक का जन्मपत्र भारतीय पंचांग से बनाने के दो प्रकार हैं–

(१) जन्मकाल के विदेशी स्टैं. टा. को भारतीय स्टैं. टा. में बदलकर।

(२) भारतीय पंचांग के तिथि आदि के काल (भा. स्टैं. टा.) को विदेशी स्टैं. टा. में बदलकर ।

पहले प्रकार में केवल जन्मकाल के विदेशी स्टैं. टा. को ही बदला जाता है। वहाँ भारतीय पंचांग में दिए गए तिथ्यादि के भा. स्टै. टा. को अभीष्ट विदेशी स्टै. टा. में बदलने की जरुरत नहीं पड़ती। जबकि दूसरे प्रकार में जन्मकाल के विदेशी स्टैं. टा. को नहीं बदला जाता, लेकिन भारतीय पंचाग के सभी तिथ्यादि पदार्थों के भा. स्टैं. टा. को अभीष्ट विदेशी स्टैं. टा. में बदलना पड़ता है। स्पष्ट है पहला प्रकार ज्यादा सरल है। वैसे दूसरे प्रकार को अपनाने में भी कोई विशेष परिश्रम नहीं पड़ता। पुनरपि पहले प्रकार से जन्मपत्र की गणित करना भारतीय ज्योतिषी के लिए सुविधाजनक रहेगा, अत: उसीसे जन्मपत्र की गणित करने का प्रकार हम यहाँ दे रहे हैं–

विदेश में उत्पन्न जातक के जन्म के विदेशी स्टैं. टा. को उपरोक्त प्रकार से भा. स्टैं. टा में बदल लीजिए। जन्म के इस भा. स्टैं. टा. के अनुसार ही उसके जन्मकालिक तिथि, नक्षत्र, नक्षत्रचरण, योग और चन्द्रराशि भारतीय पंचांग से ज्ञात कर लें, तथा जन्मकालिक भा. स्टैं. टा. से ग्रह भी उसी प्रकार स्पष्ट कर लीजिए, जैसे भारत में उत्पन्न जातक के आप करते हैं। इसके लिए निम्नांकित उदाहरण देखिए :–

उदाहरण (१)– मान लीजिए :–१६ अप्रैल '९४ को फ्रांस के किसी नगर में कोई बच्चा पैदा होता है उसका जन्म इस दिन फ्रैंच (फ्रांस.के) स्टैं. टा. के अनुसार १० घं. ५५ मि. पर हुआ। इस बच्चे का जन्मपत्र आप भारतीय पंवांग द्वारा बनाना चाहते हैं, तो इसके जन्म के फ्रैंच स्टैं. टा. को भारतीय स्टैं. टा. में बदलना होगा। "स्टैण्डर्ड मेरिडियन सारिणी" से हमें "अभीष्ट स्टैं. टा. अन्तर" -४ घं. ३० मि. मिला। इसे चिन्ह के विपरीत फ्रैंच स्टै. टा. १० घं. ५५ मि. में जोड़ने पर १५ घं. २५ मि. मिले। यह इस बच्चे के जन्म का १६ अप्रैल '९४ के दिन भा. स्टैं. टा. है। अब आप भारतीय पंचाग में १६ अप्रैल '९४ को १५ घं. २५ मि. (भा. स्टैं. टा.) पर देखिए–कौन सी तिथि, नक्षत्र, नक्षत्र-चरण इस समय विद्यमान है। यही इस बच्चे के जन्मकालिक तिथि, नक्षत्र एवं नक्षत्र चरण हैं। इसी समय चन्द्रमा भारतीय पंचांग में जिस राशि में है, वही इस जातक की जन्म राशि है। दैनिक स्पष्ट ग्रहों से इसी समय (भा. स्टैं. टा.) के सूर्यादि ग्रह भी स्पष्ट कर लीजिए। इस प्रकार उसके जन्मकालिक ग्रह स्पष्ट भी आपको प्राप्त हो जाएगे। यहाँ सारी गणित प्रक्रिया ठीक वैसी ही होगी, जैसी भारत में १६ अप्रैल '९४ को १५ घं. २५ मि. (भा. स्टैं. टा.) पर उत्पन्न बालक के जन्मपत्र के लिए आप करते हैं। मार्त्तण्डपंचांग देखिए–इस बच्चे के जन्म के समय (१६ अप्रैल '९४ को १५ घं. २५ मि. (भा. स्टै. टा.) पर चैत्र शुक्ल की पंचमी तिथि, मृगशिरा नक्षत्र का तृतीय चरण और शोभन योग है। इस समय चन्द्रमा मिथुन में है। इसका अर्थ यह हुआ कि इस बच्चे की जन्म राशि मिथुन है। यहाँ १६ अप्रैल '९४ को १५ घं. २५ मि. (भा. स्टैं. टा.) पर स्पष्ट किए गए ग्रह इस बच्चे के जन्मकालिक स्पष्ट ग्रह होंगे।

एक और कुछ दूसरे प्रकार का उदाहरण लेते हैं–

उदाहरण (२)–कोई बच्चा हांगकांग में १३ अक्तूबर '९४ को हांगकांग स्टैं. टा. के अनुसार १ घं. १० मि. पर उत्पन्न होता है। उसके जन्म का भा. स्टै. टा. जानने के लिए "अभीष्ट स्टैं. टा. अन्तर" +२ घं. ३० मि. चिन्ह के विपरीत १ घण्टा १० मिनट में से इस प्रकार (पूर्वोक्त निर्देशानुसार) घटाया जाएगा–

ता.	घं.	मि.
१३।	१।	१०
–	२।	३०
१२।	२२।	४०

इस प्रकार ज्ञात हो गया कि इस बच्चे का जन्म भा. स्टैं. टा. के अनुसार १२ अक्तू '९४ को २२ घं. ४० मि. पर हुआ, अतः हम इस बच्चे का जन्म काल १२ अक्तूबर को २२ घं. ४० मि. (भा. स्टै. टा.) मानकर भारतीय पंचांग से इस की जन्म कालिक तिथि, नक्षत्र, नक्षत्र चरण, नक्षत्र के भुक्त-भोग्यकाल आदि का निर्धारण तथा जन्म कालिक ग्रह स्पष्ट ठीक उसी प्रकार ही करेंगे, जैसे कि भारत में १२ अक्तूबर '९४ को २२ घं. ४० मि. (भा. स्टैं. टा.) पर जन्मे बच्चे का जन्मपत्र बनाने के लिए किया जाएगा।

ध्यान रखिए–इस उपरोक्त गणितप्रक्रिया में भा. स्टैं. टा. में दिए गए तिथि, नक्षत्र आदि को ही सर्वत्र प्रयोग में लाना होगा। घटी-पलात्मक तिथि आदि का इस प्रक्रिया में कहीं भी प्रयोग नहीं होता।

इस उपरोक्त प्रक्रिया द्वारा ज्ञात विदेश में उत्पन्न बच्चे के जन्म कालिक नक्षत्र के भुक्त या भोग्य द्वारा आप उसकी जन्मकालिकदशा का भुक्त-भोग्य भी परम्परागत रीति से सरलता-

पूर्वक निकाल सकते हैं। बच्चे के जन्म कालिक स्पष्ट चन्द्र की राश्यादि द्वारा भी जन्म कालिक दशा का भुक्त-भोग्य निकाला जा सकता है।

यहाँ तक जो प्रक्रिया बतलाई गई है, उससे विदेश में उत्पन्न बच्चे के जन्म कालिक लग्न के इलावा शेष सभी पदार्थ, जो जन्मपत्र के लिए अपेक्षित हैं, तैयार हो जाते हैं। लेकिन यहाँ लग्न-साधन की प्रक्रिया के लिए अलग निर्देश आवश्यक है, जिसे हम अब नीचे दे रहे हैं-

लग्न साधन के दो प्रकार है :-

(१) सूर्योदय से बनाए गए इष्टकाल से।

(२) साम्पातिक काल (Sidereal Time) से।

पहले प्रकार से लग्न स्पष्ट करने की पद्धति इस प्रकार है-

लग्न साधन का प्रथम प्रकार :-"विश्व के नगरों का सूर्योदयास्त काल" लेख में बतलाए गए प्रकार से बच्चे के जन्म स्थान का सूर्योदय अभीष्ट देश/कालक्षेत्रीय स्टैं. टा. में ज्ञात करें। जब जातक का जन्म रात्रि के १२ बजे और स्थानीय सूर्योदय काल के बीच हुआ हो तब यहाँ जन्म तारीख से पूर्ववर्त्ती तारीख का सूर्योदय ज्ञात करना होगा, अन्यथा जन्म तारीख वाला सूर्योदय ही प्रयोग में लाया जाएगा- यह ध्यान में रखना चाहिए। इस अभीष्ट देश/कालक्षेत्रीय स्टैं. टा. वाले सूर्योदय से उस बच्चे के जन्मकालिक स्थानीय (विदेशी) स्टैं. टा. का अन्तर करके इष्टकाल वैसे ही बना लीजिए, जैसे भारत में उत्पन्न बच्चे के जन्मकाल का इष्ट आप बनाते हैं। यहाँ यह ध्यान रखना आवश्यक है, कि उस विदेशी नगर (जन्म स्थान) का सूर्योदय और बच्चे के जन्म का काल-दोनों उसी देश/कालक्षेत्र (जिस देश/कालक्षेत्र में वह बच्चा उत्पन्न हुआ है) के स्टैं. टा. में ही होने चाहिए। जैसे-लण्डन (इग्लैण्ड) में १४ फरवरी को कोई बच्चा G.M.T. के अनुसार ११ घं. ५१ मि. पर पैदा हुआ। उस दिन लण्डन में सूर्योदय G.M.T के अनुसार ७ घं. २३ मि पर हुआ। अतः यहाँ इष्टकाल, जिसे "सूर्योदयात् इष्टकाल" भी कहा जाता है, ४ घं. २८ मि. (११ घ. १० पल) बना। सारांश यह है कि इष्टकाल बनाने के लिए स्थानीय (अभीष्ट नगरीय) सूर्योदय काल और जातक का जन्मकाल-दोनों उसी देश के स्टैं. टा. में ही होने चाहिएं।

इस प्रकार जाने गए इष्टकाल के घं. मि. या घड़ी-पलों तथा उस जातक के जन्म-कालिक स्पष्ट सूर्य के राशि, अंशादि द्वारा लग्नसारिणी से लग्न ठीक उसी प्रकार स्पष्टकर लीजिए, जिस प्रकार भारत में उत्पन्न जातक के जन्म कालिक इष्ट व स्पष्ट सूर्य से आप करते हैं। यह तो आप जानते ही हैं कि जन्मस्थान के अक्षांशों की लग्न सारिणी का ही प्रयोग करना होता है। इसके लिए आपके पास विश्व के सभी स्थलों के अक्षांशों (0° से ६६° अक्षांश तक) की लग्नसारणियाँ अवश्य होनी चाहिएं।

ध्यान रहे-लग्न स्पष्ट करने का यह उपरोक्त प्रकार उत्तर अक्षांश वाले नगरों के लिए है। यदि अभीष्ट नगर दक्षिण अक्षांश वाला है तब जन्मकालिक स्पष्ट सूर्य में ६ राशि जोड़कर उसे दक्षिण अक्षांशीय लग्न स्पष्ट करने के लिए, 'जन्म कालिक स्पष्ट सूर्य' मानिए। इस स्पष्ट सूर्य तथा इष्टकाल द्वारा अपने नगर के अक्षांश वाली सारिणी से वैसे ही लग्न स्पष्ट कीजिए, जैसे उत्तर अक्षांश वाले नगर का लग्न स्पष्ट किया जाता है। सारिणी से स्पष्ट किए गए इस लग्न के राश्यादि में से ६ राशि घटाइए, जो शेष बचेगा वह दक्षिण अक्षांशीय नगर में उत्पन्न उस जातक का जन्मकालिक स्पष्ट लग्न होगा।

ध्यान रहे-उत्तर एवं दक्षिण अक्षांश वाले प्रदेशों के लिए लग्नसारणियाँ एक जैसी होती हैं। जैसे :- ५° अक्षांश वाली लग्न सारणी उत्तर अक्षांश ५° तथा दक्षिण अक्षांश ५° दोनों के लिए प्रयोग में लाई जाती है।

अभीष्ट नगर के दिनमान से दशम लग्नसारिणी द्वारा दशम लग्न का साधन भी ठीक उसी प्रकार किया जाता है, जैसे भारतीय जातक के लिए आप करते हैं।

लग्न साधन का द्वितीय प्रकार-लग्न साधन के दूसरे प्रकार में जन्मकालिक साम्पातिक काल का ही प्रयोग होता है। इस प्रकार में सूर्योदय काल की आवश्यकता नहीं होती। किसी भी समय का साम्पातिक काल जानने के लिए इसी पंचांग में पृष्ठ 170 पर चार सारणियां दी गई हैं। उनसे जन्मकालिक साम्पातिक काल और उससे लग्न स्पष्ट करने की सरल पद्धति सोदाहरण पृष्ठ 167 पर दी गई है, वहाँ पढ़िए। यहाँ दिया गया साम्पातिक काल से लग्न साधन का यह प्रकार भी केवल उत्तरी अक्षांश वाले नगरों के लिए ही है। यदि अभीष्ट नगर दक्षिण अक्षांश वाला है, तो जन्मकालिक साम्पातिक काल में १२ घण्टे जोड़कर लग्न सारणी से लग्न-स्पष्ट करना होगा और उस स्पष्ट लग्न में से ६ राशि घटा दी जाएंगी। इस प्रकार प्राप्त शेष राश्यादि ही दक्षिण अक्षांश में जन्मे जातक का वास्तविक जन्मलग्न होगा।

विदेश में जन्मे बालक का दशम लग्न उसके जन्मकालिक साम्पातिककाल द्वारा साम्पातिककाल वाली दशम लग्न सारिणी से वैसे ही स्पष्ट किया जाता है जैसे भारत में जन्मे जातक का आप करते हैं।

यहाँ यह जान लेना चाहिए कि इष्टकाल तथा साम्पातिक काल से स्पष्ट लग्न बतलाने वाली लग्न सारणियाँ अलग-अलग प्रकार की होती हैं।

इस तरह लग्न और दशम लग्न स्पष्ट कर लेने पर विदेश में उत्पन्न जातक के जन्मपत्र

के लिए अपेक्षित सभी पदार्थ आपके पास हो जाएंगे, और जन्मपत्र के शेष (भाव, चलित, नवांश, द्वादशांश आदि) सभी पदार्थ भी आप इन्हींसे वैसे ही बना सकेंगे जैसे भारत में उत्पन्न बच्चे की जन्मपत्र के लिए बनाते हैं।

विदेशी जन्मपत्र निर्माण के लिए कुछ आवश्यक निर्देश :–विदेश में उत्पन्न जातक के जन्मपत्र में जन्मदिन के स्थानीय सूर्योदय के समय वर्तमान तिथि, नक्षत्र एवं योग, जो कि भारतीय परम्परागत जन्मपत्रों में लिखे जाते है, नहीं लिखे जाते, क्योंकि फलित ज्योतिष में इनका कोई महत्त्व या प्रयोजन भी नहीं है। जन्मकालिक तिथि, नक्षत्र आदि का ही जातक के जीवन पर प्रभाव फलित ज्योतिष में माना जाता है, अतः नवीन शैली के जन्मपत्रों में जातक के जन्म के दिन सूर्योदय के समय विद्यमान तिथि, नक्षत्र आदि के समाप्तिकालों का निर्देश नहीं किया जाता, केवल जन्म के समय वर्तमान तिथि, नक्षत्र आदि का ही उसमें निर्देश होता है। फलादेश की दृष्टि से उचित भी यही है।

किञ्च विदेश में उत्पन्न जातक के जन्मपत्र में भारतीय सौर तारीख (प्रविष्टा, गता) का निर्देश भी नहीं करना चाहिए, क्योंकि ये प्रविष्टे (गते) स्थानीय देशी तारीखें हैं। इनका सम्बन्ध सूर्य की संक्रान्ति के दिन से है। सूर्य की संक्रान्तियों के दिन स्थानभेद से विश्व के विभिन्न भागों में एक दिन आगे पीछे होते रहते हैं। जैसे–भारत में सूर्य की मेष संक्रान्ति आजकल अक्सर १३ अप्रैल को होती है। यह संक्रान्ति विश्व के अन्य भागों में कहीं १२ और कहीं १४ अप्रैल को भी होती है। भारतीय पंचांग में तो १३ अप्रैल को ही सौर वैशाख मास का प्रारम्भ एवं तदनुसार ही इसके प्रविष्टों का निर्देश होता है। अतः इनका ऐसे ही प्रयोग अन्य देश में उत्पन्न जातक के जन्मदिन के लिए अनेकदा गलत साबित हो सकता है। अतः उसके जन्मपत्र में इसका प्रयोग न करना ही ठीक है।

विदेश में उत्पन्न जातक के जन्मपत्र के प्रारम्भ में जो–जो आवश्यक पदार्थ निर्दिष्ट होने चाहिए, वे ये हैं :–

(१) जातक का नाम। (२) जातक के माता पिता, दादा का नाम। (३) जन्म स्थान (देश, नगर)। (४) जन्म स्थान के अक्षांश, रेखांश। (५) जन्मदेश की स्टैण्डर्ड मेरिडियन के रेखांश। (६) जन्म स्थान का स्टैण्डर्ड अन्तर। (७) जन्म की स्थानीय तारीख। (८) जन्म का स्थानीय (देश/कालक्षेत्रीय) स्टैं. टा.। (९) जन्म स्थान का स्थानीय मध्यम काल (L.M.T.)। (१०) जन्मस्थानीय देश/कालक्षेत्र के स्टैं. टा. का भा. स्टैं. टा. से अन्तर। (११) जन्म को भारतीय तारीख। (१२) जन्म कालिक भारतीय स्टैं. टा. (१३) जन्मकालिक तिथि, नक्षत्र, योगादि तथा जन्म कालिक विक्रम-शक. संवत्।

उदाहरणार्थ :– यदि प्रमोद कुमार का जन्म लासएंजेलस (अमेरिका) में १० जून १९९३ ई. को स्थानीय पेसिफिक टाईम (P.T.) के अनुसार १८ घं. १० मि. पर हुआ हो तो उसके जन्मपत्र के प्रारम्भ में अपेक्षित विवरण इस प्रकार देना होगा :–

जातक :–	चि. प्रमोद कुमार
जन्म स्थान :–	लासएंजेलस (अमेरिका)
जन्म स्थान के अक्षांश :–	३४°। ३′ (उत्तर)
जन्म स्थान के रेखांश :–	११८°। १७′(पश्चिम)
स्थानीय स्टैण्डर्ड मेरिडियन :–	१२०°। ००′ (पश्चिम)
जन्मस्थान का स्टैण्डर्ड अन्तर :–	+ ६ मि. ५२ से.
जन्म की स्थानीय तारीख :–	१० जून १९९३ ई.
जन्मकाल (P.T.) :–	१८ घं. १० मि.
*जन्मकालिक स्थानीय मध्यमकाल :–	१८ घं. १६ मि. ५२ से.
P.T. का भा. स्टैं. टा. से अन्तर :–	— १३ घं. ३० मि.
जन्म की भारतीय तारीख :–	११ जून १९९३ ई.
जन्म का भा. स्टैं. टा. :–	७ घं. ४० मि. (प्रातः)
जन्मकालिक तिथि :–	आषा. कृ. षष्ठी (सं. २०५० वि.)
जन्मकालिक नक्षत्र :–	धनिष्ठा
जन्मकालिक योग :–	वैधृति
जन्मराशि :–	कुम्भ

(*इसका प्रयोग साम्पातिक काल बनाने के लिए होता है।)

इसके अनन्तर भारतीय जन्मपत्र में अन्य जो पदार्थ (जन्म कुण्डली, ग्रह स्पष्ट, भावस्पष्ट, दशान्तर्दशा आदि) होते हैं, वे सभी उसी प्रकार विदेशी जन्मपत्र में भी देने चाहिए।

विशेष–इंग्लैंड, आयर्लैण्ड, पोलैण्ड, पुर्त्तगाल, इटली, टर्की, मिस्र, हांगकांग, अमेरिका, कनाडा आदि कई राष्ट्रों में Summer time (ग्रीष्मकालीन समय) का भी प्रयोग होता है। इन राष्ट्रों में मार्च या अप्रैल के किसी रविवार से लेकर सितं. या अक्टू. के किसी रविवार तक सारी घड़ियाँ एक घण्टा आगे कर दी जाती है, और इस अवधि में इसी (एक घण्टा आगे किए गए) टाईम (जिसे "समरटाईम" कहा जाता है) को ही इन देशों में सर्वत्र प्रयोग में लाया जाता है। आस्ट्रेलिया में यह समरटाईम अक्तू. के किसी रविवार से लेकर मार्च के किसी रविवार तक प्रयोग में लाया जाता है। ज्योतिषी को इन देशों में समरटाईम के इन दिनों में उत्पन्न बच्चे के जन्मकाल के बारे में उसके माता-पिता से अच्छी तरह

बिहार एवं नेपाल के नगरों के अक्षांश, रेखांश, सूर्योदयास्त तथा लग्न-प्रारम्भकाल

लेखक : प्रो. प्रियव्रत शर्मा. ५९/६ (अभिजित्), P.O. पंचकूला (हरियाणा)

क्योंकि "श्रीमार्तण्ड पंचाङ्ग" भारत के सभी प्रान्तों के ज्योतिष-प्रेमियों द्वारा प्रयोग मे लाया जाता है, अत: हमने विगत सात वर्षों से विभिन्न प्रान्तों के नगर -उपनगरों के अक्षांश, रेखांश, स्टै. अन्तर, सूर्योदयास्त तथा लग्न दैवज्ञों को सुलभ करवाने के लिए यह स्तम्भ प्रारम्भ किया है। विगत छ: वर्षों में हम उ. प्रदेश, म. प्रदेश, राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, हि. प्रदेश व जम्मू-काश्मीर के अक्षांश आदि का विस्तृत विवरण दे चुके हैं। हमारा यहां भारत के सभी प्रान्तों के सभी नगर-उपनगरों के अक्षांश आदि देने का पूरा प्रयास है। इन प्रान्तों के जितने नगर-उपनगरों के अक्षांश आदि हम यहां दे रहे हैं, उतने आपको विश्व के भूर्धन्य एटलसों में भी नहीं मिलेंगे-यह हमारी प्रतिज्ञा है।

ध्यान रहे-भिन्न-भिन्न एटलसों एवं मानचित्रों के आधार पर ज्ञात अनेक (अथवा यूं कहिए प्रत्येक) नगर-उपनगरों के अक्षांश आदि में एकरूपता नहीं मिलती। अधिकतर एटलसों, मानचित्रों द्वारा सम्मत परिणामों को ही हम यहां देते हैं। वैसे अक्षांश एवं रेखांश में चार-पाँच कला के अन्तर से फलित-शास्त्रीय गणित तथा फलादेश में विशेष अन्तर नहीं आता।

इस वर्ष हम इस स्तम्भ में बिहार एवं हमारे पड़ौसी राष्ट्र नेपाल के नगर-उपनगरों के अक्षांश-रेखांश, स्टैं. अन्तर, सूर्योदयास्त तथा लग्नों का दैनिक समाप्ति काल दे रहे हैं। जैसा कि हम पहले भी लिखते आ रहे हैं-यह सारा विषय हमारे अप्रकाशित ग्रन्थ **"गणक मार्त्तण्ड"** से ही उद्धृत किया जा रहा है।

(शेष अगले पृष्ठ पर)

बिहार के नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैण्डर्ड अन्तर

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टै. अं. (धन) मि. से.
आरा	२५/३४	८४/४०	८/४०
औरंगाबाद	२४/४५	८४/२५	७/४०
कटिहार	२५/३०	८७/३५	२०/२०
किशनगंज	२६/१०	८७/५६	२१/४४
कोरंजो	२२/२७	८४/२८	७/५२
खगरिया	२५/३०	८६/२९	१५/५६
खुण्टी	२३/५	८५/१७	११/८
गया	२४/४९	८५/१	१०/४
गरवा	२४/१०	८३/५२	५/२८
गिरिडिह	२४/१२	८६/२१	१५/२४
गुआ	२२/१२	८५/२३	११/३२
गुमिया	२३/४७	८५/४९	१३/१६
गुम्ला	२३/३	८४/३३	८/१२
गोगरी	२५/२७	८६/३८	१६/३२
गोड्डा	२४/५०	८७/१३	१८/५२
गोपालगंज	२६/२८	८४/२६	७/४४
घाघरा	२३/१७	८४/३३	८/१२
घाटसिला	२२/३६	८६/२९	१५/५६
चक्रधरपुर	२२/४२	८५/३८	१२/३२
चम्पापुर	२४/२	८६/३१	१६/४
चम्पारन	२६/५०	८४/४०	८/४०
चान्दिल	२२/५८	८६/३	१४/१२
चित्तरंजन	२३/५२	८६/५२	१७/२८
छतरा	२४/१२	८४/५६	९/४४
छपरा	२५/४७	८४/४७	९/८
छैबासा	२२/३४	८५/५१	१३/२४
जमशेदपुर	२२/५०	८६/१०	१४/४०
जमालपुर	२५/१९	८६/३२	१६/८
जमुई	२४/५५	८६/१३	१४/५२
जारिडिह	२३/३८	८६/४	१४/१६
जहानाबाद	२५/१३	८४/५९	८/५६
जामतारा	२३/५७	८६/४८	१७/१२
जोरा पोखर	२२/२६	८५/४६	१३/४
झरिया	२३/४५	८६/२४	१५/३६
झाझा	२४/४६	८६/२२	१५/२८
झारग्राम	२२/२७	८६/५९	१७/५६
डाल्टन गंज	२४/२	८४/४	६/१६
तेघरा	२५/२९	८५/५७	१३/४८
दरभंगा	२६/१०	८५/५७	१३/४८
दरुखरिका	२४/००	८५/३३	१२/१२
दलसिंह सराय	२५/४०	८५/५०	१३/२०
दानापुर	२५/३८	८५/५	१०/२०
दुम्का	२४/१६	८७/१५	१९/००
देवघर	२४/३०	८६/४२	१६/४८
देहरी	२४/५२	८४/११	६/४४
दोरण्डा	२४/२८	८५/५७	१३/४८
धनबाद	२३/४७	८६/३०	१६/००
नबादा	२४/५३	८५/३५	१२/२०
नालन्दा	२५/७	८५/२५	११/४०
निरमाली	२६/१९	८६/३५	१६/२०
नेतरहाट	२३/२९	८४/१६	७/४
नोमुण्डी	२२/१०	८५/३२	१२/८
पटना	२५/३७	८५/१३	१०/५२
पतरात	२३/३८	८५/१७	११/८
पाकौर	२४/३८	८७/५४	२१/३६
पालकोट	२२/५२	८४/४१	८/४४
पुरनिया	२५/४९	८७/३१	२०/४
फोरवेसगंज	२६/१८	८७/१५	१९/०
बक्सर	२५/३४	८३/५९	५/५६
बगहा	२७/६	८४/५	६/२०
बठनाहा	२६/२२	८७/१४	१८/५६
बरका काना	२३/३७	८५/२९	११/५६
बरौनी	२५/३०	८५/५८	१३/५२
बहादुरगंज	२७/३२	८२/५०	१/२०
बिहारगंज	२५/४४	८६/५९	१७/५६
बिहारशरीफ	२५/११	८५/३२	१२/८
बून्दु	२३/११	८५/३५	१२/२०
बेगु सराय	२५/२५	८६/८	१४/३२
बेट्टिया	२६/४८	८४/३३	८/१२
बैद्यनाथ	२४/२९	८६/४२	१६/४८
बोकारो	२३/५१	८६/२	१४/८
बोधगया	२४/४१	८४/५८	९/५२
भबुआ	२५/३	८३/३७	४/२८
भागलपुर	२५/१५	८७/२	१८/८
मधिपुरा	२५/५५	८६/४७	१७/८
मधुपुर	२४/१६	८६/३९	१६/३६
मधुबनी	२६/२२	८६/५	१४/२०
मनिहारी	२५/२१	८७/३८	२०/३२
मनोहरपुर	२२/२३	८५/१२	१०/४८
महाराजगंज	२६/७	८४/२९	७/५६
मुंगेर	२५/२३	८६/३०	१६/००
मुजफ्फरपुर	२६/७	८५/२७	११/४८
मुरलीगंज	२५/५४	८६/५९	१७/५६
मुस्तफाबाद	२६/१२	८४/३४	८/१६
मोकामा	२५/२४	८५/५७	१३/४८
मोतीहारी	२६/४०	८४/५७	९/४८
रंका कलां	२३/५८	८३/४८	५/१२
रजौन	२५/१	८६/५८	१७/५२
रांची	२३/२३	८५/२३	११/३२
लहरिया सराय	२६/७	८५/५४	१३/३६
लोहारडगा	२३/२६	८४/४२	८/४८
शेखू पुरा	२५/९	८५/५३	१३/३२
सगौली	२६/४७	८४/४४	८/५६
समस्तीपुर	२५/५५	८५/५०	१३/२०
सहरसा	२५/५५	८६/३५	१६/२०
सासराम	२४/५७	८४/३	६/१२
साहिबगंज	२५/१३	८७/४०	२०/४०
सिमडेगा	२२/३७	८४/३१	८/४
सिन्दरी	२३/४५	८६/४२	१६/४८
सीतामढ़ी	२६/३५	८५/३२	१२/८
सीवां	२६/१२	८४/२३	७/३२
सुपौल	२६/७	८६/३६	१६/२४
सुल्तानगंज	२५/१४	८६/४५	१७/००
सोनपुर	२५/४२	८५/१२	१०/४८
हज़ारीबाग	२३/५९	८५/२५	११/४०
हाजीपुर	२५/४३	८५/१८	११/१२

बिहार के नगरों के लिए लग्न परिवर्तन सारणी (ऋण संस्कार)

लग्न / नगर	मेष मि.	वृष मि.	मिथु. मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चि. मि.	धनु मि.	मक. मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
आरा	२२	२०	२१	२५	३०	३६	४०	४३	४२	३७	३२	२७
कटिहार	३३	३१	३२	३६	४२	४७	५२	५५	५४	४९	४३	३८
गया	२१	१९	२०	२५	३१	३७	४३	४७	४५	४०	३३	२७
गिरिडिह	२७	२५	२६	३१	३७	४३	४९	५३	५१	४६	३९	३३
चम्पारन	२४	२३	२४	२७	३०	३४	३८	४०.	३९	३५	३२	२८
चितरंजन	२८	२५	२७	३२	३९	४५	५२	५६	५४	४८	४१	३५
छपरा	२२	२०	२१	२५	३०	३६	४०	४३	४२	३७	३२	२७
छैबासा	२२	१८	२०	२६	३५	४३	५०	५५	५३	४६	३७	३०
जमशेदपुर	२३	१९	२१	२७	३६	४४	५१	५६	५४	४७	३८	३१
जमालपुर	२९	?७	२८	३२	३८	४३	४८	५१	५०	४५	३९	३४
जमुई	२७	२५	२६	३०	३६	४१	४६	४९	४८	४३	४५	५०
झरिया	२६	२३	२५	३०	३७	४३	५०	५४	५२	४६	३९	३३
डाल्टन गंज	१७	१४	१६	२१	२८	३४	४१	४५	४३	३७	३०	२४
दरभंगा	२८	२६	२७	३१	३५	४०	४४	४७	४६	४२	३७	३३
दानापुर	२३	२१	२२	२६	३१	३७	४१	४४	४३	३८	३३	२८
देवघर	२८	२६	२७	३२	३८	४४	५०	५४	५२	४७	४०	३४
देहरी	१८	१६	१७	२२	२८	३४	४०	४४	४२	३७	३०	२४
धनबाद	२७	२४	२६	३१	३८	४४	५१	५५	५३	४७	४०	३४
पटना	२४	२२	२३	२७	३२	३८	४२	४५	४४	३९	३४	२९
पुरनिया	३३	३१	३२	३६	४१	४७	५१	५४	५३	४८	४३	३८
बक्सर	१९	१७	१८	२२	२७	३३	३७	४०	३९	३४	२९	२४
बेगुसराय	२७	२५	२६	३०	३६	४१	४६	४९	४८	४३	३७	३२
बेट्रिया	२३	२२	२३	२६	३०	३४	३९	४१	४०	३६	३२	२८
बोंकारो	२५	२२	२४	२९	३६	४२	४९	५३	५१	४५	३८	३२
भागलपुर	३१	२९	३०	३४	४०	४५	५०	५३	५२	४७	४१	३६
मनिहारी	३४	३२	३३	३७	४३	४८	५३	५६	५५	५०	४४	३९
मोतीहारी	२४	२३	२४	२७	३१	३५	४०	४२	४१	३७	३३	२९
मधुबनी	२९	२७	२८	३२	३६	४१	४५	४८	४७	४३	३८	३४
मुजफ्फरपुर	४२	४०	४१	४५	४९	५४	५८	६१	६०	५६	५१	४७
मुंगेर	२९	२७	२८	३२	३८	४३	४८	५१	५०	४५	३९	३४
रांची	२१	१८	२०	२६	४१	४०	४७	५२	५०	४३	३६	२८
लहरिया सराय	२८	२६	२७	३१	३५	४०	४४	४७	४६	४२	३७	३३
समस्तीपुर	२६	२४	२५	२९	३४	४०	४४	४७	४६	४१	३६	३१
सासराम	१७	१५	१६	२१	२७	३३	३९	४३	४१	३६	२९	२३
साहिबगंज	३१	२९	३०	३४	४०	४५	५०	५३	५२	४७	४१	३६
सिन्दरी	२७	२४	२६	३१	३८	४४	५१	५५	५३	४७	४०	३४
सीवां	२२	२०	२१	२५	२९	३४	३८	४१	४०	३६	३१	२७
हज़ारी बाग	२२	१९	२१	२६	३३	३९	४६	५०	४८	४२	३५	२९
हाजीपुर	२४	२२	२२	२७	३२	३८	४२	४५	४४	३९	३४	२९

(गत पृष्ठ से आगे)

-ध्यान रहे-दिल्ली के एक प्रकाशक ने "शतक मार्तण्ड" नामक एक पुस्तक प्रकाशित की है, हमारे "गणक मार्त्तण्ड" से इसका कोई संबन्ध नहीं है।

बिहार, नेपाल के नगरों का सूर्योदयास्त काल

इन पृष्ठों पर जो सारणियां दी गयी हैं उनकी सहायता से बिहार एवं नेपाल के किसी भी नगर-उपनगर का सूर्योदयास्त काल तथा किसी भी दिन प्रत्येक लग्न का समाप्ति काल सरलता से ज्ञात किया जा सकता है। सबसे पहले हम यहां सूर्योदय, सूर्यास्त काल करने का प्रकार बतलाते हैं–

जिस नगर का सूर्योदय, सूर्यास्त ज्ञात करना हो उस नगर के अक्षांश एवं स्टैं. अन्तर यहां दी गयी सारणियों से ज्ञात करें। "सूर्योदयास्त सारणी" से अपनी अभीष्ट तारीख का सूर्योदय एवं सूर्यास्त काल उठा लीजिए। 'चर सारणी' से अपनी अभीष्ट तारीख के आगे और अभीष्ट नगर के अक्षांश के नीचे लिखे चर के मिनट-सैकण्डों को सूर्योदयास्त सारणी से उठाए गए सूर्योदयास्त काल में जोड़ने या घटाने से आपके अभीष्टनगर का स्थानीय मध्यम काल में सूर्योदयास्त काल बन जाएगा। यहां चर सारणी से प्राप्त चर के मिनट-सेकण्डों को कब जोड़ा जाता है और कब घटाया जाता है, इसके लिए यह नियम है–सूर्य की क्रान्ति जिन दिनों दक्षिण होती है उन दिनों ये चर मिनट सूर्योदय काल में जोड़े

सारणी के तीसरे और चौथे कालम में दी गई तारीखों) में सूर्य की उत्तर क्रान्ति होती है। इन उत्तर क्रान्ति वाले दिनों में चर सारणी से ज्ञात मिनट-सेकण्डों को सूर्योदय काल में से घटाया और सूर्यास्त काल में जोड़ा जाता है। यह नियम भारतीय नगरों के लिए है। अपने नगर के स्टैंडर्ड अन्तर के मिनट-सेकण्डों को स्थानीय मध्यम काल वाले सूर्योदय व सूर्यास्त काल में चिह्न के विपरीत जोड़ने या घटाने पर भा. स्टैं. टा. में उस नगर का सूर्योदय व सूर्यास्त काल बन जाएगा।

उदाहरण (१) :–पटना (बिहार) में ८ मई को सूर्योदय, सूर्यास्त काल जानना है। पटना का अक्षांश २५°। ३७′ (उ.) और स्टैं. अन्तर (धन), १० मि. ५२ से. है। "सूर्योदयास्त सारणी" में ८ मई को सूर्यउदय घं. ५ मि. ५६ और सूर्यास्त १७ घं. ५७ मि. है। 'चर सारणी' में ८ मई को अक्षांश २५°। ३७′ (उ.) में ३४ मि. मिले। ८ मई को उ. क्रान्ति है अतः चर के ये मिनट सूर्योदय में घटाने तथा सूर्यास्त में जोड़ने से पटना में स्थानीय मध्यम काल के अनुसार सूर्योदय काल ५। २२ और सूर्यास्त काल १८। ३१ हुआ। इनमें पटना का स्टैं. अन्तर ११ मि. धन (+) होने से चिन्ह के विपरीत घटाने पर पटना में भा. स्टैं. टा. के अनुसार सूर्योदय काल ५। ११ और सूर्यास्त काल १८।२० हुआ।

उदाहरण (२) :–मुंगेर (बिहार) में ६ मार्च को सूर्योदयास्त काल ज्ञात करना है। मुंगेर के अक्षांश २५°। २३′ (उ.), स्टैं. अन्तर (धन) १६ मि. है सूर्योदयास्त सारणी में ६ मार्च को सू. उ. ६। १२ और सू. अ. १८। १२ है। चर सारणी में ६ मार्च को २५°। २३′ अक्षांश का चर ११ मि. है। इस दिन दक्षिण

नेपाल के नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैण्डर्ड अन्तर

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टै. अं. मि. से.
अमलेखगंज	२७/१७	८४/५८	+ ९/५२
इलाम	२६/५५	८७/५६	+ २१/४४
उदयपुर	२६/५७	८६/३५	+ १६/२०
ओखलढूंगा	२७/१८	८६/३३	+ १६/१२
कपिलवस्तु	२७/२८	८३/१६	+ ३/४
काठमाण्डू	२७/४२	८५/१२	+ १०/४८
कुंछा	२८/८	८४/२०	+ ७/२०
कुम्भेर	२८/१६	८१/२४	- ४/२४
कुस्मा	२८/१४	८३/४१	+ ४/४४
कोदरी	२७/५६	८५/५६	+ १३/४४
गोरखा	२८/००	८४/३७	+ ८/२८
घोराही	२८/५	८२/३७	+ ०/२८
चिसापानी	२७/३३	८५/७	+ १०/२८
चौतारा	२७/४६	८५/४५	+ १३/००
जलेश्वर	२६/३८	८५/४८	+ १३/१२

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टै. अं. मि. से.
जाजर कोट	२८/४२	८२/१२	- १/१२
जुम्ला	२९/१८	८२/१२	- १/१२
झवानी	२७/३५	८४/३२	+ ८/८
झापा	२६/२९	८७/५१	+ २१/२४
डिंगला	२७/२१	८७/८	+ १८/३२
तानसेन	२७/५२	८३/३३	+ ४/१२
ताल कोट	२९/३७	८१/१९	- ४/४४
तौली हवा	२७/३४	८३/६	+ २/२४
थान कोट	२७/४१	८५/११	+ १०/४४
दैलेख	२८/४८	८१/४२	- ३/१२
धनकुटा	२७/००	८७/१८	+ १९/१२
धन गढ़ी	२८/३८	८०/३७	- ७/३२
धुली खेल	२७/३७	८५/३३	+ १२/१२

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टै. अं. मि. से.
नुवाकोट	२७/५४	८५/९	+ १०/३६
नुवाकोट (पल्लो)	२८/७	८३/५४	+ ५/३६
नेपाल गंज	२८/५	८१/३८	- ३/२८
परासी	२७/३२	८३/४०	+ ४/४०
पोखरा	२८/१३	८३/५६	+ ५/४४
प्यूथान	२८/५	८२/५६	+ १/४४
बन्दीपुर	२७/५६	८४/२५	+ ७/४०
बर्दिया	२८/१८	८१/२२	- ४/३२
बागलुंग	२८/१५	८३/३६	+ ४/२४
बिजौरी	२८/६	८२/२०	- ०/४०
बिराट नगर	२६/२८	८७/१५	+ १९/००
बिलौरी	२८/४१	८०/२१	-८/३६
बीरगंज	२७/१	८४/५४	+ ९/३६
बुटवाल	२७/४२	८३/२७	+ ३/४८

नगर	अक्षांश (उत्तर). अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टै. अं. मि. से.
बुराथुम	२८/४	८४/५०	+ ९/२०
बैरिया	२७/००	८५/२३	+ ११/३२
भक्तपुर	२७/४२	८५/२७	+ ११/४८
भीमफेदी	२७/३२	८५/७	+ १०/२८
भोजपुर	२७/१२	८७/६	+ १८/२४
मलवांपुर गढ़ी	२७/२५	८५/८	+ १०/३२
मलंगवा	२६/५२	८५/३४	+ १२/१६
रामे छाप	२७/१८	८६/६	+१४/२४
ललितपुर	२७/४१	८५/२०	+ ११/२०
बैतादी	२९/३३	८०/२५	- ८/२०
सिन्धूल गढ़ी	२७/१६	८५/५८	+ १३/५२
सिमि कोट	२९/५८	८१/५०	- २/४०
सिरहा	२६/३९	८६/१२	+१४/४८
सिलगढ़ी	२९/१५	८०/५८	६/८
हनुमान् नगर	२६/३०	८६/५१	+१७/२४

नेपाल के नगरों के लिए लग्न परिवर्तन सारणी (ऋण संस्कार)

नगर \ लग्न	मेष मि.	वृष मि.	मिथु. मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चि. पि.	धनु. मि.	मक. मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
उदयपुर	३२	३१	३२	३५	३८	४२	४६	४८	४७	४३	४०	३६
ओखलढूंगा	३३	३१	३२	३५	३८	४२	४५	४७	४७	४३	४०	३६
कपिलवस्तु	२०	१९	२०	२२	२५	२९	३२	३३	३३	३०	२७	२३
काठमाण्डू	२७	२६	२७	२९	३२	३६	३९	४०	४०	३७	३४	३०
घोराही	१७	१६	१७	१९	२२	२६	२९	३०	३०	२७	२४	२०
चिसापानी	२७	२६	२७	२९	३२	३६	३९	४०	४०	३७	३४	३०
चौतारा	३०	२९	३०	३२	३५	३९	४२	४३	४३	४०	३७	३३
जलेश्वर	२८	२७	२८	३१	३५	३९	४४	४६	४५	४१	३७	३३
जुम्ला	१८	१७	१८	१९	२०	२२	२३	२४	२४	२२	२१	१९
तानसेन	२१	२०	२१	२३	२६	३०	३३	३४	३४	३१	२८	२४
तौलिहवा	१९	१८	१९	२१	२४	२८	३१	३२	३२	२९	२६	२२
दैलेख	१५	१५	१५	१७	१९	२१	२३	२४	२४	२२	२०	१८

नगर \ लग्न	मेष मि.	वृष मि	मिथु. मि.	कर्क मि	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चि. मि.	धनु. मि.	मक. मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
धनकुटा	३६	३४	३५	३८	४१	४५	४८	५०	५०	४६	४३	३९
धनगढ़ी	११	११	११	१३	१५	१७	१९	२०	२०	१८	१६	१४
नुवाकोट	२७	२६	२७	२९	३२	३६	३९	४०	४०	३७	३४	३०
नेपालगंज	१३	१२	१३	१५	१८	२२	२५	२६	२६	२३	२०	१६
पोखरा	२४	२४	२४	२६	२८	३०	३२	३३	३३	३१	२९	२७
प्यूथान	१८	१७	१८	२०	२३	२७	३०	३१	३१	२८	२५	२१
बीरगंज	२६	२४	२५	२८	३१	३५	३८	४०	४०	३६	३३	२९
बिराट नगर	३३	३२	३३	३६	४०	४४	४९	५१	५०	४६	४२	३८
भोजपुर	३५	३३	३४	३७	४०	४४	४७	४९	४९	४५	४२	३८
रामेछाप	३१	२९	३०	३३	३६	४०	४३	४५	४५	४१	३८	३४
वैतादी	१२	११	१२	१३	१४	१६	१७	१८	१८	१६	१५	१३
सिलगढी	१४	१३	१४	१५	१६	१८	१९	२०	२०	१८	१७	१५

(गत पृष्ठ से आगे)

के अनुसार सूर्योदय घं. ६। २३ और सूर्यास्त १८। १ हुआ। इसमें मुंगेर का स्टैं. अन्तर १६ मि. चिह्न के विपरीत घटाने पर मुंगेर में भा. स्टैं. टा. के अनुसार सूर्योदय ६। ७ और सूर्यास्त १७। ४५ हुआ।

उदाहरण (३) :—काठमाण्डू (नेपाल) में ३ जुला. को सूर्योदयास्त काल जानना है। काठमाण्डू के अक्षांश (उ.) २७°। ४२′ और स्टै. अन्तर + १० मि. ४८ से. है। ३ जुला. को सूर्योदय ६ घं. ३ मि. और सूर्यास्त १८ घं. ५ मि. लिखा है (देखें- "सूर्योदयास्त सारणी")। चर सारणी में ३ जुला. को + २७°। ४२′ अक्षांश में ५१ मिनट है। क्योंकि इसदिन उत्तर क्रान्ति है अतः चर के इन मिनटों को सूर्योदय काल में ऋण और सूर्यास्त में धन करने पर ३ जुला. को काण्डमाडू में स्थानीय मध्यम काल के अनुसार सूर्योदय ५ घं. १२ मि. और सूर्यास्त काल १८ घं. ५६ मि. हुआ। इनमें से काठमाण्डू के स्टै. अन्तर + ११ मि. को चिह्न के विपरीत घटाने पर इस नगर में ३ जुला. को भा. स्टै. टा. के अनुसार सूर्योदय काल ५ घं. १ मि. और सूर्यास्त काल १८ घं. ४५ मि. ज्ञात हो गया।

बिहार, नेपाल के नगरों में लग्न समाप्ति काल

इन्हीं पृष्ठों पर बिहार के ३९ और नेपाल २४ प्रसिद्ध नगरों में किसी भी दिन, किसी भी लग्न का समाप्तिकाल जानने के लिए दो अलग-अलग "लग्न परिवर्तन सारणियां" दी गई हैं।

(शेष 65 पृष्ठ पर)

सूर्योदयास्त सारणी

तारीख	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	तारीख	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	तारीख	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.
जन. १	६/३	१८/४	मई ४	५/५६	१७/५७	सितं ५	६/००	[illegible]
५	६/४	१८/६	८	५/५६	१७/५७	९	५/५७	१७/५७
९	६/६	१८/८	१२	५/५६	१७/५७	१३	५/५६	१७/५६
१३	६/८	१८/९	१६	५/५६	१७/५७	१७	५/५४	१७/५५
१७	६/९	१८/१०	२०	५/५६	१७/५७	२१	५/५३	१७/५३
२१	६/११	१८/११	२४	५/५६	१७/५७	२५	५/५१	१७/५२
२५	६/१२	१८/१२	२८	५/५७	१७/५८	२९	५/५०	१७/५१
२९	६/१३	१८/१३	जून १	५/५७	१७/५८	अक्तू.३	५/४९	१७/४९
फर. २	६/१४	१८/१४	५	५/५८	१७/५९	७	५/४८	१७/४८
६	६/१४	१८/१४	९	५/५८	१८/००	११	५/४६	१७/४७
१०	६/१४	१८/१४	१३	५/५९	१८/०१	१५	५/४६	१७/४६
१४	६/१४	१८/१४	१७	६/००	१८/०१	१९	५/४५	१७/४५
१८	६/१४	१८/१४	२१	६/०१	१८/०२	२३	५/४४	१७/४५
२२	६/१४	१८/१४	२५	६/०२	१८/०३	२७	५/४४	१७/४४
२६	६/१३	१८/१३	२९	६/०३	१८/०४	३१	५/४३	१७/४४
मार्च १	६/१२	१८/१२	जुला.३	६/०३	१८/०५	नवं. ४	५/४३	१७/४४
५	६/१२	१८/१२	७	६/०४-	१८/०५	८	५/४३	१७/४४
९	६/११	१८/११	११	६/०५	१८/०६	१२	५/४४	१७/४५
१३	६/१०	१८/१०	१५	६/०५	१८/०६	१६	५/४४	१७/४५
१७	६/९	१८/८	१९	६/०५	१८/०७	२०	५/४५	१७/४६
२१	६/७	१८/७	२३	६/०६	१८/०७	२४	५/४६	१७/४७
२५	६/६	१८/६	२७	६/०६	१८/०७	२८	५/४७	१७/४९
२९	६/५	१८/५	३१	६/०६	१८/०७	दिसं. २	५/४९	१७/५०
अप्रै. २	६/४	१८/४	अग. ४	६/०५	१८/०६	६	५/५०	१७/५२
६	६/३	१८/२	८	६/०५	१८/०६	१०	५/५२	१७/५३
१०	६/१	१८/१	१२	६/०५	१८/०५	१४	५/५४	१७/५५
१४	६/००	१८/१	१६	६/०४	१८/०४	१८	५/५६	१७/५७
१८	५/५९	१८/००	२०	६/०३	१८/०४	२२	५/५८	१७/५९
२२	५/५८	१७/५९	२४	६/०२	१८/०३	२६	६/००	१८/०१
२६	५/५७	१७/५८	२८	६/०१	१८/०१	३०	६/०२	१८/०३
३०	५/५७	१७/५८	सितं. १	६/००	१८/००	जन. ३	६/०४	१८/०५
मई ४	५/५६	१७/५७	५	६/००	१७/५९			

अगले वर्ष सं २०५२ वि. में इसी स्तम्भ में बंगाल, आसाम के नगरों, उपनगरों के अक्षांशादि, सूर्योदयास्त, लग्नों का

चर सारणी

सूर्योदय में + सूर्यास्त में − दक्षिण क्रान्ति		सूर्योदय में − सूर्यास्त में + उत्तर कान्ति		क्रान्ति अंश	अक्षांश + २२° मि. से.	+ २३° मि. से.	+ २४° मि. से.	+ २५° मि. से.	+ २६° मि. से.	+ २७° मि. से.	+ २८° मि. से.	+ २९° मि. से.	+ ३०° मि. से.
मार्च २१	सितं.२३	सितं.२३	मार्च २१	०	०/०	०/०	०/०	०/०	०/०	०/०	०/०	०/०	०/०
१९	२६	२१	२४	१	१/३७	१/४२	१/४७	१/५२	१/५७	२/३	२/७	२/११	२/१७
१६	२९	१८	२६	२	३/१४	३/२४	३/३४	३/४४	३/५४	४/५	४/१४	४/२२	४/३५
१४	अक्तू. १	१६	२९	३	४/५१	५/६	५/२१	५/३६	५/५२	६/७	६/२३	६/३७	६/५१
११	४	१३	३१	४	६/२९	६/४८	७/८	७/२८	७/४९	८/११	८/२८	८/५०	९/११
८	६	१०	अप्रै. ३	५	८/०६	८/३१	८/५६	९/२२	९/४७	१०/१३	१०/३६	११/५	११/३०
६	९	८	६	६	९/४४	१०/१४	१०/४३	११/१४	११/४६	१२/१७	१२/४४	१३/१७	१३/५०
३	१२	५	८	७	११/२२	११/५७	१२/३३	१३/८	१३/४४	१४/२१	१४/५१	१५/३२	१६/०९
फर. २८	१४	३	११	८	१३/०१	१३/४१	१४/२१	१५/२	१५/४४	१६/२६	१७/२	१७/४३	१८/२९
२६	१७	अग. २१	१४	९	१४/४१	१५/२५	१६/११	१६/५७	१७/४३	१८/३१	१९/१०	२०/०२	२०/५०
२३	२०	२८	१६	१०	१६/२०	१७/१०	१८/०	१८/५२	१९/४४	२०/३७	२१/२३	२२/१९	२३/११
२०	२३	२५	१९	११	१८/१	१८/५६	१९/५२	२०/४८	२१/४६	२२/४४	२३/३४	२४/३५	२५/३५
१८	२५	२२	२२	१२	१९/४२	२०/४२	२१/४३	२२/४५	२३/४८	२४/५२	२५/४९	२६/५३	२७/५९
१५	२८	१९	२५	१३	२१/२५	२२/३०	२३/३५	२४/४२	२५/५१	२७/१	२८/००	२९/१४	३०/२५
१२	३१	१६	२८	१४	२३/८	२४/१८	२५/३०	२६/४२	२७/५६	२९/११	३०/१५	३१/३५	३२/५२
९	नवं. ४	१३	मई १	१५	२४/५२	२६/०७	२७/२४	२८/४३	३०/०२	३१/२४	३२/३५	३३/५६	३५/२१
६	७	९	५	१६	२६/३७	२७/५८	२९/२०	३०/४४	३२/९	३३/३५	३४/४८	३६/२०	३७/५२
२	१०	६	८	१७	२८/२३	२९/५०	३१/१८	३२/४६	३४/१७	३५/५०	३७/१३	३८/४६	४०/२३
जन. २९	१४	२	१२	१८	३०/१०	३१/४३	३३/१६	३४/५२	३६/२८	३८/७	३९/३२	४१/१३	४२/४८
२६	१८	जुला.२९	१६	१९	३१/५९	३३/३७	३५/१६	३६/५७	३८/४०	४०/२५	४१/५५	४३/४१	४५/३३
२१	२२	२४	२१	२०	३३/४९	३५/३३	३७/१८	३९/०५	४०/५४	४२/४५	४४/१९	४६/१५	४८/११
१६	२७	१९	२६	२१	३५/४१	३७/३१	३९/२२	४१/१५	४३/१०	४५/७	४६/४७	४८/५०	५०/५२
१०	दिसं. ३	१३	जून. १	२२	३७/३५	३९/३०	४१/२७	४३/२६	४५/२८	४७/३३	४९/१६	५१/२६	५३/३६
२	१२	३	१०	२३	३९/३०	४१/३१	४३/३४	४५/४१	४७/४९	४९/५९	५१/४७	५४/०४	५६/२१
दिसं.२२	२२	जून. २२	२२	२३.४	४०/२१	४२/२४	४४/२७	४६/३५	४८/४५	५०/५८	५२/४९	५५/०९	५७/२८

सूक्ष्म चर :–ऊपर दी गई "चर सारणी" में अंग्रेजी तारीखों के अनुसार चर दिया गया है। तारीखें भी कुछ-कुछ दिनों के अन्तर पर दी गई है। इन तारीखों की मध्यवर्त्ती किसी तारीख को चर जानना हो तो अनुपात (त्रैराशिक) करना होगा। अक्षांश भी इस सारणी में १-१ अंश के अन्तर पर है। अक्षांश की शेष कलाओं के लिए भी अनुपात करने की आवश्यकता है। इस सारणी के पांचवें स्तम्भ में क्रान्ति के अंश भी दिए गए है। यदि पंचांग से अभीष्ट दिन की सूर्योदय-सूर्यास्त कालिक क्रान्ति जानकर इस सारणी का प्रयोग किया जाए तो चर अधिक सूक्ष्म मिलेगा। वैसे भी तारीखों द्वारा ज्ञात चर में आधा मिनट से अधिक स्थूलता

पिता का भाव नवम या दशम?

लेखक :–प्रो. प्रियव्रत शर्मा, 59/6 पंचकूला (हरियाणा)

फलित जगत् में परस्पर प्रतिकूल मतों की एक अच्छी परम्परा है। ऐसे मतों में से किसी एक को प्रामाणिक सिद्ध करने के लिए कोई वैज्ञानिक आधार न होने के कारण अधिकतर बहुमत के अनुभव का ही सहारा लिया जाता है। आचार्य वराह मिहिर ने भी मिथः विरोधी सिद्धान्तों में से ऐसे सिद्धान्तों को ही मान्यता देकर अपने जातक ग्रन्थों में स्थान दिया, जिनको बहुमत प्राप्त था। लेकिन अनेक ऐसे मत-सिद्धान्त भी है, जिनके समर्थक आचार्य-मुनियों में एक लम्बी स्थानीय परम्पराएं वैमत्य का मूल हैं। ऐसे स्थलों पर बहुमत के आधार पर भी प्रामाणिक मत का निर्धारण सम्भव नहीं होता, क्योंकि उन विभिन्न मतों के समर्थकों की संख्या अपने-अपने क्षेत्रों में लगभग शत-प्रतिशत ही होती है। एक क्षेत्र के अधिकतर दैवज्ञ दूसरे क्षेत्र में प्रचलित विरोधी मत से अक्सर सर्वथा अनभिज्ञ भी पाए जाते हैं। परस्पर अनुकूलता से सर्वथा विमुख ऐसे मतों के कारण ज्ञान की इस शाखा पर स्वाध्यायशील अनेक दैवज्ञों की भी आस्था डगमगाती देखी गई है। इस प्रकार के विवादग्रस्त स्थलों में से एक स्थल जातक की कुण्डली में "पितृभाव" है।

जातक की कुण्डली से ही उसके सभी निकट सम्बन्धियों से सम्बद्ध फलादेश के लिए कुण्डली के विभिन्न भावों को प्रमुख-प्रमुख सम्बन्धियों (माता, पिता, भाई, बहन, पति-पत्नी आदि) से जोड़ा गया है, और सादृश्यसिद्धान्त से सम्बन्धियों के इन्हीं भावों से पुनः इन सम्बन्धियों (माता, पिता, पति, पत्नी, भाई-बहन आदि) से सम्बद्ध दूर के सम्बन्धियों (माता के भाई, बहिन, पत्नी के भाई-बहन आदि) को भी जातक की कुण्डली के भावों से सम्बद्ध करके उनके बारे में भी फलादेश कहने का सिद्धान्त हमारे फलित-ग्रन्थों में प्रचुरमात्रा में मिलता है। सम्बन्धियों को भावों के वितरण के प्रसंग में माता को सभी भारतीय फलितशास्त्रियों ने निरपवादरूप से चतुर्थ भाव ही दिया है, लेकिन पिता के भाव के बारे में वे एकमत नहीं रहे। जातककारों का एक वर्ग पिता का भाव दशम बतलाता है, जब कि दूसरा वर्ग नवम।

'यवन जातक' में पिता का विचार दशम भाव से करने का निर्देश है–

व्यापार-मुद्रा-नृपमानराज्यं, प्रयोजनं चापि पितुस्तथैव।
महापदाप्तिः खलु सर्वमेतद् राज्याभिधानाद् भवनाद्विचार्यम् ॥

(बृहद्यवनजातक)

"जातकाभरणकार" ने भी यही पद्य उद्धृत करके दशमभाव को पितृभाव मानने के पक्ष में अपना मत व्यक्त किया है।

आचार्यवराहमिहिर भी इसी मत के पोषक हैं। उन्होंने 'दैवज्ञवल्लभा' में लिखा है–

आकाशवृत्तान्त-जल-प्रपात स्थानं पितुः कार्यसुखादिमानम्।
पुण्यं नृपत्वं च तथाधिकारो, मुद्राच्युतिस्तद् दशमस्य तुल्यम् ॥

(दैवज्ञवल्लभा)

वराहमिहिर का यह वाक्य भी, जिसमें पितृकारक सूर्य की दशमभाव से अन्यत्र चरराशि में स्थिति से विदेशस्थ पिता के समय जातक का जन्म बतलाया है, दशमभाव को पिता का भाव सिद्ध करता है–

पितुर्जातः परोक्षस्य लग्नमिन्दावपश्यति।
विदेशस्थस्य चरभे मध्याद् भ्रष्टे दिवाकरे ॥

(बृहज्जातक)

नीलकण्ठ ने भी पिता के विचार के लिए दशमभाव को ही आधार माना है–

राज्यं मुद्रां परं पुण्यं स्थानं तातं प्रयोजनम्।
वृष्टयादि-व्योमवृत्तान्तं व्योमस्थानाद्विचारयेत् ॥

(ताजिक नील कण्ठी)

'मानसागरी' कार का यह वचन भी, जो दशम में शत्रुराशिगत भौम से पिता की शीघ्र मृत्यु का निर्देश करता है, दशम को ही पितृभाव बतला रहा है–

दशमस्थो यदा भौमः शत्रुक्षेत्रस्थितोऽपिवा।
म्रियते तस्य बालस्य पिता शीघ्रं न संशयः ॥

(मानसागरी)

दशम में बुध की स्थिति से जातक को पिता की सम्पत्ति से समाज में विशेष सम्मान मिलने की बात कहने वाला "चमत्कार चिन्तामणि" का यह वाक्य भी दशम से पिता का सम्बन्ध प्रतिपादित करता है :–

बुधे कर्मगे पूजनीयो विशेषात्।
पितुः सम्पदो नीतिदण्डाधिकारात् ॥

(चमत्कार चिन्तामणि)

जातक के पितृसुख, पितृदुःख, पिता के चरित्र एवं पिता की मृत्यु आदि का विचार 'जातकतत्त्व'कारने दशम भाव एवं दशमेश की शुभाशुभ स्थिति के आधार पर ही किया है–

खेशे शुभे शुभयुत-दृष्टे पितृसुखम्। खेशे पाप–
सम्बन्धे पापान्तरे पितृ दुःखम्, खारिपौ ख (१०) गौ पिता
परस्त्रीगामी। खे शत्रुभे भौमे पिता न जीवति ॥

(जातक तत्त्व)

इस प्रकार दशम भाव को पितृभाव मानने वाले ताजिक एवं जातक-ग्रन्थों की कमी नहीं है। लेकिन नवम भाव को पितृस्थान बतलाने वाले फलित ग्रन्थ भी कम नहीं है। फलदीपिका, जातक पारिजात, बृहत्पाराशर, आदि फलित ग्रन्थ नवम भाव को ही पितृ सम्बन्धी फलादेश का आधार मानते हैं। यहाँ एक यह बात ध्यान देने योग्य है–दशम भाव को पितृभाव मानने वाले कुछ आचार्यों के फल-ग्रन्थों में कहीं कहीं नवम भाव को पितृभाव संकेतित करने वाले योग भी चर्चित हैं। यही बात नवम को पितृभाव मानने वाले फलग्रन्थों की भी है।

'बृहत्पाराशरहोरा'' के षोडशवर्गाध्याय में **''नवमे च पितुर्ज्ञानं सूर्याच्च नवमेऽथवा।''** वाक्य से नवम को पितृभाव बतलाया गया है। लेकिन द्वादशभाव विचाराध्याय में दशम भाव से पिता के विचार का निर्देश किया है–

राज्यं चाकाशवृत्तिं च मानं चैव पितु स्तथा।
प्रवासस्य ऋणस्यापि व्योमस्थानान्निरीक्षयेत् ॥

(बृहत्पाराशर होरा)

लेकिन आगे चलकर पराशर ने जहाँ नवम भाव का फल दिया है वहाँ स्पष्ट रूप में नवम से ही पितृ-सम्बन्धी फलादेश लिखा है, नवमेश की उच्चनीचादि स्थिति के आधारपर ही जातक के पिता की आयु, मृत्यु आदि का निर्णय किया है, और इसी अध्याय में दशम भाव के विचार में पितृसम्बन्धी किसी भी प्रकार के फल का संकेत तक नहीं है। इस प्रकार स्पष्ट है इस बारे पराशर के वचनों में कुछ विरोध अवश्य है।

कुछ ऐसे जातक ग्रन्थ भी है जिन्होंने इन दोनों भावों (नवम, दशम) को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में पितृभाव माना है। उन्होंने दोनों को आधार बना कर पितृसम्बन्धी फलादेश लिखा है। ऐसे ग्रन्थों में एक 'जातकतत्त्व' है। इसके भावफलाध्याय में जहाँ भावों के प्रतिपाद्य विषयों का विवरण है, वहाँ, नवम और दशमभाव-दोनों के प्रतिपाद्य विषयों में किया मिलता है; जिसके कुछ उद्धरण ऊपर दिए गए हैं। लेकिन नवम भाव के फलादेश के प्रसंग में भी कुछ पितृसम्बन्धी फल वहां दिए गए हैं। 'जातक तत्त्व' का यह वाक्य देखिए, जहाँ नवम में चतुर्थेश, षष्ठेश की स्थिति को पिता की लम्पटता का कारण बतलाया गया है–

सुखारीशौ अंके जनको विटः।

इसी ग्रन्थ का यह दूसरा वचन देखिए, जो नवमेश, और दशमेश–दोनों की पञ्चम में स्थितिं से पिता को लम्पट कह रहा है–

भाग्याम्बुपौ सुखे जनको विटः।

''जातक तत्त्व'' का ही यह वाक्य सूर्य-मंगल की नवम या दशम में स्थिति से पिता की मृत्यु की बात बतला रहा है–

सूर्यारौ खे धर्मे वा शीघ्रं पितृमृतिः।

ये वाक्य इस बात की पुष्टि करते हैं कि जातक तत्त्वकार वस्तुतः इन दोनों भावों को पितृभाव मानता है।

कुछ विद्वानों का तर्क है कि नवमभाव को पितृभाव इसलिए माना गया है क्योंकि इस नवमभाव (पिता के भाव) से पुत्र का भाव (लग्न) पंचम (सन्तति का) भाव है–यह तर्क अयुक्त नहीं है। लेकिन जब हम इस तर्क की युक्तता को स्वीकार करते हैं, तो यहाँ यह प्रश्न भी उठता है कि माता के भाव (चतुर्थ भाव) से तो पुत्र का भाव (लग्न) पंचम नहीं है, जब कि वह जातक माता का भी पुत्र है। कुछ विद्वान् नवमभाव को पितृभाव सिद्ध करने के लिए यह तर्क भी देते हैं कि सन्तति (पंचम)-भाव से जातक (सन्तति के पिता) का लग्न नवम स्थान पर है। पिता जातक की माता का पति है अतः कुछ दैवाचार्य इसे आधार मानकर मातृभाव (चतुर्थ) से सप्तमभाव (माता के पति के स्थान) को (अर्थात् दशमभाव को) पितृभाव मानने के पक्ष में हैं। ये सभी तर्क अपने-अपने स्थान पर संगत तो हैं, लेकिन यथार्थ ज्ञान अनेकमुख नहीं होता वह तो सन्देह या भ्रान्ति के रूप में अज्ञान की कोटि में ही आता है।

इस अक्षम्य मतभेद का उद्गम दो विभिन्न परम्पराओं से ही हुआ है, जो भारत के अलग-अलग भागों में शताब्दियों से चली आ रही हैं। उत्तर भारत में तो सर्वत्र दशम को पितृभाव मानने की परम्परा है, और दक्षिण भारत के अधिकतर प्रान्तों में नवम को पितृभाव माना जाता है–यह भारत के इन भागों में बने फलित-ग्रन्थों को देखने से ज्ञात होता है।

समस्याएं और समाधान

लेखक :–प्रो. प्रियव्रत शर्मा, 59/6 (अभिजित्), P.O. पंचकूला (हरियाणा)

(अपनी समस्याएं ऊपर लिखे पते पर मुझे भेजिए। समस्याएं केवल फलित एवं सिद्धान्त (गणित) ज्योतिष सम्बन्धी ही हों–यह ध्यान रखें। ज्योतिष-सम्बन्धी वैयक्तिक समस्याओं का न तो मैं उत्तर देता हूं, और न इस बारे किसी से मिलता ही हूं –प्रियव्रत शर्मा)

इस वर्ष के समस्या-समाधानों में यह रोचक /ज्ञानवर्धक सामग्री पढ़िए:–

(१) वक्री पापी ग्रह शुभ या अशुभ?
(२) एक ही ग्रहयोग के अनन्त भेद?
(३) क्या सभी जातक मंगलीक होते हैं ?
(४) उच्चस्थ पापी ग्रह का फल शुभ या अशुभ?
(५) वर्ष प्रवेश के दिन में वार ही प्रमाण क्यों, प्रविष्टा तारीख क्योंनहीं?
(६) अयनांश किसे कहते हैं? अयनांशज्ञान का सरल सूत्र।
(७) मुद्दादशा की अप्रामाणिकता?
(८) तिथि की क्षय-वृद्धि में पंचांगों में मत भेद क्यों?
(९) व्रत-पर्वों में मतभेद का समाधान।
(१०) अष्टकूटों के परिहार में नवांशेश लग्न का लें या चन्द्र का?
(११) मार्गी राहु-केतु।

समस्या (i)–"वक्री शुभग्रह तिगुना शुभ फल देता हैं, और वक्री पाप ग्रह बहुत अशुभ"–ऐसा कुछ स्थलों पर लिखा है। एक आचार्य ने तो नीचस्थ भी वक्री पाप ग्रह को भी उच्चस्थ ग्रह के सदृश फल देने वाला भी लिखा है–यथार्थता क्या है?

(ii) वर्गोत्तमी लग्न या ग्रह चरराशि के प्रारम्भ में और द्विस्वभाव राशि के अन्त में स्थित होंगे। इस स्थिति में उनकी अवस्था शैशव या मृत होगी। क्या इन वर्गोतमी लग्न एवं ग्रहों से स्थिर राशि के वर्गोत्तमी लग्न एवं ग्रह इस दृष्टि से अधिक बलवान् नहीं होंगे? इनके बलों में तारतम्य कैसा होगा?

(iii) पराशर ने पंचमेश, नवमेश के सम्बन्ध को राजयोग कारक लिखा है, यदि ये ग्रह अस्त हों, किसी त्रिकस्थान में पड़े हों, या नीचस्थ हों तो क्या ये फिर भी योग कारक होंगे?

श्री हरिशंकर रावत M.A.
ज्योतिषानुसन्धान केन्द्र, दान्तरे की नरिया
दतिया (म. प्र.)

समाधान (i)–वक्रीग्रह को तिगुना शुभ फल देने वाला बतलाने वाला मत अतिरंजित है। कोई भी जातकपद्धति इस मत के पक्ष में नहीं है। अन्य मूलभूत फलित ग्रन्थों में भी इस मत का प्रतिपादन नहीं है, और न ही फलित सिद्धान्तीय तर्क से इसका समर्थन होता है। वक्री पापी ग्रह को महान् अशुभ बतलाने वाले भी कुछेक वाक्य मिलते हैं, जिनमें **"वक्राः क्रूरा महाक्रूराः"** यह वाक्य काफी प्रचलित है। लेकिन सभी जातकपद्धतिकारों ने सभी (पापी एवं शुभ) ग्रहों के वक्रता बल, (जिसे चेष्टाबल भी कहा जाता है), को धन (+) चिह्न ही दिया है, और इस बल को इष्टफल का एक गुणक माना है। जातक, संहिता के ग्रन्थों में भी वक्री ग्रह की महाक्रूरता का प्रयोग या निर्देश खुलकर कहीं भी नहीं किया गया। आयुर्दाय के साधन में पापी या शुभ दोनों प्रकार के वक्री ग्रहों को आयु का संवर्धक ही सभी ने लिखा है। वहां वराह, जीवशर्मा आदि आचार्यों ने पापी वक्र ग्रह को उच्चस्थ शुभग्रह के समकक्ष शुभफलप्रद के रूप में ही प्रयुक्त किया है।

बली प्रत्येक ग्रह, चाहे वह पापी हो या शुभ, शुभफल को देता ही है–यह सिद्धान्त फलित जगत् में सर्वत्र आदृत है। वक्र ग्रह को "बृहज्जातक" कार ने **"वक्रसमागमगाः परिशेषाः"** कहकर बली अवश्य माना है, लेकिन अपने जातक ग्रन्थ में उसे आयुर्दाय-साधन के अलावा अन्यत्र कहीं भी बली शुभ ग्रह की कोटि में रखकर इसका विशेष शुभ फल नहीं लिखा। पापी ग्रह की एकमात्र वक्रता के आधार पर उसे शुभफल प्रद बतलाने वाले वाक्य या सिद्धान्त फलित की सभी शाखाओं के साहित्य में न के बराबर

ही हैं। नित्य वक्र राहु केतु को किसी ने शुभ मानने या कहने का साहस नहीं किया। वक्र पापी ग्रह की दशा को कहीं शुभ नहीं लिखा है। वक्री भौम या शनि से पीड़ित भाव को कोई शुभ नहीं कहता। **'पापकर्त्तरी'** योग भयावह माना गया है। लेकिन इस त्रासक योग की रचना में एक पाप ग्रह का वक्र होना नितान्त आवश्यक है। किसी विशेष स्थिति में यदि शुभ ग्रह अशुभफल प्रद है तो वह भी वक्रता की स्थिति में अशुभफल करता ही है–यह फलित शास्त्रगत अनेक योगों तथा सिद्धान्तों से स्पष्ट है। वक्र पापी या शुभ ग्रह के विशेष कारकत्व के लिए "उडुदाय प्रदीप" कारने भी कोई संकेत तक नहीं किया। कहने का अभिप्राय यह हैं कि वक्र पापी ग्रह की शुभकारिता का प्रयोग फलित में बहुत ही संकुचित क्षेत्र में हुआ है। इसकी महाअशुभकारिता का भी इस शास्त्र में इतना व्यापक प्रचार नहीं है। इसके इस "अवगुण" को जातकादि में शायद ही कहीं प्रयुक्त किया गया हो। भारतीय ज्योतिषी भी वक्र ग्रह के इन उपरोक्त परस्पर विरोधी गुण एवं अवगुण को फलित निर्णय के लिए गम्भीरता से नहीं लेते। वक्र पापी ग्रह की महाशुभाशुभता के बारे में वास्तविकता यही है कि हमारे दैवाचार्यो ने अपने ग्रन्थों में कहीं कहीं वक्र ग्रह की महाशुभकारिता या महाअशुभकारिता की ओर संकेत से ही किए हैं, अपने इन संकेत-सिद्धान्तों का उन्होंने प्रयोग भी बहुत ही संकुचित क्षेत्र में किया है। जिस प्रकार उन्होंने अपनी फलित रचनाओं में "उच्च-नीचादि में ग्रहों की शुभाशुभफलप्रदायिनी शक्ति का विस्तारपूर्वक सुव्यक्त विवेचन किया है उस प्रकार किसी ने भी वक्र ग्रह की शुभाशुभप्रदायिनी शक्ति का खुलकर विवेचन नहीं किया। इस विषय में उनकी लेखनी सचमुच कृपण ही रही है। (इसी विषय की एक समस्या के समाधानार्थ लिखा "मार्तण्ड पंचाग (सं. २०५० वि.) के पृष्ठ ५०-५१ पर दिया विवेचन भी पढ़ें।)

आपकी शेष (ii) और (iii) समस्याएं एक ही प्रकृति की हैं। फलित ज्योंतिष के ग्रन्थों में सामान्यतया निर्दिष्ट विभिन्न योगों में अनेक फलितीय सिद्धान्त तथा तत्-सम्बद्ध योगायोगों के मिश्रण से सम्भावित सभी विकल्पों से उत्पन्न असंख्य स्थितियों के विशकलन की विकट समस्या ही आपकी इन समस्याओं का मूल है। यह समस्या प्रत्येक गम्भीर चिन्तक दैवज्ञ की है। आपने तो इन उपरोक्त योगों में केवल दो-दो, तीन-तीन सम्भावित स्थितियों (विकल्पों) की ही चर्चा की है, लेकिन यदि फलित के सभी आवश्यक षड्बल, अष्टवर्गबल आदि-आदि बीसों-सैंकड़ों सिद्धान्तों, मतों, तत्त्वों को Permutation Combination द्वारा इन योगों पर लागू किया जाए तो आप

के तारतम्य के विश्लेषण या निर्धारण की क्षमता मनुष्य की बुद्धि की सीमा से बाहिर हो जाती है। यह बात केवल इन्हीं योगों के बारे में ही नहीं है अपितु जातकादि ग्रन्थों में साधारण्येन चर्चित प्रत्येक योग के सम्भावित भेदोपभेद इसी प्रकार अपनी अनन्त सी संख्या से दैवज्ञ को किंकर्त्तव्यविमूढ़ बना डालते हैं।

यद्यपि उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि आप द्वारा जिज्ञासित इन योगों के कल्पित विकल्प अपने आप में किसी भी दृष्टि से समग्र नहीं हैं, इनके यदि मुख्य-मुख्य आवश्यक विकल्प भी बनाए जाएं तो भी प्रत्येक योग के स्थितियों की संख्या संभाले नहीं संभलेगी, पुनरपि आपकी कल्पित इन सीमित ग्रहस्थितयों का यथोचित उत्तर यहाँ हम दे ही देते हैं–

(ii) वर्गोत्तमगत ग्रह बलवान् माना जाता है–यही सामान्येन फलित ग्रन्थों में निर्देश है। प्रथम या अन्तिम वर्गोत्तम को कहीं भी अल्प-गुण नहीं बतलाया गया है। अलबत्ता, अन्तिम नवांश को मुहूर्त्त ग्रन्थों में मंगल कृत्यों में वर्जित अवश्य लिखा है। प्रथम एवं अन्तिम वर्गोत्तमगत ग्रह को यद्यपि कहीं भी अल्प-गुण नहीं लिखा है, तथापि शैशव या मृत अवस्था में होने के कारण उसकी वर्गोत्तम- स्थितिजन्य गुणवत्ता की तीव्रता में अन्तर तो आना ही चाहिए–यह हमें तर्क सुझाता है। शैशव आदि अवस्थाओं में ग्रहफल की मात्राओं के निर्दिष्ट अनुपात के आधार पर इस अन्तर की प्रतिशतता का निर्धारण करना कठिन तो नहीं है, लेकिन इतन से किसी सूक्ष्म यथार्थ परिणाम की आशा करना व्यर्थ है, क्योंकि अनेक अन्य ऐसे अत्यावश्यक तत्त्व आप विकल्पों में छोड़ रहे हैं, जिसके कारण निर्धारित फल यथार्थ परिणाम के विपरीत हो सकता है।

ध्यान रहे–ग्रहों की शैशव आदि अवस्थाओं की ही भान्ति जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति नामक स्थितियां भी ग्रहजन्य फलमात्रा को न्यूनाधिक करती हैं–ऐसा जातक शास्त्र में निर्देश है, लेकिन किसी भी जातकपद्धतिकारने इन्हें सोचा तक नहीं।

(iii) आपका यह प्रश्न भी इसी कोटि में आता है। पंचमेश, नवमेश में से कोई एक अस्त हो या दोनों अस्त हों, दोनों त्रिक में हों या एक ही त्रिक में हो, दोनों नीचस्थ हों या एक ही नीचस्थ हो एक नीचस्थ हो दूसरा उच्च-त्रिकोण-मित्र-स्वराशिस्थ हो, दोनों में से एक उच्चस्थ हो दूसरा त्रिकस्थ हो, एक उच्चस्थ होकर अस्त हो, दूसरा नीचस्थ होकर वर्गोत्तम या स्वोच्चांश में हो-आदि-आदि अनेक विकल्प यहाँ बनेंगे। सम्बन्ध भी "व्यत्यस्ताश्रय" आदि चार-पांच प्रकार के माने गए है, जिनके फल एक-रूप नहीं हैं। इनसे भी ये स्थिति-विकल्प गुणित होंगे, जिससे उत्पन्न विकल्पभेदों की

करना सचमुच बड़ी टेड़ी खीर होगी। लेकिन आपने जो विकल्प यहाँ प्रश्न में दिए हैं केवल उन्हीं को दृष्टि में रखते हुए उनका स्थूल सा उत्तर, जो आपभी जानते हैं, यही है कि ये स्थितियां राजयोग की निवर्त्तक हैं। त्रिक में स्थिति की अपेक्षा सबन्ध कारक ग्रहों की नीच में स्थिति एवं अस्तस्थिति- दोनों अधिक मात्रा में राजयोग को निर्बल करेंगी।

फलित के निर्णायक तत्त्वों की अनेकता से उपलब्ध योगों की बुद्धिबाह्य विविधता केवल सामान्य दैवज्ञ की ही व्याकुलना का कारण नहीं है, अपितु यवनेश्वर जैसे फलित-सम्राट् आचार्य ने भी इसे सागरजल की भान्ति अपरिमेय कह कर प्रकारान्तर से इसके आमूलचूड (निरवशेष) विश्लेषण में अपना असामर्थ्य इस प्रकार प्रकट किया है–

अन्योन्य राश्यंशक-सम्प्रयोगै–
रन्योन्य-सन्दर्शन-संगमैश्च।
अन्योन्य-संयोग-विकल्पनाभि–
रिदं समुद्राम्बुवदप्रमेयम् ॥

समस्या (i)–ग्रहमेलापक विचार में वर-कन्या की कुण्डली मिलान करते समय जन्म लग्न, चन्द्रलग्न, तथा शुक्र, मंगल, शनि की स्थिति से मंगली दोष का विचार करने की परम्परा है। इतने तत्त्वों से मङ्गली दोष का विचार करने पर तो कोई भी वर या कन्या मङ्गली दोष से मुक्त नहीं रह सकती। क्या मेरा यह विचार संगत नहीं है?

(ii) अक्षांशादि भेद से सूर्योदयादि में अन्तर होने पर हमारे व्रत-पर्वों में अनेक बार अन्तर हो जाता है। क्या इसका कोई शास्त्रीय प्रतीकार है?

श्री अश्विनी कुमार शर्मा
श्री लक्ष्मी वाहन ज्योतिष कार्यालय
बीट-१५, अमृतसर-६.

समाधान (i)–सभी जातक कुछ न कुछ मंगली होते ही हैं। लेकिन इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि प्रत्येक वर-कन्या की कुण्डली का प्रत्येक कन्या-वर की कुण्डली से मिलान सर्वत्र निर्दोष होगा, और इसी आधार पर कुण्डलियों में ग्रह स्थिति का विचार किए बिना ही किसी भी वर-कन्या का किसी भी कन्या-वर से सम्बन्ध कर देने की अनुमति देने के लिए दैवज्ञ को स्वतन्त्र हो जाना चाहिए। क्योंकि लग्न, चन्द्रलग्न, शुक्र, सप्तमेश, भौम आदि ग्रहों से उत्पादित मंगली दोषों की तीव्रता में अनेक फलितीय सिद्धान्तों से न्यूनाधिकता का निर्णय किया जाता है। यद्यपि सभी फलितीय योगायोगों की शुभाशुभता, बलाबल की प्रतिशतता का सांख्यिक (Numerical) निर्धारण **विविध** योगों की असंख्यता के कारण इतनी यथार्थता से करना काफी कठिन है, **तथापि इन** योगों में कुछ तारतम्य का निर्णय दैवज्ञ कर ही सकता है। मंगल, शनि, सूर्य, राहु, केतु, आदि की स्थिति-दृष्टि आदि से उत्पाद्यमान सप्तमभावसम्बन्धी इष्टानिष्ट प्रभावों की प्रतिशतता जिन वर-कन्या की कुण्डलियों में लगभग समान हो, उनके सम्बन्ध को ही फलितशास्त्रीय अनुमति मिलनी चाहिए। मैंने वर-कन्या के मंगली दोषों के बलाबल का तारतम्य अपनी प्रकाश्यमान पुस्तक "ग्रहयोग एवं दाम्पत्यजीवन" में स्पष्ट करने का कुछ प्रयास किया है।

(ii) स्थानभेद से उत्पन्न सूर्योदयादि कालों में होने वाले अन्तर से जो हमारे व्रत-पर्वों की तिथियों में मतभेद पैदा होता है, उसका एकमात्र प्रतीकार यही है कि भारत के सभी पंचांगकार भारत के केन्द्रस्थल [अक्षांश २३°। ११′ (उ.), रेखांश ८२°। ३०′ (पू.)] को ही आधार बनाकर अपने पंचांगों का निर्माण करें। इस निर्णय को यद्यपि हमारे शास्त्र अनुमति नहीं देते, वे स्थानीय सूर्य-चन्द्रोदयास्त आदि से ही व्रत-पर्वों, मुहूर्त्तों के निर्णय को वैध ठहराते हैं। लेकिन इस शास्त्रीय मत की उपेक्षा किए बिना व्रतादि की तिथियों को भारत में एकरूपता देना सम्भव नहीं है। वैसे हम स्थानीय सूर्य-चन्द्रोदयास्तादि द्वारा व्रतादि-निर्णय के शास्त्रीय सिद्धान्त की अवहेलना/उपेक्षा शताब्दियों से अब भी करते आ रहे हैं–एक ही स्थल (चण्डीगढ़, जालन्धर, दिल्ली, जयपुर या बनारस आदि) के अक्षांश-रेखांशों के आधार पर बनाए जाने वाले बीसों लोकप्रिय स्थानीय पंचांगों को हम शताब्दियों से काफी विस्तृत प्रदेशों, क्षेत्रों में बिना तिथ्यादि काल का परिवर्तन किए वैसे ही व्रतादि के निमित्त प्रयोग में लेते चले आ रहे हैं, जबकि स्थानभेद से सूर्यचन्द्रोदयास्तादि में अन्तर आ जाने के कारण कई बार कुछ व्रतोत्सवों को उस पंचांग के प्रचार क्षेत्र के कुछ भागों में उस पंचाग में निर्दिष्ट तिथि से भिन्न तिथि में भी शास्त्रानुसार मनाने की स्थिति उत्पन्न हो जाती है, लेकिन उस पूरे क्षेत्र के अक्सर सभी लोग उस अन्तर की जाने-अनजाने उपेक्षा करते हुए अपने उस परम्परया अपनाए गए प्रिय पंचांग में दी गई तिथि के दिन ही उस व्रत-पर्व को आँख मूँदकर प्रतिवर्ष मना लेते हैं। इस परम्परा से यहों स्पष्ट है कि व्रत-पर्वो की तिथियों में एकता लाने के लिए सभी भारतीय पंचांग कारों को अपने पंचांगों का आधार इस उपरोक्त केन्द्रस्थल को बनाने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। अपने पंचांगों को एक ही केन्द्रस्थल के आधार पर बनाने का निर्णय लेने के बारे में हम भारतीय पंचांगकार गम्भीरता से विचार कर भी रहे हैं।

समस्याः–कुछ दैवज्ञ उच्चस्थ पापी ग्रह को अधिक अशुभफल देने वाला और कुछ उसे शुभफल देने वाला मानते हैं। कौन सा पक्ष शास्त्रीय है?

पं. अम्बादत्तशास्त्री

मु. रूम. P.O. देलगी (हि. प्र.)

समाधान :– "उच्चस्थ ग्रह शुभफल पूर्ण (शत-प्रतिशत) देता है, और अशुभ फल को वह शून्य करता है। किञ्च नीचस्थ ग्रह शुभफल को शून्य और अशुभफल को पूर्ण करता है"–यह सामान्य नियम सभी जातक ग्रन्थों में निर्दिष्ट है। लेकिन कहीं-कहीं कुछ ऐसे वाक्य भी मिलते हैं, जिनमें उच्चस्थ पापी ग्रह को अधिक अशुभ फल देने वाला और नीचस्थ पापी ग्रह को अशुभफल का निवारक या कहीं-कहीं शुभफल का वितरक भी लिखा है। इस प्रकार के ये वाक्य दूसरे शब्दों में बलवान् पापी ग्रह को महान् शुभ और निर्बल पापी ग्रह को शुभ बतलाते हैं। उपरोक्त सामान्य नियम के विरोधी होने से ये वाक्य ज्योतिषियों को दुविधा में डालते हैं।

वसिष्ठ का यह वाक्य देखिए, जो नीचस्थ, अस्त, शत्रुराशिस्थ (सर्वथा निर्बल) पापी ग्रहों द्वारा बने कर्त्तरी योग को निर्दोष कह रहा है :–

पापयोः कर्त्तरीकर्त्रोः शत्रुनीचगृहस्थयोः।
तथा चास्तंगयो र्वापि कर्त्तरी नैव दोषदा ॥

यह वाक्य प्रकारान्तर से सबल (उच्चस्थ, उदित, मित्रराशिस्थ) पापी ग्रहों द्वारा उत्पादित कर्त्तरी को नितान्त अशुभ फलप्रद बतला रहा है। यहाँ आश्चर्य तो यह है कि इस वाक्य को लिखने वाले वसिष्ठ ने अपनी संहिता में सबल (उच्चादिस्थ) पापी ग्रहों को असंख्यस्थलों पर शुभफलदायी और नीचस्थ (निर्बल) ग्रहों को अत्यन्त नेष्ट फलप्रद लिखा है।

यवनाचार्य ने शतशः यह लिखा है कि उच्चादिस्थ (सबल) पापी ग्रह अपनी दशान्तर्दशाओं में शुभ तथा नीचादिस्थ (निर्बल) पापी ग्रह नितान्त अशुभ फल देते हैं। लेकिन एक स्थल पर उन्होंने उस जातक को लोभ, कुकर्म, स्वार्थपरायर्णता, झगड़ालुपन क्रूरता, धूर्त्तता आदि अनेक अवगुणों की खान लिखा है, जिसके जन्म के समय पापी ग्रह बलवान् तथा शुभ ग्रह निर्बल हों– **"लुब्धाः कुकर्मनिरताः, . . . पापग्रहैर्बलयुतैः पिशुनाः कुरूपाः॥"** साथ ही वहाँ यह भी लिखा है कि वह जातक सर्वगुणसम्पन्न, समृद्ध होगा जिसकी कुण्डली में पापी ग्रह निर्बल (नीचादिस्थ) तथा शुभ ग्रह सबल (उच्चादिस्थ) होंगे। लेकिन इसी यवनेश्वर ने राजयोग प्रकरण में तीन से अधिक उच्चस्थ ग्रहों के काल में उत्पन्न राजवंशीय व्यक्ति को राजा तथा पांच या पांच से अधिक उच्चस्थ ग्रह होने पर सामान्यवंशज व्यक्ति को भी राजा बतलाया है–

त्रिप्रभृतिभिरुच्चस्थैः नृपवंशा भवन्ति राजानः।
पंचादिभिरन्यकुलोद्भवाश्च तद्वत्त्रिकोणस्थितैः॥

तीन से अधिक तथा पांच और पांच से अधिक उच्चस्थ ग्रहों की चर्चा करने वाले ये राजयोग तभी सम्भव हो सकते हैं जबकि भौमादि क्रूर ग्रह भी उच्चस्थ हों। इससे स्पष्ट है यवनेश्वर उच्चस्थ क्रूर ग्रहों को शुभफल देने वाला मानता है। केवल यवनेश्वर ही नहीं, अपितु वराहमिहिर आदि सभी जातककारों ने राजयोग प्रकरण में क्रूर ग्रहों की उच्चस्थिति को राजयोग के प्रवर्तन में शुभ ग्रहों की उच्चस्थिति के समान ही महत्त्व दिया है।

ध्यान रहे–उच्चस्थ पापी ग्रहों को अधिक अशुभफलप्रद बतलाने वाले वाक्य परिगणित ही हैं, लेकिन इनकी शुभफलदायिता का निर्देश करने वाले वाक्य तो जातक संहिता, मुहूर्त्त-ताजिक ग्रन्थों में पदे-पदे भारी संख्या में उपलब्ध हैं। किसी भी जातक या ताजिक ग्रन्थ को उठाइए–उसमें दिए गए द्वादशराशिस्थ ग्रहों, दशान्तर्दशाओं के फलों में उच्चस्थ सभी (सूर्यभौमादि) पापी ग्रहों के फल शुभ ही लिखे मिलेंगे। इन वाक्यों को यहाँ उद्धृत करना अनावश्यक है। इन ग्रन्थों को पढ़ने वाले सभी ज्योतिषी इन असंख्य वाक्यों से सुपरिचित हैं।

सभी जातकपद्धतियों में बली ग्रह को, चाहे वह पापी हो या शुभ, सदा शुभ फल देने वाला ही सिद्ध किया गया है। षड्बल वाला प्रत्येक ग्रह इष्टफलप्रद लिखा गया है। षड्बलों में उच्चबल का स्थान अन्य सभी बलों से कहीं अधिक माना गया है।

आयुर्दाय में भी सभी (शुभ एवं पापी) उच्चस्थ ग्रहों द्वारा दी जाने वाली आयु को त्रिगुणित करने का निर्देश है (**"वक्र-स्वतुङ्गोपगतैस्त्रिसंगुणम्–"**)। अष्टवर्ग फलादेश में भी पापी ग्रहों की उच्चस्थिति का शुभफल बतलाया गया है। "प्रश्न ज्योतिष" में भी उच्चस्थ पापी ग्रहों से शुभ फल का आदेश करने का दैवज्ञों को निर्देश है।

कहने का सारांश यह है कि पापी उच्चस्थ ग्रहों को ९९% फलित वाक्यों में इष्ट-फलप्रद ही लिखा गया है। हां, कुछेक गिने-चुने वाक्य इस मत के विरुद्ध अवश्य मिलते हैं, लेकिन उन सबका प्रतिवाद भी उनके प्रतिद्वंद्वी वाक्यों में उपलब्ध है। जैसे–उच्चस्थ भौम मंगली दोष को बढ़ाता है–इसका प्रतिपादन करने वाले जो दो एक वाक्य मिलते हैं उनका प्रतिवाद ... कुतूहल, जातकाभरण, बृहत्पाराशर आदि ग्रन्थों में उपलब्ध उन अनेक वाक्यों से हो जाता है जो उच्चस्थ भौम की सप्तम आदि में स्थिति को विवाहित जीवन के लिए सुव्यक्तरूप में शुभ बतलाते हैं। जो वाक्य बली पापी ग्रहों

से जातक के दारिद्र्य आदि का प्रतिपादन करते हैं उनका प्रतिवाद उच्च में स्थित भौम, शनि आदि पापी ग्रहों के व्यक्तरूप में सुफल प्रतिपादक सैंकड़ों जातकग्रन्थगत **"भौमे भूरिधनात्मजो मृगगते भूपोऽथवा तत्सम : . . . ॥"** आदि वाक्यों से पूरी तरह हो जाता है। (प्रमाणार्थ "बृहज्जातक" आदि ग्रन्थों के राशि–फलाध्याय देखें)।

किञ्च जातकादि फलितग्रन्थों में अनेक ऐसे वाक्य पदे-पदे मिलते हैं, जो सामान्य सिद्धान्त के रूप में यह बार-बार घोषित करते हैं कि उच्चस्थ ग्रह शुभ फल पूर्ण और अशुभ फल शून्य करता है, तथा च नीचस्थ ग्रह अशुभ फल पूर्ण और शुभ फल शून्य करता है–

स्वोच्चे स्थितः शुभफलं प्रकरोति पूर्णं
नीचर्क्षगस्तु विफलम् . . . .

(सारावली)

इसी सिद्धान्त के प्रतिपादक वाक्य हमारे सभी जातकग्रन्थों में निरपवाद रूप से मिलते हैं। यद्यपि इस प्रकार के ये वाक्य उच्चादि में स्थिति के कारण बलवान् ग्रहों द्वारा शुभफल देने का सिद्धान्त सामान्यरूपेण ही प्रतिपादित करते हैं, पुनरपि इनकी व्याख्या में भट्टोत्पल जैसे प्रौढ व्याख्याकारों से लेकर सामान्य टीकाकारों तक ने इन वाक्यों को निरपवादरूप से पापी एवं शुभ–दोनों प्रकार के ग्रहों के लिए स्वीकार किया है। इसी आधार पर उच्च-नीचस्थ पापी ग्रहों के राशि–भावफल तथा दशान्तर्दशाओं के फल सभी जातक ग्रन्थों में निर्दिष्ट हैं।

फलित ज्योतिष में इस प्रकार के मतभेद यत्र-तत्र मिलते ही हैं। आचार्य वराह मिहिर ने भी ऐसे मतभेदों की ओर संकेत किया है, और दैवज्ञों को कहा है कि ऐसे परस्पर प्रतिकूल मतों की स्थिति में उसे स्वयं कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए, क्योंकि ज्योतिष आगम शास्त्र है, अतः ऐसे स्थलों पर बहुमत को ही प्रमाणिक मानकर चलने का परामर्श उन्होंने दैवज्ञों को दिया।

"जिस प्रकार पापी व्यक्ति बलवान् या उच्चपदासीन होकर यथेच्छ उपद्रव करने के लिए निरर्गल हो जाता है, उसी प्रकार उच्चादिस्थ (बलवान्) पाप ग्रह भी अशुभफल देने के लिए उन्मुक्त हो जाता है, तथा च जिस प्रकार पापी व्यक्ति शक्तिहीन होकर उपद्रव करने की क्षमता खो बैठता है, उसी प्रकार नीचादिस्थ (निर्बल) पापी ग्रह भी कुफल देने की क्षमता नहीं रखता–" इस तरह का मिथ्यासादृश्य ही इस उपरोक्त भ्रान्त सिद्धान्त का मूल है। लेकिन वास्तविकता तो जातकादि ग्रन्थों में स्थाने-स्थाने निर्दिष्ट "बलवान् पापी ग्रह की शुभकारिता और शुभफल के वर्धन की क्षमता तथा निर्बल पापी ग्रह में शुभकारिता का अभाव और अशुभ फल के वर्धन की क्षमता" के सिद्धान्तों से स्पष्ट हो जाती है।

इस प्रकार यह समझ लेना चाहिए कि-ग्रह की "बलशालिता" का अर्थ है "शुभफल देने या बढ़ाने की क्षमता" तथा "निर्बलता" का अर्थ है "शुभफल देने की अक्षमता या अशुभफल बढ़ाने की क्षमता।" दूसरे शब्दों में ऐसा समझिए–उच्चादि में स्थिति ग्रह को धन (+) बल देती है, जिसके परिणाम जातक के अनुकूल होते हैं, और नीचादि में उसकी स्थिति उसे ऋण (-) बल देती है, जिसके परिणाम ऋण (-) यानी जातक के प्रतिकूल होते हैं। हैं तो ये दोनों बल ही, लेकिन इनकी क्रिया-दिशाएं (प्रकृतियां) एक दूसरे के सर्वथा प्रतिकूल हैं।

समस्या (i)–वर्षप्रवेश दिन के निर्णय के लिए वार को ही प्रामाणिक क्यों माना जाता है?

(ii) धनिष्ठादि पांच नक्षत्रों के लिए 'मूल-पञ्चक' शब्द का प्रयोग होता हैं, यहाँ 'मूल' शब्द से क्या अभिप्राय है?

डॉ. लेखराम शर्मा आचार्य
राजकीय संस्कृत कालेज
सोलन (हि. प्र.)

(i) सूर्य को अपने भ्रमणवृत्त (क्रान्तिवृत्त) का एक पूर्ण भ्रमण करने में जितना समय लगता है उसे सौरवर्ष (या वर्ष) कहा जाता है। सौर वर्ष ३६५ दिन (वार), ६ घं. ९ मि. का होता है। जातक के जन्म के बाद सूर्य अपने भ्रमणवृत्त में जितने पूर्ण भ्रमण करता है उतने ही जातक की आयु के वर्ष व्यतीत (गताब्द) होते जाते हैं। अत एव आयु के गताब्दों को ३६५ वार, ६ घं. ९ मि. से गुणा करके उन्हें जातक के जन्मकालिक वारादि इष्टकाल (वार. घं. मि.) में जोड़ने पर हमें जातक की आयु के आगामी वर्ष के प्रारम्भ (प्रवेश) के समय का यथार्थ वार और घं. मि. (टाईम) ज्ञात हो जाते हैं। स्पष्ट है यह वार ही आयु के अभीष्ट वर्ष प्रवेश के दिन का अन्तिम निर्णायक है। स्पष्टता के लिए हम इसे इस प्रकार भी कह सकते हैं कि जातक की आयु के प्रत्येक वर्ष का प्रारम्भ (प्रवेश) उसकी आयु के विगत वर्ष के प्रारम्भ (प्रवेश) कालिक वार, घं. मि. से ३६५ वार ६ घं. ९ मि. बाद हुआ करता है। अतः स्पष्ट है जातक के जन्मकालिक या विगतवर्ष-प्रवेश-कालिक वारादि में ३६५ वार ६ घं. ९ मि. जोड़ने पर जो वार एवं घं. मि. प्राप्त होंगे वे सर्वथा प्रामाणिक (अभीष्ट वर्ष प्रवेश के दिन के यथार्थ निर्णायक) होंगे। ध्यान रहे–किसी भी सौर मास का पहिला प्रविष्टा अपने पूर्ववर्षीय उसी मास के

पहिले प्रविष्टे के प्रारम्भ से ठीक एक सौर वर्ष बाद (अर्थात् ३६५ दि. ६ घं. ९ मि. बाद) प्रारम्भ नहीं होता। अथवा यूँ कहिए-इन दोनों के प्रारम्भ बिन्दुओं का मध्यवर्तीकाल निश्चित (स्थिर) नहीं है, क्योंकि संक्रान्ति जिस दिन (वार को) होती है उस सारे दिन (वार) के लिए उस मास का पहिला प्रविष्टा मान किया जाता है, भले ही संक्रान्ति उस दिन (वार) के किसी भी क्षण में क्यों न घटित हुई हो। उस सौर मास के शेष अन्य प्रविष्टे भी तदनुसार ही परवर्ती दिनों में एक-एक बढ़ते जाते हैं। इस प्रकार स्पष्ट है–ये प्रविष्टे साधारण्येन कालगणना के लिए स्थूलमान से जनव्यवहारार्थ कल्पित हैं। इसीलिए कोई भी प्रविष्टा प्रतिवर्ष समान अन्तराल पर घटित नहीं होता। वह कभी ३६५ दिन बाद और कभी ३६६ दिन बाद घटित होता है। यही बात इंग्लिश तारीखों के बारे में भी है। यही कारण है-वर्ष प्रवेश के दिन और काल का यथार्थता पूर्वक निर्णय इन दोनों (प्रविष्टे तथा ईंग्लिश तारीखों) के माध्यम से सम्भव नहीं है।

(ii) 'मूल' शब्द किसी पदार्थ के अन्तिम (निम्नतम) भाग के लिए भी प्रयुक्त होता है ["मूलं ब्रध्नोऽङ्घ्रिनामक":–अमरः (ब्रध्न = अन्तिमभाग)]। क्योंकि धनिष्ठादि पांच नक्षत्र हमारे राशिचक्र के अन्तिम नक्षत्र हैं, अतः इन्हें 'मूल-पञ्चक' के नाम से भी कुछ लोग पुकारते हैं।

समस्या :–बी. वी. रमन बैंग्लोर द्वारा अपनाया गया अयनांश आपके अयनांश से भिन्न क्यों है? आपके पंचांग में प्रयुक्त होने वाले अयनांश को ज्ञात करने का क्या सूत्र है?

श्री हंसराज जे. ई.

सल्याली (कांगड़ा) (हि. प्र.)

समाधान :–अयनांश का विषय स्पष्टीकरण के लिए बहुत विस्तार चाहता है। इस पर कभी पृथक् विस्तारपूर्वक लिखेंगे। इस समय इस सम्बन्ध में संक्षेप में यह लिखा जा रहा है–

भूगोल पर बनी भूमध्यरेखा (शून्य अक्षांश वाले वृत्त) के ठीक ऊपर शून्य अक्षांशवृत्त के धरातल में ही खगोल में बनने वाला वृत्त "नाड़ीवृत्त" कहलाता है। सूर्य के भ्रमणवृत्त (क्रान्तिवृत्त) को यह नाडीवृत्त दो बिन्दुओं पर काटता है, जिससे क्रान्तिवृत्त का आधा भाग (१८० अंश) नाड़ीवृत्त के उत्तर की ओर और दूसरा आधा भाग दक्षिण की ओर रहता है। नाड़ीवृत्त और क्रान्तिवृत्त का वह कटाव, जहाँ से सूर्य अपनी वार्षिक गति से चलते हुए नाड़ीवृत्त के उत्तर की ओर जाता है, **वसन्त सम्पात** और जहाँ से वह उसके दक्षिण की ओर जाता है उस कटाव को 'शरत्सम्पात' कहा जाता है। सूर्य २१ मार्च को

वसन्त सम्पात पर होता है और २३ सितं. को शरत्सम्पात पर।

वसन्तसम्पात को "सायन मेषारम्भ बिन्दु" भी कहा जाता है। पाश्चात्य ज्योतिषी इस बिन्दु को मेष का प्रारम्भ बिन्दु मानकर क्रान्तिवृत के समान १२ भाग करके उन्हें मेष, वृष आदि राशियां मानते हैं। यह वसन्तसम्पात प्रतिवर्ष लगभग ५० विकला की वक्रगति से (पूर्व से पश्चिम की ओर) खगोलस्थ नक्षत्रों के सापेक्ष क्रान्तिवृत्त में ही धीरे-धीरे खिसक रहा है। यदि दिन में तारे दिख सकते तो यह देखा जा सकता था कि कुछ वर्ष पूर्व २१ मार्च को सूर्य जिस नक्षत्र (तारे) के पास दीखता था, अब वह इस दिन (२१ मार्च को) उस नक्षत्र से पश्चिम की ओर दीखता है। इससे स्पष्ट है-पाश्चात्य ज्योतिषयों का मेषारम्भ बिन्दु (या सायन मेषारम्भ बिन्दु) एवं तदनुसार उनकी अन्य सभी राशियों के प्रारम्भ बिन्दु भी तारों के सापेक्ष प्रतिवर्ष ५० विकला पश्चिम की ओर खिसकते चले जा रहे है। अर्थात् पाश्चात्य ज्योतिष में प्रयुक्त होने वाली राशियों का इनके नक्षत्रपुंजों से (जिन्हें परम्परया मेष, वृष आदि के नामों से पुकारा जाता है, उनसे) सम्बन्ध टूटता जा रहा है। ये राशियां अपने-अपने नक्षत्रपुंजों से उत्तरोत्तर दूर (पश्चिम की ओर) हटती जा रही है। लेकिन भारतीय मेषारम्भ बिन्दु "जिसे निरयणमेषारम्भ बिन्दु" भी कहा जाता है, स्थिर है। वह आज जिस नक्षत्र या तारे के पास जितनी दूरी पर स्थित है वह हमेशा उस तारे के पास उतनी ही दूरी पर रहेगा। तदनुसार अन्य भारतीय राशियों के प्रारम्भ बिन्दु भी इसी प्रकार स्थिर हैं, जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि भारतीय राशियां अपने-अपने नक्षत्र पुञ्जों से विचलित नहीं हो रही हैं।

भारतीय मेषारम्भ बिन्दु को **"पौष्णान्त बिन्दु"** भी कहा जाता हैं, जो रेवती नक्षत्रपुञ्ज के समीप है। पौष्णान्त बिन्दु (भारतीय मेषारम्भ बिन्दु) का वसन्त सम्पात (पाश्चात्य मेषारम्भ बिन्दु) से जो अन्तर है वही अयनांश है। क्योंकि वसन्तसम्पात प्रतिवर्ष ५० वि. पश्चिम की ओर जा रहा है, और पौष्णान्त बिन्दु स्थिर है। अतः इन दोनों का अन्तर (अयनांश) प्रतिवर्ष ५० वि. बढ़ता जा रहा है।

हमारे प्राचीन ज्योतिष ग्रन्थों में इस पौष्णान्त बिन्दु की यथार्थ स्थिति के बारे में काफी मतभेद हैं। आजकल अधिकतर भारतीय पंचांगकारों द्वारा प्रयोग में लाया जा रहा पौष्णान्त बिन्दु क्रान्तिवृत्त में स्थित एक चमकदार तारे **चित्रा** के बिल्कुल सामने (चित्रा से १८० अंश की दूरी पर) पड़ता है। अतः इस पौष्णान्त बिन्दु को **"चित्रापक्षीय पौष्णान्त बिन्दु"** या **"चित्रापक्षीय मेषारम्भ बिन्दु"** कहा जाता है। 'चित्रापक्षीय पौष्णान्त बिन्दु" और "वसन्त सम्पात" के अन्तर को ही '**चित्रापक्षीय अयनांश** कहा जाता है। आजकल इसका मान २३°। ४७′ के लगभग है।

कुछ भारतीय ज्योतिर्विदों का मत है कि वास्तविक पौष्णान्त बिन्दु (मेषारम्भ बिन्दु) इस 'चित्रापक्षीय पौष्णान्त बिन्दु' से कुछ पूर्व की ओर स्थित है, कुछेक इससे (चित्रापक्षीय पौष्णान्तबिन्दु से) कुछ पश्चिम की ओर इसकी स्थिति का समर्थन करते हैं। इस प्रकार के अनेक मत 'सूर्यसिद्धान्त' आदि विभिन्न प्राचीन सिद्धान्त ग्रन्थों के गणितीय मूलांकों में एकरूपता के अभाव तथा वेधयन्त्रों की स्थूलता आदि कई कारणों से उत्पन्न हुए हैं। भारतीय ज्योतिष में अयनांशमान के बारे में वैमत्य बहुत बड़ी समस्या है। प्राचीन सिद्धान्त एवं करण ग्रन्थों द्वारा सिद्ध होने वाले विभिन्न पौष्णान्त बिन्दुओं से बीसों अयनांशमान बनते हैं। इन विभिन्न अयनांशमानों में चार अंश तक का अन्तर पाया जाता है।

B.V. Raman द्वारा चुने गए पौष्णान्त बिन्दु का आधार निश्चित रूप में कोई प्राचीन ज्योतिषग्रन्थ है। यह पौष्णान्तबिन्दु चित्रापक्षीय पौष्णान्तबिन्दु से लगभग १ अं. २८ क. पश्चिम की ओर (वसन्तसम्पात की ओर) स्थित है। यही कारण है–इसका वसन्तसम्पात से जो अन्तर है वह (यानी-B.V. Raman का अयनांश) चित्रापक्षीय अयनांश (चित्रापक्षीय पौष्णान्तबिन्दु और वसन्तसम्पात के अन्तर) से १ अं. २८ क. कम है। अयनांश में इस अन्तर के परिणाम स्वरूप ही चित्रापक्षीय स्पष्ट ग्रहों से B.V. Raman के स्पष्ट ग्रह हमेशा १ अं. २८ क. अधिक रहते हैं।

ध्यान रहे–भारत के लगभग सभी (९९%) पंचांगों में अब चित्रापक्षीय अयनांशों का ही प्रयोग हो रहा है। भारत सरकार द्वारा १३ भाषाओं में प्रकाशित राष्ट्रीय पंचांगों में भी यही अयनांश स्वीकार किए गए हैं। B.V. Raman द्वारा प्रयोग में लाया जाने वाला अयनांश केवल उन्हीं के द्वारा ही प्रयुक्त होता है। भारत के किसी भी पंचांगकार ने इसे मान्यता नहीं दी है।

पौष्णान्तबिन्दु को मेषारम्भ बिन्दु मानकर स्पष्ट किए गए ग्रह **"निरयण स्पष्ट ग्रह"** और वसन्तसम्पात को मेषारम्भ बिन्दु मानकर स्पष्ट किए गए ग्रह **"सायन स्पष्ट ग्रह"** कहलाते हैं। इन दोनों में अयनांश के बराबर अन्तर रहता हैं।

चित्रापक्षीय अयनांश जानने का प्रकार यह है–

अभीष्ट ईस्वी सन् में से १९०० घटाकर शेष को ५०.२६ द्वारा गुणा करने पर विकलाएं प्राप्त होंगी। इन विकलाओं के अंश आदि बनाकर उन्हें २२ अं. २७ क. ३८ वि. में जोड़ने पर आपके अभीष्ट वर्ष की १ जनवरी का चित्रापक्षीय अयनांश बन जाएगा। इसे सूत्ररूप में इस प्रकार प्रकट कर सकते हैं–

१ जनवरी का अयनांश = (२२°। २७'। ३८'') + ५०''.२६ × (अभीष्ट ई. वर्ष-१९००)

अयनांश की वार्षिक गति ५०'' है। इसकी मासिक, दैनिक गति द्वारा अनुपात करके उपरोक्त सूत्र से प्राप्त १ जन. के अयनांश को अपने अभीष्ट मास, तारीख का बना सकते हैं। इसके प्रकार प्राप्त यह अयनांश मध्यममान से होगा। स्पष्टमान से इसमें कुछ विकलाओं का अन्तर रहेगा।

समस्या :–देसी प्रविष्टों के अनुसार गणना करने पर मुद्दा दशा के प्रारम्भ-समाप्ति दिनों में स्थूलता रहती है, क्योंकि प्रत्येक सौर मास में समान प्रविष्टे नहीं होते है। यहां सूक्ष्म गणना का प्रकार बतलाइए?

पं. श्री जयदेव शर्मा

मु. शाई फरदीपा

P.O. रघुनाथ पुरा (बिलासपुर) (हि. प्र.)

समाधान :–मुद्दा दशा में सभी (नौ) ग्रहों की दशाएं एक सौर वर्ष में ही पूरी घटित हो जाती हैं, इससे स्पष्ट है मुद्दा दशा का सौरवर्ष से सम्बन्ध है। इस दशा में सूर्य आदि ग्रहों के जो दशा दिन (१८, ३०, २१ आदि) हैं ये सौर दिन हैं, अर्थात् ये दिन सूर्य के अंशों की संख्याएं हैं। स्पष्टता के लिए ऐसे समझिए-जितने काल में सूर्य १८, ३०, २१, ५४ आदि अंशों को भोगता है, वह कालावधि (duration) क्रमशः सूर्य, चन्द्र, भौम, राहु आदि के मुद्दा दशा दिन हैं। यहाँ यदि प्रविष्टों को प्रयोग में लाया जाएगा तो दशा का प्रारम्भ समाप्तिकाल स्थूल रहेगा। उसमें एक दिन का अन्तर कई बार सम्भव है। अतः सूक्ष्मता के लिए वर्ष प्रवेश के समय (या जन्म के समय) जो सूर्य के राशि-अंश आदि हैं, उनमें वर्षारम्भ वाली मुद्देश की दशा की दिन संख्या के तुल्य अंश जोड़ने पर उस दशेश की दशासमाप्ति के समय सूर्य के राशि-अंश आदि प्राप्त हो जाएगे। उदाहरणार्थ-यदि वर्ष प्रवेश के समय (या जन्मकाल में) सूर्य स्पष्ट ३ रा. २ अं. ५ क. ३ वि. है और वर्षारम्भ में मुद्दा दशा राहु की है तो इस सूर्य स्पष्ट में राहु की मुद्दा दशा के दिनों (५४) के बराबर अंश (५४° = १ रा. २४ अं) जोड़ने पर ४ रा. २६ अं. ५ क. ३ वि. स्पष्ट सूर्य मिला। इसका अर्थ हुआ कि राहु की मुद्दादशा उस वर्ष में तब समाप्त होगी जब कि सूर्य स्पष्ट ४ रा. २६ अं. ५ क. ३ वि. होगा। यदि इस स्पष्ट सूर्य में गुरु की मुद्दादशा के दिनों के बराबर अंश (४८° = १ रा. १८ अं.) जोड़ दिए जाएं तो सूर्यस्पष्ट ६ रा. १४ अं. ५ क. ३ वि. मिलेगा। इसका अभिप्राय हुआ कि उसवर्ष गुरु की मुद्दा दशा तब समाप्त होगी जब स्पष्ट सूर्य ६ रा. १४ अं. ५ क. ३ वि. होगा। इसी प्रकार शेष सात ग्रहों की मुद्दादशाओं के समाप्तिकाल भी जान लेने चाहिएं।

मुद्दा दशा भी विंशोत्तरी दशा की ही भान्ति कृत्तिकादि गणना पर आधारित है। इसका दशेशक्रम भी विंशोत्तरी दशा वाला ही है। इसके दशेशों के दशादिन भी विंशोत्तरी दशा के वर्षों के अनुपात से ही निर्धारित हैं। दूसरे शब्दों में मुद्दादशा विंशोत्तरी दशा का लघुरूप है। विंशोत्तरी दशा का चक्र १२० वर्ष का है, और मुद्दादशा का एक वर्ष (३६० सौर दिनों) का।

मुद्दादशा के परम्परागत साधन प्रकार में एक भारी स्थूलता है, जो विंशोत्तरी दशा के साधन में नहीं है। विंशोत्तरी दशासाधन में जन्मकालिक नक्षत्र के दशेश की भयात-सम्बन्धी दशा त्रैराशिक द्वारा ज्ञात करके छोड़ दी जाती है, और उस नक्षत्र के भोग्यांश से सम्बद्ध दशा के वर्षादि ही जातक के जीवन में स्वीकार किए जाते हैं। जब कि मुद्दादशा साधन में ऐसा नहीं है। उदाहरणार्थ-यदि जातक का जन्म मृगशिरा में हुआ हो, तो भौम की मुद्दा दशा के पूरे २१ दिन वहाँ स्वीकार कर लिए जाएंगे। भले ही जन्म के समय मृगशिरा का १ पल ही भोग्य हो, तो भी उस जातक के उस (प्रथम) वर्ष में भौम की दशा जन्म के २१ दिन (सौर दिन) बाद ही समाप्त होगी। इस प्रकार उसकी आयु के आगामी द्वितीय, तृतीय आदि वर्षों के प्रारम्भ में क्रमशः आर्द्रा, पुनर्वसु आदि नक्षत्र मानकर गुरु. शनि आदि के मुद्दादशादिन पूरे के पूरे ले लिए जाते हैं।

यदि हम इन दोनों दशापद्धतियों के सादृश्य को ध्यान में रखकर मुद्दादशा के जन्मकालिक भुक्त-भोग्य दिनादि का साधन विंशोत्तरी दशा के समान ही जन्मकालिक नक्षत्र के भुक्त-भोग्य द्वारा करें तो परिणाम परम्परागत प्रणाली से भिन्न होंगे। मान लीजिए-प्रणव शर्मा का जन्म पू. षा. नक्षत्र में हुआ, जिसका पूर्णभोग ६० घड़ी था। जन्म के समय इसकी ५० घड़िया भुक्त थीं। सूक्ष्मगणनाप्रकार से प्रणव के प्रथमवर्ष के प्रारम्भ में शुक्र की मुद्दा दशा ६० नहीं, अपितु १० दिन ही रहेगी। अर्थात् उसके जन्म से लेकर १० दिन तक (यानी सूर्य जितने काल में १० अंश भोगेगा उतने समय तक) वह चलेगी। जबकि परम्परागत पद्धति के अनुसार शुक्र की यह दशा जन्म दिन के ६० दिन बाद समाप्त होगी। किंच प्रणव की आयु के प्रथम वर्ष की समाप्ति (द्वितीय वर्ष के प्रारम्भ) से ५० दिन पहिले ही केतु की मुद्दादशा समाप्त हो जाएगी और दशाक्रमानुसार ये ५० दिन शुक्रदशा के ही होने चाहिएं, जब कि परम्परागत पद्धत्यनुसार केतु की यह दशा प्रथमवर्ष का समाप्ति पर ही समाप्त होनी चाहिए। किन्च इस सूक्ष्मगणनानुसार जातक के आगामी प्रत्येक वर्ष के प्रारम्भ की दशा के दिनादि का मान भी बदल जाएगा। इस प्रकार सूक्ष्म गणना का अनुसरण करने से परम्परागत पद्धति से कुछ अन्तर अवश्य आता है, मुद्दा दशा की व्यवस्था भी कुछ गड़बड़ा जाती है। पुनरपि-"जन्मकालिक नक्षत्र का १ पल भुक्त हो या भोग्य-इन दोनों स्थितियों में उस नक्षत्र के दशेश की दशाके पूरे दिनों को स्वीकार करना भी तर्क संगत नहीं है। स्पष्ट है-यह कोई विश्वसनीय दशाप्रणाली नहीं है।

समस्या :-"The Telegraph" का कहना है कि बंगाल सरकार ने इस वर्ष (१४ अप्रै. '९३ से) बंगाली सन् (संवत्) की १५ वीं शताब्दी के प्रारम्भ का आयोजन करके गलती की है, क्योंकि १४ अप्रै. '९३ से १४०० बंगाली सन् प्रारम्भ होगा, १४०१ सन् नहीं। इस बारे में आपका क्या मत है?

श्री निरंजन प्रभाकर
पीतमपुरा, दिल्ली,

समाधान :-इस बारे "The Telegraph" भ्रान्त है। सभी परम्परागत भारतीय संवत् (शक, विक्रम, कलि, बंगाली आदि) व्यतीत वर्षों को प्रकट करते हैं, जबकि ईस्वी सन् वर्त्तमान वर्षों को। उदाहरणार्थ-जब हम कहते हैं कि यह २०५१ वि. सं. चल रहा है। तब इसका वास्तविक अभिप्राय यह होता है कि वि. सं. के २०५१ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं और इस संवत् का २०५२ वां वर्ष चल रहा है। लेकिन जब हम कहते है-आजकल १९९४ ई. सन् चल रहा है तो इसका वास्तविक अभिप्राय यह होता है कि १९९३ वर्ष इस सन् के व्यतीत हो चुके हैं और यह वर्त्तमान वर्ष इस सन् का १९९४ वां वर्ष है। बंगला संवत् के वर्ष भी विक्रम संवत् आदि की तरह व्यतीत वर्षों को ही प्रकट करते हैं। अतः १४ अप्रै. '९३ से १४०० बंगला सन् प्रारम्भ हो रहा है इसका अर्थ है कि इस संन् के १४०० वर्ष व्यतीत हो चुके हैं और इस सन् का १४०१ वां वर्ष १४ अप्रै. '९३ से प्रारम्भ हो रहा है। इससे यह जान लेना चाहिए कि सभी भारतीय संवतों का प्रारम्भिक वर्ष ० (शून्य) और ईस्वी सन् का १ (एक) था।

इस प्रकार स्पष्ट है-१४ अप्रै. '९३ को बंगाली सन् की १५ वीं शताब्दी वस्तुतः प्रारम्भ हो गई। बंगाल सरकार इस बारे गलत नहीं है।

समस्या :-मार्त्तण्ड पंचांग (सं.२०५०) में आषा. शु. द्वितीया और पूर्णिमा का क्षय है। जब कि बल्लभ मनीराम पंचांग (बम्बई) में प्रतिपदा और चतुर्दशी का। यह भिन्नता क्यों?

श्री नत्थूराम शर्मा
मु. हाडाहेडी, पो. सिहाली कलां
(अलवर) (राज.)

(i) गणित/पक्ष भेद

(ii) स्थानीय सूर्योदय भेद।

(i) विभिन्न सिद्धान्त/पक्षों (सूर्यसिद्धान्त, ब्रह्मसिद्धान्त, दृक्सिद्धान्त, रैवतपक्ष, चित्रापक्ष आदि) से बने एक ही स्थल (अक्षांश, रेखांश) वाले विभिन्न पंचांगों की तिथि, नक्षत्र, योग आदि के प्रारम्भ-समाप्ति कालों में भी एकरूपता नहीं होती, जिससे उनकी क्षय, वृद्धि में कई बार ऐकमत्य नहीं हो पाता।

(ii) स्थानीय स्टैं. टा. आदि के भेद से भले ही पंचांगों में दिए गए तिथि, नक्षत्र आदि के प्रारम्भ-समाप्ति काल अलग-अलग दिखाई देते हैं, लेकिन उनके ये प्रारम्भ-समाप्ति काल सारे विश्व में एक से ही होते हैं, उदाहरणार्थ-१४ अप्रै. '९४ गुरुवार को तृतीया तिथि भा. स्टैं. टा. के अनुसार १३ घं. ३७ मि. पर समाप्त होती है। इसका अभिप्राय यह है कि सारे विश्व में भा. स्टै. टा. के अनुसार यह तिथि १३ घं. ३७ मि. पर ही इस दिन समाप्त होती दिखाई देगी। लेकिन प्रत्येक स्थान पर सूर्योदय का काल भिन्न-भिन्न है। अत: विश्व में यह तिथि कहीं १४ अप्रै. '९४ के सूर्योदय से पहिले और कहीं सूर्योदय के बाद समाप्त होगी। जहाँ भा. स्टैं. टा. के अनुसार १४ अप्रै. '९४ को सूर्योदय १३ घं. ३७ मि. के बाद होगा (यह स्थिति कनाडा, अमेरिका में उत्पन्न होगी) वहाँ यह तिथि भारतीय ज्योतिषानुसार १३ अप्रै '९४ बुधवार को समाप्त मानी जाएगी। जहाँ सूर्योदय इसदिन १३ घं. ३७ मि. पहिले होगा। (जैसा कि भारत में सर्वत्र होगा) वहाँ यह तिथि १४ अप्रै. '९४ गुरुवार को ही समाप्त मानी जाएगी। (ध्यान रहे-भारतीय ज्योतिष के अनुसार दिन (वार) सूर्योदय होने पर ही बदलता है।) इस प्रकार स्थानीय सूर्योदय काल के सापेक्ष प्रत्येक तिथि का वार (day) विश्व के विभिन्न प्रदेशों में एक दिन आगे-पीछे अवश्य होता रहता है। इसी प्रकार स्थानीय सूर्योदय कालों में अन्तर के कारण तिथि, नक्षत्र, योग के प्रारम्भ-समाप्ति क्षण भारत के विभिन्न स्थलों पर भी कई बार एक दिन (वार) आगे पीछे हो जाते हैं, विशेषकर उन तिथि आदि के, जिनके प्रारम्भ-समाप्तिकाल भारतीय सूर्योदय काल के आस-पास पड़ते हों।

ध्यान रहें-स्थानीय सूर्योदय काल से तिथि आदि की क्षय-वृद्धि का सम्बन्ध है। अत: वह तिथि, नक्षत्र, योग, जिसका पूर्ण भोग काल २४ घण्टे या इससे अधिक है, विश्व के किसी न किसी भाग में अनिवार्य रूप से उसकी वृद्धि होगी ही, अर्थात् विश्व में कहीं न कहीं वह दो सूर्योदयों को स्पर्श करेगी ही। यही बात तिथि, नक्षत्र, योगों के क्षय के बारे में भी है। जिस तिथि, नक्षत्र, योग का पूर्णभोगकाल २४ घण्टे से कम है वह विश्व में कहीं न कहीं क्षय अवश्य होगी, अर्थात् वह विश्व के किसी न किसी भाग में अपने पूर्वापरवर्त्ती दोनों दिनों के सूर्योदयकालों को स्पर्श नहीं कर पाएगी।

इस उपरोक्त विस्तृत विवेचन का सारांश यह है कि स्थानीय सूर्योदयकालों में भिन्नता के कारण भारत में भी ऐसे तिथि, नक्षत्र, योग, जो २४ घण्टे से अधिक मान रखते हों किन्हीं प्रान्तों में वृद्धि की स्थिति में रहते हैं, किन्हीं प्रान्तों में नहीं। ये तिथि, नक्षत्र, योग वे हैं जिनका प्रारम्भ-समाप्तिकाल भारतीय नगरों के सूर्योदयकाल के आसपास ही पड़ता हो। यही बात २४ घण्टे से कम योग वाले तिथि, नक्षत्र, योगों की भी है। यदि इनके प्रारम्भ समाप्तिकाल भारतीय नगरों के सूर्योदयकाल के आसन्न ही पड़ता हो तो स्थानीय सूर्योदयकाल में भेद के कारण उनका क्षय भारत के किसी भाग में होगा, और किसी भाग में नहीं।

तिथि, नक्षत्र, योगों की क्षय-वृद्धि में यह भिन्नता भारतीय पंचांगों में प्रतिवर्ष दो-चार स्थलों पर तो अवश्य रहती ही है। इस भिन्नता के निवारण का यही उपाय है कि सभी पंचांग एक ही गणित एवं पक्ष से तैयार किए जाएं और उनमें एक ही अक्षांश-रेखाशीय स्थल के सूर्योदय आदि का प्रयोग हो। ऐसा करने से हमारे व्रत-पर्वों में मतभेद का एक बहुत बड़ा कारण भी समाप्त हो जाएगा।

समस्या :-हमारे यहाँ एक लड़का गण्डमूल नक्षत्र (मूल) में पैदा हुआ। एक स्थानीय ज्योतिषी ने कहा कि लड़के को गण्डमूल का दोष नहीं माना जाता, यह दोष लड़की के लिए ही है। क्या यह ठीक मत है?

पं. मदन शर्मा

शिव टैण्ट हाऊस

लालगढ़ जाटान् (राजस्थान)

समाधान :-रेवती, अश्विनी अदि छः गण्डमूल (अमूक्तमूल) नक्षत्रों में उत्पन्न लड़का, लड़की-दोनों के लिए मुहूर्त्त ग्रन्थों, संहिताओं में अशुभफल लिखा है। "वसिष्ठ संहिता' का वाक्य है-

भौजङ्ग-पौरन्दर-पौष्णभानां
तदग्रभानां च यदन्तरालम्।
अभुक्तमूलं प्रहरप्रमाणं
त्यजेत्सुतं तत्र भवां सुतां च ॥

कुछ वाक्य इस विषय में ऐसे भी मिलते हैं, जिनमें मूल आश्लेषा आदि में उत्पन्न कन्या के लिए ही अशुभ फल लिखा है। जैसे-

मूलजा श्वशुरं हन्ति सार्पजा च तंदंगनाम्।

इस तरह के वाक्यों से कुछ दैवज्ञों को यह भ्रान्ति हो जाती है कि ये नक्षत्र कन्या के लिए ही अशुभ हैं। लेकिन ऐसी बात नहीं है। ये वाक्य स्त्रीजातक के प्रसंग में लिखे गए हैं। लेकिन अन्य अनेक स्थलों पर इन अभुक्तमूल नक्षत्रों में पुत्र एवं पुत्री-दोनों के जन्म को अशुभ फलप्रद लिखा है। जैसे-

सुतः सुता च नियतं श्वशुरं हन्ति मूलजः
तदन्त्यपादजो नैव तथाश्लेषाद्यपाद

(नारद)

वसिष्ठसंहिता के उपरोक्त वाक्य में भी सभी गण्डमूल नक्षत्रों में पुत्र, पुत्री-दोनों की उत्पत्ति को दोषावह लिखा है।

समस्याः-ग्रहों की क्रान्ति और शर का जातक पर क्या प्रभाव पड़ता है, इनकी क्या उपयोगिता है?

श्री दौलतराम सांख्यायन
P.O. जुखाला
(बिलासपुर) (हि. प्र.)

समाधान :-सूर्य-चन्द्र आदि के दैनिक उदयास्तादि के साधन के लिए 'चर' की आवश्यकता होती है। जिसका निर्णय उनकी क्रान्ति से ही होता है।

फलादेश में भी क्रान्ति का प्रयोग आयनबल (षड्बलों में से एक बल) के निर्णय के लिए किया जाता है। वैसे वहाँ क्रान्ति स्थानीय (मध्यम) ली जाती है, लेकिन हमारे पंचांग में दी जाने वाली क्रान्ति स्पष्ट है। हमारा मत है-आयन बल के लिए स्पष्ट क्रान्ति का ही प्रयोग होना चाहिए।

'शर' का प्रयोग ग्रहण, ग्रहयुति आदि के साधन में होता है। ग्रहण एवं ग्रहों की भेदयुति आदि का विश्व एवं विशिष्ट राशि-नक्षत्र वाले जातक पर क्या प्रभाव पड़ता है-इसका विवेचन संहिता ग्रन्थों में मिलता है।

ग्रह के शर का अभाव होने पर (ग्रह की बिल्कुल क्रान्तिवृत्त में स्थिति होने पर) ग्रह की राशि, नक्षत्र, नवांश आदि में स्थिति का जातकोक्त फल परम होता है-ऐसा आधुनिक दैवज्ञों का मत है।

समस्या :-हमारे हिन्दू व्रत-पर्वों की तिथियों में मतभेद को कैसे दूर किया जा सकता है?

श्री सत्यपाल शर्मा
कोठी नं. ८८, जे. पी. नगर

समाधानः-व्रत-पर्वों की तिथियों में उत्पन्न होने वाले मतभेद के मुख्य दो ही कारण हैं-

(१) व्रत-पर्वों के निर्णायक ऋषिवाक्यों में मतभेद।

(२) व्रत-पर्वों के निर्धारक तत्त्वों का स्थानीय सूर्य-चन्द्रोदयास्त, दिनमान आदि से सम्बन्ध।

पहिले कारण का प्रतीकार यही है कि सभी भारतीय पंचांगकार विवादास्पद या परस्पर विरोधी निर्णायक वाक्यों या मतों में से किसी एक ही वाक्य या मतको प्रामाणिकता (मान्यता) देने का निर्णय कर लें।

दूसरे कारण का निवारण तब हो सकता है जबकि सभी पंचांगकार स्थानीय अक्षांश, रेखांशों को अपने पंचांगों की गणित का आधार न बना कर भारतीय केन्द्र स्थल [अक्षांश २३°। ११' (उ.), रेखांश ८२°। ३०' (पू.)] को ही उसका आधार बना लें। इस प्रकार का निर्णय लेने के लिए कई पंचांगकार प्रस्तुत हैं। शेष पंचांगकारों को भी इस निर्णय से सहमत कराने के लिए हिन्दु संस्थाओं (ब्राह्मण सभा, सनातन धर्म सभा आदि) के अधिकारियों को प्रयास करना चाहिए।

समस्या :-वर-कन्या के नवांशेशों की मैत्री होने पर अष्टकूटों में से अनेक कूटों का परिहार शास्त्रों में लिखा है। यहाँ नवांश लग्न का लेना चाहिए-ऐसा मेरे एक मित्र दैवज्ञ कहते हैं। क्या वे ठीक हैं?

पं हंसराज शर्मा
मु. कल्लोल, पो. कुम्हार हट्टी
(सोलन) (हि. प्र.)

समाधान :-जन्मकालिक चन्द्रमा की राशि, नक्षत्र और नवांश जातक की क्रमशः राशि, नक्षत्र और नवांश माने गए है। अष्टकूटों के निर्धारण में वर-कन्या के इन्हीं राशि, नक्षत्र, नवांशों को प्रयोग होता है, सभी मुहूर्त्त शास्त्रों, संहिताओं, का भी यही मत है।

जन्मकालिक लग्न की राशि नक्षत्र और नवांश को जातक की राशि, नक्षत्र और नवांश मानने की प्रणाली भी सत्यजातक आदि में उपलब्ध है। इस प्रणाली के अनुसार जन्म कालिक चन्द्र और लग्न में से जो अधिक बलवान् हो उसी की राशि, नक्षत्र और नवांश को जातक की राशि, नक्षत्र, नवांश माना जाता है। इस प्रणाली के अनुसार जातक की दशान्तर्दशाओं का भी निर्णय बलवान् लग्न के नक्षत्र से ही किया जाता है। लेकिन यह प्रणाली अब कहीं भी व्यवहार में नहीं है। यदि इस प्रणाली के अनुसार आपके ये

करते हैं, तब उन्हें वर-कन्या की राशि एवं नक्षत्र भी लग्नानुसार ही लेने होंगे, और अष्टकूटों का निर्णय भी तदनुसार ही करना होगा। कुछ अंश एक प्रणाली का और कुछ अन्य प्रणाली का एक ही उद्देश्य के लिए अपनाना तर्क संगत नहीं है। यह एक विरोध है। लेकिन लग्न की राशि, नक्षत्र से अष्टकूटों का निर्धारण, मुहूर्त्त शास्त्र तथा परम्परा के विरुद्ध है।

समस्या :–जब कि पंचांगों में सभी ग्रहों के भोगांश स्पष्टमान से दिए रहते हैं तब राहु-केतु के भोगांश भी स्पष्टमान से देने चाहिएं। स्पष्टमान से राहु-केतु मार्गी भी हो जाते है, इस स्थिति में इनके फलित में क्या अन्तर नहीं होगा?

श्री के. पी. सोरल

पाटनपोल

कोटा (राज.)

चन्द्र आदि ग्रहों के विमण्डलों (भ्रमणवृत्तों) के क्रान्तिवृत्त (सूर्य के भ्रमणवृत्त) से होने वाले दो-दो सम्पातों को हमारे सिद्धान्त ग्रन्थों में 'पात' संज्ञा दी गई है। परवर्त्ती काल में सूर्य, चन्द्र के दो पातों को राहु और केतु कहने की परम्परा बन गई। ये सभी पात वक्रगति से चलते हैं हमारे किसी भी प्राचीन भारतीय सिद्धान्त ज्योतिष के ग्रन्थ में इन पातों के स्पष्ट भोगांश जानने का प्रकार नहीं है। अब जबकि ग्रहों से उत्पन्न विक्षोभ का सिद्धान्त प्रकाश में आया, तब आधुनिक नक्षत्रविदों ने इन पातों में भी ग्रह- विक्षोभ का प्रभाव देखा और उन्होंने इन पातों में उनसे सम्बद्ध संस्कार देकर इनके स्पष्ट भोगांश ज्ञात किए। ये संस्कार कभी धन और कमी ऋण होते हैं, जिससे इन पातों की स्पष्ट गति अनेकबार मार्गी भी हो जाती है। क्योंकि हमारे प्राचीन ज्योति विदों को पातों के ये संस्कार ज्ञात नहीं थे अत: उन्होंने इन्हें हमेशा वक्रगति वाले ही माना। सूर्य, चन्द्र के भ्रमणवृत्तों के पातों के अलावा अन्य ग्रहों के पातों का साक्षात्प्रयोग फलादेश में नहीं है। अत: उनके भोगांश पंचांगों में नहीं दिए जाते। परम्परया राहु, केतु को फलित ग्रन्थों में सर्वत्र वक्रगति वाले ही ग्रह मानकर उनका फलादेश लिखा गया है। अब इनके स्पष्ट मानों के आधार पर इनकी मार्गि-गति की स्थिति में इनके फलितीय प्रभाव के मूलत: अध्ययन की आवश्यकता है। क्योंकि अभी तक हमारे फलितचार्यों ने राहु-केतु को वक्र ग्रह मानकर ही जातक पर उनके भाव के सिद्धान्त लिखे हैं, अब उनके मार्गी होने पर जातक के जीवन पर उनका प्रभाव क्या कैसा होगा–इसका अध्ययन उन्हें मूलत: करना होगा। मार्गी होने पर राहु-केतु के प्रभाव (फल) में क्या अन्तर होगा–इसके सहसा निर्णय के लिए कोई सैद्धान्तिक नियम नहीं है, क्योंकि जातक पर पड़ने वाले ग्रहों के प्रभाव की मात्रा और प्रकार आदि के मापन तथा निर्धारण के लिए फलित शास्त्र में कोई वैज्ञानिक सूत्र नहीं बना है, इसके लिए तो दैवज्ञों के अनुभव ही प्रमाण है।

अन्य ग्रहों के स्पष्ट भोगांशों की तरह ही राहु-केतु के भी स्पष्ट भोगांश पंचांग में दिए जाने चाहिएं–आपका यह परामर्श विचारार्ह है।

(51 पृष्ठ का शेष)

इस पंचांग में आगे 'दैनिक लग्न सारणी दी हुई हैं। इस सारणी से चण्डीगढ़ में प्रत्येक दिन का मेष आदि लग्नों का समाप्ति काल (भा. स्टैं. टा.) ज्ञात होता है। इस दैनिक लग्न सारणी से चण्डीगढ़ में अपनी अभीष्ट तरीख को अभीष्ट लग्न का समाप्तिकाल जान लीजिए। यहाँ दी गई "लग्न परिवर्तन सारणियों" से अपने अभीष्ट नगर के आगे तथा अभीष्ट लग्न के नीचे लिखे मिनटों को दैनिक लग्नसारणी से ज्ञात किए गए लग्न समाप्तिकाल में घटाने से आपके अभीष्ट नगर में उस लग्न का समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.) ज्ञात हो जाएगा।

उदाहरण (१) :–भागलपुर (बिहार) में १५ अप्रै. को मेष लग्न का समाप्तिकाल जानिए। १५ अप्रै. को दैनिक लग्न सारणी (चण्डीगढ़) में मेष लग्न का समाप्तिकाल (भा. स्टै. टा.) ७ घं. २८ मि. लिखा हैं। बिहार वाली लग्न परिवर्तन सारणी में मेष के नीचे ३१ मि. लिखे हैं। इन्हें ७ घं. २८ मि. में से घटाने पर ६ घं. ५७ मि. मिले। यह भागलपुर में १५ अप्रै. को मेष लग्न का समाप्तिकाल (भा. स्टै. टा.) है।

उदाहरण (२) :–बीरगंज (नेपाल) में २० सितं. को कन्या लग्न का समाप्ति काल जानना है। इस दिन चण्डीगढ़ में कन्या लग्न ८ घं. १५ मि. (भा. स्टै. टा.) पर समाप्त होगा। [देखिए- दैनिक लग्न सारणी (चण्ड़ीगढ़)]। बीरगंज में कन्या लग्न के लिए संस्कार ३५ मिनट है (देखें नेपाल वाली "लग्न परिवर्तन सारणी")। ३५ मि. को ८ घं. १५ मि. में से घटाने पर ७ घं. ४० मि. मिले। यह इस दिन बीरगंज में कन्या लग्न की समाप्ति का काल (भा. स्टैं. टा.) है।

नोट :–दैनिक लग्न सारणी (चण्डीगढ़) वाले पृष्ठों से पहिले "वार्षिक संस्कार कोष्ठक" दिया गया है। यदि अभीष्ट वर्ष का वार्षिक संस्कार भी उस कोष्ठक से लेकर लग्न समाप्तिकाल में चिह्नानुसार कर दिया जाए तो उपरोक्त पद्धति से जाना गया लग्न समाप्ति का काल उस वर्ष के लिए अपेक्षाकृत अधिक सूक्ष्म होगा। जैसे:–१ जन. १९७९ ई. को आरा (बिहार) में मिथुन लग्न का समाप्ति काल जानना है। इस दिन चण्डीगढ़ में मिथुन की समाप्ति १८ घं. २५ मि. (भा. स्टैं.) टा.) पर होती है। आरा में मिथुन लग्न के लिए संस्कार २१ मिनट है। इसे १८ घं. २५ मि. में से घटाने पर आरा में १ जन. को मिथुन समाप्तिकाल १८ घं. ४ मि. हुआ। इसमें "वार्षिक संस्कार कोष्ठक" से १९७९ ई. का मिथुन लग्न का संस्कार + २ मि. लेकर चिह्नानुसार जोड़ा तो आरा में १ जन. १९७९ ई० को मिथुन लग्न का अपेक्षाकृत सूक्ष्म समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.) १८ घं. ६ मि. मिला।

–ःदुर्लभ तांत्रिक पदार्थ, उनका प्रयोग एवं दिव्य प्रभावः–

श्रीमती भावना 'अशोक' जातुकर्ण, श्री जगदम्बा ज्योतिष भवन, गागोर, जिला-मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)

गतवर्ष के श्री मार्तण्ड पंचाग में हमने इसी शीर्षक से संबंधित मुख्यतः ३ तांत्रिक वस्तुओं का विस्तृत विवरण दिया था। स्थानाभाववश वहां अधिक नहीं दे सके थे। इस लेख के सन्दर्भ में हमारे कार्यालय में असंख्य पत्र एवं व्यक्ति पहुंचे। उन सभी ने पुनः इसी विषय पर और लिखने के लिए हमें प्रेरित किया किन्तु मैं व्यक्तिगत समस्याओं से घिरा होने के कारण लेखन कार्य में असमर्थ रहा। पुनरपि मेरी विदुषी पत्नी ने इस विषय पर अध्ययन करके, इस लेख को पुनः जागृत कर तांत्रिक शस्त्र पर रुचि रखने वाले पाठक वृन्द के लिए अनेक आश्चर्यकारी तन्त्ररहस्य यहां उद्घाटित किए हैं।

जिन विद्वानों ने हमें पत्र से पुनः-इस विषय पर लेखन कार्य के लिए प्रेरित किया; हम उनके आभारी हैं। इन सभी ने इस विषय पर अधिक जानकारी प्राप्तिहेतु विस्तृत पत्र लिखे हैं परन्तु उनका उत्तर देना संभव नहीं था। अतः यहाँ उन सभी महानुभावों की भावनाओं का सम्मान, पुनः इसी विषय से सम्बद्ध यह एक और लेख देकर किया गया है। आशा है यह लेख तंत्रशास्त्र में रुचि रखने वाले सभी व्यक्तियों के लिए उपयोगी एवं रुचिकर होगा।

यदि किसी व्यक्ति को एतत्सम्बद्ध कोई असली वस्तु अथवा तत्सम्बन्धी जानकारी चाहिए तो पत्र-व्यवहार करें। जवाबी पत्र लिखें। इन सभी वस्तुओं के रेट सुलभता और दुर्लभता के आधार पर समयानुसार परिवर्तित होते रहते हैं, अतः शुल्क तालिका देना युक्तियुक्त नहीं है।

हमने अपने अनुभव के आधार पर लेख सविधान आप पाठक वृन्द की सेवा में प्रस्तुत किया है।

–अशोक जातुकर्ण

(१) चितावर काष्ठ

प्राचीन काल से ही ऋषिगणों ने अपने अथक प्रयास से प्रायः समस्त वृक्षों के विज्ञान को समझा एवं उनका प्रयोग वे तबसे करते चले आ रहे हैं, किन्तु यह दुर्भाग्य की ही बात है कि चितावर के विषय में कोई भी विशेष परिचय हमें प्राप्त नहीं है. जिससे आम लोगों को इसके बारे में कुछ भी पता नहीं है कुछ विशिष्ट सिद्ध पुरुष ही इसके रहस्यमय प्रभाव को जानते हैं। तांत्रिक प्रयोग में इसका महत्त्वपूर्ण स्थान है। तांत्रिक ग्रन्थों में तो इसके बारे में बहुत कुछ लिखा गया है। हो सकता है कि प्राचीन काल में इसका परिचय मिला हो, और इसकी भयानकता को देखते हुए इसे अन्धकार में रहने को छोड़ दिया गया हो। वास्तव में यह वृक्ष बहुत खतरनाक है। तांत्रिकों को एवं तंत्र में रुचि लेने वालों को इसकी प्राप्ति हेतु इच्छा जागृत ही रहती है।

पहचान–यह नितकबरे रंग का कड़ी छाल वाला काष्ठ होता है, जो कि नीम की सूखी टहनी के समान दिखाई देता है। इसमें नाखून चुभाने से लाल वर्ण रसकी बूंदे स्वतः छलछला आती हैं, किन्तु सूखे काष्ठ में यह संभव नहीं। यदि इस टहनी से लोहे को स्पर्श किया जाए तो लोहा ३-४ मिनटों में कट जाता है। तांत्रिक ग्रन्थों में कई प्रकार की अशोभनीय क्रियाओं (विद्वेषण एवं मारण आदि कर्म) में इस लकड़ी का प्रयोग लिखा गया है। इस लकड़ी की सबसे बड़ी पहचान यह है कि यदि इस टहनी को पानी में डाल दिया जाए तो नदी के धाराप्रवाह के विपरीत दिशा में यह सर्प की भाँति लहराती हुई ही दिखाई देती है। यह सर्प बनते हुए नहीं देखी गई, क्योंकि यह लकड़ी मायावी नहीं है। चितावर की लकड़ी स्वयं में ही सिद्धि समेटे हुए हैं अतः यह किसी भाग्यशाली को अकस्मात् कहीं प्राप्त हो सकती है।

उपरोक्त जो पहचान लिखी गई है, तन्त्र शास्त्र के आधार पर है। किन्तु प्रत्यक्ष में जब यह लकड़ी देखी गई तो जल में सर्प की भांति तैरने एवं लोहे को स्पर्श करते ही काटने की शर्त पूरी नहीं करती। लेकिन जो इससे सम्बद्ध तन्त्र प्रयोग भेद लिखे हैं, उनके बारे में तो चमत्कारिक परिणाम सम्मुख आये हैं। अधिक तो पाठकवृन्द स्वयं अनुभव करके ही उत्तर देंगे।

"प्रयोग एवं प्रभाव"–(i) यदि इस लकड़ी को सिद्ध कर अपने पास रखा जाए तो इससे लोहे की छड़ें, मोटी मोटी शीट आदि भी सहजता से काटी जा सकती है।

(ii) इस काष्ठ के माध्यम से सदुद्देश्य के लिए विद्वेषण प्रयोग सफलता पूर्वक किया जा सकता है जो प्रत्यक्ष फलप्रद होता है। ऐसा प्रयोग परस्पर दो प्रेमियों में अवैध प्रणय सम्बन्धों में वैमनस्य, सम्बन्ध-त्याग कराने के लिए भी किया जाता है।

(iii) चितावर काष्ठ से "मारण" आदि जघन्य कर्म भी किये जाते हैं। इसे कुछेक तांत्रिकगण काला जादू भी कहते हैं। लेकिन ऐसे प्रयोग किसी भी स्थिति में नहीं करने चाहिएं। घातक, निन्दनीय तांत्रिक प्रयोग करने से व्यक्ति को स्वयं भी हानि उठानी पड़ती है–ऐसा तन्त्रशास्त्रज्ञों का दृढ़ मत है।

"सिद्ध करने की विधि–सुना गया है कि इस लकड़ी के वृक्ष पर प्रेतात्माओं का निवास होता है। इसे सिद्ध करने हेतु भी भूतेश्वरी जी का मंत्र प्रयोग करते हैं। निम्न मन्त्र को ११ माला पर्यन्त अर्द्ध-रात्रि काल में दक्षिण मुख हो; श्यामवर्ण आसन पर आरूढ़ हो, सरसों के तेल का चौमुखा दीप सम्मुख रख, अगरवत्ती जलाकर करना है। एक काले वस्त्र पर 'चितावरकाष्ठ" रख कर सिन्दूर एवं कौवे, बकरे या काले मुर्गे के रक्त की ४-५ बूंदें उस पर डालें तथा सुरा की २-३ बूंद भी डाले। तदुपरान्त नीचे लिखे मन्त्र का जाप करे। भय होने पर मस्तिष्क विक्षिप्त होने की स्थिति बन सकती हैं। यह मन्त्र प्रयोग निरन्तर ५१ दिनों तक करे। विधान पूर्ण होने पर ५१ वें दिन की रात्रि को ही एक बबूल की जड़ में सवा किलो दूध, मिष्टान्न १ छटाँक, सिन्दूर १ तोला, काष्ठ के कोयले २० ग्राम, सेन्ट की १०-११ बूंदे डालें। साथ में यह चितावर काष्ठ भी रखे। दक्षिण मुख हो ऐसा करे। तेल का चौमुखा दीप भी जलावें। फिर भूतेश्वरी देवी जी को नतमस्तक हो प्रणाम करे, और ध्यान करें कि अभीष्ट कार्य हेतु मैं इसे सिद्ध कर रहा हूं, मेरा कार्य पूर्ण करो। चितावर को लेकर कपड़े में लपेट कर गुप्त स्थान पर रखे। नित्यप्रति उसे धूप देते रहें। यह प्रयोग 'मूल नक्षत्र' से प्रारंभ करें।

मन्त्र– "ॐ श्रीं वं वं भुं भूतेश्वरि मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।"

(संपादकीय नोट–इस प्रकार के तन्त्रमन्त्रों की साधना का कई बार साधक पर विपरीत प्रभाव भी पड़ सकता है, अतः किसी अनुभवी सिद्ध तान्त्रिक की देख-रेख में ही ऐसी साधना में प्रवृत्त होना चाहिए। ऐसी साधना में किसी भी प्रकार के प्रतिकूल परिणाम के लिए सम्पादक वर्ग किसी भी प्रकार का उत्तरदायित्व लेने को प्रस्तुत नहीं है।)

(२) एकाक्षी नारियल

नारियल से सभी परिचित हैं। नारियल, नारिकेल, कोकोनट, कोला, गरी, गोला, खोपरा, श्रीफल आदि इसी के नाम हैं। (श्रीफल-बेल को भी कहते हैं और समुद्रतट पर पाये जाने वाले, ठीक नारियल के रूपाकार में, बड़ी इलायची के बराबर होने वाले एक अन्य फल को भी 'श्रीफल' कहते हैं) भारतीय-अध्यात्म में यह एक शुभ वनस्पति एवं पूजा पाठादि में प्रयुक्त होने वाला पवित्र फल है। इसकी रचना विचित्र होती है। यह बेल एवं बादाम सर्वाधिक कठोर आवरणधारी फलों से भी अधिक कठोर आवरण में रहता है। पौराणिक मान्यता है कि नारियल की रचना ब्रह्माजी ने नहीं की, अपितु यह विश्वामित्र मुनि की सृष्टि है। इसका यहाँ विस्तृत वर्णन अपेक्षित नहीं है, यह सर्व विदित फल है।

'प्राप्ति स्थल'—नारियल का फल सब सुलभ है। मद्रास क्षेत्र, बम्बई क्षेत्र, तिरुपति, ऊटी, रामेश्वरम्, कन्याकुमारी, गोआ और बंगाल क्षेत्र में यह भारीमात्रा में उपलब्ध है। आज किसी भी नगर या कस्बे में देखें (जुलाई से अक्टूबर तक) नारियल के हरे गोले (दूधिया) हथठेलियों पर बिकते मिलेंगे। सामान्यत: नारियल के प्रत्येक फल पर जटा उतारने के बाद, टहनी की ओर तीन काले बिन्दु दीख पड़ते हैं। इसके भीतर गरी होती है। नारियल का तेल वही गरी का घी है। यह ठण्डा, मीठा, पौष्टिक, केश-वर्धक, नेत्र ज्योति रक्षक एवं शान्तिप्रद होता है। पंचमेवा में गरी भी एक घटक है।

'पहचान'—सामान्यत: सभी नारियलों में तीन काले बिन्दु दीख पड़ते हैं। मान्यता है कि इनमें से दो बिन्दु नेत्रों के प्रतीक हैं और एक मुख का। परन्तु बहुत ही कम बिरले नारियलों में केवल दो बिन्दु पाये जाते हैं अर्थात् उस पर दो नेत्रों की जगह एक नेत्र और मुख ही होता है। तांत्रिक ग्रन्थों में इस तरह के फल को 'एकाक्षी नारियल' कहा गया है-एक आंख वाला नारियल। तन्त्र साधना में इसकी बड़ी महत्ता है।

"प्राप्ति मुहूर्त"-एकाक्षी नारियल मात्र पूजन हेतु होता है, उसे तोड़ना नहीं चाहिए। यह फल अत्यन्त दुर्लभ है। अत: कहीं दीख पड़े तो तुरन्त ले लेना चाहिए। इसके दर्शन परम भाग्यशाली पुरुषों को ही होते हैं। इसकी दुर्लभता एवं उपयोगिता को देखते हुए यह काफी मंहगा मिलता है।

तांत्रिक प्रयोगों हेतु इसे प्राप्त करने के लिए अमृतयोग, सिद्धि-योग, पुष्य योग जैसा कोई शुभ मुहूर्त चाहिए। इसके लिए रविपुष्य या गुरुपुष्य सर्वश्रेष्ठ है।

"पूजन विधि"-उक्त किसी भी शुभ मुहूर्त में स्नानोपरान्त शुद्ध स्थान पर आम्रकाष्ठ की चौकी पटा रख, रक्त वर्ण वस्त्र बिछा, स्वयं दैनिक देव-पूजा करके थाली में इस फल (एकाक्षी नारियल) को रखें। गंगाजल से स्नान करायें। पोंछकर बिछे रक्तवर्ण वस्त्र पर इसे ऐसे रखें कि इसका छोटा बिन्दु ऊपर और बड़ा बिन्दु नीचे की ओर रहे। फिर कल्पना करें कि यह साक्षात् लक्ष्मीजी की प्रतिमा है। उस पर रक्त वस्त्र, रक्त चन्दन चूर्ण, सिन्दूर, रक्त पुष्प, अक्षत अर्पित करें। धूप-दीप नैवेद्य, एवं कोई मुद्रा सिक्का आदि चढ़ायें। इसके बाद लक्ष्मी जी का स्तवन, ध्यान, पूजा करते हुए निम्नांकित मन्त्र का जप प्रारंभ करें। मन्त्र जप से पूर्व यह संकल्प करें कि मैं इस एकाक्षी नारियल रूपी लक्ष्मीप्रतिमा की पूजा प्रसन्नता हेतु ११ या इससे अधिक मालाजप प्रतिदिन करूँगा। कभी भी जप संख्या संकल्प की गई संख्या से न्यूनाधिक न हो। कम से कम ११ माला अवश्य जपना चाहिए। तदनन्तर इस नारियल को किसी रजत, ताम्र की तश्तरी, कटोरे में वस्त्र सहित रखें। फिर प्रथम दिन मन्त्र की जप संख्या पूर्ण होने-पर दशांश क्रम से हवन करें। हवनोपरान्त कम से कम एक ब्राह्मण को भोजन कराकर दक्षिणा दें। यह प्रयोग सवा लक्ष जाप तक करें। फिर नित्य प्रति इसकी सिन्दूर, पुष्प एवं धूप-दीप से पूजा करें। कभी-कभी सिक्का

मन्त्र – "ॐ श्रीं श्रियै नमः।"

क्योंकि एकाक्षी नारियल को भगवान् लक्ष्मी जी का प्रतीक माना गया है, अत: एकाक्षी नारियल साधनोपरान्त निम्न श्लोक से विष्णु भगवान् (लक्ष्मीजी के प्रियतम) का स्तवन कर लेना भी साधना के प्रभाव में संवर्धनकारी सिद्ध होता है-

"शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्, प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये।
व्यासं वसिष्ठनप्तारं सक्तेः पौत्रमकल्मषम् पाराशरात्मजं वन्दे शुकतातं तपोनिधिम्।।
व्यासाय विष्णुरूपाय व्यासरूपाय विष्णवे, नमो वै ब्रह्मनिधये वसिष्ठाय नमो नमः।
अचतुर्वदनो ब्रह्मा द्विबाहुरपरो हरिः, अभाललोचनः शम्भुर्भगवान् बादरायणः।

"प्रभाव"-जिस घर में एकाक्षी नारियल की पूजा होती है, वहां लक्ष्मी जी सदैव वास करती हैं। अन्न के भण्डार में, तिजौरी में, आलमारी में, देव प्रतिमाओं के साथ कहीं भी इसे रखें और दैनिक पूजन दर्शन करें। इससे अन्न, धन, समृद्धि, ऐश्वर्य एवं श्री सम्पत्ति की वृद्धि होती है। व्यापारिक वर्ग के लिए यह अत्यन्त लाभकारी होता है।

(३) गुंजा

यह एक वनलता का फली का बीज है। इसे चिरमिटी, घुंघची, रत्ती आदि नामों से जाना जाता है। इसकी जड़ दीर्घजीवी होती है। प्रथम वर्षा में धरती भीगते ही उस जड़ में अंकुर निकल आते हैं। इस तरह आषाढ़ में यह लता पुनः उग कर क्रमशः बढ़ती हुई समीप के पेड़-पौधे पर चढ़कर उर्ध्वगामी हो जाती है। गुंजा की पत्तियां इमली की पत्ती से साम्य रखती हैं। सेम के फूल जैसे गुलाबीपन लिये पुष्प आते हैं। आश्विन में पुष्प, अगहन में पत्तियाँ एवं फलियां आती हैं जो फाल्गुन में पककर चटक जाती है। घुंघुची की दो जातियां हैं-लाल एवं सुफेद। तांत्रिक प्रभाव की दृष्टि स दोनों महत्वपूर्ण होती हैं। किन्तु श्वेत गुंजा विशेष प्रयोजनीय है। एक तीसरी जाति का उल्लेख भी कहीं कहीं मिलता है-वह है काली गुंजा। किन्तु यह दुर्लभ है। तन्त्र साधना में उसे बहुत ही प्रभावशाली, उपयोगी, मूल्यवान् एवं दुर्लभ कहा गया है। काली या श्वेत के अभाव में रक्त गुंजा का ही निर्देश मिलता है। यह बहुतायत में सुनारों के यहां स्वर्ण तोलने में प्रयुक्त की जाती है।

घुँघची दाना स्वयं में अमृत एवं विष दोनों का प्रभाव रखती है। इसीकी जड़ को मुल्हट्टी कहते हैं। गुंजा की जड़ को तांत्रिक विधि से प्राप्त करें अर्थात् एक दिन शाम को लता के निकट पहुंचकर उसे विधिवत् निमन्त्रण दे आयें। फिर दूसरे दिन प्रातः जाकर उसे ले आयें।

गुंजा मूल की प्रशंसा–

गुंजा की कहत हौं, कौतुक चरित अपार, गिरिजा सों शिव यों कह्यौ, सब कल्पन को सार।।
भूत, रू डाकिनी प्रेत गण, पक्ष वीर बैताल, इक गुंजा के कल्प में, कोटिन माया जाल।।
बहुत चरित हैं कहो कुछ, सकल कल्प की खानि, जो चाहै सोई करै, साधन के वरदानि।।
अब याके साधन करै, यथायोग्य उपदेश; जो साधै सो सिद्धि है, कसर नहीं लवलेश।।

गुंजामूल प्राप्ति का मुहूर्त–

(i) पुष्य होय आदित्य को, जो लीजै यह मूल, शुक्रवार की रोहिणी, गहन होय अनुकूल।।
(ii) कृष्णपक्ष की अष्टमी, हस्त नक्षत्र जू होय, अर्द्धरात्रि को जाय के, मन की शंका खोय।।

धूप दीप दे लायकर, धरै दूध में धोये; जो काहू नर नारि के, विषधर काटे होय।।
विष उतरे सब तुरत ही, जानि पिलावे सोय।।

गुंजामूल के तांत्रिक प्रयोग–

(१) जो घिसिकर कर मुख में तबै, सभामध्य नर जाय।
हाँजी हाँजी सब कहैं, जाई कहै सो थाय।।

(२) चतुर लोग यह विध करै, कबहुन आवै आँच
एक जड़ी के युक्त सों, सबै नचावे नाच।।

(३) ताँबा माहि मढ़ायकै, कटि में बाँधे कोय।
नवें मास वहिनारिकें, निश्चय बालक होय।।

(४) जो घिसि पय योग सों, लेपन कीजै अंग।
भूतप्रेत अरु यक्ष गण, लगै फिरैं सब संग।।

(५) घिसि के रूई भिगोकर, बाती करे बनाय।
फेर भिगोवे तेल सों, दीपक धरे जलाय,
होय अचम्भोशयन तब, मृत्यु के सभा देखाय।
मन में ले स्तुति करे, सब ही पूजे पाय।।

(६) जो घिसिये वह घीव सों, लेप शरीर बनाय,
कैसा ही होवे हठी, लावैं प्रीत लगाय।

(७) मेष मूत्र सों रगरिकै, जो लेपे द्वौ हाथ,
कहे दूर की बात वह, सब मानो है साथ।।

(८) गोरोचन को लौंग से, लिखिये जाको नाम,
मित्र होय वह तुरत ही, नहि बैरी को काम।।

(९) खांड संग रगरि कै, तलवा तले लगाय,
आँखि मिचत कै पलक में, सहस कोस उड़ि जाय।।

(१०) जो गुलाब सों रगरिकै, नाभि लेप कराय,
त्यहि शरीर घड़ी चार में, जागे सहज उपाय।।

(११) जो बाघिन के घीव सों, घिसि चुपरे सब देह,
तीर तुपक लागै नहीं, ज्यों बरसै घन मेह।।

(१२) घिसि कै तिल के तेल में, मर्दन करै शरीर,
देखे सब संसार को, महावीर रणधीर।।

(१३) जो अलसी के तेल में, घिसिये शहद मिलाय,
कृट काट लेपन करै, कंचन तनु ह्वै जाय।।

(१४) गन्धक संग मिलाय के, बीसों नखन लगाय,
जो नर होय कुमारगी, देखत वश ह्वै जाय।।

ये दोहे प्राचीन हस्तलिखित एक दुर्लभ तन्त्र पुस्तक से उद्धृत हैं। स्थानाभाव से इनका अनुवाद यहां नहीं दिया जा सका। वैसे इनकी भाषा सरल सुबोध है, पुनरपि कहीं अस्पष्टता होने पर पाठक को इस लेख की लेखिका से पत्रव्यवहार करना चाहिए।

(54 पृष्ठ का शेष)

अधिकतर पाश्चात्य दैवज्ञ चतुर्थभाव से पिता का और दशमभाव से माता का विचार करते हैं। कुछेक इसके विपरीत मत भी रखते हैं–वे चतुर्थ को माता का और दशम को पिता का भाव लिखते हैं। पाश्चात्य ज्योतिष में नवम को पितृभाव मानने वाला पक्ष नहीं है। पाश्चात्य दैवज्ञों का एक वर्ग ऐसा भी है, जो स्त्रीजातक की कुण्डली में चतुर्थ भाव को माता का और दशम भाव को पिता का, तथा च पुरुषजातक की कुण्डली में चतुर्थ भाव को पिता का एवं दशम भाव को माता का मानने के पक्ष में है।

ये विभिन्नमत जातक के पिता के बारे में किए गए फलितीय विश्लेषण के परिणामों में तो विरोध लाते ही हैं, पिता के निकट सम्बन्धियों के (पिता, माता, भाई, बहन आदि, जो जातक के क्रमशः दादा, दादी, चाचा-ताया और बुआ आदि हैं) उनके... कुण्डलीगत भावों में भी वैमत्य लाकर उनसे सम्बद्ध फलादेश में भी विरोध उत्पन्न करने के ये दोषी हैं।

स्पष्ट है–प्रस्तुत विषय पर यह भयावह मतभेद विषम परम्पराओं की ही देन है। फलित शास्त्रीय मत-मतान्तरों का समाधान अनुभव के आधार पर कर लेने का सिद्धान्त भी ऐसी साक्षात् परस्पर विरोधी सुदीर्घ परम्पराओं (जो लगभग दो हजार वर्षों से जीवित चली आ रही हैं) से बुरी तरह निरस्त हो जाता है। एक-दूसरे के फलितीय परिणामों के अक्षम्य असामंजस्य की स्पष्ट स्थिति में भी ये दैवज्ञ अपनी-अपनी क्षेत्रीय परम्पराओं के सिद्धान्तों से प्राप्त फलित को ही सहस्राब्दियों से प्रामणिक कहते हुए अघाते नहीं–यह कितनी हास्यास्पद बात है ? ध्यान रहे–परस्पर विद्वेषी परम्पराओं पर बने तथाकथित सिद्धान्तों से ज्ञान और विज्ञान-दोनों को भारी घृणा है। ऐसे नितान्त असह्य, अक्षम्य मतभेद दैवज्ञों की अविश्वसनीयता और फलित-साहित्य की प्रामाणिकता पर भारी प्रश्न चिह्न लगाते हैं–यह भी जान लेना चाहिए।

प्रसूति-लग्न विचार

मेष—जन्म समय मेष लग्न हो, तो माता का पूर्व या पश्चिम में सिर, उपसूतिका दो या तीन, प्रसव में माता को कष्ट अधिक, पाद से प्रसव, भूमि में घर के पूर्व भाग में जन्म हुआ, बालक जन्मोपरान्त दीर्घ शब्द से रोया। माता ने लाल एवं मीठा भोजन किया था। वस्त्र लाल मलिन। ४।११।१६।४४।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप करवाना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

वृष—माता का दक्षिण में सिर, उपसूतिका ३ या ४, जन्मोपरान्त दो और आई, जन्मते ही बालक दीर्घ शब्द से रोया, गौरवर्ण, अधोमुख, पाद से प्रसव, घर के पूर्व हिस्से में सूतिका स्थान, श्वेत-स्वच्छ वस्त्र, जन्म से पहले माता ने शुष्क शाकादि भोजन किया, १।२८।३३।४४।६१ वर्षों में बालक कष्ट पावे। इन वर्षों के प्रारम्भ में महामृत्युञ्जय का जप और ब्राह्मण भोजन करवाना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मिथुन—माता का सिर पश्चिम में उपसूतिका ३ या ५, माता का हरा या जीर्ण वस्त्र, शिर से प्रसव, मुख ऊपर को, जन्मते ही दीर्घ शब्द किया, नाल छूटा था, घर के आग्नेय भाग में जन्म, माता ने पहले लवणयुक्त विचित्राल्प भोजन किया, दूध कम उतरे, ४।१०।१४।३८।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन और मृत्युञ्जय का जप करवायें। यदि इन वर्षों से बचे तो ८६ वर्ष जीवे।

कर्क—माता का उत्तर में सिर, उपसूतिका ५ या ४, बालक जन्मते ही छींका, नाल छूटा, भूमि पर जन्म, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान, माता के वस्त्र श्वेत व लाल, माता ने प्रसव के पहले मधुर व शीतल भोजन किया था, दीपक उठाया गया, बालक के वामांग में लहसन आदि का चिन्ह, देर से रोया, ५।२५।४०।५८।६२ इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो १०० वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों में प्रवेशसमय तुलादान, छायादान और मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जाप करवाना-कल्याणप्रद है।

सिंह—माता का पश्चिम या पूर्व में सिर, मलीन सा लाल वस्त्र, शुष्क कसैला या खट्टा भोजन किया था, जन्म समय स्त्री ३, पीछे से १ आई, दीपक स्थिर रहा, बालक जन्मते ही तुरन्त रोया, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान, ५।१३।२८।३६।४८ इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो ६७ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश होते ही श्रीसूर्य नारायण के मन्त्र का जाप या आदित्यहृदय का पाठ और मीठा भोजन करावे तो कल्याण रहेगा।

कन्या—माता का दक्षिण में सिर, रक्त जीर्ण वस्त्र, मिष्टान्न बासी-चीज या बड़े आदि का भोजन, जन्म समय स्त्री ३ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक ने जन्मते ही अर्द्ध शब्द किया। घर के नैऋत कोण में सूतिका-स्थान, ४।१६।२३।३६।५५ वर्ष कष्टकारक हैं। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

तुला—माता का सिर पश्चिम या पूर्व को, श्वेत जीर्ण वस्त्र, भुना हुआ अन्न, ठंडा जल या कोई मामूली चीज क्रोधपूर्वक खाई थी, जन्म समय स्त्री ३ या ६, वहां एक कन्या भी हो, दीपक उठाया गया, बालक जन्म समय कुछ ठहर कर अर्द्ध शब्द करके रोया, घर के पश्चिम भाग में सूतिका-स्थान, ८।१५।३१।३५।६२।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में नवग्रह का दान, हवन, जप करवाना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ७५ वर्ष जीवे।

वृश्चिक—माता का दक्षिण या उत्तर में सिर, रक्त वा दग्ध वस्त्र, कष्ट अधिक अमधुर मामूली क्रोधपूर्वक भोजन, जन्म समय स्त्री २ या ३, पीछे से भी दो आईं, दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, छींक भी किया, दीर्घकेश, घर के पश्चिम भाग में प्रसवस्थान, ११।२८।३८।५२।६२ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में मृत्युञ्जय जप और तुलादान कराना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

धनु—माता का सिर पश्चिम या पूर्व को, पीत वा रक्त वस्त्र, पक्वान्नादि भोजन, जन्म समय स्त्री १ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर तत्काल दीर्घ शब्द से रोया, और छींक भी किया, घर के वायव्यकोण में सूतिकास्थान, २।१०।१८।३१।३८।४२।६७ इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन, महामृत्युञ्जय जप, ब्राह्मण भोजन श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ८१ वर्ष जीवे।

मकर—माता का सिर दक्षिण में, ऊपर काला वा जीर्ण कमजोर वस्त्र, गुड़, दुग्ध, कसैला भोजन, ठण्डा जल पान किया था। जन्म समय स्त्रियां २, पीछे से १ आई, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर अर्द्ध शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के उत्तर भाग में पुराना सूतिकास्थान, ५।१३।२७।३६।५७।६३।८७ इन कष्टकारक वर्षों से बचे, तो ९५ वर्ष जीवे।

कुम्भ—माता का शिर पश्चिम को, जीर्ण, धूम्रवर्ण वा कुरूप वस्त्र, मधुर शीत शाकादि कुभोजन, कष्ट अधिक, जन्म समय पांस स्त्रियां ४, दो स्त्री पीछे से आईं। उनमें एक स्त्री गर्भिणी भी हो। दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर अर्द्ध शब्द से रोया, वामांग में कोई चिह्न भी हो, घर के उत्तर भाग में सूतिका-गृह, २।२८।३३।४८।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप हितकारक है, इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मीन—माता का सिर उत्तर में, पीत या मलिन वस्त्र, विचित्र सा अल्प भोजन, जन्म समय स्त्री २ या ५, दीपक हाथ में उठाया व जलाया गया था, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, घर के ईशान में सूतिका-स्थान, १।८।१३।३६।४८ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में ग्रह-शान्ति हवन मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जप कराना श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ८३ वर्ष जीवे।

स्मरण रहे, कि अधिकांश जिस लग्न के लक्षण मिलें-वही बालक का जन्मलग्न जानना, क्योंकि यह साधारण लग्न के फल बलाबल के कारण सभी नहीं मिल सकते।

सुता जन्म सिंहराशि में, धन-मृग जन्मे बाल। अर्ध-शब्द शिशुकरत भयो भाषत बुद्धि रसाल॥

पितृपरोक्ष ज्ञान—(१) जन्म लग्न को चन्द्रमा न देखे, (२) बुध-शुक्र के मध्य में चन्द्रमा हो, (३) लग्न में शनैश्चर चन्द्रमा से अदृष्ट हो, (४) भौम सप्तम, चन्द्रमा लग्न को न देखता हो, इन चार योगों में से एक भी योग में उत्पन्न हुए बालक का पिता के परोक्ष में जन्म कहना।

जहां राहु शैय्या तहां भय जहां कुज होय। रविस्थान में दीप कही शनी लोह कही सोम?

जन्म कुण्डली में दिशा ज्ञान—प्रथम भाव पूर्व, द्वितीय, तृतीय—ईशान। चतुर्थ—उत्तर। पञ्चम, षष्ठ—वायव्य। सप्तम—पश्चिम। अष्टम, नवम—नैऋत। दशम—दक्षिण। एकादश तथा द्वादश भाव को आग्नेय समझना।

प्रसूति-स्थान से पाकशालादि विचार

जन्मकुण्डली में सूर्य मंगल जिस दिशा में हों, वहां अग्निस्थान (पाकगृह) जानना, इसी तरह चन्द्रमा से जलस्थान, बुध से भण्डार, गुरु से धनस्थान, शुक्र से देवस्थान और

शनि से अशुभ (मैला) स्थान जानना चाहिए । दोहा—लग्ननाथ जो केन्द्र में तीन दिशा को द्वार । या लग्नपै दिशि जानिए कहत बुद्धि आगार ।। केन्द्र (१।४।७।१०) स्थान में एक से अधिक ग्रह हों वो उनमें जो बली (स्वराशिमित्रोच्च व मूल त्रिकोण राशि का) केन्द्र स्थान में स्वमित्र शुभ के नवांश में स्थित ग्रह हो उसकी दिशा में वा-लग्नपति की दिशा में सूतिकागृह का द्वार होता है । ग्रहों की दिशा—सूर्य की पूर्व, चन्द्र की वायव्य, भौम की दक्षिण, बुध की उत्तर, गुरु की ईशान, शुक्र की आग्नेय, शनैश्चर की पश्चिम, राहु केतु की नैऋत ।

चन्द्रात्तैल-ज्ञानम्—चन्द्रमा से दीप के तैल का ज्ञान होता है, जैसे रात्रि का जन्म है और जन्मकाल पर चन्द्रमा के कम अंश व्यतीत हुए हैं, तो दीपक में तेल ज्यादा कहना यदि चन्द्रमा आधी राशि भोग कर चुका हो, तो दीपक में आधा तेल कहना, यदि चन्द्रमा शीघ्र ही दूसरी राशि पर बदलने वाला हो तो बहुत ही कम तेल कहना । सो० तनुस्थान शशि जाई, वा शशि षष्ठे भवन में, शिशु जन्म तव आई, तव कहि दीपक तैल नहि । सित शनिदशमे धाम, पंचम तनुपै चन्द्रमा, शिशु जन्मे तब वाम, दीपक तैल सों युक्त कहि ।

लग्नाद्दीपवर्ति-ज्ञानम्—जन्म लग्न के कम अंश हो तो बड़ी बत्ती कहना, अधिक अंश हों तो छोटी कहें ।

चन्द्रलग्नान्तर्गतैर्ग्रहैः स्युरुपसूतिकाः—यदि लग्न की निर्बलता के कारण लग्न फलानुसार उपसूतिका का पूरा पता न लगे तो जन्मकाल में लग्न से चन्द्र पर्यन्त जितने ग्रह उतनी ही उपसूतिका कहना । परन्तु जब कोई ग्रह चन्द्रमा के साथ हो तो उसके अंश देखें । यदि उसके अंश चन्द्रमा से कम हों, तो उसकी गणना करें अन्यथा उसे नहीं जोड़ें । इस प्रकार जो ग्रह लग्न में हों और उसके अंश लग्न से अधिक हों तब ही उसकी संख्या जोड़ें अन्यथा नहीं जोड़ें । लग्नचन्द्रांतर्गत कोई ग्रह वक्र या उच्च का हो तो तीन गुणा करना और स्वराशि स्वनवमांश स्वद्रेष्काण में हो तो द्विगुण करना, इसी प्रकांर जितने ग्रह नीचे राशि के अस्त के होवें उनका आधा करके उपसूतिकाओं में जोड़ने से ठीक उपसूतिका स्त्रियों की संख्या का ज्ञान होगा । इस में भी विशेष यह ध्यान में रखने योग्य है कि वह लग्न चन्द्रांतर्गत ग्रहलग्न के भोग्यांश से सप्तम भाव पर्यन्त होवे तो सूतिका ग्रह से बाहर समीप में, और सप्तम भाव से लग्न के भुक्तांश पर्यन्त हों तो सूतिका के समीप में अन्दर जानना । उन ग्रहों में जो शुभ-ग्रह हो वहां धर्मशील सौभाग्यवती स्त्रियां कहना, अशुभ ग्रहों में विधवा व दुश्चरित्रा कहें ।

शय्या—शिर व पाद विचार

लग्नदिशि शय्या शिरस्त्रिषड्क्रान्त्येषु पादाः । लग्न की दिशा की तरफ पलंग का सिरहाना कहना, अर्थात् १।२ लग्न में पूर्व, ३ में अग्निकोण, ४।५ में दक्षिण, ६ में नैऋत्य, ७।८ में पश्चिम, ९ में वायव्यकोण, १०।११ में उत्तर और १२ लग्न में ईशानकोण की तरफ जानना । तीसरा, छठा, नौवां, बारहवां स्थान पाये जानना । इन स्थानों में से जिस स्थान में पाप ग्रह युक्त हो वहां सूतिका के पलंग का पावा फटा टूटा समझना ।

दो०—मीन-मिथुन-सिंह-तुला, मेष होय तत्काल । अन्तरिक्ष भयो बालक, शेषे भूमि विशाल ।।

अथ चिह्नज्ञानम्—दोहा षट्त्रिकोण वा लग्न रवि बुध भावे धरि ध्यान । वामें कुछ लहसन अहै गर्गवचन परमाण ।। भानु तथा सौरी तनधन कुज कष्टक चन्द्र । बालक के वा मस्तके अवश चिह्न दरशाह ।। सुहृद भाव मे कवि तम भौम वा सौरी लग्न । वाम पाद के चिह्न को भाषत ज्योतिषमग्न ।। नौमें पांचे भृगु बसे तनु का चौथे मन्द । मृत्यु जावे बुध गुरु उदरे चिह्न भणंद ।

प्रसवकष्ट दूर—प्रसवकाल में पहले शुक्लपक्ष की चतुर्दशी को प्रातः सूर्योदय से पहले सहदेवी या अपामार्ग (पुठकंडा) की जड़ लाकर घृतयुक्त गुग्गल की धूनि देकर कटि में बांधे और साथ ही "ओंमुक्ताः पाशा विपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः । मुक्ताः सर्वभयाद् गर्भमेहि माचिर माचिर स्वाहा ।।" इस मंत्र से सात बार शुद्ध जल अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री को पिलावे तो सुख से शीघ्र प्रसव होगा । अगर तीस का यन्त्र भी अनार की कलम से कांसे की थाली में लिख धोकर पिला देवें तो गर्भिणी को कोई भय न होवे, बच्चा बिना कष्ट पैदा होवे । स्मरण रहे कि पहले उपरोक्त मन्त्र तथा तन्त्र ग्रहण के समय या दीपमाला की रात्रि को मन्त्र का जाप करके तथा यन्त्र को लिखकर चलता कर लेवें, तब कष्ट को मिटाता है ।

बालक के लिए अरिष्ट

दो०-द्यूनाष्टमतनु पाप खग, बरहे शशी जो खीन । कण्टक शुभ लगना असै, वेगि ताहि यमलीन ।
बसै चन्द्रा द्वादसै अष्ट भवन २ पाप । एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप ।।
लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्म समय जो पाप । एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप ।
लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्म समय जो पाव । बालक दशवासर जिये कहत बुद्धि गुण भाव ।।

अथ काणयोगा—तनु धन व्ययपतियुक्त भृगु आई बसे त्रिकधाम । वा शशि धन कवि पाप युत, ताहि नेत्र बेकाम । साकंशुक्र तनुनाथयुत भवन बसै त्रिक जाय । जन्म अन्ध यह योग है भाषत बुध समुदाय ।। तात मात भ्राता तनय मातुल त्रियाघर नाथ ।। चन्द्र भौम जो द्वादशे वाम नैन की हान ।। भानु राहु दहनो नयन, बुधजन कहत बखान ।।

मूकयोगा—पञ्चमेश गुरु युक्त त्रिक मूक बाल तब होय । जौन भौमपतियुक्त गुरु त्रिकहि मूक कहि सोय ।। शुक्र त्रिके गुर्सिंह अज, दशम भानु कुज वास । मूक होय संशय नहीं बुधजन करत प्रकाश ।

दुःखदयोगा—रिपु मृत्यु द्वादश गेह में पाप युक्त लग्नेश । जन्म समय जाके परे ताको अंग कलेश ।। पाप युक्त तनु भवन में रिपु मृ पुप के ईश । यथा जोग जाके परे तनु मुख विश्वावीस ।। पापग्रहयुत लग्नपति परै लग्न मे आय । वीर्य्यहीन नर होय तो अधिक व्याधि रुजताय ।।

बन्धनयोगा—क्रूर रहै धन नवम व्यय, और पञ्चम आगार । सो नर सूर कसूर करि निवसै कारागार ।।

सर्पवेष्टितयोगा—यदि अष्टमेश लग्न में राहु सहित हो तो बालक सर्पवेष्टित अर्थात् सर्प जैसे नाल से वेष्टित होता है ।

यमल जन्मयोगा—चतुष्पद राशि (मेष, वृष, सिंह, मकर का पूर्वार्द्ध और धन के उत्तरार्द्ध) में सूर्य हो, अन्य ग्रह बलवान् होकर द्विस्वभावराशि के लग्न में स्थित हों तो यमल अर्थात् दो बच्चों का इकट्ठा जन्म कहना । अथवा आधान लग्न (गर्भ वाले दिन का लग्न) का स्वामी लग्न में हो तो यमल का जन्म होता है ।

माता बच्चे को त्याग दे—शनि मंगल से ४।७।१० स्थान में चन्द्रमा हो तो माता

मृत्यु-समय-विचार—जिन अरिष्ट योगों में मरण काल नहीं कहा गया, उन अरिष्ट योगकारक ग्रहों में जो ग्रह बली हो, वह जन्मकाल में जिस राशि में स्थित हो उस राशि में जब चन्द्रमा आता है तब कहना। अथवा—जन्मकाल में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित हो जब फिर उसी राशि में चन्द्रमा आता है, तब मरण कहना। अथवा चन्द्रमा जब लग्न राशि में आता है, तब मरण कहना। अथवा, वर्ष के भीतर जब जिस योग युक्त स्थान में जाकर चन्द्रमा बली हो और पापग्रहों द्वारा देखा जाता हो, तब मरण कहना चाहिए। किन्तु जब तक आयु का विचार न हो सके तब तक अन्य विचार करना निरर्थक है, इस वास्ते आयु का प्रथम विचार कर फिर मृत्यु कहे।

सुखदयोगा:—अगधीश निज लग्न में बुध गुरु कवि के संग। या केन्द्र गृह २ परे तो जानो सुख संग ॥ जन्मलग्न में उच्च ग्रह जो काहू के होय। मित्र दृष्टि ता पर परे सर्व सुखी नर होय ॥

क्लीब (नपुंसक) योगा:—दशम भवन भृगु मन्द दोउ क्लीब योग तब जान। शुक्र भवन ते रिप्फ पट बसे विलग्न भानु ॥

कुष्ठयोगा:—लग्नप बुध कुज शशि युते राहु युक्त या केतु। श्वेत कुष्ठ को योग यह वरणत गुणी सचेतु ॥ भौम भास्कर मन्दयुत रक्तकृष्ण कह कुष्ठ। लग्नाधिप रविसाथ त्रिक तापगण्ड अति रुष्ट ॥ जलगण्डयुत चन्द जो ग्रन्थिगंडे कुज साथ। पित्त रोग तब जानियो बुध त्रिकयुत तनु नाथ ॥ आमरोग गुरुयुक्त त्रिक क्षयी रोग भगसून। यमतम शिखि वा युक्त त्रिक, दिन प्रति रुजि कहि दून।

केमद्रुम—आगे पीछे चन्द्र के जो न परे ग्रह कोय। केमद्रुम यह योग है सब धन डारे खोय ॥ उच्च चन्द्र शुभयुक्त दृग केन्द्रधाम में होय। तब केमद्रुम शुभ कहे दोष न मानो कोय ॥

स्त्रीजातक

क्रूरलग्नयुक्त क्रूर जो, स्वामी दृष्टि नहीं होय। सो कन्या कुल गरल है, भूलि न ब्याहेउ कोय ॥ जाके कुज दशमे बसे ऋणी होय पति तासु। लग्न राहु शनि सातवें पति जीवे नहीं जासु। क्रूर युक्त लग्नेश जो पापग्रहों के ..च। सो कन्या व्याभिचारिणी बुधवर कहे कुज नीच। राहु शुक्र जो लग्न में कन्या को पति और। पाप दृष्टि शनि सातवें कन्या वास कुठौर। लग्न बीच शनि कुज तमसि निर्धन स्वेच्छाचारि। सप्तम कुज राण्ड कहे पति को तज तमारि ॥ छठे आठवें चन्द्र जो क्रूर पर निज अङ्ग। भौम आठवें भवन में सो पति करै है भग ॥ राहु सातवें लग्न कुज कंटक शुभ सो ..न ताको पति जीवित रहे वर्ष दोय या तीन ॥ द्वादशाष्ट कुज क्रूरयुत राहु बसे त्रिकधाम। राण्ड होय कुछ दिवस में कहत गणक गुणग्राम ॥ पाप ग्रहों के बीच में लग्न होय वा चन्द। सो त्रिय नाशे कुल दुवो भाषत कविकुल वृन्द ॥ सप्तम भृगु जाके बसे सो कुल दोषी नारि। रूपवती तनु भृगु बसे बुधजन कहत विचारि ॥

वैधव्य विषकन्यायोगा:—चौ० रविवार द्वितीया जो होय। श्लेषा ताहि दिन में जोय ॥१॥ कृत्तिका होय शनिश्चर वार ॥ साते तिथि का करो विचार ॥२॥ होय शतभिषा मंगलवार। कहो द्वादशी तिथि निर्धार ॥३॥ इन योगन में कन्या होय। निश्चय विधवा जाने सोय ॥४॥ जन्मलग्न द्वै शुभग्रह होय। एक पापग्रह नभ १० में जोय ॥५॥ शत्रु क्षेत्र में द्वै ग्रह मानो। ता कन्या को विधवा जानो ॥६॥ अश्लेषा द्वितीया को होय ॥ मन्दवार गुन लीजो जोग ॥७॥ पर शतभिषा मंगलवार। साते तिथि लीजो निर्धार ॥८॥ रविवार द्वादशी जो होय। नक्षत्र विशाखा जानो होय ॥९॥ ऐसो योग लखी जो परे। तो कन्या को विधवा करे ॥१०॥ दो०—सदन में भूमिसुत जन्म सदन शनि जान। सूर्य होत सुत सदन में कन्या विधवा मान ॥११॥

वैधव्य विषकन्याभंगयोगा:—जन्मलग्न वा चन्द्र ते शुभग्रह सप्तम होय। अथवा सप्तम लग्नपति सुभगा कन्या होय ॥

काकवन्ध्यादियोग:—ज्ञे अष्टमे काकवन्ध्या। मन्दार्कविष्टमे वन्ध्या। अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा वा मृतापत्या ॥

स्त्रीणां राजयोगा:—चौपाई-केन्द्रधात नभगा शुभ होई। नरतनु पाय कलत्र समोई। रानी होय बहुत धन ताके। मन प्रसन्न होई है सुत वाके—चन्द्रज तुंग बसे तनु जाई। लाभ धन गुरु आवे धाई ॥ सो तिय होय नृपति की नारी। जन विख्यात होय सुकुमारी ॥ जो षट्वर्ग शुद्ध गुरु होई। शशि दृग केन्द्र भवन में होई ॥ ऐसे योग जन्म सुकुमारी ॥ रानी होय सदन धनभारी ॥ दोहा......कर्क चन्द्रमा सातवें जीव दृष्टि परिपूर। पुत्र पौत्र धन भूरि युत ताकों पति नृप शूर ॥ लाभ भवन सित चन्द्र जो सोमज सप्तम भौम। सुरगुरु परिपूर्ण लखे रानी होई है तौन ॥

स्त्रीणां पुत्रभावविचार:—पञ्चमे शुभदृष्टे च पञ्चमाधिपतावपि। केन्द्रकोणे तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत् ॥

अशुभ प्रसव मास—कार्तिक में स्त्री, भाद्रपद में गौ, मार्गशीर्ष में हथिनी, श्रावण में गधी वा घोड़ी, माघ में भैंस, ज्येष्ठ में बिल्ली, वैशाख में ऊंटनी, पौष में बकरी, चैत में कुतिया के बच्चे जन्में तो ६ मास में पिता वा घर वाले की मृत्यु अथवा महाभय होता है। माघ में बुधवार को भैंस, श्रावण में दिन में घोड़ी प्रसूति हो तो महाभय शीघ्र होवे। स्मरण रहे, कि यहां सर्वत्र सौरमास का ग्रहण है, प्रसूता गौ आदि का तत्क्षण दानकर व्याहृति मन्त्रों से घृतयुक्त श्वेत सरसों का हवन करे, बच्चा जन्मे तो कार्तिक शान्ति करने से शुभ है।

त्रिखलजन्म फल—यदि तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्रोत्पत्ति हो अथवा तीन पुत्रों के पश्चात् कन्या का जन्म हों तो त्रिखल नामक दोष के कारण कन्या माता को, लड़का पिता को भय, धनहानि आदि कष्ट होते हैं, कृपणता छोड़कर त्रिखल शांति करे तो शुभ होता है। तीन अन्न, तीन वस्त्र, तीन धातु (चांदी, सोना, तांबा) दान करे।

बालक की दन्तोत्पत्ति का फल

बालक के जन्मते ही दांत निकले हों तो माता-पिता, को अरिष्ट, ऊपर की पंक्ति में दांत से युक्त जन्मे तो अधिक अरिष्ट। प्रथम ऊपर की पंक्ति में दांत निकले तो मातृपक्ष को भय हो, मामा शान्ति करे। एक मास में दांत निकले तो शरीर नष्ट, द्वितीय में छोटा भ्राता नष्ट, तृतीय में भगिनी नष्ट, चतुर्थ में भाई नष्ट, पांचवें में ज्येष्ठ बन्धु नष्ट, छठे में बहुभोग, ७वें में पितृसुख, ८वें में पुष्टि, ९ में धनी, १० में सुख, ११वें में सुख, १२वें में धनी।

अथैकनक्षत्रजनन-फलम:—वृद्ध गर्ग कहते हैं कि यदि भ्राताओं वा पिता पुत्र माता वा कन्या का एक नक्षत्र हो तो दोनों की अथवा एक की अवश्य मृत्यु होती है। स्वर्णदान से कल्याण होता है।

जन्म-कुण्डली से विशेष विचार

लघु-भ्राता का जन्म समय जानना—(१) जन्मलग्न स्पष्ट में दशम भाव का स्पष्ट जो जोड़ें राशि हो उस पर जब गोचर में गुरु ग्रह आवे तो भाई या बहन का जन्म होता है।

(२) तृतीयेश तृतीयस्थग्रह तृतीयस्थ राशि की दशा में छोटे भ्राता का जन्म होता है यदि भ्रातृ-प्रतिबन्धक योग न हो तो।

भ्राता के कष्ट (खतरे) का समय जानना—(१) जन्मलग्न के स्पष्ट में से तृतीयेश के स्पष्ट को घटावे, शेष राश्यादि का जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र पर जब गोचर में शनि आता है तब भाई या बहन को कष्ट होता है।

(३) लग्नेश स्पष्ट में से तृतीयेश स्पष्ट घटावे, शेष में दशमेश स्पष्ट और मंगल-स्पष्ट घटावे—(यथा)—ल० तृ० शे०। शेष राशि में से जब गोचर का शनि आता है तब भ्रातृ कष्ट होता है।

(४) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश, भौम इन चारों स्पष्टों को जोड़ कर जो राश्यादि हो उसके नवांश राशि में जब गोचरस्थ शनि होता है उस काल में भ्रातृ-कष्ट होता है।

(५) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश और भौम को जोड़कर जो राश्यादि हो उसके द्रेष्काण राशि में जब गोचर का गुरु होता है, तब भ्रातृ कष्ट जानिये।

माता की मृत्यु का समय जानना—(१) जन्म के सूर्य स्पष्ट में से चन्द्रस्पष्ट को घटावे तो शेष के उस राशि में या त्रिकोण राशि में या उस शेष राशि के नवांश राशि में जब गोचर का शनि वा गुरु होगा तब माता की मृत्यु का समय जानना।

अथ कन्याजन्मनि मूलचक्रम्

शीर्षे	मुखे	कण्ठे	हृदये	बाह्वो	हस्तो	गुह्ये	जंघा	जान्वो	पादे	स्थानम्
४	६	५	५	५	४	६	४	४	१०	घटी
पशु ना	धन ना	धन ला	कुटिला	धनला.	दयावती	कामिनी	मातृना.	भ्रातृना.	वैधव्य	फलम्

कन्याजन्मनि नक्षत्रफलम्

जन्म नक्षत्र	मूल	आश्लेषा	ज्येष्ठा	विशाखा
फलम्	(१।२।३च.) श्वसुरहानि	(२।३।४च.) सास नाश	ज्येष्ठ नाश	(४च) देवर नाश

गुतः सुता वा नियतं श्वसुरं हन्ति मूलजः। तदन्त्यपादजो नैव तथा श्लेपाद्यपादजः।

तिथिगण्डान्त—पूर्णा तिथियों के अन्त की ७ घड़ी, नन्दा तिथियों की शुरू की दो-दो घड़ी तिथि गण्डान्त होता है। यह गण्डान्त जन्म यात्रा विवाह में भयप्रद होता है।

अथ गण्डमूल नक्षत्राणि

अश्विनी	आश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूल	रेवती

उपरोक्त ये ६ नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं, इन नक्षत्रों में उत्पन्न होने वाला बालक माता, पिता, कुल और अपने शरीर का नाश करने वाला होता है। यदि अपना शरीर [illegible]

गण्डमूल में उत्पन्न पुत्र के ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता को दर्शन नहीं करने चाहिए, तत्पश्चात् शान्ति करके विधि से मुख देखना कल्याणप्रद है।

मूल और आश्लेषा नक्षत्र के चरण जन्मफल

मूल पाद फल		आश्लेषा पाद फल	
चरण	फल	चरण	फल
१	पितृनाश	४	पितृनाश
२	मातृनाश	३	मातृनाश
३	धननाश	२	धननाश
४	शान्ति से सुख	१	शान्ति से सुख

मूलजनने वृक्षविभाग फलम्

मूल	स्तम्भ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्पे	फलम्	शिखा	विभाग
७	८	१०	११	१२	५	४	३	घटी
मूल नाश	वंश नाश	मातृ क्लेश	मातुल नाश	मन्त्री पदम्	मन्त्री पदम्	विपुल लाभ	अल्प जीव	फल

अथ मूलपुरुष चक्रम्

मूर्ध्नि	मुख	स्कन्धे	बाह्वो.	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्ये	जान्वो.	पाद	स्थान
५	७	४	८	४	६	२	१०	६	६	घटी
राजा	पि. मृ.	बली	बली	दानी	मन्त्री	ज्ञानी	कामी	मतिमा,	मतिमा,	फलम्

अथ मूलनिवासचक्रम्

जन्ममासानुसारेण	वै. ज्ये. मार्ग. फा.	चैत्र, श्रा. का. पौ.	आषा. आ. माघ. भा.
जन्मलग्नानुसारेण	२।५।८।११	३।६।६।१२	१।४।७।१
मूलनिवासस्थानम्	पाताले	भुमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाशः	शुभम्

मूल का निवास मास व लग्नानुसार दोनों प्रकार से भूमि पर आवे तो महाभयप्रद होता है एक प्रकार से स्वल्पभय होता है। तृतीया, दशमी, षष्ठी शनिभौमसमन्विता। शुक्ला चतुर्दशी मूले जातः संहरते कुलम्॥ यत्र गण्डे क्रूरयुते महादोषकरो भवेत्। शुभग्रहसमायोगे ईषच्छुभकरं भवेत्॥ दिनक्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टिवैधृतौ। शूले गंडातिगंडे च परिघे यमघण्टके॥ ब्रह्मदण्डे मृत्युयोगे प्राप्ते गंडदिने शिशुः। जातो हन्ति कुलं सर्वं तस्मात् कुर्वीत शान्तिकम्॥

यथा सर्पविषश्चैव मन्त्रश्रवणाद्विलीयते। तथैव गंडदोषोऽपि विधानेन विलीयते॥ रत्नैः शतौषधीमूलैः सप्तमृद्भिः प्रपूर्यते। शतच्छिद्रं घटं तस्मान्निःसृतेन जलेन हि॥ [illegible] शान्त। [illegible] प्रदानेन कृत्वा स्नानमाचरेत् प्रातम्॥ विरुद्धावयवे मूले विधिरेव स्मृतो बुधैः। मुनीनां वचनं सत्यं मन्तव्यं क्षेममीप्सुभिः॥

अथाभुक्तमूलविचार:—ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम चार घटी, किसी के मत से एक [illegible]

समय में जो बच्चा जन्म ले उसका परित्याग करदे या आठ वर्ष, असमर्थ हो तो ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता मुख न देखे । धनगंडे दरिद्रोऽपि शान्तिं कुर्यात्स्वशक्तितः । अन्यथा नाशमाप्नोति चाभुक्तर्क्षे विशेषतः ॥

गण्डमूलात्पन्न बालक का जन्मकाल फल

दिन में	रात्रि में	सन्ध्या	प्रातः	समय
मू० ज्ये० पिता को भय	मू० श्ले० माता को भय	रे० अश्वि० शरीर भय	पशु हानि	फल

अश्विनीजातस्य फलम्—अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता को भय, द्वितीय में सुखैश्वर्य, तृतीय में मन्त्री तुल्य, चतुर्थ में नृपति समान होता है।

मघाफलम्—मघा के प्रथम चरण में जन्म हो तो माता या मातृपक्ष को हानि, दूसरे में पिता को भय, तीसरे में सुख, चतुर्थ चरण में धन विद्या लाभ होवे।

ज्येष्ठापाद फलम्—प्रथम चरण में बड़े भाई को नेष्ट, द्वितीय में छोटे का नाश, तृतीय में माता का नाश, चतुर्थ में अपने बाप का नाश होता है। ज्येष्ठांत्यपादजो ज्येष्ठं हन्ति बालो न बालिका। न बालिका तु मूलर्क्षे मातरं पितरं तथा।

रेवतीपाद फलम्—रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो नृप समान दूसरे में मन्त्री या मुख्तार, तीसरे में सुख सम्पत्तियुक्त, चतुर्थ चरण में अनेक कष्ट हों।

अथ पुरुष जन्मकुण्डल्यां भावस्थ-ग्रह-फलानि

भावः	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु १	सिरअंगपीड़ा	कान्तिसुख	रक्तकोप	सुखी	विद्वान्	सुखी	दुःखी	रोगी	सकाम
धन २	धननाश	सम्पतिवान्	ऋणी	धनी गुणी	धनागम	धनी	धनहानि	निर्धन	खल
सहज ३	नीरोगी	कीर्तिमान्	विक्रमी	अरिमर्दन	पापी	पापी	पराक्रमी	विक्रमी	शूर
सुहृत् ४	दुःखी	सुखभोगी	दुःखी	सुखी	सुखी	सुखी	दुःखी	मातृहा	दुःखी
सुत ५	सुतहानि	धनी पुत्रवान्	पुत्रहीन	अल्पपुत्र	प्रतापी	धीमान	पुत्रहीन	कुमति	मूर्ख
शत्रु ६	शत्रुनाश	अल्पायु	शत्रुनाश	रोगी	कामी	रोगी	शत्रुजित्	सबल	सबल
स्त्री ७	स्त्रीदुष्टा	सुभार्यावान्	स्त्रीनाश	धर्मज्ञ	सुभार्या	कामी	स्त्रीकुलटा	स्त्रीरोगी	स्त्रीहा
मृत्यु ८	अल्पायु	यागी	शरीरपी	गुणी	नीचस्व	नीच	नेत्ररोगी	रोगी	क्लेशयुक्त
धर्म ९	दुष्टमति	धर्मात्मा	पापरत	सुखी	धार्मिक	तपस्वी	दुष्टबुद्धि	दैन्ययुक्त	पापी
कर्म १०	शूर	तेजयुत	तेजस्वी	कीर्तिमान्	संपत्तिमान्	संपत्ति	पराक्रमी	मानी	पितृहानि
लाभ ११	धनी	धनी	धनी	धनी	सुलाभ	सुमति	धनवान	सुख्यात	धनी
व्यय १२	दुष्टस्वभाव	कामी	पतितदारहृदरिद्री		खल	रोगी	दुःखी	पतित	दुर्जन

अथ स्त्रीजन्मकुण्डल्यां भावस्थग्रहफलानि

भावः	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु १	क्रोधिनी	गतायुः	विधवा	सौभाग्या	सती	ससुखा	वन्ध्या	पुत्रहीना	दुःखिनी
धन २	दरिद्रा	बहुधन	वन्ध्या	धनाढ्या	धनाढ्या	सुभगा	दुःखिनी	दरिद्रा	दुःखार्त्ता
सहज ३	सुसुता	सुखिनी	विसहजा	पुत्रवती	सुसहजा	धनाढ्या	सुदक्षा	सवित्ता	रोगिणी
सुहृत् ४	[illegible]	दुर्भगा	दुःखार्त्ता	सुगृहा	सुखिनी	सुखिनी	हृद्रोगा	रोगार्त्ता	मातृहा
सुत ५	विपुत्रा	ससुखा	विपुत्रा	धीकांतियुक्ता	सगुणा	पुत्रवती	विपुत्रा	विपुत्रा	अपुत्रा
शत्रु ६	सुखिनी	सरोगा	अरोगा	सकोपा	सापदा	दरिद्रा	गुणज्ञा	सधना	धनयुता
पति ७	दुःखार्ता	पतिप्रिया	विधवा	पतिव्रता	कीर्तियुता	पतिप्रिया	विधवा	दुःखिता	विधवा
मृत्यु ८	विधवा	रोगिणी	विधर्मा	कृतघ्ना	सरोगा	विसुखा	दुःखिनी	विधवा	दुःखिनी
धर्म ९	धर्मज्ञा	सुखिनी	दुःखिनी	सुभोगा	पुत्राढ्या	धर्मरता	वन्ध्या	वन्ध्या	शोकयुक्त
कर्म १०	सुकर्मा	धर्मज्ञा	कुपुत्रा	सत्कर्मा	साध्वी	साधना	पापिनी	दुष्कर्मा	पापिनी
लाभ ११	सधना	गुणज्ञा	सलाभा	पतिव्रता	सुपुत्रा	सुपुत्रा	सुलाभा	नीरोगा	सुभगा
व्यय १२	क्रोधिनी	हीनांगी	खला	कृशांगी	सुव्यया	सुव्यया	मूढा	दुष्टा	रोगिणी

अथ मातृसुखनाश योगाः—(१) पापग्रह युक्त चन्द्रमा सातवें भाव में होवे, (२) चन्द्रमा से सातवें पापयुक्त शुक्र होवे, (३) पाप ग्रहों के बीच चन्द्रमा हो अथवा चन्द्रमा से चौथे सातवें पापग्रह हों, (४) तीसरे अथवा सातवें स्थान में सूर्य होवे और लग्न में मंगल होवे, (५) चौथे भाव में शनि पापग्रहों से ही दृष्ट हो, इन पांचों में से एक भी योग मिले तो माता को भय हो, जप दान करना चाहिए।

पितृनाश योगाः—(१) सूर्य मंगल दशवें वा नवमे गये हो (२) दशमेश रवि मंगल से युक्त हो, (३) शत्रु राशि का मंगल १०वें हो, (४) पापग्रह से युक्त सूर्य सातवें हो, इन चार योगों में से एक भी योग हो तो पिता को भय हो।

भ्रातृनाश योगाः—भ्रातृ ग्रह को ईश जो भौम संगत्रिक होय।
जाके ऐसे योग है भ्रातृहीन नर होय॥

सन्तानसुख नाशयोगाः—गुरु ते पञ्चम गेह पति, जाय परे त्रिक भाव। ऐसा यो जो लखि परे, ताके पुत्र अभाव। पुत्र धर्म अरु लग्नपति जाय परे, त्रिक थान। जन्म समय या योग ते सदा पुत्र की हान।

रोगिणी स्त्रीयोगाः—शुक्र और सूर्य सप्तम, पंचम और नवम में हों तो उसकी स्त्री प्रायः रोगयुक्त रहती है।

नीचयोगा :—सहज सप्तम धन सदन में क्रूर बसे खग आई। भवन पांचवें गुरु बसै नीच जाति मनसाई॥ सिंह लग्न जन्मे शिशु सप्तम शनि विकराल। म्लेच्छ होय कुछ दिवस में यदपि ब्रह्म को बाल। जिनके बुध भग राहु संग सप्तम भाव विराज। लहे सर्वदा राजसुख होवे वेश्यावाज।

जारज योगाः—भानुचन्द्रतनु ना लखै लग्नप लखै न लग्न। सो शिशु है परपुरुष को भाषत ज्योतिषमग्न॥ रवि कुज गुरु तिथि अष्टमी चौथ चतुर्दशी सार। तीन उत्तर जन्म में तब शिशु कहो परार॥

गोचर-ग्रहाणां द्वादशभाव-फल बोध-चक्रम्

ग्रह.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	स्थानना.	भय	श्री:	मानभंग	दैन्य	विजय:	मार्ग:	पीड़ा	सुखना.	सिद्धि:	धनलाभ	द्रव्यना.
चन्द्रः	अन्नला:	धननाश	सुख	रोग:	कार्यनाश	धनला.	स्त्रीला.	रोग:	धर्मना.	सौख्यं	धनलाभ	धनना.
भौमः	शत्रुभी:	धननाश	धनलाभ	शत्रुभी:	धननाश	धनला.	द्रव्यना.	शत्रुभी.	शत्रुभी.	शोक:	धनलाभ	धनना.
बुधः	बन्धन	धनलाभ	शत्रुभी.	पशुलाभ	सुखं	स्थानला	पीड़ा	धनला.	पीड़ा	सौख्यं	धनलाभ	धनना.
गुरुः	भय	धनलाभ	क्लेश	धननाश:	सुख	शोक:	राजमान	पीड़ा	सौख्य	दैन्यं	धनलाभ	पीड़ा
शुक्रः	शत्रुना.	धनलाभ	सौख्यं	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुभी.	शोक;	धनला.	वस्त्रला.	दुःख	धनलाभ	धनला.
शनिः	भय	धननाश	ऐश्वर्य	शत्रुभी:	पुत्रनाश:	धनला.	दोष:	पीड़ा	धर्मना.	दौर्मन:	धनलाभ	धनना.
राहु:	हानि:	धननाश	धनलाभ	वैर	शोक:	श्री:	कलह:	मृत्यु	दुःख	वैर	सुख	शोक:
केतु:	रोग.	वैर	सुख	भय	सुखं	धनला.	कलह:	रोग:	पाप	शोक:	कीर्ति:	शत्रुभी.

उपरोक्त गोचर फल जन्म राशि या जन्मलग्न के अंश आदि से लेकर अग्रिम राशिके उतने अंश तक प्रथम भाव एवं द्वादश भावों के अंशो पर कल्पना करने से अधिक मिलता है। केवल राशि से फल में अधिक अन्तर रहता है।

अथ ग्रहाणामेकभे भोगफल-समयादि ज्ञानम्

सू.	च.	म.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा के	ग्रहा
मा.१	दि. २।	मा १॥	मा १	मा १२	मा. १	मा ३०	मा १८	एकार्थभोग
आदौ.	अन्ते	आदौ	सदा	मध्ये	मध्ये	अन्ते	अन्ते	फलसमय:
दि. ५	घ. ३	दि. ८	दि. ७	मा. १	दि. ७	मा. ६	मा. ६	गंतव्यराशेः प्राक्फलम्

अथ ग्रहतुष्ट्यर्थं धारणाय मणय:

सू.	चं.	मं	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
माणिक्यम	मुक्ताफलम	प्रवाल:	पन्ना	मं पुष्पराग	हीरा	नीलम	गोमेदम	रौप्यम
विद्रुमम	रौप्यम	विद्रुमम	सुवर्णम	मुक्ताफल	लोहम	वैडूर्यम	राजवर्त:	राजवर्त:

पूतनाग्रसित लक्षण एवं शान्ति

बहुत मैले बिछौने पर अकेली जगह में छोटे बच्चे को सुला देने से पूतना नाम राक्षसी का उसमें प्रवेश होने से **बच्चा बीमार** हो जाता है। तब पूतना की बलि निकालने **से अच्छा होता है। जब कभी बच्चा बैठे २ गिर पड़े, या यों** मालूम हो कि किसी के पीटने से गिरा है और मूर्छा आ गई है अथवा एकाएक कोई रोग हो गया है तब जानो, कि उसे महापूतना ने ग्रसा है। यदि कोई लोभादि के वश में आकर वनदेवता या नगरदेवता का तिरस्कार कर दे तो उसके बालक में ऊर्ध्वपूतना प्रवेश कर लेती है। यदि कोई मनुष्य अपनी ऋतुस्नाता स्त्री का गमन करने के पश्चात स्नान न करे या बिना ऋतु के संगम करके हाथ मुंह न धोवे और माता अपवित्रता में ही बालक के साथ सो जावे तो बालकान्ता नाम की राक्षसी का दोष होगा। बच्चे को इतर फुलेल और फूल माला पहिना कर बाहर जाने से रेवती ग्रही का दोष होता है। गिर पड़े जूठे बालक को संध्या के समय सोने से भी रेवती का आवेश हो जाता है। संध्या के समय जमीन पर सोने से अथवा खेलने से बालक को पुष्प रेवती का दोष होता है। कदाचित् बालक खेलता २ गिर जाय अथवा उसे उल्टी हो या हाथ-पांव नहीं धुले हों तब उसे शुष्क रेवती का आवेश होता है। जूठा खाने और देवता के स्थान पर मलमूत्र करने से शकुनी ग्रही बालक को पकड़ लेती है। जो नित्य कर्म संध्या वंदनादि नहीं करते या जो लोग पक्षियों को पालते हैं जन्मान्तर में उनके बालकों पर शिशुपुष्टिका राक्षसी का दोष हो जाता है। फिर उसका पूजन और बलि धूपादि दान करने से शान्ति होती है।

चेष्टा— जिस बालक के नखों और दांतों में विकार हो, नींद नहीं आवे, डर लगे, मन को उद्वेग रहे, शरीर में दुर्गंध उठे, अनेक प्रकार की चेष्टा करे, बल अधिक हो जावे, उसे ग्रहाविष्ट जानना।

उद्वर्तनम्—दूर्वा, कुटकी, नीम के पत्ते, तज, इनका उबटना बालक के शरीर में मलकर पीछे पीपल के पत्ते मुलहठी, लसूड़े के पत्ते इनका काढ़ा बनाकर स्नान करावे ग्रह रोग दूर होगा।

सर्वबालग्रहशान्त्यर्थं देवालये ज्योतिर्दान निवासश्च तत्र रात्रौ—ॐ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्। सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव ॥ इत्यस्य जप: ततोऽनेनेव मन्त्रेण सदीपदधिमाषान्नबलिदाने घण्टाबन्धने च सर्वबालग्रहशान्ति: ॥

अथ बाल रक्षा विधि (प्रयोगसारे)

यदि दुष्ट दृष्टि (नजरादिदोषों) के कारण बालक के शरीर मे कोई रोग कष्ट हो जाय तो—ॐ वासुदेवो जगन्नाथ: पूतनातर्जनो हरि:। रक्षतु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ॥१॥ कृष्ण ! रक्ष शिशु शङ्ख मधुकैटभ-मर्दन:। प्रातः सङ्गव मध्याह्ने सायाह्ने सुच सन्ध्ययो: ॥२॥ महानिशि सदा रक्ष कंसारिष्ट निषूदन:। यद्गोरज: पिशाचांश्च ग्रहान् मातृग्रहानपि ॥३॥ बालग्रहान्विशेषेण छिन्धि छिन्धि. महाभयान। त्राहि त्राहि हरेनित्यं त्वद्रक्षाभूषितं शिशुम् ॥४॥

इन चार मंत्रों से अभिमंत्रित हुई गौ के गोबर की शुद्ध भस्म को बालक के मस्तक, कण्ठ, हृदयादि अंगों में लगाने से बालक का कष्ट दूर होगा।

अथ बाल पूतना विधान—आगे लिखे बाल कष्टावली चक्रोक्त हर एक बलिदान के पीछे मार्जन शिखास्थानं-स्पर्श निम्न-लिखित मन्त्रों द्वारा एक ही प्रकार से होता है, बलिदान विधि तीन दिन निरन्तर करें। चौथे दिन पलास, अश्वत्थ, विल्व, गूलर, मिल सके तो कपित्थ, इनके पत्रों को उबाल कर बालक को मन्त्र पाठपूर्वक स्नान कराना तदन्तर कल्याणार्थ यथा शक्ति भिक्षुकों तथा कुत्ते आदि जीवों को मिष्ठान्न भोजन कराना ॥ तदनन्तर ओं द्यौशांतिरन्तरिक्ष ~ इत्यादि शांति मन्त्रों व मार्जन व मन्त्रों से कुशा से छींटे देने के अनन्तर बालक की शिखा या शिखा-स्थान-स्पर्श पूर्वक यह मन्त्र पढ़े—ओं रक्ष रक्ष महादेव नीलग्रीव जटाधर ! ग्रहस्तु सहितो रक्ष मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ॥ ओं सर्वमातर. इमं ग्रहं सहरतु हुं रादयर स्फोटय २ स्वाहा। गर्जं २ सं २ गृह्ण २ भ्रामदंय २, हिम २, हवः एव सिद्धि रुद्रो शापय स्वाँहा ॥ इति रक्षा मन्त्रः ॥

बाल कष्टावली चक्रम्

किस समय कौन पूतना ग्रस्त करती है ?	मूर्ति निमणार्थ द्रव्य	पूजन द्रव्य	बलि विधान व समय	स्नान पूजा मार्जन मन्त्र	धूप
प्रथम दिन मास वर्ष में योगिनी	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेत चन्दन तिलक, श्वेत पुष्प, ५ रंग की झंडी ५, ५ दीपक, ५ आटे के सतिये, कपूर, लोहवान	श्वेत भात, ५ पूर्ण पोली (सुहाली) १ प्रहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरास्ते पर रखना।	ओं ब्रह्माविष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दी वै श्रवणस्तथा। रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।	राई, खस, आक के फूल, बिल्ली और मनुष्य के बाल, निम्ब-पत्र, गोघृत
द्वितीय दिन मास वर्ष में सुनन्दना	एक सेर चावलों का आटा	१० दीपक, १० झण्डी, पुष्प चावलों के आटे के सतिये १०	भात एक सेर आटे के पूड़े मत्स्य व बकरे का मांस, संध्या समय पश्चिम दिशा में चौरास्ते पर रखना।	ओं नमस्नागुण्डाये विघ्ने ह्रांह्रां ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रूं दुष्टाग्रहा गच्छ-न्त्वितः स्थानाद्राज्ञया स्वाहा	
तृतीय दिन मास वर्ष में पूतना	एक सेर चावलों का आटा	रक्त चन्दन, रक्त पुष्प, श्वेत ध्वजा, दीपक १०, गेहूं के आटे के सतिये १०।	एक सेर लाल भात, आधे सेर पूर्ण पोली, (सुहाली) पश्चिम दिशा में किसी वृक्ष के नीचे।	सुनन्दना विधानोक्त	लसुन, गोशृंग, सांप की कांचली, नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के बाल गोघृत
चतुर्थ दिन मास वर्ष में मुख मंडिका	तिल-चूर्ण एक सेर	श्वेत पुष्प श्वेत ध्वजा ५, दीपक, मिल सके तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प	भात, सेर आटे के पूड़े आध सेर पूर्ण पोली, सायं, पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे।	सुनन्दना विधानोक्त	
पञ्चम दिन मास वर्ष में, बिडालिका	एक सेर चावलों का आटा	श्वेत चन्दन, श्वेत पुष्प, दीपक ५, श्वेत ध्वजा ५, गेहूं के आटे के सतिये।	श्वेत भात, ७ पूड़िया, सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे	ओं भगवती ह्रींह्रीं ह्रूं ह्रूं मुञ्च रक्षां कुरु कुरु बलि गृह्ण गृह्णअस्त्र ठःठः चामुंडे सर्वीर चण्डिकेठःठः	
षष्ठ दिन मास वर्ष में, बट्कारिका	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	श्वेत चन्दन, श्वेत पुष्प, दीपक ५, श्वेत ध्वजा ५।	भात, ५ मिठाई, ५ सुहाली, ७पूड़ियां, १ प्रहर दिनचढ़े पूर्व में चौरास्ते पर	स्वाहा। योगिनी विधानोक्त	
सप्तम दिन मास वर्ष में कालिका	चावलों का आटा एक सेर	श्वेत चन्दन, श्वेत पुष्प, दीपक ५, श्वेत ध्वजा ५।	भात, ७ पूड़ियां सायं काल पश्चिम में चौरास्ते पर मौन होकर	बिडालिका विधानोक्त	कूट, गुग्गुल, राई, हाथीदांत, घृत।
अष्टम दिन मास वर्ष में कामिनी	जल के दोनों किनारों की मिट्टी	रक्त चन्दन ५, रंग की झण्डी ५ दीपक ५।	गेहूं की रोटी, मसूर की दाल, हरा साग छाग मांस संध्या में चौरास्ते पर	बिडालिका विधानोक्त	
नवम दिन मास वर्ष में, मदना	एक सेर गेहूं का आटा	चन्दन, पुष्प ५ दीपक, ५ रंग की झण्डी ५।	भात, मत्स्य मांस, पापड़ी, सुहाली उत्तर में प्रातः चौरास्ते पर	ओं नमो भगवतेवासुदेवाय कृष्णाय मंडल बलिमादाय हन२ हुंफट्स्वाहा	
दशम दिन मास वर्ष में, रेवती	एक सेर गेहूं का आटा	रक्त पुष्प, २५ झण्डी, २५ दीपक, २५ सतिये।	गुड़ के घी भुने चावल, गो घृत, सायं, दक्षिण में चौरास्ते पर	ओं नमो भगवते वैश्वदेवाय हन हु फट् स्वाहा	गोशृंग, लसुन, सांप की कांचली, निम्बपत्र, मनुष्य और बिल्ली के बाल, राई, गोघृत
एकादश दिन मास वर्ष में, सुदंशना	काले उड़दों का आटा एक सेर	श्वेत पुष्प, २५ दीपक, २५ सफेद झण्डी, २५ आटे के सतिये।	श्वेत भात, ७ पूड़े, सुहाली ७, सायं व प्रातः दक्षिण में चौरास्ते पर	ओं नमो भगवते रावणाय चन्द्र हास वज्र हस्ताय ज्वल २ दुष्ट ग्रहादीन् ओं ह्री फट् स्वाहा	
द्वादश दिन मास वर्ष में, अद्भुता	चावलों का आटा एक सेर	१३ दीपक, १३ झण्डी, १३ सतिये आटे के।	सुहाली, पूड़े ७, पूड़ियां ७, मत्स्य मांस, पापड़ी, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर।	ओं नमो नारायणाय ज्वलद्धरताय हन हन शोषय २ मर्दय २ तापय२ हुं३ हन २ दुष्टानां ह्रांह्रं स्वाहा	

अथ नक्षत्र-कष्टावली

रोग नक्षत्र	रोगशांत्यर्थं दान	नक्षत्रपादवशाद् रोग दिनसंख्या १च	२च	३च	४च	रोगशांत्यर्थं जपनीयमन्त्राः	रोगनिवृत्यर्थं बलि
अश्विनी	भोजनदानम्	९	११	१	२०	मृत्युञ्जयमन्त्र जपः	घोड़ी के मुख में सात व्रीही धान्य देवे ।
भरणी	गो-अन्नदिदान	०	८०	४०	११	यमायतवेति मन्त्रः	हाथी के मुख में तिल चावल
कृत्तिका	स्वर्णदानम्	९	११	१६	२७	अग्निर्मर्धेति मन्त्रः	कछुए के मुख में घी दें
रोहिणी	घृतदानम्	३	९	१८	३०	ब्रह्मयेति मन्त्रः	सर्प को दूड़ दही खिलावे
मृगशिरा	तिलदानम्	९	५	७	१०	इमं देवेति मन्त्रः	खरगोश को दूध पिलावे
आर्द्रा	गोदान	०	१८	०	०	नमस्ते रुद्रइति मन्त्रः	बकरी के मुख में रक्त डालें
पुनर्वसु	पीतलदानमं	७	१४	२	२१	अदितिर्द्यौ रितिमन्त्रः	सूअर को धान्य खिलावे
पुष्य	तैलान्नदानम्	६	७	१०	२१	बृहस्पतेति मन्त्रः	बकरे के मुख में दही डाले
आश्लेषा	गोऽजादिदानम्	०	०	४१	०	नमोऽस्तुसर्पेति मन्त्रः	बिलाव को दूध पिलावे
मघा	वस्त्राज्यदानम्	१५	७	१७	२०	पितृभ्य इति मन्त्रः	बन्दर को तिल उड़द खिलावे
पू. फा.	भोजनदानम्	०	१५	०	३०	भगप्रणेति मन्त्रः	ऊंट के मुख में शहद दे
उ. फा.	अन्नदानम्	७	१४	७	६०	दध्याक्रेति मन्त्रः	गाय को शाक खिलावे
हस्त	तैलदानम्	१५	१७	१५	०	उदुत्यंजातवेदेति मन्त्रः	भैंसे को कमल के फूल खिलावे
चित्रा	दुग्धदानम्	११	९	९	१६	त्वष्टा तुरीगति मन्त्रः	बाघ के लिए तगर व धतूरे के फूल वन में रखे
स्वाती	गोघृतदानम्	६०	१७	३०	०	वायोरग्नेति मन्त्रः	भैंसे को गुड़ चावल खिलावे
विशाखा	गोस्वर्णदानम्	१५	०	४	१३	इंद्राग्नी इति मन्त्रः	बाघ के मुख में गुड़ भात की बलि दे
अनुराधा	गोघृतदानम्	६०	१२	३६	३०	नमोमित्रेति मन्त्रः	बकरे को कुलथी सहित भात गुड़ दे
ज्येष्ठा	तिलदानम्	६९	९	६	४	त्रातारमिन्द्रमितिमन्त्रः	बन्दरों को गुड़ तिल डाले
मूल	रोप्यपात्रदा	०	९	१५	६	मातापुत्रेति मन्त्रः	बिलाव को दूध पिलावे
पू. षा.	गोमुक्तादानम्	०	१५	२४	१०	आपो धर्मेति मन्त्रः	कछुए के मुख में नागरमोते की बलि दे
उ. षा.	भोजनदानम्	३०	२४	२६	१६	विश्वेदेवेति मन्त्रः	गौ को धान्य डाले
श्रवण	श्रीफलदानम्	६०	२४	६	९	विष्णोररा. मन्त्रः	भैंसे के मुख में रक्त मीठा की बलि दे
धनिष्ठा	अश्वान्नदानम्	१५	४	२०	२१	वसोःपवित्रेति मन्त्रः	मनुष्य के मुख में दही अन्न की बलि दे
शतभिषा	भोजनान्नदानम्	४	४५	३	२२	वरणस्तम्भेति मन्त्रः	गौ को चावल खिलावे
पू. भा.	भोजनदानम्	०	१२	२१	१९	अहिर्बुध्न्येति मन्त्रः	कौए के मुख में फल की बलि दे
उ. भा.	अन्नदानम्	१०	३	९	१५	अहिर्बुध्न्येति मन्त्रः	गाय को चावल खिलावे
रेवती	फल दा. कन्यापू.	१८	१०	९	२०	पूषन्तवेति मन्त्रः	हाथी के मुख में पूरी-पूओं की बलि दे

जिस नक्षत्र में रोग पैदा हुआ है उसे यहां कष्टावली में 'रोग नक्षत्र' का नाम दिया है। रोग नक्षत्र को जानकर इन कोष्ठकों में लिखा उपाय एवं यथाशक्ति दान करने से रोग शान्त होगा। 'रोग निवृत्यर्थं बलिदान'—वाले कालम में घोड़ी हाथी आदि के मुख में बलि देने के लिए लिखा है, वह गेहूं के आटे की वैसी ही आकृति बनाकर (मन में हाथी आदि की धारणा करके) उसके मुख में बलीद्रव्य देकर धूप-दीपादि करके आटे की आकृति को जल में प्रवाहित कर दें—ऐसा तीन दिन करें। साथ ही दान और जप भी करें।

ज्वालामुखी योग

तिथि	१	५	६	९	१०
नक्षत्र	मूल	भ.	कृ.	रो.	श्लेषा

जन्मै सो जीवै नहीं बसै जो उजड़ जाय। चूड़ा पहिरे कामिनी चटपट विधवा होय। गये गए ना बहुरे कूए नीर सुकाय।

पुत्रोत्पत्ति का समय जानना—(१) जन्मलग्नेश व पुत्रेश के स्पष्ट को जोड़े। योगफल के राश्यादि और नवांश की राशि में या इन दोनों के त्रिकोण राशि में जब गोचर का गुरु होता है तब सन्तान उत्पन्न होती है।

(२) चं० ल० गु० इन तीनों से पंचम स्थानेश या नवमस्थानेश को, दशान्तर्दशा में सन्तानोत्पत्ति होती है।

विवाह स्त्रीसुख होने का समय जानना—(१) जन्म लग्नेश सप्तमेश को जोड़कर जो राशि हो उस राशि में जब गोचर का गुरु हो तब विवाह होता है।

(२) चन्द्र राशीश और अष्टमेश को जोड़े उस राशि में जब गोचर का गुरु आवे तब विवाह होता है।

(३) लग्नेश का नवांशेश जिस राशि में उस राशि से द्वितीय भाव में जब गोचर व गुरु चन्द्र होते तब विवाह होता है।

(४) सा० चं० सप्तमेश की दशान्तर्दशा में विवाह होता है।

पिता के खतरे का समय जानना—(१) गुलिक स्पष्ट से सूर्य-स्पष्ट घटावें, शेष राशि के त्रिकोण में जब गोचर का शनि हो तब पिता की मृत्यु होती है।

(२) सूर्य से १।२।७।१२ भाव में जो पापग्रह हो तो उस की दशान्तर्दशा में पिता की मृत्यु होती है।

नोट—

इस कष्टावली में प्रत्येक नक्षत्र का जपनीय मन्त्र पृथक् पृथक् लिखा है वह न कर सके तो महामृत्युञ्जय ही करे। जिस नक्षत्र के जिस चरण में पहले रोग उत्पन्न हुआ है उस चरणानुसार कष्ट दिन जाने, शून्य से विशेष भय जाने, दान जप करे।

रोगोत्पत्तौ कुयोगाः

(१) रोग के शुरु दिन में जन्मराशि नक्षत्र लग्न में या राशि व लग्न से आठवें चन्द्र वा यमघंट कुयोग हो।

(२) सूर्यवार को मघा, द्वादशी या भरणी अनुराधा नक्षत्र हो।

(३) सोमवार को आर्द्रा या उत्तराषाढा नक्षत्र हो।

(४) मंगलवार को कृ. मघा व शतभिषा या नन्दा (१।६।११) हो।

(५) बुधवार को अश्विनी व विशाखा या भद्रा (२।७।१२) आश्ले. हो।

(६) गुरुवार छठ व शतभिषा या ज्येष्ठा व मृग. या जया (३।८।१३) व मघा हस्त हो।

(७) शुक्रवार अष्टमी व अश्विनी या आश्लेषा श्रवण या रिक्ता ४।६।१४ आर्द्रा या धनिष्ठा हो।

(८) शनिवार को नवमी व पू.षा. या हस्त व पू.भा. या पूर्णा (५।१०।१५) व भरणी हो।

(९) सूर्य मंगल शनिवारों को ४।६।६।१२।१४।३० तिथि, भरणी कृत्ति. आर्द्रा आश्ले. पूर्वा ३ विशा. ज्ये. धनि. शत. नक्षत्र हो तो मृत्युतुल्य कष्ट होता है।

परन्तु जन्मपत्र में मारकेश का और भी विचार कर लेना। क्योंकि बिना मारकेश आये मृत्यु तो होती ही नहीं हां, ऐसे योग में कष्ट जरूर मृत्युतुल्य होता है। उपरोक्त योगों में से किसी भी एक योग में रोगारम्भ होते ही तुला दान, गोदान तथा मृत्युञ्जय जप करना कल्याणप्रद है।

अथ रोगत्रिनाड़ीचक्रम्

आर्द्रा	पू.फा.	उ.फा.	अनु.	ज्ये.	धनि.	शत.	भर.	कृ.	प्रथमा
पुन.	मघा	हस्त	विशा.	मूल.	श्रवण	पू.भा.	अश्वि	रो	मध्या
पुष्य	आश्ले	चित्रा	स्वा	पूषा	उ.षा.	उ.भा.	रेव.	मृ.	अन्त्या

सूर्य नक्षत्र दिन नक्षत्र और जन्म नक्षत्र व नाम नक्षत्र 'रोगत्रिनाड़ीचक्र' में एक ही नाड़ी पर हों तो असाध्य रोगी का मरण होता है, मरने को हो तो प्रतिदिन देखने से जिस दिन यह योग मिले उसी दिन निःसंदेह रोगी की मृत्यु कहे। यह रोग-त्रिनाड़ीचक्र यात्रा तथा रण के समय भी वर्जित करना।

कालस्य मुखदंष्ट्रा ज्ञानम्

दिन नक्षत्र से नाम नक्षत्र ५।१३।२३ संख्या का हो तो काल का मुख होता है और उसी प्रकार १०—१८वां, नक्षत्र दंष्ट्रा (दादढ़ा) होती है। काल के मुख दाढ़ में जिस दिन गोचर में नक्षत्र प्राप्त हो उस दिन अत्यन्त रोगग्रस्त पुरुष की मृत्यु पर्यन्त हालत होती है। रोग पर, सर्पादि दर्शन पर, विग्रह-युद्ध में जाने पर काल के मुख दंष्ट्रा में नक्षत्र हो तो अशुभ होता है।

तिथिकष्टावली यन्त्रम्

ति.	तिथीश	कष्टदि	बलि	दान
१	अग्नि	१२	शर्कराज्यबलि	घृतनदान
२	ब्रह्मा	५	पायसबलि	भोजनदान
३	काम	७	घृतान्नबलि	रक्तवस्त्रदान
४	गणेश	१६	मोदकान्नबलि	मूंगादान
५	सर्प	२१	पायसबलि	दुग्धदान
६	स्कन्द	१२	मोदकान्नबलि	चित्रवस्त्रदान
७	सूर्य	८	पायसबलि	ताम्रपात्रदान
८	ईश्वर	१३	नानाभक्ष्यबलि	पीतवस्त्रदान
९	दुर्गा	१८	मिण्ठान्नबलि	रक्तवस्त्रदान
१०	यम	२५	कृशरान्नबलि	नीलवस्त्रदान
११	विश्वेदेव	७	मोदकान्नबलि	पीतवस्त्रदान
१२	विष्णु	७	मोदकान्नबलि	श्वेतवस्त्रदान
१३	काम	१०	दधिशर्कराबलि	सुवर्णदान
१४	शिव	६०	मिष्टान्नबलि	क्षौद्रशाकभो.
१५	चन्द्र	३	दध्योदनबलि	रौप्यदान
३०	पितर	१८	पूपकान्नबलि	उत्तमान्नभोजन

वारकष्टावली यन्त्रम्

वा.	वारेश	क. दि.	बलि व दान
सू.	रुद्र	५	पायसबलि सूर्यदान
चं.	गौरी	८	नानाभक्ष्यबलि चन्द्रदान
मं.	स्कन्द	५	दुग्धबलि भौमदान
बु.	विष्णु	७	मुद्गान्नबलि बुधदान
वृ.	ब्रह्मा	५	घृतपक्वबलि गुरुदान
शु.	इन्द्र	७	तिलयवाज्यमधु बलि शुक्रदान
श.	यम	१५	माषान्नबलि शनिदान

कालांग चक्र से शुभाशुभ फलज्ञान

यदि किसी व्यक्ति के अङ्ग विशेष में पीड़ा कष्ट घाव फोड़ा आदि चर्मविकार किंवा वायु—विकारादिजन्य कोई कष्ट हो तो दैवज्ञ तात्कालिक प्रश्नकुण्डली लगाकर निम्नलिखित कालांग चक्र में दिए भावों के अनुसार उस 'पीड़ित-भाव' को देखे। यदि उस भाव में कोई अशुभ ग्रह हो, किंवा वह भाव खलदृष्ट, अस्त, नीच तथा शुभग्रह की दृष्टि से रहित हो तो समझें, कि उस अवयव में और विशेष कष्ट की सम्भावना है। शान्ति के लिए उस ग्रह की शान्ति करावे। यदि प्रश्नकुण्डली में पीड़ित भाव शुभग्रह से युक्त किंवा शुभ ग्रह दृष्ट हो तो रोग (कष्ट) शीघ्र निवृत्त हो जाएगा।

कालांक चक्र

भाव→	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
अङ्ग→	सिर	मुख	भुजाएं	हृदय	उदर	कटिभाग	वस्ति (मूत्राशय)	लिङ्ग, गुदा	जंघाएं	घुटने	पिंडलियां	पाद-युगल

कुछ दैवज्ञ यहां भावों की जगह मेषादि राशियों की कल्पना करके इसी तरह से विचार करते हैं।

बाल-रक्षार्थ धूप

राई, लाख, नीम के पत्ते, बांस का छिलका, लहसुन, शिवजी पर चढ़े हुए फूल अगर, गाय का घी, इन सब को मिलाकर धूप देने से सब पूतना तथा अन्य बालग्रह दूर हो जाते हैं। धूप देते समय "खूं खुदंनं खं हुं फट् स्वाहा"—इस मन्त्र का उच्चारण करे।

ग्रहगोचराद्यैर्दशा क्रमाद्यैर्ग्रहकृतानिष्ट-फल-शमनार्थं प्रत्येक-ग्रहाणां-दान-पदार्थाः												जप संख्या	जपनीय-मंत्राः	दानसमय	हवन-समिधः
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूं	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तपुष्प	केशर	मूंग रक्तगौ	रक्तचन्दन	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	उदय	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	शंख	कर्पूर श्वेतबैल	श्वेतचन्दन	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः	सन्ध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तकनेर	केशर	कस्तूरीरक्तबैल	रक्तचन्दन	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घ. २शेषदिन	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	सर्वपुष्प	हाथीदांत	कर्पूर शस्त्र	फल	१६०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घ. ५शेषदिन	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचने	खांड	घी	पीतवस्त्र	पीतपुष्प	हल्दी	पुस्तक घोड़ा	पीतफल	१६०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	संध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	सुगंध	दधि श्वेतघोड़ा	श्वेतचन्दन	६०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सू. उ.	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उदड़	कुलथी	तैल	कृष्णवस्त्र	कृष्णपुष्प	कस्तूरी	कृष्णांग भैंस	उपानह	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	मध्याह्न	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तिल	नीलवस्त्र	कृष्णपुष्प	खड्ग	कंबल घोड़ा	शप्प	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नम	रात्रौ	दूर्वा
केतु	लसनी	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तैल	धूम्रवस्त्र	धूम्रपुष्प	नारियल	कंबल बकरा	शस्त्र	१७०००	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्रौ	कुशा
मुन्था	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	कर्पूर	मसरी श्वेतचन्दन	हाथीदांत	मुन्थेशवत्	मुन्थेशमन्त्रः	मुन्थेशकाले	

नवग्रहों के व्रत की विधि

यदि किसी व्यक्ति को कोई ग्रह गोचर से या दशा-अन्तर्दशा से खराब चल रहा हो तो निम्नलिखित प्रकार से उस ग्रह का शास्त्रोक्त व्रत-विधान ब्रह्मचर्य पूर्वक करने से अशुभ फल निवृत्ति होती है।

रविवार के व्रत की विधि—सूर्य का व्रत रविवार को करे। यह व्रत शुक्लपक्ष के पहले (जेठे) रविवार से आरम्भ करके वर्ष पर्यन्त तीस या कम से कम १२ व्रत करे। उस रोज केवल गेहूं की रोटी घी लाल खाण्ड के साथ या गेहूं का गुड़ से बना दलिया या हलवा इलायची डाल कर दान करके शेष का दिन में ही सूर्यास्त से पहले भोजन करें। नमक बिलकुल न खावें। भोजन से पूर्व हो सके तो लाल वस्त्र पहनकर ऊपर चक्रोक्त बीज-मन्त्र की पांच माला जप करे। तदनन्तर सूर्य को गन्धाक्षत रक्त पुष्प-दूर्वायुक्त आर्घ प्रदान करे। अपने मस्तक में लाल चन्दन का तिलक करें। जब व्रत का अन्तिम रविवार हो तो हवन पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण भोजन करावे। ऐसा करने से सूर्य का अशुभ फल शुभ फल में परणित हो जावेगा। तेजस्विता बढ़ेगी। नेत्र रोग, चर्म रोग एवं अन्य शारीरिक रोग भी शान्त होंगे।

सूर्य शान्ति का सरल उपचार :—लाल वस्तुओं का विशेष उपयोग जैसे चादर, परना तथा तांबे की अगूठी का पहनना।

सोमवार केव्रत की विधि—चन्द्रमा का व्रत शुक्ल-पक्ष के प्रथम (जेठे) सोमवार से प्रारम्भ करके ५४ या १० व्रत करें। व्रत के दिन श्वेत वस्त्र धारण करके चक्र-लिखित बीज-मन्त्र को ११ माला या ३ माला जप करे। सफेद फूलों से पूजन करके सफेद चन्दन का तिलक करे। मध्याह्न के समय नमक के बिना दही—चावल, घी-खाण्ड का यथाशक्ति दान करके स्वयं भोजन करें। जब व्रत का अन्तिम सोमवार हो उस दिन हवन पूर्णाहुति करके खीर-खाण्ड से ब्राह्मण व बटुकों को भोजन करावे। इस व्रत के करने से व्यापार में लाभ, मानसिक कष्टों की शान्ति होती है, विशेष कार्य सिद्ध्यर्थ भी पूर्ण फलदायक होता है।

चन्द्र शान्ति का सरल उपचार :—सफेद जुराब, रूमाल, सफेद वस्त्र, दूध, दही का उपयोग, चांदी की अंगूठी पहनना।

मंगलवार के व्रत की विधि—यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) मंगलवार से प्रारम्भ करके २१ या ४५ व्रत करने चाहिए। हो सके तो यह व्रत आजीवन रखें। बिना सिला हुआ लाल वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की १, ५ या ७ माला जप करे। नमक सेवन न करें, यह जरूरी है। उस दिन गुड़ से बने हलवे का या लड्डुओं का दान करें। और स्वयं भी खावें। गुड़ से बना कुछ हलवा आदि बैल को भी खिलावें। मंगलवार का व्रत ऋण-हर्ता तथा सन्तति—सुखप्रद है। जब व्रत का अन्तिम मंगलवार हो उस दिन हवन-पूर्णाहुति करके लाल वस्त्र, तांबा, मसूर, गुड़, गेहूं तथा नारियल का दान करे। ब्राह्मणों तथा बच्चों को मीठा भोजन करावें।

मंगल शान्ति का सरल उपचार :—लाल रंग की वस्तुओं का उपयोग रात को लाल वस्त्र पहनें, तांबे के बर्तन, तांबे की अंगूठी पहनना।

बुधवार का व्रत—यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम बुधवार (जेठे) से प्रारम्भ करें। २१ या ४५ व्रत करें। हरा वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की १७ या तीन माला जप करना चाहिए। उस दिन भोजन में नमक-रहित खाण्ड, घी से बने पदार्थ जैसे मूंगी का बना हुआ हलवा, मूंगी की बनी मीठी पंजीरी या मूंगी के लड्डुओं का दान करे। फिर तीन तुलसीदल, गंगाजल या चरणामृत के साथ लेकर स्वयं भी उपरोक्त पदार्थ खावे। व्रत के अन्तिम बुधवार को हवन पूर्णाहुति करके अङ्गहीन भिक्षुक को मूंगीयुक्त भोजन कराकर हरा वस्त्र, मूंगी आदि का दान भी करें। इस व्रत से विद्या-धन-लाभ, व्यापार से तरक्की तथा स्वास्थ्य लाभ होता है। अमावस का व्रत करने से भी बुध ग्रह जन्म नेष्ट फल से मुक्ति मिलती है।

बुध शान्ति का सरल उपचार :—हरा रंग, हरे वस्त्र तथा शृंगार की अन्य वस्तुएं हरा रूमाल आदि रखना, कांसी के बर्तन में भोजन, बुधाष्टमी व्रत।

बृहस्पति के व्रत की विधि—यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) गुरुवार से आरम्भ करें। तीन वर्ष पर्यन्त या १६ गुरुवार व्रत करें। उस दिह पीत वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की ११ या तीन माला जप करें। पीत पुष्पों से पूजन-अर्घ्य दानादि के बाद भोजन में चने के बेसन की बनी घी-खाण्ड से बनी मिठाई लड्डू या हल्दी से पीले या केसरी चावल आदि ही खावें और यही दान करे। जब व्रत का अन्तिम गुरुवार हो तो हवन पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण व बटुकों को लड्डू भोजन करावे। स्वर्ण पीत-वस्त्र चने की दान आदि का दान करे। यह व्रत-विद्यार्थियों के लिए बुद्धि तथा विद्या-प्रद है, धन में वृद्धि तथा कर है। अविवाहितों के लिए स्त्री प्राप्तिप्रद सिद्ध होता है।

बृहस्पति शान्ति का सरल उपचार :—पीले वस्त्र रूमाल आदि पीले फूल धारण करना, सोने की अंगूठी पहनना।

शुक्र के व्रत की विधि—यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शुक्रवार से प्रारम्भ होता है । ३१ या २१ व्रत करे । श्वेत वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की ३ या २१ माला जपें । भोजन में चावल, खाण्ड या दूध से बने पदार्थ ही सेवन करे । यही पदार्थ यथा-शक्ति संभव हो तो एकाक्षी (एक आंख वाले) भिक्षुक को या श्वेत गाय को दें । जब व्रत का अन्तिम शुक्रवार हो, हवन पूर्णाहुति के बाद खीर-खण्ड से बने पदार्थ ब्राह्मण बटुकों को खिलावे । चांदी, श्वेतवस्त्र, खाण्ड, चावल का दान करे । इस व्रत से स्त्री सुख एवं ऐश्वर्य की वृद्धि होती हैं ।

शुक्र शान्ति का सरल उपचार :-सफेद वस्त्र, सफेद रूमाल आदि सफेद फूल, गाय को हरा घास या पेड़ा देना, शिव पूजन ।

शनि के व्रत की विधि—यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम शनिवार से आरम्भ करे : व्रत ५१ या १९ करने चाहिए । व्रत के दिन काला वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की १९ या तीन माला का जप करे । फिर एक बर्तन में शुद्ध जल, काले तिल, काले फूल या लौंग (लोंग) गङ्गाजल तथा शक्कर थोड़ा दूध डालकर पश्चिम की ओर मुह करके पीपल-वृक्ष की जड़ में डाल दे । भोजन में उड़द के आटे का बना पदार्थ, पञ्जीरी कुछ तेल से पका हुआ पदार्थ कुत्ते व गरीब को दे तथा तैलपक्व वस्तु के साथ केला व अन्य फल स्वयं प्रयोग में लाना चाहिए । यही पदार्थ दान भी करे । व्रत के अन्तिम शनिवार को हवन पूर्णाहुति के बाद तेल में पकी हुई वस्तुओं को देने के बाद काला वस्त्र, केवल उड़द तथा देसी जूता, तेल लगाकर दान करे । इस व्रत से सब प्रकार की सांसारिक चिन्ता दूर हो जाती है । झगड़े में विजय होती है । लोह-मशीनरी कारखाने वालों के व्यापार में उन्नति होती है ।

शनि शान्ति का सरल उपचार :—घर के परदे, जूते, जुराब, घड़ी का पट्टा, रूमाल आदि काले रंग के धारण करें ।

राहु केतु के व्रत की विधि—शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से यह व्रत शुरू करना चाहिए । यह व्रत १८ करे । काला वस्त्र धारण करके १८ या ३ बीजमन्त्र की माला जपे । तदनन्तर एक बर्तन में जल, दूर्वा और कुशा लेकर पीपल की जड़ में डाले । भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी समयानुसार रेवड़ी, भुग्गा, तिल के बने मीठे पदार्थ सेवन करे और यही दान में भी दे । रात को घी का दीपक जलाकर पीपल की जड़ में रख दे । इस व्रत से शत्रुभय दूर तथा राजपक्ष से विजय मिलती है ।

राहु, केतु शान्ति का सरल उपचार :-नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पेन, लोहे की अगूठी पहनें ।

ग्रहों के अरिष्ट-निवृत्यर्थ स्नान-विधि

यथा सिद्धौषधैः रोगाः नश्येयुर्मन्त्रतो भयम् ।
तथा स्नान-विधानेन ग्रह-दोषः प्रणश्यति ॥

रवि ग्रह के दोष की शान्ति के लिए कभी-कभी व्रत के दिन बिल्ववृक्ष की जड़, देवदारु, मुलेठी, लाल फूल, केसर, गर्म पानी में उबाल कर स्नान करे । सोमवार के व्रत के दिन खिरनी की जड़, श्वेत, चन्दन, सिप्पी, पञ्चगव्य उबाल कर स्नान करे । ऐसे ही मंगल के दिन अनन्त मूल, रक्त चन्दन, मोलश्री, लाल फूल ये सब उबाल कर बुध के दिन गोबर, मधु, चावल, विधारा उबाल कर, गुरु के दिन भारंगी, मुलेठी श्वेत सरसों, मालती पुष्प उबाल कर, शुक्र के दिन इलायची, मजीठ तथा शनि के दिन काले तिल, सौंफ, सुरमा, अमलबेत, सफेद बिनौला उबाल कर स्नान करे । ऐसे ही राहु केतु की शान्ति के लिए शनिवार के दिन देवदारु, सरसों तथा लोहबान उबाल कर स्नान करे, तो ग्रह शान्ति होती है ।

नोट—स्नानोक्त कोई वस्तु उपलब्ध न हो तो जो वस्तु मिले, उसी से ही स्नान करें ।

सर्वग्रहाणां दोषोपशान्तये सामान्यमौषधि स्नानम्

लाजवन्ती (छुई-मुई), कूट, खिला, कांगनी, जौ, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि लोध इन औषधियों के जल एवं से सतीर्थादिक स्नान करने से सब ग्रहों की पीड़ा नष्ट होती है तथा पूर्व ही जो दान कह चुके हैं उनके करने से शान्ति होती है । गुरु, वचन, देवता ब्राह्मणों की वेदना, वेदादि श्रवण, साधुओं से बातें, मन की शुद्धता, जप, दान, होम तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह पीड़ा नहीं करते (श्रीपतिः) ॥

शनिविचार—अथ लघु कल्याणी (ढैया) फलम्—कल्याणी प्रददाति वा रविसुते राशेश्चतुर्थाष्टमे व्याधिः बन्धु विरोध देशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम् । मृत्युं चैव करोति चापि मनुजं दुःखादि वह्नेर्भयं लोहं शस्त्रभयं सदैवासुखं कुर्यादसौ सर्वदा ॥१॥ अथ बृहत्-कल्याणी (साढ़ेसाती) फलम्...राशौ द्वादश (१२) मूर्ध्नि जन्म (१) हृदये पादौ द्वितीये (२) शनिः । नानाक्लेशकरोऽति दुर्जनभयं पुत्रान्पशून्पीडयेत् ॥ हानिः स्यान्मरणं विदेश-गमनं सौख्यं च साधारणम्, रामाऋद्धिविनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमे वाऽथवा ॥२॥

सप्तधान्य—उड़द १. मूंगी २. गेहूं ३. चने ४. जौ ५. धान्य (तंदुल) ६. कंगनी ७. **अष्टगंध**—अंगर, कस्तूरी, कुंकुम कपूर, चन्दन, टोपीदार लौंग, गोरोचन देवदारु ।

अष्टगंध धूप—अगर, छरीला, जटामासी, कपूर-कचरी, गुग्गुल, देवदारु गोघृत सफेद चन्दन ।

नक्षत्र-राशिज्ञान चक्र

राशिज्ञाने विशेष:— नक्षत्र वा राशि में ण और ग में, ब और व में कोई भेद नहीं होता । जिसके नाम का पहला अक्षर संयुक्त हो, वहां प्रथमाक्षर ग्रहण करें । (संयोगजाक्षरे 'नाम्नि ग्राह्यं तत्रादिमाक्षरम्)

राशय:	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह		
नक्षत्राणि	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिर	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू. फा.	उ. फा.
प्रथमचरण	चू	ली	अ	०	ओ	वे	०	कु	के	०	हु	डी	मा	मो	टे
द्वितीय च०	चे	लू	०	ई	वा	वो	०	घ	को	०	हे	डू	मी	टा	०
तृतीय च०	चो	ले	०	उ	वी	०	क	ङ	ह	०	हो	डे	मू	टी	०
चतुर्थ च०	ला	लो	०	ए	वू	०	की	छ	०	हि	डा	डो	मे	टू	०

राशय:	कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर				कुम्भ			मीन		
नक्षत्राणि	उ. फा.	हस्त	चित्रा	चित्रा	स्वाती	विशाखा	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू. षा.	उ. षा.	उ. षा.	अभिजित	श्रवण	धनिष्ठा	धनिष्ठा	शतभिषा	पू. भा.	पू. भा.	उ. भा.	रेवती
प्रथमचरण	०	पू	पे	०	रू	ती	०	ना	नो		भू	भे	०	जू	खी	गा	०	गो	से	०	दू	दे
द्वितीय च०	टो	ष	पो	०	रे	तू	०	नी	य		धा	०	भो	जे	खू	गी	०	सा	सो	०	थ	दो
तृतीय च०	पा	ण	०	रा	रो	ते	०	नू	यी	भा	[illegible]	०	जा	जो	खे	०	गू	सी	दा	०	झ	चा
चतुर्थ च०	पी	ठ	०	री	ता	०	तो	ने	यू	भी	[illegible]	०	जो	खा	खो	०	गे	सू	०	दी	ञ	चि

ध्यान दें. —नामों का प्रारम्भ ङ, ञ, ण इन अक्षरों से नहीं होता । यदि नक्षत्र के आधार पर इन अक्षरों से नाम प्रारम्भ हो रहा तो ङ की जगह घ, ञ की जगह दु तथा ण की जगह पू से नाम प्रारम्भ करें । ऐसा करने से नक्षत्र भेद नहीं होता ।

॥१॥ बहूनि यस्य नामानि नरस्य स्यु: कथञ्चन । तत: पश्चाद्भवं नाम ग्राह्यं स्वर-विशारदै: ॥२॥ प्रसुप्तो भाषते येन येनागच्छति शब्दित: । तस्य नामाद्यवर्णो या मात्रा सा स्वर एव हि ॥३॥ अथ जन्मराशि-नामराश्यो : प्रधानता निर्णीयते —विवाहे सर्व मांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे । जन्मराशे: प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत् ॥४॥ देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके ॥ नामराशे: प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत् ॥५॥ काकिण्यां वर्ग शुद्धौ च दाने द्यूते ज्वरोदये । मन्त्रे पुनर्भूवरणे च नामराशे: प्रधानता ॥६॥ कुर्यात्षोडश कर्माणि जन्मराशौ बलान्विते । सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते ॥७॥ विवाह घटनं चैव लग्नजं ग्रहजं बलम् । कामभाविचिन्तयेत् सर्वं जन्म न ज्ञायते यदा ॥८॥

अभिजित्-निर्णय—वैश्यप्रान्त्यांघ्रि: श्रुति-तिथि-भागतोऽभिजित्स्यात् ॥ उत्तराषाढा का चौथा चरण श्रवण का पहला १५वां भाग जोड़कर उसके चार भाग करो । उसको अभिजित का एक चरण मानकर नाम रखने आदि के विचार में उपयोग करो । उत्तराषाढ़ा के तीन चरणों के ही चार भाग करके उत्तराषाढ़ा का एक-एक चरण मानो । श्रवण का १५वां भाग छोड़कर जो शेष रहे उसके चार भाग करो, उसको श्रवण १-१ चरण मानो । इस प्रकार को प्राय: सामान्य गणक नहीं जानते, एतदर्थ यहां लिखा गया है ।

राशि ज्ञानम्—चूल अ मेष:, इ वो वृष:, क घ ङ छ ह मिथुनम् ॥
हीडो कर्क:, माटे सिंह:, टो ष ण ठ पो कन्या ॥
राते तुला तो ना यू वृश्चिक ये धफढभे धनु: ।
भोजा खागी मकर: [illegible]

उपरोक्त राशि-ज्ञान में प्रत्येक राशि के आदि और अन्त का अक्षर ' या है और जहां जो अक्षर बदलता है, वहां वह भी ले लिया गया है । जैसे—मेष में पहला [illegible] सी लू ले लो) पांचों का ग्रहण हुआ अर्थात् पूर्ण चरण (चौथा चरण) अश्विनी का और चतुर्थ चरण भरणी का ग्रहण हुआ और उसे कृत्तिका के प्रथम चरण इन नो चरणों की एक राशि मेष हुई । इसी तरह अन्य राशियों का ज्ञान करें ।

टिप्पणी --(१) जप्रोक्तं: यथा ज्ञानचन्द्रस्य मकर-राशि: । कप-संयोगे क्ष:, यथा क्षेमचन्द्रस्य मिथुनराशि: । एवं ज्ञातव्यानि कुम्भराणि । (२) गर्भाधानं पुंसवनं सीमन्तोन्नयनं तत: । जातकर्माभिधेयं च निष्क्रम-प्राशने क्रमात् । चूडोपनयन वेदव्रतानां च चतुष्टयम् । गोदान-मेखलोन्मोको विवाह: षोडशी क्रिया ॥

नोट—चन्द्रमा की राशि एवं नक्षत्र के अनुसार जातक का नाम रखने में फलितज्ञ को काफी सुभीता रहती है । नाम जानने से ही ज्योतिषी जातक के जन्म के समय चन्द्रमा की राशि एवं नक्षत्र जान लेता है तथा फलित-शास्त्र में काफी महत्त्वपूर्ण फलादेश चन्द्रमा की स्थिति पर ही निर्भर है । इसका एक वैज्ञानिक रहस्य भी है । निकटतम होने से चन्द्रमा का प्रभाव भू-स्थित-वनपति एवं प्राणियों पर अन्य सभी ग्रहों की अपेक्षा अधिक होता है । ज्वार भाटा लाने में भी चन्द्रमा की देन सूर्य की देन से दुगुनी है। चन्द्रमा का ज्वार-भाटांक (Tide Factor) सूर्य के ज्वार-भाटांक से दुगुना है । चन्द्रमा के भगणकाल का स्त्री के मासिक-धर्म से साक्षात् सम्बन्ध है । आजकल वैज्ञानिकों ने कुछ प्रयोग भी किए हैं, जिससे अचर-जगत् (वनस्पति आदि) पर चन्द्रमा का प्रभाव स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है । अत: जन्म-पत्र आदि के अभाव में चन्द्रमा की स्थिति से ही फलादेश करने की परिपाटी फलितज्ञों में है ।

नवीन-फलितवेत्ता जन्म-पत्र की अंग्रेजी तारीखों के हिसाब से भी फलादेश [illegible] सूर्य की राशि के आधार पर ही फलादेश होता है । चन्द्रमा की राशि के आधार पर फलादेश करना अधिक उपयुक्त है । अत: प्राचीन फलित-शास्त्रियों ने जन्म-कालीन चन्द्रमा की स्थिति को जन्म राशि के नाम से कहा है । [illegible]

बारह राशियों के मासिक फलादेश (संवत् २०५१)

राशि	वैशाख (१३ अप्रैल से १३ मई तक)	ज्येष्ठ (१४ मई से १४ जून तक)	आषाढ़ (१५ जून से १५ जुलाई तक)
मेष	सेहत ठीक, अर्थ लाभ, निजीजन चिन्ता, मित्र मिलाप, नई योजना, कार्यान्तर का विचार, गत शत्रु से भय। अप्रैल १९, २०, २७, २८, मई ६, ७, ८ अशुभ।	स्थानान्तर व कार्यान्तर का विचार, यात्रा में कष्ट, धन लाभ हो, रोग व शोक समाचार, गुप्त शत्रु से भय, सामान्त में लाभ। मई १६, १७, २५, २६, जून २, ३, ४, १२, १३, १४, अशुभ।	स्थानान्तर व कार्यान्तर का विचार, लेकिन बन्धन भय, अर्थ लाभ हो, सन्तान की तरफ से विशेष कष्ट, मासान्त में खर्च अधिक। जून २१, २२, ३०, जुलाई १, १०, ११, अशुभ।
वृष	सेहत ठीक, अर्थ लाभ, रोग भय, निजीजन सुख, सन्तान हेतु विशेष खर्च, उलझी समस्याएँ सुलझें, स्त्रीकष्ट, खर्च विशेष। अप्रैल २०, २१, २२, २९, ३०, मई, १, ९, १० अशुभ।	अर्थलाभ, सुख शत्रु कमजोर, मासान्त में वृथा व्यय, नेत्र कष्ट, कारोबार में गड़बड़। मई १८, १९, २०, २७, २८, जून ५, ६, ७ अशुभ।	शत्रु कमजोर, सुख, धन लाभ, घरेलू झंझट, सम्पत्ति विवाद, कारोबार कुछ ठीक, नेत्र कष्ट। जून १५, १६, २३, २४, जुलाई २, ३, ४, १२, १३ अशुभ।
मिथुन	वायु रोग, अर्थ लाभ होकर हानिभय, निजीजनों से लाभ, सन्तान पक्ष शुभ, शत्रु परास्त, स्त्री सुख, कारोबार ठीक। अप्रैल १४, १५, १६, २३, २४, मई ४, ५, अशुभ।	धनहानि भय, कष्ट, शत्रु बढ़े, राजभय, अर्थ लाभ, लेकिन खर्च विशेष। मई २१, २२, २९, ३०, जून ८, ९, अशुभ।	अर्थ लाभ, शत्रु कमजोर, उत्साह बढ़े, रोगभय, स्त्री पक्ष से खर्च, मासान्त में अच्छा लाभ। जून १७, १८, २५, २६, जुलाई ५, . १४, १५ अशुभ।
कर्क	उदर विकार, धन लाभ, निजीजन कष्ट, यात्रा से सुख या जमीन जायदाद से सुख, असफल योजना, सन्तति कष्ट। अप्रैल १७, १८, २५, २६, मई ४, ५, अशुभ।	रोगभय, वायु रोग, निजी लोगों से अनबन, स्त्री पक्ष से चिन्ता, पापकर्म में मन लगे, रुके काम बनें। मई १४, १५, १७, २५, ३१ जून १, १०, ११ अशुभ)	आमदन होकर हाथ से निकले, शोक समाचार, कारोबार ठीक, स्त्री सुख। जून १९, २०, २७, २८, २९, जुलाई ७, ८, ९ अशुभ।
सिंह	वायु विकार, धन लाभ, मातृ सुख, मित्रों से अनबन, शत्रु प्रबल, स्त्री कष्ट, कारोबार कुछ ठीक। अप्रैल १९, २०, २७, २८, मई ६, ७, ८ अशुभ।	धन लाभ, उत्साह बढ़े, निजी लोगों से अनबन, सन्तान पक्ष से चिन्ता, धन हानि, स्त्री कष्ट, यश कमजोर। मई १६, १७, २५, २६, जून २, ३, ४, १२, १३, १४ अशुभ।	कष्टभय, खर्च अधिक, सन्तान सुख, स्त्री पक्ष से कुछ चिन्ता, पापकर्म में मन लगे, कारोबार में हानि। जून २१, २२, ३०, जुलाई १, १०, ११ अशुभ।
कन्या	पित्त वायु विकार, धन लाभ, बन्धुओं से अनबन, रोग भय, स्त्री कष्ट, आमदन होकर हानि, कारोबार गड़बड़। अप्रैल ३०, २१, २२, २९, ३०, मई १, ९, १० अशुभ।	अरिष्टभय, खर्च अधिक, सन्तान पक्ष से कष्ट, मास मध्य में अर्थ लाभ, रोगभय, अचानक विपत्ति, धन हानि। मई १८, १९, २०, २७, २८, जून ५, ६, ७ अशुभ।	शत्रु बढ़े, शरीर कष्ट, सुख लाभ, रोगभय, अर्थ लाभ, आमदन से खर्च अधिक। जून १५, १६, २३, २४, जुलाई १, ३, ४, १२, १३ अशुभ।
तुला	सेहत ठीक, लेकिन मास मध्य में नेत्र व शिर पीड़ा, नई योजना से लाभ, स्त्री पक्ष से चिन्ता, कारोबार में कुछ रुकावट। अप्रैल १४, १५, १६, २३, २४, मई १, २, ३, ११, १२, १३ अशुभ	वायु रोग नीच से मानभय, निजीजनों से कष्ट भय, सम्पत्ति विवाद, रोग भय, धन हानि, गुप्त शत्रु से भय। राहु यंत्र धारण करें। मई २१, २२, २९, ३० जून ८, ९ अशुभ।	सुख लाभ, अर्थ लाभ होकर हानिभय सन्तति कष्ट, स्त्री सुख, धन हानि, कार्यान्तर से लाभ। जून १७, १८, २५, २६, जुलाई ५, ६, १४, १५ अशुभ।
वृश्चिक	नेत्र व उदर कष्ट, सम्पत्ति विवाद, सन्तान पक्ष से चिन्ता, शत्रु कमजोर, धन लाभ, कारोबार कुछ ठीक। अप्रैल १७, १८, २५, २६, मई ४, ५ अशुभ।	सुख एवं अर्थ लाभ, शत्रु से भय, अर्थ लाभ हो, मासान्त में सुख एवं धन, लाभ, खर्च अधिक। मई १४, १५, २३, २४, ३१, जून १, १०, ११ अशुभ	धन हानि, सम्पत्ति लाभ, शत्रु प्रबल, स्त्री सुख, कारोबार में कुछ रुकावट, यात्रा से सुख। जून १९, २०, २७, २८, २९, जुलाई ७, ८, ९ अशुभ।
धनु	सुखार्थ लाभ, निजीजन सहयोग शत्रु से भय, धन हानि भी हो, आय से व्यय अधिक। अप्रैल १९, २०, २२, २८, मई ६, ७, ८ अशुभ।	सेहत ठीक, धन हानिभय, निजीजनों से मेल, बनते काम में रुकावट, मास के उत्तरार्द्ध में मान सम्मान मिले, शत्रु हतप्रभ, मई १६, १७, २५, २६, जून २, ३, ४, १२, १३, १४ अशुभ।	सेहत ठीक, निजीजन कष्ट, सन्तान सुख, शत्रु बढ़े, अचानक अर्थ लाभ, सुख मिले, कारोबार ठीक। जून २१, २२, ३०, जुलाई १, १०, ११ अशुभ।
मकर	धन हानि, शरीर कष्ट, शत्रु कमजोर, उत्साह बढ़े परन्तु मान हानि भय, कारोबार कमजोर, मासान्त कष्टप्रद। अप्रैल २०, २१, २२, २९, ३०, मई १, ९, १० अशुभ	शरीर कष्ट, नेत्र पीड़ा, सम्पत्ति विवाद, निजीजनों से मेल, कारोबार ठीक, यात्रा में कष्ट, आय से व्यय अधिक। मई १८, १९, २०, २७, २८, जून ५, ६, ७ अशुभ।	नेत्र कष्ट व शिर पीडा, सम्पत्ति लाभ, वंश वृद्धि, मासान्त में कष्ट एवं खर्च विशेष, साझेदारी में हानि। जून १५, १६, २३, २४, जुलाई २, ३, ४, १२ १३ अशुभ।
कुंभ	वायु विकार, नेत्र कष्ट, वृथा व्यय, नीच का संग न करें, मासान्त ठीक, शनि यंत्र धारण करें। अप्रैल १४, १५, १६, २३, २४, मई १, २, ३, ११, १२, १३ अशुभ।	वायु रोग, रक्त विकार, धनलाभ, कारोबार ठीक एवं कार्यान्तर से लाभ, मास मध्य में वृथा व्यय, सेहत के लिए खर्च। मई २१, २२, २९, ३०, जून ८, ९ अशुभ।	भयपीडा, अर्थ हानि, निजीजनों से मेल, कारोबार में लाभ, स्त्री सुख, मासान्त में आय से खर्च अधिक। जून १७, १८, २५, २६, जुलाई ५, ६, १४, १५ अशुभ।
मीन	बन्धन भय, सरकार से भय, अर्थ हानि, निजी लोगों से अनबन, मानसिक परेशानी पापकर्म में मन लगे। अप्रैल १७, १८, २५, २६, मई ४, ५, अशुभ।	रोग से परेशानी, कारोबार कमजोर, मास मध्य में आर्थिक लाभ, खर्च विशेष, सम्मान, स्त्री सुख, मासान्त में रोग भय। मई १४, १५, २३, २४, ३१, जून १, १०, ११ अशुभ।	कारोबार में लाभ होकर हानिभय, निजीजन सहयोग, सन्तान के लिए खर्च, शत्रु हतप्रभ, मासान्त में कुछ लाभ। जून १९, २०, २७, २८, २९, जुलाई ७, ८, ९ अशुभ।

बारह राशियों का मासिक फलादेश (संवत् २०५१ वि.)

राशि	श्रावण १६ जुला० से १५ अगस्त तक)	भाद्रपद (१६ अगस्त से १५ सितम्बर तक)	आश्विन (१६ सितंबर से १६ अक्तूबर तक)
मेष	स्थानान्तर व कार्यान्तर का विचार अर्थलाभ, शरीर कष्ट, घरेलू झंझट, आय से खर्च अधिक जुलाई १८, १९, २०, २७, २८, २९, अग० ६, ७, १५ अशुभ।	सेहत ठीक, गुप्त शत्रु से सावधान, आर्थिक लाभ हो, निजीजन कष्ट, सन्तान पक्ष से चिन्ता स्त्री सुख। अगस्त १६, २३, २४, २५, सितं० २, ३, ४, ११, १२ अशुभ।	सेहत ठीक, कारोबार से लाभ, सन्तान की तरफ से चिन्ता स्त्री सुख, शत्रु शिर उठायें। सितं० २०, २१, ३०, अक्तू० १, ८, ९ अशुभ।
वृष	शत्रु कमजोर, रोगभय, धनहानि, शत्रु प्रबल, कारोबार में रूकावट, आय से व्यय अधिक, जुलाई २०, २१, २२, ३०, ३१, अग० ८, ९ अशुभ।	शत्रु कमजोर, सेहत ठीक, अर्थ लाभ होकर हाथ से निकले, निजी लोगें से अनबन, शत्रु कमजोर स्त्री सुख। अगस्त १७, १८, २६, २७, सितं० ५, ६, १३, १४ अशुभ।	अरिष्टभय, शत्रु पक्ष कमजोर, शरीर में वायु रोग, सन्तान से सुख, मन परेशान, कारोबार से चिन्ता। सितं० २२, २३, २४, अक्तू० २, ३, १०, ११ अशुभ।
मिथुन	धन लाभ होकर हानिभय, वायु रोग, कारोबार कुछ ठीक, मासान्त में खर्च अधिक। जुलाई २३, २४, अग. १, २, ३, १०, ११, १२ अशुभ।	वायु रोग, निजीजनों से विरोध, नई योजना, स्त्री कष्ट, कारोबार गड़बड़। अगस्त १९, २०, २८, २९, ३०, सितं० ६, ८, १५ अशुभ।	पित्त विकार, निर्जीन कष्ट, जायदाद संबन्धी समस्या, स्त्री से अनबन, क्रोध बढे, मासान्त में खर्च अधिक। सितं० १६, २५, २६, अक्तू. १२, १३, १४ अशुभ।
कर्क	सेहत गडबड, स्त्री कष्ट, सन्तान पक्ष शुभ, कारोबार में रूकावट, घरेलू झंझट। जुलाई १६, १७, २५, २६, अग० ४, ५, १३, १४ अशुभ।	रक्त पित्त विकार, धन लाभ, निजीजन सहयोग, क्रोध बढ़े कारोबार कुछ ठीक, शुभ में खर्च। अगस्त २१, २२, २३, ३१, सितं० १, ९, १० अशुभ।	धन लाभ, उत्साह वृद्धि, अर्थ हानि, बुरा समाचार, सांझेदारी में हानि, आमदन से खर्च अधिक। सितं० १७, १८, १९, २७, २८, २९, अक्तू. ६, ७, १५, १६ अशुभ।
सिंह	मित्रों से मेल, स्त्री सुख, कारोबार कुछ ठीक, मासान्त में खर्च अधिक सूर्य का व्रत करें। जुलाई १८, १९, २०, २७, २८, २९, अग० ६, ७, १५ अशुभ।	धन लाभ, सुख लाभ, सन्तति कष्ट, स्त्री पक्ष से चिन्ता, कारोबार कुछ ठीक, आय व्यय बराबर। अगस्त १६, २३, २४, २५, सितं० २, ३, ४, ११, १२ अशुभ।	आर्थिक लाभ, सेहत कुछ गडबड, अकस्मात कष्ट, मास मध्य में अचानक लाभ, स्त्री पक्ष से मदद। सितं २०, २१, ३०, अक्तू० १, ८, ९ अशुभ।
कन्या	सुख लाभ, सन्तान के लिए खर्च विशेष, स्त्री सुख, कारोबार ठीक, नई योजना से लाभ। जुलाई २०, २१, २२, ३०, ३१ अग० ८, ९ अशुभ।	धन हानि, शरीर पीडा, कारोबार कुछ ठीक, बुध एवं शनि के दान से कल्याण। अगस्त १७, १८, २६, २७, सितं० ५, ६, १३, १४ अशुभ।	सेहत ठीक, धन लाभ, सम्पत्ति विवाद, उलझनें बढ़ें, कार्यान्तर व स्थानान्तर का योग, खर्च विशेष। सितं० २२, २३, २४, अक्तू. २, ३, १०, ११ अशुभ।
तुला	धन हानि भय, निजीजनों से वैमनस्य, नई योजना, सम्पत्ति विवाद, हाथ तंग रहे। जुलाई २३, २४, अग. १, २, ३, १०, ११, १२ अशुभ।	मानसिक चिन्ता, स्त्री पक्ष से कष्ट, आर्थिक लाभ, सन्तान हेतु खर्च अधिक, कारोबार में रूकावट। अगस्त १९, २०, २८, २९, ३०, सितं ७, ८, १५ अशुभ।	सेहत ठीक, घरेलू झंझट वढें, सन्तान पक्ष से चिन्ता, विद्या से लाभ, कारोबार कमजोर। सितं. १६, २५, २६, अक्तू. १२, १३, १४, १५ अशुभ।
वृश्चिक	विपत्ति, धनक्षय, शत्रु पक्ष कमजोर रहे, स्त्री सुख, मासान्त में सम्मान मिले। जुलाई १६, १७, २५, २६, अग. ४, ५, १३, १४ अशुभ।	क्रोध बढे, स्त्री सुख, वृथा खर्च, कारोबार में बाधा, मासान्त में खर्च अधिक। अगस्त २१, २२, २३, ३१, सितं. १, ९, १० अशुभ।	उदर व्याधि, गुप्त शत्रु से भय, स्त्री पक्ष शुभ, कारोबार कमजोर, रुके काम बनें। सितं. १७, १८, १९, २७, २८, २९, अक्तू. ६, ७, १५, १६ अशुभ।
धनु	धन हानि, कारोबार से लाभ एवं व्यय अधिक, रोग कष्ट, कार्यान्तर से भी लाभ। जुलाई १८, १९, २०, २७, २८, २९, अग. ६, ७, १५ अशुभ।	उदर विकार, निजीजनों से अनबन, सन्तान पक्ष शुभ, स्त्री कष्ट, कारोबार ठीक। अगस्त १६, २३, २४, २५, सितं. २, ३, ४, ११, १२ अशुभ।	अर्थ हानि, सन्तान पक्ष शुभ, नई योजना से लाभ, कारोबार ठीक, मासान्त में खर्च अधिक। सितं. २०, २१, ३०, अक्तू. १, ८, ९ अशुभ।
मकर	रोग मय, नेत्र कष्ट, धन हानि, शत्रु प्रबल, कारोबार से कुछ लाभ, गुप्त शत्रु से सावधान। जुलाई २०, २१, २२, ३०, ३१, अग. ८, ९ अशुभ।	वायु रोग, धन हानि, स्त्री कष्ट, शिर व नेत्र पीडा, वंश वृद्धि, मासान्त में शत्रु शिर उठायें। अगस्त १७, १८, २६, २७, सित. ५, ६, १३, १४ अशुभ।	क्रोध बढ़े, धन हानि, सम्पत्ति लाभ, नई योजना से लाभ, कारोबार ठीक, वायु विकार। सितं. २२, २३, २४, अक्तू. २, ३, १०, ११ अशुभ।
कुंभ	क्रोध बढ़े, धन लाभ, अच्छे लोगों से मेल, मित्रों से अनबन, खर्च अधिक। जुलाई २३, २४, अग. १, २, ३, १०, ११, १२ अशुभ।	धन हानि, नेत्र पीडा, अच्छे लोगों से मेल, बुरी खबर, मानसिक परेशानी, खर्च अधिक। अगस्त १९, २०, २८, २९, ३०, सितं. ७, ८, १५ अशुभ।	सेहत गडबड़, धन लाभ होकर हनि मय, निजीजन कष्ट, स्त्री सुख, कार्यान्तर से लाभ। सितं. १६, २५, २६, अक्तू. १२, १३, १४, १५ अशुभ।
मीन	बचत भय, फिजूल खर्च अधिक हो, निजीजन सहयोग, सन्तान सुख, स्त्री	वायु विकार, निजीजन सहयोग, धन हानि भय, मास मध्य में कष्ट, कार्यान्तर	सेहत कुछ गडबड़, धन हानि, निजीजन सहयोग गुप्त शत्रु से सावधान, स्त्री

बारह राशियों का मासिक फलादेश (संवत् २०५१ वि०)

राशि	कार्तिक (१७ अक्तूबर से १५ नवंबर तक)	मार्गशीर्ष (१६ नवंबर से १४ दिसंबर तक)	पौष (१५ दिसं. ९४ से १३ जन. ९५ ई. तक)
मेष	उदर विकार, स्थानान्तर व कार्यान्तर का विचार, बन्धनभय, शत्रु परास्त, सन्तान पक्ष से चिन्ता, स्त्री कष्ट। अक्तू. १७, १८, १९, २८, २९, नवं. ५, ६, १३, १४, १५ अशुभ।	सेहत खराब, आर्थिक लाभ, प्रियजन मिलाप, शत्रु हतोत्साह, कारोबार कमजोर, नेत्र कष्ट, मासान्त में हाथ तंग। नवं. २३, २४, २५, दिसं. २, ३, ११, १२ अशुभ।	सेहत कुछ गडबड, कफ विकार, निजिजनों से अनबन सन्तान की तरफ से कष्ट, कारोबार कमजोर, मासान्त में कार्यान्तर से लाभ। दिसं. २०, २१, २२, २९, ३०, ३१, जन. (१९९५ ई.) ७, ८ अशुभ।
वृष	शत्रु बढ़ें, बनते कार्य में रुकावट, मासमध्य में सुख-लाभ हो, मासान्त में रोगभय, आय से व्यय अधिक। अक्तू. १९, २०, २१, २९, ३०, ३१, नवं. ६, ७, ८ अशुभ।	सेहत ठीक, धन लाभ, निजिजन मिलाप, नई योजना में सफलता, सन्तान की तरफ से कष्ट, वायु विकार, आंय से व्यय अधिक। नवं. १६, १७ २६, २७, दिसं. ४, ५, १३, १४ अशुभ।	अर्थ लाभ, सेहत कुछ गड़बड़, सम्पत्ति विवाद, नई योजना से लाभ, शत्रु प्रवल, कारोबार अपेक्षाकृत ठीक। दिसं. १५, २३, २४, ३१, जन (१९९५ ई.) १, २, ९, १० अशुभ।
मिथुन	सुख मिले, अर्थ लाभ, पाप में मन लगे, वृथा व्यय, मासान्त में मित्र-मिलाप, नई योजना से लाभ, गुप्त शत्रु से भय। अक्तू. २२, २३, २४, नवं. १, २, ९, १० अशुभ।	धन लाभ, सेहत ठीक, निजिजन सहयोग, स्थिर सम्पत्ति विवाद, स्त्री कष्ट, शत्रुप्रबल, कारोबार गडबड। नवं. १८, १९, २०, २८, २९, दिसं. ६, ७ अशुभ।	सेहत ठीक, धन लाभ, निजिजनों से अनबन, मित्रों से मेल, शत्रु प्रबल, स्त्री कष्ट, मासान्त में कुछ लाभ। दिसं. १६, १७, २५, २६. जन. (१९९५ ई.) ३, ४, १२, १३ अशुभ।
कर्क	धन लाभ होकर हानि, रोगभय, नेत्र कष्ट, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, मासान्त में बिगड़े काम बने, लाभ हो। अक्तू. २५, २६, नवं. ३, ४, ११, १२ अशुभ।	सेहत ठीक, अर्थलाभ, घरेलू झंझट, शत्रु कमजोर, कारोबार खराब, कार्यान्तर से लाभ। नवं. २१. २२. ३०, दिसं १, ८, ९, १० अशुभ।	सेहत ठीक, अर्थ हानि, निर्जीजन सुख, शत्रुहतप्रभ, नेत्र कष्ट, कारोबार गड़बड़। दिसं. १८, १९, २०, २७, २९, जन (१९९५ ई.) ५, ६ अशुभ।
सिंह	पित्त विकार, धन लाभ, निजी लोगों से सुख, शत्रु कमजोर, पाप बुद्धि दुष्ट संगति से भय, आय से व्यय अधिक। अक्तू. १७, १८, १९. २८, २९, नवं. ५, ६, १३, १४, १५ अशुभ।	सेहत ठीक, धन हानि भय, सन्तान व अन्य हेतु विशेष खर्च, शत्रु प्रवल, मासान्त में लाभ। नवं. २३, २४, २५. दिसं. २. ३, ११, १२ अशुभ।	पेट में गड़बड़, अर्थ लाभ, निजिजनों से मेल, नई येजना में गड़बड़ी, स्त्री सुख, आय से व्यय अधिक। दिसं. २०, २१, २२, २९, ३०, ३१, जन. ७, ८ अशुभ।
कन्या	अर्थलाभ, नेत्र व सिर पीड़ा, योजना असफल, वृथा व्यय, कोष में कमी, कारोबार कमजोर, मासान्त में विशेष कष्टभय। अक्तू. १९. २०. २१, २९, ३०, ३१, नवं. ६, ७, ८ अशुभ।	उदर विकार, वायु रोग, सम्पत्ति विवाद निजी लोगों से अनबन, स्त्री सुख, कारोबार कमजोर, कर्जा चढ़े। नवं. १६. १७. २६. २७, दिसं. ४. ५, १३. १४ अशुभ।	कफ, वायु विकार धन लाभ होकर हानि हो, निजि लोगों से उनबन, स्त्री सुख, कारोबार ठीक, खर्च विशेष। दिसं. १५, २३, २४. ३१. जन. (१९९५) १. २. ९. १० अशुभ।
तुला	उदर विकार, निजी लोगो से अनबन, स्त्री कष्ट वृथा विवाद से बचें, मासान्त में लाभ। अक्तू. २२, २३. २४, नवं. १, २, ९, १० अशुभ।	वायु रोग, कोष में कमी, निजीजनों से मनमुटाव, स्त्री कष्ट, कारोबार कुछ ठीक, आय से व्यय अधिक। नवं. १८, १९, २०, २८, २९, दिसं. ६, ७ अशुभ।	सेहत ठीक, निजी लोगों से अनबन, सन्तान पक्ष से चिन्ता, स्त्री कष्ट, कारोबार यथावत, मासान्त में खर्च विशेष। दिसं १६, १७, २५, २६, जन. (१९९५) ३, ४, १२, १३ अशुभ।
वृश्चिक	सेहत ठीक, शत्रु कमजोर, धन लाभ, सुख प्राप्ति, मास मध्य में निजी लोगों से अनबन, कई प्रकार से लाभ। अक्तू. २५. २६, नवं. ३, ४, ११, १२ अशुभ।	सेहत मध्यम, कोष में कमी, वंश वृद्धि, विशेष खर्च, कारोबार अपेक्षाकृत ठीक, फिर भी हाथ तंग रहे। नवं. २१, २२, ३० दिसं १, ८, ९, १० अशुभ।	अर्थ हानि, मित्रों से मदद, सन्तान पक्ष शुभ, कार्यान्तर का विचार, कार्यान्तर से लाभ। दिसं. १८, १९, २०, २७, २८, २९, जन. (१९९५) ५, ६ अशुभ।
धनु	धन हानि, नेत्र कष्ट, सन्तान के लिए विशेष खर्च, मासान्त में हाथ तंग, कर्जा चढ़े। अक्तू. १७, १८, १९, २८, २९. नवं. ५, ६, १३, १४, १५ अशुभ।	रक्तपित्त विकार, अर्थ लाभ, सम्पत्ति लाभ, रोगभय, कारोबार में विशेष रुकावट आने का योग है। नवं. २३. २४. २५ दिसं. २, ३, ११, १२ अशुभ।	सेहत खराब, क्रोध बढ़े, मित्र, बन्धु से मेल, गृहक्लेश, कारोबार कुछ ठीक, आय से व्यय अधिक। दिसं. २०, २१, २२ २९, ३०, ३१, जन. (१९९५) ७, ८ अशुभ।
मकर	राजभय, मानसिक चिन्ता, निजी लोगों से अनबन, कारोबार में रूकावट, शत्रु बढ़े। अक्तू. १९, २०, २१, २९, ३०. ३१, नवं. ६, ७, ८ अशुभ।	सेहत कुछ ठीक, निजीजन सहयोग, स्त्री सुख, आय से व्यय अधिक, वृथा कलह से बचें। मासान्त में नेत्र व शिर पीड़ा। नवं. १६, १७, २६, २७, दिसं. ४ ५, १३, १४ अशुभ।	धन लाभ, निर्जीजन सुख, नकली मित्रों से सावधान, गुप्त शत्रु से भय, कारोबार कुछ ठीक, लड़ाई, झगड़े से बचें। दिसं. १५, २३, २४, ३१, जन (१९९५) १, २, ९, १० अशुभ।
कुंभ	धन लाभ, शत्रु से भय, कलंक भय, स्त्री कष्ट, मन अशान्त, कार्यान्तर से लाभ। अक्तू. २२, २३. २४, नवं १, २, ९, १० अशुभ।	धन लाभ, निर्जीजन सहयोग, शत्रु प्रवल, रोगभय, आय से व्यय अधिक, कारोबार में रूकावटे। नवं. १८, १९, २०, २८, २९, दिसं. ६, ७ अशुभ।	उदर विकार, अर्थ लाभ, घरेलू झंझट, नई योजना से हानि, स्त्री कष्ट, कारोबार अपेक्षाकृत ठीक, मासान्त में कष्ट। दिसं. १६. १७, २५, २६, जन. (१९९५) ३, ४, १२, ३ अशुभ।
मीन	व्यापार में हानि, कार्यान्तर व स्थानान्तर का योग, मासमध्य में लाभ, सुख लाभ, मासान्त कुछ ठीक। अक्तू. २५, २६, नवं. ३, ४, ११, १२ अशुभ।	सेहत ठीक, अर्थलाभ होकर भी हाथ से निकले, सन्तान पक्ष से सुख, स्त्री कष्ट व उदर विकार, वृथा व्यय, मासान्त में कारोबार कुछ कमजोर। नवं. २१, २२, ३०, दिसं. १, ८, ९, १० अशुभ।	मन शान्त, अर्थ लाभ होकर हानि, निजीजन कष्ट, स्त्री सुख, कारोबार में हानि, मासान्त में कष्टभय। दिसं. १८, १९, २०, २७, २८, २९, जन (९५) ५, ६ अशुभ।

बारह राशियों का मासिक फलादेश (संवत् २०५१ वि.)

राशि	माघ (१४ जनवरी (१९९५) से ११ फरवरी तक)	फाल्गुन (१२ फरवरी से १३ मार्च तक)	चैत्र (१४ मार्चसे १३ अप्रैल तक)
मेष	स्थानान्तर हो, यात्रा हो, आकस्मिक धनहानि, कार्यान्तर से लाभ, चोट भय, वृथा विवाद से बचें, शत्रु बढ़े। ता० जन. २६, २७, फर. (१९९५) ३, ४, ५ अशुभ।	स्थानान्तर व कार्यान्तर का विचार, सेहत गड़बड़ सम्पत्ति विवाद, शत्रु पक्ष से हानि, कार्यान्तर से लाभ, पक्षान्त में धन हानिभय। फर. १३, १४, १५, २२, २३ मार्च ३, ४, १२, १३ अशुभ।	यात्रा हो, सेहत ठीक, अकस्मात हानिभय, सन्तान हेतु विशेष खर्च, कारोबार में लाभ, मासान्त में धन हानि। मार्च १४, २१, २२, ३१, अप्रैल ८, ९, १० अशुभ।
वृष	मन अशान्त, वायु रोग, पराक्रम बढ़े, शत्रु कमजोर, बनते काम में रूकावट, स्त्री पक्ष से परेशानी, गुप्त शत्रु सक्रिय, आर्थिक संकट। ता० जन. १९, २०, २१, २८, २९, फर. ६, ७ अशुभ।	सेहत ठीक, धन हानिभय, असफल योजना, कारोबार में रुकावट, आय से व्यय अधिक। फर. १५, १६, १७, २४, २५, मार्च ५, ६, ७ अशुभ।	नेत्र व शिर पीड़ा, शत्रु से भय, गुप्त चिन्ता, कारोबार कुछ ठीक लेकिन खर्च विशेष। मार्च १५, १६, २३, २४, २५, अप्रै. २, ३, ११, १२ अशुभ।
मिथुन	धनहानि, सेहत ठीक, अपमान भय, मास मध्य में सुख, अर्थ लाभ, मान मिले, आय से व्यय अधिक। ता० जन. २१, २२, २३, ३०, ३१, फर. ८, ९, १० अशुभ।	नेत्र व शिर पीड़ा, गुप्त शत्रु से भय, खर्च विशेष, कारोबार ठीक, मासान्त में खर्च विशेष। फर. १८, १९, २६, २७, मार्च ७, ८, ९ अशुभ।	सेहत ठीक धन लाभ, निजीजन असहयोग, रोग भय, पराक्रम बढ़े, स्त्री सुख, कारोबार कुछ ठीक। मार्च १७, १८, २५, २६, अप्रैल४, ५, १४, १५ अशुभ।
कर्क	उदर विकार, अर्थ लाभ, सन्तान हेतु व्यय अधिक, स्त्रीकष्ट, मास के उत्तरार्ध में अचानक आपत्ति धन हानि, कारोबार कमजोर। जन. १४, १५, १६, २३, २४ २५, फर. १, २, ११ अशुभ।	सेहत ठीक, निजीजन असहयोग, उत्साह बढ़े, स्त्री पक्ष शुभ, रुके काम बनें, खर्च विशेष। फर. १२, २०, २१, २८, मार्च १, २, १०, ११, १२ अशुभ।	अर्थ हानि, नई योजना से लाभ, रोगभय, अचानक कष्ट, कारोबार कुछ ठीक। मार्च १९, २०, २९, ३०, अप्रैल ५, ७, ८ अशुभ।
सिंह	सेहत ठीक, धन लाभ, शत्रुजन्य कष्ट, पैर में चोटभय, स्त्री सुख, मित्र-बन्धु से वैमनस्य, आय से व्यय अधिक। जन. २६, २७, फर ३, ४, ५ अशुभ।	सेहत ठीक, अर्थ हानि, वृथा खर्च, सन्तान पक्ष से चिन्ता, स्त्री सुख, कारोबार अपेक्षाकृत ठीक। फर. १३, १४, १५, २२, २३, मार्च ३, ४, १२, १३ अशुभ।	शरीर कष्ट, धन लाभ, शत्रु बढ़ें, मित्रों से मदद, कारोबार अपेक्षाकृत ठीक। मार्च १४, २१, २२, ३१, अप्रैल ९, १०, अशुभ।
कन्या	सेहत ठीक, अकस्मात् लाभयोग, हिम्मत बढ़ें, योजना से हानि, सन्तान कष्ट, मासमध्य कष्टप्रद, वृथा व्यय, कलह योग। जन. १९, २०, २१, २८, २९, फर. ६, ७ अशुभ।	क्रोध बढ़े, घरेलू झंझट, मन परेशान, कार्यान्तर से लाभ, बुध एवं मंगल के दान से कल्याण। फर. १५, १६, १७, २४, २५, मार्च ५, ६, ७ अशुभ।	धन लाभ, उत्साह वृद्धि, मास मध्य में उचानक हानिभय, शत्रु बढ़ें, स्त्री चिन्ता, आय से व्यय अधिक। मार्च १५, १६, २३, २४, २५, अप्रै. २, ३, ११, १२ अशुभ।
तुला	नेत्र कष्ट, धनहानि, सम्पत्ति विवाद, निजीजनों से वैमत्य, सन्तान पक्ष से सुख, स्त्रीकष्ट, शत्रुवृद्धि, कारोबार ठीक। जन. २१, २२, २३, ३०, ३१ फर. ८, ९, १० अशुभ।	सेहत गड़बड़, आय से व्यय अधिक, उत्साह बढ़े, सन्तान पक्ष शुभ, स्त्री कष्ट, कारोबार ठीक। फर १८, १९, २६, २७, मार्च ७, ८, ९ अशुभ।	वायु रोग, निजीजन सहयोग, नई योजना, स्त्री सुख, कारोबार कुछ गड़बड़, कर्जा चढ़े। मार्च १७, १८, २५, २६, अप्रैल ४, ५, १४, १५ अशुभ।
वृश्चिक	मन चिन्तित, क्रोध बढ़े, उत्साह बना रहे, निजीजन सहयोग, उलझे मसलान हल हों, अपमान भय, मासान्त में लाभ। जन. १४, १५, १६, २३, २४, २५ फर. १, २, ११ अशुभ।	नेत्र व शिर पीड़ा, सम्पत्ति सुख, सन्तान पक्ष से चिन्ता, मास मध्य में आर्थिक लाभ। फर. १२, २०, २१, २८, मार्च १, २, १०, ११, १२ अशुभ।	उदर विकार, अर्थ लाभ, वृथा कलह, सन्तान पक्ष शुभ, शत्रु कमजोर, कारोबार ढीला। मार्च १९, २०, २८, २९, ३० अप्रैल ५, ७, ८ अशुभ
धनु	खर्च अधिक हो, भाई व बन्धुवर्ग से सुख, सन्तान व नई योजना से परेशानी, धन लाभ, कारोबार कुछ ठीक। जन. २६, २७, फर. ३, ४, ५ अशुभ।	उदर विकार, धन लाभ, मित्र से अनबन, सन्तति कष्ट, स्त्री कष्ट, कारोबार कुछ गड़बड़, राहु यंत्र धारण करें। फर. १३, १४, १५, २२, २३, मार्च ३, ४, १२, १३ अशुभ।	सेहत ठीक, धन लभि, शत्रु प्रबल, उत्साह बना रहे कारोबार में रुकावट, कार्यान्तर से लाभ। मार्च १४, २१, २२, ३१, अप्रैल ९, १०, अशुभ।
मकर	वायु रोग, आर्थिक लाभ, होकर हाथ से निकले, सन्तति कष्ट, स्त्रीकष्ट, कारोबार ठीक, मासान्त में खर्च विशेष। जन. १९, २०, २१, २८, २९, फर. ६, ७ अशुभ।	सेहत ठीक, धन लाभ, निजीजन सहयोग, वृथा विवाद से सावधान, शत्रु कमजोर, कारोबार में रुकावट। फर. १५, १६, १७, २४, २५, मार्च ५, ६, ७ अशुभ।	अर्थ लाभ होकर हानि, शत्रु हतप्रत, अपमान भय, पापकर्म में मन, कारोबार यथावत, मासान्त में लाभ। मार्च १५, १६, २३, २४, २५, अप्रै. २, ३, ११, १२ अशुभ।
कुंभ	अरिष्ट भय, शत्रु नाश, सम्पत्ति विवाद, वृथा कलह से बचें, कारोबार गड़बड़ खर्च विशेष हानि भय। जन. २१, २२, २३, ३०, ३१, फर. ८, ९, १० अशुभ।	वायु रोग, धन लाभ, निजीजनों से अनबन, सम्पत्ति सुख, अचानक लाभ, अपमान भय। फर. १८, १९ २६, २७, मार्च ७, ८, ९ अशुभ।	वायु पीड़ा, अर्थ लाभ, निजीजन सुख, यात्रा में कष्ट स्त्री पक्ष से चिन्ता, कारोबार में रुकावट। मार्च १७, १८, २५, २६, अप्रै. ४, ५, १४, १५ अशुभ।
मीन	कारोबार में [illegible], निजीजनों से अनबन, सन्तति कष्ट, अर्थ लाभ, भाग्य साथ	सेहत गड़बड़, अर्थलाभ लेकिन हानि भी हो, स्थाई सम्पत्ति विवाद, स्त्री	सेहत कुछ ठीक, अर्थ लाभ होकर हानि, उत्साह बढ़े, कारोबार से लाभ

कल्पादि से गतवर्ष १९७२९४९०९५, सृष्टि संवत् १९५५८८५०९५, श्री विक्रम संवत् २०५१, शक संवत् १९१६, श्री कृष्ण जन्म संवत् ५२२०, कलि संवत् ५०९५, श्री जैन महावीर निर्वाण संवत् २५१९-२५२०, श्री बुद्ध संवत् २६१७-२६१८, हिजरी सन् १४१४-१४१५, फसली सन् १४०१-१४०२, ईस्वी सन् १९९४-१९९५।

वर्षारम्भ में गुरुमान से विष्णु विंशति का 'सर्वजित्' संवत्सर है; इसका फल शास्त्रों में इस प्रकार लिखा है:-

"सर्वजिद्वत्सरे सर्वे जनास्त्रिदशसन्निभाः।
राजानो विलयं यान्ति वीर-संग्राम-भूमिषु ॥
तोयपूर्णा भवेत्क्षोणी बहुसस्य समन्विता।
सुभिक्षं सुस्थितं सर्वं सर्वजिद्-वत्सरे प्रिये ॥"

अर्थात्–सभी लोग स्वर्गीय-कल्पना के अनुरूप सुख प्राप्त करें, राजा लोग किंवा नेता लोगों में परस्पर कलह एवं युद्धमय वातावरण बने। वर्षा अधिक हो, अनाज एवं पशुओं के लिए चारा पर्याप्त मात्रा में हो, सर्वत्र सुभिक्ष रहे।

किञ्च–"सर्वजिद्वत्सरे ब्रह्मास्वामी, चैत्रादिमासत्रयं समर्घम्, आषाढ़ेऽल्पमेघः, श्रावणे महामेघः, सर्वधान्य रसवस्तु समर्घता, नवीन-मुद्रायाः उदयः, राजविग्रहः परस्परम् अन्न-महर्घता, भाद्रपदे दिनपञ्चपश्चान्महती वृष्टिः, आश्विने रोगार्तिः, सर्वधान्य समर्घता, कार्तिके राजा राज्यं करोति, प्रजा सुखी, अन्नं समर्घम्, मार्गशीर्ष-पौषौ उत्तमौ, सर्वलोक सुखम्, माघमासे मेघो दिनत्रयः, मंजिष्ठा, मुहरा, मरिचं, शुण्ठी, पिप्पली, पूगीप्रमुखं महर्घम्, फाल्गुने सर्ववस्तु-रस समता, उत्तमः समयः॥"

इस वर्ष का राजा (ग्रह परिषद् का प्रधान) चन्द्र एवं मन्त्रीबुध है। सस्येश (चौमासी फसलों के स्वामी) शनि, धान्येश (शीतकालीन फसलों के स्वामी) गुरु, मेघेश (वर्षा पानी के स्वामी) बुध, रसेश (गुड़ खण्ड रसकस आदि के स्वामी) चन्द्र, नीरसेश (सर्वविध धातु एवं व्यापार आदि के स्वामी) शनि, फलेश (फलफूल आदि के स्वामी) मंगल, धनेश (धन दौलत एवं खजाने के स्वामी) शुक्र तथा दुर्गेश (सुरक्षा किंवा प्रतिरक्षा के स्वामी) मंगल हैं।

(१) राजा चन्द्र का फल–

"चन्द्रे नृपे मंगल शोभनानि प्रभूतवृष्टिः प्रचुरं च धान्यम्।
सौख्यं जनानामुदयो नृपाणां प्रशाम्यति व्याधिजरा नराणाम् ॥"

अर्थात्–प्रजा में आनन्द मंगल रहे, वर्षा बहुत हो, अनाजों की फसल अच्छी हो, जनता में परस्पर स्नेह सद्भाव रहे, नए शासकों एवं राजनीतिज्ञों का उदय हो जनता निरोग रहे।

(२) मन्त्री बुध का फल–

"राज्ञां सुदृष्टि र्बहुलान्न वृष्टिः सच्छास्त्र-वृद्धि र्धनिनां समृद्धिः।
पत्यावतिस्नेहररता युवत्यः बुधे पुनर्मन्त्रिणि रागसिद्धिः ॥"

अर्थात्– शासकों की जनता पर स्नेह दृष्टि रहे, वर्षा अधिक एवं अनाज अधिक मात्रा में हों। ज्ञान-विज्ञान का क्षेत्र बढ़े, व्यापारी-धनिक वर्ग प्रगति करें। पति-पत्नी वर्ग में स्नेह सद्भाव बढ़े।

(३) सस्येश शनि का फल–

"अग्नि चौराकुला पृथ्वी महाव्याधि प्रपीड़िता।
मृत्यु रोगभयं युद्धं वर्षे सस्याधिपे शनौ ॥"

राजशाही देशों में जनता शासकों से परेशान हो, अग्निकाण्डों से हानि, चोरी की घटनाएं अधिक हों, दुर्घटना में जनहानि एवं कुछ देशों में युद्ध का वातावरण बने।

(४) धान्येश गुरु का फल–

"गुरौ धान्यपतौ जाते यवगोधूम शालयः।
पच्यन्ते सर्व देशेषु यज्वानो ब्राह्मणादयः ॥"

अर्थात्–जौ, गेहूँ, चावल आदि अनाजों की फसल अच्छी हो, सभी लोग अपने-अपने कार्य में तत्पर रहें, धार्मिक कृत्य भी हों।

(५) मेघेश बुध का फल–

"सौम्ये मेघस्वामिनि वृष्टिर्बहुला जनानन्दः।
लिपि-लेख काव्य, गणित-ज्ञाति सुखं सस्य सम्पदपि ॥"

वर्षा अधिक हो, लोग आनन्दित हों, लिपि लेखक (क्लर्क), काव्य-नाटक लेखक एवं गणितज्ञों को सुविधा एवं सम्मान मिले किंवा सम्पत्ति लाभ हो।

(६) रसेश चन्द्र का फल–

"सति विधौ रसपे भुवि मानवो नवनवां युवतीं बुभुजे प्रियाम्।
जलधरा बहुवारिधि धारका रसवती धनधान्यवती मही ॥"

जनता भोगविलास में मग्न रहे; बादल अधिक वर्षाकारक हों, पृथ्वी पर (गोदुग्ध, घी, गुड़ आदि) रस अधिक हों, सर्वविध अनाज एवं धन समृद्धि रहे।

(७) नीरसेश शनि का फल–

"अयः पिण्डादि लोहानां कृष्ण वस्त्रादि वस्तुनाम्।
अर्घवृद्धिः प्रजायेत मन्दे नीरस नायके ॥"

लौह निर्मित मशीनरी किंवा कच्चे लोहे की कीमतें बढ़ें। काली वस्तुएं एवं वस्त्रों के मूल्य बढ़ें।

(८) फलेश मंगल का फल–

"फलपतिर्यदि भूतनयो भवेन्न बहु पुष्प फलान्वित पादपाः।
गदभयान्वित देशजनास्तदा नृपतयो बहु विग्रह कारकाः ॥"

अर्थात्–फल फूल कम हों, रोग से जनता दुःखी एवं शासकवर्ग में परस्पर तनाव किंवा कुछ

देशों में युद्ध का वातावरण बने।

(९) धनेश शुक्र का फल–

"द्रविणपो भृगुजो द्रविणैर्युताः समधनाः सफला ननु मानवाः।
समसुखाः क्रय विक्रय जीविनो नृपतयो जन पालन तत्पराः ॥"

सभी लोग धन धान्य से समृद्ध सुखी रहें, व्यापारी वर्ग सुखी एवं शासक वर्ग कर्त्तव्य परायण रहे।

(१०) दुर्गेश मंगल का फल–

"अवनिजो गढनायकतां गतो विविध दुःख वियोग समन्विताः।
जनपदेषु जनाः क्रय-विक्रये भयविशेषतया न फलं क्वचित् ॥"

जनता नानाविध दुःखों से परेशान किंवा प्रियजन-वियोग से ग्रस्त रहे। खरीदो-फरोख्त किंवा व्यापार (सरकार की नीति या अन्यविध किसी) भय विशेष से व्यापारी वर्ग उचित लाभ न उठा सके।

सूचना–यद्यपि वर्ष के इन दशाधिकारियों का फल सर्वत्र होता है; किन्तु विशेषतः राजा का फल काश्मीर, अफगानिस्तान एवं बराड़ देश में, मन्त्री का फल आन्ध्र, वाल्हीक, उज्जैन एवं मालवा में, सस्येश का पौण्ड्र, विदर्भ में, धान्येश का गुजरात, नर्मदा के निकटवर्ती प्रदेशों एवं मध्यप्रदेश में, मेघेश का मगध एवं बंगाल में, रसेश का कोंकण एवं गोवा में, नीरसेश का मालवा व विहार में, धनेश का राजस्थान एवं मारवाड़ में, फलेश-दुर्गेश एवं राजा का फल सब जगह विशेष होता है।

चतुर्मेघों में 'पुष्कर' नामक मेघ का फल–

कन्दमूल की फसलों को हानि, वर्षा की भी कुछ प्रान्तों में विशेष कमी रहे; "पुष्करे मन्दवृष्टिश्च"।

नवमेघों में 'आवर्त' नामक मेघ का फल–

अनाज, कपास की खड़ी फसलों को हानि पहुंचे। घी-तेल मंहगे हों। कुछ प्रान्त सूखाग्रस्त रहें। –"आवर्ते विनिवृष्टिः स्यात्।"

बारह नागों में 'नरेन्द्र' नामक नाग का फल–

यह नाग शुभ माना गया है, वर्षा कुछ स्थानों पर काफी हो;–"यत्र संवत्सरे नागो नरेन्द्रो नामतः शुभः।
तदा स्यान्निखिला पृथ्वी प्रभूत जलपूरिता ॥"

अष्टनागों में शंख नामक नाग का फल–

जल पर्याप्त मात्रा में बरसे देश प्रगति के पथ पर अग्रेसर हो।

वायु, झंझावात, चक्रवात किंवा समुद्री तूफान आदि से कुछ भू भाग पर जनधन हानि हो।

रोहिणी का वास–

इसवर्ष रोहिणी का वास 'समुद्र' में है; फल–

"यदा पयोनिधि स्थले गतं विरञ्चिभं तदा।
अतीव वर्षणं भवेत् समस्त धान्य वर्धनम् ॥"

अर्थात् वर्षा अधिक हो, समुद्र में रोहिणी वास होने से बहुत जल चाहने वाले अन्न, चावलादि की उत्पत्ति अधिक हो। न्यून वर्षा वाले बागड़ (राजस्थान) आदि प्रान्तों में भी आगे पीछे वर्षा से कृषकों को सहारा मिले।

समय का वास–

इस वर्ष समय का वास 'माली' के घर है।

फल–वर्षा अधिक हो; –"मालिनि प्रचुरा वृष्टिः।"

संवत् का वाहन–इस वर्ष संवत् का वाहन '**मृग**' है। विश्व में नए राजनैतिक-समीकरण बनेंगे, नई योजनाएं एवं स्त्री-दलित वर्ग के अभ्युन्थान पर विशेष ध्यान दिया जाएगा।

शनि की दृष्टि–

इस संवत् में शनि की दृष्टि उत्तरी गोलार्ध के देशों पर है। फल–उत्तरी भू-भाग में स्थित देशों में युद्धविभीषिका बने। उत्तरी गोलस्थ देशों में कहीं भूकंम्प, समुद्री-तूफान, झंझावात, दुर्भिक्ष, अग्निकाण्डदि प्राकृतिक प्रकोप से भयंकर जनधन हानि, किसी विशिष्ट व्यक्ति के निधन से शोक आदि नेष्ट फल इस वर्ष शनि की उत्तर दिशा में दृष्टि होने से संभावित है।

"शनैश्चरः क्रमात्पश्यन् तत्तद्देशान् प्रपीड़येत्।
दुर्भिक्ष-देश भङ्गाद्यैः विग्रहो राजविड्वरैः ॥"

इस वर्ष सोमवती आमावस्याएं दो हैं;–भाद्रपद एवं माघ में। **भौमवती अमावस एक ही है** :–वैशाख में। इसवर्ष **शनैश्चरी अमावस का अभाव है।**

वर्षा आदि के विश्वामान–वर्षा विश्वा ७, धान्य १७, तृण ११, शीत ९, तेज ११, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, क्षुधा १५, तृषा ५, निद्रा ५, आलस्य ३, उद्यम ११, शान्ति ७, क्रोध १३, दम्भ ५, लोभ ३, मैथुन १५, रस ९, फल १३, उत्साह ११, उग्रत्व ३, पाप १५, पुण्य १७, व्याधि १३ व्याधिनाश ७, आचार ३, अनाचार ५, मृत्यु १७, जन्म ७, देशोपद्रव ११, देशस्वास्थ्य १५, चौरभय ३, चौरनाश ११, अग्निभय ७, अग्निशान्ति ९, उद्भिज्ज ११, जराभुज ३, अण्डज ९, स्वेदज १५, टिड्डी ७, तोता १९, मूषक १५, सोना ३, तांबा ११, स्वचक्र ५, परचक्र ३, वृष्टि १९, वृष्टिनाश ९ एवं संवत् विश्वा ९ है।

इस वर्ष के चार स्तम्भ–

(२) **वायु स्तम्भ**–(ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिर नक्षत्र) ९४ प्रतिशत है।

(३) **तृण स्तम्भ**–(वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र) ५ प्रतिशत है।

(४) **अन्न स्तम्भ**–(आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र) ८२ प्रतिशत है।

फल–वर्षस्तम्भ बहुत महत्त्वपूर्ण हैं क्योंकि सारा वर्ष जलवायु तृण अन्न पर ही आधारित है। जल स्तम्भ एवं तृणस्तम्भ इसवर्ष अत्यधिक क्षीण है। संकेत मिलता है, कि इस संवत् में वर्षा की कमी रहेगी, कुछ क्षेत्र अकाल ग्रस्त होंगे। अनेकत्र प्राकृतिक-प्रकोप से खड़ी फसलों को हानि पहुंचेगी। वायु एवं अन्न स्तम्भों की स्थिति ठीक होने से अनाज पर्याप्त मात्रा में होंगे। वायु का जोर रहेगा, अनेकत्र वर्षा की कमी होने पर भी अनाजों की कमी शासन अनुभव न होने देगा। तूफान किंवा भयंकर समुद्री तूफान से भयंकर जनधन हानि के समाचार भी मिलेंगे।

आर्षमान विचार (वर्षरक्षा के लिए चार दुर्ग)–

(१) **प्रथम आर्ष**–(अक्षय तृतीया को रोहिणी नक्षत्र) ९ प्रतिशत है।

(२) **द्वितीय आर्ष**–(सं. २०५० वि. में पौष अमा को मूल नक्षत्र) का अभाव है।

(३) **तृतीय आर्ष**–(श्रावण शुक्ल पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र) १६ प्रतिशत है।

(४) **चतुर्थ आर्ष**–(कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा को कृत्तिका नक्षत्र) ४० प्रतिशत है।

फल–आर्षमान विचार से यह वर्ष विशेष सामाजिक एवं राजनैतिक उलझनों वला मालूम देता है। प्रथम आर्ष ९ प्रतिशत एवं द्वितीय आर्ष का अभाव तथा तृतीय आर्ष का १६ प्रतिशत होना, देश की आन्तरिक एवं विदेश नीति से सम्बन्धित सीमाविवाद, वैज्ञानिक प्रगति सम्बन्धी कुछ उलझनें उजागर होंगी। कहीं सीमा प्रान्तों पर युद्ध की विभीषिका बनेगी। कहीं भयंकर रोग किंवा प्राकृतिक प्रकोप से भी जनता में परेशानी पैदा होगी। कार्तिक मास में कुछ समस्याओं का समाधान होने लगेगा।

दोहा–"अखै तीज रोहिणी न होई पौष अमावस मूल न जोई। राखी श्रवणों हीन विचारों कार्तिक पुन्यों कृत्तिका टारौ। महीमांह खलवली प्रकाशै, कहै भड्डली साख विनाशै ॥"

शरत्सस्य जातक–

इसवर्ष वृष संक्रान्ति १५ मई १९९४ ई० को १ घं. २३ मि (भा. स्टै. टा.) पर लग रही है।

शरत्सस्य कुण्डली के अनुसार चन्द्र पर वृहस्पति की दृष्टि होने से रबी की फसल अच्छी होगी। सूर्य-शुक्र-बुध ये तीनों एकत्र होने से खरीफ की फसल अच्छी होगी। लेकिन शनि-मंगल की स्थिति को ध्यान में रखते हुए सरकार मंहगाई को कम करने में असमर्थ रहेगी।

शरत् सस्य कुण्डली

म. १२, १०, १, ११ श., ९, के., शु. २ सू०, ८, चं., बु., रा., ७, ३, ४, ५, ६, गु.

ग्रीष्म सस्य जातक–इस वर्ष वृश्चिक संक्रान्ति १६ नवम्बर १९९४ ई० को १९ घं. ४२ मि. (भा. स्टै. टा.) पर लग रही है। ग्रीष्मान्न कुण्डली के अनुसार वृश्चिकस्थ सूर्य, गुरु के सन्निकर्ष में है, बुध-शुक्र दोनों सूर्य से बारहवें हैं अतः ग्रीष्मधान्य की उतपत्ति पर्याप्त मात्रा में होगी। सूर्य से केन्द्रस्थ क्रूरग्रह होने से कुछ भागों में ग्रीष्मधान्य की खड़ी फसलों को हानि पहुंचेगी। प्राकृतिक आपदा से भी ग्रीष्मधान्य को हानि पहुंचे। चन्द्र पर शनि, राहु की दृष्टि है, अतः ग्रीष्मान्न पर्याप्त मात्रा में होने पर भी मंहगाई उत्तरोत्तर बलवती होगी।

ग्रीष्म सस्य कुण्डली

के. चं., श. ११, २, १२, १०, ३, ९, म., गु., ४, ६, ८ सू, ५, बु. रा. शु. ७

नववर्ष प्रवेश–गतसंवत् २०५० वि. में चैत्र कृष्ण अमावस रविवार तदनुसार ११ अप्रैल सन् १९९४ ई. को प्रातः ५ बजकर ४९ मि. (भा. स्टै. टा.) (५९ घटी २० पल इष्ट) पर रेवती नक्षत्र एवं वैधृति योग में मीन लग्न में संवत् २०५१ का शुभारम्भ होगा।

नववर्ष प्रवेश कुण्डली

शु. १, ११ श., सू., म. १२ चं., बु., के. २, १०, ३, ९, ४, ६, ८ रा., ५, गु. ७

फल–दक्षिण दिशा में राजनैतिक उलझनों के बावजूद भी जनता में अमनचैन बना रहे। मध्यप्रदेश के किसी भाग में खड़ी फसल को प्राकृतिक प्रकोप से हानि पहुंचे। कहीं किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पदरिक्त होगा।

"मीन लग्ने दक्षिणस्यां सुखी लोकोन्नसंग्रहः।
मध्यदेशे धान्यनाशः छत्रभङ्गः क्वचिद् भवेत् ॥"

वर्ष प्रवेश कुण्डली में लग्न में सूर्य-मंगल चन्द्र -बुध के एकत्र होने से वर्ष में प्राकृतिक आपदा से कुछ स्थानों पर जनधन की हानि होगी, खड़ी फसलों को नुकसान होगा। देश की नई योजनाओं में गतिरोध पैदा होगा। राजनैतिक स्थिति में स्थिरता रहे, परन्तु पार्टियों में आन्तरिक कलह, विवाद बढ़ेंगे। प्रगतिप्रद नई योजनाएं बनेंगी। राष्ट्र की प्रगतिहेतु राष्ट्रनायक कृतसंकल्प दिखाई देंगे।

जगत् लग्न कुण्डली

बु. १२, सू., म., ११, शा., १०, शु. १, ९, चं., २ के., रा., ८, ३, ५, ७, ४, गु., ६

वर्षेश (जगत्) लग्न–

संवत् २०५१ वि. में चैत्रशुक्ल द्वितीया (तात्कालिक तृतीया) बुधवार को कृत्तिका नक्षत्र एवं आयुष्मान् योग के समय ५६ घटी ८ पल पर १४ अप्रैल को प्रातः ४ बजकर ३० मि० पर वृषस्थ चन्द्र के समय कुम्भ लग्न में सूर्यदेव मेष राशि में प्रविष्ट होंगे।

फल–वर्षेश कुण्डली में शनि-राहु-केतु केन्द्र में हैं, अतः विश्व के अनेक देशों में अघटित घटनाचक्र चलेगा। कहीं आन्तरिक अशान्ति, कहीं प्राकृतिक प्रकोप से खड़ी फसलों को हानि पहुंचे। कहीं अग्निकाण्ड, वायुवेग, बाढ़ किंवा कहीं दक्षिण में अतिवर्षण से, कहीं वर्षा की कमी से धनमाल की हानि के समाचार मिलें। इस वर्ष वैशाख, आषाढ़, आश्विन-कार्तिक एवं फाल्गुन मास विशेष घटनापूर्ण होंगे।

जगत्लग्न से व्यक्तिगत फल विचार–जन्म कुण्डली में लग्न बलवान् हो तो जन्म-लग्न से, चन्द्र बलवान् हो तो जन्म राशि से जगत्लग्न जिस स्थान में आए, वह भाव शुभ ग्रह या स्वामी से दृष्ट या युक्त हो तो वर्ष में उस भाव की वृद्धि कहनी चाहिए। यदि पापी ग्रह की दृष्टि या योग हो तो उस भाव की हानि कहें। जन्मलग्न, जन्मराशि और अपने वर्ष प्रवेशलग्न से वर्षेश लग्न (जगत्-लग्न) आठवें, बारहवें हो तो यह वर्ष उस व्यक्ति के लिए शुभ नहीं होगा। इसी प्रकार देश एवं ग्राम के शुभाशुभ विचार के लिए भी समझना चाहिए।

आर्द्रा प्रवेश लग्न–

विक्रमी संवत् २०५१ में ज्येष्ठशुक्ल पक्ष चतुर्दशी बुधवार (तदनुसार २२ जून १९९४ ई.) को ५ घटी ३२ पल (७ घण्टा ३७ मिनट भा. स्टै. टा.) पर ज्येष्ठा नक्षत्र एवं शुभ योग में तात्कालिक-वृश्चिकस्थ चन्द्र के समय कर्क लग्न में सूर्यदेव आर्द्रा नक्षत्र में प्रविष्ट होंगे।

आर्द्रा प्रवेश कुण्डली

५ | ४ शु. | ३ सू. बु.
६ | २
गु. ७ रा. | मं. १ के.
८ चं. | १० | १२
९ | श. ११

फल–सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में सूर्योदय के बाद ७ बजकर ३७ मिनट पर प्रवेश करेगा; अतः किसी रोग विशेष से जनता को परेशान होना पड़ेगा। कहीं शासक वर्ग में आपसी तनाव व कहीं सीमाप्रान्तों पर हलचल रहे; –"सूर्योदये रोगकरी स्मृतार्द्रा घटीद्वये विग्रहरोग योगः।" आर्द्राप्रवेश चतुर्दशी को होने से सम्पूर्ण धान्य एवं वस्त्र मंहगे हों। ज्येष्ठा नक्षत्र के समय सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश जनता में किसी कारण विशेष आतंक का कारण बनता है, जनता त्रस्त रहती है;–

"इन्द्रभे चन्द्रसंयुक्ते सविता रौद्रगो यदि।
तदा सकललोकानां जायते प्रचुरं भयम् ॥"

शुभयोग में सूर्य का आर्द्राप्रवेश आगे अच्छी वर्षा का संकेत देता है।

गुर्राफल–(i) गत संवत् २०५० वि. में आषाढ़ शुक्ल तृतीया, तदनुसार २२ जून १९९३ ई. मंगलवार को हिजरी सन् १४१४ आरम्भ हुआ।

फल–कुछ स्थानों पर दुर्भिक्ष की स्थिति बने। खेती को हानि, वर्षा, बाढ से दक्षिण-उत्तर में विनाश, पशुओं में भयंकर रोग फैले, प्राकृतिक-प्रकोप से हानि, गुड़-अनाज महंगे हों, कुछ स्थानों पर अग्निकाण्ड से हानि हो।

(ii) संवत् २०५१ वि. में ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष तृतीया तदनुसार १२ जून सन् १९९४ ई. को इतवार

फल–वर्षा पानी पर्याप्त मात्रा में हो, अनाज सस्ते रहें, सूखे मेवे भी सुलभ हों, शासक दत्तचित्त होकर काम करें। पशुओं में रोगनाश हो, प्रजा सुखी रहे, परन्तु कुछ स्थानों पर वायुवेग से हानि हो, स्त्रियों के वक्षः स्थल सम्बन्धित रोग अधिक हों। गेहूं, जौ एवं कपास की फसल अच्छी हो।

आय-व्यय चक्र (विंशोत्तरीमतानुसार)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
आय	११	५	११	५	८	११	५	११	८	२	२	८
व्यय	१४	८	५	२	१४	५	८	१४	५	८	८	५

आय-व्यय देखने की विधि–अपनी राशि के आय-व्यय अंकों को जोड़कर उसमें से १ घटाकर शेष को ८ से भाग देने पर यदि १, २, ६, ७ बचे तो वर्ष में उत्तम लाभ हो। यदि ३, ४, ५ किंवा ० बचे तो लाभ बहुत कम हो, चिन्ता भी रहे।

"इतीदं वत्सर फलं वत्सरादितिथौ शुभम्।
यः शृणाति नरो भक्त्या स सुखी वत्सरं भवेत्।"

आपकी ज्योतिषशास्त्रीय समस्याओं का समाधान

सिद्धान्त (गणित) ज्योतिष एवं फलित-ज्योतिष से सम्बद्ध जो कोई शास्त्रीय समस्या आपको उलझाती है, अथवा इस पंचाग की गणित, फलित, व्रत-पर्व, मुहूर्त्त आदि के बारे में आपको कोई शंका या अस्पष्टता है–इन सबके लिए मुझे पत्र दीजिए– इनका समाधान पत्र द्वारा किया जाएगा। एतदर्थ कोई शुल्क नहीं हैं। उत्तर के लिए मैं इस विषय में किसी प्रकार से प्रतिबद्ध नहीं होना चाहता; समय की अल्पता के कारण सभी पाठकों के प्रश्नों एवं समस्याओं का पत्र द्वारा उत्तर भेजना संभव नहीं है, पुनरपि यथाशक्य अधिकाधिक जिज्ञासुओं को सन्तुष्ट करने का प्रयास करता हूँ। श्री मार्त्तण्ड पंचांग की गणित आदि से सम्बद्ध प्रश्नों के उत्तर तो अनिवार्य रूप से दिए जाते हैं।

ध्यान दें–अपने ज्योतिषसम्बन्धी वैयक्तिक (जन्मपत्र, वर्षफल, आदि) कार्यों के लिए कृपया मुझे पत्र न दें, और न ही इनके लिए मेरे नाम पर फीस वगैरह ही भेंजे। मैं ज्योतिष का व्यवसाय नहीं करता हूँ। इनके लिए, यदि आप चाहें तो, "मार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय, P.O. कुराली (रोपड़) (पंजाब)" से सम्पर्क कर सकते हैं।

कर्मकाण्ड से सम्बद्ध प्रश्न समस्याएं मुझे मत भेजिए. यह मेरा विषय नहीं है।

प्रो. प्रियव्रत शर्मा
कोठी नं. ५९ (अभिजित्), सैक्टर-६

संदिग्ध-व्रत-पर्व-व्यवस्था (सं. २०५१ वि.)

लेखक–प्रियव्रत शर्मा, कोठी नं. ५९ (अभिजित्), सैक्टर ६, P. O. पंचकूला (हरियाणा)

(इस स्तम्भ द्वारा उन सभी व्रत-पर्वों की तिथि (तारीख) के निर्धारण का शास्त्रीय आधार स्पष्ट किया जात है, जिनके निर्णायक वचन शास्त्रों में या तो परस्पर विरोधी प्रतीत होते हैं या अस्पष्ट हैं। यदि इस स्तंभ के अन्तर्गत व्रत-पर्वों तथा अन्य किसी भी व्रत-पर्व की तिथि के बारे में किसी पाठक को कुछ संदेह या शंका हो तो उसे ऊपर लिखे पत्ते पर पत्र देकर मुझसे स्पष्टीकरण मांग लेना चाहिए। – प्रियव्रत शर्मा)

चैत्र-नवरात्रारम्भ

इस वर्ष चैत्रशुक्ल प्रतिपदा की वृद्धि है। सं. २०५० वि. की चैत्र कृष्ण अमावस के दिन रविवार को ५९ घ. २० प. पर प्रारंभ होकर वह वि. सं. २०५१ की चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को मंगलवार के दिन ५ घटी ५२ पल पर समाप्त हो रही है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा में नवरात्रारम्भ, कलशस्थापन किया जाता है। इसके लिए ग्राह्य माना है। यदि दूसरे दिन एक मुहूर्त के लिए भी प्रतिपदा प्राप्त हो तो नवरात्रारम्भ, कलशस्थापन उसी दिन प्रातः करने का शास्त्र-निर्देश है। देवीपुराण का वाक्य है–

"अमायुक्ता न कर्त्तव्या प्रतिपच्चण्डिकार्चने।

मुहूर्त्तमात्रा कर्त्तव्या द्वितीयायां गुणान्विता।।" (देवीपुराण)

एक मुहूर्त से कम यदि प्रतिपदा हो, या प्रतिपदा का क्षय हो, तब शास्त्रकारों ने नवरात्रारम्भ के लिए अमाविद्धा प्रतिपदा को ग्राह्य लिखा है। लेकिन यदि प्रतिपदा की वृद्धि हो (अर्थात् वह दो दिन सूर्योदय का स्पर्श करे) तब पहले दिन (षष्टि घट्यात्मक प्रतिपदा के दिन) ही नवरात्रारम्भ करना चाहिए-ऐसा निबन्धकारों का निर्णय है। शुद्धा या पूर्णा (षष्टिघटीव्यापिनी) प्रतिपदा को छोड़कर दूसरे दिन द्वितीया विद्धा में नवरात्रारम्भ करना सर्वथा शास्त्र-विरुद्ध है। शुद्धा तिथि के अभाव में ही युग्मवाक्य (पूर्वविद्धा या परविद्धा की ग्राह्याग्राह्यता का निर्णय करने वाले वाक्य) स्वीकार किए जाते हैं;–यह ध्यान रखना चाहिए। नागोजिभट्ट ने यही बात स्पष्ट रूप से कही;–

तत्र पूर्णायामसंदेहात् सखण्डा निर्णेया।

वीरमित्रोदय के 'समय प्रकाश' में भी यही बात स्पष्ट का है;–

"तत्र सम्पूर्णा एकदिनमात्रे सत्त्वात्तिथि-प्रयुक्तस्य कार्यस्य इतरदिने ऽप्रसक्तेः सन्देहाभावात् न निर्णेया।"

अर्थात् पूर्णा तिथि में तत्सम्बद्ध व्रतपर्व का अनुष्ठान करने के बारे में कोई सन्देह (दो मत) नहीं है। अतः सखण्डा (एक ही सूर्योदय का स्पर्श करे वाली) तिथि के बारे में ही निर्णय करना होगा)। खण्डा तिथि जब दो दिन कार्यकालव्यापिनी हो या दोनों दिन कार्यकाल को व्याप्त न करे तब पूर्वविद्धा या परविद्धा तिथि की ग्राह्यता का निर्णय युग्मवाक्यों द्वारा किया जात है। "अमुक तिथि अमुक व्रतपर्व के लिए पूर्वविद्धा ली जाए या पर विद्धा"– यह निर्णय करने वाले वाक्य, "युग्मवाक्य" कहलाते हैं।–"अमायुक्ता न कर्त्तव्या प्रतिपच्चिण्डिकार्चने। मुहूर्त मात्रा कर्त्तव्या"–यह वाक्य भी युग्मवाक्य ही हैं। "शुद्धा या पूर्णा (षष्टिघटीव्यापिनी) तिथि के होने पर युग्मवाक्यों की प्रवृत्ति नहीं होती। उस स्थिति में व्रतपर्वादि के लिए शुद्ध तिथि को ही स्वीकार किया जाता है;–यह सभी निबन्धकारों का मत है। धर्मसिन्धुकार ने भी यही बात इस प्रकार कही है–

"तिथि र्द्विविधा पूर्णा सखण्डा च। सूर्योदयम् आरभ्य षष्टि–नाडिकाव्याप्ता पूर्णा। एतदन्या सखण्डा। विद्धाश्च तिथयः क्वचित्कर्मणि ग्राह्याः, क्वचिच्च त्याज्या भवन्ति। तत्र संपूर्णा शुद्धा च तिथिः प्रायेण निर्णयं नापेक्षते, सन्देहाभावात्। . . . दिनद्वये कर्मकालव्याप्तौ, अव्याप्तौ, तदेकदेश व्याप्तौ वा युग्मवाक्यादिना पूर्वविद्धायाः परविद्धाया वा तिथेः ग्राह्यत्वम्।"
–(धर्मसिन्धु)

शुद्धा तिथि क्योंकि एक सूर्योदय से लेकर दूसरे सूर्योदय तक विद्यमान रहती है, अतः वह उस दिन (पूरे अहोरात्र काल में) किसी भी तिथि से विद्ध नहीं होती तथा च वह उस दिन अभीष्ट व्रतोपवासादि के कार्यकाल को पूरी तरह (निरवशेषरूपेण) हर हालत में व्याप्त भी करती है, अतः उसे तत्सम्बद्ध (उस तिथि से सम्बद्ध) व्रतोपवासादि के लिए बिना किसी तर्क-वितर्क के स्वीकार कर लेना चाहिए–यह सभी धर्मशास्त्रकारों ने एकमत्या प्रतिपादित किया है।

सभी व्रतपर्वों के निर्णय के लिए पूर्वविद्धा तिथि की ग्राह्यता–अग्राह्यता का निर्देश करने वाले वाक्य धर्मशास्त्रों में प्राप्त हैं। लेकिन उनका अर्थ यह समझना भारी भ्रान्ति होगी, कि–संपूर्ण (शुद्धा) तिथि उन सब व्रतपर्वों के लिए अग्राह्य है। संपूर्ण तिथि की उपलब्धि के अभाव में ही ये युग्मवाक्य (पूर्वविद्धा–परविद्धा तिथि की ग्राह्या ग्राह्यता का निर्देश करने वाले वाक्य) प्रयोग में लाने चाहिएं–यह बात धर्मशास्त्रकारों, निबन्धकारों ने बहुत स्पष्ट रूप से कही है। हां, यदि शुद्धा तिथि किसी विशेष व्रतपर्व के लिए अग्राह्य हो तो उसका स्पष्ट निर्देश धर्मशस्त्रकारों ने कहां कर दिया है। लेकिन इस प्रकार के एकादशी आदि व्रतपर्व अत्यन्त ही विरल (गिने चुने ही) हैं।

मीमांसक नागोजिभट्ट ने अपने 'तिथि निर्णय' के 'नवरात्रारम्भ प्रकरण' में स्पष्टरूप से कहा है, कि–यदि प्रतिपदा पूर्णा (षष्टि घट्यात्मिका) हो तो उसी दिन अपराह्ण में कलश–स्थापनादि करना चाहिए–

"यदा तु संपूर्णा प्रतिपत् तदा आद्याः षोडश नाडीः त्यक्त्वा अपराह्ण एव कलश–स्थापनादि पूजोपक्रमः"–(तिथि निर्णयः)

'देवी पुराण' का यह वाक्य भी देखिए, जो शुद्धा प्रतिपदा में ही नवरात्रारंभ करने का स्पष्ट निर्देश कर रहा है–

"शुद्धे तिथौ प्रकर्त्तव्यं प्रतिपच्चोर्ध्वगामिनी।

आद्यास्तु नाडिका स्त्यक्त्वा षोडशद्वादशापि वा।।

अपराह्णे च कर्त्तव्यं शुद्धे सन्तति-कांक्षिभिः।" (देवीपुराण)

किञ्च–कुछ ऐसे वाक्य भी उपलब्ध हैं, जो नवरात्रारम्भ के लिए द्वितीया-विद्धा प्रतिपदा को बहुत अशुभ बतलाते हैं। वे वाक्य ये हैं;

"द्वितीयाशेष-संयुक्ता प्रतिपच्चण्डिकार्चने।

मोहादथोपदेशाद्वा कृता पुत्रविनाशकृत्।।"

तथाच–

"द्वितीयादि कलोपेता प्रतिपच्चण्डिकार्चने।
वर्जनीया प्रयत्नेन विषलेशो यथाम्भसि।।"

इन वाक्यों पर 'पुरुषार्थचिन्तामणि' 'धर्मसिन्धु' एवं "कृत्यसार समुच्चयं" आदि के रचयिता मीमांसकों ने यह निर्णय दिया है कि "द्वितीया-विद्धा प्रतिपदा में नवरात्रारम्भ का निषेध करने वाले ये वाक्य यह बतलाते हैं, कि–जब प्रतिपदा शुद्धा (षष्टि घट्यात्मिका) हो तब द्वितीया विद्धा प्रतिपदा में नवरात्रारम्भ नहीं करना चाहिए, अपितु उस स्थिति में शुद्धा प्रतिपदा में ही नवरात्रारम्भ करना शास्त्रीय है।"

इसी अभिप्राय का धर्मसिन्धुकार का नवरात्रारम्भ प्रसङ्ग में यह वचन देखिए:–

"प्रथम दिने षष्टिघटिका प्रतिपद् द्वितीय-दिने मुहूर्त्तद्वयादि परिमिता वर्तते, तदा पूर्णत्वात् पूर्वैव ग्राह्या। द्वितीया-वेध-निषेधोऽपि एतत्पक्ष एव योज्यः।–(धर्मसिन्धुः)

'कृत्यसार समुच्चयंकार म. म. अमृतनाथ ने भी स्पष्टरूप से शुद्धा प्रतिपदा में ही नवरात्रम्भ का निर्देश किया है। उन्होंने एक कलिपुराण के वाक्य द्वारा यह स्पष्ट किया है, कि शुद्धा तिथि का ऊर्ध्वगामी (द्वितीय सूर्योदय के बाद आने वाला) काल "तिथि का मल" कहलाता है। अतः एकादशी को छोड़कर उसे (तिथिमल को) अन्य किसी भी व्रत के लिए स्वीकार नहीं किया जाता। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया है कि द्वितीया-विद्धा प्रतिपदा में नवरात्रारम्भ का निषेध करने वाले वाक्य पूर्णा प्रतिपदा तिथि के मल में नवरात्ररम्भ का निषेध करने के लिए लिखे गए हैं। उनका यह वाक्य देखिए–

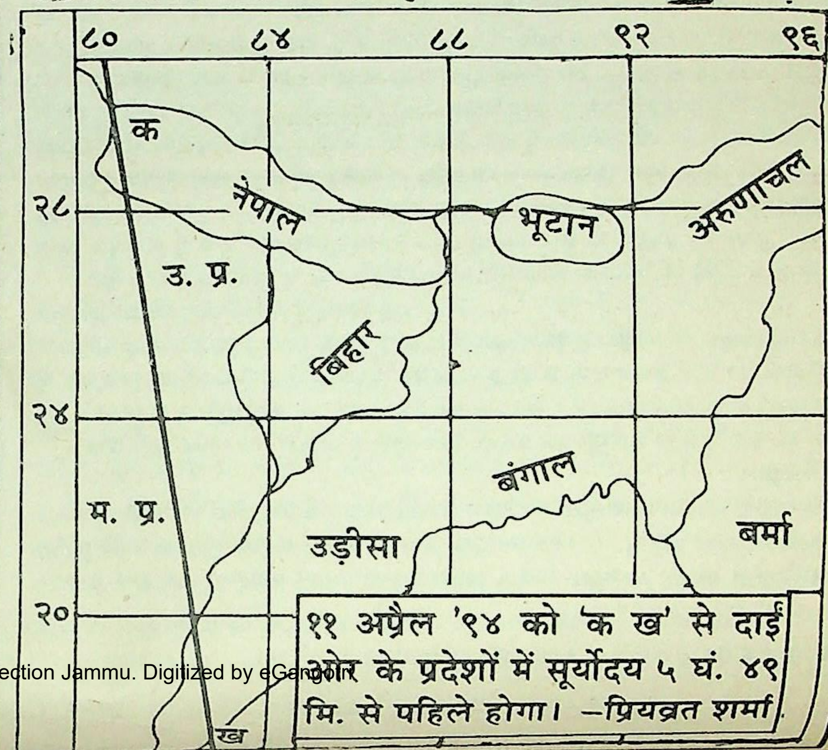
"अत्यन्तं कलिपुराण वचनात् तिथिमले तु न कार्यम् (चण्डिकार्चनम्)। "षष्टिदण्डात्मिकायाः तिथेर्निष्क्रमणे परे। अकर्मण्यं तिथिमलं विद्यादेकादशीं बिना।।"–इति वचनात्। परे परदिने निष्क्रमणे तथा पूर्वदिने षष्टिदण्डात्मिका भूत्वा परदिने सैव तिथिः किञ्चिद् दण्डात्मिका, सैव द्वितीय दिने तिथिमलत्वात् त्याज्या इति भावः। द्वितीया-योगनिषेधकानि यानि यानि वाक्यानि, तानि तानि मुहूर्त्तन्यूनप्रतिपद्विषयाणि, तिथिमल-प्रतिपद्-विषयाणि च बोध्यानि।" –(कृत्यसार-समुच्चयः)।

पुरुषार्थ चिन्तामणिकार ने प्रकारान्तर से शुद्धा प्रतिपदा के दिन ही नवरात्रारंभ का निर्देश किया है। उनका वाक्य है–

"अथ नवरात्राम्भे प्रतिपत् निर्णीयते। तत्र "त्रिकालं पूजयेद्देवीम्" इति कालत्रये पूजा-विधानात् यदा सन्ध्या-त्रय-व्यापिनी प्रतिपत् तदा "कर्मणो यस्य यः कालः, तत्काल-व्यापिनी तिथिः।"–इति वचनात् सैव ग्राह्या इति सन्देहो नास्ति।" (पुरुषार्थ चिन्तामणिः)।

स्पष्ट है सन्ध्यात्रय (प्रातः, मध्याह्न एवं प्रदोष) को शुद्धा प्रतिपदा तिथि निश्चितरूपेण व्याप्त करेगी। केवल कुछ मुहूर्तों को ही व्याप्त करने वाली द्वितीया विद्धा प्रतिपदा सन्ध्यात्रय-व्यापिनी नहीं हो सकती, यह स्पष्ट है। अतः पुरुषार्थ चिन्तामणिकार के उल्लिखित वाक्यानुसार भी यह स्पष्ट है कि शुद्धा प्रतिपदा के अस्तित्व में द्वितीया विद्धा प्रतिपदा में नवरात्रारम्भ करना अशास्त्रीय है।

अन्त में यहां यह बतला देना आवश्यक है कि–कुछ पञ्चाङ्गकार इस आधार पर शुद्धा प्रतिपदा को छोड़कर द्वितीया विद्धा (त्रिमुहूर्त व्यापिनी) प्रतिपदा (तिथिमल) में १२ अप्रैल १९९४ ई. को नवरात्रारंभ करने का आग्रह करते हैं, कि–"अमायुक्ता न कर्तव्या प्रतिपच्चण्डिकार्चने। मुहूर्तमात्रा कर्त्तव्या द्वितीयायां गुणान्विता।।" –वाक्य में द्वितीयाविद्धा में नवरात्रारम्भ के विधान को 'गुणान्वित' (बहुत अच्छा, सुफलप्रद) लिखा है। लेकिन उनका यह निर्णय नितरां भ्रामक है, क्योंकि लगभग सभी युग्मवाक्यों में ग्राह्य बतलाई गई पूर्वविद्धा या पर विद्धा तिथि के बारे में इसी प्रकार के प्रशंसापरक वचन मिलते हैं। सामान्य युग्मवाक्य (युग्माग्नियुगभूतानां षण्मुन्योर्वसुरन्ध्रयोः। . . . . प्रतिपद्यप्यमावस्योस्तिथ्योर्युग्मं महाफलम्।।") में भी यह लिखा है कि–तिथियों के ये युग्म 'महाफलप्रद' है। गणेश चतुर्थी व्रत का निर्णायक यह युग्मवाक्य–"चतुर्थी गणनाथस्य मातृविद्धा प्रशस्यते।" भी तृतीयाविद्धा चतुर्थी को प्रशस्त बतलाता है। इसका अर्थ यह कदापि नहीं है, कि–शुद्धा तिथि होने पर भी इन युग्मवाक्यों के अनुसार ही इन व्रत-पर्वों की तिथियों का निर्णय किया जाए और शुद्धा तिथि का सर्वथा तिरस्कार कर दिया जाए। युग्मवाक्यों में इस प्रकार के प्रशंसापरक वचन होने पर भी निबन्धकारों ने शुद्धा तिथि को ही मान्यता दी है। शुद्धातिथि की प्राप्ति होने पर पूर्वविद्धा–परविद्धा सम्बन्धी निर्णय को कदापि वे स्वीकार नहीं करते, क्योंकि धर्मशास्त्रों में शुद्धा तिथि को तत्सम्बद्ध व्रत-पर्व के लिए ग्राह्या बतलाई जानेवाली पूर्वविद्धा या परविद्धा तिथि की प्रशंसा का अभिप्राय उस स्थिति में इतरविद्धा (निषिद्धयुग्म वाली तिथि) की प्रकारान्तर से निन्दामात्र है। पूर्णातिथि न तो पूर्वविद्धा ही होती है और न ही परविद्धा। अतः वहां ये युग्मवाक्य निष्प्रभाव हैं।



इस विवेचन से सुस्पष्ट है, कि इस वर्ष वसन्त नवरात्र का प्रारंभ द्वितीया विद्धा में (प्रतिपदा के मल में) नहीं, अपितु शुद्धा प्रतिपदा के दिन ११ अप्रैल १९९४ ई. को ही होगा। यही शास्त्र-सम्मत व्यवस्था है।

ध्यान दें–सं. २०५० वि. की चैत्री अमा. भारत के अधिकतर भाग में ११ अप्रैल '९४ के सूर्योदय से पहिले ५ घं. ४९ मि. पर समाप्त हो रही है। लेकिन भारत के पूर्वी भाग में स्थित पूर्वी उ. प्र., म. प्र., बिहार, बंगाल, आसाम एवं नेपाल, अरुणाचल, मिज़ोरम, मेघालय, उड़ीसा में ११ अप्रै. को सूर्योदय ५ घं. ४९ मि. से पहिले हो जाएगा, जिससे वहाँ ११ अप्रैल के सूर्योदय के बाद अमावस्या की स्थिति हो जाने से नवरात्रारंभ १२ अप्रैल को ही किया जाएगा। वहां १२ अप्रै. को सूर्योदय के अनन्तर प्रतिपदा एक मुहूर्त से अधिक होगी। यहां भारत के इस भाग का एक चित्र दिया जा रहा है। इस चित्र में खींची गई 'क ख' रेखा से दाईं ओर वाले प्रदेशों में ११ अप्रै. का सूर्येदय ५ घं. ४९ मि. से पहिले ही हो जाएगा। इस रेखा से बाईं ओर स्थित शेष पूरे भारत में तो ११ अप्रै. को ही नवरात्रारम्भ होगा, क्योंकि वहां ११ अप्रै. को सूर्योदय से पहिले ही अमावस्या समाप्त हो जाएगी, इसलिए वहां सर्वत्र शुद्धा (षष्टि-घट्यात्मिका) प्रतिपदा उपलब्ध होगी।

रम्भातृतीया

ज्येष्ठ शुक्ल तृतीय को रम्भातृतीया मनाई जाती है। यदि दूसरे दिन सूर्यास्त से पहिले ही तृतीया समाप्त हो जाए तो पूर्व (द्वितीयाविद्धा) तृतीया में ही रम्भाव्रत किया जाता है–

"ज्येष्ठ शुक्ल तृतीयायां रम्भाव्रतम्। सा पूर्वविद्धा ग्राह्या"–(धर्मसिन्धु)। इस वर्ष ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया ११ जून '९४ को द्वितीयाविद्धा है और वह १२ जून को सूर्यास्त से पहले ही समाप्त हो जाती है। अतः रम्भाव्रत इस वर्ष ११ जून '९४ को ही होगा।

श्री गंगादशहरा

ज्येष्ठ शुक्ल दशमी के दिन गंगादशहरा मनाया जाता है। यद्यपि इस पर्व के निर्णायक दस योगों का निर्देश अनेक निबन्ध ग्रन्थों में है। लेकिन अनेक पुराण वाक्यों में हस्तनक्षत्रयुता ज्येष्ठ शुक्ल दशमी में ही गंगावतरण लिखा है–

"ज्येष्ठे मासे सिते पक्षे दशमी हस्तसंयुता।
हरते दश पापानि तस्माद् दशहरा स्मृता।।" (ब्रह्मपुराण)
"दशम्यां शुक्लपक्षे च ज्येष्ठे मासे कुजे दिने।
गंगावतीर्णा हस्तर्क्षे सर्वपापहरा स्मृता।।" (विष्णुधर्मोत्तर)

इस वर्ष दशमी और हस्त नक्षत्र का योग केवल १८ जून '९४ को ही है। अतः इसी दिन गंगादशहरा मनाना होगा।

ऋषि पंचमी

मध्याह्नव्यापिनी भाद्रशुक्ल पंचमी के दिन ऋषि पंचमी होती है। **"भाद्र शुक्ल पंचमी ऋषि-पंचमी सा मध्याह्नव्यापिनी ग्राह्या"**– (धर्मसिन्धुः)। इस वर्ष यह तिथि [illegible] सितं. १९ को ही मध्याह्न में विद्यमान है। अतः ऋषिपंचमी ९ सितं. को ही होगी।

इस दिन मध्याह्न काल १२ घ. २८ पल से १८ घटी ४२ पल तक रहेगा।

दूर्वाष्टमी व्रत

दूर्वाष्टमी का व्रत भाद्र.शुक्ल अष्टमी के दिन होता होता है। अगस्त्य उदय होने पर यह व्रत नहीं किया जाता। यदि भाद्रपद शुक्ल अष्टमी से पहले ही अगस्त्य का उदय हो गया हो तो इस व्रत को भाद्रपद कृष्ण अष्टमी के दिन ही करने का विधान है–

"भाद्रशुक्लाष्टम्यामगस्त्योदये भाविनि सति पूर्वकृष्णाष्टम्यामेव कुर्यात्।" (हेमाद्रिः)।

इसवर्ष भाद्रकृष्ण १३ शनिवार (३ सितंबर '९४) को ही अगस्त्य पंजाब, हरयाणा आदि में उदय (दृश्य) हो जाएगा। अतः शास्त्रानुसार यह व्रत इस वर्ष भाद्रपद कृष्णपक्ष अष्टमी चन्द्रवार (२९ अगस्त '९४) को ही करना होगा।

षष्ठी का (महालय) श्राद्ध

इस वर्ष यद्यपि आश्विन कृष्ण षष्ठी रविवार (२५ सितं. '९४) तथा चन्द्रवार (२६ सितंबर '९४) दोनों दिन मध्याह्न और अपराह्ण को व्याप्त करती है, जिससे षष्ठी का एकोद्दिष्ट ओर पार्वणश्राद्ध इन दोनों दिन प्राप्त होता है। पुनरपि षष्ठी का श्राद्ध चन्द्रवार (२५ सितं. '९४) को ही किया जाएगा, क्योंकि षष्ठी तिथि इसी दिन सूर्यास्तकाल व्यापिनी है। शास्त्रों का निर्णय है, कि–यदि श्राद्धतिथि दोनों दिन कर्मकाल व्यापिनी हो तो श्राद्ध का अनुष्ठान सूर्यास्तिकालव्यापिनी तिथि वाले दिन ही किया जाना चाहिए, क्योंकि पितर सूर्यास्तव्यापिनी तिथि में निवास करते हैं–

"यस्यामस्तं रविर्याति पितरस्तामुपासते"। (मनुः)

अतः इसवर्ष आश्विन कृष्ण षष्ठी का श्राद्ध २५ सितं. १९९४ ई. को ही किया जाएगा, क्योंकि इस दिन षष्ठी सूर्यास्तकालव्यापिनी भी है।

आश्विन नवरात्रारम्भ

नवरात्र का प्रारंभ अमाविद्धा प्रतिपदा में करना निषिद्ध है। द्वितीयाविद्धा प्रतिपदा में इसे करने का निर्देश शास्त्रों में है प्रतिपदा यदि सूर्योदयोत्तर एक मुहूर्त तक भी हो, तब भी उसी दिन द्वितीयायुता प्रतिपदा में ही नवरात्रारम्भ करने का शास्त्र निर्देश है–

"अमायुक्ता न कर्त्तव्या प्रतिपच्चण्डिकार्चने।
मुहूर्त्तमात्रा कर्तव्या द्वितीयायां गुणान्विता।।" –(देवी पुराण)

लेकिन जब प्रतिपदा दूसरे दिन एक मुहूर्त से कम काल को व्याप्त कर रही हो, या वह सूर्योदय का स्पर्श ही न करे, (अर्थात् वह क्षय हो) तब उस स्थिति में तो अमायुक्ता प्रतिपदा में ही नवरात्रारम्भ करने का विधान है–

"(प्रतिपदायाः) मुहूर्त्तन्यून व्याप्तौ सूर्योदयास्पर्शे वा दर्शयुतापि ग्राह्या।" (धर्मसिन्धुः)।

इस वर्ष आश्विन शुक्ल प्रतिपदा जम्मू, काश्मीर, पंजाब, चण्डीगढ़, हरयाणा, हिमाचल एवं दिल्ली आदि प्रदेशों तथा उन सभी स्थलों पर क्षय रहेगी (सूर्योदय से पहले ही समाप्त हो जाएगी) जहां इस दिन (८ अक्तूबर '९४ को) सूर्योदय ५ घं. ७ मि. के बाद होगा। अतः उल्लिखित निर्णयानुसार इन

सभी प्रदेशों स्थलों पर शारद नवरात्र का आरंभ ५ अक्तूबर '९४ को अमायुक्ता प्रतिपदा में ही किया जाएगा।

अपिच-जहां इसदिन सूर्योदय ६ घं. ७ मि. (I.S.T.) से पहिले होगा, उन सभी भारतीय-प्रदेशों-नगरों में भी नवरात्र का प्रारंभ ५ अक्तूबर '९४ को ही अमायुक्ता प्रतिपदा में करना होगा, क्योंकि उन सभी स्थलों पर प्रतिपदा ६ अक्तूबर '९४ को सूर्योदय के बाद विद्यमान होने पर भी वह सर्वत्र एक मुहूर्त् से कम काल को ही व्याप्त करेगी।

महानवमी

आश्विन शुक्ल नवमी के दिन देवी पूजा एवं उपवास करने का विधान है। इस तिथि के दिन महाबलि देने की भी परम्परा कुछ प्रदेशों में है। दैवीपूजा एवं उपवास के लिए यह नवमी अष्टमीविद्धा एवं बलिदान के लिए दशमीविद्धा लेनी चाहिए-ऐसा शास्त्रकारों का निर्देश है। "महानवमी तु बलिदानव्यतिरिक्तविषये पूजोपोषणादौ अष्टमीविद्धा ग्राह्या - (धर्मसिन्धु)

इस वर्ष (सं. २०५१ में) नवमी १२ अक्तू. '९४ को अष्टमी विद्धा है, अत: पूजा एवं उपवास के लिए इसी दिन महानवमी मनाई जाएगी।

विजया दशमी

अपराह्ण व्यापिनी आश्विन शुक्ल दशमी के दिन विजयादशमी (अपराजिता पूजा) होती है। यदि दशमी पहले दिन अपराह्ण व्यापिनी और दूसरे दिन त्रिमुहूर्तादि व्यापिनी हो और वह वहां अपराह्ण से पहले ही समाप्त हो जाए तब दूसरे दिन उसी स्थिति में विजयादशी होगी, जबकि श्रवण नक्षत्र का योग केवल दूसरे दिन ही हो-

"यदा तु पूर्व दिने अपराह्णव्यापिनी, पर दिने च मुहूर्त्तत्रयादिव्यापिनी अपराह्णात्पूर्वमेव समाप्ता, परत्रैव च श्रवण-योगवती, तदा परैव। अपराह्णे दशम्यभावेऽपि-"यां तिथिं समनुप्राप्य उदयं याति भास्करः।" इत्यादि साकल्य-वचनैः श्रवण-युक्तायाः ग्राह्यायाः औदयिक-स्वल्पदशम्याः कर्मकाले सत्त्वापादनात्।" (धर्मसिन्धुः)।

इस वर्ष १३ अक्तूबर '९४ को ही दशमी अपराह्णव्यापिनी और श्रवण नक्षत्र से युक्त है दूसरे दिन (१४ अक्तूबर '९४ को) दशमी न तो अपराह्ण को ही स्पर्श करती है और न ही इसदिन उसका श्रवण नक्षण से योग है। अतः विजयादशमी १३ अक्तूबर '९४ को ही शास्त्रसम्मत है।

भीष्मपंचक समाप्ति

शास्त्रों में भीष्मपंचकव्रत का अनुष्ठान (जैसा कि 'पंचक' शब्द से ही स्पष्ट है) केवल पांच दिन (कार्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक) का ही लिखा है। "यदि एकादशी से पूर्णिमा तक की अवधि में कोई तिथि क्षय हो जाने से एकादशी से पूर्णिमा तक की दिन संख्या चार ही रह जाए तब दशमी विद्धा एकादशी से ही यह व्रत प्रारंभ करके शुद्ध (चतुर्दशी से अविद्ध) औदयिक-पूर्णिमा के दिन ही इसे समाप्त किया जाए। तथाच यदि इन पाँच तिथियों में से किसी एक की वृद्धि हो जाने से व्रत के ६ बनते हों तो शुद्ध (दशमी से अविद्ध) एकादशी के दिन प्रारंभ करके चतुर्दशी-विद्ध पूर्णिमा के दिन ही इसे समाप्त करना चाहिए"-ऐसा धर्मशास्त्र का प्रतिपादन है। इसी बारे में 'धर्मसिन्धु' का वचन है-

"एकादश्यादिदिनपंचके भीष्मपंचकव्रतमुक्तम्। तच्च शुद्धैकादश्यामारभ्य चतुर्दश्यविद्धौदयिकपौर्णमास्यां समापनीयम्। यदि शुद्धैकादश्यामारभ्य क्षयवदशेन पौर्णमास्यां पंचदिनात्मकव्रतसमाप्ति र्न धटते, तदा विद्धैकादश्याममपि आरंभः। शुद्धैकादश्यामारभ्येऽपि दिनवृद्धिवशेन परविद्धपौर्णमास्यां समापनेन षड्दिनापत्तिस्तदा चतुर्दशीविद्धपूर्णिमायामपि समाप्तिः कार्या।"

इस वर्ष कार्तिक शुक्ल त्रयोदशी की वृद्धि है, अतः भीष्मपंचक व्रत उपरोक्त निर्णयानुसार १३ से १७ नवम्बर '९४ तक ही चलेगा।

"दिल्ली रामलीला महासंघ" की अनधिकार चेष्टा

सन् १९९३ के दशहरा की तिथि २४ अक्तू. के बारे में भारत के सभी पंचागकार, धर्मशास्त्री निरपवादरूप से एकमत थे। भारत सरकार की अपनी संस्था Positional Astronomy Centre, Calcutta द्वारा १३ भारतीय भाषाओं में प्रकाशित राष्ट्रीय पंचांगों में भी दशहरा की यही तिथि निर्दिष्ट थी। भारत के सभी प्रान्तों-नगरों में दशहरा मनाया भी २४ अक्तू. को ही गया। लेकिन हमारी बुद्धि यह समझने में सर्वथा विफल रही है कि दिल्ली के रामलीला महासंघ द्वारा शास्त्रनिर्णय की अवहेलना करके स्वेच्छया २५ अक्तू. को दशहरा मनाने में क्या तुक था। आश्चर्य और दुःख की बात तो यह है कि दिल्ली सरकार ने भी भारतीय पंचांग-कारों एवं अपने ही नाटिकल आल्मनाक विभाग की व्रत-पर्व निर्णायक समिति के निर्णय को ठुकरा कर इस राम लीला महासंघ के निर्णय को मान्यता दे डाली और T.V. के राष्ट्रीय कार्यक्रम में भी इसी अशास्त्रीय तिथि पर ही दशहरे का कार्यक्रम प्रसारित किया, जबकि अन्य सभी राज्यों के T.V. प्रसारणों में २४ अक्तू. को ही ये कार्यक्रम प्रसारित किए जा चुके थे। समझ में नहीं आता-भारत सरकार प्रतिवर्ष लाखों रुपये राष्ट्रीय पंचांगों के प्रकाशन पर क्यों व्यर्थ में बर्बाद करती हैं, जब कि उसके निर्णय को वह ऐसी संस्थाओं के कहने पर रद्दी की टोकरी में फैंकने से तनिक भी सकुचाती नहीं है, जिनको धर्मशास्त्र एवं ज्योतिष से कोई सरोकार नहीं होता।

दशहरा का अर्थ केवलमात्र रावण-कुंभकर्ण के पुतलों को आग लगाकर पटाखे चलाना ही नहीं है। इसके मनाने की एक शास्त्रीय विधि है, शास्त्रप्रतिपादित एक निश्चित काल है, इसके निर्णायक अनेक तिथि, नक्षत्र आदि तत्त्व हैं, जिन्हें पूरी तरह विचार कर भारतीय पंचांग-कार इस पर्व की तिथि का निर्धारण करते हैं। हमारे पास भारत के सभी प्रांतों के पंचांगकारों के अनेक पत्र इस बारे में मिले हैं, जिनमें उन्होंने दिल्ली रामलीला कमेटी की दशहरा सम्बन्धी इस स्वेच्छाचारिता पर भारी रोष प्रकट किया है। शास्त्रीय निर्णय के विरुद्ध इस प्रकार व्रत-पर्वों की तिथियों से खिलवाड़ करने वाली इस स्वेच्छाचारी संस्था की सभी धार्मिक हिन्दु-संस्थाओं द्वारा भर्त्सना की जानी चाहिए, और इस अनधिकार चेष्टा का उससे उत्तर भी मांगा जाना चाहिए।

यः शास्त्रविधि मुत्सृज्य वर्त्तते कामचारतः। न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम्।

— सम्पादक

श्री वि. सं. २०५१, शाक १९१६, चैत्र शुक्ल पक्ष १

(११ से २५ अप्रैल तक सन् १९९४ ई.) उत्तरायण, उत्तर गोल, वसन्त-ग्रीष्म ऋतु

ग्रह दर्शन–बुध १८ अप्रै. को पूर्व में अदृश्य हो जाएगा। प्रातः मंगल पूर्व में उससे काफी ऊपर शनि होगा और इस समय गुरु पश्चिम कपाल में दीखेगा। शुक्र को सायं पश्चिम में देखें।

दि. मा. घ. प.	तिथि	वार.	घ. प.	नक्षत्र	घ. प.	योग	घ. प.	कर.	घ. प.	तारीखें प्र. चैत्र	अं. अप्रै.	श. चैत्र	मु. शव्वा	चन्द्र राशि प्रवेशकाल घ. प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा. अं. क. वि.	
३१/३६	१	चं.	६०/०	रे.	१४/२	वै.	२६/३०	किं.	२९/४०	२९	११	२१	२९	मे. १४/२	६/४	६/४३	११/२७/७/१२	पंचक समाप्त १४!२ मंगल उ. भा. में १/१०, (A)
३१/४१	१	मं.	५/५२	अ.	२१/५२	वि.	२९/१०	व.	५/५२	३०	१२	२२	३०	मेष	६/३	६/४३	११/२८/६/३	चन्द्र दर्शन मु १५, चन्द्रव्रत
३१/४४	२	बु.	१२/३२	भ.	२९/४५	प्री.	३१/५०	कौ.	१२/३२	वै. १	१३	२३	जि. १	वृ. ४६/३९	६/२	६/४४	११/२५/५/१	सं. सूर्य अश्वि. मेष में, ५६/८ मु. ३०, पुण्यकाल (B)
३१/४९	३	गु.	१९/००	कृ.	३७/२२	आ.	३४/१८	ग.	१९/००	२	१४	२४	२	वृष	६/०	६/४५	०/०/३/३९	भ, ५१/५६ उ, गौरी तृतीया, (गणगौर)
३१/५४	४	शु.	२४/५३	रो.	४४/२०	सौ.	३६/२५	वि.	२४/५३	३	१५	२५	३	वृष	५/५९	६/४५	०/१/२/२३	भ, २४/५३ या, बुध रेवती में ४१/८
३१/५८	५	श.	२९/५०	मृ.	५०/२०	शो.	३९/२८	बा.	२९/५०	४	१६	२६	४	मि. १७/२०	५/५८	६/४६	०/२/१/२	श्री (लक्ष्मी) पंचमी, हयव्रत,
३२/२	६	र.	३३/२२	आ.	५८/४८	अ.	[illegible]	तै.	१/३६	५	१७	२७	५	मिथुन	५/५७	६/४७	०/२/२५/४३	स्कन्द षष्ठी, ओली प्रा. (जैन)
३२/६	७	चं.	३५/१२	पुन.	५७/३२	सु.	३६/२०	ग.	४/१७	६	१८	२८	६	क. ४१/५१	५/५६	६/४७	०/३/५८/२०	भ. ३५/१२ उ. बुध पूर्व में अस्त ३/१२, शुक्र कृत्तिका में २५/३५
३२/११	८	मं.	३५/५	पु.	५८/२२	धृ.	३३/३५	वि.	५/८	७	१९	२९	७	कर्क	५/५५	६/४८	०/४/५६/५६	भ. ५/९ या, श्री दुर्गाष्टमी, श्री भवानी जन्म,
३२/१५	९	बु.	३३/०	श्ले.	५७/१२	शू.	२९/१५	बा.	४/३	८	२०	३०	८	सिं. ५७/१२	५/५४	६/४९	०/५/५५/३१	सायन वृष में सूर्य १७/५७, ग्रीष्म ऋतु प्रा., (C)
३२/२०	१०	गु.	२८/५५	म.	५४!१२	गं.	२३/२२	ग.	०/५८	९	२१	१ वै.	९	सिंह	५/५३	६/४९	०/६/५४/२	भ. ५६/० उ, शक वैशाख प्रा., शुक्र वृष में ९/३५
३२/२५	११	शु.	२३/५	पू.फा.	४९/३२	वृ.	१६२०	वि.	२३/५	१०	२२	२	१०	सिंह	५/५२	६/५०	०/७/५२/३१	भ. २३/५ या., बुध अश्वि. मेष में ४१/३५, (D)
३२/२९	१२	श.	१५/४६	उ.फा.	४३/३५	ध्रु.	७/२५ ५७/४८	बा.	१५/४६	११	२३	३	११	क. ३/३	५/५१	६/५०	०/८/५०/५७	अनङ्ग त्रयोदशी, शनि प्रदोष व्रतः
३२/३३	१३	र.	७/२०	ह	३६/४०	ह.	४७/३२	तै.	७/२०	१२	२४	४	१२	कन्या	५/५०	६/५१	०/९/४९/२४	भ. ५८/७ उ. श्री महावीर जयन्ती (जैन), दमनक चतुर्दशी,
अवम	१४	र.	५८/७	०	००	०	००	०	००	०	०	०	०	००	००	००	००	चतुर्दशी. क्षय
३२/३७	१५	चं.	४८/३७	चि.	२९/१८	व.	३६/५८	वि.	२३/२२	१३	२५	५	१३	तु. २/५९	५/४९	६/५२	०/१०/४७/४६	भ. २३/२२ या, वक्री गुरु स्वाती ३ में १/३२, नेपच्यून (E)

वर्षारंभ में बार्हस्पत्यमान से 'सर्वजित्' नामक संवत्सर है, अतः वर्षान्त तक संकल्प में इसे ही प्रयुक्त करें।

(A) **नवरात्र प्रारंभ** ('देखें संदिग्ध व्रत-पर्व व्यवस्था'), कलश स्थापन, चान्द्र संवत्सर प्रारंभ, तैलाभ्यंग, अपूपदान, वर्षफल श्रवण, वि. सं. २०५१ प्रारंभ, (B) अगले दिन मध्याह्न से पूर्व, **वैशाखी; (पंजाब, हरयाणा, हि. प्र.), श्री मत्स्य जयन्ती, जिल्काद प्रारंभ,** (C) अगस्त्य अस्त, **श्री राम नवमी, नवरात्र समाप्त;** (D) कामदा एकादशी (स.), (E) वक्री २३/१२, वैशाख स्नान प्रारंभ, ओली समाप्त, हनुमज्जयन्ती (दक्षिण भारत) श्री सत्यनारायण व्रत

चैत्र शु. ८ मंगल इष्ट ५८/५७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	११	११	६	०	१०	७	१
५	१०	२४	१७	२८	१५	१	१
५४	१७	४१	१८	३४	२७	३२	३२
३२	३१	२०	४१	८	७	७	७
५८	४६	११६	७	७३	५	३	३
३४	२७	१९	३३	२०	२८	११	११
-	भा.	भा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अश्वि. २	उ. भा. ३	रेवती ३	स्वा. ४	कृत्ति. १	शत. १	विशा. ४	कृत्ति. २

कु. सूर्योदये

२ के. | सू. १ शु. | १२ मं. | बु. | श. ११ | ३ | ४ चं. | १० | ५ | ७ गु. | ५ | ६ | ८ रा.

लोक भविष्य–चैत्र शु. प्रतिपरा को चन्द्रवार होने से वर्षेश चन्द्र है। इसलिए इस वर्ष जनता में विशेष जागृति आएगी। जनता में अपने अधिकार की रक्षा एवं स्वच्छ राजनैतिक विचारधारा की कल्पना जोर पकड़ेगी। शनि की राहु पर दशम दृष्टि होने से कहीं मुस्लिम देशों में परस्पर तनाव की स्थिति बनेगी।

कु. सूर्योदये

२ शु. के. | १२ मं. | ३ | सू. १ बु. | ११ श. | ४ | १० | ५ | ७ गु. चं. | ९ | ६ | ८ रा.

चैत्र श १५ चन्द्र, इष्ट ५९/१२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	११	०	६	१	१०	७	१
११	१४	६	१६	५	१५	१	१
४५	५५	४१	३३	५३	५८	१३	१३
२४	४५	४२	४०	३५	५८	२	२
५८	४७	१२४	७	७३	५	३	३
२२	१६	५९	३३	६	४	११	११
-	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अश्वि. ४	उ. भा. ४	अश्वि. ३	स्वा. ३	कृत्ति. ३	शत ३	विशा. ४	कृत्ति. २

ग्रहचाल और बाजार का रुख–पक्षारंभ में १३ अप्रैल के लगभग रुई, कपास, सूत, तेल, घी, तिल, सरसों, नारियल, सुपारी, बादाम, गुड़, खाण्ड, शक्कर चांदी सोना में अस्थायी तेजी बनकर तुरन्त मंदा बनेगा। वायदा व्यापारी सावधानी से काम करें। १८ अप्रैल के लगभग जौ चावल, त्रिल तेल सरसों मंदे रहेंगे। २१ अप्रैल के लगभग रुई कपास में अच्छी मन्दी का झटका एवं पक्षान्त में सभी बाजारों में मन्दे का रुख रहे।

आकाश लक्षण–[illegible] बंबई के कुछ भागों में वर्षा के योग हैं। अप्रैल १३, १८, २१, २५ को पूर्वोत्तर भागों में कहीं वायुवेग के साथ बूंदाबांदी व वर्षा के योग हैं।

श्री वि. सं. २०५१ शाक १९१६, बैशाख कृष्ण पक्ष २										तारीखें				चन्द्रराशि	चण्डीगढ़		उदय-कालिक	(२६ अप्रै. से १७ मई तक, सन् ११९४ ई.) उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु
मी. घ.प.	तिथि	वार	घ.प.	नक्षत्र	घ.प.	योग	घ.प.	कर.	घ.प.	प्र. वैशा.	अं. अप्रै.	श वैशा.	मु. जि.	प्रवेशकाल घ.प.	घं.मि.	घं.मि.	स्पष्ट सूर्य रा.अं.क.वि.	ग्रह दर्शन–बुध अस्त है। प्रातः मंगल पूर्व में, उससे ऊपर शनि होगा तथा उस समय गुरु पश्चिम में दीखेगा। शुक्र को सांय पश्चिम में देखें।
४१	१	मं.	३९/१५	स्वा.	२१/५२	सि.	२६/१२	बा.	१३/५६	१४	२६	६	१४	तुला	५/४८	६/५३	०/११/४६/८	
४५	२	बु.	३०/२५	वि.	१४/५०	व्य.	१६/१०	तै.	४/५०	१५	२७	७	१५	बु. १/३५	५/४७	६/५३	०/१२/४४/२७	भ. ५६/२६ उ, सूर्य भरणी में ३६/३०,
४९	३	गु.	२२/२८	अनु.	८/३५	व.	६/३८ ५८/०	वि.	२२/२८	१६	२८	८	१६	वृश्चि.	५/४६	६/५४	०/१३/४२/४५	भ, २२/२८ या, मंगल रेवती में १४/४०, (A)
५५	४	शु.	१५/४७	ज्ये.	३/२५ ५९/५८	शि.	५०/५२	बा.	१५/४७	१७	२९	९	१७	ध. ३/२५	५/४५	६/५५	०/१४/४१/१	बुध भरणी में ८/३८, शुक्र रोहि. में २१/४०
२/५९	५	श.	१०/४२	पू. षा.	५८/८	सि.	४४/४५	तै.	१०/४२	१८	३०	१०	१८	धनु	५/४४	६/५५	०/१५/३९/१५	यूरेनस वक्री ५१/२२, व प्लूटो विशा. ४ में ३९/५५,
३	६	र.	७/२३	उ. षा.	५८/१०	सा.	४०/१८	व.	७/२३	१९	म.१	११	१९	म. १३/८	५/४३	६/५६	०/१६/३७/२८	भ. ७/२३ उ. ३६/३९ या, मई प्रारंभ, मे डे.
३/८	७	चं.	५/५५	श्र.	५९/५५	शु.	३७/२०	ब.	५/५५	२०	२	१२	२०	मकर	५/४२	६/५७	०/१७/३५/३९	
३३/१२	८	मं.	६/२२	ध.	--	शु.	३५/५२	कौ.	६/२२	२१	३	१३	२१	कुं.३१/४९	५/४१	६/५७	०/१८/३३/४८	पंचक प्रा. ३१/४९
३३/१६	९	बु.	८/३२	ध.	३/४२	बु.	३५/२८	ग.	८/३२	२२	४	१४	२२	कुंभ	५/४०	६/५८	०/१९/३१/५९	भ. ४०/२१ उ. शनि शत. ४ में ३०/१२,
३३/१९	१०	गु.	१२/२०	शत.	८/५२	ऐं.	३६/३२	वि.	१२/२०	२३	५	१५	२३	कुंभ	५/४०	६/५९	०/२०/३०/६	भ. १२/२० या., बुध कृत्ति, में २०/२५,
३३/२२	११	शु.	१७/२०	पू. भा.	१५/१५	वै.	३८/१८	बा.	१७/२०	२४	६	१६	२४	मी.५८/३९	५/३९	६/५९	०/२१/२८/१२	बुध वृष में ५४/० श्री बल्लभाचार्य जयंती, (B)
३३/२९	१२	श	२३/१२	उ. भा.	२२/३०	वि.	४०/३८	तै.	२३/१२	२५	७	१७	२५	मीन	५/३८	७/०	०/२२/२६/१५	शनि प्रदोषव्रत, जन्म दिन श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर,
३३/३०	१३	र.	२९/३५	रे.	३०/१५	प्री.	४३/२०	व.	२९/३५	२६	८	१८	२६	मे. ३०/१५	५/३७	७/१	०/२३/२४/१८	भ. २९/३५ उ, पंचक स. ३०/१५,
३३/३४	१४	चं.	३६/२०	अ.	३८/१५	आ.	४६/५०	बि.	२/५७	२७	९	१९	२७	मेष	५/३७	७/१	०/२४/२२/२२	भ. २/५७ या.,
३३/३८	३०	मं.	४२/३५	भ.	४५/५२	सौ.	४८/४०	च.	९/२८	२८	१०	२०	२८	मेष	५/३६	७/२	०/२५/२०/२१	शुक्र मृग. में २१/४०, भौमवती अमावस

(A) श्री गणेश चतुर्थी व्रत; (B) वरूथिनी एकादशी व्रत (स.),

वैशाख कृ. ८ मंगल, इष्ट ५९/३२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	११	०	६	१	१०	७	१
१९	२१	२३	१५	१५	१६	०	०
३१	४	४५	३२	३५	३७	४७	४७
३३	४९	४२	३५	१७	४०	३६	३६
५८	४५	१२९	७	७२	४	३	३
९	५८	२३	३८	४७	३१	११	११
-	मा	मा	व.	मा.	मा.	व.	व.
-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
भर. २	रेवती २	भर. ४	स्वा. ३	रोहि. २	शत. ३	विशा ४	कृत्ति २

कुं. सूर्योदये

के. २ शु. | १ | १२ मं. | ३ | सू. बु. | ११ चं. श. | ४ | १० | ५ | ७ | ९ | ६ | गु. | ८ रा.

लोक भविष्य–इस मास में पांच मंगलवारों का होना कहीं दुर्घटना से हानि, कहीं राजनीतिक अशान्ति कहीं रक्तपात किंवा कहीं शासन सत्ता में परिवर्तन का संकेत देता है–"यत्र मासे महीसूनोः जायन्ते पंच वासराः। रक्तेन पूरिता [illegible] छत्रभंगस्तदा भवेत्।" इस [illegible] बुध का अतिचारी होना भी शुभ नहीं। प्रजा में रोगादि से हानि एवं प्राकृतिक-प्रकोप से खड़ी फसलों को हानि पहुंचे।

कुं. सूर्योदये

बु. २ शु. | सू. | १२ मं. | ३ के. | चं. १ | श. ११ | ४ | १० | ५ | गु. ७ | ९ | ६ | ८ रा.

वैशाख कृ. ३० मंगल, इष्ट ५९/४५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	११	१	६	१	१०	७	१
२६	२६	८	१४	२४	१७	०	०
१८	२५	२९	३९	५	७	२५	२५
७	४४	१८	५२	५६	३९	२०	२०
५७	४५	११९	६	७२	२	३	३
५९	४०	३२	१८	२९	५९	११	११
-	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
भर. ४	रेव. ३	कृत्ति. ४	स्वा. ३	मृग. १	शत. ४	विशा. ४	कृत्ति. २

ग्रहचाल और बाजार का रुख–२८ से २९ अप्रैल तक, सोना, चांदी, तांबा, पीतल, गेहूं, जौ, चना, चावल, मोठ, अलसी, रुई गुड़ खाण्ड घी में अच्छी तेजी एवं मन्दे के रिएक्शन आएंगे; सावधानी से काम करें। ३० अप्रैल को बाजार अचानक तेज होंगे। पक्षान्त में ५ मई के बाद बाजारों का रुख तेजी की तरफ रहेगा।)

आकाश लक्षण–अप्रैल २८ से ३० तक एवं मई ६, ७ के लगभग बम्बई, बर्मा, मैसूर, बिहार, विन्ध्य प्रदेश, कोंकण, गोंआ, आदि में वर्षा के योग हैं। उत्तरी भारत में गर्मी का प्रभाव बढ़ने लगेगा। उत्तरी भारत में कहीं वायुवेग से हानि हो।

श्री वि. सं. २०५१, शाक १९१६, वैशाख शुक्ल पक्ष ३ (११ से २५ मई तक, सन् १९९४ ई), उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु

तिथि	वार	घ. प.	नक्षत्र	घ. प.	योग	घ. प.	करण	घ. प.	तारीख प्र. वैशा.	अं. मई	श. वैशा.	मु. जिल्का	चन्द्र राशि प्रवेशकाल घ. प.	चण्डीगढ़ भा. स्टै. टा सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	उदय कालिक स्पष्ट सूर्य रा. अं. क. वि.
१	बु.	४८/३५	कृ.	५३/१२	शो.	५०/५८	किं.	१५/३५	२९	११	२१	२९	वृष	५/३५	७/३	०/२६/१८/१९
२	गु.	५३/५८	रो.	५९/५५	अ.	५०/५५	बा.	१६/१६	३०	१२	२२	३०	वृष	५/३४	७/३	०/२७/१६/१६
३	शु.	५८/२२	मृ.	६०/०	सु.	५३/५०	तै.	२६/१०	३१	१३	२३	१ जि.	मि. ३२/५१	५/३४	७/४	०/२८/१४/१३
४	श	६०/०	मृ.	५/४७	धृ.	५४/२	व.	२९/११	ज्ये. १	१४	२४	२	मिथुन	५/३३	७/५	०/२९/१२/८
४	[illegible]	१/४७	आ.	१०/३०	शू.	५३/२२	वि.	१/४७	२	१५	२५	३	क ५८/११	५/३२	७/५	१/०/९/५३
५	[illegible]	३/४२	पुन.	१४/५	गं.	५१/२८	बा.	३/४२	३	१६	२६	४	कर्क	५/३२	७/६	१/१/७/४५
६	[illegible]	५/१८	पु.	१५/५२	वृ.	४८/२२	तै.	४/१८	४	१७	२७	५	कर्क	५/३१	७/७	१/२/५/३५
७	[illegible]	३/१५	आश्ले	१६/१२	ध्रु.	४३/५८	व.	३/१५	५	१८	२८	६	सिं. १६/१२	५/३१	७/७	१/३/३/२४
८	गु	०/३५	म.	१५/०	व्या.	३८/१५	ब.	०/३५	६	१९	२९	७	सिंह	५/३०	७/८	१/४/१/१०
९	[illegible]	६/४८	०	० ०	०	० ०	०	० ०	०	०	०	०	० ०	०	०	० ० ० ०
१०	[illegible]	०/३७	पू. फा	१२/१८	ह.	३१/२२	तै.	२३/४८	७	२०	३०	८	कं. २६/१५	५/२९	७७/९	१/४/५८/५४
११	[illegible]	३/३५	उ. फा	८/५	व.	२३/२०	व.	१७/६	८	२१	३१	९	कन्या	५/२९	७/९	१/५/५६/३८
१२	[illegible]	[illegible]/४०	ह.	२/४८ ५६/३२	सि.	१४/२५	ब.	९/८	९	२२	ज्ये. १	१०	तु. २६/५२	५/२८	७/१०	१/६/५४/२०
१३	चं.	७७/२	स्वा.	४९/५२	व्य.	४/५० ५४/४५	कौ.	१/२१	१०	२३	२	११	तुला	५/२८	७/१०	१/७/५२/०
१४	मं.	८/८	वि.	४२/५८	प.	४४/४८	व.	१८/८	११	२४	३	१२	वृ. २९/४१	५/२८	७/११	१/८/४९/४०
१५	बु	१/१७	अनु.	३६/२०	शि.	३५/०	ब.	९/१७	१२	२५	४	१३	वृश्चिक	५/२७	७/१२	१/९/४७/१८

ग्रह दर्शन–बुध ११ मई से पश्चिम में दीखने लगेगा। प्रातः पूर्व में मंगल तथा शनि उससे काफी ऊपर होगा। शुक्र सायं पश्चिम में और गुरु पूर्व में दिखाई देगा।

सूर्य कृत्ति में २२/२३, बुध रोहि, ४५/७, बुध पश्चिम में उदित ४७/२२,
चन्द्र दर्शन मु, ४५, श्री शिवाजी जयन्ती
जिल्हिज्ज मुसलमानी प्रारंभ, श्री परशुराम जयन्ती, अक्षय तृतीया,
भ. २९/११ उ, सं सूर्य वृष में ४८/५५, मु. १५ पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न से पूर्व
भ. १/४७ या, मंगल अश्वि, मेष में ४१/५५, शुक्र मिथुन में २५/०
आद्य जगद्गुरु श्री शंकराचार्य जयन्ती
श्री रामानुजाचार्य जयन्ती (उ. भारत), श्री गंगा जन्म
भ. ३/१५ उ. ३१/५५ या., राहु विशा. ३ तुला में, केतु कृत्ति १, मेष में ४३/५५
बुधमृग में ६/४५, श्री जानकी जयन्ती।
नवमी तिथिक्षय
भ. १७/६ उ. ४३/३५ या., सायन मिथुन में सूर्य १७/२, शुक्र आर्द्रा में २६/२, (A)
शक ज्येष्ठ प्रा., वक्री गुरुस्वाती २ में २८/४०, प्रदोष व्रत,
बुध मिथुन में ३३/५, श्री नृसिंह जयन्ती
भ. १८/८ उ. ४३/४२ या. श्री. सत्यनारायण व्रत, श्री कूर्म जयन्ती
सूर्य रोहि में १३/१७, श्री बुद्ध पूर्णिमा, वैशाख पूर्णिमा, (B)

(A) मोहिनी एकादशी (स); (B) वैशाख स्नान समाप्त, अनन्त श्री जगद्गुरु वृद्ध शंकराचार्य जयन्ती (श्री कांची मठ)

वैशाख शु. ८ गुरु. इष्ट ०.०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
[illegible]	०	[illegible]	६	२	१०	६	०
[illegible]	२	३	१३	३	१७	२९	२९
[illegible]	२९	[illegible]	४२	४४	३७	५९	५९
[illegible]	४५	[illegible]	५९	३३	३	५३	५३
[illegible]	४५	[illegible]	६	७२	३	३	३
[illegible]	१७	[illegible]	४४	६	१८	११	११
[illegible]	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
[illegible]	उ.	उ	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	अश्वि. २	रोहि. [illegible]	स्वा. ४	मृ. ४	शत. ४	विशा. ३	कृत्ति. १

कुं. सूर्योदये

३ शु. | के. १ मं. | ४ | सू. | २ बु. | १२ | ५ चं. | ११ श. | ६ | ८ | १० | ७ | श. गु. | ९

लोक भविष्य–इस पक्ष में मंगल पर गुरु की दृष्टि होने से शनि एवं राहु की दृष्टि का विशेष कुप्रभाव नहीं होगा। फिर भी यावन राष्ट्र मंगल शनि जन्य कुप्रभाव से प्रभावित होंगे। आन्तरिक कलह-क्लेश बढ़ेंगे, राजनैतिक कुचक्र चलेगा। कहीं प्राकृतिक-प्रकोप से हानि होगी, अग्निकाण्ड किंवा रोग विशेष से कष्ट हो। तुलास्थ राहु की मंगल पर दृष्टि कहीं दुर्भिक्ष की सूचक है। खड़ी फसल को भारी हानि होगी।

कुं. सूर्योदये

शु ३ बु. | के. १ मं. | ४ | २ सू. | १२ | ५ | ११ श. | ६ | ८ चं. | १० | ७ | ९ | गु. रा.

वैशाख शु. १५ बुध. इष्ट ०/७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	०	२	६	२	१०	६	०
९	७	१	१३	१०	१७	२९	२९
४७	०	५६	४	५६	५६	४०	४०
१९	४२	१	६	२०	३३	४८	४८
५७	४४	७५	६	७१	२	३	३
३६	५९	४५	६	४६	४६	११	११
-	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
कृत्ति. ४	अश्वि. ३	मृग. ३	स्वा. २	आर्द्रा २	शत. ४	विशा. ३	कृत्ति. १

ग्रहंचाल और बाजार का रुख–पक्षारंभ में १४ मई तक रुई, सूत, कपास सोना, चांदी, तिल, सरसों, चावल, गुड़, खाण्ड, मूंग, उड़द, मोठ, घी में सामान्यतः तेजी का वातावरण रहेगा। १५ मई से प्रत्येक जाति के अनाजों में मन्दा बन सकता है लेकिन गुड़, खाण्ड एवं रसादि पदार्थ, तेल तिलहन में कुछ तेजी का रुख रहे।

आकाश लक्षण–११ मई को हवा का जोर रहे, मई १४, १५, १६, १८, २२ एवं २३ के लगभग बम्बई, भूटान सिक्किम, मैसूर, बिहार, [illegible] आसाम में वर्षा के योग हैं। उत्तरी भारत में ११ एवं १५ मई वायुवेग के साथ कहीं बूंदाबांदी संभव है।

श्री वि. सं. २०५१ शाक १९१६, ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ४										तारीखें				चन्द्र राशि	चण्डीगढ़		उदय-कालिक	(२६ मई से ९ जून तक, सन् १९९४ ई), उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु
दि मा.	तिथि	वार		नक्षत्र		योग		करण		प्र.	अं.	श.	मु.	प्रवेश काल	भा. स्टै. टा. सू. उ.	सू. अ.	स्पष्ट सूर्य	ग्रह दर्शन—प्रातः मंगल पूर्व में उससे काफी ऊपर शनि होगा। सायं बुध पश्चिम में और उससे ऊपर शुक्र दीखेगा। इस समय गुरु को पूर्व में देखें।
घ. प.			घ. प.		घ. प.		घ. प.		घ. प.	ज्ये.	मई	ज्ये.	जिल्ह	घ. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा. अं. क. वि.	
३४/२४	१	गु.	०/५२	ज्ये.	३०/२२	सि.	२५/४०	तै.	०/५२	१३	२६	५	१४	ध. ३०/२२	५/२७	७/१२	१/१०/४४/५२	
अवम	२	गु.	५३/१८	०	० ०	०	० ०	०	० ०	०	०	०	०	० ०	० ०	० ०	० ० ० ० ० ०	द्वितीया तिथिक्षय
३४/२८	३	शु.	४७/०	मू.	२५/३०	सा.	१७/१५	व.	२०/९	१४	२७	६	१५	धनु	५/२६	७/१३	१/११/४२/३०	भ. २०/९ उ, ४७/० या,
३४/३०	४	श.	४२/१०	पू. षा.	२२/०	शु.	९/५८	ब.	१४/३५	१५	२८	७	१६	म. ३६/३४	५/२६	७/१३	१/१२/४०/४	श्री गणेश चतुर्थी व्रत
३४/३०	५	र.	३९/१०	उ. षा.	२०/१५	शु.	४/० ५९/३३	कौ.	५/४०	१६	२९	८	१७	मकर	५/२६	७/१४	१/१३/३७/३८	बुध आर्द्रा में २/४५
३४/३५	६	चं.	३८/१०	श्र.	२०/२५	ऐं.	५६/४५	ग.	८/४०	१७	३०	९	१८	कुं. ५१/२९	५/२५	७/१५	१/१४/३५/११	भ. ३८/१० उ., पंचक प्रारंभ ५१/२९
३४/३५	७	मं.	३९/७	ध.	२२/३२	वै.	५५/३०	वि.	८/३८	१८	३१	१०	१९	कुंभ	५/२५	७/१५	१/१५/३२/४२	भ. ८/३८ या.
३४/३७	८	बु.	४२/००	शत	२६/३२	वि.	५५/२०	बा.	१०/३४	१९	१ जू	११	२०	कुंभ	५/२५	७/१६	१/१६!३०/१	शुक्र पुनर्वसु में ३५/५०, जून प्रारंभ
३४/३७	९	गु.	४६/२७	पू. भा.	३२/१२	प्री.	५७/२	तै.	१४/१४	२०	२	१२	२१	मी. १५/४७	५/२५	७/१६	१/१७/२७/३१	मंगल भरणी में २८/२०
३४/४२	१०	शु.	५२/८	उ.भा.	३९/७	आ.	५९/१५	व.	१९/१८	२१	३	१३	२२	मीन	५/२४	७/१७	१/१८/२४/५८	भ. १९/१८ उ. ५२/८ या.,
३४/४३	११	श.	५८/२८	रे.	४६/४५	सौ.	६०/०	ब.	२५/१८	२२	४	१४	२३	मे. ४६/४५	५/२४	७/१७	१/१९/२२/२६	पंचक स. ४६/४५, अपरा एकादशी व्रत (स), भद्रकाली एकादशी (पंजाब)
३४/४५	१२	र.	६०/०	अ.	५४/३०	सौ.	१/५५	कौ.	२९/१४	२३	५	१५	२४	मेष	५/२४	७/१८	१/२०/२०/५४	
३४/४५	१२	चं.	४/५८	भ.	६०/०	शौ.	४/४२	तै.	४/५८	२४	६	१६	२५	मेष	५/२४	७/१८	१/२१/१७/२१	सोम प्रदोष व्रत
३४/४८	१३	मं.	११/१०	भ.	२/२०	अ.	७/१८	व.	११/१०	२५	७	१७	२६	वृ. १९/६	५/२४	१/१९	१/२२/१४/४७	भ. ११/१० उ. ४३/५७ या.
३४/४८	१४	बु.	१६/४५	कृ.	९/२५	सु.	९/२२	श.	१६/४५	२६	८	१८	२७	वृष	५/२४	७/१९	१/२३/१२/१२	सूर्य मृग. में ८/५ सावित्री चतुर्दशी
३४/५३	३०	गु.	२१/२२	रो.	१५/४०	धृ.	१०/४८	ना.	२१/२२	२७	९	१९	२८	मि. ५८/१८	५/२४	७/२०	१/२४/९/३४	भावुका अमावस, वटसावित्री व्रत (अमा पक्ष)।

ज्येष्ठ कृ. ८ बुध, इष्ट ०/१२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	०	२	६	२	१०	६	०
१६	१२	९	१२	१९	१८	२९	२९
३०	१४	२८	२४	१७	१३	१८	१८
१३	२८	५०	३	३२	०	३२	३२
५७	४४	४९	५	७१	२	३	३
३०	३७	२१	११	२३	७	११	११
-	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रोहि. २	अश्वि ४	आर्द्रा. १	स्वा. २	आर्द्रा. ४	शत. ४	विशा. ३	कृत्ति. १

कुं. सूर्योदये

शु ३ बु. | के. १ मं. | ४ | २ सू. | १२ | ५ | ११ चं. श. | ६ | ८ | १० | गु. ७ रा. | ९

लोक भविष्य—केतु-मंगल पर शनि-की दृष्टि है, किसी घटना से जनता में भय किंवा किसी प्रान्त में आतंकमय वातावरण बने।
बुध-शुक्र एकत्र होने से कहीं प्राकृतिक प्रकोप से जनहानि किंवा कृषि को हानि पहुंचे।
भारत में राजनैतिक उलझनों का समाधान मिले। बृहस्पति की शनि मंगल पर दृष्टि होने से कोई विदेशी कुचाल असफल हो।

कुं. सूर्योदये

३ बु. शु. | के. १ मं. | ४ | सू. चं. २ | १२ | ५ | ११ श. | ६ | ८ | ७ | १० | रा. गु. | ९

ज्येष्ठ कृ. ३० गुरु, इष्ट ०/१५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	०	२	६	२	१०	६	०
२४	१८	१४	११	२८	१८	२८	२८
९	९	५	४६	४६	२७	५३	५३
५१	५४	४६	४२	५५	१७	६	६
५७	४४	१४	३	७०	१	३	३
२४	१०	४८	५९	५३	२१	११	११
-	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मृग. १	भर. २	आर्द्रा ३	स्वा. २	पुन. ३	शत. ४	विशा. ३	कृत्ति. १

ग्रहचाल और बाजार का रुख—२८ मई से १ जून तक गेहूं, उदड़ जौ, चना, मंग, मोठ, सोना, चांदी, रुई, कपास, एवं सूत में प्रायः मन्दे का वातवरण रहे। २ जून से पक्षान्त तक भरणी नक्षत्र का मंगल, मगशिर नक्षत्र का सूर्य उदड़, मेंग, मोठ, चना, बाजरा, अलसी, सोना, चांदी एवं रुई में कुछ तेजी बना सकते हैं।

आकाश लक्षण—मई २७, २८ जून १, १, ८ ९ को शिलांग, गोआ, बम्बई, आसाम, हिमाचल, प्रदेश, मध्य प्रदेश, भूटान, सिक्किम में बादल-वर्षा के योग हैं। इन दिनों बम्बई एवं आसाम में कुछ भागों में कहीं विशेष वर्षा से हानि भी संभव है।

श्री वि. सं. २०५१, शाक, १९१६, ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ५

(१० से २३ जून तक, सन् १९९४ ई.) उत्तर-दक्षिणायन, उत्तर गोल, ग्रीष्म वर्षा ऋतु

ग्रह दर्शन–१६ जून से बुध परिश्चम में अदृश्य हो जाएगा। प्रातः मंगल पूर्व में और शनि पश्चिम कपाल में याम्योत्तर वृत्तासन्न होगा। सायं पश्चिम में शुक्र और पूर्व में गुरु को देखा जा सकेगा।

दि. मा. घ. प.	ति.	वा.	घ. प.	नक्षत्र	घ. प.	योग	घ. प.	कर.	घ. प.	तारीखें प्र. ज्ये.	अं. जून	श. ज्ये.	मु. जिल्ह.	चन्द्र राशि प्रवेशकाल घ. प.	चण्डीगढ़ भा. स्टै. टा. सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	उदय कालिक स्पष्ट सूर्य रा. अं. क. वि.	
३४/५३	१	शु	२५/२	मृ.	२०/५७	शू.	११/२८	ब.	२५/२	२८	१०	२०	२९	मिथुन	५/२३	७२०	१/२५/६/५८	चन्द्र दर्शन मु. १५, शुक्र कर्क में २/५
३४/५५	२	श	२७/३०	आ.	२५/५	गं.	११/१२	कौ.	२७/३०	२९	११	२१	मु. १	मिथुन	५/२३	७/२१	१/२६/४/२१	रक्षा व्रत (पूर्व विद्धा तृतीया में) (देखें 'सन्दिग्ध व्रत पर्व व्यवस्था') (A)
३४/५५	३	र.	२८/४८	पुन.	२८/५	वृ.	१०/२	ग.	२८/४८	३०	१२	२२	२	क. १२/२०	५/२३	७/२१	१/२७/१/४३	भ. ५८/४८ उ., बुध वक्री ४४/५०, शुक्र पुष्य में ५१/४०, श्री महाराणा प्रताप जयन्ती
३४/५५	४	चं	२८/४९	पु.	२९/५८	ध्रु.	८/२	वि.	२८/४९	३१	१३	२३	३	कर्क	५/२३	७/२१	१/२७/५९/५	प. २८/४९ या. उमा पूजन व्रत, बलिदान दिन श्री गुरु अर्जुन देव जी,
३४/५७	५	मं	२७/४८	श्ले.	३०/३८	व्या.	४/५८	बा.	२७/४८	३२	१४	२४	४	सिं. ३०/३८	५/२३	७/२२	१/२८/५६/२५	
३४/५७	६	बु	२५/३५	म.	३०/१२	ह.	१/० ५६/८	तै.	२५/३५	आ. १	१५	२५	५	सिंह	५/२३	७/२२	१/२९/५३/४८	सं. सूर्य मिथुन में ६/३०, मु. ३०, पुण्यकाल २२/३० तक, अरण्य षष्ठी,
३४/५७	७	गु	२२/१२	पू.फा.	२८/३८	सि.	५०/२२	व.	२२/१२	२	१६	२६	६	कं. ४२/५८	५/२४	७/२२	२/०/५१/६	भ. २२/१२ उ०, ५०/० या, बुध पश्चिम में अस्त १९/२,
३४/५७	८	शु	१७/४८	उ. फा	२६/०	व्य.	४३/४८	ब.	१८/४८	३	१७	२७	७	कन्या	५/२४	७/२३	२/१/४८/२४	मेलाक्षीर भवानी (काश्मीर)
३४/५७	९	श	१२/३५	ह.	२२/२५	व.	३६/२५	कौ.	१२/३५	४	१८	२८	८	तु. ५०/१२	५/२४	५/२३	२/२/४५/४१	श्री गंगा दशहरा (हस्त २२/२५ तक), (देखें संदिग्ध व्रत पूर्व व्यवस्था),
३४/५७	१०	र.	६/८	चि.	१८/०	प.	२८/२५	ग.	६/८	५	१९	२९	९	तुला	५/२४	५/२३	२/३/४२/५७	भ. ३२/३ उ. ५९/१०, या, निर्जला एकादशी (स्मा.),
अवम	११	र.	५९/१०	०	००	०	० ०	०	० ०	०	०	०	०	०	००	००	० ० ० ०	एकादशी तिथ क्षय
३४/५७	१२	चं	५१/४३	स्वा.	१२/५५	शि.	१९/५२	ब.	२५/२२	६	२०	३०	१०	वृ. ५३/५५	५/२४	५/२४	२/४/४०/१२	मंगल कृत्ति, में २३/१५ चम्पक द्वादशी, निर्जला एकादशी व्रत (वै.),
३४/५७	१३	मं	४४/०	वि.	७/३५	सि.	११/०	कौ.	१७/५२	७	२१	३१	११	वृश्चिक	५/२४	५/२४	२/५/३७/२६	सायन कर्क में सूर्य ३७/१३, दक्षिणायन वर्षा ऋतु प्रा., भौम प्रदोष व्रत,
३४/५७	१४	बु	३६/२२	अनु.	१/४५ ५६/१५	सा	२/० ५३/८	ग.	१०/११	८	२२	आ. १	१२	ध. ५६/१५	५/२५	५/२४	२/६/३४/४०	भ. ३६/२२ उ, सूर्य आर्द्रा में ५/३२, शक आषाढ़ प्रारंभ
३४/५७	१५	गु	२९/८	मू.	५१/१८	शु.	४४/४८	वि.	२/४५	९	२३	२	१३	धनु	५/२५	७/२४	२/७/३१/५४	भ. २/४५ या., शनि वक्री ७/१७, वट सावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्ष) (B)

(A) मुहर्रम, सन् १४१५ हिजरी प्रारंभ, (B) श्री सत्यनारायण व्रत

ज्येष्ठ शुक्ल ८ शुक्र इष्ट, ०/१५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	०	२	६	३	१०	६	०
१	२४	१३	११	८	१८	२८	२८
४८	१	५८	११	१२	३५	२७	२७
३८	३४	१६	३७	७	१८	४०	४०
५७	४३	२०	२	७०	०	३	३
१७	४१	५४	३७	१८	३७	११	११
-	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मृग. ३	भर. ४	आर्द्रा ३	स्वा. २	पुष्य २	शत. ४	विशा. ३	कृत्ति ४

कुं. सूर्योदये

४ शु.
२
५
सू. ३ बु.
१
मं. के
६ चं.
१२
७
गु. रा.
९
११ श.
८
१०

लोक भविष्य–इस पक्ष में कर्क राशि के शुक्र पर मंगल की दृष्टि है, शुक्र का पुष्य नक्षत्र में प्रवेश नेताओं, महापुरुषों एवं राजनीतिज्ञों के लिए शुभ नहीं। लेकिन सूर्य संक्रान्ति बुधवारी होने से नेष्टफल कम होगा।

इस पक्ष में चतुर्दशी बुधवार को आर्द्रा प्रवेश शुभ है; प्रजा में आनन्द मंगल रहे, लेकिन मंहगाई से जनता में कुछ क्षोम रहे।

कुं. सूर्योदये

४ शु.
२
५
३ सू. बु.
१ मं.
के
६
१२
७ गु.
रा.
९ चं.
११ श.
८
१०

ज्येष्ठ शु. १५ गुरु इष्ट ०/१२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	०	२	६	३	१०	६	०
७	२८	११	११	१५	१८	२८	२८
३२	२२	१४	६	१२	३७	८	८
७	४१	२६	३४	४२	९	३५	३५
५७	४३	३४	१	६९		३	३
१३	१९	२७	३३	४८		११	११
-	मा.	व.	मा.	उ.	उ.	व.	व.
-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आर्द्रा १	कृत्ति. २	आर्द्रा २	स्वा. २	पुष्य ४	शत. ४	विशा. ३	कृत्ति १

ग्रहचाल और बाजार का रुख–१२ जून के लगभग घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, में तेजी, रुई में भी तेजी का झटका आए। १५, १६ जून के लगभग रेशम, सूत, कपास, रुई, सरसों, लोहा, तिल, तेल, शक्कर, खाण्ड, चीनी, घी, मूंग, उड़द, चना, चावलादि अनाज तेज होंगे। २३ जून के लगभग विशेष तेजी या बाजार का रुख बदल जाएगा; सावधान रहें।

आकाश लक्षण–जून १०, १२, १५, १६, १७, २०, २२ एवं २३ जून को बम्बई, ट्रावनकोर, कोचीन में अच्छी वर्षा है। प. राजस्थान हि. प्र., पंजाब, उ. प्र हरयाणा में कहीं बादल चाल, कहीं वायुवेग के साथ, वर्षा हो।

श्री वि स २०५१, शाक १९१६, आषाढ़ कृष्ण पक्ष ६ | तारीखें | चन्द्र राशि | चण्डीगढ़ | उदय कालिक | (२४ जून से ८ जुलाई तक, सन् १९९४ ई.), दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु

ग्रह दर्शन–बुध ४ जुला. से पूर्व में दीखने लगेगा। प्रातः मंगल पूर्व में और शनि पश्चिम कपाल में होगा। सायं गुरु पूर्व कपाल में और शुक्र पश्चिम में होगा।

द.मा	तिथि	वार		नक्षत्र		योग		करण		प्र.	अं.	श.	मु.	प्रवेशकाल	भा. स्टै. टा		स्पष्ट सूर्य	
घ. प.			घ. प.		घ. प.		घ. प.		घ. प.	आषा	जून	आषा.	मुह	घ. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	रा. अं. क. वि.	
३४/५८	१	शु.	२२/४०	पू. षा.	४७/१८	ब्र.	३७/८	कौ.	२२/४०	१०	२४	३	१४	धनु	५/२५	७/२४	२/८/२९/८	शुक्र आश्ले. में १५/१२
३४/५८	२	श.	१७/२०	उ. षा.	४४/३१	ऐ.	३०/३०	ग.	१७/२०	११	२५	४	१५	म. १/१८	५/२५	७/२४	२/९/२६/२१	भ. ४५/२५ उ., मंगल वृष में १५/५८
३५/०	३	र.	१३/३०	श्र.	४३/२७	वै.	२५/८	वि.	१३/३०	१२	२६	५	१६	मकर	५/२५	७/२५	२/१०/२३/३३	भ. १३/३० या, श्री गणेश चतुर्थी व्रत।
३५/०	४	चं.	११/२५	ध.	४१/४२	वि.	२१/१०	त्रा.	११/२५	१३	२७	६	१७	कुं. १२/३४	५/२५	७/२५	२/११/२०/४५	पंचक प्रा. १२/३४
३४/५८	५	मं.	११/१२	शत.	४६/५०	प्री.	१८/४५	तै.	११/१२	१४	२८	७	१८	कुंभ	५/२६	७/२५	२/१२/१७/५८	
३४/५८	६	बु.	१३/०	पू. भा.	५१/२०	आ.	१७/५५	व.	१३/०	१५	२९	८	१९	मी. ३५/१२	५/२६	७/२५	२/१३/१५/१२	भ. १३/० उ., ४४/४६ या.
३४/५५	७	गु.	१६/३२	उ. भा.	५७/२२	सौ.	१८/२५	ब.	१६/३२	१६	३०	९	२०	मीन	५/२७	७/२५	२/१४/१२/२७	
३४/५५	८	शु.	२१/३७	रे.	६०/०	शो.	२०/८	कौ.	२१/३७	१७	जु. १	१०	२१	मीन	५/२७	७/२५	२/१५/९/३७	वक्री बुध मृग. में ३७/४२, जुलाई प्रारंभ,
३४/५५	९	श.	२७/४०	रे.	४/३५	अ.	२२/३२	ग.	२७/४०	१८	२	११	२२	मे. ४/३५	५/२७	७/२५	२/१६/६/५२	पंचक स. ४/३५, गुरु मार्गी, ५/४८
३४/५३	१०	र.	३४/३	अ.	१२/२०	सु.	२५/१५	वि.	०/५२	१९	३	१२	२३	मेष	५/२८	७/२५	२/१७/४/६	भ. ०/५१ उ. ३४/३ या.
३४/५३	११	चं.	४०/१०	भ.	२०/२	धृ.	२७/५०	व.	७/७	२०	४	१३	२४	वृ. ३६/४७	५/२८	७/२५	२/१८/१/२०	योगिनी एकादशी व्रतु, बुध पूर्व में उदित ५४/१५
३४/४०	१२	मं.	४५/३०	कृ.	२७/५	शू.	३०/८	कौ.	१२/५०	२१	५	१४	२५	वृष	५/२९	७/२५	२/१८/५८/३५	शुक्र मघा सिंह में ४८/५०,
३४/४०	१३	बु.	४९/४५	रो.	३३/१०	गं.	३१/८	ग.	१७/३८	२२	६	१५	२६	वृष	५/२९	७/२५	२/१९/५५/४८	भ., ४९/४५ उ., सूर्य पुनर्वसु में ४/२२, बुध मार्गी ४९/०, प्रदोष व्रत
३४/३८	१४	गु.	५२/३५	मृ.	३७/५८	वृ.	३१/२२	वि.	२१/१०	२३	७	१६	२७	मि. ५/३४	५/३०	७/२५	२/२०/५३/३	भ. २१/१० या.
३४/३५	३०	शु.	५४/५	आ.	४१/२८	धु.	३०/३२	च.	२३/२०	२४	८	१७	२८	मिथुन	५/३०	७/२४	२/२१/ ५०/१७	

आषाढ़ कृ. ८ शुक्र, इष्ट ०/७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	१	२	६	३	१०	६	०
१५	४	६	१०	२४	१८	२७	२७
९	७	५५	५९	२८	३४	४३	४३
४६	२२	०	९	३०	५	९	९
५७	४२	२३	०	६९	०	३	३
१३	४८	७	७	३	५०	११	११
-	मा.	अ.	उ.	मा.	व.	व.	व.
-	उ	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आर्द्रा ३	कृत्ति ३	आर्द्रा १	स्वा. २	आश्ले ३	शत. ४	विशा. ३	कृत्ति १

कुं. सूर्योदये

४ शु.
२ मं.
सू.
१ के.
५
३ बु.
६
१२
चं.
७ रा.
गु.
९
११ श
८
१०

लोकभविष्य–शनि वक्र है, शुक्र आश्लेष में प्रविष्ट हुआ है। भद्रबाहु संहिता के अनुसार आश्लेषा का शुक्र गुजरात में टिड्डीदल आदि उत्पात से हानि, दुर्भिक्ष, मालवा में राजनैतिक अस्थिरता, कुछ प्रान्तों में वर्षा का अभाव रहे। वृष राशि का मंगल पाक में आन्तरिक विद्रोह, चीन में राजनैतिक दृष्टि से उथल पुथल करता है।

कुं. सूर्योदये

४
२ मं.
५ शु.
३ चं. बु.
सू.
१ के
६
१२
७ गु. रा.
९
११
८
१० श.

आषाढ़ कृ. ३० शुक्र, इष्ट ०/०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	१	२	६	४	१०	६	०
२१	९	५	११	२	१८	२७	२७
५०	५	४१	२	२९	२६	२०	२०
१७	३५	३१	६	४३	१५	५३	५३
५७	५२	८	१	६८	१	३	३
१४	२०	२८	९	१९	३०	११	११
-	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुन. १	कृत्ति. ४	मृग. ४	स्वा. २	मघा. १	शत. ४	विशा. ३	कृत्ति. १

ग्रहचाल और बाजार का रुख–२५ जून के लगभग लाल मिर्च, गुड़, सभी प्रकार के अनाज-दालें, रुई कपास, तेल, सोना, चांदी, तांबा, आदि धातु व शेयरों में तेजी का वातावरण रहे। २ से ४ जुलाई के बीच बाजारों का रुख बदल सकता है। ५ से ८ जुलाई के लगभग जौ चना, गेहूं घी, में तेजी, सोना मन्दा, गुड़ लाल मिर्च के स्टाक से आगे बड़ा लाभ हो।

आकाश लक्षण–जून २४, २५, २६, २९ एवं जुलाई १ से ८ तक बुध गुरु-मंगल ग्रह स्थिति के अनुसार उ. प्र., म. प्र., बंगाल, राजस्थन, हिमाचल प्रदेश एवं हरयाणा, पंजाब में अच्छी वर्षा के योग हैं। दक्षिणी भारत के कुछ भाग सूखाग्रस्त भी रहें।

शकुन विचार–यदि आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा को बिजली चमके और मेघ गरजें तो अनाज तेज हों। दो मास तक वर्षा में कमी रहे।

श्री वि. सं. २०५१, शाक १९१६, आषाढ़ शुक्ल पक्ष ७										तारीखें				चन्द्र राशि	चण्डीगढ़		उदय कालिक	(९ से २२ जुलाई तक, सन् १९९४ ई.) दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु,
दि.मा.	ति.	वा		नक्षत्र		योग		करण		प्र.	अं.	श.	मु.	प्रवेशकाल	भा. स्टैं. टा.		स्पष्ट सूर्य	ग्रह दर्शन–प्रातः पूर्व में बुध, उससे काफी ऊपर मंगल दीखेगा तथा उस समय शनि पश्चिम कपाल में होगा। सायं शुक्र पश्चिम में और गुरु याम्योत्तर वृत्तासन्न होगा।
घ. प.			घ. प.		घ. प.		घ. प.		घ. प.	आषा	जुला	आषा.	मुह.	घ. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	रा. अं. क. वि.	
३४/४३	१	श.	५४/१२	पुन.	४३/३५	व्या	२७/२०	किं.	२४/९	२५	९	१८	२९	क. २८/३	५/३१	७/२४	२/२२/४७/३३	मंगल रोहिणी में १७/५
३४/४२	२	र.	५३/१२	पु.	४४/३०	ह.	२५/४२	बा.	२३/४२	२६	१०	१९	३०	कर्क	५/३१	७/२४	२/२३/४४/४६	चन्द्र दर्शन मु. ३०, श्री जगदीश रथोत्सव (पुरी)
३४/४०	३	चं.	५१/५	आश्ले	४४/२२	व.	२१/५२	तै.	२२/९	२७	११	२०	स. १	सिं. ४४/२२	५/३२	७/२४	२/२४/४२/३	बुध आर्द्रा में ४४/४८, सफर मुसलमानी प्रारंभ,
३४/४०	४	मं.	४८/१०	म.	४३/२५	सि.	१७/१८	व.	१९/३७	२८	१२	२१	२	सिंह	५/३२	७/२४	२/२५/३९/१७	भ. १९/३८ उ. ४८/१० या,
३४/३५	५	बु.	४४/२०	पू.फा.	४१/४०	व्य.	१२/५	ब.	१६/१९	२९	१३	२२	३	कं. ५६/५	५/३३	७/२३	२/२६/३६/३३	
३४/३५	६	गु.	४०/१२	उ.फा.	३९/२२	व.	६/२०	कौ.	१२/२०	३०	१४	२३	४	कन्या	५/३३	७/२३	२/२७/३३/४७	कुमार षष्ठी,
३४/३३	७	शु.	३५/२५	ह.	३६/३२	प.	०/५ ५३/३०	ग.	७/४८	३१	१५	२४	५	कन्या	५/३४	७/२३	२/२८/३१/३	भ. ३५/२५ उ., विवस्वत् सप्तमी।
३४/३०	८	श.	३०/१२	चि.	३३/१५	सि.	४६/३२	वि.	२/४७	श्रा. १	१६	२५	६	तु. ४/५३	५/३४	७/२२	२/२९/२८/१७	भ. २/४८ या, सं. सूर्य कर्क में ३३/१२, मु. ३०, पुण्यकाल ३/१२ बाद,
३४/२८	९	र.	२४/३२	स्वा.	२९/३५	सा.	३९/१५	कौ.	२४/३२	२	१७	२६	७	तुला	५/३५	७/२२	३/०/२५/३४	शुक्र पू. फा. में ३५/२२
३४/२८	१०	चं.	१८/४०	वि.	२५/४०	शु.	३१/४७	ग.	१८/४०	३	१८	२७	८	वृ. ११/३९	५/३५	७/२२	३/१/२२/४८	भ. ४५/३१ उ.
३४/२३	११	मं.	१२/२२	अनु.	२१/३२	शु.	२४/१०	वि.	१२/२२	४	१९	२८	९	वृश्चिक	५/३६	७/२१	३/२/२०/४	भ. १२/२२ या, देवशयनी एकादशी (स.)
३४/२३	१२	बु.	६/२८	ज्ये.	१७/२८	ब्र.	१६/३५	बा.	६/२८	५	२०	२९	१०	ध. १७/२८	५/३६	७/२१	३/३/१७/१९	सूर्य पुष्य में ०/१५, राहु विशा. २ में केतु भर ४ में ३७/३०, प्रदोष व्रत
३४/१८	१३	गु.	०/३०	मू.	१३/२५	ऐं.	९/१०	ग.	०/३०	६	२१	३०	११	धनु	५/३७	७/२०	३/४/१४/३६	भ. ५५/५ उ.
अवम	१४	गु.	५५/५	०	००	०	००	०	००	०	०	०	०	००	०००	००	००	चतुर्दशी तिथि क्षय
३४/१५	१५	शु.	५०/२०	पू.षा.	१०/१५	वै.	२/१० ५५/५०	वि.	२७/४३	७	२२	३१	१२	म. २५/८	५/३८	७/२०	३/५/११/५३	भ. २२/४२ या., श्री सत्यनारायण व्रत, गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा, (A)

(A) संन्यासियों चातुर्मास्य व्रत नियम प्रा., शिवशयनोत्सव, कोकिला व्रत, सायं वायु परीक्षा।

आषाढ़ शु. ८ शनि, इष्ट ५९/५०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	१	२	६	४	१०	६	०
०	१५	१०	११	१२	१८	२६	२६
२५	२३	५	१८	४०	९	५२	५२
२२	५६	६	४६	७	२५	१५	१५
५७	४१	५५	२	६७	२	३	३
१४	४१	५	४४	९	११	११	११
-	मा	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुन. ४	रोहि. २	आर्द्रा २	स्वाति २	मघा ४	शत. ४	विशा. ३	भर. १

कुं. सूर्योदये

शु. ५ | ४ | बु ३ | ६ | म. | मं. २ | चं. | गु. ७ रा. | १ के. | ८ | १० | १२ | ९ | ११ श.

लोक-भविष्य–सिंह का शुक्र इस पक्ष में शनि से दृष्ट है, अतः अनेक प्रान्तों में प्राकृतिक आपदा से खड़ी फसलों को हानि पहुंचेगी। कृषक परेशान रहेंगे। कहीं वर्षा की कमी कहीं बाढ़ से जनधन हानि के समाचार मिलेंगे। किसी देश विशेष में आर्थिक संकट गहराए।

कुं. सूर्योदये

५ शु. | सू. ४ | ३ बु. | ६ | २ मं. | गु. | ७ रा. | के. १ | ८ | १० | १२ | चं. ९ | ११ श.

आषाढ़ शु. १५ शुक्र इष्ट ५९/४०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	१	२	६	४	१०	६	०
६	१९	१६	११	१९	१७	२६	२६
८	३२	४८	३७	२०	४९	३३	३३
५०	५३	५०	३९	४२	१५	११	११
५७	४१	८४	३	६६	२	३	३
१७	१४	०	४३	१२	४९	११	११
-	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुष्य १	रोहि. ३	आर्द्रा ३	स्वा. २	पू.फा. २	शत. ४	विशा. २	भर. ४

ग्रह चाल और बाजार का रुख–पक्षारंभ में रुई, कपास सूत, वस्त्र, रेशम, सरसों, तिल, तेल, लाल मिर्च, शेयर तेज हों। १२ जुलाई के लगभग बाजार मन्दे होकर १९ जुलाई तक ऊपर नीचे चलेंगे। वायदा व्यापारी मन्दे में खरीद कर तेजी से लाभ लेते रहें। २० जुलाई के लगभग तिलहन, तेल, गुड़ खाण्ड, जौ, ज्वार बाजरा आदि अनाज तेज हों।

आकाश लक्षण–पाक्षिक ग्रहस्थिति एवं अन्य वर्षाकारक योगों के अनुसार इन दिनों हि. प्र., पंजाब, हरयाणा, दिल्ली, उ. प्र. राजस्थान आदि में काफी वर्षा हो, दक्षिण भारत में कहीं बाढ़ की स्थिति बने। ध्यान दें, [illegible]पक्ष में ५ जुलाई को शुक्र सिंह में आ चुका है यह अनेकत्र वर्षा में रुकावट का भी कार[illegible]गा।

श्री वि सं. २०५१, शाक १९१६, श्रावण कृष्ण पक्ष ८										तारीखें				चन्द्र राशि	चण्डीगढ़		उदय-कालिक	(२३ जुला. से ७ अग. तक, सन् १९९४ ई.), द. अ., उ. गो., वर्षा ऋतु,
दि. मा. घ. प.	ति.	वा.	घ. प.	नक्षत्र	घ. प.	योग	घ. प.	करण	घ. प.	प्र. श्राव	अं. जुला.	श. श्राव.	मु. सफ.	प्रवेशकाल घ .प.	भा. स्टैं. टा. सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	स्पष्ट सूर्य रा. अं. क. वि.	ग्रह-दर्शन–बुध ३१ जुला. से पूर्व में लुप्त हो जाएगा। प्रातः मंगल पूर्व में, शनि पश्चिम कपाल में होगा। सायं शुक्र पश्चिम में चमक रहा होगा। इस समय गुरु याम्योत्तर वृत्तासन्न दीखेगा।
३४/१२	१	श.	४६/४५	उ.षा.	७/४८	प्री.	५०/२८	बा.	१८/३२	८	२३	१	१३	मकर	५/३८	७/१९	३/६/९/९	सायन सिंह में सूर्य ३/५५, शक श्रावण प्रारंभ
३४/१०	२	र.	४४/३०	श्र.	६/२८	आ.	४६/८	तै.	१५/३७	९	२४	२	१४	कु. ३६/३१	५/३९	७/१९	३/७/६/२८	पंचक प्रा. ३६/३१, अशून्य शयन व्रत, अनन्त श्री जगद्गुरु (A)
३४/८	३	चं.	४३/५२	ध.	६/३५	सौ.	४३/१०	व.	१३/५६	१०	२५	३	१५	कुम्भ	५/३९	७/१८	३/८/३/४४	भ. १४/११ उ. ४३/५२ या, बुध पुन. में १२/१५,
३४/५	४	मं.	४५/०	शत.	८/२२	शो.	४१/३२	ब.	१४/११	११	२६	४	१६	मी. ५६/२	५/४०	७/१८	३/९/१/५	श्री गणेश चतुर्थी व्रत
३४/०	५	बु.	४७/५५	पू. भा.	११/१५	अ.	४१/४८	कौ.	१६/२८	१२	२७	५	१७	मीन	५/४१	७/१७	३/९/५८/२५	
३४/०	६	गु.	५२/२५	उ.भा.	१७/१०	सु.	४२/२२	ग.	२०/१०	१३	२८	६	१८	मीन	५/४१	७/१७	३/१०/५५/४५	भ. ५२/२५ उ., मंगल मृगशिर में ३०/५०
३४/०	७	शु.	५८/५	रे.	२३/४२	घृ.	४४/२०	वि.	२५/१५	१४	२९	७	१९	मे. २३/४२	५/४२	७/१६	३/११/५३/७	भ. २५!१५ या. पंचक स. २३/४२, शुक्र उ. फा. में ४०/३५
३३/५५	८	श.	६०/०	अ.	३१/१०	शू.	४६/५२	बा.	२९/२	१५	३०	८	२०	मेष	५/४३	७/१५	३/१२/५०/३१	
३३/५५	८	र.	४/२०	भ.	३८/५५	गं.	४९/३०	कौ.	४/२०	१६	३१	९	२१	वृ. ५५/४५	५/४३	७/१५	३/१३/४७/५४	बुध कर्क में २/४५, वक्री यूरेनस उ. षा. १ में ४५/२, (B)
३३/५०	९	चं.	१०/३२	कृ.	४६/१५	वृ.	५१/४५	ग.	१०/३२	१७	अग. १	१०	२२	वृष	५/४४	७/१४	३/१४/४५/२०	भ. ४३/१८ उ. बुध पुष्य में ४७/१५, शुक्र कन्या में ४५/४०, अगस्त प्रा.,
३३/५०	१०	मं.	१६/५	रो.	५२/३८	ध्रु.	५३/१२	वि.	१६/५	१८	२	११	२३	वृष	५/४४	७/१३	३/१५/४२/४४	भ. १६/५ या., सूर्य आश्ले में ५९/४५,
३३/४५	११	बु.	२०/२०	मृ.	५७/२८	व्या.	५३/२८	बा.	२०/२०	१९	३	१२	२४	मि. २५/३	५/४५	७/१२	३/१६/४०/१३	कामिका एकादशी व्रत (स.)
३३/४३	१२	गु.	२३/०	आ.	६०/०	ह.	५२/२८	तै.	२३/०	२०	४	१३	२५	मिथुन	५/४६	७/१२	३/१७/३७/४१	प्रदोषव्रत,
३३/३७	१३	शु.	२४/०	आ.	०/५२	व.	५०/२०	व.	२४/०	२१	५	१४	२६	क. ४७/०६	५/४६	७/११	३/१८/३५/१०	भ २४/० उ, ५३/४० या., प्लूटोमार्गी २/३२
३३/३५	१४	श.	२३/२०	पुन.	२/३०	सि.	४७/२२	श.	२३/२०	२२	६	१५	२७	कर्क	५/४७	७/१०	३/१९/३२/०	
३३/३३	३०	र.	२१/१०	पु.	२/४०	व्य.	४१/४८	ना.	२१/१०	२३	७	१६	२८	कर्क	५/४८	७/९	३/२०/३०/१३	मंगल मिथुन में २३/४२, हरियाली अमावस, नक्तव्रत प्रारंभ,

(A) शंकराचार्य श्री जयेन्द्र सरस्वती जयन्ती (श्री कांची मठ); (B) बुध पूर्व में अस्त ५६/४२,

श्रावण कृ. ८ रवि, इष्ट ५९/२८

सु.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	१	३	६	४	१०	६	०
१४	२५	१	१२	२९	१७	२६	२६
४४	४१	४७	१६	१०	२६	४	४
४७	२२	२९	५८	९	१२	३३	३३
५७	४०	३	५	६४	३	३	३
२४	३५	४८	९	३३	२८	११	११
–	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
–	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुष्य १	मृग. १	पुन. ४	स्वा. २	पू.फा. १	शत. ४	विशा. २	भर. ४

कुं. सूर्योदये

५ शु. | सू. बु. ४ | ३ | ६ | चं. २ मं. | गु. ७ श. | के १ | ८ | १० | १२ | ९ | ११ श.

लोक-भविष्य–इस पक्ष में शुक्र उ. फा. नक्षत्र का भेदन करेगा, पक्ष मध्य के लगभग कन्यास्थ-शुक्र पर मंगल की दृष्टि कहीं राजनैतिक गतिरोध, कहीं जल संकट व अग्निकांड से हानि का संकेत देती है। पाकिस्तान एवं अन्य मुस्लिम-राष्ट्रों में कहीं साम्प्रदायिक झगड़ें हों।

कुं. सूर्योदये

५ | ३ मं. | शु ६ | सू. चं. ४ बु. | २ | गु. ७ रा. | के १ | ८ | १० | १२ | ९ | ११ श.

श्रावण कृ. ३० रवि, इष्ट ५९/१५

सु.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	२	३	६	५	१०	६	०
२१	०	१५	१२	६	१७	२५	२५
२७	२३	५४	५६	३७	०	४२	४२
२	४१	३६	१२	५२	३३	१७	१७
५७	४०	१२४	६	६२	३	३	३
३२	०	१३	१२	४०	५४	११	११
–	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
–	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अश्वि. २	मृग. ३	पुष्य ४	स्वा. २	उ.फा. ३	शत. ४	विशा. २	भर. ४

ग्रहचाल बाजार का रुख–पक्षारंभ में चांदी, रुई, कपास में खास मंदी, ३१ जुलाई के लगभग बाजारों में झटके की तेजी मन्दी आएगी। १ अगस्त को सोना चांदी रुई में विशेष मन्दा बने, गेहूं आदि अनाज, गुड़, खाण्ड में तेजी बने। पक्षान्त में गुड़ सोना, लाल मिर्च में विशेष तेजी संभावित है।

आकाश लक्षण–सिंहस्थ शुक्र यद्यपि बादल चाल होने पर भी ३१ जुलाई तक वर्षा में अवरोधक है पुनरपि २५ जुलाई से ७ अगस्त तक के ग्रहगोचर के अनुसार जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, हरयाणा, पंजाब, दिल्ली, उ. प्र., में उत्तम वर्षा के योग हैं। कहीं बिजली गिरने से हानि हो। जुलाई ३१, अगस्त १, ५, ७ को उत्तम वर्षा हो।

श्री वि. सं. २०५१, शाक १९१६, श्रावण शुक्ल पक्ष ९										तारीखें				चन्द्र राशि	चण्डीगढ़		उदय-कालिक	(८ से २१ अग. तक, सन् १९९४ ई.), द. अय., उ. गो., वर्षा ऋतु
दि.मा.	ति.	वा.		नक्षत्र		योग		करण		प्र.	अं.	श.	मु.	प्रवेशकाल	भा. स्टैं. टा. सू. उ.	भा. स्टैं. टा. सू. अ.	स्पष्ट सूर्य	ग्रह-दर्शन–बुध अस्त है। प्रातः मंगल पूर्व में और शनि पश्चिम कपाल में होगा। सायं शुक्र पश्चिम में तथा गुरु याम्योत्तरवृत्तासन्न दीखेगा।
घ. प.			घ. प.		घ. प.		घ. प.		घ. प.	श्राव.	अग.	श्राव.	सफ.	घ. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा. अं. क. वि.	
३३/२२	१	चं.	१७/५०	श्ले.	१/३० ५९/२२	व.	३६/१२	ब.	१७/५०	२४	८	१७	२९	सिं १/३०	५/४८	७/९	३/२१/२७/४५	बुध आश्ले. में २१/१७,
३३/१७	२	मं.	१३/३२	पू.फा.	५६/२५	प्र.	२९/५२	कौ.	१३/३२	२५	९	१८	३०	सिंह	५/४८	७/८	३/२२/२५/१९	चन्द्र दर्शन मु. ३०,
३३/१५	३	बु.	८/३२	उ.फा.	५३/७	शि.	२३/६	ग.	८/३२	२६	१०	१९	र. १	कं. १०/३२	५/४९	७/७	३/२३/२२/५३	भ. ३५/५२ उ., मधुश्रवा तृतीया, सन्यारा तीज, रबी उल-अव्वल प्रारंभ,
३३/१०	४	गु.	३/१३	ह.	४९/३५	सि.	१६/२	वि.	३/१३	२७	११	२०	२	कन्या	५/४९	७/६	३/२४/२०/२९	भ. ३/१३ या., गुरु स्वाती ३ में ४२/१८, शुक्र हस्त में १२/५० नागपंचमी,
अवम.	५	गु.	५७/४२	०	० ०	०	० ०	०	० ०	०	०	०	०	० ०	० ०	० ०	० ० ० ०	पंचमी तिथि क्षय
३३/५	६	शु.	५२/१०	चि.	४६/०	सा.	८/५२	कौ.	२४/५६	२८	१२	२१	३	तु. १७/४७	५/५०	७/५	३/२५/१८/६	श्री कल्कि जयन्ती
३३/२	७	श.	४६/४३	स्वा	४२/२८	शु.	१/४२ ५४/४०	ग.	१९/२६	२९	१३	२२	४	तुला	५/५१	७/४	३/२६/१५/४२	भ. ४६/४३ उ., गोस्वामो श्री तुलसीदास जयन्ती।
३२/५८	८	र.	४१/२८	वि.	३९/८	ब्र.	४७/४५	वि.	१४/५	३०	१४	२३	५	बृ. २४/५८	५/५१	७/३	३/२७/१३/२४	भ. १४/५ या., बुध मघा सिंह में ५१/४८, श्री दुर्गाष्टमी, (A)
३२/५२	९	चं.	३६/२२	अनु.	३६/०	ऐं.	४१/०	बा.	८/५०	३१	१५	२४	६	वृश्चिक	५/५२	७/२	३/२८/१०/५८	भारत स्वतन्त्रता दिन,
३२/५०	१०	मं.	३१/३२	ज्ये.	३३/७	वै.	३४/२९	तै.	४/२	भा. १	१६	२५	१०	ध. ३३/७	५/५३	७/१	३/२९/८/४०	भ. ५९/५१ उ., सं. सूर्य मघा सिंह में ५३/२२, मु. ३०, (B)
३२/४५	११	बु.	२७/१०	मू.	३०/३८	वि.	२८/१५	वि.	२७/१०	२	१७	२६	८	धनु	५/५३	७/०	४/०/६/२२	भ. २७/१० या. मंगल आर्द्रा में, २८/३८, पवित्रा एकादशी व्रत (स.)
३२/४३	१२	गु.	२३/१०	पू.षा.	२८/३५	प्री.	२२/२२	बा.	२३/१०	३	१८	२७	९	म. ४३/१४	५/५४	६/५९	४/१/४/३	प्रदोष व्रत.
३२/३७	१३	शु.	१९/५२	उ.षा.	२७/१२	आ.	१७/५	तै.	१९/५२	४	१९	२८	१०	मकर	५/५४	६/५८	४/२/१/४६	
३२/३२	१४	श.	१७/२०	श्र.	२६/४०	सौ.	१२/२२	व.	१७/२०	५	२०	२९	११	कु. ५६/५६	५/५५	६/५७	४/२/५९/३१	भ. १७/२० उ. ४६/३८ या, पंचक प्रा. ५६/५६, श्री सत्यनारायण व्रत. (C)
३२/३०	१५	र.	१५/५५	ध.	२७/१२	शो.	८/३२	ब.	१५/५५	६	२१	३०	१२	कुंभ	५/५६	६/५६	४/३/५७/१६	बुध. पू. फा. में ४६/०, श्रावणी पूर्णिमा, रक्षाबन्धन (राखी) (D)

(A) मेला श्री नयना देवी एवं श्री चिन्तपूरणी (हि. प्र.); (B) पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न से पूर्व.; (C) ऋग्वेदियों का उपाकर्म, (D) यजुर्वेदियों का उपाकर्म, श्री अमरनाथ यात्रा (काश्मीर)

श्रावण शु. ८ रवि, इष्ट ५९/८

सु.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	२	४	६	५	१०	६	०
२८	५	०	१३	१३	१६	२५	२५
१०	१	१४	४२	५२	३२	२०	२०
६	५३	५१	३१	५८	१२	२	२
५७	३९	११९	७	६१	४	३	३
३९	२४	८	९	४	१४	११	११
–	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
–	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आश्ले ४	मृग. ४	मघा. १	स्वा. ३	हस्त. १	शत. ३	विशा. २	भर. ४

कुं. सूर्योदये

५ बु. | म. ३ | शु. ६ | सू. ४ | २ | ७ | रा. चं. गु. | १ के. | ८ | १० | १२ | ९ | ११ श.

लोक-भविष्य–श्रावण शुक्ल में तिथिक्षय नेष्ट फलप्रद कहा है–"श्रावणे शुक्लपक्षे च क्षीणा क्वापि तिथि र्भवेत्। तदैव कार्तिके मासे छत्रभंगः प्रजायते। आगे कार्तिक में कहीं किसी विशिष्ट व्यक्ति का पदरिक्त हो। सूर्य-बुध का सिंह राशि में एकत्र होकर शनि से दृष्ट होना एवं मंगलवारी संक्रान्ति देश में कहीं राजनैतिक एवं सामाजिक उलझनों को जन्म देगी। प्रधान नेता तथा धार्मिक नेताओं को किसी उलझन-विशेष का सामना करना पड़े।

ग्रहचाल और बाजार का रुख–पक्षारंभ में रुई, चावल, गेहूं, चना, ज्वार, बाजरा एवं दालों में मन्दे का वातावरण रहेगा। १४ अगस्त से चांदी सोना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं, अलसी एवं लाल रंग की चीजों में तेजी बनेगी। २० अगस्त के बाद बाजार का रुख बदलेगा।

कुं. सूर्योदये

शु. ६ | ४ | गु. ७ रा. | सू. बु. ५ | ३ मं. | ८ | २ | ९ | चं. श. ११ | १ के. | १० | १२

श्रावण शु. १५ रवि, इष्ट ५८/५५

सु.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	२	४	६	५	१०	६	०
४	९	१३	१४	२०	१६	२४	२४
५३	३५	४३	३५	५३	१	५७	५७
५९	४८	४९	२०	२०	५३	४६	४७
५७	३८	११०	८	५८	४	३	३
४७	४९	१३-	३	३७	२७	११	११
–	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
–	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मेघा २	आर्द्रा १	पू. फा १	स्वा. ३	हस्त. ४	शत. ३	विशा. २	भर. ४

आकाश लक्षण–अगस्त ८, ११, १४, १६, १७, ... को हि. प्र. पंजाब, हरयाणा, जम्मू काश्मीर, उ. प्र., द. मद्रास, आसाम में वर्षा के योग हैं।

श्री वि सं. २०५१, शाक १९१६, भाद्रपद कृष्ण पक्ष १०										तारीखें				चन्द्र राशि	चण्डीगढ़		उदय कालिक	(२२ अग. से ५ सित. तक, सन् १९९४ ई.) द. अय., उ. गोल, वर्षा-शरद ऋतु
दि.मा.	ति.	वा.		नक्षत्र		योग		करण		प्र.	अं.	श.	मु.	प्रवेशकाल	भा. स्टैं. टा. सू. उ.	सू. अ.	स्पष्ट सूर्य	ग्रह दर्शन—बुध २० अग. से पश्चिम में दीखने लगेगा। प्रातः मंगल पूर्व में और शनि प. क्षितिज से ऊपर दीखेगा। सायं गुरु याम्योत्तर वृत से पश्चिम की ओर ढुलका और शुक्र प. क्षितिज से ऊपर दिखाई देगा।
घ. प.			घ. प.		घ. प.		घ. प.		घ. प.	भाद्र	अग	श्रावं.	र. उ.	घ. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा. अं. क.वि.	
३३/२५	१	चं.	१५/४५	शत.	२९/२	अ.	५/४०	कौ.	१५/४५	७	२२	३१	१३	कुंभ	५/५७	६/५५	४/४/५५/४	
३३/२३	२	मं.	१७/५	पू.भा.	३५/२२	सु.	४/०	ग.	१७/५	८	२३	भा. १	१४	मी. १६/३२	५/५७	६/५४	४/५/५२/५३	भ. ४८/३० उ., सायं कन्या में सूर्य २०/४२, शरद ऋतु प्रारंभ, शक भाद्रपद प्रा
३३/१८	३	बु.	१९/५५	उ. भा.	३७/८	धृ.	३/२८	वि.	१९/५५	९	२४	२	१५	मीन	५/५८	६/५३	४/६/४०/४१	भ. १९/५५ या., शुक्र चित्रा में २९/४०, श्री गणेश चतुर्थी व्रत, बहुला चतुर्थी व्रत,
३३/१३	४	गु.	२४/१२	रे.	४३/१२	शू.	४/२	बा.	२४/१२	१०	२५	३	१६	मे. ४३/१२	५/५९	६/५२	४/७/४८/३४	पंचक समाप्त, ४३/१२
३३/१०	५	शु.	२९/४२	अ.	५०/२५	गं.	५/४३	तै.	२९/४२	११	२६	४	१७	मेष	५/५९	६/५१	४/८/४६/२७	
३३/५	६	श.	३५/५८	भ.	५८/८	वृ.	८/०	ग.	२/५०	१२	२७	५	१८	मेष	६/०	६/५०	४/९/४४/२२	भ. ३५/५८ उ., बुध पश्चिम में उदित १/५
३३/०	७	र.	४२/२५	कृ.	६०/०	ध्रु.	१०/४०	वि.	९/१२	१३	२८	६	१९	वृ. १७/३	६/०	६/४८	४/१०/४२/१७	भ. ९/१२ या
३१/५५	८	चं.	४८/१७	कृ.	५/४७	व्या.	१३/१०	बा.	१५/२१	१४	२९	७	२०	वृष	६/१	६/४७	४/११/४०/१८	बुध उ. फा. में १८/१०, **श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत (जयन्ती योग) (A)**
३१/५०	९	मं.	५३/५	रो.	१३/४	ह.	१५/२	तै.	२०/४१	१५	३०	८	२१	मि. ४२/१४	६/२	६/४६	४/१२/३८/१८	सूर्य पू.फा० में ४३/५, **श्री गुग्गा नवमी,**
३१/४५	१०	बु.	५६/१८	मृ.	१८/२५	व.	१५/५२	व.	२४/४२	१६	३१	९	२२	मिथुन	६/३	६/४५	४/१३/३६/१९	भ. २४/४२ उ., ५६/१८ या., **शुक्र तुला में ३६/८,**
३१/४२	११	गु.	५७/३	आ.	२२/२८	सि.	१५/२८	ब.	२६/४१	१७	सि. १	१०	२३	मिथुन	६/३	६/४४	४/१४/३४/२५	अजा एकादशी व्रत (स्मा.), सितम्बर प्रारंभ,
३१/४०	१२	शु.	५६/५५	पुन.	२४/३२	व्य.	१३/२५	कौ.	२६/५९	१८	२	११	२४	क. ९/१	६/४	६/४३	४/१५/३२/३०	**बुध कन्या में, १८/१५,** अजा एकादशी व्रत (वै.), **पर्युषण पर्व प्रारंभ (जैन)**
३१/३३	१३	श.	५४/२५	पु.	२४/४५	व.	९/५२	ग.	२५/४०	१९	३	१२	२५	कर्क	६/५	६/४१	४/१६/३०/३८	भ. ५४/२५ उ., **अगस्त्य उदित, शनि प्रदोष व्रत।**
३१/२८	१४	र.	५०/१७	आश्ले	२३/१५	प.	४/५५ ५८/४२	वि.	२२/१८	२०	४	१३	२६	सिं. २३/१५	६/५	६/४०	४/१७/२८/४९	भ. २२/१८ या., **गुरु स्वाती ४ में ८/१७**
३१/२५	३०	चं.	४४/५५	म.	२०/१८	सि.	५१/२८	च.	१७/३३	२१	५	१४	२७	सिंह	६/६	६/३९	४/१८/२६/५९	**सोमवती अमावस, पिठोरी अमा, कुशोत्पाटिनी अमा** नक्तव्रत समाप्त।

(A) चन्द्रोदय रात्रि ११ घं. ४४ मि.), **दूर्वाष्टमी** (देखें-संदिग्ध व्रतपर्व व्यवस्था)

भाद्र. कृ. ८ चन्द्र, इष्ट ५८/४२

सु.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	२	४	६	५	१०	६	०
१२	१४	२७	१५	२८	१५	२४	२४
३७	४३	४७	४३	३०	२५	३२	३२
१	३८	५९	०	३७	४४	१९	१९
५८	३८	९९	८	५५	४	३	३
१	१०	५६	५८	८	३२	११	११
-	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
माघा. ४	आर्द्रा. ३	उ.फा. १	स्वा. ३	चित्रा. २	शत. ३	विशा. २	भर. ४

कुं. सूर्योदये

शु. ६ | सू. | ७
गु. ७ रा. | ५ बु. | ३ मं.
८ | चं. २
९ | श ११ | १ के.
१० | १२

लोक भविष्य—चित्रा नक्षत्र का शुक्र विश्व में शान्ति, आर्थिक विकास के लिए प्रमुख देशों के प्रयत्नों में सफलता का संकेत देता है। गन्ने की फसल को नुक्सान पहुंचे। इस मास में पांच चन्द्रवार होने से कुछ देशों में कहीं कुछ विशेष परिवर्तन का संकेत है। गुरु-राहु-शुक्र एकराशि में होने से देशे में कहीं किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त हो एवं कहीं धार्मिक एवं राजनैतिक उन्माद से परेशानी रहे।

कुं. सूर्योदये

७ | ६ बु. | ४
गु. रा. शु. | सू. चं. ५ | ३ मं.
८ | २
९ | श. ११ | १ के.
१० | १२

भाद्र. कृ. ३० चन्द्र, इष्ट ५८/३०

सु.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	२	५	६	६	१०	६	०
१९	१९	८	१६	४	१४	२४	२४
२३	७	५९	४८	४५	५३	१०	१०
४६	५७	१	३	१७	४२	४	४
५८	३७	९०	९	५१	४	३	३
१४	२१	५७	४३	११	३०	११	११
-	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.फा. २	आर्द्रा. ४	उ.फा. ४	स्वा. ४	चित्रा. ४	शत. ३	विशा. २	भर. ४

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्षारंभ में बाजार अस्थिर रहे, २७ अगस्त के लगभग रुई व शेयर बाजार मन्दे हों, अनाज, दाल दाना एवं तेल तिलहन तेज हों। २९ अगस्त से २ सितम्बर तक जीरा, सोना, गुड़, खाण्ड, सरसों, तिल, तेल, घी, गेहूं, जौ, चने में तेजी का ही वातावरण रहेगा।

आकाश लक्षण—अग. २४, २७, से ३१, सितं. १ से ४ तक आसाम, बंगाल, पंजाब, उ. प्र. तथा हि. प्र. में वर्षा हो, अन्यत्र खण्डवृष्टि के योग हैं।

श्री वि सं. २०५१, शाक १९१६, भाद्रपद शुक्ल पक्ष ११ — **(६ से १९ सितं. तक, सन् १९९४ ई.), दक्षिणायन, उत्तर गोल, शरद् ऋतु**

दि.मा.	ति.	वा		नक्षत्र		योग		करण		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्र राशि प्रवेशकाल	चण्डीगढ़ भा स्टैं. टा. सू. उ.	सू. अ.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य
घ. प.			घ. प.		घ. प.		घ. प.		घ. प.	भाद्र	सितं	भाद्र	र. उ.	घ. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा. अं. क. वि.
३१/२०	१	मं.	३८/३४	पू.फा	१६/१७	सा.	४३/३२	किं.	११/४५	२२	६	१५	२८	कं. ३०/७	६/६	६/३८	४/१९/२५/१३
३१/१७	२	बु.	३१/४८	उ.फा	११/३५	शु.	३५/१०	बा.	५/११	२३	७	१६	२९	कन्या	६/६	६/३७	४/२०/२३/२७
३१/१०	३	गु.	२४/४२	ह.	६/३०	शु.	२६/३८	ग.	२४/४२	२४	८	१७	र. १	तु. ३३/५९	६/७	६/३५	४/२१/२१/४८
३१/८	४	शु.	१७/४५	चि.	१/२८ ५६/४२	ब्र.	१८/१२	वि.	१७/४५	२५	९	१८	२	तुला	६/७	६/३४	४/२२/२०/२
३१/३	५	श.	११/१०	वि.	५२/२५	ऐं.	१०/२	बा.	११/१०	२६	१०	१९	३	वृ. ३८/२९	६/८	६/३३	४/२३/१८/२२
३०/५८	६	र.	५/८	अनु.	४८/४५	वै.	२/१८ ५५/१०	तै.	५/८	२७	११	२०	४	वृश्चिक	६/९	६/३२	४/२४/१६/४५
अवम	७	र.	५९/४२	०	० ०	०	० ०	०	० ०	०	०	०	०	० ०	० ०	० ०	०० ००
३०/५३	८	चं.	५५/५	ज्ये.	४५/५५	प्री.	४९/४०	वि.	२७/२४	२८	१२	२१	५	ध. ४५/५५	६/९	६/३०	४/२५/१५/६
३०/४८	९.	मं	५१/२०	मू.	४३/४८	आ.	४२/४५	बा.	२३/१३	२९	१३	२२	६	धनु	६/१०	६/२९	४/२६/१३/३१
३०/४५	१०	बु.	४८/२२	पू.षा	४२/३२	सौ.	३७/३२	तै.	१९/५१	३०	१४	२३	७	म. ५७/२६	६/१०	६/२८	४/२७/११/५६
३०/४०	११	गु.	४६/१८	उ.षा	४२/८	शो.	३३/०	व.	१७/२०	३१	१५	२४	८	मकर	६/११	६/२७	४/२८/१०/२५
३०/३५	१२	शु.	४५/१२	श्र.	४२/४२	अ.	२९/१५	ब.	१५/४५	आ. १	१६	२५	९	मकर	६/११	६/२५	४/२९/८/५२
३०/३०	१३	श.	४५/५	ध.	४४/१८	सु.	२६/१५	कौ	१५/९	२	१७	२६	१०	कुं. १३/६	६/१२	६/२४	५/०/७/२४
३०/२५	१४	र.	४६/५	श.	४६/५२	धृ.	२४/८	ग.	१५/३५	३	१८	२७	११	कुम्भ	६/१२	६/२३	५/१/५/४८
३०/२०	१५	चं.	४८/१५	पू.भा.	५०/३२	शू.	२२/५०	वि.	१७/१०	४	१९	२८	१२	मी. ३४/१७	६/१३	६/२१	५/२/४/३१

ग्रह दर्शन–प्रातः मंगल पूर्व में, होगा। सायं बुध प. क्षितिज पर, शुक्र उससे काफी ऊपर तथा गुरु उससे भी ऊपर चमक रहा होगा। इस समय शनि को पूर्व कपाल में देखें।

बुध हस्त में ३८/४०

चन्द्र दर्शन मु. ३०, मंगल पुन. में २२/२ सामवेदियों का उपाकर्म (A)

भ. ५१/१३ उ., शुक्र स्वाती में १३/२७, हरितालिका व्रत (B)

भद्रा १७/४५ या, सिद्धि विनायक व्रत, ऋषि पंचमी, (देखें–'संदिग्ध- (C)

भद्रा ५९/४२ उ., सूर्य षष्ठी,

सप्तमी तिथिक्षय

भ. २७/२४ या, श्री राधाष्टमी, श्री महालक्ष्मी व्रत प्रारंभ,

सूर्य उ. फा. में २७/१०, श्रीचन्द नौमी (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव)

भ. १७/२० उ. ४६/१८ या, पद्मएकादशी व्रत (स.), श्रवण द्वादशी व्रत.

सं. सूर्य कन्या में ५२/२२, मु. ३०, पुण्यकाल अगले दिन (D)

पंचक प्रा. १३/६, शनि प्रदोषव्रत

भ. ४६/५ उ., अनन्त चतुर्दशी व्रत।

भ. २२/१० या, श्री सत्यनारायण व्रत, पूर्णिमा का श्राद्ध, प्रोष्ठपदी श्राद्ध

(A) मेला श्री बाबा गोसाईं आणां कुराली (पंजाब), (B) कलंक चौथ (चन्द्र दर्शन निषिद्ध, चन्द्रास्त रात्रि ८ घं. १२ मि.), श्री वराह जयन्ती, रबी-उस्सानी मुसलमानी प्रारंभ, (C) व्रत पर्व व्यवस्था'),संवत्सरी महापर्व (जैन), (D) मध्याह्न से पूर्व, बुध चित्रा में ४/३८ ,श्री वामन जयन्ती

भाद्. शु. ८ चन्द्र, इष्ट ५८/२२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	२	५	६	६	१०	६	०
२६	२३	१९	१८	१०	१४	२३	२३
११	२७	९	५७	२८	२२	४७	४७
५४	७	३९	३	५९	१५	४९	४९
५८	३६	८२	१०	४६	४	३	३
२५	३७	५	२२	०	२५	११	११
-	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
-	उ.	उ.	उ	उ.	उ.	अ.	अ.
पू. फा. ४	पुन. ३	हस्त ३	स्वा. ४	स्वा. २	शत. ३	विशा. २	भर. ४

कुं. सूर्योदये

गु. ६ बु. ४ रा. ७ शु. सू. ५ मं. ३ ८ २ ९ चं. श. ११ १ के. १० १२

लोक भविष्य–स्वाती का शुक्र देश के परराष्ट्रों से संबंध किसी विशेष कारण से कुछ उलझन- पूर्ण करे। कुछ राष्ट्रों में आपसी मतभेद बढ़ेंगे, कुछ राष्ट्रों की सन्धि तथा मैत्री की बातें असफल रहें। व्यापारियों के लिए भी यह स्थिति अच्छी नहीं।

कुं. सूर्योदये

गु. शु. ७ रा. ५ सू. बु. ६ ४ ८ ९ मं. ३ १० १२ २ ११ चं. श. १ के.

भाद्र. शु. १५ चन्द्र, इष्ट ५८/१२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	२	५	६	६	१०	६	०
३	२७	२८	१९	१५	१३	२३	२३
१	४०	१३	१२	३१	५२	२५	२५
२१	५०	५८	२५	३२	५	३३	३३
५८	३५	७१	१०	३९	४	३	३
३६	४७	२९	५७	२८	१०	११	११
-	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ. फा. २	पुन. ३	चित्रा ४	स्वा. ४	स्वा. ३	शत. ३	विशा. २	भर. ४

कन्या संक्रान्ति शुक्रवारी होने से कहीं पश्चिम में युद्धमय व्याप्त हो।

ग्रहचाल और बाजार का रुख–पक्ष के मध्य तक गेहूं आदि अनाज, रुई, चांदी, खाण्ड तिल तेल सरसों में तेजी मन्दे के साधारण रिएक्शन आएंगे। १३ सितम्बर से पक्ष के अन्त तक रुई कपास, रेशम, सूत, सोना, चांदी, घी, तेल, अलसी, सरसों आदि तिलहन में तेजी का वातावरण रहे।

आकाश लक्षण–सितं. ७, ८, १३, १६, १७ को उ. प्रदेश, [illegible] कहीं खण्डवृष्टि व बूंदाबांदी के योग हैं।

श्री वि सं. २०५१, शाक १९१६, आश्विन कृष्ण पक्ष १२										तारीखें				चन्द्र राशि	चण्डीगढ़		उदय कालिक	(२० सितं. से ५ अक्तू. तक, सन् १९९४ ई.) द. अय., उ. द. गोल, शरद ऋतु
दि.मा.	ति.	वा.		नक्ष		योग		कर		प्र.	अं.	श.	मु.	प्रवेशकाल	भा स्टैं. टा.		स्पष्ट सूर्य	ग्रह दर्शन–प्रातः मंगल पूर्व में दीखेगा। सायं बुध, गुरु, शुक्र पश्चिम में परस्पर आसन्न से दीखेंगे। इस समय शनि पूर्व कपाल में होगा।
घ. प.			घ. प.		घ. प.		घ. प.		घ. प.	आश्वि	सित	भाद्र.	र. उ.	घ. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	रा. अं. क. वि.	
३०।२५	१	मं	५१/४०	उ.भा	५५/३०	गं.	२२/३०	बा.	१९/३०	५	२०	२९	१३	मीन	६/१४	६/२०	५/३/३/८	**श्राद्ध (पितृ पक्ष) प्रारंभ, प्रतिपदा श्राद्ध,**
३०।२२	२	बु	५६/१८	रे.	६०/०	वृ.	२३/८	तै.	२३/५९	६	२१	३०	१४	मीन	६/१४	६/१९	५/४/१/४४	**मंगल कर्क में ५२/३०, बुध तुला में २७/४२, राहु विशा. १ में केतु (A)**
३०।७	३	गु	६०/०	रे.	१/३२	ध्रु.	२४/३४	व.	२८/९	७	२२	३१	१५	मे. १/३२	६/१५	६/१८	५/५/०/२६	भ. २९/५ उ., पंचक स. १/३२, **तृतीया श्राद्ध**
३०।३	३	शु	१/५२	अ.	८/३५	व्या	२६/४५	वि.	१/५२	८	२३	आ. १	१६	मेष	६/१५	६/१६	५/५/५९/७	भ. १/५२ या., सायन तुला में सूर्य १३/५८ दक्षिण गोल प्रा., शक आश्विन प्रा. (B)
२९।५८	४	श	८/१२	भ.	१६/१५	ह.	२९/२०	बा.	८/१२	९	२४	२	१७	वृ. ३३/१३	६/१६	६/१५	५/६/५७/४२	गुरु विशा. १ में १५/४५, **पंचमी श्राद्ध,**
२९।५३	५	र.	१४/५०	क.	२४/८	व.	३१/५८	तै	१४/५०	१०	२५	३	१८	वृष	६/१७	६/१४	५/७/५६/४०	**षष्ठी श्राद्ध** (देखें -'संदिग्ध व्रतपर्व व्यवस्थां),
२९।५०	६	चं	२१/१८	रो.	३१/४२	सि.	३४/२०	व.	२१/१८	११	२६	४	१९	वृष	६/१७	६/१४	५/८/५५/२८	भ. २१/१८ उ. ५४/२ या.,
२९।४३	७	मं	२६/४५	मृ.	३८/१७	व्य	३५/५५	ब.	२६/४५	१२	२७	५	२०	मि. ५/०	६/१८	६/११	५/९/५४/१९	सूर्य हस्त में ५/१७, बुध स्वाती में ४९/२५, शुक्र विशा में ३६/३२, (C)
२९।४०	८	बु	३०/५२	आ.	४३/३२	व.	३६/२५	कौ	३०/५२	१३	२८	६	२१	मिथुन	६/१८	६/१०	५/१०/५३/१२	**वक्री शनि शत. २ में १/२५, अष्टमी श्राद्ध**
२९।३५	९	गु	३३/८	पुन.	४६/५६	प.	३५/२८	तै.	२/०	१४	२९	७	२२	क. ३१/५	६/१९	६/९	५/११/५२/८	मंगल पुष्य में ३५/०, नवमी श्राद्ध, सौभाग्यवती श्राद्ध
२९।३०	१०	शु	३३/२२	पु.	४८।२८	शि	३२/५५	व.	३	१५	३०	८	२३	कर्क	६/१९	६/७	५/१२/५१/४	भ. ३/१५ उ., ३३/२२ या., **दशमी श्राद्ध**
२९।२५	११	श	३१/३०	श्ले.	४७।३७	सि.	२८/४२	व.	२/२६	१६	अ.१	९	२४	सिं. ४७/३४	६/२०	६/६	५/१३/५०/६	**अक्तूबर प्रारंभ, इन्दिरा एकादशी व्रत (स.), एकादशी श्राद्ध**
२९।२०	१२	र.	२७/४२	म.	४५।१५	सा.	२३/५५	तै.	२७/४२	१७	२	१०	२५	सिंह	६/२१	६/१	५/१४/४९/९	**यूरेनस मार्गी २/४७, नेपच्यून मार्गी ४२/३०, प्रदोष व्रत, मघा श्राद्ध (D)**
२९।१७	१३	चं	२२/१५	पू.फा.	४१।०	शु.	१५/४८	त.	२२/१५	१८	३	११	२६	क. ५४/४०	६/२१	६/४	५/१५/४८/१२	भ. २२/१५ उ. ४८/५२ या., **त्रयोदशी श्राद्ध**
२९।१०	१४	मं	१५/२८	उ.फा	३५।४०	शु.	७/३२ ५८/२२	श.	१५/२८	१९	४	१२	२७	कन्या	६/२२	६/२	५/१६/४७/२०	**शस्त्र. विषादि से मरे हुओं का श्राद्ध, चतुर्दशी-अमावस श्राद्ध (E)**
२९।७	३०	बु	७/३२	ह.	२९/३५	ऐं.	४८/४८	ना.	७/३२	२०	५	१३	२८	तु. ५६/२०	६/२२	६/१	५/१७/४६/२८	मातामह (नाना) का श्राद्ध, **श्राद्ध पक्ष समाप्त,** शारद नवरात्र प्रारंभ (F)

(A) भरणी ३ में २९/७ द्वितीया श्राद्ध, (B) विषुवदिन, श्री गणेश चतुर्थीव्रत, चतुर्थी श्राद्ध, (C) श्री महालक्ष्मी व्रत समाप्त, सप्तमी श्राद्ध, (D) द्वादशी श्राद्ध, सन्यासियों का श्राद्ध, जन्मदिन महात्मा गांधी, (E) सर्वपितृ अमा, (F) (देखें–संदिग्ध व्रत पर्व व्यवस्था), घटस्थापन, गजच्छाया योग (९ घं. २ मि. तक),

आश्वि. कृ. ८ बुध, ५८/००

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	३	६	६	६	१०	६	०
११	२	७	२०	२०	१३	२२	२२
५०	५८	४०	५३	३९	१६	५६	५६
८	२९	४४	४२	२६	२७	५६	५६
५८	३४	५९	११	२१	३	३	३
५६	३९	४९	३७	१२	४०	११	११
-	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
हस्त १	पुन. ४	स्वा. १	विशा. १	विशा. १	शत. २	विशा. १	भ. ३

कुं. सूर्योदये

बु. गु. शु. ७ रा.
सू. ६
५
मं. ४
८
९
चं. ३
१०
१२
२
११ श.
१ के.

लोक भविष्य–कर्क राशि का मंगल मकर प्रभाव राशि वाले देशों में कहीं सामाजिक एवं कुछ राजनैतिक उलझनों को जन्म देगा। भारत में उत्तर प्रदेश के कुछ क्षेत्रों में वातावरण कुछ क्षुब्ध रहे। किसान वर्ग के लिए भी यह मास पक्ष कुछ कष्टप्रद है।

कुं. सूर्योदये

बु. गु. शु. रा.
सू. चं. ६
५
८
७
४ मं.
९
३
१०
१२
२
११ श.
१ के.

आश्वि. कृ. ३० बुध, ५७/५०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	३	६	६	६	१०	६	०
१८	६	१२	२२	२३	१२	२२	२२
४३	५८	५	१६	१४	५२	३४	३४
२९	७	२९	२०	२८	६	४१	४१
५९	३३	१८	१२	१४	३	३	३
१२	३९	१९	३	४८	१२	११	११
-	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
हस्त ३	पुष्य. ३	स्वा. २	विशा. १	विशा. १	शत. २	विशा. १	भ. ३

विशाखा नक्षत्र का शुक्र अनाजों की फसल अच्छी होन पर भी महंगाई करे, जनता में अशान्ति का वातावरण रहे।

ग्रहचाल और [illegible] अच्छी मन्दी बने। सरसों, अलसी, सूरजमुखी, तिल, तेल, मूंगफली आदि में मंदा संभव है। इस समय सब प्रकार के अनाज एवं गुड़ शक्कर तेज होंगे। २७, २८ सितम्बर को रुई एवं अनाज मन्दे रहें, २९ सितं.. से ५ अक्तूबर तक चांदी व रुई में घटाबढ़ी चले, सोने में जोरदार तेजी का वातावरण बने।

श्री वि सं. २०५१, शाक १९१६, आश्विन शुक्ल पक्ष १३										तारीखें				चन्द्र राशि	चण्डीगढ़		उदय-कालिक
द.मा.	ति.	वा.		नक्षत्र		योग		करण		प्र.	अं.	श.	मु.	प्रवेशकाल	भा. स्टैं. टा.		स्पष्ट सूर्य
															सू.उ	सू. अ.	
घ. प.			घ. प.		घ. प.		घ. प.		घ. प.	आश्वि.	अक्तू.	आश्वि.	र. उ.	घ. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा. अं. क. वि.
नवम	१	बु.	५९/२२	०	० ०	० ०	० ०	०	० ०	० ०	० ०	० ०	०	० ०	० ०	०	० ० ० ०
२९/२	२	गु.	५०/५०	चि.	२३/५	वै.	३८/५५	बा.	२५/६	२१	६	१४	२९	तुला	६/२३	६/०	५/१८/४५/४०
२८/५७	३	शु.	४२/३५	स्वा.	१६/३५	वि.	२९/१०	तै.	१६/४२	२२	७	१५	ज १	वृ.५७/५७	६/२४	५/५९	५/१९/४४/५४
२८/५२	४	श.	३४/५२	वि.	१०/३२	प्री.	१९/५०	ब.	८/४३	२३	८	१६	२	वृश्चिक	६/२४	५/५७	५/२०४४/७
२८/४७	५	र.	२८/०	अ.	५/१०	आ.	११/५	बा.	१/२६	२४	९	१७	३	वृश्चिक	६/२५	५/५६	५/२१/४३/२५
२८/४२	६	चं.	२२/१२	ज्ये.	०/४५ ५७/३४	सौ.	३/१२ ५६/१८	तै.	२२/१२	२५	१०	१८	४	ध. ०/४५	६/२६	५/५५	५/२२/४२/४४
२८/४०	७	मं.	१७/४०	पू.षा.	५५/४०	अ.	५०/२८	व.	१७/४०	२६	११	१९	५	धनु	६/२६	५/५४	५/२३'४२/३
२८/३५	८	बु.	१४/२८	उ.षा.	५५/८	सु.	४५/!४०	ब.	१४/२८	२७	१२	२०	६	म. १०/३२	६/२७	५/५३	५/२४/४१/२६
२८/३०	९	गु.	१२/४२	श्र.	५५/५८	धृ.	४२/०	कौ.	१२/४२	२८	१३	२१	७	मकर	६/२७	५/५१	५/२५/४०/४९
२८/२५	१०	शु.	१२/१५	ध.	५८/३	शू.	३९/२२	ग.	१२/१५	२९	१४	२२	८	कु. २७/१	६/२८	५/५०	५/२६/४०/१४
२८/२०	११	श.	१३/८	श.	६०/००	गं.	३७/४८	वि.	१३/८	३०	१५	२३	९	कुम्भ	६/२९	५/४९	५/२७/३९/३३
२८/१८	१२	र.	१५/१८	श.	१/२२	वृ.	३७/०५	बा.	१५/१८	३१	१६	२४	१०	मी ४९/४३	६/२९	५/४८	५/२८/३९/११
२८/१२	१३	चं.	१८/३५	पू.भा.	५/५०	ध्रु.	३७/१८	तै.	१८/३५	का. १	१७	२५	११	मीन	६/३०	५/४७	५/२९/३८/४३
२८/७	१४	मं.	२२/५८	उ.भा.	११/२०	व्या.	३८/१०	व.	२२/५८	२	१८	२६	१२	मीन	६/३१	५/४६	६/०/३८/१७
२८/५	१५	बु.	२८/१५	रे.	१७/४५	ह.	३९/४५	व.	२८/१५	३	१९	२७	१३	मे.१७/४५	६/३१	५/४५	६/१/३७/५०

(६ से १९ अक्टू. तक, सन् १९९४ ई.), द. अय, द.गोल, शरद् ऋतु,

ग्रह दर्शन—बुध १४ अक्तू. को पश्चिम में लुप्त हो जाएगा। प्रातः मंगल याम्योत्तरवृत्त से पूर्व की ओर ढुलका दीखेगा। सायं गुरु, शुक्र परस्पर आसन्न स्थिति में पश्चिम में दीखेंगे। इस समय शनि पूर्व कपाल में होगा।

प्रतिपदा तिथिक्षय,
चन्द्रदर्शन मु. १५,
जमद-उल-अव्वल मुसलमानी प्रारंभ,
भ. ८/४३ उ. ३४/५२ या.,
बुध वक्री १४/२, उपाङ्ग ललिता व्रत,
सूर्य चित्रा में ३७/३८, सरस्वती-आवाहन,
भ. १७/४० उ. ४६/४ या., गुरु विशाखा २ में ११/४०, सरस्वती पूजन,
श्री दुर्गाष्टमी, महाष्टमी, महानवमी (देखें "संदिग्ध व्रत-पर्व व्यवस्था") (A)
शुक्र वक्री ११/४८, सरस्वती विसर्जन, नवरात्र समाप्त, (B)
भ ४२/४१ उ., पंचक प्रा. २७/१, भरतमिलाप, बुध पश्चिम में अस्त ५४/४७,
भ. १३/८ तक; पापांकुशा एकादशी व्रत (स.),
प्रदोषव्रत
सं. सूर्य तुला में २१/२०, मु. ४५, पुण्यकाल ५/२० बाद,
भ. २२/५८ उ ५५/३६ या., वक्री बुध चित्रा में ५०/२५, कोजागर व्रत,
पंचक समाप्त. १७/४५, श्री सत्यनारायण व्रत (C)

(A) सरस्वती बलिदान, (B) विजयादशमी (दशहरा) (देखें—"संदिग्ध व्रत पर्व व्यवस्था"), अपराजिता पूजन, सीमोल्लंघन, (C) शरत्पूर्णिमा, कार्तिक स्नान प्रारंभ, श्री महर्षि वाल्मीकि जयन्ती।

आश्विन शु. ८ बुध, इष्ट ५७/३७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	३	६	६	६	१०	६	०
२५	१०	११	२३	२४	१२	२२	२२
३८	५०	४८	४१	१३	३१	१२	१२
२८	२१	१४	४९	२०	२२	२५	२५
५९	३२	३३	१२	०	२	३	३
२३	४१	४३	२४	३७	३८	११	११
-	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.	व.
-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
चित्रा १	पुष्य ३	स्वा. २	विशा. २	विशा. २	शत. २	विशा. १	भर. ३

कुं. सूर्योदये

गु. बु. रा. शु. ८ | ६ सू. | ५ | ४ मं. | चं. ९ | ३ | १० | १२ | २ | श. ११ | १ के.

लोक भविष्य—इस पक्ष में बुध-शुक्र शनि. के. ये अस्त हैं, मंहगाई से साधारण जन परेशान रहे, लेकिन इस मास में पांच बुधवार होने से शासक वर्ग द्वारा विशेष राहत मिले। —"बुधस्य पंचवाराः स्युः यत्र मासे निरन्तरम्।—प्रजाश्च सुख सम्पन्ना सुभिक्षं च प्रजायते।।"

कुं. सूर्योदये

८ | गु. | ६ | ९ | बु. ७ सू. रा. शु. | ५ | १० | ४ मं. | श. ११ | के १ | ३ | चं. १२ | २

आश्विन शु. १५ बुध, इष्ट ५७/२८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	३	६	६	६	१०	६	०
२	१४	५	२५	२३	१२	२१	२१
३४	३४	१८	९	१८	१४	५०	५०
५४	२९	४७	३९	१६	४८	९	९
५९	३१	१४	१२	१७	२	३	३
३८	१९	३४	४२	२८	०	११	११
-	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.	व.
-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
चित्रा ३	पुष्य ४	चित्रा ४	विशा. २	विशा. १	शत. २	विशा. १	भर. ३

पुनरपि इस पक्ष में चतुर्ग्रही-पंचग्रही योग किसी न किसी प्रान्त में घोर संकट एवं राजनीतिज्ञों के लिए कठिन परिस्थितियों वाला है।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्षारंभ में रुई में तेजी होकर मन्दा आए, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, अरहर, गेहूं जो, चना में तेजी बने। तेजी १३ अक्तूबर तक चले। १४ अक्तूबर के लगभग बाजार अचानक मन्दे हो सकते हैं।

आकाश लक्षण—अक्तूबर ९, १३, १४ के लगभग उ. पू. का एवं आसाम में कुछ बादलवर्षा हो, अन्यत्र आकाश साफ रहे।

शकुन विचार—यदि आश्विन पूर्णिमा को बादल हों तो गेहूं जो चना आदि का स्टाक करने से चैत्र में लाभ हो।

श्री वि सं. २०५१, शाक १९१६, कार्तिक कृष्ण पक्ष १४ | (२० अक्तू. से ३ नवं. तक, सन् १९९४ ई.), दक्षिणायन, द. गोल, शरद, हेमन्त ऋतु

ग्रह-दर्शन—२७ अक्तू. से बुध पूर्व में दीखने लगेगा और इसी दिन शुक्र पश्चिम में लुप्त हो जाएगा। प्रातः मंगल याम्योत्तरवृत्तासन्न और सायं गुरु पश्चिम में तथा शनि पूर्व कपाल में देखा जा सकेगा।

दि.मा. घ. प.	ति.	वा.	घ. प.	नक्षत्र	घ. प.	योग	घ. प.	कर.	घ. प.	तारीखें प्र. कार्ति	अं. अक्टू	श. आश्वि.	मु. ज. उ.	चन्द्र राशि प्रवेशकाल घ. प.	चण्डीगढ़ भा. स्टै. टा. सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा. अं. क. वि.	
२८/०	१	गु.	३४/१२	अ.	२४/५२	व.	४१/५२	बा.	१/१३	४	२०	२८	१४	मेष	६/३२	५/४४	६/२/३७/२८	
२७/५३	२	शु.	४०/४५	भ.	३२/३९	सि.	४४/१९	तै.	७/२८	५	२१	२९	१५	वृ. ४९/२८	६/३३	५/४२	६/३/३७/८	
२७/५०	३	श.	४७/२८	कृ.	४०/२२	व्य.	४६/५५	व.	१४/७	६	२२	३०	१६	वृष	६/३३	५/४१	६/४/३६/४८	भ. १४/६ उ. ४७/२८ या;
२७/४५	४	र.	५४/०	रो.	४८/८	व.	४९/२२	ब.	२०/४४	७	२३	का. १	१७	वृष	६/३४	५/४०	६/५/३६/३१	सायन वृश्चिक में सूर्य ३६/२२, हेमन्त ऋतु प्रा., मंगल आश्लेषा में ५९/४८ (A)
२७/४२	५	चं.	५९/५५	मृ.	५५/१८	प.	५१/२२	कौ.	२६/५८	८	२४	२	१८	मि. २१/२५	६/३५	५/३९	६/६/३६/१८	सूर्य स्वाती में ३/४०, व. बुध कन्या में २८/२ (B)
२७/३५	६	मं.	६०/००	आ.	६०/००	शि.	५२/३५	ग.	२९/५८	९	२५	३	१९	मिथुन	६/३६	५/३८	६/७/३६/६	
२७/३३	६	बु.	४/४२	आ.	१/२८	सि.	५२/४७	व.	४/४२	१०	२६	४	२०	क. ४९/५८	६/३६	५/३७	६/८/३५/५४	भ. ४/४२ उ. ३६/२४ या., गुरु विशाखा ३ में ५९/५५,
२७/२७	७	गु.	८/५	पुन	६/१०.	सा.	५१/३५	ब.	८/५	११	२७	५	२१	कर्क	६/३७	५/३६	६/९/३५/४७	व. शुक्र स्वाती ४ में ५५/४२, शुक्र पश्चिम में अस्त, १५/१६, (C)
२७/२२	८	शु.	९/३५	पु.	९/१०	शु.	४८/५६	कौ.	९/३५	१२	२८	६	२२	कर्क	६/३८	५/३५	६/१०/३५/४३	
२७/१७	९	श.	९/७	श्ले	१०/१७	शु.	४४/३२	ग.	९/७	१३	२९	७	२३	सिं. १०/१७	६/३९	५/३४	६/११/३५/३९	भ. ३७/५२ उ. प्लूटो अनु. १ में ५२/५५,
२७/१५	१०	र.	६/३८	म.	९/२५	ब्र.	३८/४२	वि.	६/३८	१४	३०	८	२४	सिंह	६/३९	५/३३	६/१२/३५/३६	भ. ६/३८ या., बुध मार्गी ७/३५, रमाएकादशी व्रत (स्मा.)
२७/१२	११	चं.	२/१२	पू. फा.	६/३७	ऐं.	३१/२२	बा.	२/१२	१५	३१	९	२५	कं. २०/३२	६/४०	५/३३	६/१३/३५/३८	रमा एकादशी व्रत (वै.), गोवत्स द्वादसी,
अवम	१२	चं.	५६/८	०	० ०	०	० ०	०	० ०	०	०	०	०	० ०	० ०	० ०	० ० ० ०	द्वादशी तिथिक्षय
२७/७	१३	मं.	४८/३८	उ. फा.	२/१० ५६/२५	वै.	२२/४७	ग.	२२/२३	१६	न. १	१०	२६	कन्या	६/४१	५/३२	६/१४/३५/४२	भ. ४८/३८ उ., गुरु वार्धक्य प्रारंभ २०/२५, भौम प्रदोषव्रत (D)
२७/२	१४	बु.	४०/५	चि.	४९/२०	वि.	१३/१५	वि.	१४/२०	१७	२	११	२७	तु. २३/००	६/४२	५/३१	६/१५/३५/४७	भ. १४/२२ या., नरक चतुर्दशी (पूर्व अरुणोदय वाली), श्री हनुमान् जयन्ती।
२७/०	३०	गु.	३१/०	स्वा.	४२/२८	प्री.	३/० ५२/२८	च.	५/३२	१८	३	१२	२८	तुला	६/४२	५/३०	६/१६/३५/५२	श्री महालक्ष्मी पूजन, दीपावली

शुक्रास्त २७ अक्तू.

(A) श्री गणेश चतुर्थी व्रत, करक चतुर्थी (करवा चौथ) (चन्द्रोदय रात्रि ८ घं. १९ मि.), शक कार्तिक प्रारंभ (B) शुक्र वार्धक्य प्रारंभ १५/१६ ; (C) अहोई अष्टमी (पंजाब), बुध पूर्व में उदित ५४/२८, (D) धन त्रयोदशी, यम को दीपदान, नवम्बर प्रा.

कार्तिक कृ. ८ शुक्र इष्ट ५७/१०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	३	५	६	६	१०	६	०
११	१९	२७	२७	१९	१२	२१	२१
३२	९	९	५	२६	०	२१	२१
४७	२१	२७	२०	४८	१३	३२	३२
५९	२९	७	१३	३३	१	३	३
५७	३१	३५	१	५५	८	११	११
	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
स्वा. २	आश्ले. १	चित्रा २	विशा. ३	स्वा. ४	शत. २	विशा. १	भ. ३

कुं. सूर्योदये

८ | गु. | बु. ६ | ६ | ७ सू. शु. रा. | ५ | १० | चं. ४ मं. | श. ११ | १ के. | ३ | १२ | २

लोक भविष्य—इस पक्ष में राहु शु. सू. गु. पर मंगल की दृष्टि है नीच सूर्य का राहु एवं शत्रु क्षेत्रस्थ गुरु से सम्बद्ध है, कहीं वरिष्ठ नेताओं को पेचीदा समस्याओं का सामना करना पड़े। कहीं यान दुर्घटना में हानि, कहीं राजनैतिक गतिरोध पैदा हो। राहु-गुरु ये विशाखा में हैं कुछ भागों में चोरी आदि अनैतिक घटनाएं अधिक हों।

कुं. सूर्योदये

८ | चं. | ६ बु. | ९ | गु. ७ सू. रा. शु. | ५ | १० | मं. ४ | श. ११ | के. ११ | ३ | १२ | २

कार्तिक कृ. ३० गुरु इष्ट ५७/००

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	३	५	६	६	१०	६	०
१७	२२	२९	२८	१५	११	२१	२१
३३	३	१	२३	५३	५४	२	२
०	०	३४	४८	१८	५८	२७	२७
६०	२८	५०	१३	३६	०	३	३
९	२७	२७	१०	१५	३१	११	११
	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
स्वा. ४	आश्ले. २	चित्रा २	विशा. ३	स्वा. ३	शत. २	विशा. १	भ. ३

ग्रहचाल और बाजार का रुख—इस पक्ष में रुई चांदी में मन्दी, गेहूं जौ, गुड़, खाण्ड, एवं हल्दी तेज रहे। २७ अक्तू. के लगभग बाजारों का रुख बदलेगा। रुई चना तेज, लाल मिर्च भी तेज रहे।

श्री वि सं. २०५१, शाक १९१६, कार्तिक शुक्ल पक्ष १५										तारीखें				चन्द्र राशि	चण्डीगढ़		उदय-कालिक
दि.मा	ति.	वा.		नक्षत्र		योग		करण		प्र.	अं.	श.	मु.	प्रवेशकाल	भा. स्टैं. टा. सू. उ.	भा. स्टैं. टा. सू. अ.	स्पष्ट सूर्य
घ. प.			घ. प.		घ. प.		घ. प.		घ. प.	कार्ति.	नवं.	कार्ति.	ज. उ.	घ. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा. अं. क. वि.
२६/५५	१	शु.	२१/४०	वि.	३५/२	सौ.	४१/५०	ब.	२१/४०	१९	४	१३	२९	वृ. २१/५४	६/४३	५/२९	६/१७/३६/३
२६/५०	२	श.	१२/३५	अनु.	२७/५८	शो.	३१/३१	कौ.	१२/२५	२०	५	१४	३०	वृश्चिक.	६/४४	५/२८	६/१८/३६/१४
२६/४५	३	र.	४/५	ज्ये.	२१/३७	अ.	२१/४८	ग.	४/५	२१	६	१५	ज. १	ध. २१/३७	६/४५	५/२७	६/१९/३६/२७
अवम	४	र.	५६/३८	०	००	०	००	०	००	०	०	०	०	०००	००	००	००००
२६/४२	५	चं.	५०/३५	मू.	१६/२५	सु.	१३/०	ब.	२३/२६	२२	७	१६	२	धनु	६/४६	५/२७	६/२०/३६/४१
२६/४०	६	मं.	४५/५२	पू. षा.	१२/३८	धृ.	५/२९ ५९/८	कौ.	१८/१७	२३	८	१७	३	म. २७/६	६/४६	५/२६	६/२१/३६/५६
२६/३५	७	बु.	४३/५	उ. षा.	१०/३०	गं.	५४/१५	ग.	१४/३०	२४	९	१८	४	मकर	६/४७	५/२५	६/२२/३७/१४
२६/३२	८	गु.	४२/८	श्र.	१०/८	वृ.	५०/५०	वि.	१२/३६	२५	१०	१९	५	कु. ४०/५१	६/४८	५/२५	६/२३/३७/३३
२६/२७	९	शु.	४३/०	ध.	११/३५	ध्रु.	४८/४८	बा.	१२/३४	२६	११	२०	६	कुंभ	६/४९	५/२४	६/२४/३७/५३
२६/२२	१०	श.	४५/३५	शत.	१४/४२	व्या.	४८/२	तै.	१४/१७	२७	१२	२१	७	कुंभ	६/५०	५/२३/	६/२५/३८/१६
२६/२०	११	र.	४९/३८	पू. भा.	१९/२५	ह.	४८/२५	व.	१७/३६	२८	१३	२२	८	मी. ३/१४	६/५०	५/२३	६/२६/३८/३७
२६/१७	१२	चं.	५४/४५	उ. भा.	२५/१८	व.	४९/३५	ब.	२२/१०	२९	१४	२३	९	मीन	६/५१	५/२२	६/२७/३९/४
२६/१५	१३	मं.	६०/००	रे.	३२/८	सि.	५१/२२	कौ.	२७/२२	३०	१५	२४	१०	मे. ३२/८	६/५२	५/२१	६/२८/३९/२९
२६/१०	१३	बु.	०/४२	अ.	३९/३२	व्य.	५३/३८	तै.	०/४२	मा. १	१६	२५	११	मेष	६/५३	५/२१	६/२९/३९/५७
२६/५	१४	गु.	७/१०	भ.	४७/१५	व.	५६/२	व.	७/१०	२	१७	२६	१२	मेष	६/५४	५/२०	७/०/४०/२७
२६/२	१५	शु.	१३/५२	कृ.	५५/०	प.	५८/२८	ब.	१३/५२	३	१८	२७	१३	वृ. १६/५४	६/५५	५/२०	७/१/४०/५७

(४ से १८ नवं. तक सन् १९९४ ई.), दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु

ग्रह दर्शन–शुक्र ७ नवं से पूर्व में दीखने लगेगा और गुरु ४ नवं. से पश्चिम में अस्त हो जाएगा। प्रातः मंगल और सायं शनि-दोनों याम्योत्तर वृत्तासन्न दीखेंगे। बुध को प्रातः पूर्व में देखें।

गुरु अस्त २०/२५, अन्नकूट, गोवर्धनपूजा, बलिपूजा

चन्द्रदर्शन मु. ३०, बुध तुला में ५/३५, श्री विश्वकर्मा पूजा (A)

भ. ३०/२१ उ. ५६/३८ तक, सूर्य विशा, में २३/२२, जमद उस्मानी ,

चतुर्थी तिथिक्षय

शुक्र पूर्व में उदित ३५/५, ज्ञान पंचमी (जैन)

सूर्य षष्ठी,

भ. ४३/५ उ., शनि मार्गी १९/५०

भ. १२/३७ या., पंचक प्रा. ४०/५१, बुध स्वाती में ४८/५५, (B)

गुरु विशाखा ४ वृश्चिक में १३/३८, कूष्माण्ड नवमी, अक्षय नवमी,

भ. १७/३६ उ. ४९/३८ या., देव प्रबोधनी एकादशी व्रत (स.), भीष्म पंचक प्रारंभ

तुलसी विवाह, जन्मदिन श्री जवाहर लाल नेहरु, (बाल दिवस)

पंचक स. ३२/८, भौम प्रदोष व्रत

सं. सूर्य वृश्चिक में १९/५० मु. ३०, पुण्यकाल ३/५० बाद, बैकुण्ठ चतुर्दशी

भ. ७/१० उ. ४०/३१ या., श्री सत्यनारायण व्रत, भीष्म पंचक समाप्त (C)

कार्तिक स्नान समाप्त, श्री गुरु नानक जयन्ती, मेला पुष्कर मेला अजमेर ,(D)

गुरु अस्त ४ नव.

शुक्र उदित ७ नवं.

(A)यम द्वितीया, माईदूज, (B) शक्र बाल्य समाप्त ३५/५, गोपाष्टमी, (C) (देखें-सँदिग्ध व्रतपर्व व्यवस्था), (D मेला रामतीर्थ (पंजाब), कपाल मोचन (हरयाणा),पद्मक योग (तीर्थराज पुष्कर में स्नान का विशेष माहात्म्य,)

कार्ति. शु. ८ गुरु, इष्ट ५६/४५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	३	६	६	६	१०	६	०
२४	२४	६	२९	११	११	२०	२०
३४	१४	५०	५६	५७	५७	४०	४०
३५	१९	२७	१४	९	९	११	११
६०	२६	२२	१३	२८	०	३	३
२०	१५	४६	१३	२६	१३	११	११
	मा.	मा.	मा.	व..	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
विशा. ३	आश्ले. ४	स्वा. १	विशा. ४	स्वा. २	शत. २	विशा. १	भर. ३

कुं. सूर्योदये

८ | बु. | ६
९. | गु. ७ सू. शु. रा. | ५
चं. १० | ४ मं
श ११ | १ के. | ३
१२ | २

लोक भविष्य–तुला राशि में गुरु का अस्त नेष्ट है। मंहगाई बढ़े, रोग विशेष से जनता को कष्ट हो। गुरु वृश्चिक राशि में सूर्य के साथ मेल करता है; इन पर शनि की दृष्टि है, वर्षा आगे कम है धान की फसल को हानि पहुंचे, प्रजा में रोग व राजनैतिक- धार्मिक गतिविधि से भय व्याप्त हो।

कुं. सूर्योदये

९ | सू. शु. बु. ७
१० | शु. ८ गु. | ६
११ श. | ५
१२ | २ | ४ मं.
के. १ चं. | ३

कार्ति. शु. १५ शुक्र, इष्ट ५६/२७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	३	६	७	६	१०	६	०
२	२८	१८	१	९	११	२०	२०
३७	३६	३९	४२	९	५८	१४	१४
४३	९	१५	२८	१	१८	४५	४५
६०	२३	९३	१३	१०	१	३	३
३२	५०	५	१८	२९	४	११	११
	मा.	मा.	मा.	व..	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	अ.	उ.	शत.	अ.	अ.
विशा. ४	आश्ले. ४	स्वा. ४	विशा. ४	स्वा. १	शत. २	विशा. १	भर. ३

ग्रहचाल और बाजार का रुख–४ नवं. के लगभग रुई और शेयर बाजरों में तेजी आती है। गुड़ खाण्ड सोना, जो, चावल, गेहूं, एवं दालों में भी तेजी का रुख रहे) ७ नवं को रुई चांदी चावल तेज हों। ९ मार्च के लगभग तेल तिलहन तेज हों।

आकाश लक्षण–नवं. ४, ५, ७, ९ एवं ११ के लगभग आसाम बम्बई हि. प्र. के तलहटी वाले भागों में [illegible] हि. प्र. एवं काश्मीर के हिमशिखिरों पर कहीं बर्फ गिरने के समाचार मिलें।

श्री वि सं. २०५१, शाक १९१६, मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष १६										तारीखें				चन्द्र राशि	चण्डीगढ़		उदय-कालिक	(१९ नवं. से २ दिसं. तक सन् १९९४ ई०) दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु
दि.मा.	ति.	वा.		नक्षत्र		योग		करण		प्र.	अं.	श.	मु.	प्रवेशकाल	भा. स्टैं. टा.		स्पष्ट सूर्य	ग्रह दर्शन–गुरु २९ नवं. से पूर्व में दीखने लगेगा और बुध २० नवं. को पूर्व में लुप्त हो जाएगा। प्रात: शुक्र पूर्व में और मंगल याम्योत्तरवृत्तासन्न होगा। सायं शनि याम्योत्तरवृत के समीप दिखाई देगा।
घ. प.			घ. प.		घ. प.		घ. प.		घ. प.	मार्ग.	नव.	कार्ति.	ज.	घ. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	रा. अं. क. वि.	
२५/५७	१	श.	२०/३०	रो.	६०/००	शि.	६०/००	कौ.	२०/३०	४	१९	२८	१४	वृष	६/५६	५/१९	७/२/४१/३०	सूर्य अनु. में ३८/५, बुध विशा में ३८/५८
२५/५८	२	र.	२६/५०	रो.	२/३२	शि.	०/४०	ग.	२६/५०	५	२०	२९	१५	मि. ३६/५	६/५६	५/१९	७/३/४२/२	भ. ५९/४० उ., **बुध पूर्व में अस्त ४३/५७**
२५/५५	३	चं.	३२/३०	मृ.	९/३८	सि.	२/३२	व.	३२/३०	६	२१	३०	१६	मिथुन.	६/५७	५/१८	७/४/४२/३७	भ. ३२/३० या.,
२५/५०	४	मं.	३७/२०	आ.	१६/३	सा.	३/५०	ब.	४/५५	७	२२	मा. १	१७	मिथुन	६/५८	५/१८	४/५/४३/१५	**मंगल मघा सिंह में ३१/०, सा. धनु में सूर्य २९/७, श्री गणेश चतुर्थी व्रत, शक मार्गशीर्ष प्रा.**
२५/४७	५	बु.	४१/५	पुन.	२१/१८	शु.	४/२५	कौ.	९/१२	८	२३	२	१८	क. ४/५९	६/५९	५/१८	७/६/४३/५३	**शुक्र मार्गी, ३८/४०, राहु स्वाती ४ में केतु भरणी २ में २०/४२,**
२५/४५	६	गु.	४३/२५	पु.	२५/३३	शु.	४/२	ग.	१२/१५	९	२४	३	१९	कर्क	७/०	५/१८	७/७/४४/३४	भ. ४३/२५ उ.,
२५/४०	७	शु.	४४/७	आश्ले	२८/०	ब्र.	२/३५ ५९/५२	वि.	१३/४६	१०	२५	४	२०	सि. २८/०	७/१	५/१७	०/८/४५/१७	भ. १३/४६ या.
२५/३७	८	श.	४३/१०	म.	२९/०	वै.	५५/४५	बा.	१३/३८	११	२६	५	२१	सिंह	७/२	५/१७	७/९/४६/०	**बुध वृश्चि. में १०।५८ गुरु अनु. १ में १६/३५, श्री महाकाल भैरवाष्टमी, कालाष्टमी,**
२५/३७	९	र.	४०/२८	पू.फा.	२८/१७	वि.	५०/१८	तै.	११/४९	१२	२७	६	२२	कं. ४३/३८	७/२	५/१७	७/१०/४६/४४	
२५/३५	१०	चं.	३५/५८	उ. फा	२५/४०	प्री.	४३/२५	व.	८/१३	१३	२८	७	२३	कन्या	७/३	५/१७	७/११/४०/३१	भ. ८/१३ उ. ३५/५८ या. बुध अनुराधा में १७/५८,
२५/३३	११	मं.	२९/५५	ह.	२१/४५	आ.	३५/१८	व.	२/५७	१४	२९	८	२४	तु. ४९/३	७/४	५/१७	७/१२/४८/२०	**यूरेनस उ. षा. २ में ४०/४२, गुरु उदित १०/५, उत्पन्ना एकादशी व्रत (स.)**
२५/२७	१२	बु.	२२/४०	चि.	१६/२०	सौ.	२६/८	तै.	२२/४०	१५	३०	९	२५	तुला	७/५	५/१६	७/१३/४९/९	**प्रदोष व्रत**
२५/२५	१३	गु.	१४/७	स्वा.	९/५२	शो.	१६/८	व.	१४/७	१६	दि. १	१०	२६	वृ. ४९/३०	७/६	५/१६	६/१४/४९/५८	भ. १४/७ उ. ३९/५० या; **दिसम्बर प्रारंभ**
२५/२२	१४	शु.	५/३३	वि.	२/४२ ५५/१५	अ.	५/३५ ५४/५५	श.	५/३३	१७	२	११	२७	वृश्चिक.	७/७	५/१६	७/१५/५०/४९	**सूर्य ज्येष्ठा में ४८/१७, गुरु बाल्य समाप्त १०/५**
अवम	३०	शु.	५५/४५	०	००	०	००	०	००	०	०	०	०	००	००	००	० ० ० ०	**अमावस्या तिथिक्षय**

गुरु उदित
२९ नवं.

मार्ग. कृ. ८ शनि, इष्ट ५६/१०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	४	७	७	६	१०	६	०
१०	१	१	३	८	१२	१९	१९
४२	३७	११	२८	५४	९	४९	४९
५१	११	७	४३	३३	४२	१७	१७
६०	२१	९४	१३	८	१	३	३
४५	१९	३५	१५	५९	५२	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अनु. ३	मघा १	विशा. ४	अनु. १	स्वा. १	श्रव. २	स्वा. ४	भर. २

कुं. सूर्योदये

९ | गु. | रा. ७ शु.
१० | ८ सू. बु. | ६
११ श. | चं. ५ मं.
१२ | २ | ४
के. १ | ३

लोक भविष्य–इस मास में पांच शनिवार है, शनि-मंगल का सम सप्तक योग चल ही रहा है:–"शनिवाश: सदा पंच पाताले कंपते फणी। ईशानदेश भंगश्च वह्निदाहो महर्घता।" कहीं अग्निकांड व विस्फोट आदि से हानि हो, कहीं छत्रभंग कहीं यान दुर्घटना से हानि हो।

कुं. सूर्योदये

९ | बु. | रा. ७ शु.
१० | ८ चं. सू. | ६
श. ११ | मं. ५
१२ | २ | ४
के. १ | ३

मार्ग. कृ. २४ शुक्र, इष्ट ५५/५७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	४	७	७	६	१०	६	०
१६	३	१०	४	१०	१२	१९	१९
४७	३६	३७	४८	२१	२२	३०	३०
४१	५३	१७	३	०	३२	११	११
६०	२१	९४	१३	२१	२	३	३
५३	२६	१४	९	३३	३०	११	११
						व.	व.
	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
ज्ये. १	मघा २	अनु. ३	अनु. ३	स्वा. २	श्रव. २	स्वा. ४	भर. २

ग्रहचाल और बाजार का रुख–पक्षारंभ में रुई के भाव की काफी अच्छी मन्दी बने। चना आदि अनाज तेज हों। २२ नवं. के लगभग सोना चांदी तांबा, गुड़ खाण्ड, शक्कर, तेल-तिलहन एवं लाल मिर्च में तेजी बने। २९ नवम्बर के लगभग बाजार का रुख बदेलगा।

आकाश लक्षण–नवं. २०, २२, २३, ३६ एवं २९ नवं. को हवा के साथ हि. प्र. पंजाब एवं समुद्र तटवती भागों में साधारण वर्षा हो।

शकुन विचार–मार्ग. कृष्ण में सूर्य के चारों ओर परिवेश दिखाई दे तो अलसी सरसों तिल तेज हों।

श्री वि सं. २०५१, शाक १९१६, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष १७ — (३ से १८ दिसं. तक, सन् १९९४ ई.) दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु

दि.मा. घ.प.	ति.	वा.	घ.प.	नक्षत्र	घ.प.	योग	घ.प.	कर.	घ.प.	तारीखें प्र. मार्ग.	अं. दिसं.	श. मार्ग.	मु. ज.उ.	चन्द्र राशि प्रवेशकाल घ.प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सू.उ. घं मि	सू.अ. घं मि	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.अं.क.वि.	ग्रह-दर्शन–बुध अदृश्य है। प्रातः पूर्व में गुरु और उससे ऊपर शुक्र दिखाई देगा। इसी समय मंगल याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम की ओर झुका होगा। सायं शनि प. कपाल में दीखेगा।
२५/२२	१	श.	४६/३८	ज्ये.	४२/२	धृ	४४/२०	किं.	२१/१२	१८	३	१२	२८	ध. ४२/२	७/७	५/१६	७/१६/५१/४७	
२५/२०	२	र.	३८/५	मू.	४२/२२	शू.	३४/१२	बा.	१२/२२	१९	४	१३	२९	धनु.	७/८	५/१६	७/१७/५२/४२	चन्द्रदर्शन मु. ३०,
२५/१७	३	चं.	३०/४०	पू. षा.	३५/४५	गं.	२४/५२	तै.	४/२२	२०	५	१४	र. १	म. ४९/१४	७/९	५/१६	७/१८/५३/३८	भ. ५७/३४ उ., रजब मुसलमानी प्रारंभ,
२५/१५	४	मं.	२४/२८	उ. षा	३१/३७	वृ.	१६/४२	वि.	२४/२८	२१	६	१५	२	मकर	७/१०	५/१६	७/१९/५४/३६	भ. २४/२९ या., बुध ज्येष्ठा में ४६/४८, वरद चतुर्थी
२५/१२	५	बु.	२०/१०	श्र.	२९/२५	ध्रु.	९/५५	बा.	२०/१०	२२	७	१६	३	कुं. ५९/१४	७/११	५/१६	७/२०/५५/३४	पंचक प्रा. ५९/१४, स्कन्द षष्ठी, शहीदी दिन श्री गुरु तेग बहादुर जी,
२५/१२	६	गु.	१७/५५	ध.	२८/५८	व्या.	४/४८	तै.	१७/५५	२३	८	१७	४	कुंभ	७/११	५/१६	७/२१/५६/३०	
२५/१३	७	शु.	१७/४८	शत.	३०/४२	ह.	१/१२ ५९/२३	व.	१७/४८	२४	९	१८	५	कुंभ	७/१२	५/१७	७/२२/५७/३०	भ. १७/४८ उ. ४८/४८ या., मित्र सप्तमी,
२५/१०	८	श.	१९/४२	पू. भा	३४/२५	सि.	५८/५८	ब.	१९/४२	२५	१०	१९	६	मी. १८/२८	७/१३	५/१७	७/२३/५८/३१	
२५/७	९	र.	२३/३७	उ. भा	३९/५२	व्य.	५९/४८	कौ.	२३/३७	२६	११	२०	७	मीन	७/१४	५/१७	७/२४/५९/३२	गुरु अनु. २ में २९/१८
२५/७	१०	चं.	२९/०	रे.	४६/४०	व.	६०/००	ग.	२९/०	२७	१२	२१	८	मे. ४६/४०	७/१४	५/१७	७/२६/०/३२	पंचक समाप्त ४६/४०,
२५/५	११	मं.	३५/१८	अ.	५४/१२	ब.	१/३२	व.	२/९	२८	१३	२२	९	मेष	७/१५	५/१७	७/२७/१/३३	भ. २/९ उ. ३५/१८ या., मोक्षदा एकादशी व्रत (स.), श्री गीता जयन्ती,
२५/५	१२	बु.	४२/८	भ.	६०/००	प.	३/५०	ब.	८/४३	२९	१४	२३	१०	मेष	७/१६	५/१८	७/२८/२/३५	सं. सूर्य मूल-धनु में ५५/२२, मु. ३०, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न से पूर्व, (A)
२५/५	१३	गु.	४८/५२	भ.	२/५	शि.	६/२४	कौ.	१५/३०	पौ.१	१५	२४	११	वृ. १९/१	७/१६	५/१८	७/२९/३/३६	भ. ५५/२८ उ.,
२५/२	१४	शु.	५५/२८	कृ.	९/५२	सि.	८/४५	ग.	२२/१०	२	१६	२५	१२	वृष	७/१७	५/१८	८/०/४/४०	भ. २८/२२ या., श्री सत्यनारायण व्रत, श्री दत्तात्रेय जयन्ती
२५/२	१५	श.	६०/००	रो.	१७/२३	सा.	१०/४८	वि.	२७/४४	३	१७	२६	१३	मि. ५०/३८	७/१८	५/१९	८/१/५/४४	
२५/२	१५	र.	१/१५	मृ.	२३/५२	शु.	१२/२०	व.	१/१५	४	१८	२७	१४	मिथुन	७/१८	५/१९	८/२/६/४८	

(A) बुध मूल-धनु में १५/४७, प्रदोषव्रत

मार्ग शु. ८ शनि, इष्ट ५५/४२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	४	७	७	६	१०	६	०
२४	५	२३	६	१४	१२	१९	१९
५५	५१	१०	३२	१	४५	४	४९
८	१४	३८	४२	५४	१३	४३	४३
६०	१४	९४	१२	३५	३	३	३
५९	३४	१४	५८	४३	१६	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
ज्ये. ३	मघा २	ज्ये. २	अनु. १	स्वा. ३	श्रव. २	स्वा. ४	भर. २

कुं. सूर्योदये

९ | १० | सू. गु. ८ बु. | रा. ७ शु. | ६ | चं. ११ श. | ५ मं. | १२ | ७ | ४ | के. १ | ३

लोकभविष्य–शनि-मंगल का समसप्तक एवं सूर्य-बुध का एकसाथ मूल धनु में प्रवेश राहु पर मंगल की दृष्टि, ये सब कहीं वरिष्ठ नेता के लिए संकटापन्न स्थिति का संकेत देते हैं। किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद्रिक्त हो-शोक समाचार मिले। कहीं सीमा प्रान्तों पर वातावरण अशान्त रहे।

कुं. सूर्योदये

१० | गु. ८ | श. ११ | सू. ९ बु. | ७ रा. शु. | १२ | ६ | के. १ | ३ चं. | ५ मं. | २ | ४

मार्ग शु. १५ रवि, इष्ट ५५/३०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	४	८	७	६	१०	६	०
३	७	५	८	१९	१३	१८	१८
३	३२	४७	१५	१५	१३	३९	३९
१६	२४	४	२६	४९	५१	१५	१५
६१	१०	९७	१२	४४	३	३	३
४	३	८	४०	३१	५९	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मूल. १	मघा ३	मूल. २	अनु. २	स्वा. ४	श्रव. २	स्वा. ४	भर. २

ग्रहचाल और बाजार का रुख–पक्षारंभ में घी, गुड़, खाण्ड और चावल कुछ तेज रहे। सोने, चांदी, रुई, कपास में तेजी के बाद मन्दा हो।

आकाश लक्षण–दिसम्बर ६, ११, १५ को उत्त[illegible] कहीं [illegible] हो एवं धुन्ध का वातावरण रहे।

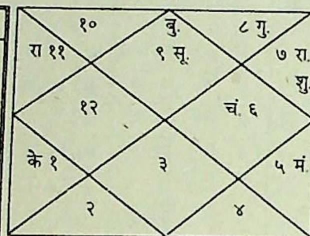
श्री वि सं. २०५१, शाक १९१६, पौष कृष्ण पक्ष १८										तारीखें				चन्द्र राशि	चण्डीगढ़		उदय-कालिक	(१९ दिसं. '९४ से १ जन. '९५ तक) दक्षिण-उत्तर अयन द. गोल, हेमन्त-शिशिर ऋतु
दि.मा	ति.	वा.		नक्षत्र		योग		कर.		प्र.	अं.	श.	मु.	प्रवेशकाल	भा. स्टै. टा.		स्पष्ट सूर्य	ग्रह दर्शन–बुध अदृश्य है। प्रात: पूर्व में गुरु-शुक्र परस्पर आसन्न दीखेंगे, इसी समय मंगल प. कपाल में होगा। शनि को सायं पश्चिम कपाल में देखा जा सकता है।
घ. प.			घ. प.		घ. प.		घ. प.		घ. प.	पौष.	दिसं.	मार्ग.	रज.	घ. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	रा. अं. क. वि	
२५/२	१	चं.	६/१५	आ.	२९/४२	शु.	१३/१५	कौ.	६/१५	५	१९	२८	१५	मिथुन	७/१९	५/२०	८/३/७/५३	शुक्र विशाखा में ५४/५५,
२५/२	२	मं.	१०/२०	पुन.	३४/४०	ब्र.	१३/३०	ग.	१०/२०	६	२०	२९	१६	क. १८/२५	७/१९	५/२०	८/४/८/५७	भ. ४१/५३ उ., शनि शत. ३ में २५/४०,
२५/०	३	बु.	१३/२५	पु.	३८/३८	ऐं.	१२/५८	वि.	१३/२५	७	२१	३०	१७	कर्क	७/२०	५/२०	८/५/१०/४	भ. १३/२५ या., श्री गणेश चतुर्थी व्रत,
२५/२	४	गु.	१५/२८	आश्ले	४१/३५	वै.	११/३८	बा.	१५/२८	८	२२	पौ. १	१८	सिं. ४१/३५	७/२०	५/२१	८/६/११/९	सायन मकर में सूर्य १/२४, उत्तरायण शिशिर ऋतु प्रा., शक पौष प्रा.,
२५/२	५	शु.	१६/१८	म.	४३/२२	वि.	९/२५	तै.	१६/१८	९	२३	२	१९	सिंह	७/२१	५/२२	८/७/१२/१७	बुध पू. षा. में ३९/५५,
२५/२	६	श.	१६/२	पू. फा	४४/०	प्री.	६/१८	व.	१६/२	१०	२४	३	२०	कं. ४८/५०	७/२१	५/२२	८/८/१३/२४	भ. १६/२ उ. ४५/१४ या.,
२५/२	७	र.	१४/२५	उ. फा	४३/१७	आ.	२/१० ५७/२	ब.	१४/२५	११	२५	४	२१	कन्या	७/२२	५/२३	८/९/१४/३३	
२५/२	८	चं.	११/२८	ह.	४१/१८	शो	५०/५०	कौ.	११/२८	१२	२६	५	२२	कन्या	७/२२	५/२३	८/१०/१५/४१	
२५/२	९	मं.	७/२२	चि.	१८/०	अ.	४३/३५	ग.	७/२२	१३	२७	६	२३	तु. ९/३८	७/२३	५/२४	८/११/१६/५३	भ. ३४/३१ उ., गुरु अनु. ३ में १६/५०,
२५/२	१०	बु.	१/४०	स्वा.	३३/३०	सु.	३५/२०	वि.	१/४०	१४	२८	७	२४	तुला	७/२४	५/२४	८/१२/१८/४	भ. १/४० या. सफला एकादशी व्रत (स्मा.), **जन्मदिन श्री पार्श्वनाथ (जैन)**,
अवम	११	बु.	५५/१०	०	००	०	००	०	००	०	०	०	०	००	००	००	० ० ० ०	एकादशी तिथिक्षय,
२५/२	१२	गु.	४७/२५	वि.	२८/२	धृ.	२६/२०	कौ.	२१/१८	१५	२९	८	२५	वृ. १४/२५	७/२४	५/२५	८/१३/१९/१३	सूर्य पू. षा. में ०/४०, सफला एकादशी व्रत (वै.), श्री बोधायनाचार्य जयन्ती,
२५/३	१३	शु.	३९/१५	अनु.	२१/५२	शू.	१६/४५	ग.	१३/२०	१६	३०	९	२६	वश्चिक	७/२४	५/२५	८/१४/२०/२६	भ. ३९/१५ उ. प्रदोष व्रत,
२५/५	१४	श.	३०/५२	ज्ये.	१५/२०	गं.	६/४८ ५६/५०	वि.	५/४	१७	३१	१०	२७	ध. १५/२०	७/२४	५/२६	८/१५/२१/३४	भ. ५/४ या., बुध उ. षा. में ५६/१८, **शुक्र वृश्चिक में ५०/४४**, (A)
२५/७	३०	र.	२२/३५	मू.	८/५०	ध्रु.	४७/१०	ना.	२२/३५	१८	ज. १	११	२८	धनु	७/२४	५/२६	८/१६/२२/४५	जनवरी सन् १९९५ ई. प्रारंभ,

(A) सन् १९९४, ई. समाप्त,

पौष कृ. ८ चन्द्र, इष्ट ५५/२०

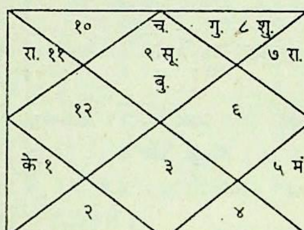
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	४	८	७	६	१०	६	०
११	८	१०	९	२५	१३	१८	१८
१२	३४	३३	५५	३८	४८	१३	१३
५	४८	२९	३३	२७	१	४८	४८
६१	४	९६	१२	५१	४	३	३
९	४६	४०	१८	४१	३८	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मूल. ४	मघा ३	मूल. ४	अनु. २	विशा. २	शत. ३	स्वा. ४	भ. २

कुं. सूर्योदये



लोक भविष्य–इस पक्ष में पांच सोमवार सुभिक्ष के सूचक हैं साथ ही पौष अमावस को मूल नक्षत्र की स्थिति केवल आठ घटी होने से कुछ प्रान्तों में अनाज की कमी अुभव होगी। पक्षान्त में गुरु-शुक्र का मंगल की राशि में एक साथ होना रोग का संकेत देती है। कफ-वायु जन्य रोगों से जनता में परेशानी रहे।

कुं. सूर्योदये



पौष कृ. ३० रवि, इष्ट ५५/१५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	४	८	७	७	१०	६	०
१७	८	२८	११	०	१४	१७	१७
१९	५२	१५	८	५९	१७	५४	५४
५	२३	२९	२८	३	०	४२	४२
६१	०	६७	११	५५	५	३	३
११	१८	११	५७	४१	६	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
पू.षा. २	मघा. ३	उ.षा. १	अनु. ३	विशा. ४	शत. ३	स्वा. ४	भ. २

ग्रहचाल और बाजार का रुख–इस पक्ष में बाजार अस्थिर रहेंगे। सोना, चांदी, अनाज, रुई, कपास में मन्दे का वातावरण रहेगा। पक्षान्त में गुरु-शुक्र के सम्बन्ध से रुई, शेयर एवं चांदी में मन्दे के रिएक्शन आएंगे। गेहूं, जौ, चना, उड़द, मूंग, मोठ, बाजरा आदि में भी कुछ मंदे का माहौल रहे।

आकाश लक्षण–दिसंबर २०, २९, ३१ को हि. प्र. एवं जम्मू काश्मीर के पर्वतश्रृंगों पर भारी हिमपात होगा। उत्तरी भारत में भयंकर शीतलहर चलेगी। कुछ स्थानों पर खण्डवृष्टि एवं पंजाब आदि में धुन्ध पड़े।

श्री वि सं. २०५१, शाक १९१६, पौष शुक्ल पक्ष १९ (२ से १६ जन. तक, सन् १९९५ ई.), उत्तरायण, द. गोल, शिशिर ऋतु।

दि.मा. घ. प.	ति.	वा.	घ. प.	नक्षत्र	घ. प.	योग	घ. प.	करण	घ. प.	तारीखें प्र. पौष.	अं. जन.	श. पौष.	मु. रज.	चन्द्र राशि प्रवेशकाल घ. प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	उदय कालिक स्पष्ट सूर्य रा. अं. क. वि.
२५/७	१	चं.	१४/५२	पू.षा	२/४५ ५७/३८	व्या.	३८/८	ब.	१४/५२	१९	२	१२	२९	म. १६/२८	७/२५	५/२८	८/१७/२३/५८
२५/१०	२	मं.	८/१५	श्र.	५३/५२	ह.	३०/८	कौ.	८/१५	२०	३	१३	शा. १	मकर	७/२५	५/२९	८/१८/२५/९
२५/१०	३	बु.	३/२	ध.	५१/५०	व.	२३/२२	ग	३/२	२१	४	१४	२	कुं. २२/५१	७/२५	५/२९	८/१९/२६/२०
अवम	४	बु.	५९/४०	०	० ०	०	० ०	०	० ०	०	०	०	०	० ० ०	० ०	० ०	० ० ० ०
२५/१२	५	गु.	५८/२८	श.	५१/५०	सि.	१८/१०	ब.	२९/४	२२	५	१५	३	कुंभ	७/२५	५/३०	८/२०/२७/३३
२५/१५	६	शु.	५९/१५	पू.भा	५३/५५	व्य.	१४/३८	कौ.	२८/५२	२३	६	१६	४	मी. ३८/२४	७/२६	५/३१	८/२१/२८/४३
२५/१५	७	श.	६०/००	उ. भा.	५८/५	व.	१२/४८	ग.	३०/५०	२४	७	१७	५	मीन	७/२६	५/३२	८/२२/२९/५३
२५/१७	७	र.	२/२५	रे	६०/००	प.	१२/३०	व.	२/२५	२५	८	१८	६	मीन	७/२६	५/३३	८/२३/३१/३
२५/१८	८	चं.	७/१५	रे.	४/०	शि.	१३/३२	ब.	७/१५	२६	९	१९	७	मे. ४/०	७/२६	५/३३	८/२४/३२/१२
२५/२०	९	मं.	१३/२५	अ.	११/१०	सि.	१५/३२	कौ.	१३/२५	२७	१०	२०	८	मेष	७/२६	५/३४	८/२५/३३/२०
२५/२२	१०	बु.	२०/१५	भ.	१९/०	सा.	१८/०	ग.	२०/१५	२८	११	२१	९	वृ ३५/४९	७/२६	५/३५	८/२६/३४/२८
२५/२५	११	गु.	२७/८	कृ.	२६/५५	शु.	२०/३०	वि.	२७/८	२९	१२	२२	१०	वृष	७/२६	५/३६	८/२७/३५/३५
२५/२७	१२	शु.	३३/३०	रो.	३४/१८	शु.	२२/३८	ब.	०/१९	३०	१३	२३	११	वृष	७/२	५/३७	८/२८/३६/४२
२५/३०	१३	श.	३८/५८	मृ.	४०/५०	ब्र.	२४/१०	कौ.	६/१४	मा. १	१४	२४	१२	मि. ७/३४	७/२६	५/३८	८/२९/३७/४९
२५/३५	१४	र.	४३/१८	आ.	४६/२०	ऐं.	२४/५२	ग.	११/८	२	१५	२५	१३	मिथुन	७/२५	५/३९	९/०/३८/५५
२५/३५	१५	चं.	४६/२०	पुन.	५०/३५	वै.	२४/४०	वि	१४/४९	३	१६	२६	१४	क. ३४/३१	७/२५	५/३९	९/१/३९/५९

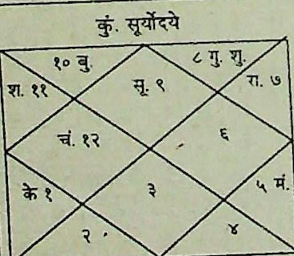
ग्रह दर्शन—बुध ५ जन. से पश्चिम में दिखाई देने लगेगा। प्रातः पूर्व में गुरु, शुक्र परस्पर आसन्न दीखेंगे; इस समय मंगल पश्चिम में होगा। सायं शनि पश्चिम में देखा जा सकेगा।

चन्द्रदर्शन मु. ४५, बुध मकर में ५९/४२,
मंगल वक्री ५३/२७, शाबान मुसलमानी प्रारंभ,
भ. ३१/२१ उ. ५९/४० या., पंचक प्रा. २२/५१, शुक्र अनु. में २५/४५,
चतुर्थी तिथिक्षय,
बुध पश्चिम में उदित २२/१७,
अवतार दिन श्री गुरु गोविन्द सिंह जी,
भ. २/२५ उ. ३४/५० या.,
पचंक स. ४/०, बुध श्रवण में १४/२८,
भ. ५३/४१ उ., सूर्य उ. षा. में ५/२०,
भ. २७/८ या., पुत्रदा एकादशी व्रत (स.),
लोहड़ी (पंजाब), गुरु अनु ४ में १६/२२,
सं. सूर्य मकर में २१/४२, मु. ३०, पुण्यकाल ५/४२ बाद, शनि प्रदोषव्रत,
भ. ४३/१८ उ.,
भ. १४/४९ या., श्री सत्यनारायण व्रत, माघस्नान प्रारंभ,

पौष शु. ८ चन्द्र, इष्ट ५५/१०

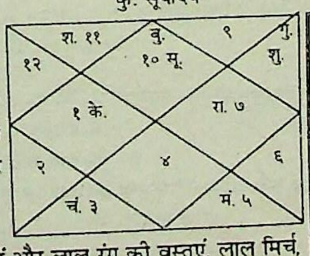
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८ २५ २८ २४	४ ८ ३२ ५०	९ ११ ३ २३	७ १२ ४२ ७	७ ८ ३९ ४१	१० १४ ५९ ४२	६ १७ २९ १४	० १७ २९ १४
६१ ९	६ २	९२ २८	११ २३	५९ ४६	५ ३८	३ ११	३ ११
	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.षा. ४	मघा ३	श्रव. १	अनु. ३	अनु. २	शत. ३	स्वा. ४	भ. २

कुं. सूर्योदये



लोक भविष्य—इस पक्ष में मकर संक्रान्ति शनिवारको है और शनि-मंगल परस्पर देखते है अतः कहीं यान-दुर्घटना में जन-धन हानि के समाचार मिलें। अच्छी उपज होने पर भी प्राकृतिक प्रकोप से हानिमय है। कहीं अग्निकाण्ड से हानि के समाचार मिलें।

कुं. सूर्योदये



पौष शु. १५ चन्द्र, इष्ट ५५/१२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९ २ ३६ १०	४ ७ ३३ ४५	९ २१ ३ ५	७ १४ ० ८	७ १५ ४६ ४४	१० १५ ४० २५	६ १७ ६ ५४	० १७ ६ ५४
६१ ५	११ ३८	७५ ५१	१० ४९	६२ ३२	६ ०	३ ११	३ ११
	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.षा. २	मघा ३	श्रव. ४	अनु. ४	अनु. ४	शत. ३	स्वा. ४	भ. २

ग्रहचाल और बाजार का रुख—३ जनवरी के लगभग रुई, सोना, चांदी, अलसी, गेहूं और लाल रंग की वस्तुएं, लाल मिर्च, कालीमिर्च, गुड़, खाण्ड, तिलहन तेल में विशेष तेजी का योग है, सावधानी से काम करें क्योंकि यह तेजी ठहरेगी नहीं। ५ से १० जन. तक बाजार मन्दे रहेंगे। १४ जन. के लगभग दोतरफा व्यापार करके लाभ लें।

आकाश लक्षण—उत्तरी भारत में शीत लहर से हानि हो। कहीं वातावरण धुन्धमय रहे।

शकुन विचार—यदि पौष शुक्ल पूर्णिमा को आकाश में [illegible] रहे तो आगे अनाज की फसल अच्छी हो।

श्री वि सं. २०५१, शाक १९१६, माघ कृष्ण पक्ष २० | तारीखें | चन्द्र राशि | चण्डीगढ़ | उदय-कालिक | **(१७ से ३० जन. तक, सन् १९९५ ई.) उत्तरायण, द. गोल, शिशिर ऋतु**

ग्रह-दर्शन– २८ जन. को बुध पश्चिम में लुप्त हो जाएगा। प्रातः शुक्र पूर्व क्षितिज पर और गुरु इससे ऊपर नजर आएगा। इस समय मंगल पश्चिम में और सायं शनि भी पश्चिम में ही होगा।

दि.मा घ. प.	ति.	वा	घ. प.	नक्षत्र	घ. प.	योग	घ. प.	करण	घ. प.	प्र. माघ	अं. जन.	श. पौष.	मु. शाबा.	प्रवेशकाल घ. प.	भा. स्टै. टा. सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	स्पष्ट सूर्य रा. अं. क. वि.	
२५/३७	१	मं.	४८/१७	पु.	५३/४५	वि.	२३/३२	बा.	१७/१८	४	१७	२७	१५	कर्क	७/२५	५/४०	९/२/४१/३	शुक्र ज्येष्ठा में ४६/१५, **अर्ध कुंभ (प्रयाग) (३० जन. '९५)**
२५/४०	२	बु.	४९/०	आश्ले.	५५/५०	प्री.	२१/३२	तै.	१८/३८	५	१८	२८	१६	सिं. ५५/४०	७/२५	५/४१	९/३/४२/८	बुध धनिष्ठा में ५३/४२,
२५/४२	३	गु.	४८/५०	म.	५७/०	आ.	१८/४५	व.	१८/५५	६	१९	२९	१७	सिंह	७/२५	५/४३	९/४/४३/१२	भ. १८/५५ उ. ४८/५० या.,
२५/४७	४	शु.	४७/४९	पू. फा.	५७/२२	सौ.	१५/१८	ब.	१८/१९	७	२०	३०	१८	सिंह	७/२४	५/४३	९/५/४४/१२	सूर्य. अभिजित् में ५४/४८, सायन कुंभ में सूर्य २७/४८, **संकष्ट चतुर्थी व्रत (A)**
२५/५०	५	श.	४५/५२	उ. फा.	५६/५५	शो.	११/८	कौ.	१६/५०	८	२१	मा. १	१९	कं. १२/१५	७/२४	५/४४	९/६/४५/१५	**शक माघ प्रा.,**
२५/५२	६	र.	४३/१२	ह.	५५/४०	अ.	६/०	ग.	१४/२	९	२२	२	२०	कन्या	७/२४	५/४५	९/७/४६/१८	म. ४३/१२ उ.,
२५/५५	७	चं.	३९/४०	चि.	५३/४०	सु.	१/० ५४/५८	वि.	११/२६	१०	२३	३	२१	तु. २४/४०	७/२३	५/४६	९/८/४७/२०	भ. ११/२६ या, **जन्मदिन स्वामी विवेकानंद जी, जन्मदिन नेताजी सुभाष,**
२६/०	८	मं.	३५/३०	स्वा.	५०/५२	शू.	४८/१५	बा	७/३५	११	२४	४	२२	तुला	७/२३	५/४७	९/९/४८/१९	सूर्य श्रवण में ११/२०,
२६/०	९	बु.	३०/२५	वि.	४७/१८	गं.	४०/५८	तै.	२/५७	१२	२५	५	२३	वृ. ३३/१२	७/२३	५/४७	९/१०/४९/२१	भ. ५७/३३ उ., **सूर्य. अभिजित् से निवृत्त** ३/५५, बुध. वक्री ५८/१०, **(B)**
२६/५	१०	गु.	२४/४२	अनु.	४३/१८	वृ.	३३/१०	वि.	२४/४२	१३	२६	६	२४	वृश्चिक.	७/२२	५/४८	९/११/५०/१९	भ. २४/४२ या., शनि शत. ४ में २५/१०, **भारत गणतन्त्र दिवस**
२६/७	११	शु.	१८/२०	ज्ये.	३८/२२	ध्रु.	२४/५२	बा.	१८/२०	१४	२७	७	२५	ध. ३८/२२	७/२२	५/४९	९/१२/५१/२०	षट्तिला एकादशी व्रत (स.),
२६/१२	१२	श.	११/४०	मू.	३३/२५	व्या.	१६/२०	तै.	११/४०	१५	२८	८	२६	धनु	७/२१	५/५०	९/१३/५२/१७	**बुध पश्चिम में अस्त ८/१८, शनि प्रदोषव्रत,** जन्म दिन लाला लाजपत राय जी
२६/१५	१३	र.	४/५२	पू. षा.	२८/२७	ह.	७/४५ ५९/२३	व.	४/५२	१६	२९	९	२७	म. ४२/२०	७/२१	५/५१	९/१४/५३/१७	भ. ४/५२ उ. ३१/३६ या., यूरेनस उ. षा. ३ में ५/३२, मेरुत्रयोदशी (जैन),
अवम	१४	र.	५८/२०	०	० ०	०	० ०	०	० ०	०	०	०	०	० ०	० ०	० ०	० ० ० ०	चतुर्दशी तिथिक्षय
२६/२०	३०	चं.	५२/२८	उ. षा.	२३/५८	सि.	५१/३२	च.	२५/२४	१७	३०	१०	२८	मकर	७/२०	५/५२	९/१५/५४/११	**शुक्र मूल -धनु में १०/३५, सोमवती अमा, मौनी अमा, अर्धकुंभ (प्रयागराज)**

(A) (चन्द्रोदय रात्रि में १० घं. १३ मि.), श्री गणेश चतुर्थी व्रत, (B) राहु स्वाती ३ केतु भरणी १ में ९/५८,

माघ कृष्ण ८ मंगल इष्ट ५५/१७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	४	९	७	७	१०	६	०
१०	५	२७	१५	२४	१६	१६	१६
४४	३९	२२	२४	१५	३०	४१	४१
३४	१९	१०	७	५०	१७	२९	२९
६०	१७	६	१०	६४	६	३	३
०	३४	८	११	५७	२८	११	११
	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
श्रव. १	मघा २	धनि. २	अनु. ४	ज्ये. ३	शत. ३	स्वा. ४	भ. २

कुं. सूर्योदये

श. ११ | ९ | १२ | १० बु. सू. | ८ गु. शु. | १ के. | चं. ७ रा. | २ | ४ | ६ | ३ | मं. ५

लोक भविष्य–गुरु-शुक्र दोनों वृश्चिक राशि में है,–"गुरु शुक्रावेक राशिं गतौ दुर्भिश दुःखदौ।"–गुरु शुक्र दोनों पर शनि की दृष्टि भी है। अतः भयंकर प्राकृतिक-प्रकोप से कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बने। राजस्थान, बंगाल, गुजरात आदि में खाद्यान्न की व्यवस्था में सरकार का प्रयास प्रशस्थ रहे।

कुं. सूर्योदये

११ श. | सू. | ९ शु. | १२ | १० बु. चं. | ८ गु. | १ के. | ७ रा. | २ | ४ | ६ | ३ | ५ मं.

माघ कृष्ण ३० चन्द्र इष्ट ५५/२५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	४	९	७	८	१०	६	०
१६	३	२५	१६	४	१७	१६	१६
५०	४४	११	२२	४९	९	२२	२२
२९	३१	४३	५८	२१	४२	२३	२३
६०	२१	५७	९	६६	३	३	३
५७	७	९	२६	२२	४१	११	११
	व.	क.	मा	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	ग.	उ.	उ.	अ.	अ.
श्रव. ३	मघा २	धनि. १	अनु. ४	मू. २	शत. ४	स्वा. ३	भ. १

ग्रहचाल और बाजार का रुख–पक्षारंभ में सोना, चांदी, सरसों, चावल तिल तेल में कुछ मन्दा बने, २४ जनवरी के लगभग गेहूं, जौ, चावल, रुई, सूत, गुड़, खाण्ड, सोना चांदी तिलहन में अच्छी तेजी आए, अनाज मन्दे हों।

आकाश लक्षण–१७, १८, २४, २६ जनवरी को उ. प्र. बिहार आसाम में बादलचाल बंदाबांदी हो। हिमाचल में जोरदार बर्फबारी एवं उत्तरी भारत शीत की चपेट में रहे।

श्री वि सं. २०५१, शाक १९१६, माघ शुक्ल पक्ष २१										तारीखें				चन्द्र राशि	चण्डीगढ़		उदय-कालिक	(३१ जन. से १५ फर. तक, सन् १९९५ ई.), उत्तरायण द. गोल, शिशिर ऋतु
दि.मा	ति.	वा		नक्षत्र		योग		करण		प्र.	अं.	श.	मु.	प्रवेशकाल	भा. स्टै. टा सू. उ.	भा. स्टै. टा सू. अ.	स्पष्ट सूर्य	ग्रह दर्शन–१० फर. से बुध पूर्व में दृश्य होगा। प्रातः शुक्र पूर्व क्षितिज पर, गुरु उससे ऊपर और मंगल पश्चिम में दीखेगा। सायं शनि को पश्चिम क्षितिज पर देखें।
घ. प.			घ. प.		घ. प.		घ. प.		घ. प.	माघ.	जन.	माघ.	शाबा.	घ. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा. अं. क. वि.	
२९/२२	१	मं.	४७/३२	श्र.	२०/१२	व्य.	४४/३०	किं.	२०/०	१८	३१	११	२९	कुं. ४८/५८	७/२०	५/५३	९/१६/५५/६	पंचक प्रा. ४८/५८,
२६/२७	२	बु.	४४/७	ध.	१७/४५	व.	३८/३८	बा.	१५/५०	१९	फ. १	१२	३०	कुंभ	७/१९	५/५४	९/१७/५६/३	चन्द्र दर्शन मु. १५, व. बुध श्रवण में ४६/४२, गुरु ज्येष्ठा में ४४/१५, (A)
२६/३०	३	गु.	४२/२५	श.	१६/५०	प.	३४/५	तै.	१३/१६	२०	२	१३	र. १	कुंभ	७/१८	५/५४	९/१८/५६/५८	नेपच्यून उ. षा. २ में ३४/२०, रमजान मुसलमानी प्रारंभ,
२६/३२	४	शु.	४२/४०	पू. भा	१७/४२	शिं.	३१/०	व.	१२/३२	२१	३	१४	२	मी. २/२९	७/१८	५/५५	९/१९/५७/४९	भ १२/३२ उ. ४२/४० या., तिल चतुर्थी, कुन्द चतुर्थी, वरद चतुर्थी,
२६/३७	५	श.	४४/५५	उ. भा	२०/३५	सि.	२९/३२	ब.	१३/४८	२२	४	१५	३	मीन	७/१७	५/५६	९/२०/५८/३९	श्रीपंचमी, वसन्त पंचमी,
२६/४२	६	र.	४९/५	रे.	२५/२०	सा.	२९/३४	कौ.	१७/०	२३	५	१६	४	मे. २५/२०	७/१६	५/५७	९/२१/५९/३१	पंचक स. २५/२०
२६/४५	७	चं.	५४/४०	अ.	३१/३५	शु.	३०/३८	ग.	२१/५२	२४	६	१७	५	मेष	७/१६	५/५८	९/२३/०/१८	भ. ५४/४० उ., सूर्य घनिष्ठा में ३६/५२, रथ सप्तमी (पहले अरुणोदय वाली), (B)
२६/५०	८	मं.	६०/००	भ.	३८/५८	शु.	३२/४५	वि.	२७/२०	२५	७	१८	६	वृ .५५/५६	७/१५	५/५९	९/२४/१/४	भ २७/५९ या. , भीष्माष्टमी,
२६/५५	८	बु.	१/१८	कृ.	४६/५०	ब्र.	३५/१५	ब.	१/१८	२६	८	१९	७	वृष	७/१४	६/००	९/२५/१/४८	
२६/५९	९	गु.	८/५	रो.	५४/२८	ऐं.	३७/३८	कौ.	८/५	२७	९	२०	८	वृष	७/१३	६/०	९/२६/२/३२	वक्री मंगल आश्लेषा-कर्क में ४८/२५,
२७/२	१०	शु.	१४/२८	मृ.	६०/००	वै.	३९/३०	ग.	१४/२८	२८	१०	२१	९	मि. १७/५४	७/१२	६/१	९/२७/३/१६	भ. ४७/६ उ., बुध पूर्व में उदित ६/१०
२७/५	११	श.	१९/४५	मृ.	१/२०	वि.	४०/२८	वि.	१९/४५	२९	११	२२	१०	मिथुन	७/१२	६/२	९/२८/३/५५	भ. १९/४५ या., शुक्र पू. षा. में ५/५, प्लूटो अनु. २ में ५८/२३, जया एका. व्रत (स.),
२७/१०	१२	र.	२३/४५	आ.	६/५४	प्री.	४०/२२	बा.	२३/४५	फ. १	१२	२३	११	क ५५/२	७/११	६/३	९/२९/४/३४	सं. सूर्य कुंभ में ५४/४८, मु. ४५, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक, (C)
२७/१५	१३	चं.	२६/१०	पुन.	११/५	आ.	३९/८	तै.	२६/१०	२	१३	२४	१२	कर्क	७/१०	६/४	१०/०/५/११	
२७/२०	१४	मं.	२७/५	पु.	१३/४५	सौ.	३६/४२	व.	२७/५	३	१४	२५	१३	कर्क	७/९	६/५	१०/१/५/४६	भ. २७/५ उ. ५६/५० या.
२७/२२	१५	बु.	२६/३५	आश्ले.	१५/२	शो.	३३/१५	ब.	२६/४५	४	१५	२६	१४	सिं. १५/२	७/८	६/५	१०/२/६/१९	श्री सत्यनारायण व्रत, माघस्नान समाप्त, जन्मदिन श्री गुरु रविदास जी,

(A) फरवरी प्रा., जन्मोत्सव योगिराज बाबा लालदयाल जी (ध्यानपुर, गुरदासपुर), (B) आरोयसप्तमी (C) प्रदोष व्रत, भीष्म द्वादशी,

माघ शु. ८ बुध, इष्ट ५५/४०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	४	९	७	८	१०	६	०
२५	०	१५	१७	१०	१८	१५	१५
५८	२१	९	४३	५३	११	५३	५३
११	०	३४	४१	१७	२६	४४	४४
६०	२३	५२	८	६७	७	३	३
४४	५०	३९	२१	५७	१	११	११
	व.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
धनि. १	मघा १	श्रव. २	ज्ये. १	पू.षा. ४	शता. ४	स्वा. ३	भर. १

कुं. सूर्योदये

१२, शा. ११, सू. १० बु., ९ शु., ८ गु., १ के., रा. ७, चं. २, ४, ६, ३, मं. ५

लोकभविष्य–इस मास में पांच मंगलवार हैं, मंगल कर्कराशि में आकर नीच हो रहा है, नीच मंगल, राहु एवं शनि को देख रहा है–यह स्थिति ब्रिटेन, अमेरीका, पाकिस्तान एवं कुछ अन्य राष्ट्रों में भी राजनैतिक दुर्घटनाओं का संकेत देती है, किसी विशिष्ट व्यक्ति का पदरिक्त होगा। यान दुर्घटना में अन्य जन धन हानि की भी खबर मिलेगी। कहीं भूकंप आदि से भी होनि हो।

कुं. सूर्योदये

१२, सू. ११ श., १० बु., के. १, ९ शु., २, गु. ८, ३, ५, ७ रा., मं. ४, ६

माघ शु. १५ बुध, इष्ट ५५/५५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	३	९	७	८	१०	६	०
३	२७	११	१८	१८	१९	१५	१५
२	३३	४९	३९	५२	१	३१	३१
४७	५७	५३	२९	०	६	२७	२७
६०	२३	२	७	६८	७	३	३
३४	२८	०	२६	५७	११	११	११
	व.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
धनि. ३	आश्ले ४	श्रव. १	ज्ये. १	पू.षा. २	शता. ४	स्वा. ३	भर. १

ग्रहचाल और बाजार का रुख–पक्षारंभ में मजीठ, दाख, छुहारे, रुई, मूंग, मसूर, गेहूं आदि अनाजों में तेजी आएगी। ९ फर. के लगभग चांदी में झटके के साथ खासी मन्दी आए। तिल, घी, दाल मिर्च, में तेजी बने। १२ मार्च के लगभग घी, तेल, सरसों, मूंगफली, एवं रुई में तेजी बनेगी।

आकाश लक्षण–फरवरी २, ९, १०, ११ को उ. प्र., हि. प्र., आसाम में कुछ वर्षा के योग हैं। १० फर. के लगभग वायु का जोर रहे, उत्तरी भारत में शीत का प्रभाव कम होने लगेगा।

श्री वि. सं. २०५१, शाक १९१६, फाल्गुन कृष्ण पक्ष २२										तारीखें				चन्द्र राशि	चण्डीगढ़		उदय-कालिक	
दि.मा.	तिथि	वार		नक्ष.		योग		करण		प्र.	अं.	श.	मु.	प्रवेश-काल	भा. स्टैं. टा. सू. उ.	भा. स्टैं. टा. सू. अ.	स्पष्ट सूर्य	
घ. प.			घ. प.		घ. प.		घ. प.		घ. प.	फाल्गु.	फर.	माघ	रम.	घ प.	घं. मि.	घं. मि.	रा. अं. क. वि.	
२७/२७	१	गु.	२४/५८	म.	१५/८	अ.	२८/५२	कौ.	२४/५८	५	१६	२७	१५	सिंह	७/७	६/६	१०/३/६/५२	बुध मार्गी ९/७,
२७/३२	२	शु.	२२/१८	पू.फा.	१४/१५	सु.	२३/४२	ग.	२२/१८	६	१७	२८	१६	क. २८/५४	७/६	६/७	१०/४/७/२३	भ. ५०/३१ उ., शनि अस्त
२७/३७	३	श.	१८/५५	उ.फा.	१२/४०	धृ.	१८/२	वि.	१८/५५	७	१८	२९	१७	कन्या	७/५	६/८	१०/५/७/५३	भ. १८/५५ या. श्री गणेश चतुर्थी व्रत,
२७/४२	४	र.	१५/३	ह.	१०/३०	शू.	११/५५	बा.	१५/३	८	१९	३०	१८	तु.२९/१४	७/४	६/९	१०/६/८/२३	सूर्य शत. में ३१/२०, सायन मीन में सूर्य ४/२, बसन्त ऋतु प्रा.
२७/४५	५	चं.	१०/४५	चि.	७/५८	गं.	५/३०	तै.	१०/४५	९	२०	फा.१	१९	तुला	७/३	६/९	१०/७/८/५०	शक फाल्गुन प्रा.
							५८/५०											
२७/५०	६	मं.	६/१०	स्वा.	५/८	ध्रु.	५२/०	ब.	६/१०	१०	२१	२	२०	वृ.४७/५१	७/२	६/१०	१०/८/९/१५	भ. ६/१० उ. ३३/४६ या.,
२७/५५	७	बु.	१/२२	वि.	२/५ ५८/४८	व्या.	४५/२	ब.	१/२२	११	२२	३	२१	वृश्चि.	७/१	६/११	१०/९/९/३७	शुक्र उ. षा. में ४१/२५,
अवम	८	बु.	५६/२०	०	० ०	०	० ०	०	० ०	०	०	०	०	० ०	० ०	० ०	० ० ० ०	अष्टमी तिथिक्षय
२८/०	९	गु.	५१/१५	ज्ये.	५५/२५	ह.	३७/५५	तै.	२३/४७	१२	२३	४	२२	ध.५५/२५	७/०	६/१२	१०/१०/१०/०	
२८/२	१०	शु.	४६/८	मू.	५२/२	व.	३०/३७	व.	१८/४५	१३	२४	५	२३	धनु	६/५९	६/१२	१०/११/१०/२१	भ. १८/४१ उ. ४६/८ या, **शनि पू. भा. १ में ३/२७,**
२८/७	११	श.	४१/२	पू.षा.	४८/४५	सि.	२३/४०	ब.	१३/३५	१४	२५	६	२४	धनु	६/५८	६/१३	१०/१२/१०/४१	**शुक्र मकर में ३३/२५,** विजया एकादशी व्रत (स.)
२८/१२	१२	र.	३६/१५	उ.षा.	४५/४७	व्य.	१६/४५	कौ.	८/३८	१५	२६	७	२५	म.३/०	६/५७	६/१४	१०/१३/११/१	अनन्त श्री बाल शंकराचार्य जयन्ती (श्री कांची मठ)
२८/१७	१३	चं.	३२/०	श्र.	४३/२०	व.	१०/८	ग.	४/८	१६	२७	८	२६	मकर	६/५६	६/१५	१०/१४/११/१७	भ. ३२/०० उ., **सोम प्रदोष व्रत, श्री महाशिवरात्रि व्रत,**
२८/२०	१४	मं.	२८/२७	घ.	४१/४२	प.	४/२	वि.	०/१४	१७	२८	९	२७	कु.१२/३१	६/५५	६/१५	१०/१५/११/३३	भ. ००/१४ या, पंचक प्रा. १२/३१, **गुरु ज्येष्ठा २ में ४/३२,**
							५८/४२											
२८/२५	३०	बु.	२६/२	श.	४१/१२	सि.	५४/१५	ना.	२६/२	१८	मा. १	१०	२८	कुम्भ	६/५४	६/१६	१०/१६/११/४५	**मार्च प्रारंभ,**

(१६ फर. से १ मार्च तक, सन् १९९५ ई.) उ. अयन, द. गो., शिशिर-वसन्त ऋतु,

ग्रह दर्शन–शनि १७ फर. से पश्चि. में अदृश्य हो जाएगा। प्रातः शुक्र, बुध, उत्तरोत्तर पू. क्षितिज की ओर झुके होंगे। और गुरु इस समय याम्योत्तर वृत्तासन्न होगा अब मंगल को सायं पूर्वी क्षितिज पर देखना चाहिए।

फाल्गुन कृ. ७ बुध, इष्ट ५६/१२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	३	९	७	८	१०	६	०
१०	२४	१४	१९	२६	१९	१५	१५
६	५५	१०	२८	५७	५१	१०	१०
१३	४८	३७	३४	८	४८	१०	१०
६०	२१	४०	६	६९	७	३	३
२४	४	२८	२८	४५	१८	११	११
-	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-		उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.

कु. सूर्योदये

१२ | सू. | बु. १०
के. १ | ११ श. | शु. ९
२ | गु. ८ चं.
३ | ५ | ७ रा.
४ मं. | ६

लोक भविष्य–देश में राजनैतिक हलचल रहे। इस मास में पांच शुक्रवार होना भी पश्चिमी देशों के लिए नेष्ट है। कहीं सरहदों पर सैन्य संचार से अशान्ति का वातावरण रहे,–यत्र मासे पंचवाराः जायन्ते च वृहस्पतेः। विग्रहः पश्चिमे देशे खड्गयुद्धं च जायते।।"

कु. सूर्योदये

१२ | सू० | शु. १० बु.
के. १ | ११ श. चं. | ९
२ | गु. ८
३ | ५ | ७ रा.
मं. ४ | ६

फाल्गुन कृ. ३० बुध, इष्ट ५६/१२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	३	९	७	९	१०	६	०
१७	२२	२०	२०	५	२०	१४	१४
८	२९	८	१०	७	४३	४६	४६
३२	५९	७	२४	२२	८	५३	५३
६०	१६	७५	५	७०	७	३	३
१३	१६	२२	११	२२	२२	११	११
-	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

ग्रहचाल और [illegible] शेयर बाजार भी मन्दे हैं। २४, २५ फर. के लगभग गेहूं आदि अनाज , अलसी, तिल, तेल, सरसों, मूंग, उड़द में तेजी हो, गुड़ खांड़, घी, भी तेज रहें। रुई और चांदी में घटाबढ़ी चले।

श्री वि सं. २०५१, शाक १९१६, फाल्गुन शुक्ल पक्ष २३ — (२ से १७ मार्च तक, सन् १९९५ ई.) उत्तरायण, द. गोल वसन्त ऋतु

ग्रह दर्शन–शनि लुप्त है। प्रातः शुक्र, बुध पू. क्षितिज पर और गुरु याम्योत्तरवृत्तासन्न होगा। मंगल सायं पूर्व कपाल में दिखाई देगा।

दि. मा. घ. प.	ति.	वा.	घ. प.	नक्षत्र	घ. प.	योग	घ. प.	करण	घ. प.	तारीखें प्र. फाल्गु	अं. मार्च.	श. फाल्गु.	मु. रम.	चन्द्र राशि प्रवेशकाल घ. प.	चण्डीगढ़ भा. स्टै. टा. सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	उदय कालिक स्पष्ट सूर्य रा. अं. क. वि.	
२८/३२	१	गु.	२४/५८	पू. भा.	४२/५	सा.	५१/८	ब.	२४/५८	१९	२	११	२९	मी. २६/५३	६/५२	६/१७	१०/१७/११/५६	चन्द्रदर्शन मु. ३०,
२८/३५	२	शु.	२५/२२	उ. भा	४४/३०	शु.	४९/१२	कौ.	२५/२२	२०	३	१२	श. १	मीन	६/५१	६/१७	१०/१८/१२/६	प्लूटो वक्री १०/८, जन्मदिन श्री रामकृष्ण परमहंस, शव्वाल मुसलमानी प्रारंभ,
२८/४०	३	श.	२७/३०	रे.	४८/३०	शु.	४८/३०	ग.	२७/३०	२१	४	१३	२	मे. ४८/३०	६/५०	६/१८	१०/१९/१२/१४	भ. ५९/२४ उ., पंचक स. ४८/३०, सूर्य पू. भा. में ४७/३२, बुध धनिष्ठा में ५३/५,
२८/४५	४	र.	३१/१८	अ.	५१/३२	ब्र.	४९/२	वि.	३१/१८	२२	५	१४	३	मेष	६/४९	६/१९	१०/२०/१२/२०	भ. ३१/१८ या.
२८/४७	५	चं.	३६/२५	भ.	६०/००	ऐं.	५०/३२	ब.	३/५२	२३	६	१५	४	मेष	६/४८	६/१९	१०/२१/१२/२५	शुक्र श्रवण में ५/५०
२८/५२	६	मं.	४२/३५	भ.	१/१८	वै.	५२/४८	कौ.	९/३०	२४	७	१६	५	वृ. १८/६	६/४७	६/२०	१०/२२/१२/२८	
२९/०	७	बु.	४९/१५	कृ.	८/३०	वि.	५५/१८	ग.	१५/५०	२५	८	१७	६	वृष	६/४५	६/२१	१०/२३/१२/३०	भ. ४९/१५ उ.
२९/५	८	गु.	५५/४०	रो.	१६/१५	प्री.	५७/३२	वि.	२२/२५	२६	९	१८	७	मि. ४९/५३	६/४४	६/२२	१०/२४/१२/२५	भ. २२/२८ या., होलाष्टक प्रारंभ,
२९/७	९	शु.	६०/००	मृ.	२३/३०	आ.	५९/१०	बा.	२७/२६	२७	१०	१९	८	मिथुन	६/४३	६/२२	१०/२५/१२/२१	बुध कुंभ में १८/२८,
२९/१२	९	श.	१/१२	आ.	२९/४५	सौ.	५९/४८	कौ.	१/१२	२८	११	२०	९	मिथुन	६/४२	६/२३	१०/२६/१२/१४	
२९/१७	१०	र.	५/२२	पुन.	३४/३२	शो.	५९/७	ग.	५/२२	२९	१२	२१	१०	क. १८/२०	६/४१	६/२४	१०/२७/११/७	भ. ३६/३८ उ.,
२९/२२	११	चं.	७/५५	पु.	३७/४०	अ.	५७/१०	वि.	७/५५	३०	१३	२२	११	कर्क	६/३९	६/२४	१०/२८/११/५६	भ. ७/५५ या, आमलकी एकादशी व्रत (स.)
२९/२७	१२	मं.	८/३५	आश्ले	३९/२	सु.	५३/४५	बा.	८/३५	चै. १	१४	२३	१२	सिं. ३९/२	६/३८	६/२५	१०/२९/११/४३	सं. सूर्य मीन में ४८/२५, मु. ३०, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न से पूर्व, (A)
२९/३०	१३	बु.	७/३०	म.	३८/४५	धृ.	४९/५	तै.	७/३०	२	१५	२४	१३	सिंह	६/३७	६/२५	११/०/११/२६	बुध शत. में १०/२८,
२९/३५	१४	गु.	४/५०	पू. फा	३७/५	शू.	४३/१७	व.	४/५०	३	१६	२५	१४	कं. ५१/२३	६/३६	६/२६	११/१/११/१०	भ. ४//५० उ. ३२/५१ या. श्री सत्यनारायण व्रत, होलिका दहन (३२/५१ बाद), (B)
२९/४०	१५	शु.	०/५२	उ. फा	३४/१५	गं.	१६/३८	ब.	०/५२	४	१७	२६	१५	कन्या	६/३५	६/२७	११/२/१०/५१	शुक्र धनिष्ठा में २२/३८, वसन्तोत्सव, होलामेला श्री आनन्दपुर साहेब,

(A) भौम प्रदोष व्रत, (B) होली, होलाष्टक समाप्त,

फाल्गुन. शु. ८ गुरु, इष्ट ५६/५५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	३	९	७	९	१०	६	०
२५	२०	२९	२०	१४	२१	१४	१४
९	४४	३१	४८	२२	४२	२१	२१
२१	५५	३९	३२	१७	५	२५	२५
५९	१०	७८	४	७०	७	३	३
५६	५८	४७	०	५५	२१	११	११
	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
पू.भा. २	आश्ले. २	धनि. २	उ.षा. २	श्रव. २	पू.भा. १	स्वा. ३	भर. १

कुं. सूर्योदये

के १, १२, सू. ११, शु. १० बु., ९, चं. २, गु. ८, ३, ५, रा. ७, मं. ४, ६

लोकभविष्य–बुध-शनि पर मंगल की दृष्टि है, कहीं अग्निकांड से जनधन हानि हो, उत्तर-पश्चिम में कहीं प्राकृतिक-आपदा से हानि का योग है। कहीं विशिष्ट राजनीतिज्ञों को राष्ट्रीय-उलझन का सामना करना पड़े। कहीं जनता में शासकों के निर्णय-नीति के विरुद्ध आवाज उठे।

कुं. सूर्योदये

के १, २, सू. १२, श. ११ बु., शु १०, ३, ९, मं. ४, चं. ६, ८ गु., ५, रा. ७

फाल्गुन. शु. १५ शुक्र, इष्ट ५७/१७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	३	१०	७	९	१०	६	०
३	१९	१०	२१	२४	२२	१३	१३
७	३९	४३	१५	१	४०	५५	५५
५४	१३	५०	४२	१०	४३	५७	५७
५९	४	९०	२	७१	७	३	३
४०	३१	२१	३६	११	१७	११	११
	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
पू.भा. ४	आश्ले. १	शत. २	उ.षा. २	धनि. १	पू.भा. १	स्वा. ३	भर. १

ग्रहचाल और बाजार का रुख–पक्षारंभ में अचानक बाजार तेजी की तरफ बढ़ेंगे। १७ मार्च तक सोना, चांदी, गुड़, चना, उड़द, चावल, ज्वार, बाजरा, घी, सरसों, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड में अच्छी तेजी से लाभ मिलेगा।

आकाश लक्षण–मार्च, ३, ४, १०, १६ को आसाम, भूटान, विक्रम प. पाक. में बादलचाल, खाण्डवृष्टि के योग हैं।

श्री वि. सं. २०५१, शाक १९१६, चैत्र कृष्ण पक्ष २४											तारीखें				चन्द्र राशि	चण्डीगढ़		उदय-कालिक	(१८ से ३१ मार्च तक सन् १९९५ ई.) उत्तरायण, द. उत्तर गोल, वसन्त ऋतु,
दि.मा. घ. प.	ति.	वा.	घ. प.	नक्ष.	घ. प.	योग	घ. प.	करण	घ. प.	प्र. चैत्र	अं. मार्च	श. फाल्गु	मु. शव्वा.	प्रवेश-काल घ प.	भा. स्टैं. टा. सू. उ. घं. मि	सू. अ. घं. मि.	स्पष्ट सूर्य रा. अं. क.	ग्रह दर्शन–शनि २२ मार्च से पूर्व में दीखने लगेगा। प्रातः बुध पूर्व क्षितिजासन्न और शुक्र उससे काफी ऊपर चमक रहा होगा। इस समय गुरु प. कपाल और सायं मंगल पू. कपाल में दीखेगा।
अवम	१	शु.	५५/५२	०	० ०	०	० ०	०	० ०	०	०	०	०	० ०	०	००	००	प्रतिपदा तिथिक्षय
२९/४७	२	श.	५०/१८	ह.	३०/४२	वृ.	२९/२०	तै.	२३/५	५	१८	२७	१६	तु.५८/३८	६/३३	६/२८	११/३/१०/२८	सूर्य उ. भा. में ९/३०,
२९/५०	३	र.	४४/१२	चि.	२६/३५	ध्रु.	२१/३८	व.	२२/१५	६	१९	२८	१७	तुला.	६/३२	६/२८	११/४/१०/६	भ. १७/१५ उ. ४४/१२ या.
२९/५५	४	चं.	३८/२	स्वा.	२२/१५	व्या.	१३/४४	ब.	११/७	७	२०	२९	१८	तुला	६/२९	६/२९	११/५/९/४१	श्री गणेश चतुर्थी व्रत, श्री भगवान् नारायण जयन्ती (पिण्डारीधाम, गुरदासपुर),
३०/२	५	मं.	३१/५८	वि.	१८/०	ह.	५/५० ५८/२	कौ.	५/०	८	२१	३०	१९	वृ.३/५६	६/२९	६/३०	११/६/९/१५	सायन मेष में सूर्य २/४५, उत्तर गोल प्रा. महाविषुव दिन,
३०/५	६	बु.	२६/५	अनु.	१३/५२	सि.	५०/३०	व.	२६/५	९	२२	चै. १	२०	वृश्चिक	६/२८	६/३०	११/७/८/४७	भ. २६/५ उ. ५३/२२ या., शक चैत्र १९१७ प्रारंभ, **शुक्र कुंभ में ५८/५५,** (A)
३०/१०	७	गु.	२०/३८	ज्ये.	१०/१०	व्य.	४३/२२	ब.	२०/३८	१०	२३	२	२१	ध.१०/१०	६/२७	६/३१	११/८/८/१५	बुध पू. भा. में ५१/३२, शनि पू. भा. २ में २३/४०, **मेला शीतला माता कुराली (पंजाब)**
३०/१२	८	शु.	१५/४०	मू.	६/५५	व.	३६/४०	कौ.	१५/४०	११	२४	३	२२	धनु	६/२६	६/३१	११/९/७/४३	**मंगल मार्गी ४१/०,**
३०/२०	९	श.	११/२२	पू.षा.	४/१८	प.	३०/३२	ग.	११/४२	१२	२५	४	२३	म.१८/४९	६/२४	६/३२	११/१०/७/१०	भ. ३९/३२ उ.,
३०/२५	१०	र.	७/४२	उ.षा.	२/२०	शि.	२४/५८	वि.	७/४२	१३	२६	५	२४	मकर	६/२३	६/३३	११/११/६/३३	भ. ७/४२ या.,
३०/२७	११	चं.	४/२०	श्र.	१/८	सि.	२०/०	बा.	४/२०	१४	२७	६	२५	कुं.३०/५६	६/२२	६/३३	११/१२/५/५५	पंचक प्रा. ३०/५६, पापमोचनी एकादशी व्रत (स.)
३०/३३	१२	मं.	२/५०	ध.	०/४५	सा.	१५/१८	तै.	२/५०	१५	२८	७	२६	कुंभ	६/२१	६/३४	११/१३/५/१८	शुक्र शत. में ३३/५२, **भौम प्रदोष व्रत, वारुणी पर्व (७ घं. २९ मि. बाद),**
३०/३७	१३	बु.	१/५२	श.	१/२५	शु.	१२/२५	व.	१/५२	१६	२९	८	२७	मी.४७/४४	६/२०	६/३५	११/१४/४/३७	भ. १/५२ उ. ३१/५७ या., **बुध मीन में ४९/१५,** राहु स्वाती २ में केतु (B)
३०/४२	१४	गु.	२/२	पू. भा	३/१०	शु.	९/५८	श.	२/२	१७	३०	९	२८	मीन	६/१८	६/३५	११/१५/३/५५	
३०/४७	३०	शु.	३/२५	उ. भा	६/८	ब्र.	६/७	ना.	३/२५	१८	३१	१०	२९	मीन	६/१७	६/३६	११/१६/३/८	सूर्य रेवती में ३७/१२, बुध उ. भा. में ४१/५२, सं. २०५१ वि. पूर्ण,

(A) वक्री प्लूटो अनु. १ में ४३/३०, शनि उदित, (B) अश्विनी ४ में १९/४०, मेला पिहोवा (हरयाणा)

चैत्र कृ. ८ शुक्र, इष्ट ५७/४०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	३	१०	७	१०	१०	६	०
१०	१९	२१	२१	२	२३	१३	१३
४	२२	४३	३०	२१	२१	३३	३३
५६	२०	५९	६	४२	३१	४०	४०
५९	०	९९	१	७१	७	३	३
२८	३४	३३	१९	४१	१०	११	११
-		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-		उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.भा. २	आश्ले. १	पू.भा. १	ज्ये. २	धनि. ३	पू.भा. २	स्वा. ३	[illegible] १

कु. सूर्योदये

१ के. | सू. १२ | शु. ११ श. बु. | २ | १० | ३ | ९ चं. | मं. ४ | ६ | ८ गु. | ५ | रा. ७

लोक भविष्य–इस पक्ष में शुक्र कुंभ राशि में आकर शनि से मेल करता है। कुंभ का शुक्र यद्यपि प्रजा में आनन्द मंगल सुभिक्ष कारक है, पुनरपि शनि के साथ संबंध होने से यह इतना शुभ फलप्रद नहीं होगा। प्रजा में कहीं असन्तोष, कहीं रोग से कष्ट आदि की सम्भावना को जन्म देगा।

कु. सूर्योदये

१ के. | चं. १२ बु. सू. | श. ११ शु. | २ | १० | ३ | ९ | मं. ४ | ६ | ८ गु. | ५ | रा. ७

चैत्र कृ. ३० शुक्र, इष्ट ५८/०२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	३	११	७	१०	१०	६	०
१७	१९	३	२१	१०	२४	१३	१३
०	४१	४८	३५	४४	२०	११	११
३१	११	५९	२३	१७	५९	२३	२३
५९	५	९९	०	७१	७	३	३
१४	२६	२	१	५६	०	११	११
-	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रे. १	आश्ले. १	उ.भा. १	ज्ये. २	शत. २	पू.भा. २	स्वा. २	अश्वि. ४

ग्रहचाल और बाजार का रुख–इस पक्ष में रुई, चांदी, गुड़, खाण्ड, गेहूं, जौ, चना, मूंग, ज्वार, बाजरा, में कुछ मन्दे की प्रधानता रहेगी। बाजार [illegible] रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मन्दी हो, सोना चांदी पहले तेज, बाद में मन्दे रहें।

आकाश लक्षण–मार्च २२ से २४ एवं २९ मार्च को पूर्वी आसाम, बंगाल, बिहार के कुछ भागों में बादलचाल एवं खण्डवृष्टि के योग हैं।

भा. स्टैं. टा. में तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्रराशि प्रवेश काल, ग्रहराशि-नक्षत्रचार आदि (सन् १९९४ ई.)

जन. '९४ ई.	ति.	वा.	समाप्ति-काल घं. मि.	नक्ष.	समाप्ति-काल घं. मि.	योग	समाप्ति-काल घं. मि.	चन्द्र राशि प्रवेश घं. मि.	भद्रा, ग्रह राशि-नक्षत्र प्रवेश आदि
				पौष कृष्ण पक्ष (सं: २०५० वि.)					
१	४	श.	२४/४६	आश्ले	१५/३	वि.	९/१२	सिं. १५/३	शुक्र पू. षा. में १७/२८, प्लूटो (A)
						प्री	३०/३७		
२	५	र.	२२/२८	म.	१३/५९	आ.	२७/५५	सिंह	शनि धनि. ४ में १३/८
३	६	चं.	२०/३२	पू. फा.	१२/४६	सौ.	२५/६	क. १८/२७	भ. २०/३२ बाद
४	७	मं.	१८/३२	उ. फा.	११/२८	शो.	२२/१४	कन्या	भ. ७/३२ तक
५	८	बु.	१६/३०	ह.	१०/७	अति.	१९/२२	तु. २१/२६	गुरु स्वा. ४ में १९/३९
६	९	गु.	१४/२८	चित्रा	८/४६	सु.	१६/३०	तुला.	भ. २५/२८ बाद
७	१०	शु.	१२/२८	स्वा	७/२७	धृ.	१३/३९	वृ. २४/३१	भ. १२/२८ तक
				वि.	३०/९				
८	११	श.	१०/३२	अनु.	२८/५९	शू.	१०/५२	वृश्चिक	बुध उ. षा. में १२/००
९	१२	र.	८/४३	ज्ये.	२७/५९	गं	८/९	ध. २७/५९	भ. ३१/५ बाद
	१३		३१/५			वृ.	२९/३६	धनु	
१०	१४	चं.	२९/४२	मू.	२७/१३	ध्रु.	२७/१४	धनु	भ. १८/२४ तक, सूर्य (B)
११	३०	मं.	२९/४१	पू. षा.	२६/४८	व्या.	२५/१०	धनु	शुक्र उ. षा. में ३०/३७,
				पौष शुक्ल पक्ष (सं. २०५० वि.)					
१२	१	बु.	२८/७	उ. षा.	२६/४८	ह.	३/२५	म. ८/४८	
१३	२	गु.	२८/५	श्र.	२७/१९	व.	२२/५	मकर	राहु अनु १ केतु कृत्ति. ३ में (C)
१४	३	शु.	२८/३९	ध.	२८/२६	सि.	२१/१३	कुं. १५/५२	पंचक प्रारंभ १५/५२, सूर्य (D)
१५	४	श.	२९/५३	श.	३०/१०	व्य.	२०/४९	कुंभ	भ. १७/१६ से २९/५३ तक (E)
१६	५	र.	- -	पू. भा.	- -	व.	२०/५४	मी. २५/५५	बुध श्रव. में ११/४२
१७	५	चं.	७/४२	पू. भा.	८/२८	प.	२१/२३	मीन	
१८	६	मं.	१०/००	उ. भा.	११/१३	शि.	२२/१०	मीन	
१९	७	बु.	१२/३७	रे.	१४/१५	सि.	२३/६	मे. १४/१५	भ. १२/३७ से २५/५६ तक (F)
२०	८	गु.	१५/१६	अश्वि.	१७/१९	सा.	२३/५८	मेष	सूर्य अभिजित् में २३/८ (G)
२१	९	शु.	१७/४२	भ.	२०/९	शु.	२४/३८	वृ. २६/४५	
२२	१०	श.	१९/३९	कृ.	२२/३१	शु.	२४/५५	वृष	शुक्र श्रवण में २२/८
२३	११	र.	२०/५९	रो.	२४/१५	ब्र.	२४/४०	वृष	भ. ८/१९ से २०/५९ तक (H)
२४	१२	चं.	२१/३३	मृ.	२५/१६	ऐ.	२३/५१	मि. १२/४६	सूर्य अभिजित् से निवृत्त (I) .
२५	१३	मं.	२१/२०	आर्द्रा	२५/३२	वै.	२२/२६	मिथुन	
२६	१४	बु.	२०/२५	पुन.	२५/८	वि.	२०/२८	क १९/११	भ. २०/२५ बाद
२७	१५	गु.	१८/५३	पु.	२४/९	प्री.	१८/१	• कर्क	भ. ७/३९ तक
				माघ कृष्ण पक्ष (सं. २०५० वि.)					
२८	१	शु.	१६/५३	आश्ले	२२/४४	आ.	१५/१३	सिं २२/४४	बुध कुंभ में १०/४६
२९	२	श.	१४/३३	म.	२१/३	सौ.	१२/८	सिंह	भ. २५/१८ बाद
३०	३	र.	१२/२	पू. फा.	१९/१३	शो	८/५३	क. २४/४६	भ. १२/२ तक
						अति.	२९/३४	कन्या	
३१	४	चं.	९/२९	उ. फा.	१७/२३	सु	२६/१८	कन्या	
	५		३१/००						

फर. '९४ ई.	ति.	वा.	समाप्ति-काल घं. मि.	नक्ष.	समाप्ति-काल घं. मि.	योग	समाप्ति-काल घं. मि.	चन्द्र राशि प्रवेश घं. मि.	भद्रा, ग्रह राशि-नक्षत्र प्रवेश आदि
१	६	मं.	२८/४०	ह.	१५/३९	धृ.	२३/१०	तु. २६/५२	भ. २८/४० बाद, मंगल श्रवण (J)
२	७	बु.	२६/३४	चि.	१४/६	शू.	२०/१२	तुला	भ. १५/३७ तक, शुक्र धनि. में १२/५७
३	८	गु.	२४/४३	स्वा.	१२/४८	गं.	१७/२५	वृ. ३०/१	
४	९	शु.	२३/९	वि.	११/४६	वृ.	१४/५२	वृश्चिक	गुरु विशा. १ में २२/३१, शनि अस्त २६/८,
५	१०	श.	२१/५२	अनु.	१०/५९	ध्रु.	१२/३२	वृश्चिक	भ. १०/३० से २१/५२ तक,
६	११	र.	२०/५१	ज्ये.	१०/३०	व्या.	१०/२५	ध. १०/३०	सूर्य धनि. में ९/२
७	१२	चं.	२०/७	मू.	१०/१६	ह.	८/३१	धनु	शुक्र कुंभ में २०/३०, (K)
८	१३	मं.	१९/४२	पू. षा.	१०/२१	व.	६/५१	म. १६/२७	भ. १९/४२ बाद
						सि.	२९/२७		
९	१४	बु.	१९/३९	उ. षा.	१०/४५	व्य.	२८/२१	मकर	भ. ७/४० तक
१०	३०	गु.	२०/१	श्रव.	११/३२	व.	२७/३५	कु. २४/८	पंचक प्रा. २४/८
				माघ शुक्ल पक्ष (सं. २०५० वि)					
११	१	शु.	२०/५०	ध.	१२/४५	प.	२७/१०	कुंभ	बुध वक्री २२/२४, शुक्र पश्चिमोदय ९/५१,
१२	२	श.	२२/९	श.	१४/२७	शि.	२७/९	कुंभ	सूर्य कुंभ में २३/३, शुक्र शत. में २८/८;
१३	३	र.	२३/५९	पू. भा.	१६/३७	सि.	२७/३०	मी. १०/५	बुध पश्चिमास्त
१४	४	चं.	२६/१५	उ. भा.	१९/१४	सा.	२८/१०	मीन	भ. १३/७ से २६/१५ तक
१५	५	मं.	२८/५१	रे.	२२/१२	शु.	२९/६	मे. २२/१२	पंचक स. २२/१२,
१६	६	बु.	- -	अ.	२५/२०	शु.	३०/५	मेष	
१७	६	गु.	७/३४	भ.	२८/२४	ब्र.	- -	मेष	
१८	७	शु.	१०/८	कृ.	- -	ब्र.	७/०	वृ. ११/५	भ. १०/८ से २३/१४ तक (L)
१९	८	श.	१२/२०	कृ.	७/९	ऐं.	७/३९	वृष	सूर्य शत. में १३/२६,
२०	९	र.	१३/५४	रो.	९/२१	वै.	७/५२	मि. २२/२०	
२१	१०	चं.	१४/४०	मृग.	१०/४९	वि.	७/३०	मिथुन	भ. २६/३८ बाद, व. बुध धनि. में ११/१२,
						प्री.	३०/३०		
२२	११	मं.	१४/३५	आ.	११/२८	आ.	२८/४८	क. २९/१९	भ. १४/३५ तक,
२३	१२	बु.	१३/३९	पुन.	११/१६	सौ.	२६/३९	कर्क	शुक्र पू. भा. में १९/५३,
२४	१३	गु.	११/५६	पु.	१०/१९	शो.	२३/३६	.कर्क	
२५	१४	शु.	९/३५	आश्ले.	८/४२	अ.	२०/१७	सिं. ८/४२	भ. ९/३५ से २०/१० तक,
	१५		३०/४६	म.	३०/३७				
				फाल्गुन कृष्ण पक्ष (सं. २०५० वि.)					
२६	१	श.	२७/३८	पू. फा.	२८/१४	सु.	१६/३९	सिंह	बुध पूर्व में उदित २५/३४,
२७	२	र.	२४/२२	उ. फा.	२५/४३	घृ.	१२/४९	क. ९/३६	मंगल कुंभ में १८/४२,
२८	३	चं.	२१/८	ह.	२३/१५	शू.	८/५६	कन्या	भ. १०/४५ से २१/८ तक (M)
						गं.	२९/९		

(A) अनु. १ में, (B) उ. षा. में २७/२९, बुध मकर में १२/२८, (C) ९/५३, (D) मकर में १०/००, शुक्र मकर में २३/१२, (E) मंगल उ. षा. में २५/३३, (F) पंचक समाप्त १४/१५, (G) सा. कुंभ में सूर्य १२/३८, मंगल मकर में ९/४, (H) सूर्य श्रव. में २९/४८, बुध पश्चिम में उदित २५/३, (I) २६/४७, बुध धनि में ८/४२.

(J) में ३०/६, बुध शत. में २४/८, शनि शत. १ में २४/४४, (K) यूरेनस उ. षा. २ मकर में (L) मंगल धनि. में ३०/५८, सायन मीन में सूर्य २६/५२, (M) गुरु वक्री २४/०, वक्री बुध मकर में २३/३४,

भा. स्टैं. टा. में तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्रराशि प्रवेश काल, ग्रहराशि-नक्षत्रचार आदि (सन् १९९४ ई.)

मार्च '९४ ई.	ति.	वा.	समाप्ति-काल घं. मि.	नक्ष.	समाप्ति-काल घं. मि.	योग	समाप्ति-काल घं. मि.	चन्द्र राशि प्रवेश घं. मि.	भद्रा, ग्रह राशि-नक्षत्र प्रवेश आदि
फाल्गुन कृष्ण पक्ष (संवत् २०५० वि.)									
१	४	मं.	१८/६	चि.	२०/५९	वृ.	२५/३२	तु. १०/७	शनि. शत. २ में १५/५९
२	५	बु.	१५/२१	स्वा.	१९/०२	ध्रु.	२२/१४,	तुला	
३	६	गु.	१३/१	वि.	१७/३०	व्या.	१९/१६	वृ. ११/५३	भ. १३/१ से २४/५ तक (A)
४	७	शु.	११/९	अनु.	१६/२६	ह.	१६/४१	वृश्चिक	सूर्य पू. भा. में १९/५४
५	८	श.	९/४६	ज्ये.	१५/५०	व.	१४/२९	ध. १५/५०	बुध मार्गी १७/३६,
६	९	र.	८/५३	मू.	१५/४४	सि.	१२/४१	धनु	भ. २०/४० बाद, शुक्र उ. भा. में १२/२२,
७	१०	चं.	८/२७	पू. षा.	१६/४	व्य.	११/१४	म. २२/१५	भ. ८/२७ तक, मंगल शत. में ३०/११,
८	११	मं.	८/२८	उ. षा.	१६/४९	व.	१०/७	मकर	
९	१२	बु.	८/५४	श्रवण	१७/५९	प.	९/२१	मकर	मंगल उदय ८/२५,
१०	१३	गु.	९/४४	धनि.	१९/३३	शि.	८/५४	कु. ६/४६	भ. ९/४४ से २२/२१ तक (B)
११	१४	शु.	१०/५८	शत.	२१/२७	सि.	८/४४	कुंभ	
१२	३०	श.	१२/३५	पू. भा.	२३/४६	सा.	८/५१	मी. १७/११	
फाल्गुन शुक्ल पक्ष (संवत् २०५० वि.)									
१३	१	र.	१४/३५	उ. भा.	२६/२४	शु.	९/१७	मीन	
१४	२	चं.	१६/५५	रेव.	२९/२६	शु.	९/५८	मे. २९/२६	पंचक स. २९/२६, सूर्य. मीन में २०/०,
१५	३	म.	१९/३०	अश्वि.	- -	ब्र.	१०/५२	मेष	
१६	४	बु.	२२/१२	अश्वि.	८/२७	ऐं.	११/५३	मेष	भ. ८/५१ से २२/१२ तक (C)
१७	५	गु.	२४/५१	भ.	११/३७	वै.	१२/५६	वृ. १८/२२	सूर्य उ. भा. में २८/१८ (D)
१८	६	शु.	२७/१३	कृत्ति.	१४/३७	वि.	१३/५१	वृष	बुध शत. में २८/३६,
१९	७	श.	२९/१०	रो.	१७/१४	प्री.	१४/२८	मि. ३०/१४	भ. २९/१० बाद,
२०	८	र.	३०/१३	मृ.	१९/१४	आ.	१४/३८	मिथुन	भ. १७/४२ तक, सायन (E)
२१	९	चं.	- -	आ.	२०/२९	सौ.	१४/१४	मिथुन	
२२	९	मं.	६/३५	पुन.	२१/२	शो.	१३/१०	क. १४/५४	
	१०		३०/०						
२३	११	बु.	२८/३७	पु.	२०/३०	अ.	११/२५	कर्क	भ. १७/१८ से २८/३७ तक,
२४	१२	गु.	२६/२६	आश्ले.	१९/२०	सु.	९/०	सि. १९/२०	मंगल पू. भा. में २९/२२ (F)
						धृ.	२९/५८		
२५	१३	शु.	२३/३५	म.	१७/२४	शू.	२६/१७	सिंह.	
२६	१४	श.	२०/१६	पू. फा.	१४/५७	गं.	२२/२४	कं० २०/१७	भ. २०/१६ बाद,
२७	१५	र.	१६/४३	उ. फा.	१२/१६	वृ.	१८/२६	कन्या	भ. ६/३० तक (G)
चैत्र कृष्ण पक्ष (संवत् २०५० वि.)									
२८	१	चं.	१२/५०	ह.	९/१९	ध्रु.	१४/२	तु. १९/४८	
२९	२	मं.	९/१४	चि.	६/२७	व्या.	९/५४	तुला	भ. १९/३४ से २९/५४ तक,
	३		२९/५४	स्वा.	२७/४९	ह.	२९/५६	तुला	
३०	४	बु.	२६/४४	वि.	२५/२९	व.	२६/१२	वृ. १९/३५	बुध पू. भा. में ६/२८,
३१	५	गु.	२४/१६	अनु.	२३/२४	सि.	२२/५७	वृश्चिक	सूर्य रेवती में १५/५४ (H)

(A) शुक्र शुक्र मीन में २०/२०, प्लूटो वक्री, (B) पंचक प्रा. ६/४६ बुध कुंभ में ७/२०, शनि उदय, (C) शुक्र रेवती में

अप्रै. '९४ ई.	ति.	वा.	समाप्ति-काल घं. मि.	नक्ष.	समाप्ति-काल घं. मि.	योग	समाप्ति-काल घं. मि.	चन्द्र राशि प्रवेश घं. मि.	भद्रा, ग्रह राशि-नक्षत्र प्रवेश आदि
चैत्र कृष्ण पक्ष (संवत् २०५० वि.)									
१	६	शु.	२२/१६	ज्ये.	२२/१५	व्य.	२०/१२	ध. २२/१५	भ. २२/१६ बाद,
२	७	श.	२०/५२	मू.	२१/४२	व.	१७/५६	धनु.	भ. ९/३४ तक,
३	८	र.	२०/११	पू. षा.	२१/४०	प.	१६/१६	म. २७/५०	
४	९	चं.	२०/८	उ. षा.	२२/२०	शि.	१४/५४	मकर	
५	१०	मं.	२०/४०	श्र.	२३/२९	सि.	१४/११	मकर	भ. ८/२४ से २०/४० तक (A)
६	११	बु.	२१/४४	धनि.	२५/१०	सा.	१३/५०	कु. १२/१८	पंचक प्रा. १२/१८, मंगल (B)
७	१२	गु.	२३/१५	श.	२७/२०	शु.	१३/५५	कुंभ	बुध उ. भा. में २७/४१, शुक्र (C)
८	१३	शु.	२५/१०	पू. भा.	२९/४९	शु.	१४/१४	मी. २३/९	भ. २५/१० बाद,
९	१४	श.	२७/२४	उ. भा.	- -	ब्र.	१४/४८	मीन	भ. १४/१७ तक,
१०	३०	र.	२९/४९	उ. भा.	८/३८	ऐं.	१५/३६	मीन	
चैत्र शुक्ल पक्ष (सं. २०५१ वि.)									
११	१	चं.	- -	रे.	११/४१	वै.	१६/४०	मे. ११/४१	मंगल उ. भा. में ६/३२, पंचक समाप्त ११/९१,
१२	१	मं.	८/२४	अ.	१४/४८	वि.	१७/४३	मेष	
१३	२	बु.	११/३	भ.	१७/५६	प्री.	१८/४६	वृ. २४/४१	सूर्य अश्वि. मेष में २८/३०,
१४	३	गु.	१३/३७	कृ.	२०/५८	आ.	१९/४४	वृष	भ. २६/४६ बाद,
१५	४	शु.	१५/५७	रो.	२३/४५	सौ.	२०/३०	वृष	भ. १५/५७ तक, बुध रेवती में २२/२७,
१६	५	श.	१७/५४	मृ.	२६/६	शो.	२०/५७	मि. १२/५६	
१७	६	र.	१९/१८	आ.	२७/५२	अ.	२०/५९	मिथुन	
१८	७	चं.	२०/१	पुन.	२८/५७	सु.	२०/२८	क. २२/४१	भ. २०/१ बाद, शुक्र कृत्ति मे १६/१०,
१९	८	मं.	१९/५७	पु.	२९/१६	धृ.	१९/२१	कर्क	भ. ७/५९ तक,
२०	९	बु.	१९/६	आश्ले.	२८/५७	शू.	१७/३६	सि. २८/४७	सायन वृष मे सूर्य १३/५, अगस्त्य अस्त,
२१	१०	गु.	१७/२७	म.	२७/३४	गं.	१५/१४	सिंह	भ. २८/१६ बाद, शुक्र वृष में ९/३५,
२२	११	शु.	१५/६	पू. फा.	२२/४१	वृ.	१२/१६	सिंह	भ. १५/६ तक, बुध अश्वि. मेष में २२/३०,
२३	१२	श.	१२/९	उ. फा.	२३/१७	ध्रु.	८/४९	क. ७/५	
						व्या.	२८/५८		
२४	१३	र.	८/४६	ह.	२०/३०	ह.	२४/५१	कन्या	भ. २९/५ बाद,
	१४		२९/५						
२५	१५	चं.	२५/१६	चि.	१७/३२	व.	२०/३६	तु. ७/१	भ. १५/१० तक, व. गुरु स्वाती ३ (D)
वैशाख कृष्ण पक्ष (सं. २०५१ वि.)									
२६	१	मं.	२१/३०	स्वा.	१४/३३	सि.	१६/२१	तुला	
२७	२	बु.	१७/५७	वि.	११/४३	व्य.	१२/१५	वृ. ६/२५	भ. १५/४५ भ. २८/२१ बाद, सूर्य भर में २०/२३
२८	३	गु.	१४/४५	अनु.	९/१२	व.	८/२५	वृश्चिक	भ. १४/४५ तक, मंगल रेवती में ११/३६,
						प.	२८/५८		
२९	४	शु.	१२/४	ज्ये.	७/७	शि.	२६/२	ध. ७/७	बुध भर. में ९/१२, शुक्र रोहि. में १४/२५,
				मू.	[illegible]				
३०	५	श.	१०/१	पू. षा.	२८/५९	सि.	२३/३८	धनु	यूरेनस वक्री २६/१७, प्लूटो विशा. ४ में २१/४[illegible]

(A) बुध मीन में २४/४२, (B) मीन में २३/५९, (C) भर. में १८/२८, (D) गं ९/३८, नेपच्यून वक्री १५/६.

२५/३७. (D) राहु विशा. ४ केतु कृत्ति. २ में ७/२४. (E) मेष सूर्य में सूर्य २५/५८. (F) वक्री गुरु स्वाती ४ में १५/९.

भा. स्टैं. टा. में तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्रराशि प्रवेश काल, ग्रहराशि-नक्षत्रचार आदि (सन् १९९४ ई.)

मई '९४ ई.	ति.	वा.	समाप्ति-काल घं. मि.	नक्ष.	समाप्ति-काल घं. मि.	योग	समाप्ति-काल घं. मि.	चन्द्र राशि प्रवेश घं. मि.	भद्रा, ग्रह राशि-नक्षत्र प्रवेश आदि
वैशाख कृष्ण पक्ष (सं. २०५१ वि.)									
१	६	र.	८/४०	उ.षा.	२८/५९	सा.	२१/५०	म. १०/५९	भ ८/४० से २०/२१ तक,
२	७	चं.	८/४	श्र.	२९/४४	शु.	२०/३८	मकर	
३	८	मं.	८/१४	धनि.	- -	शु.	२०/२	कुं. १८/२७	पंचक प्रा. १८/२७,
४	९	बु.	९/६	धनि.	७/१०	ब्र.	१९/५६	कुंभ	भ. २१/५१ बाद (A)
५	१०	गु.	१०/३६	शत.	९/१३	ऐं.	२०/१७	मी. २९/७	भ. १०/३६ तक, बुध कृत्ति में १३/५०,
६	११	शु.	१२/३५	पू. भा.	११/४५	वै.	२०/५८	मीन	बुध वृष में २७/१५,
७	१२	श.	१४/५५	उ. भा.	१४/३८	वि.	२१/५३	मीन	
८	१३	र.	१७/२७	रे.	१७/४३	प्री.	२२/५७	मे. १७/४३	भ.१७/२७ बाद, पंचक स. १७/४३
९	१४	चं.	२०/९	अ.	२०/५१	आ.	२४/३	मेष	भ. ३०/४८ तक,
१०	३०	मं.	२२/३८	भ.	२३/५७	सौ	२५/४	मेष	शुक्र मृग. में १४/१६,
वैशाख शुक्ल पक्ष (सं. २०५१ वि.)									
११	१	बु.	२५/१	कृ.	२६/५२	शो.	२५/५८	वृ. ६/४१	सूर्य कृत्ति. में १४/३२, बुध रोहि. में. २३/३८,
१२	२	गु.	२७/९	रो.	२९/३२	अ.	२६/४०	वृष	
१३	३	शु.	२८/५५	मृग.	- -	सु.	२७/६	मि. १८/४२	
१४	४	श.	- -	मृग.	७/५२	धृ.	२७/१०	मिथुन	भ. १७/३५ बाद, सं. सूर्य वृष में २५/२३,
१५	४	र.	६/१५	आ.	९/४४	शू.	२६/५३	क. २८/४८	भ. ६/१५ तक, मंगल अश्वि मेष (B)
१६	५	चं.	७/१	पुन.	११/१०	गं.	२६/७	कर्क	
१७	६	मं.	७/१४	पु.	११/'.२	वृ.	२४/५२	कर्क	
१८	७	बु.	६/४९	आश्ले.	१२/०	ध्रु.	२३/६	सिं. १२/०	भ. ६/४९ से १८/१७ तक (C)
१९	८	गु.	५/४४	म.	११/३०	व्या	२०/४८	सिंह	बुध मृग. में ८/१२
	९		२८/१						
२०	१०	शु.	२५/४३	पू.फा.	१०/२४	ह.	१८/२	क. १५/५९	
२१	११	श.	२२/५५	उ. फा.	८/४३	व.	१४/४९	कन्या	भ. १२/१९ बाद, २२/५५ तक (D)
२२	१२	र.	१९/४४	ह.	६/३५	सि.	११/१४	तु. १७/२०	व. गुरु स्वा. २ में १६/५६,
				चि.	२८/५				
२३	१३	चं.	१६/१७	स्वा.	२५/२५	व्य.	७/२४	तुला	बुध मिथुन में १८/४२,
						व.	२७/२५		
२४	१४	मं.	१२/४३	वि.	२२/३९	प.	२३/२३	वृ. १७/२०	भ. १२/४३ से २२/५७ तक,
२५	१५	बु.	९/१०	अनु.	१९/५९	शि.	१९/२७	वृश्चिक	सूर्य रोहि. में १०/४६,
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष (सं. २०५१ वि.)									
२६	१	गु.	५/४८	ज्ये.	१७/३६	सि.	१५/४३	ध. १७/३६	
	२		२६/४६						
२७	३	शु.	२४/१४	मू.	१५/३८	सा.	१२/२०	धनु.	भ. १३/३० से २४/१४ तक
२८	४	श.	२२/१८	पू. षा.	१४/१४	शु.	९/२५	म. २०/३	
२९	५	र.	२१/६	उ. षा.	१३/३२	शु.	७/२	मकर	बुध आर्द्रा में ६/३२
						ब्र.	२९/१५		
३०	६	चं.	२०/४१	श्र.	१३/३५	ऐं.	२८/७	कुं. २६/०	भ. २०/४१ बाद, पंचक प्रा. २६/०,
३१	७	मं.	२१/४	धनि.	१४/२६	वै.	२७/३७	कुंभ	भ. ८/५२ तक,

जून '९४ ई.	ति.	वा.	समाप्ति-काल घं. मि.	नक्ष.	समाप्ति-काल घं. मि.	योग	समाप्ति-काल घं. मि.	चन्द्र राशि प्रवेश घं. मि.	भद्रा, ग्रह राशि-नक्षत्र प्रवेश आदि
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष (सं. २०५१ वि.)									
१	८	बु.	२२/१३	श.	१६/२	वि.	२७/४१	कुंभ	शुक्र पुन. में
२	९	गु.	२४/०	पू. भा.	१८/१८	प्री.	२८/१४	मी. ११/४४	मंगल भरणी में १६/४५,
३	१०	शु.	२६/१५	उ. भा.	२१/३	आ.	२९/६	मीन	भ. १३/८ से, २६/१५ तक,
४	११	श.	२८/४७	रे.	२४/६	सौ.	- -	मे. २४/६	पंचक स. २४/६
५	१२	र.	- -	अ.	२७/१५	सौ.	६/१०	मेष	
६	१२	चं.	७/२३	भ.	- -	शो.	७/१७	मेष	
७	१३	मं.	९/५२	भ.	६/२०	अ.	८/१९	वृ. १३/६	भ. ९/५२ से २२/५९ तक,
८	१४	बु.	१२/६	कृ.	९/१०	सु.	९/९	वृष	सूर्य मृग. में ८/३८,
९	३०	गु.	१३/५७	रो.	११/४०	धृ.	९/४३	मि. २४/४३	
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष (सं. २०५१ वि.)									
१०	१	शु.	१५/२४	मृ.	१३/४६	शू.	९/५८	मिथुन	शुक्र कर्क में ६/१३,
११	२	श.	१६/२३	आ.	१५/२५	गं.	९/५२	मिथुन	
१२	३	र.	१६/५४	पुन.	१६/३७	वृ.	९/२४	क. १०/१९	भ. २८/५५ बाद, बुध वक्री २३/१९, (E)
१३	४	चं.	१६/५६	पु.	१७/२२	ध्रु.	८/३४	कर्क	भ. १६/५६ तक,
१४	५	मं.	१६/३०	आश्ले.	१७/३८	व्या.	७/२२	सि. १७/३८	
१५	६	बु.	१५/३७	म.	१७/२८	ह.	५/४७	सिंह	सं. सूर्य मिथुन में ७/५९,
						व.	२७/५०		
१६	७	गु.	१४/१७	पू. फा.	१६/५१	सि.	२५/३३	कं. २२/३५	भ. १४/५७ से २५/२४ तक,
१७	८	शु.	१२/३१	उ. फा.	१५/४८	व्य.	२२/५५	कन्या	
१८	९	श.	१०/२२	ह.	१४/२२	व.	१९/५८	तु. २५/२९	
१९	१०	र.	७/५१	चि.	१२/३६	प.	१६/४६	तुला	भ. १८/२७ से २९/४ तक,
	११		२९/४						
२०	१२	चं.	२६/५	स्वा.	१०/३४	शि.	१३/२१	वृ. २६/५५	मंगल कृत्ति. में २०/४२,
२१	१३	मं.	२३/०	वि.	८/२२	सि.	९/४८	वृश्चिक	सायन कर्क में सूर्य २०/१७
२२	१४	बु.	१९/५७	अनु.	६/६	सा.	६/१२	ध. २७/५४	भ. १९/५७ बाद, सूर्य आर्द्रा में ७/३७,
				ज्ये.	२७/५४	शु.	२६/३९		
२३	१५	गु.	१७/४	मू.	२५/५६	शु.	२३/२०	धनु	भ. ६/३० तक, शनि वक्री ८/१६,
आषाढ़ कृष्ण पक्ष (सं. २०५१ वि.)									
२४	१	शु.	१४/२९	पू. षा.	२४/२०	ब्र.	२०/१६	धनु	शुक्र आश्ले. में ११/३०
२५	२	श.	१२/२१	उ. षा.	२३/१५	ऐं.	१७/३७	म. ६/४	भ. २३/३५ बाद, मंगल वृष में ११/२८,
२६	३	र.	१०/४९	श्र.	२२/४८	वै.	१५/२८	मकर	भ. १०/४९ तक,
२७	४	चं.	९/५९	ध.	२३/६	वि.	१३/५३	कु. १०/५७	पंचक प्रा. १०/५७,
२८	५	मं.	९/५५	श.	२४/१०	प्री.	१२/५६	कुंभ	
२९	६	बु.	१०/३८	पू. भा.	२५/५८	आ.	१२/३६	मी. १९/३२	भ. १०/३८ से २३/२१ तक,
३०	७	गु.	१२/४	उ. भा.	२८/२४	सौ.	१२/४९	मीन	

(A) शनि शत. ४ में १७/४६, (B) में २२/१८, शुक्र मिथुन में १५/३२, (C) राहु विशा. ३ तुला में केतु कृत्ति. १ मेष में २३/५, (D) शुक्र आर्द्रा में १५/५४, सा. मिथुन में सूर्य १२/१८, (E) शुक्र पुष्य में ६/१३,

भा. स्टै. टा. में तिथि, नक्षत्र योग, चन्द्रराशि प्रवेश काल, ग्रहराशि-नक्षत्रचार आदि (सन् १९९४ ई.)

जुला. '९४ ई.	ति.	वा.	समाप्ति-काल घं. मि.	नक्ष.	समाप्ति-काल घं. मि.	योग	समाप्ति-काल घं. मि.	चन्द्र राशि प्रवेश घं. मि.	भद्रा, ग्रह राशि-नक्षत्र प्रवेश आदि
				आषाढ कृष्ण पक्ष (सं. २०५१ वि.)					
१	८	शु.	१४/६	रे.	- -	शो.	१३/३०	मीन	वक्री बुध मृग ४ में २०/३२,
२	९	श.	१६/३१	रे.	७/१७	अ.	१४/२८	मे. ७/१७	पंचक स. ७/१७, गुरु मार्गी ९/२२,
३	१०	र.	१९/५	अ.	१०/२४	सु.	१५/३४	मेष	भ. ५/४८ से. १९/५ तक,
४	११	चं.	२१/३२	भ.	१३/२९	धृ.	१६/३६	वृ. २०/१२	बुध पूर्व में उदित २७/१०,
५	१२	मं.	२३/४१	कृ.	१६/१९	शू.	१७/२६	वृष	शुक्र मघा सिंह में २५/१,
६	१३	बु.	२५/२३	रो.	१८/४५	गं.	१७/५६	वृष	भ २५/२३ बाद, सूर्य पुन. में ७/१४ (A)
७	१४	गु.	२६/३२	मृ.	२०/४१	वृ.	१८/३	मि. ७/४३	भ. १३/५८ तक,
८	३०	शु.	२७/८	आ.	२२/५	ध्रु.	१७/४३	मिथुन	
				आषाढ़ शुक्ल पक्ष (सं. २०५१ वि.)					
९	१	श.	२७/१२	पुन.	२२/५७	व्या.	१६/५७	क. १६/४४	मंगल रोहिणी में १२/२१,
१०	२	र.	२६/४८	पु.	२३/१९	ह.	१५/४८	कर्क	
११	३	चं.	२५/५८	आश्ले.	२३/१७	व.	१४/१७	सिं. २३/१७	बुध आर्द्रा में २३/२७
१२	४	मं.	२४/४८	म.	२२/५४	सि.	१२/२७	सिंह	भ. १३/२३ से २४/४८ तक,
१३	५	बु.	२३/२०	पू. फा.	२२/१३	व्य.	१०/२३	क. २७/५९	
१४	६	गु.	२१/३८	उ. फा.	२१/१८	व.	८/५	कन्या	
१५	७	शु.	१९/४४	ह.	२०/११	प.	५/३६	कन्या	भ. १९/४४ बाद
						शि.	२६/५८		
१६	८	श.	१७/३९	चि.	१८/५२	सि.	२४/११	तु. ७/३१	भ. ६/४२ तक, सं. सूर्य कर्क में १८/५१
१७	९	र.	१५/२४	स्वा.	१७/२५	सा.	२१/१७	तुला	शुक्र पू. फा. में १९/४४,
१८	१०	चं.	१३/३	वि.	१५/५१	शु.	१८/१८	वृ. १०/१५	भ. २३/५० बाद
१९	११	मं.	१०/३७	अनु.	१४/१३	शु.	१५/१६	वृश्चिक	भ. १०/३७ तक,
२०	१२	बु.	८/११	ज्ये.	१२/३५	ब्र.	१२/१४	ध. १२/३५	सूर्य पुष्य में ६/४२, राहु (B)
२१	१३	गु.	५/४९	मू.	११/३	ऐ.	९/१७	धनु	भ. २७/३९ बाद
	१४		२७/३९						
२२	१५	शु.	२५/४६	पू. षा.	९/४४	वै.	६/३०	म. १५/२७	भ. १४/४३ तक,
						वि.	२७/५८		
				श्रावण कृष्ण पक्ष (सं. २०५१ वि.)					
२३	१	श.	२४/२०	उ. षा.	८/४५	प्री.	२५/४९	मकर	सायन सिंह में सूर्य ७/१२,
२४	२	र.	२३/२७	श्र.	८/१४	आ.	२४/६	कु. २०/१५	पंचक प्रा. २०/१५
२५	३	चं.	२३/१२	ध.	८/१७	सौ.	२२/५५	कुंभ	भ. ११/२० से २३/१२ तक, बु. पुन. में १०/२९
२६	४	मं.	२३/४०	श.	९/१	शो.	२२/१७	मी. २८/६	
२७	५	बु.	२४/५१	पू. भा.	१०/२७	अ.	२२/१२	मीन	
२८	६	गु.	२६/३९	उ. भा.	१२/३३	सु.	२२/३८	मीन	[illegible]
२९	७	शु.	२८/५६	रे.	१५/११	धृ.	२३/२६	मे. १५/११	भ. १५/४८ तक, पंचक स. १५/११, शुक्र (C)
३०	८	श.	- -	अ.	१८/११	शू.	२४/२८	मेष	
३१	८	र.	७/२७	भ.	२१/१७	गं.	२५/३१	वृ. २८/१	बुध कर्क में ६/४९, वक्री यूरेनस (D)

अग. '९४ ई.	ति.	वा.	समाप्ति-काल घं. मि.	नक्ष.	समाप्ति-काल घं. मि.	योग	समाप्ति-काल घं. मि.	चन्द्र राशि प्रवेश घं. मि.	भद्रा, ग्रह राशि-नक्षत्र प्रवेश आदि
				श्रावण कृष्ण पक्ष (सं. २०५१ वि.)					
१	९	चं.	९/५७	कृ.	२४/१४	वृ.	२६/२६	वृष	भ. २३/४ बाद, बुध पुष्य में २४/३८ (A)
२	१०	मं.	१२/१०	रो.	२६/४७	ध्रु.	२७/१	वृष	भ. १२/१० तक, सूर्य आश्ले. में २९/३९,
३	११	बु.	१३/५३	मृ.	२८/४४	व्या.	२७/८	मि. १५/४५	
४	१२	गु.	१४/५८	आ.	- -	ह.	२६/४५	मिथुन	
५	१३	शु.	१५/२२	आ.	६/७	व.	२५/५०	क. २४/३८	भ. १५/२२ से २७/१५ तक, प्लूटो मार्गी ६/४७,
६	१४	श.	१५/७	पुन.	६/४८	सि.	२४/२४	कर्क	
७	३०	र.	१४/१६	पु.	६/५२	व्य.	२२/३१	कर्क	मंगल मिथुन में १५/१५,
				श्रावण शुक्ल पक्ष (सं. २०५१ वि.)					
८	१	चं.	१२/५६	आश्ले.	६/२४	व.	२०/१४	सिं. ६/२४	बुध आश्ले. में १४/१५,
				मघा	२९/३३				
९	२	मं.	११/१३	पू. फा.	२८/२२	प.	१७/४५	सिंह	
१०	३	बु.	९/१४	उ. फा.	२८/४	शि.	१५/३	क. १०/२०	भ. २०/१० बाद,
११	४	गु.	७/६	ह.	२५/३९	सि.	१२/१४	कन्या	भ. ७/६ तक, गुरु स्वाती ३ में २२/५४ (B)
	५		२८/५४						
१२	६	शु.	२६/४२	चि.	२४/१४	सा.	९/२३	तु. १२/५६	
१३	७	श.	२४/३२	स्वा.	२२/५०	शु.	६/३२	तुला	भ. २४/३२ बाद,
						शु.	२७/४३		
१४	८	र.	२२/२६	वि.	२१/३०	ब्र.	२४/५७	वृ. १५/५०	भ. ११/२९ तक, बुध मघा सिंह में २६/३४,
१५	९	चं.	२०/२५	अनु.	२०/१६	ऐं.	२२/१६	वृश्चिक	
१६	१०	मं.	१८/३०	ज्ये.	१९/८	वै.	१९/४०	ध. १९/८	भ. २९/३८ बाद, सूर्य मघा सिंह में २७/१४,
१७	११	बु.	१६/४५	मू.	१८/८	वि.	१७/११	धनु	भ. १६/४५ तक, मंगल आर्द्रा में १७/२०,
१८	१२	गु.	१५/१०	पू. षा.	१७/२०	प्री.	१४/५१	म. २३/१२	
१९	१३	शु.	१३/५१	उ. षा.	१६/४७	आ.	१२/४४	मकर	
२०	१४	श.	१२/५१	श्र.	१६/३५	सौ.	१०/५२	कुं. २८/४२	भ. १२/५१ से २४/३५ तक, (C)
२१	१५	र.	१२/१८	ध.	१६/४९	शो.	९/२१	कुंभ	बुध पू. फा. में २४/२०,
				भाद्रपद कृष्ण पक्ष (सं. २०५१ वि.)					
२२	१	चं.	१२/१५	श.	१७/३४	अ.	८/१३	कुंभ	
२३	२	मं.	१२/४७	पू. भा.	१८/५४	सु.	७/३३	मी. १२/३४	भ. २५/२२ बाद, कन्या में सूर्य १४/१४,
२४	३	बु.	१३/५६	उ. भा.	२०/४९	धृ.	७/२१	मीन	भ. १३/५६ तक, शुक्र चित्रा में १७/५०,
२५	४	गु.	१५/४०	रे.	२३/१६	शू.	७/३६	मे. २३/१६	पंचक स. २३/१६,
२६	५	शु.	१७/५२	अ.	२६/९	गं.	८/१५	मेष	
२७	६	श.	२०/२३	भ.	२९/१५	वृ.	९/१२	मेष	भ. २०/२३ बाद,
२८	७	र.	[illegible]	कृ.	[illegible]	[illegible]	१०/१६	वृ. १२/१	भ. ९/४१ तक,
२९	८	चं.	२५/२०	कृ.	८/२०	व्या.	११/१७	वृष	बुध उ. फा. में १३/१६,
३०	९	मं.	२७/१६	रो.	११/८	ह.	१२/३	मि. २४/१७	सूर्य पू. फा. में २३/१६,
३१	१०	बु.	२८/३४	मृ.	१३/२५	व.	१२/२४	मिथुन	भ. १५/५० से २८/३४ तक (D)

(A) शुक्र कन्या में २४/०, (B) शुक्रहस्त में १०/५७, (C) पंचक प्रा. २८/४२, (D) शुक्र तुला में २०/३०

भा. स्टै. टा. में तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्रराशि प्रवेश काल, ग्रहराशि-नक्षत्रचार आदि (सन् १९९४ ई.)

सितं. '९४ ई.	ति.	वा.	समाप्ति-काल घं. मि.	नक्ष.	समाप्ति-काल घं. मि.	योग	समाप्ति-काल घं. मि.	चन्द्र राशि प्रवेश घं. मि.	भद्रा, ग्रह राशि-नक्षत्र प्रवेश आदि
भाद्रपद कृष्ण पक्ष (सं. २०५१ वि.)									
१	११	गु.	२९/५	आ.	१५/२	सि.	१२/१३	मिथुन	
२	१२	शु.	२८/५०	पुन.	१५/५३	व्य.	११/२६	क. ९/४०	बुध कन्या में १३/२१,
३	१३	श.	२७/५१	पु.	१५/५९	व.	१०/२	कर्क	भ. २७/५१ बाद, अगस्त्य उदित,
४	१४	र.	२६/१२	आश्ले.	१५/२३	प.	८/३	सिं. १५/२३	भ. १५/२ तक, गुरु स्वाती ४ में ९/२४,
						शि.	२९/३४		
५	३०	चं.	२४/४	म.	१४/१३	सि.	२६/४१	सिंह	
भाद्रपद शुक्ल पक्ष (सं. २०५१ वि.)									
६	१	मं.	२१/३३	पू. फा.	१२/३७	सा.	२३/३१	क. १८/९	बुध हस्त में २१/३२,
७	२	बु.	१८/४९	उ. फा.	१०/४४	शु.	२०/१०	कन्या	मंगल पुन. में १४/५५
८	३	गु.	१६/०	ह.	८/४३	शु.	१६/४६	तु. १९/४३	भ. २६/३७ बाद, शुक्र स्वा. में ११/४२
९	४	शु.	१३/१३	चि.	६/४२	ब्र.	१३/२४	तुला	भ. १३/१३ तक,
				स्वा.	२८/४८				
१०	५	श.	१०/३६	वि.	२७/६	ऐं.	१०/९	वृ. २१/३१	
११	६	र.	८/११	अनु.	२५/३९	वै.	७/४	वृश्चिक	भ. ३०/२ बाद,
	७		३०/२			वि.	२८/१३		
१२	८	चं.	२८/११	ज्ये.	२४/३१	प्री.	२५/३७	ध. २४/३१	भ. १७/७ तक,
१३	९	मं.	२६/४२	मू.	२३/४१	आ.	२३/१६	धनु	सूर्य उ. फा. में १७/२,
१४	१०	बु.	२५/३१	पू. षा.	२३/११	सौ.	२१/११	म. २९/९	
१५	११	गु.	२४/४२	उ. षा.	२३/३	शो.	१९/२३	मकर	भ. १३/६ बाद, २४/४२ तक,
१६	१२	शु.	२४/१६	श्र.	२३/१६	अ.	१७/५३	मकर	सं. सूर्य कन्या में २७/८, बुध चित्रा में ८/२,
१७	१३	श.	२४/१४	ध.	२३/५४	सु.	१६/४२	कुं. ११/३३	पंचक प्रा. ११/३३,
१८	१४	र.	२४/३८	श.	२४/५७	धृ.	१५/५१	कुंभ	भ. २४/३८ बाद
१९	१५	चं.	२५/३१	पू. भा.	२६/२७	शू.	१५/२१	मी. १९/५७	भ. १३/५ तक
आश्विन कृष्ण पक्ष (सं. २०५१ वि.)									
								मीन	
२०	१	मं.	२६/५४	उ. भा.	२८/२६	गं.	१५/१४	मीन	मंगल कर्क में २७/१४, बुध (A)
२१	२	बु.	२८/४५	रे.	- -	वृ.	१५/२९	मीन	भ. १७/५३ बाद, पंचक स. ६/५२,
२२	३	गु.	- -	रे.	६/५२	ध्रु.	१६/५	मे. ६/५२	भ. ७/० तक, सायन तुला में सूर्य ११/५०
२३	३	शु.	७/०	अ	९/४१	व्या.	१६/५७	मेष	गुरु विशा. १ में १२/३४,
२४	४	श.	९/३३	भ.	१२/४६	ह.	१८/०	वृ. १९/३३	
२५	५	र.	१२/१३	कृ.	१५/५६	व.	१९/४	वृष	भ. १४/४८ से २७/५९ तक,
२६	६	चं.	१४/४८	रो.	१८/५८	सि.	२०/१	वृष	सूर्य हस्त में ८/२५, बुध स्वा. (B)
२७	७	मं.	१७/०	मृ.	२१/३७	व्य.	२०/४०	मि. ८/१८	वक्री शनि शत. २ में ६/५२,
२८	८	बु.	१८/३९	आ.	२३/४३	व.	२०/५२	मिथुन	मंगल पुष्य में २०/१९,
२९	९	गु.	१९/३४	पुन.	३५/५	प.	२०/३०	क. १८/४४	भ. ७/३७ से १९/४० तक,
३०	१०	शु.	१९/४०	पु.	२५/३८	शि.	१९/२९	कर्क	

अक्तू. '९४ ई.	ति.	वा.	समाप्ति-काल घं. मि.	नक्ष.	समाप्ति-काल घं. मि.	योग	समाप्ति-काल घं. मि.	चन्द्र राशि प्रवेश घं. मि.	भद्रा, ग्रह राशि-नक्षत्र प्रवेश आदि
आश्विन कृष्ण पक्ष (सं. २०५१ वि.)									
१	११	श.	१८/५६	आश्ले	२५/२३	सि.	१७/४९	सि. २५/२३	
२	१२	र.	१७/२६	म.	२४/२३	सा.	१५/३१	सिंह	यूरेनस मार्गी ७/२८, नेपच्यून मार्गी २३/२१,
३	१३	चं.	१५/१५	पू. फा.	२२/४५	शु.	१२/४०	क. २८/१४	भ. १५/१५ से २५/५२ तक,
४	१४	मं.	१२/३२	उ. फा.	२०/३८	शु.	९/२३	कन्या	
						ब्र.	२९/४३		
५	३०	बु.	९/२६	ह.	१८/१२	ऐं.	२५/५३	तु. २८/५४	
	१		३०/७						
आश्विन शुक्ल पक्ष (सं. २०५१ वि.)									
६	२	गु.	२६/४३	चि.	१५/३७	वै.	२१/५७	तुला	
७	३	शु.	२३/२६	स्वा.	१३/२	वि.	१८/४	वृ. २९/१३	
८	४	श.	२०/२१	वि.	१०/३७	प्री.	१४/२०	वृश्चिक	भ. ९/५४ से, २१/२१ तक
९	५	र.	१७/३७	अनु.	८/२९	आ.	१०/५१	वृश्चिक	बुध वक्री १२/२,
१०	६	चं.	१५/१९	ज्ये.	६/४४	सौ.	७/४३	ध. ६/४४	सूर्य चित्रा में २१/३९,
				मू.	२९/२८	शो.	२८/५७		
११	७	मं.	१३/३०	पू. षा.	२८/४२	अ.	२६/३७	धनु	भ. १३/३० से २४/५२ तक, गुरु (C)
१२	८	बु.	१२/१४	उ. षा.	२८/३०	सु.	२४/४३	म. १०/३९	
१३	९	गु.	११/३२	श्र.	२८/५०	धृ.	२३/१५	मकर	शुक्र वक्री ११/१०
१४	१०	शु.	११/२२	ध.	२९/४१	शू.	२२/१३	कुं. १७/१५	भ. २३/३३ बाद, पंचक प्रा. १७/१५,
१५	११	श.	११/४४	श.	- -	गं.	२१/३५	कुंभ	भ. ११/४४ तक,
१६	१२	र.	१२/३६	श.	७/२	वृ.	२१/१९	मी २६/२३	
१७	१३	चं.	१३/५६	पू. भा.	८/५०	ध्रु.	२१/२४	मीन	सं. सूर्य तुला में १५/३,
१८	१४	मं.	१५/४१	उ. भा.	११/३	व्या.	२१/४७	मीन	भ. १५/४१ बाद, २८/४५ तक, वक्री (D)
१९	१५	बु.	१७/४९	रे.	१३/३७	ह.	२२/२५	मे. १३/३७	पंचक स. १३/३७,
कार्तिक कृष्ण पक्ष (सं. २०५१ वि.)									
								मेष	
२०	१	गु.	२०/१३	अ.	१६/२९	व.	२३/१७	वृ. २६/२१	
२१	२	शु.	२२/५१	भ.	१९/३३	सि.	२४/१६	वृष	भ. १२/१२ से २५/३२ तक
२२	३	श.	२५/३२	कृ.	२२/४२	व्य.	२५/१९	वृष	सा. वृश्चि. में सूर्य २१/७, मंगल, (E)
२३	४	र.	२८/१०	रो.	२५/४९	व.	२६/१९	मि. १५/९	सूर्य स्वाती में ८/३, वक्री बुध कन्या में १७/४८,
२४	५	चं.	३०/३३	मृ.	२८/४२	प.	२७/८	मिथुन	
२५	६	मं.	- -	आ.	- -	शि.	२७/८		
२६	६	बु.	८/५१	आ.	७/११	सि.	२७/४३	क. २६/३५	भ. ८/२९ से २१/१० तक, (F)
२७	७	गु.	९/५१	पुन.	९/६	सा.	२७/१५	कर्क	व. शुक्र स्वाती ४ में २९/४,
२८	८	शु.	१०/२८	पु.	१०/१९	शु.	२६/११	कर्क	
२९	९	श.	१०/१८	आश्ले.	१०/४६	शु.	२४/२८	सि. १०/४६	भ. २१/४ बाद, प्लूटो अनु १ में २७/४९,
३०	१०	र.	९/१८	म.	१०/२५	ब्र.	२२/८	सिंह	भ. ९/१८ तक, बुध मार्गी ९/४,
३१	११	चं.	७/३३	पू. फा.	९/१९	ऐं.	१९/१३	क. १४/५३	
	१२		२९/७						

(A) तुला में १७/१९, राहु विशा. १ में, केतु भरणी ३ में १७/५३, (B) में २६/४, शुक्र विशा. में २०/५५, (E) आश्ले में ३०/३१, (F) गुरु विशाखा ३ में ३०/३५,
(C) विशा. २ में ११/६, (D) बुध चित्रा में २६/४१,

भा. स्टैं. टा. में तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्रराशि प्रवेश काल, ग्रहराशि-नक्षत्रचार आदि (सन् १९९४ ई.)

नवं. '९४ ई.

कार्तिक कृष्ण पक्ष (सं. २०५१ वि.)

नवं. '९४ ई.	ति.	वा.	समाप्ति-काल घं. मि.	नक्ष.	समाप्ति-काल घं. मि.	योग	समाप्ति-काल घं. मि.	चन्द्र राशि प्रवेश घं. मि.	भद्रा, ग्रह राशि-नक्षत्र प्रवेश आदि
१	१३	मं.	२६/८	उ. फा.	७/३३	वै.	१५/४८	कन्या	भ. २६/८ बाद
				ह.	२९/१५				
२	१४	बु.	२२/४४	चि.	२६/३४	वि.	१२/०	तु. १५/५४	भ. १२/२६ तक,
३	३०	गु.	१९/६	स्वा.	२३/४१	प्री.	७/५४	तुला	
						आ.	२७/४१		

कार्तिक शुक्ल पक्ष (सं. २०५१ वि.)

नवं. '९४ ई.	ति.	वा.	समाप्ति-काल घं. मि.	नक्ष.	समाप्ति-काल घं. मि.	योग	समाप्ति-काल घं. मि.	चन्द्र राशि प्रवेश घं. मि.	भद्रा, ग्रह राशि-नक्षत्र प्रवेश आदि
४	१	शु.	१५/२३	वि.	२०/४४	सौ.	२३/२७	वृ. १५/२८	गुरु अस्त १४/५३,
५	२	श.	११/४६	अनु.	१७/५५	शो.	१९/२०	वृश्चिक	बुध तुला में २०/२३,
६	३	र.	८/२३	ज्ये.	१५/२४	अ.	१५/२८	ध. १५/२४	भ. १८/५४ से २९/२४ तक, (A)
	४		२९/२४						
७	५	चं.	२६/५६	मू.	१३/२०	सु.	११/५८	धनु	शुक्र पूर्व में उदित २०/४८
८	६	मं.	२५/७	पू. षा.	११/४९	धृ.	८/५६	म. १७/३६	
						शू.	३०/२५		
९	७	बु.	२४/१	उ. षा.	१०/५९	गं.	२८/२९	मकर	भ. २४/१ बाद, शनि मार्गी १४/४३,
१०	८	गु.	२३/३९	श्रव.	१०/५१	वृ.	२७/८	कुं. २३/९	भ. ११/५० तक, पंचक प्रा. २३/९ (B)
११	९	शु.	२४/१	ध.	११/२७	ध्रुव.	२६/२०	कुंभ	गुरु विशा. ४ वृश्चिक में १२/१६,
१२	१०	श.	२५/४	शत.	१२/४३	व्या.	२६/३	कुंभ	
१३	११	र.	२६/४१	पू. भा.	१४/३६	ह.	२६/१२	मी. ८/८	भ. १३/५२ से २६/४१ तक,
१४	१२	चं.	२८/४५	उ. भा.	१६/५८	व.	२६/४१	मीन	
१५	१३	मं.	--	रे.	१९/४३	सि.	२७/२५	मे. १९/४३	पंचक स. १९/४३,
१६	१३	बु.	७/१०	अ.	२२/४२	व्य.	२८/२०	मेष	सं. सूर्य वृश्चिक में १४/४९,
१७	१४	गु.	९/४६	भ.	२५/४८	व.	२९/१९	मेष	भ. ९/४६ बाद २३/७ तक,
१८	१५	शु.	१२/२८	कृ.	२८/५५	प.	३०/१८	वृ. ८/३५	

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष (सं. २०५१ वि.)

नवं. '९४ ई.	ति.	वा.	समाप्ति-काल घं. मि.	नक्ष.	समाप्ति-काल घं. मि.	योग	समाप्ति-काल घं. मि.	चन्द्र राशि प्रवेश घं. मि.	भद्रा, ग्रह राशि-नक्षत्र प्रवेश आदि
१९	१	श.	१५/८	रो.	--	शि.	--	वृष	सूर्य अनु. में २२/१०, बुध विशा. में २२/३१
२०	२	र.	१७/४०	रो.	७/५७	शि.	७/१२	मि. २१/२३	भ. २९/४८ बाद
२१	३	चं.	१९/५७	मृग.	१०/४८	सि.	७/५८	मिथुन	भ. १९/५७ तक,
२२	४	मं.	२१/५४	आ.	१३/२१	सा.	८/३०	मिथुन	सायन धनु में सूर्य १८/३७ (C)
२३	५	बु.	२३/२५	पुन.	१५/३०	शु.	८/४५	क. ८/५८	शुक्र मार्गी २२/२७, राहु स्वाती (D)
२४	६	गु.	२४/२२	पु.	१७/९	शु.	८/३७	कर्क	भ. २४/२२ बाद
२५	७	शु.	२४/४०	आश्ले.	१८/१३	ब्र.	८/३	सि. १८/१३	भ. १२/३१ तक,
						ऐं.	३०/५८		
२६	८	श.	२४/१८	म.	१८/३८	वै.	२९/२०	सिंह	बुध वृश्चिक में ११/१५, गुरु अनु १ में १३/४९,
२७	९	र.	२३/१३	पू. फा.	१८/२१	वि.	२७/९	क. २४/७	
२८	१०	चं.	२१/२६	उ. फा.	१७/२३	प्री.	२४/२५	कन्या	भ. १०/२० से २१/२६ तक (E)
२९	११	मं.	१९/०२	ह.	१५/४६	आ.	२१/११	तु. २६/४२	यूरेनस पू. षा. २ में २३!२१, गुरु उदित ११/६,
३०	१२	बु.	१६/५	चित्रा	१३/३७	सौ.	१७/३२	तुला	

(A) सूर्य विशा. में १६/६, (B) बुध स्वाती में २६/२२, (C) मंगल मघा सिंह में १९/२२, (D) ४ में केतु भर. २ में २५/२६, (E) बुध अनु में २४/२४, (F) बुध मूल धनु में १३/३५.

दिसं. '९४ ई.

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष (सं. २०५१ विक्रमी)

दिसं. '९४ ई.	ति.	वा.	समाप्ति-काल घं. मि.	नक्ष.	समाप्ति-काल घं. मि.	योग	समाप्ति-काल घं. मि.	चन्द्र राशि प्रवेश घं. मि.	भद्रा ग्रह राशि-नक्षत्र प्रवेश आदि
१	१३	गु.	१२/४५	स्वा.	११/३	शो.	१३/३३	वृ. २६/५३	भ. १२/४५ से २२/५७ तक,
२	१४	शु.	९/८	वि.	८/१२	अ.	९/२१	वृश्चिक	सूर्य ज्येष्ठा में २६/२६
	३०		२९/२५	अनु.	२९/१३	सु.	२९/५		

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष (सं. २०५१ वि.)

दिसं. '९४ ई.	ति.	वा.	समाप्ति-काल घं. मि.	नक्ष.	समाप्ति-काल घं. मि.	योग	समाप्ति-काल घं. मि.	चन्द्र राशि प्रवेश घं. मि.	भद्रा ग्रह राशि-नक्षत्र प्रवेश आदि
३	१	श.	२५/४६	ज्ये.	२६/२०	धृ.	२४/५१	ध. २६/२०	
४	२	र.	२२/२२	मू.	२३/४१	शू.	२०/४९	धनु	
५	३	चं.	१९/२५	पू. षा.	२१/२७	ग.	१७/६	म. २७/३	भ. ३०/११ बाद
६	४	मं.	१६/५६	उ. षा.	१९/४९	वृ.	१३/५१	मकर	भ. १६/५६ तक, बुध ज्येष्ठा में २५/५३,
७	५	बु.	१५/१५	श्र.	१८/५३	ध्रु.	११/९	कुं. ३०/४९	पंचक प्रा. ३०/४९,
८	६	गु.	१४/२१	ध.	१८/४६	व्या.	९/६	कुंभ	
९	७	शु.	१४/१९	श.	१९/२९	ह.	७/४१	कुंभ	भ. १४/१९ से २६/४३ तक,
						व.	३०/५७		
१०	८	श.	१५/७	पू. भा.	२०/५९	सि.	३०/४८	मी. १४/३६	
११	९	र.	१६/४१	उ. भा.	२३/११	व्य.	३१/९	मीन	गुरु अनु. २ में १८/५७,
१२	१०	चं.	१८/५०	रेव.	२५/५४	व.	--	मे. २५/५४	पंचक स. २५/५४,
१३	११	मं.	२१/२२	अ.	२८/५६	व.	७/५२	मेष	भ. ८/६ से २१/२२ तक,
१४	१२	बु.	२४/७	भ.	--	प.	८/४८	मेष	
१५	१३	गु.	२६/४९	भ.	८/६	शि.	९/४९	वृ. १४/५४	सूर्य मूल धनु में २९/२५ (F)
१६	१४	शु.	२९/२८	कृ.	११/१४	सि.	१०/४७	वृष	भ. २९/१८ बाद
१७	१५	श.	--	रो.	१४/१०	सा.	११/३७	मि. २७/३२	भ. १८/३८ तक,
१८	१५	र.	७/४८	मृ.	१६/५१	शु.	१२/१४	मिथुन	

पौष कृष्ण पक्ष (सं. २०५१ वि.)

दिसं. '९४ ई.	ति.	वा.	समाप्ति-काल घं. मि.	नक्ष.	समाप्ति-काल घं. मि.	योग	समाप्ति-काल घं. मि.	चन्द्र राशि प्रवेश घं. मि.	भद्रा ग्रह राशि-नक्षत्र प्रवेश आदि
१९	१	चं.	९/४९	आ.	१९/१२	शु.	१२/३७	मिथुन	शुक्र विशा. में २९/१७,
२०	२	मं.	११/२७	पुन.	२१/११	ब्र.	१२/४३	क. १४/४१	भ. २४/४ बाद, शनि शत. ३ में १८/१५,
२१	३	बु.	१२/४२	पु.	२२/४७	ऐं.	१२/३१	कर्क	भ. १२/४२ तक,
२२	४	गु.	१३/३१	आश्ले.	२३/५८	वै.	११/५९	सि. २३/५८	सायन मकर में सूर्य ७/५३,
२३	५	शु.	१३/५२	म.	२४/४२	वि.	११/७	सिंह	बुध पू. षा. में २३/१९,
२४	६	श.	१३/४६	पू. फा.	२४/५७	प्री.	९/५२	क. ३०/५३	भ १३/४६ से २५/२७ तक,
२५	७	र.	१३/८	उ. फा.	२४/४१	आ.	८/१४	कन्या	
						सौ.	३०/११		
२६	८	चं.	११/५७	ह.	२३/५३	शो.	२७/४२	कन्या	
२७	९	मं.	१०/१६	चि.	२२/३५	अ.	२४/४९	तु. ११/१४	भ. २१/१० बाद, गुरु अनु. ३ में १४/७,
२८	१०	बु.	८/४	स्वा.	२०/४८	सु.	२१/३२	तुला	भ. ८/४ तक,
	११		२९/२४						
२९	१२	गु.	२६/२२	वि.	१८/३७	धृ.	१७/५६	वृ. १३/१०	सूर्य पू. षा. में ७/४०
३०	१३	शु.	२३/६	अनु.	१९/६	शू.	१४/६	वृश्चिक	भ २३/६ बाद, शुक्र वृश्चिक में २७/४३,
३१	१४	श.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०/७	वृश्चिक	
						वृ.	३०/८		

भा. स्टै. टा. में तिथि, नक्षत्र योग, चन्द्रराशि प्रवेश काल, ग्रहराशि नक्षत्रचार आदि (सन् १९९४ ई.)

जन. '९५ ई.	ति.	वा.	समाप्ति-काल घं. मि.	नक्ष.	समाप्ति-काल घं. मि.	योग	समाप्ति-काल घं. मि.	चन्द्र राशि प्रवेश घं. मि.	भद्रा ग्रह राशि-नक्षत्र प्रवेश आदि
पौष कृष्ण पक्ष (संवत् २०५१ वि.)									
१	३०	र.	१६/२६	मू.	१०/५६	ध्रु.	२६/१६	धनु	
पौष शुक्ल पक्ष (संवत् २०५१ वि.)									
२	१	चं.	१३/२२	पू. षा.	८/३१	व्या.	२२/४०	म. १४/०	बुध मकर में ३१/१८,
				उ. षा.	३०/२८				
३	२	मं.	१०/४३	श्रव.	२८/५८	ह.	१९/२८	मकर	मंगल वक्री २६/४८,
४	३	बु.	८/३८	धनि.	२८/९	व.	१६/४६	कुं. १६/३४	भ. १९/५८ से ३१/१७ तक, पंचक (A)
	४		३१/१७						
५	५	गु.	३०/४८	श.	२८/९	सि.	१४/४१	कुंभ	बुध पश्चिम में उदित १६/२०,
६	६	शु.	३१/८	पू. भा.	२९/०	व्य.	१३/१७	मी. २२/४७	
७	७	श.	- -	उ. भा.	३०/४०	व.	१२/३३	मीन	
८	७	र.	८/२४	रेव.	- -	प.	१२/२६	मीन	भ. ८/२४ से २१/२२ तक,
९	८	चं.	१०/२०	रेव.	९/२	शि.	१२/५१	मे. ९/२	पंचक स. ९/२, बुध श्रवण में १३/१३,
१०	९	मं.	१२/४८	अश्वि.	११/५४	सि.	१३/३९	मेष	
११	१०	बु.	१५/३२	भ.	१५/२	सा.	१४/३८	वृ २१/५०	भ. २८/५५ बाद, सूर्य उ. षा. में ९/३४,
१२	११	गु.	१८/१७	कृ.	१८/१२	शु.	१५/३८	वृष	भ. १८/१७ तक,
१३	१२	शु.	२०/५०	रो.	२१/९	शु.	१६/२९	वृष	गुरु अनु. ४ में १३/५८,
१४	१३	श.	२३/१	मृग.	२३/४६	ब्र.	१७/६	मि. १०/२७	सूर्य मकर में १६/७,
१५	१४	र.	२४/४४	आ.	२५/५७	ऐ.	१७/२२	मिथुन	भ. २४/४४ बाद,
१६	१५	चं.	२५/५७	पुन.	२७/३९	वै.	१७/१७	क. २१/१४	भ. १३/२१ तक,
माघ कृष्ण पक्ष (संवत् २०५१ वि.)									
१७	१	मं.	२६/४२	पु.	२८/५५	वि.	१६/५०	कर्क	शुक्र ज्येष्ठा में २५/५५
१८	२	बु.	२७/१	आश्ले.	२९/४५	प्री.	१६/२	सि. २९/४५	बुध धनि. में २८/५४
१९	३	गु.	२६/५७	म.	३०/१३	आ.	१४/५५	सिंह	भ. १४/५९ से २६/५७ तक,
२०	४	शु.	२६/३१	पू. फा.	३०/२१	सा.	१३/३१	सिंह	सायन कुंभ में सूर्य १८/३१, सूर्य (B)
२१	५	श.	२५/४६	उ. फा.	३०/१०	शो.	११/५१	क. १२/१८	
२२	६	र.	२४/४१	ह.	२९/४०	अ.	९/५६	कन्या	भ. २४/४१ बाद,
२३	७	चं.	२३/१८	चि.	२८/५१	सु.	७/४७	तु. १७/१६	भ. १२/० तक,
						धृ.	२९/२२		
२४	८	मं.	२१/३५	स्वा.	२७/४४	शू.	२६/४१	तुला	सूर्य श्रवण में ११/५७,
२५	९	बु.	१९/३३	वि.	२६/१८	ग.	२३/४६	वृ. २०/३९	भ. ३०/१९ बाद, सूर्य अभिजित् (C)
२६	१०	गु.	१७/१५	अनु.	२४/३७	वृ.	२०/३८	वृश्चिक	भ. १७/१५ तक , शनि शत. ४ में १७/५७,
२७	११	शु.	१४/४२	ज्ये.	२२/४३	ध्रु.	१७/१९	ध. २२/४३	
२८	१२	श.	१२/१	मू.	२०/४३	व्या.	१३/५३	धनु	बुध पश्चिम में अस्त १०/४०,
२९	१३	र.	९/१८	पू. षा.	१८/४४	ह.	१०/२७	म. २४/१७	भ. ९/१८ से २०/० तक, यूरेनस (E)
	१४		३०/४१			व.	३१/६		
३०	३०	चं.	२८/१९	उ. षा.	१६/५५	सि.	२७/५७	मकर	शुक्र मूल धनु में ११/३४,
माघ शुक्ल पक्ष (संवत् २०५१ वि.)									
३१	१	मं.	२६/२१	श्र.	१५/२५	व्य.	२५/८	कुं. २६/५५	पंचक प्रा. २६/५५

फर. '९५ ई.	ति.	वा.	समाप्ति-काल घं. मि.	नक्ष.	समाप्ति-काल घं. मि.	योग	समाप्ति-काल घं. मि.	चन्द्र राशि प्रवेश घं. मि.	भद्रा, ग्रह राशि-नक्षत्र प्रवेश आदि
माघ शुक्ल पक्ष (संवत् २०५१ वि.)									
१	२	बु.	२४/५८	ध.	१४/२५	व.	२२/४६	कुंभ	वक्री बुध श्रवण ४ में २६/०, (F)
२	३	गु.	२४/१६	श.	१४/२	प.	२०/५६	कुंभ	नेपच्यून उ. षा. २ में २१/२,
३	४	शु.	२४/२२	पू. भा.	१४/२३	शि.	१९/४२	मी. ८/१५	भ. १२/१९ से २४/२२ तक
४	५	श.	२५/१५	उ. भा.	१५/३१	सि.	१९/६	मीन	
५	६	र.	२६/५४	रे.	१७/२४	सा.	१९/४	मे. १७/२४	पंचक स. १७/२४
६	७	चं.	२९/८	अ.	१९/५४	शु.	१९/३३	मेष	भ. २९/८ बाद, सूर्य धनि. में १५/१
७	८	मं.	- -	भ.	२२/५१	शु.	२०/२१	वृ. २९/३८	भ. १८/२७ तक,
८	८	बु.	७/४५	कृ.	२५/५८	ब्र.	२१/२०	वृष	
९	९	गु.	१०/२७	रो.	२९/०	ऐं.	२२/१६	वृष	वक्री मंगल आश्ले, कर्क में २६/३५,
१०	१०	शु.	१२/५९	मृ.	- -	वै.	२३/०	मि. १८/२२	भ. २६/३ बाद, बुध पूर्व में उदित ९/४०
११	११	श.	१५/६	मृ.	७/४४	वि.	२३/२३	मिथुन	भ. १५/६ तक, शुक्र पू. षा. में ९/१४ (G)
१२	१२	र.	१६/४१	आ.	९/५७	प्री.	२३/२०	क. २९/१२	सं. सूर्य कुंभ में २९/६,
१३	१३	चं.	१७/३८	पुन.	११/३३	आ.	२२/४९	कर्क	
१४	१४	मं.	१७/५९	पु.	१२/३९	सौ.	२१/५०	कर्क	भ. १७/५९ से २९/५३ तक,
१५	१५	बु.	१७/४६	आश्ले	१३/९	शो.	२०/२६	सिं १३/९	
फाल्गुन कृष्ण पक्ष (संवत् २०५१ वि.)									
१६	१	गु.	१७/५	म.	१३/१०	अ.	१८/४०	सिंह	बुध मार्गी १०/४६,
१७	२	शु.	१६/१	पू. फा.	१२/४८	सु.	१६/३६	क. १८/३८	भ. २७/२० बाद,
१८	३	श.	१४/३९	उ. फा.	१२/९	धृ.	१४/१८	कन्या	भ. १४/२९ तक,
१९	४	र.	१३/५	ह.	११/१६	शू.	११/५१	तु. २२/४५	सूर्य शत. में १९/३६, सायन मीन (H)
२०	५	चं.	११/२१	चि.	१०/१४	गं.	९/१६	तुला	
						वृ.	३०/३५		
२१	६	मं.	९/३०	स्वा.	९/५	ध्रु.	२७/५०	वृ. २६/६	भ. ९/३० से २०/३२ तक,
२२	७	बु.	७/३४	वि.	७/५१	व्या.	२५/२	वृश्चिक	शुक्र उ. षा. में २३/३५,
	८		२९/३४	अनु.	३०/३२				
२३	९	गु.	२७/३०	ज्ये.	२९/१०	ह.	२२/१०	ध. २९/१०	
२४	१०	शु.	२५/२६	मू.	२७/४८	व.	१९/१८	धनु.	भ. १४/२८ से २५/२६ तक, शनि (I)
२५	११	श.	२३/२३	पू. षा	२६/२८	सि.	१६/२६	धनु.	शुक्र मकर में २०/२०,
२६	१२	र.	२१/२७	उ. षा.	२५/१६	व्य.	१३/३८	म. ८/१०	
२७	१३	चं.	१९/४४	श्रव.	२४/१६	व.	१०/५९	मकर	भ. १९/४४ बाद,
२८	१४	मं.	१८/१८	धनि	२३/३६	प.	८/३२	कुं. ११/५६	भ. ७/१ तक, पंचक प्रा. ११/५६ (J)
						शि.	३०/२४		

(A) प्रा. १६/३४, शुक्र अनु. में १७/४३, (B) अभिजित् में २९/१९, (C) से निवृत्त ८//५७, राहु स्वा. ३ में केतु भर. १ में ११/२२, बुध वक्री ३०/३८, (E) उ. षा. ३ में ९/३४,

(F) गुरु ज्येष्ठा १ में २५/१, (G) प्लूटो अनुराधा में ३०/३२, (H) में सूर्य ८/४१, (I) पू. भा. १ में ८/२२, (J) गुरु ज्येष्ठा २ में ८/४४

भा. स्टैं. टा. में तिथि, नक्षत्र योग आदि

मार्च '९५ ई.	ति.	वा.	समाप्ति-काल घं. मि.	नक्ष.	समाप्ति-काल घं. मि.	योग	समाप्ति-काल घं. मि.	चन्द्र राशि प्रवेश घं. मि.	भद्रा, ग्रह राशि-नक्षत्र प्रवेश आदि
फाल्गुन कृष्ण पक्ष (सं. २०५१ वि.)									
१	३०	बु.	१७/१९	श.	२३/२३	सि.	२८/३८	कुंभ	
फाल्गुन शुक्ल पक्ष (संवत् २०५१ वि.)									
२	१	गु.	१६/५१	पू. भा.	२३/४२	सा.	२७/१९	मी. १७/३७	
३	२	शु.	१७/०	उ. भा.	२४/३९	शु.	२६/३१	मीन	प्लूटो वक्री १०/५४,
४	३	श.	१७/५०	रे.	२६/१४	शु.	२६/१४	मे. २६/१४	भ. ३०/३५ बाद, पंचक स. (A)
५	४	र.	१९/१९	अ.	२८/२६	ब्र.	२६/२६	मेष	भ. १९/१९ तक,
६	५	चं.	२१/२२	भ.	- -	ऐं.	२७/१	मेष	शुक्र श्रवण में ९/८,
७	६	मं.	२३/४९	भ.	७/८	वै.	२७/५४	वृ. १३/५३	
८	७	बु.	२६/२७	कृ.	१०/९	वि.	२८/५२	वृष	भ. २६/२७ बाद,
९	८	गु.	२८/५९	रो.	१३/१४	प्री.	२९/४५	मि. २६/४१	भ. १५/४३ तक,
१०	९	शु.	- -	मृ.	१६/७	आ.	३०/२३	मिथुन	बुध कुंभ में १४/१०,
११	९	श.	७/११	आ.	१८/३६	सौ.	३०/३७	मिथुन	
१२	१०	र.	८/५०	पुन.	२०/३०	शो.	३०/२०	क. १४/३	
१३	११	चं.	९/४९	पु.	२१/४३	अति.	२९/३१	कर्क	
१४	१२	मं.	१०/४	आश्ले.	२२/१५	सु.	२८/८	सिं. २२/१५	सं. सूर्य मीन में २५/५९,
१५	१३	बु.	९/३७	म.	२२/७	धृ.	२६/१५	सिंह	बुध शत. में १०/४८,
१६	१४	गु.	८/३२	पू. फा.	२१/२६	शू.	२३/५५	कं. २७/९	भ. ८/३२ से १९/४३ तक,
१७	१५	शु.	६/५६	उ. फा.	२०/१७	गं.	२१/१४	कन्या	
	१		२८/५६						
चैत्र कृष्ण पक्ष (संवत् २०५१ वि.)									
१८	२	श.	२६/४०	ह.	१८/५०	वृ.	१८/१७	तु. ३०/०	सूर्य उ. भा. में १०/२१,
१९	३	र.	२४/१३	चि.	१७/१०	ध्रु.	१५/११	तुला	भ. १३/२६ से २४/१३ तक,
२०	४	चं.	२१/४४	स्वा.	१५/२५	व्या.	१२/०	तुला	
२१	५	मं.	१९/१६	वि.	१३/४१	ह.	८/४९	वृ. ८/७	सायन मेष में सूर्य ७/४५,
						व	२९/४२		
२२	६	बु.	१६/५४	अनु.	१२/१	सि.	२६/४०	वृश्चिक	भ. १६/५४ से २७/४८ तक (B)
२३	७	गु.	१४/४२	ज्ये.	१०/३१	व्य.	२३/४८	ध. १०/३१	बुध पू. भा. में २८/४, शनि, (C)
२४	८	शु.	१२/४२	मू.	९/१२	व.	२१/६	धनु	मंगल मार्गी २२/५०,
२५	९	श.	१०/५७	पू. षा.	८/७	प.	१८/३७	म. १३/५५	भ. २२/१२ बाद,
२६	१०	र.	९/२८	उ. षा.	७/१९	शि.	१६/२२	मकर	भ. ९/२८ तक,
२७	११	चं.	८/१८	श्र.	६/४९	सि.	१४/२२	कु. १८/४४	पंचक प्रा. १८/४४
२८	१२	मं.	७/२९	धनि.	६/३९	सा.	१२/४०	कुंभ	शुक्र शत. में १९/५४,
२९	१३	बु.	७/५	श.	६/५४	शु.	११/१८	कुंभ	भ. ७/५ से १९/६ तक, (D)
३०	१४	गु.	७/७	पू. भा.	७/३४	शु.	१०/१७	मी. २५/२४	
३१	३०	शु.	७/३९	उ. भा.	८/४४	ब्र.	९/३९	मीन	सूर्य रेवती में २१/१०, बुध उ. भा. में २३/२,

(A) २६/१४, सूर्य पू. भा. में २५/५१, बुध धनि. में २८/४, (B) वक्री प्लूटो अनु. १ में २३/४८, शनि उदित, शुक्र कुंभ में ३०/१, (C) पू. भा. २ में २५/५२ (D) बुध मीन में २६/२ राहु स्वाती २ में केतु अश्वि. ४ में १४/१२.

भा.स्टैं.टा. में दिये गए तिथि-नक्षत्र आदि को समझने के लिए आवश्यक निर्देशन

क्योंकि घड़ी-पलों में दिये गये तिथि-नक्षत्र आदि के काल एक ही स्थान के सूर्योदय से सम्बन्ध रखते हैं अतः वे देश में सर्वत्र ग्राह्य नहीं हो सकते। भारतीय स्टैंडर्ड टाईम में यदि इन्हें दिया जाय तो ये भारत के किसी भी स्थान पर बिना किसी परिवर्तन के स्वीकार किये जा सकते हैं। इसी बात को ध्यान में रखकर हमने भा. स्टैं. टा. में तिथि-नक्षत्रों, योगों का समाप्ति-काल, चन्द्रमा का राशि प्रवेश काल, ग्रहों के नक्षत्र, राशि-प्रवेश आदि का काल एवं भद्रा का प्रारम्भ एवं समाप्ति-काल देना प्रारम्भ किया है। इन्हें समझने के लिए कुछ निर्देशन आवश्यक है. इसे समझ लेना चाहिए—

दिन के १२ बजे के बाद रात के १२ बजे तक के टाईम (घण्टों) को क्रमशः १३ से २४ तक के अङ्कों द्वारा प्रकट किया जाता है। अर्थात् दिन के १ बजे को १३ बजे, २ बजे को १४ बजे इत्यादि ढंग से लिखते हुए रात के १२ बजे को २४ बजे लिखा गया है। किंच रात्रि के १२ बजे (अर्थात् २४ बजे) के बाद सूर्योदय तक के टाईम (घण्टों) को क्रमशः २५, २६, २७, २८, २९, ३० एवं ३१ अङ्कों द्वारा प्रकट किया गया है। अर्थात्—इस नियम के अनुसार रात के १ बजे को २५ बजे, २ बजे को २६ बजे इत्यादि लिखते हुए सूर्योदय से पहले बजने वाले ७ को ३१ बजे लिखा गया है। ध्यान रहे—सूर्योदय के बाद ६, ७ घण्टों को ६, ७ ही लिखा गया है। नीचे दिये गये उदाहरणों को पढ़ने से यह सब बिल्कुल स्पष्ट हो जाएगा :

(१) १० अप्रैल १९८७ शुक्रवार को चैत्र शुक्ल एकादशी के आगे भद्रा ८ घं. १९ मि. या. लिखा है। इसका अर्थ है कि भद्रा इस दिन प्रातः ८ बजकर १९ मिनट तक रहेगी।

(२) ८ अप्रैल १९८७ बुधवार को पुष्य के आगे १४ घं. १८ मि. लिखे हैं जिसका अर्थ है कि इस तारीख को यह नक्षत्र दिन के २ बजकर १८ मिनट तक रहेगा।

(३) २५ जून १९८७ गुरुवार को मृगशिरा नक्षत्र के आगे २७ घं. ३५ मि. लिखा है। इसका अभिप्राय है कि २५ जून की समाप्ति (रात्रि के १२ बजे) के बाद २६ जून की रात के ३ बजकर ३५ मिनट पर मृग. नक्षत्र समाप्त होगा। ध्यान रहे—यद्यपि यहां मृग. नक्षत्र की समाप्ति के समय २६ जून ही होगी एवं अंग्रेजी पद्धति के अनुसार वार भी शुक्र ही होगा। परन्तु भारतीय ज्योतिष के अनुसार उस समय वार गुरु ही माना जएगा, क्योंकि भारतीय पद्धति के अनुसार वार अर्धरात्रि में न बदलकर सूर्योदय से ही बदलता है। यही कारण है—इसे गुरुवार के आगे ही लिखा गया है। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि—यहां पंचांग में तिथि आदि के घण्टे जहां २४ से अधिक हों, वहां घण्टों में से २४ घटा कर शेष घण्टा-मिनटों को अग्रिम तारीखों का टाईम समझें। स्पष्टीकरण के लिये इसी तरह का एक और उदाहरण लीजिये—

७ अग. शुक्रवार को मकर में चन्द्र का प्रवेश-काल २८ घं. ८ मि. लिखा है। इसका अर्थ है कि—८ अग. को सूर्योदय से पूर्व ४ बजकर ८ मिनट पर चन्द्र मकर राशि में प्रविष्ट होगा। भारतीय पद्धति के अनुसार इस समय शुक्रवार ही होगा।

नोट—जिस तिथि या नक्षत्र के आगे टाईम (घं. मि.) नहीं लिखा है अर्थात् (……) इस प्रकार का चिन्ह लगाया है उस तिथि, नक्षत्र की वृद्धि समझनी चाहिए। अर्थात्—वह तिथि या नक्षत्र पूरे दिन (सूर्योदय से दूसरे दिन सूर्योदय तक) रहेगा।

चन्द्रमा का नक्षत्रों के चरणों में प्रवेश का काल

–प्रियव्रत शर्मा

इस वर्ष से हम चन्द्रमा का प्रत्येक नक्षत्रों के चरणों में प्रवेश का काल (भा. स्टै. टा.) आगे पांच पृष्ठों में दे रहे हैं। उ. भारत के किसी भी पंचांग में यह हमारा प्रथम प्रयास है। आशा है पाठकों की यह अनेक समस्याओं को दूर करेगा। बच्चा जिस समय जन्म लेता है, उस समय किस नक्षत्र के किस चरण (नवांश) में चन्द्रमा है–यह इससे सहसा ज्ञात हो जाएगा, जिससे बच्चे के नाम का आदि अक्षर तथा उसकी जन्मराशि का नवांश तुरन्त जाना जा सकेगा। ध्यान रहे– **इन पृष्ठों पर दिया गया काल नक्षत्र-चरणों की समाप्ति का नहीं, अपितु प्रारंभ का है।** जैसे– १८ अप्रैल '९४ को पुनर्वसु नक्षत्र के आगे "२ चरण" वाले कालम के नीचे १० घं. ८ मि. लिखा है। इसका अर्थ है–१८ अप्रै '९४ को सुबह १० घं. ८ मि. पर चन्द्रमा पुनर्वसु के द्वितीय चरण में प्रवेश करेगा। (या यूं कहिए कि इस समय पुन. का द्वितीय चरण प्रारंभ होगा)। जहां तारीख वाले कालम में दो तारीखें लिखी हैं, वहां समझना चाहिए कि उस नक्षत्र के शुरू के कुछ चरण पहिली तारीख को और शेष चरण दूसरी तारीख को प्रारंभ होंगे। जैसे–१३/१४ मई '९४ के आगे मृग-नक्षत्र है। इसका अर्थ है–इस नक्षत्र के प्रथम, द्वितीय और तृतीय चरण १३ मई को और चतुर्थ चरण १४ मई को प्रारंभ होगा।

चन्द्र के नक्षत्र चरण में प्रवेशकाल से ज्योतिषियों को जंन्म नक्षत्र का भभोग निकाल कर उसे ४ से भाग देने आदि की प्रक्रिया से छुटकारा मिल जाएगा। मान लीजिए, कि–किसी बच्चे का जन्म २४ मई '९४ को १२ बजकर ४५ मि. पर (दोपहर में) हुआ है। २४ मई '९४ को विशाखा नक्षत्र का तृतीयचरण १२ घं. २ मि. पर प्रारंभ होकर १७ घं. २० मि. पर (जहां इस नक्षत्र का चतुर्थ चरण प्रारंभ होता है) समाप्त हो रहा है, अतः स्पष्ट है, कि इस बच्चे का जन्म विशाखा नक्षत्र के तृतीय चरण में हुआ।

भुक्त-दशा साधन सारणी (१)

नक्षत्र			दशेश	भुक्त दशा वर्ष-मास			
				१ चरण वर्ष, मास	२ चरण वर्ष, मास	३ चरण वर्ष, मास	४ चरण वर्ष, मास
अश्वि.	मघा	मूल	के.	००/००	१/९	३/६	५/३
भ.	पू. फा.	पू. षा.	शु.	००/०००	५/००	१०/००	१५/००
कृ.	उ. फा.	उ. षा.	सू.	००/०००	१/६	३/००	४/६
रो.	हस्त	श्रव.	चं.	००/०००	२/६	५/००	७/६
मृ.	चित्रा	ध.	मं.	००/०००	१/९	३/६	५/३
आर्द्रा	स्वा.	शत.	रा.	००/०००	४/६	९/००	१३/६
पुन	विशा.	पू. भा.	गु.	००/०००	४/००	८/००	१२/००
पुष्य	अनु.	उ. भा.	श.	००/०००	४/९	९/६	१४/३
आश्ले.	ज्येष्ठा	रेव.	बु.	००/००	४/३	८/६	१२/९

नक्षत्र चरण-प्रवेशकाल से भुक्तदशा का ज्ञान

चन्द्र के नक्षत्र चरणों में प्रवेशकाल द्वारा जन्मकालिक दशा का लगभग भुक्तकाल बड़ी ही आसानी से इस प्रकार जाना जा सकता है–

नीचे नं. (१) एवं (२) 'भुक्त दशाकाल ज्ञान सारणियां' दी गई हैं। जन्मकालिक नक्षत्र के चरण का भुक्तकाल (घं. मि.) ज्ञात करें। सारणी (१) से उस नक्षत्र के चरण के नीचे लिखे वर्ष-मास उठा लें। इनमें सारणी (२) से नक्षत्र चरण के भुक्तकाल के आगे दशेश ग्रह के नीचे लिखे गए वर्ष, मास जोड़ दीजिए। बस यही जन्म कालिक दशा का भुक्तकाल होगा। दशेश का ज्ञान सारणी (१) से हो जाता है।

उदाहरण–मान लीजिए, किसी का जन्म ११ अक्तूबर '९४ को २० घं. ४० मि. पर हुआ। स्पष्ट है, कि इसका जन्म पू. षा. के तृतीय चरण में हुआ। जन्म के समय पू. षा. का तृतीय चरण ३ घं. ३५ मि. भुक्त था। भुक्तदशा साधन सारणी (१) में पू. षा. के तृतीय चरण के नीचे १० वर्ष ० मास लिखा है। इसी सारणी में पू. षा. का दशेश शुक्र भी बतलाया गया है। भुक्तदशा साधन सारणी (२) में पू. षा. तृतीय चरण के भुक्तकाल ३ घं. ३० मि० के आगे दशेश शुक्र वाले कालम के नीचे २ वर्ष ११ मास लिखे हैं। इन्हें १० वर्ष ० मास में जोड़ने पर १२ वर्ष ११ मास हुए। यही इस व्यक्ति का जन्म के समय शुक्र की दशा का लगभग भुक्तकाल है।

भुक्त-दशा साधन सारणी (२)

नक्षत्र चरण का भुक्त काल	दशेश सूर्य	दशेश चन्द्र	दशेश भौम, केतु	दशेश बुध	दशेश गुरु	दशेश शुक्र	दशेश शनि	दशेश राहु
घं. मि.	व. मा.	व. मा.	व. मा.	व. मा.	व. मा.	व. मा.	व. मा.	व. मा.
०/०	००/००	००/००	००/००	००/००	००/००	००/००	००/००	००/००
०/३०	०/१	०/२	०/२	०/४	०/४	०/५	०/५	००/४
१/००	०/३	०/५	०/३	०/८	०/८	०/१०	०/९	००/९
१/३०	०/४	०/७	०/५	१/१	१/००	१/३	१/२	१/१
२/००	०/६	०/१०	०/७	१/५	१/४	१/८	१/७	१/६
२/३०	०/७	१/००	०/९	१/९	१/८	२/१	२/००	१/१०
३/००	०/९	१/३	०/१०	२/१	२/००	२/६	२/४	२/३
३/३०	०/१०	१/५	१/०	२/६	२/४	२/११	२/९	२/७
४/००	१/०	१/८	१/२	२/१०	२/८	३/४	३/२	३/००
४/३०	१/१	१/१०	१/४	३/२	३/००	३/९	३/७	३/४
५/००	१/३	२/१	१/५	३/६	३/४	४/२	३/११	३/९
५/३०	१/४	२/३	१/७	३/११	३/८	४/७	४/४	४/१
६/००	१/६	२/६	१/९	४/३	४/००	५/००	४/९	४/६
* ७/३०	१/६	२/६	१/९	४/३	४/००.	५/००	४/९	४/६

* ६ घं. ०० मि. और ७ घं. ३० मि. के आगे इस सारणी में वर्ष-मास एक से ही है। सारणी में लगभग (मध्यम) मान का प्रयोग करने के कारण ऐसा लिखना आवश्यक था। पाठक इसे गलत न समझें।

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेश काल (भा. स्टै. टा.)

जनवरी १९९४ ई.	नक्षत्र	चरण १ घं. मि.	चरण २ घं. मि.	चरण ३ घं. मि.	चरण ४ घं. मि.
१	आश्ले	- -	- -	३/२८	९/१६
१/२	मघा	१५/३	२०/४७	२/३१	८/१५
२/३	पू. फा	१३/५९	१९/४१	१/२३	७/५
३/४	उ. फा.	१२/४६	१८/२६	०/६	५/४७
४/५	ह.	११/२८	१७/८	२२/४८	४/२८
५/६	चि.	१०/७	१५/४७	२१/२७	३/७
६/७	स्वा.	८/४६	१४/२६	२०/६	१/४७
७/८	वि.	७/२७	१३/७	१८/४७	०/२८
८	अनु.	६/९	११/५१	१७/३३	२३/१६
९	ज्ये.	४/५९	१०/४४	१६/२९	२२/१४
१०	मू.	३/५९	९/४७	१५/३५	२१/२४
११	पू. षा.	३/१३	९/७	१५/१	२०/५५
१२	उ. षा.	२/४८	८/४८	१४/४८	२०/४८
१३	श्रव	२/४८	८/५६	१५/४	२१/१२
१४	धं.	३/१९	९/३६	१५/५३	२२/१०
१५	शत.	४/२६	१०/५२	१७/१८	२३/४४
१६/१७	पू. भा.	६/१०	१२/४४	१९/१९	१/५३
१७/१८	उ. भा.	८/२८	१५/९	२१/५०	४/३१
१८/१९	रे.	११/१३	१७/५८	००/४३	७/२९
१९/२०	अश्वि.	१४/१५	२१/०१	३/४७	१०/३३
२०/२१	भ.	१७/१९	०!१	६/४४	१३/२६
२१/२२	कृ.	२०/९	२/४४	९/२०	१५/५५
२२/२३	रो.	२२/३१	४/५७	११/२३	१७/४९
२४	मृ.	०/१५	६/३०	१२/४५	१९/००
२५	आर्द्रा	१/१६	७/२०	१३/२४	१९/२८
२६	पुन	१/३२	७/२६	१३/२०	१९/१४
२७	पु	१/८	६/५३	१२/३८	१८/२३
२८	आश्ले	०/९	५/४८	११/२७	१७/६
२८/२९	म	२२/४४	४/१९	९/५४	१५/[illegible]
२९/३०	पू. फा.	२१/३	२/३५	८/८	१३/४०
३०/३१	उ. फा.	१९/१३	०/४५	६/१८	११/५०
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

फरवरी १९९४ ई.	नक्षत्र	चरण १ घ. मि.	चरण २ घ. मि.	चरण ३ घ. मि.	चरण ४ घ. मि.
१/२	चित्रा	१५/३९	२१/१६	२/५३	८/३०
२/३	स्वा.	१४/६	१९/४६	१/२७	७/७
३/४	वि.	१२/४८	१८/३२	०/१७	६/२
४/५	अनु	११/४६	१७/३४	२३/२२	५/११
५/६	ज्ये.	११/५९	१६/५२	२२/४५	४/३८
६/७	मू.	१०/३०	१६/२६	२२/२३	४/२०
७/८	पू. षा.	१०/१६	१६/१७	२२/१८	४/१९
८/९	उ. षा.	१०/२१	१६/२७	२२/३३	४/३९
९/१०	श्रव	१०/४५	१६/५७	२३/९	५/२१
१०/११	ध.	११/३२	१७/५०	०/८	६/२६
११/१२	शत	१२/४५	१९/१०	१/३५	८/०१
१२/१३	पू. भा.	१४/२७	२०/५९	३/३२	१०/४
१३/१४	उ. भा.	१६/३७	२३/१६	५/५५	१२/३४
१४/१५	रे.	१९/१४	१/५८	८/४३	१५/२७
१५/१६	अश्वि.	२२/१२	४/५९	११/४६	१८/३३
१७	भ.	१/२०	८/६	१४/५२	२१/३८
१८/१९	कृ.	४/२४	११/५	१७/४६	०/२७
१९/२०	रो.	७/७	१३/४२	२०/१५	२/४८
२०/२१	मृ.	९/२१	१५/४३	२२/५	४/२७
२१/२२	आर्द्रा	१०/४९	१६/५९	२३/९	५/१९
२२/२३	पुन.	११/२८	१७/२५	२३/२२	५/१९
२३/२४	पु.	११/१६	१७/२	२२/४८	४/३४
२४/२५	आश्ले.	१०/१९	१५/५५	२१/३१	३/७
२५/२६	म.	८/४२	१४/११	१९/४०	१/९
२६	पू.फा.	६/३७	१२/१	१७/२५	२२/४९
२७	उ. फा.	४/१४	९/३६	१४/५८	२०/२१
२८	ह.	१/४३	७/६	१२/२९	१७/५२
२८/१ मा.	चि.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

मार्च १९९४ ई.	नक्षत्र	चरण १ घ. मि.	चरण २ घ. मि.	चरण ३ घ. मि.	चरण ४ घ. मि.
१/२	स्वा.	२०/५९	२/३०	८/१	१३/३२
२/३	वि.	१९/२	०/३९	६/१६	११/५३
३/४	अनु.	१७/३०	२३/१४	४/५८	१०/४२
४/५	ज्ये.	१६/२६	२२/१७	४/८	९/५९
५/६	मू.	१५/५०	२१/४८	३/४७	९/४६
६/७	पू. षा.	१५/४४	२१/४९	३/५४	९/५९
७/८	उ. षा.	१६/४	२२/१५	४/२६	१०/३७
८/९	श्र.	१६/४९	२३/६	५/२४	११/४१
९/१०	ध.	१७/५९	०/२२	६/४६	१३/१०
१०/११	शत.	१९/३३	२/१	८/३०	१४/५९
११/१२	पू. भा.	२१/२७	४/२	१०/३७	१७/१२
१२/१३	उ. भा.	२३/४६	६/२५	१३/५	१९/४५
१४	रे.	२/२४	९/९	१५/५५	२२/४०
१५/१६	अ.	५/२६	१२/११	१८/५६	१/४१
१६/१७	भर.	८/२७	१५/१४	२२/२	४/४९
१७/१८	कृ.	११/३७	१८/२२	१/७	७/५२
१८/१९	रो.	१४/३७	२१/१६	३/५५	१०/३४
१९/२०	मृग.	१७/१४	२३/४४	६/१४	१२/४४
२०/२१	आर्द्रा	१९/१४	१/३३	७/५२	१४/११
२१/२२	पुन.	२०/२९	२/३७	८/४५	१४/५३
२२/२३	पु.	२१/२	२/५४	८/४६	१४/३८
२३/२४	आश्ले.	२०/३०	२/१२	७/५५	१३/३८
२४!२५	मघा.	१९/२०	०/५१	६/२२	११/५३
२५/२६	पू. फा.	१७/२४	२२/४७	४/१०	९/३३
२६/२७	उ. फा.	१४/५७	२०/१७	१/३७	६/५६
२७/२८	ह.	१२/१६	१७/३२	२२/४८	४/३
२८/२९	चि.	९/१९	१४/३६	१९/५३	१/१०
[illegible]	स्वा.	६/२७	११/४८	१७/८	२२/२९
३०	विशा.	३/४९	९/१४	१४/३९	२०/४
३१	अनु.	१/२९	६/५८	१२/२७	१७/५६
[illegible]	ज्ये	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेश काल (भा. स्टै. टा.)

अप्रैल १९९४ ई.	नक्षत्र	चरण १ घं. मि.	चरण २ घं. मि.	चरण ३ घं. मि.	चरण ४ घं. मि.
१/२	मू.	२२/१५	४/७	९/५९	१५/५१
२/३	पू. षा.	२१/४२	३/४१	९/४१	१५/४१
३/४	उ. षा.	२१/४०	३/५०	१०/००	१६/१०
४/५	श्र.	२२/२०	४/३७	१०/५४	१७/११
५/६	ध.	२३/२९	५/५४	१२/१९	१८/४५
७	शत.	१/१०	७/४२	१४/१५	२०/४७
८	पू. भा.	३/२०	९/५७	१६/३४	२३/१२
९/१०	उ. भा.	५/४९	१२/३१	१९/१३	१/५५
१०/११	रे.	८/३८	१५/२४	२२/१०	४/५६
११/१२	अ.	११/४१	१८/२८	१/१५	८/२
१२/१३	भर.	१४/४८	२१/३५	४/२२	११/९
१३/१४	कृ.	१७/५६	२४/४१	७/२६	१४/१२
१४/१५	रो.	२०/५८	३/४०	१०/२२	१७/४
१५/१६	मृग.	२३/४५	६/२०	१२/५६	१९/३१
१७	आर्द्रा	२/६	८/३२	१४/५८	२१/२५
१८	पुन.	३/५२	१०/८	१६/२५	२२/४१
१९	पु.	४/५८	११/२	१७/७	२३/११
२०	आश्ले.	५/१६	११/९	१७/२	२२/५५
२१	म.	४/४७	१०/२९	१६/११	२१/५३
२२	पू. फा.	३/३४	९/६	१४/३८	२०/१०
२३	उ. फा.	१/४१	७/५	१२/२९	१७/५३
२३/२४	ह.	२३/१७	४/३५	९/५३	१५/११
२४/२५	चि.	२०/३०	१/४५	७/१	१२/१६
२५/२६	स्वा.	१७/३२	२२/४७	४/२	९/१७
२६/२७	विशा.	१४/३३	१९/५०	१/८	६/२५
२७/२८	अनु.	११/४३	१७/५	२२/२७	३/५०
२८/२९	ज्ये.	९/१२	१४/४१	२०/१०	१/३९
२९/३०	मू.	७/७	१२/४६	१८/२५	०/४
३०	पू. षा.	५/४४	११/३३	१७/२२	२३/११

मई १९९४ ई.	नक्षत्र	चरण १ घ. मि.	चरण २ घ. मि.	चरण ३ घ. मि.	चरण ४ घ. मि.
१	उ. षा.	४/५९	१०/५९	१६/५९	२२/५९
२	श्र.	४/५९	११/१०	१७/२१	२३/३२
३/४	ध.	५/४४	१२/६	१८/२७	०/४९
४/५	शत.	७/१०	१३/४१	२०/१२	२/४३
५/६	पू. भा.	९/१३	१५/५१	२२/२९	५/७
६/७	उ. भा.	११/४५	१८/२८	१/११	७/५४
७/८	रे.	१४/३८	२१/२४	४/१०	१०/५६
८/९	अश्वि.	१७/४३	०/३०	७/१७	१४/४
९/१०	भर.	२०/५१	३/३८	१०/२४	१७/११
१०/११	कृ.	२३/५७	६/४१	१३/२५	२०/९
१२	रो.	२/५२	९/३२	१६/१२	२२/५२
१३/१४	मृग.	५/३२	१२/७	१८/४२	१/१७
१४/१५	आर्द्रा.	७/५२	१४/२०	२०/४८	३/१६
१५/१६	पुन.	९/४४	१६/५	२२/२७	४/४९
१६/१७	पु.	११/१०	१७/२०	२३/३१	५/४१
१७/१८	आश्ले.	११/५२	१७/५४	२३/५६	५/५८
१८/१९	म.	१२/०	१७/५२	२३/४५	५/३७
१९/२०	पू. फा.	११/३०	१७/१४	२२/५७	४/४१
२०/२१	उ. फा.	१०/२४	१५/५९	२१/३३	३/८
२१/२२	ह.	८/४३	१४/११	१९/३९	१/७
२२	चि.	६/३५	११/५७	१७/२०	२२/४२
२३	स्वा.	४/५	९/२५	१४/४५	२०/५
२४	विशा.	१/२५	६/४३	१२/२	१७/२०
२४/२५	अनु.	२२/३९	३/५९	९/१९	१४/३९
२५/२६	ज्ये.	१९/५९	१/२३	६/४७	१२/११
२६/२७	मू.	१७/३६	२३/६	४/३७	१०/७
२७/२८	पू. षा.	१५/३८	२१/१७	२/५६	८/३५
२८/२९	उ. षा.	१४/१४	२०/३	१/५३	७/४२
२९/३०	श्र.	१३/३२	१९/३३	१/३४	७/३५
३०/३१	घ.	१३/३५	१९/४८	२/१	८/१४
३१/१ जू.	शत.	१४/२६	२०/५०	३/१४	९/३८

जून १९९४ ई.	नक्षत्र	चरण १ घ. मि.	चरण २ घ. मि.	चरण ३ घ. मि.	चरण ४ घ. मि.
१/२	पू. भा.	१६/२	२२/३६	५/१०	११/४४
२/३	उ. भा.	१८/१८	००/५९	७/४१	१४/२२
३/४	रे.	२१/३	३/४९	१०/३५	१७/२१
५	अ.	०/६	६/५३	१३/४०	२०/२८
६	भर.	३/१५	१०/१	१६/४८	२३/३४
७/८	कृ.	६/२०	१३/२	१९/४५	२/२७
८/९	रो.	९/१०	१५/४७	२२/२५	५/२
९/१०	मृग.	११/४०	१८/११	०/४३	७/१४
१०/११	आर्द्रा	१३/४६	२०/११	२/३६	९/१
११/१२	पुन.	१५/२५	२१/४३	४/१	१३/१९
१२/१३	पु.	१६/३७	२२/४८	४/५९	११/११
१३/१४	आश्ले.	१७/२२	२३/२६	५/३०	११/३४
१४/१५	म.	१७/३८	२३/३५	५/३३	११/३०
१५/१६	पू. फा.	१७/२८	२३/१९	५/१०	११/०
१६/१७	उ. फा.	१६/५१	२२/३५	४/२०	१०/४
१७/१८	ह.	१५/४८	२१/२६	३/५	८/४३
१८/१९	चि.	१४/२२	१९/५५	१/२९	७/२
१९/२०	स्वा.	१२/३६	१८/५	२३/३५	५/४
२०/२१	विशा.	१०/३४	१६/१	२१/२८	२/५५
२१/२२	अनु.	८/२२	१३/४८	१९/१४	०/४०
२२	ज्ये.	६/६	११/३३	१७/००	२२/२७
२३	मू.	३/५४	९/२४	१४/५५	२०/२५
२४	पू. षा.	१/५६	७/३२	१३/८	१८/४४
२५	उ. षा	०/२०	६/४	११/४८	१७/३१
२५/२६	श्र.	२३/१५	५/८	११/२	१६/५५
२६/२७	ध.	२२/४८	४/५३	१०/५७	१७/१
२७/२८	शत.	२३/६	५/२२	११/३८	१७/५४
२९	पू. भा	०/१०	६/३७	१३/४	१९/३१
३०	उ. भा.	१/५८	८/३४	१५/११	२१/४८

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेश काल (भा. स्टै. टा.)

चरण →		१	२	३	४
जुलाई १९९४ ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
१/२	रे.	४/२४	११/७	१७/५१	०/३४
२/३	अ.	७/१७	१४/०४	२०/५०	३/३७
३/४	भ.	१०/२४	१७/१०	२३/५७	६/४३
४/५	कृ.	१३/२९	२०/११	२/५४	९/३७
५/६	रो.	१६/१९	२२/५५	५/३२	१२/८
६/७	मृग.	१८/४५	१/१४	७/४३	१४/१२
७/८	आर्द्रा.	२०/४१	३/२	९/२३	१५/४४
८/९	पुन.	२२/५	४/१८	१०/३१	१६/४४
९/१०	पु.	२२/५७	५/२	११/८	१७/१३
१०/११	आश्ले.	२३/१९	५/१९	११/१८	१७/१८
११/१२	म.	२३/१७	५/११	११/६	१७/००
१२/१३	पू. फा.	२२/५४	४/४४	१०/३४	१६/२३
१३/१४	उ. फा.	२२/१३	३/५९	९/४६	१५/३२
१४/१५	ह.	२१/१८	३/१	८/४४	१४/२७
१५/१६	चि.	२०/११	१/५१	७/३२	१३/१२
१६/१७	स्वा.	१८/५२	०/३०	६/९	११/४७
१७/१८	वि.	१७/२५	२३/१	४/३८	१०/१५
१८/१९	अनु.	१५/५१	२१/२६	३/२	८/३७
१९/२०	ज्ये.	१४/१३	१९/४८	१/२४	७/००
२०/२१	मू.	१२/३५	१८/१२	२३/४९	५/२६
२१/२२	पू. षा.	११/३	१६/४३	२२/२३	४/३
२२/२३	उ. षा.	९/४४	१५/२९	२१/१४	३/००
२३/२४	श्र.	८/४५	१४/३७	२०/३०	२/२२
२४/२५	ध.	८/१४	१४/१५	२०/१५	२/१६
२५/२६	श.	८/१७	१४/२८	२०/३९	२/५०
२६/२७	पू. भा.	९/१	१५/२२	२१/४४	४/५
२७/२८	उ. भा.	१०/२७	१६/५८	२३/३०	६/१
२८/२९	रे.	१२/३३	१९/१२	१/५२	[illegible]
२९/३०	अ.	१५/२२	२१/५६	४/४२	११/२६
३०/३१	भ.	१८/२२	०/५७	७/४३	१४/३०
[illegible]	कृ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

चरण →		१	२	३	४
अगस्त १९९४ ई.	नक्षत्र	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.
२	रो.	०/१४	६/५२	१३/३१	२०/९
३	मृग.	२/४७	९/१६	१५/४६	२२/१५
४	आर्द्रा.	४/४४	११/५	१७/२६	२३/४६
५/६	पुन.	६/७	१२/१७	१८/२७	०/३८
६/७	पु.	६/४८	१२/४९	१८/५०	०/५१
७/८	आश्ले.	६/५२	१२/४५	१८/३८	०/३१
८	म.	६/२४	१२/११	१७/५९	२३/४६
९	पू. फा.	५/३३	११/१५	१६/५८	२२/४०
१०	उ. फा.	४/२२	१०/२	१५/४३	२१/२४
११	ह.	३/४	८/४३	१४/२२	२०/१
१२	चि.	१/३९	७/१८	१२/५६	१८/३५
१३	स्वा.	०/१४	५/५३	११/३२	१७/११
१३/१४	वि.	२२/५०	४/३०	१०/१०	१५/५०
१४/१५	अनु.	२१/३०	३/११	८/५१	१४/३२
१५/१६	ज्ये.	२०/१३	१/५७	७/४०	१३/२४
१६/१७	मू.	१९/८	०/५३	६/३८	१२/२३
१७/१८	पू. षा.	१८/८	२३/५६	५/४४	११/३२
१८/१९	उ. षा.	१७/२०	२३/१२	५/४	१०/५५
१९/२०	श्र.	१६/४७	२२/४४	४/४१	१०/३८
२०/२१	ध.	१६/३५	२२/३८	४/४२	१०/४५
२१/२२	शत.	१६/४९	२३/००	५/११	११/२३
२२/२३	पू. भा.	१७/३४	२३/५४	६/१४	१२/३४
२३/२४	उ. भा.	१८/५४	१/२३	७/५१	१४/२०
२४/२५	रे.	२०/४९	३/२६	१०/२	१६/३९
२५/२६	अश्वि.	२३/१६	५/५९	१२/४२	१९/२५
२७	भर.	२/९	८/५५	१५/४२	२२/२९
२८/२९	कृ.	५/१५	१२/२	१८/४८	१/३४
२९/३०	रो.	८/२०	१५/२	२१/४४	४/२६
३०/३१	मृग.	११/८	१७/४२	०/१६	६/५१
३१/१ सि.	आर्द्रा	१३/३५	१९/४९	२/१४	८/३८

चरण →		१	२	३	४
सितम्बर १९९४ ई.	नक्षत्र	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.
१/२	पुन.	१५/२	२१/१४	३/२७	९/४०
२/३	पु.	१५/५३	२१/५५	३/५६	९/५७
३/४	आश्ले.	१५/५९	२१/५०	३/४१	९/३२
४/५	म.	१५/२३	२१/६	२/४८	८/३१
५/६	पू. फा.	१४/१३	१९/४९	१/२५	७/१
६/७	उ. फा.	१२/३७	१८/९	२३/४०	५/१२
७/८	ह.	१०/४४	१६/१३	२१/४३	३/१३
८/९	चि.	८/४३	१४/१२	१९/४२	१/१२
९	स्वा.	६/४२	१२/१४	१७/४५	२३/१७
१०	विशा.	४/४८	१०/२२	१५/५७	२१/३२
११	अनु.	३/६	८/४४	१४/२२	२०/१
१२	ज्ये.	१/३९	७/२२	१३/५	१८/४८
१३	मू.	०/३१	६/१८	१२/६	१७/५४
१३/१४	पू. षा.	२३/४१	५/३३	११/२६	१७/१९
१४/१५	उ. षा.	२३/११	५/९	११/७	१७/५
१५/१६	श्र.	२३/३	५/७	११/१०	१७/१३
१६/१७	ध.	२३/१६	५/२५	११/३५	१७/४५
१७/१८	शत.	२३/५४	६/१०	१२/२५	१८/४१
१९	पू. भा.	०/५७	७/२०	१३/४२	२०/४
२०	उ. भा.	२/२७	८/५६	१५/२६	२१/५६
२१/२२	रे.	४/२६	११/२	१७/३९	०/१६
२२/२३	अ.	६/५२	१३/३४	२०/१७	२/५९
२३/२४	भर.	९/४१	१६/२८	२३/१४	६/००
२४/२५	कृ.	१२/४६	१९/३३	२/२१	९/९
२५/२६	रो.	१५/५६	२२/४२	५/२७	१२/१२
२६/२७	मृग.	१८/५८	१/३८	८/१७	१४/५७
२७/२८	आर्द्रा	२१/३७	४/८	१०/४०	१७/१२
२८/२९	पुन.	२३/४३	६/३	१२/२४	१८/४५
३०	पु.	१/५	७/१३	१३/२२	१९/३०

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेश काल (भा. स्टै. टा.)

अक्तू. १९९४ ई.	नक्षत्र	चरण १ घं. मि.	चरण २ घं. मि.	चरण ३ घं. मि.	चरण ४ घं. मि.
१	आश्ले.	१/३८	७/३५	१३/३१	१९/२७
२	म.	१/२३	७/८	१२/५३	१८/३८
३	पू. फा.	०/२३	५/५९	११/३४	१७/१०
३/४	उ. फा.	२२/४५	४/१३	९/४२	१५/१०
४/५	ह.	२०/३८	२/२	७/२५	१२/४९
५/६	चि.	१८/१२	२३/३४	४/५५	१०/१६
६/७	स्वा.	१५/३७	२०/५८	२/२०	७/४१
७/८	वि.	१३/२	१८/२५	२३/४९	५/१३
८/९	अनु.	१०/३७	१६/५	२१/३३	३/१
९/१०	ज्ये.	८/२९	१४/३	१९/३६	१/१०
१०	मू.	६/४४	१२/२५	१८/६	२३/४७
११	पू. षा.	५/२८	११/१६	१७/५	२२/५३
१२	उ. षा.	४/४२	१०/३९	१६/३६	२२/३३
१३	श्र.	४/३०	१०/३५	१६/४०	२२/४५
१४	ध.	४/५०	११/२	१७/१५	२३/२८
१५/१६	शत.	५/४१	१२/१	१८/२२	०/४२
१६/१७	पू. भा.	७/२	१३/२९	१९/५६	२/२३
१७/१८	उ. भा.	८/५०	१५/२३	२१/५७	४/३०
१८/१९	रे.	११/३	१७/४२	०/२०	६/५८
१९/२०	अ.	१३/३७	२०/२०	३/३	९//४६
२०/२१	भ.	१६/२९	२३/१४	६/००	१२/४६
२१/२२	कृ.	१९/३३	२/२१	९/८	१५/५५
२२/२३	रो.	२२/४२	५/२८	१२/१५	१९/२
२४	मृग.	१/४९	८/३३	१५/१६	२१/५९
२५/२६	आ.	४/४२	११/२०	१७/५७	०/३४
२६/२७	पुन.	७/११	१३/४०	२०/८	२/३७
२७/२८	पु.	९/६	१५/२४	२१/४३	४/१
२८/२९	आश्ले.	१०/१९	१६/२५	२२/३२	४/३९
२९/३०	म.	१०/४६	१६/४०	२२/३५	४/३०
३०/३१	पू. फा.	१०/२५	१६/९	२१/५२	३/३६
३१/१ नं.	उ. फा.	९/१९	१४/५३	२०/२६	[illegible]

नवम्बर १९९४ ई.	नक्षत्र	चरण १ घ. मि.	चरण २ घ. मि.	चरण ३ घ. मि.	चरण ४ घ. मि.
१	ह.	७/३३	१२/५८	१८/२४	२३/५०
२	चि.	५/१५	१०/३४	१५/५४	२१/१४
३	स्वा.	२/३४	७/५१	१३/७	१८/२४
३/४	वि.	२३/४१	४/५६	१०/१२	१५/२८
४/५	अनु.	२०/४४	२/२	७/१९	१२/३७
५/६	ज्ये.	१७/५५	२३/१८	४/४०	१०/२
६/७	मू.	१५/२४	२०/५३	२/२२	७/५१
७/८	पू. षा.	१३/२०	१८/५७	०/३५	६/१२
८/९	उ. षा.	११/४९	१७/३७	२३/२४	५/१२
९/१०	श्र.	१०/५९	१६/५७	२२/५५	४/५३
१०/११	ध.	१०/५१	१७/०	२३/९	५/१८
११/१२	श.	११/२७	१७/४६	०/५	६/२४
१२/१३	पू. भा.	१२/४३	१९/११	१/४०	८/८
१३/१४	उ. भा.	१४/३६	२१/११	३/४६	१०/२२
१४/१५	रे.	१६/५८	२३/३९	६/२१	१३/२
१५/१६	अश्वि.	१९/४३	२/२८	९/१२	१५/५७
१६/१७	भ.	२२/४२	५/२८	१२/१५	१९/२
१८	कृ.	१/४८	८/३५	१५/२१	२२/८
१९/२०	रो.	४/५५	११/४१	१८/२६	१/१२
२०/२१	मृग.	७/५७	१४/४०	२१/२२	४/०५
२१/२२	आर्द्रा	१०/४८	१७/२६	००/५	६/४३
२२/२३	पुन.	१३/२१	१९/५४	२/२६	८/५८
२३/२४	पु.	१५/३०	२१/५४	४/१९	१०/४४
२४/२५	आश्ले.	१७/९	२३/२५	५/४१	११/५७
२५/२६	म.	१८/१३	००/२०	६/२६	१२/३२
२६/२७	पू. फा.	१८/३८	००/३४	६/२९	१२/२५
२७/२८	उ. फा.	१८/२१	००/०६	५/५२	११/३८
२८/२९	ह.	१७/२३	२२/५९	४/३४	१०/१०
२९/३०	चि.	१५/४६	२१/१४	२/४१	८/०९
३०/१ दि.	स्वा.	१३/३७	१८/५९	०/२०	५/४२

दिसं. १९९४ ई.	नक्षत्र	चरण १ घ. मि.	चरण २ घ. मि.	चरण ३ घ. मि.	चरण ४ घ. मि.
१/२	वि.	११/३	१६/२१	२१/३८	२/५५
२	अनु.	८/१२	१३/२७	१८/४३	२३/५८
३	ज्ये.	५/१३	१०/३०	१५/४६	२१/३
४	मू.	२/२०	७/४०	१३/१	१८/२१
४/५	पू. षा.	२३/४१	५/८	१०/३४	१६/१
५/६	उ. षा.	२१/२७	३/२	८/३८	१४/१४
६/७	श्र.	१९/४९	१/३५	७/२१	१३/७
७/८	ध.	१८/५३	०/५१	६/५०	१२/४८
८/९	श.	१८/४६	०/५७	७/८	१३/१९
९/१०	पू. भा.	१९/२९	१/५१	८/१४	१४/३७
१०/११	उ. भा.	२०/५९	३/३२	१०/५	१६/३८
११/१२	रे.	२३/११	५/५२	१२/३२	१९/१३
१३	अ.	१/५४	८/३९	१५/२५	२२/११
१४/१५	भ.	४/५६	११/४३	१८/३१	१/१९
१५/१६	कृ.	८/६	१४/५३	२१/४०	४/२७
१६/१७	रो.	११/१४	१७/५८	००/४२	७/२६
१७/१८	मृग.	१४/१०	२०/५०	३/३१	१०/११
१८/१९	आर्द्रा	१६/५१	२३/२७	६/२	१२/३७
१९/२०	पुन.	१९/१३	१/४१	८/११	१४/४१
२०/२१	पु.	२१/११	३/३५	९/५९	१६/२३
२१/२२	आश्ले.	२२/४७	५/५	११/२२	१७/४०
२२/२३	म.	२३/५८	६/९	१२/२०	१८/३१
२४	पू. फा.	०/४२	६/४५	१२/४९	१८/५३
२५	उ. फा.	०/५७	६/५३	१२/४९	१८/४५
२६	ह.	०/४१	६/२९	१२/१७	१८/५
२६/२७	चि.	२३/५३	५/३३	११/१४	१६/५५
२७/२८	स्वा.	२२/३५	४/८	९/४२	१५/१५
२८/२९	वि.	२०/४८	२/१६	७/४३	१३/१०
२९/३०	अनु.	१८/३७	०/००	५/२३	१०/४६
३०/३१	ज्ये.	१६/९	२१/३०	२/५०	८/११
३१/१ ज.	मू.	१३/३२	१८/५३	०/१४	५/३५

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेश काल (भा. स्टै. टा.)

चरण →		१	२	३	४
जनवरी १९९५ ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
१/२	पू. षा.	१०/५६	१६/२०	२१/४३	३/७
२/३	उ. षा.	८/३१	१४/०१.	१९/३०	०/५९
३	श्र.	६/२८	१२/६	१७/४३	२३/२१
४	ध.	४/५८	१०/४६	१६/३४	२२/२१
५	शत.	४/९	१०/९	१६/९	२२/९
६	पू. भा.	४/९	१०/२२	१६/३४	२२/४७
७/८	उ. भा.	५/०	११/२५	१७/५०	०/१५
८/९	रे.	६/४०	१३/१६	१९/५१	२/२७
९/१०	अश्वि.	९/२	१५/४५	२२/२८	५/११
१०/११	भ.	११/५४	१८/४१	१/२८	८/१५
११/१२	कृ.	१५/२	२१/५०	४/३७	११/२५
१२/१३	रो.	१८/१२	०/५६	७/४१	१४/२५
१३/१४	मृग.	२१/९	३/४९	१०/२८	१७/७
१४/१५	आर्द्रा	२३/४६	६/१८	१२/५१	१९/२४
१६	पुन.	१/५७	८/२३	१४/४८	२१/१४
१७	पु.	३/३९	९/५८	१६/१७	२२/३६
१८	आश्ले.	४/५५	११/९	१७/२२	२३/३६
१९/२०	म.	५/४९	११/५५	१८/१	०/७
२०/२१	पू. फा.	६/१३	१२/१५	१८/१७	०/१९
२१/२२	उ. फा.	६/२१	१२/१९	१८/१६	०/१३
२२	ह.	६/१०	१२/३	१७/५५	२३/४८
२३	चि.	५/४०	११/२७	१७/१५	२३/३
२४	स्वा.	४/५१	१०/३५	१६/१८	२२/१
२५	वि.	३/४४	९/२२	१५/१	२०/४०
२६	अनु.	२/१८	७/५२	१३/२७	१९/२
२७	ज्ये.	०/३७	६/९	११/४०	१७/१२
२७/२८	मू.	२२/४३	४/१३	९/४३	१५/१३
२८/२९	पू. षा.	२०/४३	२/१३	७/४४	[illegible]
२९/३०	उ. षा.	१८/४४	०/१६	५/४९	११/२२
३०/३१	श्र	१६/५५	२२/३२	४/१०	९/४८
३१/१ फ.	धनि.	१५/२५	२१/२०	२/५५	८/४०

चरण →		१	२	३	४
फरवरी १९९५ ई.	नक्षत्र	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.
१/२	शत.	१४/२५	२०/२०	२/१४	८/८
२/३	पू. भा.	१४/२	२०/७	२/१३	८/१८
३/४	उ. भा.	१४/२३	२०/४०	२/५७	९/१४
४/५	रे.	१५/३१	२२/००	४/२८	१०/५६
५/६	अ.	१७/२४	००/१	६/३९	१३/१७
६/७	भ.	१९/५४	२/३९	९/२३	१६/७
७/८	कृ.	२२/५१	५/३८	१२/२४	१९/११
९	रो.	१/५८	८/४४	१५/२९	२२/१५
१०/११	मृ.	५/०	११/४१	१८/२२	१/३
११/१२	आर्द्रा	७/४४	१४/१८	२०/५१	३/२४
१२/१३	पुन.	९/५७	१६/२१	२२/४६	५/११
१३/१४	पु.	११/३६	१७/५१	००/७	६/२३
१४/१५	आश्ले.	१२/३९	१८/४७	००/५४	७/२
१५/१६	म.	१३/१	१९/१०	१/१०	७/१०
१६/१७	पू. फा.	१३/१०	१९/५	०/५९	६/५४
१७/१८	उ.फा.	१२/४८	१८/३९	०/२९	६/१९
१८/१९	ह.	१२/९	१७/५६	२३/४२	५/२९
१९/२०	चि.	११/१६	१७/००	२२/४५	४/२९
२०/२१	स्वा.	१०/१४	१५/५६	२१/३९	३/२२
२१/२२	वि.	९/५	१४/४६	२०/२७	२/९
२२/२३	अनु.	७/५१	१३/३२	१९/१२	०/५२
२३	ज्ये.	६/३२	१२/१२	१७/५१	२३/३१
२४	मू.	५/१०	१०/४९	१६/२९	२२/९
२५	पू. षा.	३/४८	९/२८	१५/८	२०/४८
२६	उ. षा.	२/२८	८/१०	१३/५२	१९/३४
२७	श्र.	१/२६	७/१	१२/४६	१८/३१
२८	ध.	०/१६	६/६	११/५६	१७/४६
२८/१ मा.	श.	२३/३६	५/३३	११/२९	१७/२६

चरण →		१	२	३	४
मार्च १९९५ ई.	नक्षत्र	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.
१/२	पू. भा.	२३/२३	५/२७	११/३२	१७/३७
२/३	उ. भा.	२३/४२	५/५७	१२/११	१८/२५
४	रे.	०/३९	७/२	१३/२६	१९/५०
५	अ.	२/१४	८/४७	१५/२०	२१/५३
६/७	भर.	४/२६	११/७	१७/४७	०/२८.
७/८	कृ.	७/८	१३/५३	२०/३९	३/२४
८/९	रो.	१०/९	१६/५५	२३/४१	६/२७
९/१०	मृग.	१३/१४	१९/५७	२/४१	९/२४
१०/११	आर्द्रा.	१६/७	२२/४४	५/२२	११/५९
११/१२	पुन.	१८/३६	१/५	७/३३	१४/२
१२/१३	पु.	२०/३०	२/४९	९/०७	१५/२५
१३/१४	आश्ले.	२१/४३	३/५१	९/५९	१६/७
१४/१५	म.	२२/१५	४!१३	१०!११	१६!९
१५/१६	पू. फा.	२२/७	३/५५	९/४२	१५/२९
१६/१७	उ. फा.	२१/१६	३/१	८/४७	१४/३२
१७/१८	ह.	२०/१७	१/५६	७/३४	१३/१२
१८/१९	चि.	१८/५०	०/२५	६/०	११/३५
१९/२०	स्वा.	१७/१०	२२/४३,	४/१७	९/५१
२०/२१	वि.	१५/२५	२०/५९	२/३३	८/७
२१/२२	अनु.	१३/४१	१९/१६	००/५१	६/२६
२२/२३	ज्ये.	१२/१	१७/३८	२३/१६	४/५४
२३/२४	मू.	१०/३१	१६/१२	२१/५२	३/३२
२४/२५	पू. षा.	९/१२	१४/५५	२०/३९	२/२३
२५/२६	उ. षा.	८/७	१३/५५	१९/४३	१/३१
२६/२७	श्र.	७/१९	१३/१२	१९/४	०/५७
२७/२८	ध.	६/४९	१२/४७	१८/४४	०/४२
२८/२९	श.	६/३९	१२/४३	१८/४६	०/५०
२९/३०	पू. भा.	६/५४	१३/४	१९/१४	१/२४
३०/३१	उ. भा.	७/३४	१३/५२	२०/९	२/२७
३१	रे.	८/४४			

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टैं. टा.) (१ जनवरी को अयनांश २३° । ४६' । ३९")

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
१९९४ ई०	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	१९९४ ई०
जनवरी १	८ १६ ३३ ३४	३ २४ २९ ४०	८ १५ १७ ३०	८ १४ ५३ ९	६ १५ ५८ ५२	८ १२ ४२ ५३	१० ३ १३ २२	७ ७ १८ ४४	−२३ २	+१० ३५	−५ १	१ जन.
(१९९४) २	८ १७ ३४ ४२	४ ८ २३ ४९	८ १६ ३ १४	८ १६ २९ १३	६ १६ ८ ३	८ १३ ५८ २२	१० ३ १९ ९	७ ७ १५ ३३	२२ ५७	५ ५२	४ ८	२
३	८ १८ ३५ ५०	४ २२ २४ ४५	८ १६ ४९ ०	८ १७ ५ ३९	६ १६ १७ ६	८ १५ १३ ५२	१० ३ २४ ५८	७ ७ १२ २३	२२ ५२	+० ४९	४ ५४	३
४	८ १९ ३६ ५९	५ ६ २९ ५८	८ १७ ३४ ४९	८ १९ ४२ २५	६ १६ २६ २	८ १६ २९ २१	१० ३ ३० ५१	७ ७ ९ १२	२२ ४६	−४ १८	४ ३४	४
५	८ २० ३८ ८	५ २० ३७ १७	८ १८ २० ४०	८ २१ १९ ३२	६ १६ ३४ ५१	८ १७ ४४ ५०	१० ३ ३६ ४७	७ ७ ६ १	२२ ४०	९ १३	३ ४९	५
६	८ २१ ३९ १७	६ ४ ४५ ११	८ १९ ६ ३३	८ २२ ५७ ३	६ १६ ४३ ३५	८ १९ ० २०	१० ३ ४२ ४७	७ ७ २ ५०	२२ ३३	१३ ३८	२ ५३	६
७	८ २२ ४० ३६	६ १८ ५२ २१	८ १९ ५२ २८	८ २४ ३४ ५९	६ १६ ५२ १०	८ २० १५ ५१	१० ३ ४८ ४८	७ ६ ५९ ४०	२२ २६	१७ १७	१ ४०	७
८	८ २३ ४१ ३६	७ २ ५७ २०	८ २० ३८ २७	८ २५ १३ १६	६ १७ ० ३८	८ २१ ३१ २०	१० ३ ५४ ५४	७ ६ ५६ २९	२२ १८	१९ ५५	−० २९	८
९	८ २४ ४२ ४६	७ १६ ५८ १९	८ २१ २४ २९	८ २७ ५१ ५९	६ १७ ८ ५८	८ २२ ४६ ५०	१० ४ १ ४	७ ६ ५३ १८	२२ १०	२१ १८	+० ४५	९
१०	८ २५ ४३ ५५	८ ० ५२ ५४	८ २२ १० ३१	८ २९ ३१ ७	६ १७ १७ १२	८ २४ २ १९	१० ४ ७ १६	७ ६ ५० ७	२२ १.	२१ २२	१ ५८	१०
११	८ २६ ४५ ६	८ १४ ३८ १५	८ २२ ५६ ३७	९ १ १० ३८	६ १७ २५ १९	८ २५ १७ ४९	१० ४ १३ ३१	७ ६ ४६ ५७	२१ ५२	२० ८	२ ४९	११
१२	८ २७ ४६ १४	८ २८ ११ २४	८ २३ ४२ ४६	९ २ ५० ३३	६ १७ ३३ १६	८ २६ ३३ १८	१० ४ १९ ५०	७ ६ ४३ ४६	२१ ४३	१७ ४७	३ ४०	१२
१३	८ २८ ४७ २३	९ ११ २९ २८	८ २४ २८ ५५	९ ४ ३० ५१	६ १७ ४१ ४	८ २७ ४८ ४७	१० ४ २६ १०	७ ६ ४० ३५	२१ ३३	१४ ३१	४ ३४	१३
१४	८ २९ ४८ ३१	९ २४ ३० ३२	८ २५ १५ ८	९ ६ ११ ३०	६ १७ ४८ ४६	८ २९ ४ १६	१० ४ ३२ ३६	७ ६ २७ २४	२१ २३	१० ३७	४ ४९	१४
१५	९ ० ४९ ३९	१० ७ १३ ५०	८ २६ १ २१	९ ७ ५२ ४९	६ १७ ५६ २१	९ ० १९ ४४	१० ४ ३९ ३	७ ६ ३४ १३	२१ १२	६ २१	४ ५७	१५
१६	९ १ ५० ४६	१० १९ ४० ०	८ २६ ४७ ३७	९ ९ ३३ ४८	६ १८ ३ ४७	९ १ ३५ ११	१० ४ ५५ ३१	७ ६ ३१ ३	२१ १	−९ ५४	४ ५९	१६
१७	९ २ ५१ ५३	११ ११ ५१ २	८ २७ ३३ ५६	९ ११ १५ २२	६ १८ ११ ४	९ २ ५० ३८	१० ४ ५२ ४	७ ६ २७ ५२	२० ५०	+२ ३२	४ ३९	१७
१८	९ ३ ५२ ५९	११ १३ ५० १३	८ २८ २० १६	९ १२ ५७ ८	६ १८ १८ १२	९ ४ ६ ५	१० ४ ५८ ३६	७ ६ २४ ४१	२० ३८	६ ४८	४ ७	१८
१९	९ ४ ५४ ४	११ २५ ४४ ४८	८ २९ ६ ३८	९ १४ ३९ २	६ १८ २५ १४	९ ५ २१ ३१	१० ५ ५ १४	७ ६ २१ ३०	२० २५	१० ४६	३ २४	१९
२०	९ ५ ५५ ८	० ७ ३० ४४	८ २९ ५३ ३	९ १६ २० ५८	६ १८ ३२ ६	९ ६ ३६ ५५	१० ५ ११ ५३	७ ६ १८ २०	२० १३	१४ १९	२ १८	२०
२१	९ ६ ५६ ११	० १४ २२ २२	९ ० ३९ २८	९ १८ २ ५१	६ १८ ३८ ४८	९ ७ ५२ २१	१० ५ १८ ३६	७ ६ १५ ९	२० ०	१७ १८	१ १४	२१
२२	९ ७ ५७ १४	१ १ २२ ९	९ १ २५ ५५	९ १९ ४४ ३२	६ १८ ४५ २४	९ ९ ७ ४६	१० ५ २५ १९	७ ६ ११ ५८	१९ ४६	१९ ३४	+० २	२२
२३	९ ८ ५८ १५	१ १३ ३५ १६	९ २ १२ २४	९ २१ २५ ५२	६ १८ ५१ ४८	९ १० २३ ९	१० ५ ३२ ४	७ ६ ८ ४८	१९ ३३	२१ ०	−० ३१	२३
२४	९ ९ ५९ १५	१ २६ ६ ९	९ २ ५८ ५७	९ २३ ६ ३८	६ १८ ५८ ५	९ ११ ३८ ३२	१० ५ ३८ ५२	७ ६ ५ ३७	१९ १९	२१ २५	१ ३१	२४
२५	९ ११ ० १५	२ ८ ५८ १३	९ ३ ४५ २८	९ २४ ४६ ४०	६ १९ ४ १४	९ १२ ५३ ५६	१० ५ ४५ ४३	७ ६ २ २६	१९ ४	२० ४५	२ ४०	२५
२६	९ १२ १ १४	२ २२ १३ ११	९ ४ ३२ ८	९ २६ २५ ४२	६ १९ १० १२	९ १४ ९ १८	१० ५ ५२ ३४	७ ५ ५९ १५	१८ ४९	१८ ५५	३ ५०	२६
२७	९ १३ २ ११	३ ५ ५० ४०	९ ५ १८ ४०	९ २८ ३ २२	६ १९ १६ २	९ १५ २४ ३९	१० ५ ५९ २८	७ ५ ५६ ४	१८ ३४	१६ ०	५ ५	२७
२८	९ १४ ३ ८	३ १९ ४८ ३७	९ ६ ५ १८	९ २९ ३९ २३	६ १९ २१ ४२	९ १६ ३९ ५९	१० ६ ६ २३	७ ५ ५२ ५४	१८ १९	१२ ७	४ ५९	२८
२९	९ १५ ४ ४	४ ४ १ ५५	९ ६ ५१ ५७	१० १ १३ १६	६ १९ २७ १२	९ १७ ५५ १९	१० ६ १३ १९	७ ५ ४९ ४३	१८ ३	७ ३०	४ ५०	२९
३०	९ १६ ४ ५९	४ १८ २५ ११	९ ७ ३८ ३८	१० २ ४४ ४०	६ १९ ३२ ३४	९ १९ १० ४०	१० ६ २० १९	७ ५ ४६ ३२	१७ ४७	+२ २५	४ ३५	३०
३१	९ १७ ५ ५४	५ ९ ५२ ५६	९ ८ २५ २०	१० ४ १२ ५६	६ १९ ३७ ४६	९ २० २५ ५९	१० ६ २७ २०	७ ५ ४३ २१	१७ ३०	−२ ४८	४ १५	३१
फरवरी १	९ १८ ६ ४७	५ १७ १६ ३७	९ ९ १२ ४	१० ५ ३७ ३६	६ १९ ४२ ४८	९ २१ ४१ १९	१० ६ ३४ २१	७ ५ ४० ११	१७ १३	७ ५२	३ ४९	१ फरवरी
२	९ १९ ७ ४०	६ १ ३४ ५०	९ ९ ५८ ५०	१० ६ ५७ ५६	६ १९ ४७ ४०	९ २२ ५६ ३६	१० ६ ४१ २४	७ ५ ३७ ०	१६ ५६	१२ २९	३ ०	२
३	९ २० ८ ३२	६ १५ ४४ ५	९ १० ४५ ३७	१० ८ १३ २७	६ १९ ५२ २२	९ २४ ११ ५४	१० ६ ४८ २९	७ ५ ३३ ४९	१६ ३९	१६ २०	१ ४०	३
४	९ २१ ९ २३	६ २९ ४३ १३	९ ११ ३२ २८	१० ९ २२ ५६	६ १९ ५६ ५४	९ २५ २७ १२	१० ६ ५५ ३४	७ ५ ३० ३८	१६ २१	१९ १२	−० ३४	४
५	९ २२ १० १३	७ १३ ३२ ८	९ १२ १९ [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] २७ २७	−१६ ३	−२० ५३	+१ १४	५

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टैं. टा.) (१ फरवरी को अयनांश २३° । ४६' । ४४", मार्च को अयनांश २३° । ४६' । ४८")

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शंनि	राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
१९९४ ई.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	१९९४ ई.
फरवरी ६	९ २३ ११ ३	७ २७ ११ ८	९ १३ ६ १०	१० ११ २१ ५८	६ २० ५ २६	९ २७ ५७ ४४	१० ७ ९ ५०	७ ५ २४ १६	-१५ ४५	२१ १९	-१ ५५	६ फरवरी
७	९ २४ ११ ५१	८ १० ४० २८	९ १३ ५३ २	१० १२ ९ ५२	६ २० ९ ३०	९ २९ १२ ५९	१० ७ १७ १	७ ५ २१ ६	१५ २७	२० ३०	-२ ५१	७
८	९ २५ १२ ३९	८ २४ ० १	९ १४ ३९ ५८	१० १२ ४८ ४१	६ २० १३ २२	१० ० २८ १४	१० ७ २४ १२	७ ५ १७ ५५	१५ ८	१८ ३३	३ ३९	८
९	९ २६ १३ २५	९ ७ ९ ४	९ १५ २६ ५४	१० १३ २१ ५१	६ २० १७ २	१० १ ४३ २९	१० ७ ३१ २४	७ ५ १४ ४४	१४ ४१	१५ ३९	४ २१	९
१०	९ २७ १४ ११	९ २० ६ ३८	९ १६ १३ ५१	१० १३ ३८ २	६ २० २० ३२	१० २ ५८ ४२	१० ७ ३८ ३६	७ ५ ११ ३३	१४ ३०	१२ २	४ ५०	१०
११	९ २८ १४ ५४	१० २ ३१ ४०	९ १७ ० ४७	१० १३ ४७ १४	६ २० २३ ५२	१० ४ १३ ५४	१० ७ ४५ ५०	७ ५ ८ २२	१४ १०	७ ५६	५ १०	११
१२	९ २९ १५ ३७	१० १५ २३ ३३	९ १७ ४७ ४८	१० १३ ४५ ३८	६ २० २७ २	१० ५ २९ ५	१० ७ ५३ ५	७ ५ ५ ११	१३ ५०	-३ २४	४ ५९	१२
१३	१० ० १६ १८	१० २७ ४२ १७	९ १८ ३४ ४८	१० १३ ३३ २५	६ २० २९ ४०	१० ६ ४४ २६	१० ८ ० ११	७ ५ २ ०	१३ ३०	+० ५२	४ ३७	१३
१४	१० १ १६ ५८	११ ९ ४८ ५६	९ १९ २१ ४८	१० १३ १० ४०	६ २० ३२ ४६	१० ७ ५९ २५	१० ८ ७ ३३	७ ४ ५८ ४९	१३ १०	५ ११	३ ५९	१४
१५	१० २ १७ ३६	११ २१ ४५ ४१	९ २० ८ ५१	१० १२ ३८ १	६ २० ३५ २४	१० ९ १४ ३४	१० ८ १४ ४९	७ ४ ५५ ३८	१२ ५०	९ १६	३ १४	१५
१६	१० ३ १८ १२	० ३ ३५ ४२	९ २० ५५ ५४	१० ११ ५६ १२	६ २० ३७ ५०	१० १० २९ ४२	१० ८ २२ ६	७ ४ ५२ २७	१२ २९	१२ ५७	२ ३६	१६
१७	१० ४ १८ ४७	० १५ २३ ८	९ २१ ४२ ५८	१० ११ ६ २०	६ २० ४० ४	१० ११ ४४ ४९	१० ८ २९ २२	७ ४ ४९ १७	१२ ८	१६ ७	१ ३४	१७
१८	१० ५ १९ ३०	० २७ १२ ५५	९ २२ ३० २	१० १० ९ ४८	६ २० ४२ ८	१० १२ ५९ ५४	१० ८ ३६ ३९	७ ४ ४६ ६	११ ४७	१८ ३७	+० ३०	१८
१९	१० ६ १९ ५१	१ ९ १० ३०	९ २३ १७ ७	१० ९ ६ ४	६ २० ४४ १	१० १४ १४ ५८	१० ८ ४३ ५६	७ ४ ४२ ५५	११ २६	२० २०	-० ३०	१९
२०	१० ७ २० २०	१ २१ २१ २५	९ २४ ४ १२	१० ८ २ ५४	६ २० ४५ ४२	१० १५ ३० २	१० ८ ५१ १४	७ ४ ३९ ४४	११ ५	२१ ८	१ २४	२०
२१	१० ८ २० ४८	२ ३ ५१ ७	९ २४ ५१ १७	१० ६ ५५ ५४	६ २० ४७ १२	१० १६ ४५ ५	१० ८ ५८ ३२	७ ४ ३६ ३३	१० ४३	२० ५६	२ २६.	२१
२२	१० ९ २१ १४	२ १६ ४४ १५	९ २५ ३८ २५	१० ५ ४९ २	६ २० ४८ ३२	१० १८ ० ७	१० ९ ५ ५०	७ ४ ३३ २२	१० २१	१९ ३८	३ २४	२२
२३	१० १० २१ ३७	३ ० ३ ५५	९ २६ २५ ३१	१० ४ ४३ ४०	६ २० ४९ ४०	१० १९ १५ ६	१० ९ १३ ९	७ ४ ३० १२	१० ०	१७ २४	४ १४	२३
२४	१० ११ २१ ३९	३ १३ ५१ १८	९ २७ १२ ३९	१० ३ ४१ ३०	६ २० ५० ३६	१० २० ३० ४	१० ९ २० २७	७ ४ २७ १	९ ३८	१३ ४८	४ ३८	२४
२५	१० १२ २२ १९	३ २८ ४ ३४	९ २७ ५९ ४७	१० २ ४३ १४	६ २० ५१ २२	१० २१ ४५.१	१० ९ २७ ४४	७ ४ २३ ५१	९ १५	९ ३०	४ ५९	२५
२६	१० १३ २२ ३८	४ १२ ३९ ११	९ २८ ४६ ५५	१० १ ५१ २	६ २० ५१ ५६	१० २२ ५९ ५७	१० ९ ३५ १	७ ४ २० ४०	८ ५२	+४ ३३	५ १०	२६
२७	१० १४ २२ ५४	४ २७ २७ ४०	९ २९ ३४ ५	१० १ ४ २२	६ २० ५२ २१	१० २४ ४ ५१	१० ९ ४२ १७	७ ४ १७ २९	८ ३०	-० ४५	४ ४०	२७
२८	१० १५ २३ ९	५ १२ २१ २३	१० ० २१ २३	१० ० २४ ४४	६ २० ५२ ३३	१० २५ २९ ४४	१० ९ ४९ ३५	७ ४ १४ १८	८ ८	६ १	३ ५४	२८
मार्च १	१० १६ २३ २३	५ २७ ११ ३२	१० १ ८ २३	९ २९ ५१ ५२	६ २० ५२ ३३	१० २६ ४४ ३६	१० ९ ५६ ४९	७ ४ ११ ७	७ ४६	१० ५६	२ ५८	१ मार्च
२	१० १७ २३ ३५	६ ११ ५१ ११	१० १ ५५ ३३	९ २९ २६ ८	६ २० ५२ २२	१० २७ ५९ २७	१० १० ४ ६	७ ४ ७ ५७	७ २३	१५ ८	१ ४६	२
३	१० १८ २३ ४५	६ २६ १५ १२	१० २ ४२ ४४	९ २९ ७ २८	६ २० ५२ १	१० २९ १४ १७	१० १० ११ २१	७ ४ ४ ४६	७ ०	१८ २०	-० २८	३
४	१० १९ २३ ५४	७ १० २१ १८	१० ३ ३९ ५४	९ २८ ५५ ४९	६ २० ५१ २८	११ ० २९ ६	१० १० १८ ३६	७ ४ १ ३५	६ ३७	२० २१	+० ३८	४
५	१० २० २४ २	७ २४ ९ ८	१० ४ १७ ५	९ २८ ५० ५८	६ २० ५० ४५	११ १ ४३ ५३	१० १० २५ ५९	७ ३ ५८ २४	६ १४	२१ ५	१ ४७	५
६	१० २१ २४ ८	८ ७ ३९ ३८	१० ५ ४ १७	९ २८ ५२ ३४	६ २० ४९ ४९	११ २ ५८ ३०	१० १० ३३ ४	७ ३ ५५ १३	५ ५०	२० ३३	२ ४९	६
७	१० २२ २४ १२	८ २० ५४ ३५	१० ५ ५१ २९	९ २९ ० २४	६ २० ४८ ४२	११ ४ १३ २४	१० १० ४० १६	७ ३ ५२ २	५ २७	१८ ५४	३ ४५	७
८	१० २३ २४ १४	९ ३ ५५ ४९	१० ६ ३८ ४०	९ २९ १४ ६	६ २० ४७ २३	११ ५ २८ ८	१० १० ४७ २६	७ ३ ४८ ५२	५ ४	१६ १७	४ ३०	८
९	१० २४ २४ १५	९ १९ ४४ २९	१० ७ २५ ५२	९ २९ ३३ २०	६ २० ४५ ५४	११ ६ ४२ ४९	१० १० ५४ ३६	७ ३ ४५ ४१	४ ४०	१२ ५६	५ ०	९
१०	१० २५ २४ १४	९ २९ २२ १	१० ८ १३ [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७ ३ ४२ ३०	४ १७	९ ३	५ ५	१०
११	१० २६ २४ १२	१० ११ ४८ ५६	१० ९ ० १६	१० ० २७ ३	६ २० ४२ २१	११ ९ १२ ११	१० ११ ८ ५६	७ ३ ३९ १९	३ ५३	४ ५०	४ ४९	११
१२	१० २७ २४ ८	१० २३ ५५ ५०	१० ९ ४७ २७	१० १ ० ५२	६ २० ४० १८	११ १० २६ ४९	१० ११ १६ ३	७ ३ ३६ ९	३ ३०	-० २९	४ ३४	१२
१३	१० २८ २४ १	११ ६ १३ २२	१० १० ३४ ३८	१० २ ३८ ५८	६ २० ३८ ३	११ ११ ४१ २६	१० ११ २३ ९	७ ३ ३२ ५८	-३ ६	[illegible]	[illegible]	१३

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टैं. टा.) (१ अप्रैल को अयनांश २३° । ४६'१४३")

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
१९९४ ई०	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	१९९४ ई०
मार्च १४	१० २९ २३ ५२	११ १८ १२ ३२	१० ११ २१ ४८	१० २ २१ २	६ २० ३५ ३८	११ १२ ५६ १	१० ११ ३० १४	७ ३ २९ ४७	-२ ४३	+७ ५७	+३ २९	१४ मार्च
१५	११ ० २३ ४२	० ० ४ ५६	१० १२ ९ ०	१० ३ ६ ४८	६ २० ३३ २	११ १४ १० ३५	१० ११ ३७ १८	७ ३ २६ ३६	२ १९	११ ४४	२ ३८	१५
१६	११ १ २३ २९	० ११ ३२ ५०	१० १२ ५६ १०	१० ३ ५६ ३	६ २० ३० १४	११ १५ २५ ७	१० ११ ४४ १९	७ ३ २३ २५	१ ५५	१५ २	१ ४४	१६
१७	११ २ २३ १५	० २४ ३९ २९	१० १३ ४३ २१	१० ४ ४८ ३४	६ २० २७ १६	११ १६ ३९ ३६	१० ११ ५१ १९	७ ३ २० १४	१ ३१	१७ ४३	+० ४३	१७
१८	११ ३ २२ ५८	१ ५ २८ ४५	१० १४ ३० २८	१० ५ ४४ ८	६ २० २४ ९	११ १७ ५४ ४	१० ११ ५८ १९	७ ३ १७ ४	१ ८	१९ ३९	-० १९	१८
१९	११ ४ २२ ४०	१ १७ २५ १६	१० १५ १७ ३०	१० ६ ४२ ३४	६ २० २० ५०	११ १९ ८ ३२	१० १२ ५ १८	७ ३ १३ ५३	० ४४	२० ४४	१ २४	१९
२०	११ ५ २२ १९	१ २९ ३४ ६	१० १६ ४ ४६	१० ७ ४३ ४२	६ २० १७ २१	११ २० २२ ५७	१० १२ १२ १२	७ ३ १० ४२	-० २०	२० ५२	२ २६	२०
२१	११ ६ २१ ५५	२ १२ ० ३३	१० १६ ५१ ५२	१० ८ ४७ २२	६ २० १३ ४२	११ २१ ३७ २०	१० १२ १९ ५	७ ३ ७ ३१	+० ३	१९ ५९	३ २१	२१
२२	११ ७ २१ २९	२ २४ ४९ ६	१० १७ ३८ ५६	१० ९ ५३ २८	६ २० ९ ५२	११ २२ ५१ ४०	१० १२ २५ ५७	७ ३ ४ २०	० २७	१८ ४	४ ७	२२
२३	११ ८ २१ १	३ ८ ५ २४	१० १८ २६ ६	१० ११ १ ५२	६ २० ५ ५२	११ २४ ६ ०	१० १२ ३२ ४५	७ ३ १ १०	० ५१	१५ ९	४ ४२	२३
२४	११ ९ २० ११	३ २१ ५० १८	१० १९ १३ ११	१० १२ १२ २६	६ २० १ ४३	११ २५ २० १८	१० १२ ३९ ४३	७ २ ५७ ५९	१ १४	११ २०	५ १	२४
२५	११ १० १९ ५८	४ ६ ४ १६	१० २० ० १५	१० १३ २५ ६	६ १९ ५७ २५	११ २६ ३४ ३४	१० १२ ४६ २१	७ २ ५४ ४८	१ ३८	६ ४४	५ ६	२५
२६	११ ११ १९ २३	४ २० ४४ १०	१० २० ४७ १८	१० १४ ३९ ४८	६ १९ ५२ ५६	११ २७ ४८ ४७	१० १२ ५३ ५	७ २ ५१ ३७	२ २	+१ ३८	५ १६	२६
२७	११ १२ १८ ४६	५ ५ ४३ २८	१० २१ ३४ २१	१० १५ ५६ २२	६ १९ ४८ १९	११ २९ २ ५९	१० १२ ५९ ४७	७ २ ४८ २६	२ २५	-३ ४०	४ ३०	२७
२८	११ १३ १८ ७	५ २० ५३ १४	१० २२ २१ २२	१० १६ १४ ४८	६ १९ ४३ ३२	० ० १७ ९	१० १३ ६ २४	७ २ ४५ १५	२ ४९	८ ५०	३ १९	२८
२९	११ १४ १७ २६	६ ६ ३ १४	१० २३ ८ २३	१० १८ ३५ २	६ १९ ३८ ३४	० १ ३१ १६	१० १३ १३ ३	७ २ ४२ ४	३ १३	१३ २६	१ ४	२९
३०	११ १५ १६ ४४	६ २१ ३ ५२	१० २३ ५५ २२	१० १९ ५५ ५९	६ १९ ३३ ३०	० २ ४५ २३	१० १३ १९ ३५	७ २ ३८ ५४	३ ३५	१७ ८	-० ४९	३०
३१	११ १६ १५ ५८	७ ५ ४७ ४४	१० २४ ४२ २१	१० २१ ३० ३९	६ १९ २८ १६	० ३ ५९ २६	१० १३ २६ १२	७ २ ३५ ४३	३ ५९	१९ ३७	+० २७	३१
अप्रैल १	११ १७ १५ १२	७ २० ९ ४६	१० २५ २९ १९	१० २२ ४५ ५८	६ १९ २२ ५४	० ५ १३ २८	१० १३ ३२ ४१	७ २ ३२ ३२	४ २२	२० ४६	१ ४३	१ अप्रैल
२	११ १८ १४ २५	८ ४ ८ ३	१० २६ १६ १६	१० २४ १२ ५४	६ १९ १७ २२	० ६ २७ ३०	१० १३ ३९ ८	७ २ २९ २२	४ ४५	२० ३५	२ ४६	२
३	११ १९ १३ ३५	८ १७ ४२ ५१	१० २७ ३ १३	१० २५ ४१ २७	६ १९ ११ ४४	० ७ ४१ २७	१० १३ ४५ ३५	७ २ २६ ११	५ ८	१९ १०	३ ४२	३
४	११ २० १२ ४३	९ ० ५५ ५३	१० २७ ५० ७	१० २७ ११ ३२	६ १९ ५ ५६	० ८ ५५ २४	१० १३ ५१ ३७	७ २ २३ ०	५ ३१	१६ ४६	४ २९	४
५	११ २१ ११ ४९	९ १३ ४९ ४६	१० २८ ३७ २	१० २८ ४३ १०	६ १९ ० २	० १० ९ २०	१० १३ ५८ १७	७ २ १९ ४९	५ ५४	१३ ३५	४ ५८	५
६	११ २२ १० ५४	९ २६ २७ १६	१० २९ २३ ५४	११ ० १६ २२	६ १८ ५३ ५९	० ११ २३ १४	१० १४ ४ ३४	७ २ १६ ३८	६ १७	९ ५०	५ १३	६
७	११ २३ ९ ५७	१० ८ २१ २०	११ ० १० ४१	११ १ ५१ ४	६ १८ ४७	० १२ ३७ ५	१० १४ १० ४९	७ २ १३ २८	६ ३९	५ ४५	५ ७	७
८	११ २४ ८ ५७	१० २१ ४ २०	११ ० ५७ ३६	११ ३ २७ १६	६ १८ ४१ ३४	० १३ ५० ५३	१० १४ १६ ५८	७ २ १० १७	७ २	- १ २९	४ ५६	८
९	११ २५ ७ ५७	११ ३ ८ २९	११ १ ४४ २४	११ ५ ५ २	६ १८ ३५ ११	० १५ ४ ४१	१० १४ २३ ७	७ २ ७ ६	७ २४	+ २ ४७	४ ३०	९
१०	११ २६ ६ ५५	११ १५ ५ ३९	११ २ ३१ १२	११ ६ ४४ १६	६ १८ ९ ४०	० १६ १८ २७	१० १४ २९ १३	७ २ ३ ५५	७ ४७	६ ५५	३ ४२	१०
११	११ २७ ५ ५०	११ २९ ५७ ३७	११ ३ १७ ५७	११ ०८ २५ ३	६ १८ २२ ०४	० १७ ३२ ११	१० १४ ३५ १३	७ २ ० ४४	८ ९	१० ४५	३ ०	११
१२	११ २८ ४ ४३	० ८ ४६ १४	११ ४ ४ ४२	११ १० ७ १९	६ १८ १५ २१	० १८ ४५ ५३	१० १४ ४१ १४	७ १ ५७ १३	८ ३१	१४ ९	२ १	१२
१३	११ २९ ३ ३४	० २० ३३ ३२	११ ४ ५१ २४	११ ११ ५१ ९	६ १८ ८ ३४	० १९ ५९ ३२	१० १४ ४७ १०	७ १ ५४ २२	८ ५३	१६ ५९	+ ० ५२	१३
१४	० ० २ २३	१ २ २१ ५५	११ ५ ३८ ४	११ १३ ३६ २९	६ १७ ११ ३९	० २१ १३ ९	१० १४ ५३ ३	७ १ ५१ १२	९ १५	१९ ६	- ० १	१४
१५	० १ १ ९०	१ १४ १४ १७	११ ६ २४ ४३	११ १५ २३ २३	६ १७ २४ ४	० २२ २६ ४४	१० १४ ५८ ५२	७ १ ४८ १	९ ३६	२० २३	१ १२	१५
१६	० १ ० ५३	१ २६ १४ ४	११ ७ ११ २०	११ १७ ११ ५०	६ १७ ४७ ३०	० २३ ४० १७	१० १५ ४ ३८	७ १ ४४ ५१	९ ५८	२० ४६	२ १९	१६
१७	० २ ५८ ३७	२ ८ २५ १०	११ ७ ५७ ५५	११ १९ १ ५२	६ १७ ४० २९	० २४ ५३ ४८	१० १५ १० २१	७ १ ४१ ४०	१० १९	२० १०	३ ९	१७
१८	० ३ ५७ १९	२ २ ५१ ४९	११ ८ ४४ २९	११ २० ५३ २६	६ १७ ६६ ५	० २६ ७ १६	१० १५ १६ ०	७ १ ३८ २९	+१० ४०	+१८ ३६	-३ ५४	१८

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टैं. टा.) (१ मई को अयनांश २३° । ४६' । ५७")

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
१९९४ ई०	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	१९९४ ई०
अप्रैल १९	० ४ ५५ ५६	३ ३ ३८ १८	११ ९ ३१ १	११ २२ ४६ ३७	६ १७ २६ ०	० २७ २० ४२	१० १५ २१ ३५	७ १ ३५ १८	- ११ १	- १६ ४	- ४ ४२	१९ अप्रै.
२०	० ५ ५४ ३२	३ १६ ४८ २९	११ १० १७ ३१	११ २४ ४१ २०	६ १७ १८ ४१	० २८ ३४ ८	१० १५ २७ ७	७ १ ३२ ७	११ २२	१२ ३९	५ ४	२०
२१	० ६ ५३ ६	४ ० २५ १४	११ ११ ३ ५८	११ २६ ३७.३९	६ १७ ११ १८	० २९ ४७.२८	१० १५ ३२ ३५	७ १ २८ ५७	११ ४२	८ ३०	५ १५	२१
२२	० ७ ५१ ३८	४ १४ २९ ४४	११ ११ ५० २४	११ २८ ३५ २९	६ १७ ३ ५१	१ १ ० ४६	१० १५ ३७ ५९	७ १ २५ ४६	१२ ३	- ३ ४४	५ ६	२२
२३	० ८ ५० ८	४ २९ ० ४०	११ १२ ३६ ४७	० ० ३४ ५३	६ १६ ५६ २३	१ २ १४ १	१० १५ ४३ २०	७ १ २२ ३५	१२ २३	- १ ३२	४ ३८	२३
२४	० ९ ४८ ३५	५ १३ ५३ ४९	११ १३ २३ ९	० २ ३५ ४४	६ १६ ४८ ५१	१ ३ २७ १५	१० १५ ४८ ३६	७ १ १९ २४	१२ ४३	६ ३२	३ ५४	२४
२५	० १० ४७ ०	५ २९ २ ७	११ १४ ९ २८	० ४ ३८ ५	६ १६ ४१ १८	१ ४ ४० २६	१० १५ ५३ ४९	७ १ १६ १३	१३ २	११ २४	२ ४३	२५
२६	० ११ ४५ २४	६ १४ १६ २३	११ १४ ५५ ४५	० ६ ४१ ४५	६ १६ ३३ ४०	१ ५ ५३ ३५	१० १५ ५८ ५८	७ १ १३ २	१३ २२	१५ ३३	१ ३२	२६
२७	० १२ ४३ ४६	६ २९ २६ ४०	११ १५ ४२ १	० ८ ४६ ४४	६ १६ २६ ७	१ ७ ६ ४१	१० १६ ४ २	७ १ ९ ५२	१३ ४१	१८ ३८	० ४४	२७
२८	० १३ ४२ ६	७ १४ २३ ४५	११ १६ २८ १४	० १० ५२ ५३	६ १६ १८ २१	१ ८ १९ ४५	१० १६ ९ ३	७ १ ६ ४१	१४ ०	२० २३	+१ १९	२८
२९	० १४ ४० २४	७ २९ ० ३०	११ १७ १४ २६	० १३ ० १०	६ १६ १० ५०	१ ९ ३२ ४६	१० १६ १४ ०	७ १ ३ ३०	१४ १९	२० ४१	२ २८	२९
३०	० १५ ३८ ४१	८ १३ १२ २७	११ १८ ० ३५	० १५ ८ १७	६ १६ ३ ११	१ १० ४५ ४५	१० १६ १८ ५२	७ १ ० १९	१४ ३८	१९ ३८	३ ३१	३०
मई १	० १६ ३६ ५६	८ २६ ५७ ५२	११ १८ ४६ ४२	० १७ १७ ८	६ १५ ५५ ३१	१ ११ ५८ ४२	१० १६ २३ ४१	७ ० ५७ ८	१४ ५६	१७ २७	४ २६	१ मई
२	० १७ ३५ १०	९ १० १७ १९	११ १९ ३२ ४६	० १९ २६ २८	६ १५ ४७ ५२	१ १३ ११ ३६	१० १६ २८ २५	७ ० ५३ ५८	१५ १४	१४ २४	४ ५६	२
३	० १८ ३३ २२	९ २३ १३ ४	११ २० १८ ४९	० २१ ३६ ५	६ १५ ४० १३	१ १४ २४ २८	१० १६ ३३ ५	७ ० ५० ४७	१५ ३२	१० ४४	५ १३	३
४	० १९ ३१ ३३	१० ५ ४८ २२	११ २१ ४ ४९	० २१ ४५ ४२	६ १५ ३२ ३५	१ १५ ३७ १७	१० १६ ३७ ४०	७ ० ४७ ३६	१५ ५०	६ ४१	५ १६	४
५	० २० २९ ४२	१० १८ ७ १	११ २१ ५० ४७	० २५ ५५ ५	६ १५ २४ ५७	१ १६ ५० ४	१० १६ ४२ ११	७ ० ४४ २५	१६ ७	-२ २७	५ ०	५
६	० २१ २७ ५०	११ ० १२ ४८	११ २२ ३६ ४३	० २८ ३ ५२	६ १५ १७ २१	१ १८ २ ४९	१० १६ ४६ ३७	७ ० ४१ १४	१६ २४	+ १ ४९	४ ३३	६
७	० २२ २५ ५६	११ १२ ९ २५	११ २३ २२ ३६	१ ० ११ ४८	६ १५ ९ ४७	१ १९ १५ ३२	१० १६ ५० ५९	७ ० ३८ ३	१६ ४१	५ ५८	३ ५६	७
८	० २३ २४ १	११ २४ ० ९	११ २४ ८ २७	१ २ १८ ३८	६ १५ २ १४	१ २० २८ १२	१० १६ ५५ १६	७ ० ३४ ५३	१६ ५८	९ ५१	३ १५	८
९	० २४ २२ ५	० ५ ४७ ५८	११ २४ ५४ १५	१ ४ २३ ५८	६ १४ ५४ ४४	१ २१ ४० ४९	१० १६ ५९ २९	७ ० ३१ ४२	१७ १४	१३ २२	२ १३	९
१०	० २५ २० ७	० १७ ३५ ३०	११ २५ ४० १	१ ६ २७ ४०	६ १४ ४७ १७	१ २२ ५३ २३	१० १७ ३ ३६	७ ० २८ ३१	१७ ३०	१६ २०	१ ८	१०
११	० २६ १८ ७	० २९ २५ ५	११ २६ २५ ४४	१ ८ २९ १८	६ १४ ३९ ५२	१ २४ ५ ५६	१० १७ ७ ३९	७ ० २५ २१	१७ ४६	१८ ३७	+० ६	११
१२	० २७ १६ ६	१ ११ १८ ५५	११ २७ ११ २४	१ १० २८ ५०	६ १४ ३२ ३१	१ २५ १८ २५	१० १७ ११ ३८	७ ० २२ ९	१८ १	२० ७	-१ ०	१२
१३	० २८ १४ ३	१ २३ १९ १२	११ २७ ५७ १	१ १२ २५ ५२	६ १४ २५ १३	१ २६ ३० ५२	१० १७ १५ ३१	७ ० १८ ५८	१८ १६	२० ४३	२ ६	१३
१४	० २९ ११ ५८	२ ५ २८ १४	११ २८ ४२ ३६	१ १४ २० २३	६ १४ १७ ५९	१ २७ ४३ १६	१० १७ १९ १९	७ ० १५ ४७	१८ ३१	२० २१	३ १	१४
१५	१ ० ९ ५२	२ १७ ४८ २७	११ २९ २८ ७	१ १६ १२ ३	६ १४ १० ५०	१ २८ ५५ ३८	१० १७ २३ २	७ ० १२ ३६	१८ ४६	१९ १	३ ५०	१५
१६	१ १ ७ ४४	३ ० २२ २९	० ० १३ ३६	१ १८ ० ५५	६ १४ ३ ४५	२ ० ७ ५६	१० १७ २६ ४१	७ ० ९ २५	१९ ०	१६ ४४	४ ३६	१६
१७	१ २ ५ ३५	३ १३ १३ ५	० ० ५९ २	१ १९ ४६ ४२	६ १४ ५६ ४४	२ १ २० ११	१० १७ ३० १४	७ ० ६ १४	१९ १४	१३ ३७	५ १	१७
१८	१ ३ ३ २४	३ २६ २२ ५२	० १ ४४ २५	१ २१ २९ २६	६ १३ ४९ ४९	२ २ ३२ २३	१० १७ ३३ ४२	७ ० ३ ३	१९ २७	९ ४४	५ १४	१८
१९	१ ४ १ १०	४ ९ ५४ ०	० २ २९ ४५	१ २३ ८ ५६	६ १३ ४२ ५९	२ ३ ४४ ३३	१० १७ ३७ ३	६ २९ ५९ ५३	१९ ४०	५ १७	५ १३	१९
२०	१ ४ ५८ ५६	४ २३ ४७ ४६	० ३ १५ २	१ २४ ४५ १४	६ १३ ३६ १५	२ ४ ५६ ३९	१० १७ ४० २१	६ २९ ५६ ४२	१९ ५३	+० २७	४ ४८	२०
२१	१ ५ ५६ ४०	५ ८ ४ ०	० ४ ० १५	१ २६ १८ ११	६ १३ २९ ३७	२ ६ ८ ४१	१० १७ ४३ ३५	६ २९ ५३ ३१	२० ५	-४ ३४	४ ५	२१
२२	१ ६ ५४ २२	५ २२ ४० ३३	० ४ ४५ २६	१ २७ ४७ ४८	६ १३ २३ ४	२ ७ २० ४१	१० १७ ४६ ५३	६ २९ ५० २०	२० १७	९ २६	३ १३	२२
२३	१ ७ ५२ २	६ ७ ३३ ५	० ५ ३० ३४	१ २९ १४ ०	६ १३ १६ ३८	२ ८ ३२ ३७	१० १७ ४९ ४५	६ २५ ४७ ९	२० २९	१३ ५०	-१ ५८	२३
२४	१ ८ ४९ ४१	६ २२ ३५ ३	० ६ १५ ३९	२ ० ३६ ४६	६ १३ १० १९	२ ९ ४४ ३१	१० १७ ५२ ४२	६ २९ ४३ ५९	+२० ४१	-१७ २३	-० ४३	२४

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टैं. टा.) (१ जून को अयनांश २३° । ४७' । १")

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
१९९४ ई०	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	१९९४ ई०
मई २५	१ ९ ४७ १९	७ ७ ३८ २०	० ७ ० ४२	२ १ ५६ १	६ १३ ४ ६	२ १० ५६ २०	१० १७ ५५ ३३	६ २९ ४० ४८	+२० ५२	−१९ ४५	+० ४२	२५ मई
२६	१ १० ४४ ५५	७ २२ ३४ १८	० ७ ४५ ४१	२ ३ ११ ४६	६ १२ ५८ ०	२ १२ ८ ६	१० १७ ५८ १९	६ २९ ३७ ३७	२१ ३	२० ४३	२ ३	२६
२७	१ ११ ४२ ३१	८ ७ १४ ५६	० ८ ३० ३५	२ ४ २३ ५४	६ १२ ५२ १	२ १३ १९ ४८	१० १८ १ ०	६ २९ ३४ २६	२१ १३	२० १४	३ १४	२७
२८	१ १२ ४० ५	८ २१ ३३ ५९	० ९ १५ २८	२ ५ ३३ ५	६ १२ ४६ १०	२ १४ ३१ २८	१० १८ ३ ३५	६ २५ ३१ १५	२१ २३	१८ २६	४ ९	२८
२९	१ १३ ३७ ३८	९ ५ २७ ३७	० १० ० ७	२ ६ ३७ १३	६ १२ ४० २७	२ १५ ४३ ४	१० १८ ६ ४	६ २९ २८ ४	२१ ३३	१५ ३६	४ ४८	२९
३०	१ १४ ३५ ११	९ १८ ५४ ३२	० १० ४५ ०	२ ७ ३८ १६	६ १२ ३४ ५१	२ १६ ५४ ३७	१० १८ ८ २९	६ २९ २४ ५४	२१ ४२	१२ १	५ १०	३०
३१	१ १५ ३२ ४२	१० १ ५५ ४१	० ११ २९ ४७	२ ८ ३५ ३०	६ १२ २९ २३	२ १८ ६ ६	१० १८ १० ४७	६ २९ २१ ४३	२१ ५१	७ ५९	५ १७	३१
जून १	१ १६ ३० १३	१० १४ ३३ ४८	० १२ १४ २८	२ ५ २८ ५०	६ १२ २४ ३	२ १९ १७ ३२	१० १८ १३ ०	६ २९ १८ ३२	२१ ५९	−३ ४२	५ ४	१ जून
२	१ १७ २७ ४३	१० २६ ५२ ४३	० १२ ५९ ५	२ १० १८ ११	६ १२ १८ ५२	२ २० २८ ५५	१० १८ १५ ७	६ २९ १५ २१	२२ ७	+० ३८	४ ४१	२
३	१ १८ २५ १२	११ ८ ५६ ५४	० १३ ४३ ३९	२ ११ ०३ ३०	६ १२ १३ ४९	२ २१ ४० १४	१० १८ १७ ९	६ २९ १२ १०	२२ १५	४ ५१	४ ५	३
४	१ १९ २२ ४०	११ २० ५० ५९	० १४ २८ १०	२ १२ ४४ ४१	६ १२ ८ ५५	२ २२ ५१ ३०	१० १८ १९ ५	६ २९ ९ ०	२२ २३	८ ५०	३ २०	४
५	१ २० २० ८	० २ ३९ २९	० १५ १२ ३८	२ १२ २१ ३८	६ १२ ४ १०	२ २४ २ ४२	१० १८ २० ५५	६ २९ ५ ४९	२२ ३०	१२ २८	२ २३	५
६	१ २१ १७ ३५	० १४ २६ ३४	० १५ ५७ २	२ १२ ५४ १८	६ ११ ५९ ३४	२ २५ १३ ५१	१० १८ २२ ३९	६ २९ २ ३८	२२ ३६	१५ ३५	१ २२	६
७	१ २२ १५ १	० २६ १५ ५४	० १६ ४१ २३	२ १३ २२ ३६	६ ११ ५५ ७	२ २६ २४ ५६	१० १८ २४ १७	६ २८ ५९ २७	२२ ४२	१८ ५	+० २१	७
८	१ २३ १२ २६	१ ८ १० ३५	० १७ २५ ४०	२ १३ ४६ २६	६ ११ ५० ४९	२ २७ ३५ ५७	१० १८ २५ ५०	६ २८ ५६ १६	२२ ४८	१९ ४९	−० ४९	८
९	१ २४ ९ ५१	१ २० १३ ११	० १८ ९ ५४	२ १४ ०५ ४६	६ ११ ४६ ४२	२ २८ ४६ ५५	१० १८ २७ १७	६ २८ ५३ ६	२२ ५३	२० ४०	१ ५३	९
१०	१ २५ ७ १५	२ २ २५ ३७	० १८ ५४ ४	२ १४ २० ३४	६ ११ ४२ ४३	२ २९ ५७ ४८	१० १८ २८ ३८	६ २८ ४९ ५५	२२ ५८	२० ३४	२ ४९	१०
११	१ २६ ४ ३८	२ १४ ४९ २५	० १९ ३८ ११	२ १४ ३० ४१	६ ११ ३८ ५५	३ १ ८ ३८	१० १८ २९ ५३	६ २८ ४६ ४४	२३ ३	१९ २८	३ ४३	११
१२	१ २७ २ ०	२ २७ २५ ३८	० २० २२ १४	२ १४ ३६ २७	६ ११ ३५ १७	३ २ १९ २४	१० १८ ३१ २	६ २८ ४३ ३३	२३ ७	१७ २४	४ २७	१२
१३	१ २७ ५९ २२	३ १० १५ १०	० २१ ६ १४	२ १४ ३७ ३३	६ ११ ३१ ४८	३ ३ ३० ५	१० १८ ३२ ५	६ २८ ४० २२	२३ ११	१४ २७	४ ५५	१३
१४	१ २८ ५६ ४२	३ २३ १८ ४४	० २१ ५० ९	२ १४ ३४ ०९	६ ११ २८ ३०	३ ४ ४० ४२	१० १८ ३३ २	६ २८ ३७ १२	२३ १४	१० ४६	५ १४	१४
१५	१ २९ ५४ २	४ ६ ३७ ०	० २२ ३४ १	२ १४ २६ २१	६ ११ २५ २२	३ ५ ५१ १५	१० १८ ३३ ५३	६ २८ ३४ १	२३ १७	६ २९	५ १३	१५
१६	२ ० ५१ २०	४ २० १० ३२	० २३ १७ ५०	२ १४ १४ २०	६ ११ २२ २४	३ ७ १ ४३	१० १८ ३४ ३९	६ २८ ३० ५१	२३ २०	+१ ४८	४ ५३	१६
१७	२ १ ४८ ३८	५ ३ ५९ ४३	० २४ १ ३४	२ १३ ५८ १६	६ ११ १९ ३७	३ ८ १२ ७	१० १८ ३५ १८	६ २८ २७ ४०	२३ २२	−३ ४	४ १८	१७
१८	२ २ ४५ ५५	५ १८ ४ २४	० २४ ४५ १५	२ १३ ३७ २२	६ ११ १७ ०	३ ९ २२ २५	१० १८ ३५ ५१	६ २८ २४ २९	२३ २४	१० ५३	३ २३	१८
१९	२ ३ ४३ ११	६ २ २३ ५३	० २५ २८ ५१	२ १३ १४ ५९	६ ११ १४ ३४	३ १० ३२ ३८	१० १८ ३६ १९	६ २८ २१ १९	२३ २५	१२ २०	२ २४	१९
२०	२ ४ ४० २६	६ १६ ५५ ५	० २६ १२ २५	२ १२ ४८ २७	६ ११ १२ १८	३ ११ ४२ ४७	१० १८ ३६ ४०	६ २८ १८ ८	२३ २६	१६ ८	+१ ५	२०
२१	२ ५ ३७ ४०	७ १ ३५ ८	० २६ ५५ ५४	२ १२ १९ १२	६ ११ १० १३	३ १२ ५२ ५१	१० १८ ३६ ५६	६ २८ १४ ५७	२३ २६	१८ ५६	० १७	२१
२२	२ ६ ३४ ५४	७ १६ १८ २८	० २७ ३९ ३०	२ ११ ४७ ४७	६ ११ ८ १८	३ १४ २ ४९	१० १८ ३७ ५	६ २८ ११ ४६	२३ २६	२० २९	१ ३०	२२
२३	२ ७ ३२ ७	८ ० ५८ ३८	० २८ २२ ४१	२ ११ १४ २६	६ ११ ६ ३४	३ १५ १२ ४२	१० १८ ३७ ९	६ २८ ८ ३५	२३ २६	२० ३८	२ ४७	२३
२४	२ ८ २९ २०	८ १५ २८ ४५	० २९ ६ ०	२ १० ३९ ५९	६ ११ ५ १	३ १६ २२ ३०	१० १८ ३७ ७	६ २८ ५ २४	२३ २५	१९ २४	३ ५०	२४
२५	२ ९ २६ ३३	८ २९ ४२ २९	० २९ ४९ १४	२ १० ४ ५६	६ ११ ३ ३८	३ १७ ३२ १२	१० १८ ३६ ५८	६ २८ २ १४	२३ २४	१६ ५८	४ ३०	२५
२६	२ १० २३ ४५	९ १३ ३४ ५६	१ ० ३२ २५	२ ९ २९ ५२	६ ११ २ २७	३ १८ ४१ ४९	१० १८ ३६ ४४	६ २७ ५९ ३	२३ २२	१३ ३७	५ ५	२६
२७	२ ११ २० ५७	९ २७ ३ १७	१ १ १५ ३२	२ ८ ५५ २४	६ ११ १ २५	३ १९ ५१ २०	१० १८ ३६ २४	६ २७ ५५ ५२	२३ २०	९ ३९	५ १७	२७
२८	२ १२ १८ ९	१० १० ७ ०	१ १ ५८ ३५	२ ८ २२ ७	६ ११ ०० ३६	३ २१ ० ४६	१० १८ ३५ ५८	६ २७ ५२ ४१	२३ १८	५ २१	५ ४	२८
२९	२ १३ १५ २२	१० २२ ४७ ३५	१ २ ४१ ३५	२ ७ ५० ३६	६ १० ५९ ५७	३ २२ १० ७	१० १८ ३५ २६	६ २७ ४९ ३०	+२३ १५	−० ५६	−४ ४९	२९

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टैं. टा.) (१ जुलाई को अयनांश २३° । ४७' । ५", १ अगस्त को अवनांश २३° । ४७' । ८")

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
१९९४ ई०	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	१९९४ ई०
जून ३०	२ १४ १२ ३४	११ ५ ८ १३	१ ३ २४ ३०	२ ७ २१ २४	६ १० ५९ २७	३ २३ १९ २१	१० १८ ३४ ४८	६ २७ ४६ १९	+२३ १२	+३ २४	+४ ११	३० जून
जुलाई १	२ १५ ९ ४६	११ १७ १३ १०	१ ४ ७ २२	२ ६ ५५ ०	६ १० ५९ ९	३ २४ २८ ३०	१० १८ ३४ ५	६ २७ ४३ ९	२३ ८	७ ३२	३ २७	१ जुलाई
२	२ १६ ६ ५९	११ २९ ७ २४	१ ४ ५० १०	२ ६ ३१ ५३	६ १० ५९ २	३ २५ ३७ ३३	१० १८ ३३ १५	६ २७ ३९ ५८	२३ ४	११ १८	२ ३८	२
३	२ १७ ४ ११	० १० ५६ ५	१ ५ ३२ ५५	२ ६ १२ २९	६ १० ५९ ५	३ २६ ४६ ३०	१० १८ ३२ २०	६ २७ ३६ ४७	२३ ०	१४ ३७	१ ३२	३
४	२ १८ १ २४	० २२ ४४ १८	१ ६ १५ ३५	२ ६ ५७ ७	६ १० ५९ २०	३ २७ ५५ २१	१० १८ ३१ १८	६ २७ ३३ ३६	२२ ५५	१७ १९	-० ३४	४
५	२ १८ ५८ ३७	१ ४ ३६ ४४	१ ७ ५८ ११	२ ५ ४६ ७	६ १० ५९ ४५	-३ २९ ४ ६	१० १८ ३० ११	६ २७ ३० २५	२२ ५०	१९ १९	-० ३२	५
६	२ १९ ५५ ५०	१ १६ ३७ ३०	१ ७ ४० ४३	२ ५ ३९ ४३	६ ११ ० २१	४ ० १२ ४५	१० १८ २८ ५८	६ २७ २७ १४	२२ ४४	२० २८	१ ४२	६
७	२ २० ५३ ३	१ २८ ४९ ५१	१ ८ २३ ११	२ ५ ३८ ८	६ ११ १ ८	४ १ २१ १७	१० १८ २७ ४०	६ २७ २४ ४	२२ ३८	२० ४१	२ ३३	७
८	२ २१ ५० १७	२ ११ १६ ६	१ ९ ५ ३५	२ ५ ४१ ३१	६ ११ २ ६	४ २ २९ ४३	१० १८ २६ १५	६ २७ २० ५३	२२ ३१	१९ ५४	३ ४०	८
९	२ २२ ४७ ३१	२ २३ ५७ २९	१ ५ ४७ ५५	२ ५ ४९ ५९	६ ११ ३ १५	४ ३ ३८ २	१० १८ २४ ४५	६ २७ १७ ४२	२२ २४	१८ ६	४ २१	९
१०	२ २३ ४४ ४४	३ ६ ५८ १०	१ १० ३० १०	२ ६ ३ ३७	६ ११ ४ ३४	४ ४ ४६ १४	१० १८ २३ ९	६ २७ १४ ३१	२२ १७	१५ २३	४ ४४	१०
११	२ २४ ४१ ५८	३ २० ५ २७	१ ११ १२ २१	२ ६ २२ २८	६ ११ ६ ४	४ ५ ५४ १९	१० १८ २१ २८	६ २७ ११ २०	२२ १०	११ ५०	४ ५४	११
१२	२ २५ ३९ १२	४ ३ २९ ५६	१ ११ ५४ २८	२ ६ ४६ ३३	६ ११ ७ ४५	४ ७ २ १६	११० १८ १९ ४१	६ २७ ८ १०	२२ २	७ ३९	५ ०	१२
१३	२ २६ ३६ २६	४ १७ ५ ५८	१ १२ ३६ ३०	२ ७ १५ ५३	६ ११ ९ ३६	४ ८ १० ६	१० १८ १७ ४९	६ २७ ४ ५९	२१ ५३	+३ १	४ ४९	१३
१४	२ २७ ३३ ४०	५ ० ५१ ५५	१ १३ १८ २८	२ ७ ३० २६	६ ११ ११ ३८	४ ९ १७ ४९	१० १८ १५ ५१	६ २७ १ ४८	२१ ४४	-१ ४९	३ ५०	१४
१५	२ २८ ३० ५४	५ १४ ४६ २४	१ १४ ० २२	२ ८ ३० ११	६ ११ १३ ५०	४ १० २५ २३	१० १८ १३ ४७	६ २६ ५८ ३७	२१ ३५	६ ३६	२ ५१	१५
१६	२ २९ २८ ८	५ २८ ४८ २४	१ १४ ४२ ११	२ ९ १५ ५	६ ११ १६ १३	४ ११ ३२ ४९	१० १८ ११ ३९	६ २६ ५५ २६	२१ २६	११ ६	२ ३०	१६
१७	३ ० २५ २२	६ १२ ५६ ५८	१ १५ २३ ५६	२ १० ५ ६	६ ११ १८ ४६	४ १२ ४० ७	१० १८ ९ २५	६ २६ ५२ १५	२१ १६	१५ १	१ १४	१७
१८	३ १ २२ ३६	६ २७ ११ ०	१ १६ ५ ३७	२ ११ ० ११	६ ११ २१ ३०	४ १३ ४७ १६	१० १८ ७ ६	६ २६ ४९ ५	२१ ६	१८ ४	-० ४	१८
१९	३ २ १९ ५०	७ ११ २८ ४५	१ १६ ४७ १३	२ १२ ० १४	६ ११ २४ २३	४ १४ ५४ १६	१० १८ ४ ४२	६ २६ ४५ ५४	२० ५६	२० १	+१ ११	१९
२०	३ ३ १७ ५	७ २५ ४७ ३०	१ १७ २७ ४४	२ १३ ५ १५	६ ११ २७ २७	४ १६ १ ६	१० १८ २ १२	६ २६ ४२ ४३	२० ४५	२० ४०	२ २७	२०
२१	३ ४ १४ १९	८ १० ३ २९	१ १८ १० १२	२ १४ १५ ४	६ ११ ३० ४१	४ १७ ७ ४८	१० १७ ५९ ३८	६ २६ ३९ ३२	२० ३३	१९ ५९	३ ३५	२१
२२	३ ५ ११ ३४	८ २४ १२ ८	१ १८ ५१ ३५	२ १५ २९ ४२	६ ११ ३४ ५	४ १८ १४ २०	१० १७ ५६ ५९	६ २६ ३६ २२	२० २१	१८ ३	४ १३	२२
२३	३ ६ ८ ५०	९ ८ ८ ३५	१ १९ ३२ ५३	२ १६ ४८ ५०	६ ११ ३७ ३९	४ १९ २० ४२	१० १७७ ५४ १५	६ २६ ३३ ११	२० ९	१५ ५	४ ५८	२३
२४	३ ७ ६ ७	९ २१ ४८ ३१	१ २० १४ ७	२ १८ १२ ५०	६ ११ ४१ २२	४ २० २६ ५४	१० १७७ ५१ २६	६ २६ ३० ०	१९ ५७	११ २२	५ १५	२४
२५	३ ८ ३ २३	१० ५ ८ ४६	१ २० ५५ १७	२ १९ ४१ ४	६ ११ ४५ १६	४ २१ ३२ ५६	१० १७ ४८ ३३	६ २६ २६ ४९	१९ ४५	७ ९	५ ०	२५
२६	३ ९ ० ४१	१० १८ ७ ५४	१ २१ ३६ २३	२ २१ १३ ३९	६ ११ ४९ १९	४ २२ ३८ ४८	१० १७ ४५ ३५	६ २६ २३ ३८	१९ ३२	-२ ४४	४ ५१	२६
२७	३ ९ ५७ ५९	११ ० ४६ २०	१ २२ १७ २४	२ २२ ५० १७	६ ११ ५३ ३१	४ २३ ४४ २९	१० १७ ४२ ३२	६ २६ २० २७	१९ १९	+१ ४२	३ ४८	२७
२८	३ १० ५५ १९	११ १३ ६ १३	१ २२ ५८ २१	२ २४ ३८ ५५	६ ११ ५७ ५४	४ २४ ४९ ५९	१० १७ ३९ २५	६ २६ १७ १७	१९ ५	५ ५७	३ ३०	२८
२९	३ ११ ५२ ३९	११ २५ ११ ०	१ २३ ३९ १३	२ २६ १५ ८	६ १२ २ २६	४ २५ ५५ १८	१० १७ ३६ १३	६६ २६ १४ ६	१८ ५१	९ ५३	२ ४२	२९
३०	३ १२ ५० ०	० ७ ५ १९	१ २४ २० १	२ २८ २ ५४	६ १२ ७ ७	४ २७ ० २७	१० १७ ३२ ५७	६ २६ १० ५५	१८ ३७	१३ २३	१ ४२	३०
३१	३ १३ ४७ २३	० १८ ५४ १९	१ २५ ० ४४	२ २९ ५३ ४३	६ १२ ११ ५८	४ २८ ५ २४	१० १७ २९ ३७	६ २६ ७ ४४	१८ २३	१६ १९	+० २१	३१
अगस्त १	३ १४ ४४ ४७	१ ० ४३ २८	१ २५ ४१ २२	३ १ ४७ २९	६ १२ १६ ५८	४ २९ १० ९	१० १७ २६ १२	६ २६ ४ ३३	१८ ८	१८ ३३	-० २१	१ अगस्त
२	३ १५ ४२ ११	१ १२ ३८ ८	१ २६ २१ [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	६ २६ १ २२	१७ ५३	२० १	१ ३२	२
३	३ १६ ३९ ३७	१ २४ ४३ १६	१ २७ २ २६	३ ५ ४२ ८	६ १२ २७ २५	५ १ १९ २	१० १७ १९ ११	६ २५ ५८ १२	१७ ३७	२० ३४	२ २९	३
४	३ १७ ३७ ३	२ ७ ३ ७	१ २७ ४२ ५०	३ ७ ४२ २१	६ १२ ३२ ५३	५ २ २३ १२	१० १७ १५ ३५	६ २५ ५५ १	+१७ २१	+२० १०	३ १६	४

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टं. टा.) (१ सितम्बर का अयनांश २३° । ४७' । १२")

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
१९९४ ई०	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	१९९४ ई०
अगस्त ५	३ १८ ३४ ३२	२ १९ ४० ४८	१ २८ २३ १०	३ ९ ४४ ९	६ १२ ३८ २९	५ ३ २७ ७	१० १७ ११ ५५	६ २५ ५१ ५०	+१७ ६	-१८ ४५	-४ ११	५ अगस्त
६	३ १९ ३२ ०	३ २ ३८ १	१ २९ ३ २५	३ ११ ४७ ५५	६ १२ ४४ १४	५ ४ ३० ४९	१० १७ ८ ११	६ २५ ४८ ३९	१६ ४९	१६ २१	४ ४७	६
७	३ २० ३९ ३०	३ १५ ५४ ४८	१ २९ ४३ ३५	३ १३ ५० ३१	६ १२ ५० ९	५ ५ ३४ १८	१० १७ ४ २४	६ २५ ४५ २८	१६ ३३	१३ ४	४ ५६	७
८	३ २१ २७ २	३ २९ २९ २९	२ ० २३ ४१	३ १५ ५४ ३६	६ १२ ५६ १२	५ ६ ३७ ५२	१० १७ ० ३३	६ २५ ४२ १७	१६ १६	५ २	५ १३	८
९	३ २२ २४ ३४	४ १३ १९ ३	२ १ ३ ४१	३ १७ ५८ ४९	६ १३ २ २४	५ ७ ४० ३२	१० १६ ५६ ३९	६ २५ ३९ ७	१५ ५९	-४ २८	४ ५८	९
१०	३ २३ २२ ७	४ २७ १९ २९	२ १ ४३ ३५	३ २० २ ५७	६ १३ ८ ४४	५ ८ ४३ १७	१० १६ ५२ ४२	६ २५ ३५ ५६	११ ४२	-० २४	४ १६	१०
११	३ २४ १९ ४१	५ ११ २६ ४०	२ २ २३ २५	३ २२ ६ ४२	६ १३ १५ १३	५ ९ ४५ ४६	१० १६ ४८ ४१	६ २५ ३२ ४५	१५ २४	५ १७	३ ३६	११
१२	३ २५ १७ १६	५ २५ ३६ ५२	२ २ ३ १०	३ २४ ९ ५६	६ १३ २१ ५०	५ १० ४८ ०	१० १६ ४४ ३८	६ २५ २९ ३४	१५ ६	५ ५५	२ ४०	१२
१३	३ २६ १४ ५२	६ ९ ४७ १६	२ ३ ४२ ४९	३ १६ १२ २३	६ १३ २८ ३५	५ ११ ४९ ५६	१० १६ ४० ३२	६ २५ २६ २३	१४ ४८	१३ ५९	१ २१	१३
१४	३ २७ १२ २८	६ २३ ५६ ०	२ ४ २२ २४	३ २८ १३ ५९	६ १३ ३५ २९	५ १२ ५१ ३६	१० १६ ३६ २३	६ २५ २३ १३	१४ ३०	१७ १४	-० ५	१४
१५	३ २८ १० ६	७ ८ १ ५६	२ ५ १ ५३	४ ० १४ ५१	६ १३ ४२ ३१	५ १३ ५२ ५८	१० १६ ३२ १२	६ २५ २० २	१४ ११	१९ २६	+१ ११	१५
१६	३ २९ ७ ४५	७ २२ ४ १५	२ ५ ४१ १७	४ २ १३ ५९	६ १३ ४९ ४०	५ १४ ५४ २	१० १६ २७.५८	६ २५ १६ ५१	१३ ५३	२० २६	२ १६	१६
१७	४ ० ५ २४	८ ६ १ ५६	२ ६ २० ३५	४ ४ १२ १२	६ १३ ५६ ५८	५ १५ ५४ ४५	१० १६ २३ ४२	६ २५ १३ ४०	१३ ३४	२० ९	३ २७	१७
१८	४ १ ३ ५	८ १९ ५३ ३२	२ ६ ५२ ४५	४ ६ ९ १२	६ १४ ४ २३	५ १६ ५५ १०	१० १६ १९ २४	६ २५ १० २९	१३ १५	१८ ३९	४ १५	१८
१९	४ २ ० ४६	९ ३ ३६ ५६	२ ७ ३८ ५२	० ८ ४ ५२	६ १४ ११ ५६	५ १७ ५५ १५	१० १६ १५ ४	६ २५ ७ १८	१२ ५५	१६ ६	४ ४८	१९
२०	४ २ ५८ २९	९ १७ ९ ३६	२ ८ १८ ०	४ ९ ५९ १५	६ १४ १९ ३७	५ १८ ५४ ५९	१० १६ १० ४२	६ २५ ४ ८	१२ ३५	१२ ४२	५ १०	२०
२१	४ ३ ५६ १४	१० ० २८ ५५	२ ८ ५६ ५८	४ ११ ५२ ११	६ १४ २७ २५	५ १९ ५४ २०	१० १६ ६ १९	६ २५ ० ५७	१२ १६	८ ४३	५ १४	२१
२२	४ ४ ५३ ५९	१० १३ ३२ ४५	२ ९ ३५ ४८	५ १३ ४३ ४९	६ १४ ३५ २०	५ २० ५३ २०	१० १६ १ ५३	६ २४ ५७ ४६	११ ५६	-४ २५	४ ४५	२२
२३	४ ५ ५१ ४६	१० २९ १९ ४९	२ १० १४ ३७	४ १५ ३४ २	६ १४ ४३ २३	५ २१ ५१ ५७	१० १५ ५७ २६	६ २४ ५४ ३५	११ ३६	+० ०	४ २४	२३
२४	४४ ६ ४९ ३४	११ ८ ५० ६	२ ११ ५३ २०	४ १७ २२ ५५	६ १४ ५१ ३५	५ २२ ५० ११	१० १५ ५२ ५८	६ २४ ५१ २५	११ १५	४ २०	३ ४६	२४
२५	४ ७ ४७ २५	११ २१ ४ ५५	२ १२ ३१ ५५	४ १९ १० २५	६ १४ ५९ ५०	५ २३ ४८ ०	१० १५ ४८ २८	६ २४ ४८ १४	१० ५५	८ २३	२ ४५	२५
२६	४ ८ ४५ १७	० ३ ६ ५३	२ १३ १० २५	४ २० ५६ ५६	६ १५ ८ १४	५ २४ ४५ २५	१० १५ ४३ ५८	६ २४ ४५ ३	१० ३४	१२ ३	१ ५२	२६
२७	४ ९ ४३ १०	० १४ ५९ ४१	२ १२ ४८ ४९	४ २२ ४१ २४	५ १५ १६ ४५	५ २५ ४२ २४	१० १५ ३९ २६	६ २४ ४१ ५२	१० १३	१५ १०	+० ५२	२७
२८	४ १० ४१ ५	० २६ ४७ ५३	२ १३ २६ १७	४ २४ २४ ५४	६ १५ २५ २३	५ २६ ३८ ५६	१० १५ ३४ ५३	६ २४ ३८ ४१	९ ५२	१७ ३९	-० १६	२८
२९	४ ११ ३९ ३	१ ८ ३६ ४०	१ १४ ५ २८	४ २६ ७ ५	६ १५ ३४ ८	५ २७ ३५ १	१० १५ ३० २०	६ २४ ३५ ३०	९ ३१	१९ २२	१ २६	२९
३०	४ १२ ३७ १	१ २० ३१ २७	२ १४ ४३ ३८	४ २७ ४७ ५९	६ १५ ४३ ०	५ २८ ३० २७	१० १५ २५ ४४	६ २४ ३२ १९	९ १०	२० १५	२ १८	३०
३१	४ १३ ३५ २	२ २ ३७ ३९	२ १५ २१ ४८	५ २९ २७ ५५	६ १५ ५१ ५८	५ २९ २५ ४५	१० १५ २१ १२	६ २४ २९ ९	८ ४८	२० १२	३ ११	३१
सितंबर १	४ १४ ३३ ५	२ १५ ० १४	२ १६ ५९ ५२	५ १ ५ ५६	६ १६ २ ३	६ ० २० २३	१० १५ १६ ३७	६ २४ २५ ५८	८ २७	१९ १२	३ ५७	१ सितंबर
२	४ १५ ३१ १०	२ २७ ४३ २०	२ १७ ३७ ५५	५ २ ४३ १	६ १६ १० १४	६ १ १४ २८	१० १५ १२ २	६ २४ २२ ४७	८ ५	१७ १८	४ ४१	२
३	४ १६ २९ १६	३ १० ४९ ३९	२ १७ १५ ५५	५ ४ १८ ५२	६ १६ १९ ३२	६ २ ८ २	१० १५ ७ २८	६ २४ १९ ३६	७ ४३	१४ १९	५ ५	३
४	४ १७ २७ २४	३ २४ २१ ०	२ १७ ५३ ४९	५ ५ ५३ २९	६ १६ २८ ५६	६ ३ १ २	१० १५ २ ५३	६ २४ १६ २४	७ २१	१० ३५	५ १५	४
५	४ १८ २५ ३४	४ ८ १३ १	२ १८ ३० ३५	५ ७ २६ ५२	६ १६ ३८ २४	६ ३ ५३ २८	१० १४ ५८ १९	६ २४ १३ १५	६ ५९	६ १२	५ ५	५
६	४ १९ २३ ४६	४ २२ २५ १	२ १९ ७ ५७	५. ८ ५९ १	६ १६ ४८ ३	६ ४ ४५ १७	१० १४ ५३ ४२	६ २४ १० ४	६. ३७	+१ २२	४ ३०	६
७	४ २० २२ ०	५ ६ ५० ३४	२ १९ ४५ १८	५ १० २९ ५८	६ १६ ५७ ४६	६ ५ ३६ २८	१० १४ ४९ १२	६ २४ ६ ५३	६ १४	-३ ३६	३ ४०	७
८	४ २१ २० १५	५ २१ २३ १५	२ २० २२ ३२	५ ११ ५९ ४०	६ १७ ७ ३४	६ ६ २७ १	१० १४ ४४ ४०	६ २४ ३ ४२	५ ५२	८ २५	२ ५१	८
९	४ २२ १८ ३२	६ ५ ५६ ४४	२ २० ५९ ४१	५ १३ २८ ९	६ १७ १७ २९	६ ७ १६ ५३	१० १४ ४० ८	६ २४ ० ३२	+५ २९	-१२ ४५	-१ ३२	९

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टैं. टा.) (१ अक्तूबर को अयनांश २३° । ४७′ । १६″)

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
१९९४ ई०	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	१९९४ ई०
सितंबर १०	४ २३ १६ ५०	६ २० २५ ३८	२ २१ ३६ ४२	५ १४ ५५ १४	६ १७ २७ २९	६ ८ ६ २	१० १४ ३५ ३८	६ २३ ५७ २१	+ ५ ६	−१६ १७	−० १२	१० सितंबर
११	४ २४ १५ १०	७ ४ ४६ ६	२ २२ १३ ३७	५ १६ २१ २३	६ १७ ३७ ३५	६ ८ ५४ २७	१० १४ ३१ ९	६ २३ ५४ १०	४ ४४	१८ ४८	+१ ०	११
१२	४ २५ १३ ३१	७ १८ ५५ ४९	२ २२ ५० २६	५ १७ ४६ ६	६ १७ ४७ ४६	६ ९ ४२ ७	१० १४ २६ ४१	६ २३ ५१ १०	४ २१	२० ५	२ १३	१२
१३	४ २६ ११ ५४	८ २ ५३ ४२	२ २३ २७ ७	५ १९ ९ ३१	६ १७ ५८ ३	६ १० २८ ५९	१० १४ २२ १५	६ २३ ४७ ४९	३ ५८	२० ६	३ १८	१३
१४	४ २७ १० १९	८ १६ ३९ २९	२ २४ ३ ४२	५ २० ३१ ३६	६ १८ ८ २५	६ ११ १४ ५९	१० १४ १७ ५०	६ २३ ४४ ३८	३ ३५	१८ ५४	४ १२	१४
१५	४ २८ ८ ४५	९ ० १३ ११	२ २४ ४० ११	५ २१ ५२ २०	६ १८ १८ ५२	६ १२ ० ८	१० १४ १३ २७	६ २३ ४१ २७	३ १२	१६ ३९	४ ५०	१५
१६	४ २९ ७ १२	९ १३ ३४ ४७	२ २५ १६ ३२	५ २३ ११ ४७	६ १८ २९ २५	६ १२ ४४ २३	१० १४ ९ ६	६ २३ ३८ १७	२ ४९	१३ ३३	५ ३	१६
१७	५ ० ५ ४२	९ २६ ४४ ७	२ २५ ५२ ४७	५ २४ २९ ३४	६ १८ ४० ८	६ १३ २७ ४३	१० १४ ४ ४८	६ २३ ३५ ६	२ २६	९ ४९	५ १५	१७
१८	५ १ ४ १३	१० ९ ४० ४७	२ २६ २८ ५५	५ २५ ४५ ५७	६ १८ ५० ४४	६ १४ १० ३२	१० १४ ० ३१	६ २३ ३१ ५५	२ ३	५ ४१	५ ३	१८
१९	५ २ २ ४६	१० २२ २४ २८	२ २७ ४ ५६	५ २७ ० ४७	६ १९ १ ३३	६ १४ ५१ ५२	१० १३ ५६ १७	६ २३ २८ ४४	१ ३९	−१ २२	४ २५	१९
२०	५ ३ १ २१	११ ४ ५३ ४	२ २७ ४० ५०	५ २८ १३ ५८	६ १९ १२ २५	६ १५ ३१ ३२	१० १३ ५२ ५	६ २३ २५ ३३	१ १६	+२ ५६	३ ५८	२०
२१	५ ३ ५९ ५७	११ १७ १३ १	२ २८ १६ ३७	५ २९ २५ २७	६ १९ २३ २२	६ १६ १० ५०	१० १३ ४७ ५५	६ २३ २२ २२	० ५३	७ ३	३ २	२१
२२	५ ४ ५८ ३६	११ २९ १९ २६	२ २८ ५२ १७	६ ० ३५ ६	६ १९ ३४ २४	६ १६ ४८ ५२	१० १३ ४३ ४९	६ २३ १९ १२	० ३०	१० ४९	१ ५८	२२
२३	५ ५ ५७ १७	० ११ १६ १६	२ २९ २७ ४९	६ १ ४२ ५०	६ १९ ४५ ३१	६ १७ २५ ४३	१० १३ ३९ ४५	६ २३ १६ १	+० ६	१४ ६	+१ ५	२३
२४	५ ६ ५६ ५	० २३ ६ १९	३ ० ३ १५	६ २ ४८ ३०	६ १९ ५६ ४२	६ १८ १ २२	१० १३ ३५ ४४	६ २३ १२ ५०	−० १७	१६ ४६	−० २	२४
२५	५ ७ ५४ ४५	१ ४ ५३ ११	३ ० ३८ ३३	६ ३ ५२ ०	६ २० ७ ५७	६ १८ ३५ ४४	१० १३ ३१ ४६	६ २३ ९ ३९	० ४१	१८ ४१	१ ११	२५
२६	५ ८ ५३ ३३	१ १६ ४१ ८	३ १ १३ ४४	६ ४ ५३ १०	६ २० १९ १७	६ १९ ८ ४५	१० १३ २७ ५१	६ २३ ६ २८	१ ४	१९ ५१	२ ३	२६
२७	५ ९ ५२ २३	१ २८ ३४ ५९	३ १ ४८ ४६	६ ५ ५१ ४८	६ २० ३० ४१	६ १९ ४० २५	१० १३ २४ ०	६ २३ ३ १७	१ २७	२० ६	३ १	२७
२८	५ १० ५१ १४	२ १० ३९ ५०	३ २ २३ ४२	६ ६ ४७ ४४	६ २० ४२ ९	६ २० १० ३६	१० १३ २० १२	६ २३ ० ७	१ ५१	१९ २७	३ ५५	२८
२९	५ ११ ५० ८	२ २३ ० ४९	३ २ ५८ २९	६ ७ ४० ४४	६ २० ५३ ४२	६ २० ३९ २६	१० १३ १६ २७	६ २२ ५६ ५६	२ १४	१७ ५२	४ ३३	२९
३०	५ १२ ४९ ४	३ ५ ४२ ३६	३ ३ ३३ ८	६ ८ ३० ३३	६ २१ ५ १९	६ २१ ६ ३८	१० १३ १२ ४७	६ २२ ५३ ४५	२ ३७	१५ २२	५ १	३०
अक्टूबर १	५ १३ ४८ ३	३ १८ ४८ ५५	३ ४ ७ ४०	६ ९ १६ ५६	६ २१ १६ ५९	६ २१ ३२ १६	१० १३ ९ १०	६ २२ ५० ३५	३ ०९	१२ ३	५ ११	१ अक्तूबर
२	५ १४ ४७ ४	४ २ २१ ५७	३ ४ ४२ २	६ ९ ५९ ३३	६ २१ २८ ४४	६ २१ ५६ १५	१० १३ ५ ३७	६ २२ ४७ २४	३ २४	८ ०	५ ०९	२
३	५ १५ ४६ ७	४ १६ ११ ३९	३ ५ १६ १७	६ १० ३८ ६	६ २१ ४० ३२	६ २२ १८ ३२	१० १३ २ ७	६ २२ ४४ १३	३ ४७	+३ २४	४ ४९	३
४	५ १६ ४५ १२	५ ० ४५ २५	३ ५ ५० २३	६ ११ १२ १२	६ २१ ५२ २४	६ २२ ३९ २	१० १२ ५८ ४३	६ २२ ४१ २	४ १०	−१ ३२	४ २	४
५	५ १७ ४४ २०	५ १५ २८ ०	३ ६ २४ १९	६ ११ ४१ २९	६ २२ ४ २०	६ २२ ५७ ४१	१० १२ ५५ २२	६ २२ ३७ ५१	४ ३३	६ २९	३ १०	५
६	५ १८ ४३ २९	६ ० २२ ३	३ ६ ५८ ७	६ १२ ५ २९	६ २२ १६ २०	६ २३ १४ २८	१० १२ ५२ ६	६ २२ ३४ ४१	४ ५७	११ ६	१ ५७	६
७	५ १९ ४२ ४१	६ १५ १९ १६	३ ७ ३१ ४६	६ १२ २३ ४८	६ २२ २८ २३	६ २३ २९ १६	१० १२ ४८ ५४	६ २२ ३१ ३०	५ २०	१५ ३	−० ३३	७
८	५ २० ४१ ५४	७ ० ११ ३५	३ ८ ५ १६	६ १२ ३५ ५६	६ २२ ४० २९	६ २३ ४२ २	१० १२ ४५ ४७	६ २२ २८ १९	५ ४३	१७ ५९	+० ४४	८
९	५ २१ ४१ ९	७ १४ ५२ १५	३ ८ ३८ ३६	६ १२ ४१ २६	६ २२ ५२ ३९	६ २३ ५२ ४२	१० १२ ४२ ४४	९ २२ २५ ८	६ ५	१५ ४०	१ ५७	९
१०	५ २२ ४० २६	७ २९ १६ ३३	३ ९ ११ ४७	६ १२ ३९ ४८	६ २३ ४ ५२	६ २४ १ १४	१० १२ ३९ ४६	६ २२ २१ ५७	६ २८	२० २	३ १४	१०
११	५ २३ ३९ ४५	८ १३ २१ ५३	३ ९ ४४ ४८	६ १२ ३० ३९	६ २३ १७ ८	६ २४ ७ ३४	१० १२ ३६ ५३	६ २२ १८ ४७	५ ५१	१९ ७	४ ५	११
१२	५ २४ ३९ ५	८ २७ ७ २६	३ १० १७ ४०	६ १२ १३ ३१	६ २३ २९ २७	६ २४ ११ ३६	१० १२ ३४ ५	६ २२ १५ ३६	७ १४	१७ ५	४ ४५	१२
१३	५ २५ ३८ २८	९ १० ३३ ४५	३ १० ५० [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	६ २२ १२ २५	७ ३६	१४ १०	५ ९	१३
१४	५ २६ ३७ ५२	९ २३ ४२ ११	३ ११ २२ ५३	६ ११ १४ ३१	६ २३ ५४ १३	६ २४ १२ ४३	१० १२ २८ ४४	६ २२ ९ १४	७ ५९	१० ३६	५ १४	१४
१५	५ २७ ३७ १७	१० ६ ३४ २७	३ ११ ५५ १५	६ १० ३२ ३३	६ २४ ६ ४१	६ २४ ९ ४३	१० १२ २६ १२	६ २२ ६ ३	−८ २१	−६ ३६	+५ ५	१५

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टैं. टा.) (१ नवम्बर को अयनांश २३° । ४७' । २०")

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
१९९४ ई०	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	१९९४ ई०
अक्टूबर १६	५ २८ ३६ ४५	१० १९ १२ २२	३ १२ २७ २७	६ ९ ४२ २८	६ २४ १९ १२	६ २४ ४ १६	१० १२ २३ ४४	६ २२ २ ५२	−८ ४३	−२ २४	+४ ३८	१६ अक्टूबर
१७	५ २९ ३६ १४	११ १ ३७ ४१	३ १२ ५९ २८	६ ८ ४५ ०२	६ २४ ३१ ४५	६ २३ ५६ २४	१० १२ २१ २२	६ २१ ५९ ४२	९ ५	+१ ५१	४ १	१७
१८	६ ० ३५ ४६	११ १३ ५२ ३	३ १३ ३१ १९	६ ७ ४० ५८	६ २४ ४४ २०	६ २३ ४६ ६	१० १२ १९ ५	६ २१ ५६ ३१	९ २७	५ ५८	३ १४	१८
१९	६ १ ३५ १९	११ २५ ५७ ३	३ १४ ३ ०	६ ६ ३१ ३८	६ २४ ५६ ५८	६ २३ ३३ २४	१० १२ १६ ५४	६ २१ ५३ २०	९ ४९	९ ४८	२ १४	१९
२०	६ २ ३४ ५८	० ७ ५४ २१	३ १४ ३४ २९	६ ५ १८ ४७	६ २५ ९ ३९	६ २३ १८ १६	१० १२ १४ ४८	६ २१ ५० ५	१० ११	१३ ११	१ १७	२०
२१	६ ३ ३४ ३२	० १९ ४५ ५०	३ १५ ५ ४८	६ ४ ४ १३	६ २५ २२ २१	६ २३ ० ४८	१० १२ १२ ४८	६ २१ ४६ ५८	१० ३२	१६ १	+० ११	२१
२२	६ ४ ३४ ११	१ १ ३३ ४२	३ १५ ३६ ५६	६ २ ४९ ५८	६ २५ ३५ ४	६ २२ ४१ २	१० १२ १० ५३	६ २१ ४३ ४८	११ ५३	१८ ९	−० ५८	२२
२३	६ ५ ३३ ५२	१ १३ २० ३६	३ १६ ७ ५२	६ १ ३८ २७	६ २५ ४७ ५१	६ २२ १९ २	१० १२ ९ ४	६ २१ ४० ३७	११ १५	१९ ३१	१ ५८	२३
२४	६ ६ ३३ ३६	१ २५ ९ ४०	३ १६ ३८ ३७	६ ० ३१ ४३	६ २६ ० ४१	६ २१ ५४ ५४	१० १२ ७ २१	६ २१ ३७ २६	११ ३६	२० १	२ ५६	२४
२५	६ ७ ३३ २२	२ ७ ४ ३१	३ १७ ९ १०	५ २९ ३१ ५१	६ २६ १३ ३५	६ २१ २८ ४४	१० १२ ५ ४४	६ २१ ३४ १५	१२ ५६	१९ ३७	३ ४९	२५
२६	६ ८ ३३ १०	२ १९ ९ १४	३ १७ ३९ ३२	५ २८ ४० ३४	६ २६ २६ २८	६ २१ ० ४१	१० १२ ४ १२	६ २१ ३१ ४	१२ १७	१८ २०	४ २७	२६
२७	६ ९ ३३ ०	३ १ २८ १०	३ १८ ९ ४१	५ २७ ५९ ९	६ २६ ३९ २४	६ २० ३० ५५	१० १२ २ ४६	६ २१ २७ ५३	१२ ३८	१६ १०	४ ५६	२७
२८	६ १० ३२ ५३	३ १४ ५ ४३	३ १८ ३९ ३७	५ २७ २८ ४०	६ २६ ५२ २१	६ १९ ५९ ३३	१० १२ १ २७	६ २१ २४ ४३	१२ ५८	१३ १३	५ १५	२८
२९	६ ११ ३२ ४७	३ २७ ५ ५४	३ १९ ९ २१	५ २७ ९ २७	६ २७ ४ २०	६ १९ २६ ४८	१० १२ ० १३	६ २१ २१ ३२	१३ १८	९ ३२	५ १२	२९
३०	६ १२ ३२ ४४	४ १० ३१ ५४	३ १९ ३८ ५२	५ २७ १ ५२	६ २७ १८ २१	६ १८ ५२ ५३	१० ११ ५९ ५	६ २१ १८ २१	१३ ३८	५ १६	४ ५८	३०
३१	६ १३ ३२ ४३	४ २४ २५ २०	३ २० ८ ९	५ २७ ५ २८	६ २७ ३१ २४	६ १८ १७ ५९	१० ११ ५८ ३	६ २१ १५ १०	१३ ५८	+० ३५	४ २६	३१
नवम्बर १	६ १४ ३२ ४४	५ ८ ४५ ३९	३ ३० ३७ १३	५ २७ २० ३	६ २७ ४४ २८	६ १७ ४२ २०	१० ११ ५७ ५	६ २१ ११ ५९	१४ १७	−४ १७	३ ३४	१ नवम्बर
२	६ १५ ३२ ४७	५ २३ २९ ३४	३ २१ ६ ३	५ २७ ४४ ४३	६ २७ ५७ ३३	६ १७ ६ ११	१० ११ ५६ १८	६ २१ ८ ४९	१४ ३६	९ ३	२ २८	२
३	६ १६ ३२ ५२	६ ८ ३१ ५	३ २१ ३४ ३९	५ २८ १८ ५५	६ २८ १० ४०	६ १६ २९ ४५	१० ११ ५५ ३५	६ २१ ५ ३८	१४ ५५	१३ २१	−१ ११	३
४	६ १७ ३३ ०	६ २३ ४१ ५२	३ २२ ३ ०	५ २९ १ ३४	६ २८ २३ ४८	६ १५ ५३ १८	१० ११ ५४ ५८	६ २१ २ २७	१५ १४	१६ ४९	+० १५	४
५	६ १८ ३३ ९	७ ८ ५२ २४	३ २२ ३१ ७	५ २९ ५२ १	६ २८ ३६ ५८	६ १५ १७ ३	१० ११ ५४ २७	६ २० ५९ १६	१५ ३२	१९ ५	१ ३६	५
६	६ १९ ३३ १९	७ २३ ५३ २०	३ २२ ५८ ५८	६ ० ४९ ११	६ २८ ५० ८	६ १४ ४१ १६	१० ११ ५४ २	६ २० ५६ ५	१५ ५१	२० ५	२ ५१	६
७	६ २० ३३ ३१	८ ८ ३६ ५५	३ २३ २६ ३४	६ १ ५२ २५	६ २९ ३ २०	६ १४ ६ १२	१० ११ ५३ ४४	६ २० ५२ ५४	१६ ९	१९ ३०	३ ५५	७
८	६ २१ ३३ ४५	८ २२ ५९ ४७	३ २३ ५३ ५४	६ ३ ० ४८	६ २९ १६ ३२	६ १३ ३२ ०	१० ११ ५३ ३२	६ २० ४९ ४४	१६ २६	१७ ४४	४ ३८	८
९	६ २२ ३४ १	९ ६ ५३ १७	३ २४ २० ५९	६ ४ १३ ४२	६ २९ २९ ४६	६ १२ ५८ ५८	१० ११ ५३ २७	६ २० ४६ ३३	१६ ४४	१४ ५९	५ ५	९
१०	६ २३ ३४ १७	९ २० २३ ११	३ २४ ४७ ४७	६ ५ ३० २६	६ २९ ४३ ०	६ १२ २७ १७	१० ११ ५३ २८	६ २० ४३ २२	१७ १	११ ३०	५ १८	१०
११	६ २४ ३४ ३५	१० ३ २९ ६	३ २५ १४ १९	६ ६ ५० २७	६ २९ ५६ १४	६ ११ ५७ ९	१० ११ ५३ ३५	६ २० ४० ११	१७ १८	७ ३३	५ ७	११
१२	६ २५ ३४ ५५	१० १६ १३ ५२	३ २५ ४० ३४	६ ८ १३ १३	७ ० ९ ३०	६ ११ २८ ४३	१० ११ ५३ ४८	६ २० ३७ ०	१७ ३४	−३ २२	४ ४२	१२
१३	६ २६ ३५ १६	१० २८ ४० ५६	३ २६ ६ ३३	६ ९ ३८ १८	७ ० २२ ४६	६ ११ ०२ ११	१० ११ ५४ ८	६ २० ३३ ४९	१७ ५०	+० ५२	४ १२	१३
१४	६ २७ ३५ ३९	११ १० ५३ ५६	३ २६ ३२ १४	६ ११ ५ १९	७ ० ३६ २	६ १० ३७ ४०	१० ११ ५४ ३६	६ २० ३० ३९	१८ ६	५ ०	३ १९	१४
१५	६ २८ ३६ ३	११ २२ ५६ १८	३ २६ ५७ ३७	६ १२ ३३ ५६	७ ० ४९ १९	६ १० १५ १७	१० ११ ५५ ८	६ २० २७ २८	१८ २२	८ ५३	२ २८	१५
१६	६ २९ ३६ २८	० ४ ५१ १३	३ २७ २२ ४३	६ १४ ३ ५१	७ १ २ ३६	६ ९ ५५ ९	१० ११ ५५ ४४	६ २० २४ १७	१८ ३७	१२ २३	१ २९	१६
१७	७ ० ३६ ५५	० १६ ४१ २८	३ २७ ४७ ३०	६ १५ ३४ ५१	७ १ १५ ५३	६ ९ ३७ २२	१० ११ ५६ २९	६ २० २१ ६	१८ ५२	१५ २१	+० २२	१७
१८	७ १ ३७ २३	० २८ २९ ३१	३ २८ ११ ५९	६ १७ ६ ४२	७ १ २९ १०	६ ९ २१ ५८	१० ११ ५७ २१	६ २० १७ ५५	१९ ७	१७ ४१	−० ४४	१८
१९	७ २ ३७ ५३	१ १० १७ ३५	३ २८ ३६ ९	६ १८ ३९ १५	७ १ ४२ २८	६ ९ ९ १	१० ११ ५८ १८	६ २० १४ ४५	१९ २१	१९ १५	१ ४५	१९
२०	६ ३ ३८ २५	१ २२ ७ ४४	३ २८ ५९ ५९	६ २० १२ २०	७ १ ५५ ४६	६ ८ ५८ ३२	१० ११ ५९ २२	६ २० ११ ३४	१९ ३५	१९ ५९	−२ ४७	२०

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टैं. टा.) (१ दिसम्बर को अयनांश २३° । ४७' । २४")

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
१९९४ ई०	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	१९९४ ई०
नवम्बर २१	७ ४ ३८ ५८	२ ४ २ ८	३ २९ २३ ३०	६ २१ ४५ ५०	७ २ ९ ३	६ ८ ५० ३४	१० १२ ० ३२	६ २० ८ २३	−१९ ४९	+१९ ४९	−३ ३९	२१ नवंबर
२२	७ ५ ३९ ३३	१ १६ ३ २	३ २९ ४६ ४०	६ २३ १९ ४०	७ २ २२ २०	६ ८ ४५ ६	१० १२ १ ४८	६ २० ५ १२	२० २	१८ ४५	४ २०	२२
२३	७ ६ ४० ९	२ २८ १३ २	४ ० ९ २३	६ २४ २३ ४३	७ २ ३५ ३८	६ ८ ४२ ७	१० १२ ३ १०	६६ २० २ १	२० १५	१६ ५०	४ ५२	२३
२४	७ ७ ४० ४७	३ १० ३४ ५८	४ ० ३१ ५८	६ २६ २७ ५६	७ २ ४८ ५५	६ ८ ४१ ३५	१० १२ ४ ३९	६ १९ ५८ ५०	२० २७	१४ ७	५ ११	२४
२५	७ ८ ४१ २७	३ २३ १२ १	४ ० ५४ ५	६ २८ २ १६	७ ३ २ ११	६ ८ ४३ ३२	१० १२ ६ १४	६ १९ ५५ ३९	२० ३५	१० ४३	५ १६	२५
२६	७ ९ ४२ ८	४ ६ ७ २६	४ १ १५ ४९	६ २९ ३६ ४०	७ ३ १५ २८	६ ८ ४७ ५२	१० १२ ७ ५४	६ १९ ५२ २८	२० ५१	६ ४४	५ ४	२६
२७	७ १० ४२ ५१	४ १९ २४ १८	४ १ ३७ ११	७ १ ११ ७	७ ३ २८ ४३	६ ८ ५४ ३३	१० १२ ९ ४२	६ १९ ४९ १७	२१ २	+२ १९	४ ३६	२७
२८	७ ११ ४३ ३६	५ ३ ५ २	४ १ ५८ ३०	७ २ ४५ ३२	७ ३ ४१ ५८	६ ९ ३ ३२	१० १२ ११ ३४	६ १९ ४६ ७	२१ १३	−२ २१	३ ५५	२८
२९	७ १२ ४४ २२	५ १७ १० ४९	४ २ १८ ५८	७ ४ १९ ५७	७ ३ ५५ १३	६ ९ १४ ४७	१० १२ १३ ३४	६ १९ ४२ ५५	२१ २४	७ २	२ ५२	२९
३०	७ १३ ४५ ९	६ १ ४० ५३	४ २ ३८ ५४	७ ५ ५४ २१	७ ४ ८ २७	६ ९ २८ १३	१० १२ १५ ४०	६ १९ ३९ ४४	२१ ३४	११ २८	१ ४२	३०
दिसंबर १	७ १४ ४५ ५८	६ १६ ३१ ५८	४ २ ५८ ४०	७ ७ २८ ४२	७ ४ २१ ४०	६ ९ ४३ ४७	१० १२ १७ ५१	६ १९ ३६ ३३	२१ ४३	१५ १८	−० २४	१ दिसंबर
२	७ १५ ४६ ४९	७ १ ३८ २	४ ३ १७ ५९	७ ९ ३ १	७ ४ ३४ ५२	६ १० १ २३	१० १२ २० ९	६ १९ ३३ २२	२१ ५३	१८ १०	+१ ५	२
३	७ १६ ४७ ४१	७ १६ ५० ३७	४ ३ ३६ ५३	७ १० ३७ १७	७ ४ ४८ ३	६ १० २१ ०	१० १२ २२ ३२	६ १९ ३० ११	२२ २	१९ ४६	२ १८	३
४	७ १७ ४८ ३४	८ १ ५९ ५३	४ ३ ५५ १९	७ १२ ११ ३१	७ ५ १ १२	६ १० ४२ ३३	१० १२ २५ २	६ १९ २७ ०	२२ १०	१९ ५५	३ २७	४
५	७ १८ ४९ २७	८ १६ ५६ ५	४ ४ १३ १९	७ १३ ४५ ४२	७ ५ १४ २१	६ ११ ५ ५६	१० १२ २७ ३८	६ १९ २३ ४९	२२ १८	१८ ४०	४ २१	५
६	७ १९ ५० २२	९ १ ३१ ९	४ ४ ३० ५१	७ १५ १९ ५२	७ ५ २७ २९	६ ११ ३१ ७	१० १२ ३० १९	६ १९ २० ३८	२२ २६	१६ १३	४ ५६	६
७	७ २० ५१ १८	९ १५ ३९ ४३	४ ४ ४७ ५४	७ १६ ५४ १	७ ५ ४० ३४	६ ११ ५८ ४	१० १२ ३३ ६	६ १९ १७ २७	२२ ३३	१२ ५२	५ १२	७
८	७ २१ ५२ १४	९ २९ १९ ३४	४ ५ ४ २५	७ १८ २८ ९	७ ५ ५३ ३९	६ १२ २६ ४०	१० १२ ३५ ५९	६ १९ १४ १६	२२ ४०	८ ५६	५ ११	८
९	७ २२ ५३ ११	१० १२ ३१ १७	४ ५ २० ३४	७ २० २ १८	७ ६ ६ ४१	६ १२ ५६ ५२	१० १२ ३८ ५८	६ १९ ११ ०५	२२ ४६	४ ४१	४ ५२	९
१०	७ २३ ५४ ९	१० २५ १७ ३४	४ ५ ३६ ९	७ २१ ३६ २७	७ ६ १९ ४३	६ १३ २८ ३८	१० १२ ४२ ३	६ १९ ७ ५४	२२ ५२	−० २२	४ १८	१०
११	७ २४ ५५ ८	११ ७ ४२ ३०	४ ५ ५१ १४	७ २३ १० ३८	७ ६ ३२ ४२	६ १४ १ ५४	१० १२ ४५ १३	६ १९ ५ ४३	२२ ५७	+३ ५२	३ ३१	११
१२	७ २५ ५६ ७	११ १९ ५० ५२	४ ६ ५ ४८	७ २४ ४४ ५२	७ ६ ४५ ४०	६ १४ ३६ ३७	१० १२ ४८ २९	६ १९ १ ३२	२३ २	७ ५१	२ ३८	१२
१३	७ २६ ५७ ६	० १ ४७ ३१	४ ६ १९ ५०	७ २६ १९ १०	७ ६ ५८ ३६	६ १५ १२ ४३	१० २२ ५१ ५०	६ १८ ५८ २१	२३ ७	११ २८	१ ४१	१३
१४	७ २७ ५८ ६	० १३ ३७ ८	४ ६ ३३ २१	७ २७ ५३ ५२	७ ७ ११ ३०	६ १५ ५० ९	१० १२ ५५ १७	६ १८ ५५ १०	२३ ११	१४ ३५	+० ३३	१४
१५	७ २८ ५९ ७	० २५ २३ ५३	४ ६ ४६ १८	७ २९ २८ ०	७ ७ २४ २१	६ १६ २८ ५४	१० १२ ५८ ४९	६ १८ ५१ ५९	२३ १४	१७ ६	−० ३२	१५
१६	८ ० ० ८	१ ७ ११ १७	४ ६ ५८ ४१	८ १ २ ३४	७ ७ ३७ ११	६ १७ ८ ५३	१० १३ २ २७	६ १८ ४८ ४८	२३ १८	१८ ५४	१ २९	१६
१७	८ १ १ १०	१ १९ २ १५	४ ७ १० ३१	८ २ ३७ १५	७ ७ ४९ ५८	६ १७ ५० ३	१० १३ ६ ९	६ १८ ४५ ३७	२३ २०	१९ ५३	२ ३८	१७
१८	८ २ २ १३	२ ० ५८ ५९	४ ७ २१ ४५	८ ४ १२ ५	७ ८ २ ४३	६ १८ ३२ २२	१० १३ ९ ५८	६ १८ ४२ २६	२३ २२	१९ ५९	३ ३२	१८
१९	८ ३ ३ १६	२ १३ ३ ११	४ ७ ३२ २४	८ ५ ४७ ४	७ ८ १५ २६	६ १९ १५ ४९	१० १३ १३ ५१	६ १८ ३९ १५	२३ २४	१९ १०	४ ६	१९
२०	८ ४ ४ २०	२ २५ १६ ७	४ ७ ४२ २७	८ ७ २२ १२	७ ८ २८ ६	६ २० ० २०	१० १३ १७ ५०	६ १८ ३६ ४	२३ २५	१७ २८	४ ५४	२०
२१	८ ५ ५ २४	३ ७ ३८ ५०	४ ७ ५१ ५३	८ ८ ५७ ३१	६ ८ ४० ४४	६ २० ४५ ५१	१० १३ २१ ५४	६ १८ ३२ ५३	२३ २६	१४ ५६	५ १०	२१
२२	८ ६ ६ २९	३ २० १२ २६	४ ८ ० ४१	८ १० ३३ १	७ ८ ५३ १९	६ २१ ३२ २१	१० १३ २६ २	६ १८ २९ ४३	२३ २६	११ ४२	५ ०८	२२
२३	८ ७ ७ ३५	४ २ ५८ ११	४ ८ ८ ५०	८ १२ ८ ४५	७ ९ ५ ५४	६ २२ १९ ५०	१० १३ ३० १६	६ १८ २६ ३१	२३ २६	७ ५३	५ ५	२३
२४	८ ८ ८ ४१	४ १५ ५७ ३९	४ ८ १६ [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] २३ २१	२३ २५	+३ ३८	४ ४१	२४
२५	८ ९ ९ ४८	४ २९ १२ ३९	४ ८ २३ ११	८ १५ २० ४२	७ ९ ३० ४८	६ २३ ५७ २८	१० १३-३८ ५९	६ १८ २० १०	२३ २४	−० ५२	३ ५८	२५
२६	८ १० १० ५६	५ १२ ४७ ६	४ ८ २९ २०	८ १६ ५६ ५९	७ ९ ४३ १२	६ २४ ४७ ३३	१० १३ ४३ २८	६ १८ १६ ५९	−२३ २३	−५ २३	−३ १०	२६

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टैं. टा.) (१ जनवरी को अयनांश २° । ४७' । २८")

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
१९९४ ई०	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	१९९४ ई०
दिसंबर २७	८ ११ १२ ५	५ २६ ३६ ३४	४ ८ ३४ ४८	८ १० ३३ २९	७ ९ ५५ ३३	६ २५ ३८ २७	१० १३ ४८ १	६ १८ १३ ४८	-२३ २१	-९ ५०	-१ ५८	२७ दिसंबर
२८	८ १२ १३ १४	६ १० ४७ ४६	४ ८ ३९ ३४	८ २० १० ९	७ १० ७ ५१	६ २६ ३० ८	१० १३ ५२ ३९	६ १८ १० ३९	२३ १८	१३ ४८	-० ४८	२८
२९	८ १३ १४ २३	६ २५ १७ ४७	४ ८ ४३ ३६	८ २१ ४६ ५९	७ १० २० ५	६ २७ २२ ३३	१० १३ ५७ २२	६ १८ ७ २६	२३ १५	१७ १	+० ३१	२९
३०	८ १४ १५ ३३	७ १० ३ ३३	४ ८ ४७ ११	८ २३ २३ ५८	७ १० ३२ १६	६ २८ १५ ४०	१० १४ २ १०	६ १८ ४ १५	२३ ११	१९ १०	१ ५८	३०
३१	८ १५ १६ ४४	७ २४ ५९ ३०	४ ८ ४९ ३०	८ २५ १ ५	७ १० ४४ २४	६ २९ ९ २९	१० १४ ७ २	६ १८ १ ४	२३ ७	२० १	२ ५८	३१
जनवरी १	८ १६ १७ ५४	८ ९ ५७ ५०	४ ८ ५१ १९	८ २६ ३८ १६	७ १० ५६ २८	७ ० ३ ५७	१० १४ ११ ५९	६ १७ ५७ ५३	२३ ३	१९ २७	३ ५६	१ जनवरी
(१९९५) २	८ १७ १९ ५	८ २४ ४९ ३०	४ ८ ५२ २३	८ २८ १५ २९	७ ११ ८ २८	७ ० ५९ ३	१० १४ १७ ०	६ १७ ५४ ४२	२२ ५८	१७ ३४	४ ४४	२ (१९९५)
३	८ १८ २० १६	९ ९ २५ ४२	४ ८ ५२ ४१	८ २९ ५२ ४०	७ ११ २० २५	७ १ ५४ ४४	१० १४ २२ ६	६ १७ ५१ ३१	२२ ५३	१४ ३४	५ ११	३
४	८ १९ २१ २७	९ २३ ३९ २१	४ ८ ५२ १३	९ १ २९ ४५	७ ११ ३२ १७	७ २ ५१ १	१० १४ २७ १६	६ १७ ४८ २०	२२ ४७	१० ४७	५ ९	४
५	८ २० २२ ३७	१० ७ २६ ४	४ ८ ५२ ५८	९ ३ ६ ३८	७ ११ ४४ ६	७ ३ ४७ ५१	१० १४ ३२ ३०	६ १७ ४५ ९	२२ ४१	६ ३२	४ ५८	५
६	८ २१ २३ ४७	१० २० ४४ ३३	४ ८ ४८ ५६	९ ४ ४३ १३	७ ११ ५५ ५	७ ४ ४५ १३	१० १४ ३७ ४८	६ १७ ४१ ५६	२२ ३४	-२ ६	४ २७	६
७	८ २२ २४ ५७	११ ३ ३६ १३	४ ८ ४६ ६	९ ६ १९ २१	७ १२ ७ २१	७ ५ ४३ ५	१० १४ ४३ ११	६ १७ ३८ ४७	२२ २७	+२ १७	३ ३७	७
८	८ २३ २६ ७	११ १६ ४ ३०	४ ८ ४२ २८	९ ७ ५४ ५३	७ १२ १९ ८	७ ६ ४१ २९	१० १४ ४८ ३७	६ १७ ३५ ३६	२२ २०	६ २६	२ ४२	८
९	८ २४ २७ १६	११ २८ १४ ११	४ ८ ३८ ३	९ ९ २९ ३८	७ १२ ३० ४०	७ ७ ४० २१	१० १४ ५४ ८	६ १७ ३२ २५	२२ १२	१० १४	१ ४८	९
१०	८ २५ २८ २४	० १० १० ४१	४ ८ ३२ ५०	९ ११ ३ २३	७ १२ ४२ ७	७ ८ ३९ ४१	१० १४ ५९ ४२	६ १७ २९ १४	२२ ३	१३ ३३	+० ४५	१०
११	८ २६ २९ ३३	० २१ ५९ ३१	४ ८ २६ ४८	९ १२ ३५ ५१	७ १२ ५३ ३०	७ ९ ३९ २७	१० १५ ५ २०	६ १७ २६ ३	२१ ५४	१६ १७	-० २८	११
१२	८ २७ ३० ४०	१ ३ ४५ ५८	४ ८ १९ ५८	९ १४ १ ४४	७ १३ ४ ४८	७ १० ३९ ४०	१० १५ ११ २	६ १७ २२ ५२	२१ ४५	१८ १९	१ २७	१२
१३	८ २८ ३१ ४७	१ १५ ३४ ४७	४ ८ १२ २०	९ १५ ३५ ४२	७ १३ १६ २	७ ११ ४० १८	१० १५ १६ ४८	६ १७ १९ ४१	२१ ३५	१९ ३५	२ १८	१३
१४	८ २९ ३२ ५४	१ २७ २९ ५४	४ ८ ३ ५३	९ १७ २ १८	७ १३ २७ ११	७ १२ ४१ २०	१० १५ २२ ३७	६ १७ १६ २०	२१ २५	१९ ५९	३ २३	१४
१५	९ ० ३४ ०	२ ९ ३४ २१	४ ७ ५४ ३८	९ १८ २६ ७	७ १३ ३८ १५	७ १३ ४२ ४५	१० १५ २८ २९	६ १७ १३ १९	२१ १५	१९ २८	४ १९	१५
१६	९ १ ३५ ६	२ २१ ५० १२	४ ७ ४४ ३६	९ १९ ४६ ३३	७ १३ ४९ १४	७ १४ ४४ ३४	१० १५ ३४ २६	६ १७ १० ८	२१ ४	१८ ३	४ ३९	१६
१७	९ २ ३६ १०	३ ४ १८ २७	४ ७ ३३ ४५	९ २१ ३ ५	७ १४ ० ८	७ १५ ४६ ४४	१० १५ ४० २५	६ १७ ६ ५७	२० ५२	१५ ४६	५ ६	१७
१८	९ ३ ३७ १५	३ १६ ५९ १९	४ ७ २२ ७	९ २२ १४ ५६	७ १४ १० ५७	७ १६ ४९ १६	१० १५ ४६ २८	६ १७ ३ ४६	२० ४०	१२ ४२	५ १५	१८
१९	९ ४ ३८ १९	३ २९ ५२ २०	४ ७ ९ ४२	९ २३ २१ ३०	७ १४ २१ ४०	७ १७ ५२ ८	१० १५ ५२ ३४	६ १७ ० ३५	२० २८	९ ०	-४ ५९	१९
२०	९ ५ ३९ २२	४ १२ ५६ ५०	४ ६ ५६ ३१	९ २४ २१ ५१	७ १४ ३२ १९	७ १८ ५५ २०	१० १५ ५८ ४४	६ १६ ५७ २४	२० १६	४ ५०	४ २९	२०
२१	९ ६ ४० २५	४ २६ १२ १०	४ ६ ४२ ३३	९ २५ १५ १९	७ १४ ४२ ५२	७ १९ ५८ ५२	१० १६ ४ ५७	६ १६ ५४ १३	२० ३	+० २२	४ ६	२१
२२	९ ७ ४१ २८	५ ९ ३८ ४	४ ६ २७ ५०	९ २६ ० ४९	७ १४ ५३ १९	७ २१ २ ४२	१० १६ ११ १२	६ १६ ५१ २	१९ ५०	-४ ११	३ ४	२२
२३	९ ८ ४२ ३०	५ २३ १४ ४६	४ ६ १२ २३	५ २६ ३७ ४५	७ १५ ३ ४१	७ २२ ६ ४९	१० १६ १७ ३१	६ १६ ४७ ५१	१९ ३६	८ ३४	२ ९	२३
२४	९ ९ ४३ ३२	६ ७ २ ४७	४ ५ ५६ १२	९ २७ ५ २	७ १५ १३ ५७	७ २३ ११ १५	१० १६ २३ ५३	६ १६ ४४ ४०	१९ २२	१२ ३५	-१ ०	२४
२५	९ १० ४४ ३४	६ २१ २ ४१	४ ५ ३९ १९	९ २७ २२ १०	७ १५ २४ ७	७ २४ १५ ५७	१० १६ ३० १७	६ १६ ४१ २९	१९ ७	१५ ५७	+० २१	२५
२६	९ ११ ४५ ३४	७ ५ १४ २४	४ ५ २१ ४५	९ २७ २८ १८	७ १५ ३४ ११	७ २५ २० ५४	१० १६ ३६ ४५	६ १६ ३८ १८	१८ ५३	१८ २४	१ ३८	२६
२७	९ १२ ४६ ३५	७ १९ ३६ ४८	४ ५ ३ ३१	९ २७ २३ १६	७ १५ ४४ ९	७ २९ २६ ७	१० १६ ४३ १५	६ १६ ३५ ७	१८ ३८	१९ ४२	२ ४८	२७
२८	९ १३ ४७ ३५	८ ४ ६ ५७	४ ४ ४४ ३९	९ २७ ६ ४१	७ १५ ५४ १	७ २७ ३१ ३५	१० १६ ४९ ४८	६ १६ ३१ ५६	१८ २२	१९ ४४	३ ४	२८
२९	९ १४ ४८ ३४	८ १८ ४० ६	४ ४ २४ १०	९ २६ ३८ ५३	७ १६ ३ ४६	७ २८ ३७ १७	१० १६ ५६ २३	६ १६ २८ ४५	१८ ७	१८ २७	४ ३८	२९
३०	९ १५ ४९ ३२	९ ३ १० ०	४ ४ ५ ७	९ २६ ० १४	७ १६ १३ २६	७ २९ ४३ १३	१० १७ ३ २	६ १६ २५ ३४	१७ ५२	१५ ५९	५ ५	३०
३१	९ १६ ५० २९	९ १७ २९ ४१	४ ३ ४४ ३१	९ २५ ११ ४३	७ १६ २२ ९	८ ० ४९ २१	१० १७ ९ ४२	६ १६ २२ २३	-१७ ३४	-१२ ३५	+५ १०	३१

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टैं. टा.) (१ फरवरी को अयमांश २३° । ४४७′ । ३९″ १ मार्च को अयनांश २३° । ४७′ । ३५″)

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
१९९५ ई०	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	१९९५ ई०
फरवरी १	९ १७ ५१ २६	१० १ ३२ ४२	४ ३ २३ २४	९ २४ १४ ३४	७ १६ ३२ २४	८ १ ५५ ४३	१० १७ १६ २३	६ १६ १९ १२	−१७ १७	−८ ३१	+४ ५७	१ फरवरी
२	९ १८ ५२ २१	१० १५ १४ १०	४ ३ १ ४९	९ २३ १० २२	७ १६ ४१ ४४	८ ३ २ १६	१० १७ २३ १०	६ १६ १६ १	१७ ०	−४ ८	४ ३६	२
३	९ १९ ५३ १५	१० २८ ३१ ३०	४ २ ३९ ४८	९ २२ १ ५	७ १६ ५० ५६	८ ४ ९ १	१० १७ २९ ५८	६ १६ १२ ५०	१६ ४३	+० २१	३ ५४	३
४	९ २० ५४ ८	११ ११ २४ ३४	४ २ १७ २४	९ २० ४८ ३९	७ १७ ० १	८ ५ १५ ५७	१० १७ ३६ ५८	६ १६ ९ ३९	१६ २५	४ ४०	२ ५४	४
५	९ २१ ५५ ०	११ २३ ५५ २४	४ १ ५४ ३९	९ १९ ३५ १९	७ १७ ९ ०	८ ६ २३ ५	१० १७ ४३ ३९	६ १६ ६ २८	१६ ८	८ ४१	१ ५९	५
६	९ २२ ५५ ४९	० ६ ७ ४२	४ १ ३१ ३३	९ १८ २२ ५९	७ १७ १७ ५१	८ ७ ३० २३	१० १७ ५० ३३	६ १६ ३ १७	१५ ४९	१२ १३	+० ५५	६
७	९ २३ ५६ ३८	० १८ ६ १९	४ १ ८ १६	५ १७ १३ ४१	७ १७ २६ ३५	८ ८ ३७ ५१	१० १७ ५७ २९	६ १६ ० ६	१५ ३१	१५ ११	−० १४	७
८	९ २४ ५७ २५	० २९ ५६ ४२	४ ० ४४ ४३	९ १६ ८ ५२	७ १७ ३५ १२	८ ९ ४५ २९	१० १८ ४ २७	६ १५ ५६ ५५	१५ १२	१७ २९	१ ११	८
९	९ २५ ५८ ११	१ ११ ४४ २८	४ ० २१ ०	९ १५ ९ ३९	७ १७ ४३ ४१	८ १० ५३ १७	१० १८ ११ २६	६ १५ ५३ ४४	१४ ५३	१५ २	२ १३	९
१०	९ २६ ५८ ५५	१ २३ ३५ २	३ २९ ५७ १०	९ १४ २७ ९	७ १७ ५२ २	८ १२ १ १४	१० १८ १८ २७	६ १५ ५० ३३	१४ ३४	१५ ४४	३ ७	१०
११	९ २७ ५९ ३७	२ ५ ३३ २०	३ २९ ३३ १४	९ १३ ३३ २५	७ १७ ० १६	८ १३ ९ २०	१० १८ २५ ३०	६ १५ ४७ २२	१४ १५	१९ ३४	३ ५१	११
१२	९ २९ ० १९	२ १७ ४३ २५	३ २९ ९ १६	९ १२ ५६ ४७	६ १८ ८ २३	८ १४ १७ ३५	१० १८ ३२ ३४	६ १५ ४४ ११	१३ ५५	१८ ३०	४ ३६	१२
१३	१० ० ० ५८	३ ० ८ ३०	३ २८ ४५ १९	९ १२ २८ १६	७ १८ १६ २१	८ १५ २५ ५९	१० १८ ३९ ४०	६ १५ ४१ ०	१३ ३५	१६ ३२	४ ५९	१३
१४	१० १ १ ३६	३ १२ ५० ९	३ २८ २१ २५	९ १२ ७ ४४	७ १८ २४ १२	८ १६ ३४ ३२	१० १८ ४६ ४७	६ १५ ३७ ४९	१३ १५	१३ ४५	५ १२	१४
१५	१० २ २ १२	३ २५ ४८ ४५	३ २७ ५७ ३७	९ ११ ५५ ४.	७ १८ ३१ ५४	८ १७ ४३ १२	१० १८ ५३ ५६	६ १५ ३४ ३८	१२ ५५	१० १५	५ १	१५
१६	१० ३ २ ४७	४ ९ ३ २०	३ २७ ३३ ५७	९ ११ ४९ ५३	७ १८ ३९ २९	८ १८ ५२ ०	१० १९ १ ६	६ १५ ३१ २७	१२ ३४	६ ११	४ ४६	१६
१७	१० ४ ३ २१	४ २२ ३१ ५२	३ २७ १० २९	९ ११ ५१ ५३	७ १८ ४६ ५५	८ २० ० ५७	१० १९ ८ १७	६ २५ २८ १६	१२ १३	+१ ४५	४ १२	१७
१८	१० ५ ३ ५३	५ ६ ११ ४४	३ २६ ४७ १४	९ १२ ० ३७	७ १८ ५४ १३	८ २१ १० १	१० १९ १५ ३०	६ १५ २५ ५	११ ५२	−२ ५१	३ १८	१८
१९	१० ६ ४ २३	५ २० ० १५	३ २६ २४ १३	५ १२ १५ ४०	७ १९ १ २३	८ २२ १९ १३	१० १९ २२ ४३	६ १५ २२ ५४	११ ३१	७ २१	२ ८	१९
२०	१० ७ ४ ५३	६ ३ ५५ ९	३ २६ १ ३४	९ १२ ३६ ३६	७ १९ ८ २४	८ २३ २८ ३१	१० १९ २९ ५८	६ १५ १९ ४३	११ १०	११ ३०	१ ११	२०
२१	१० ८ ५ २१	६ १७ ५४ ४४	२ २५ ३९ १५	९ १३ ३ १	७ १९ १५ १७	८ २४ ३७ ५७	१० १९ ३७ १४	६ १५ १६ ३२	१० ४८	१५ ०	−० १३	२१
२२	१० ५ ५ ४८	७ १ ५७ ५७	३ २५ १७ १८	९ १३ ३४ २९	७ १९ २२ ०	८ २५ ४७ २९	१० १९ ४४ ३०	६ १५ १३ २१	१० २७	१७ ४०	+१ २४	२२
२३	१० १० ६ १३	७ १६ ४ ०	३ २४ ५५ ४८	९ १४ १० ३७	७ १९ २८ ३४	८ २६ ५७ ८	१० १९ ५१ ४८	६ १५ १० १०	१० ५	१९ १५	२ ४२	२३
२४	१० ११ ६ ३७	८ ० १२ १	३ २४ ३४ ४४	९ १४ ५१ ५	७ १९ ३५ २	८ २८ ६ ५३	१० १९ ५९ ६	६ १५ ६ ५९	९ ४३	१९ ३८	३ ४३	२४
२५	१० १२ ७ ०	८ १४ २० ३१	३ २४ १४ ११	९ १५ ३५ ३३	७ १९ ४१ १९	८ २९ १६ ४४	१० २० ६ २५	६ १५ ३ ४८	९ २१	१८ ४७	४ २५	२५
२६	१० १३ ७ २२	८ २८ २८ ७	३ २३ ५४ ९	९ १६ २३ ४२	७ १९ ४७ २७	९ ० २६ ४१	१० २० १३ ४५	६ १५ ० ३७	८ ५८	१६ ४६	५ २	२६
२७	१० १४ ७ ४१	९ १२ २८ ३४	३ २३ ३४ ४२	९ १७ १५ १७	७ १९ ५३ २३	९ १ ३६ ४४	१० २० २१ ५	६ १४ ५६ २६	८ ३६	१३ ४७	४ ८	२७
२८	१० १५ ८ ०	९ २६ २० ५९	३ २३ १५ ४९	९ १८ १० १	७ १९ ५९ १४	९ २ ४६ ५१	१० २० २८ २६	६ १४ ५३ १५	८ १३	१० ४	४ ५७	२८
मार्च १	१० १६ ८ १७	१० १० ० २५	३ २२ ५७ ३५	९ १९ ७ ४२	७ २० ४ ५४	९ ३ ५७ ४	१० २० ३५ ४७	६ १४ ५० ४	७ ५१	५ ५३	५ १३	१ मार्च
२	१० १७ ८ ३२	१० २३ २३ ३३	३ २२ ३९ ५९	९ २० ८ ७	७ २० १० २४	९ ५ ७ २२	१० २० ४३ ८	६ १४ ४६ ५३	७ २८	−१ २९	४ ८	२
३	१० १८ ८ ४५	११ ६ २८ ११	३ २२ २३ ५	९ २१ ११ ६	७ २० १५ ४५	९ ६ १७ ४४	१० २० ५० ३०	६ १४ ४३ ४२	७ ५	+२ ५४	३ १८	३
४	१० १९ ८ ५६	११ १३ १३ ४०	३ २२ ६ ४९	९ २२ १६ २८	७ २० २० ५६	९ ७ २८ १०	१० २० ५७ ५५	६ १४ ४० ३१	६ ४२	७ ३	२ ४	४
५	१० २० ९ ५	० १ ४० ५५	३ २१ ५१ १८	९ २३ २४ ४	७ २० २५ ५७	९ ८ ३८ ४२	१० २१ ५ १४	६ १४ ३७ २०	६ १९	१० ४७	१ १७	५
६	१० २१ ९ १२	० १३ ५२ २२	३ २१ ३६ ३[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	६ १४ ३४ ९	५ ५६	१३ ५९	+० ११	६
७	१० २२ ९ १८	० २५ ५१ ३७	३ २१ २२ २८	९ २५ ४५ ३०	७ २० ३५ २९	९ १० ५९ ५६	१० २१ १९ ५९	६ १४ ३० ५८	५ ३३	१६ ३२	−१ ९	७
८	१० २३ ९ २२	१ ७ ४३ ७	३ २१ ९ ११	९ २६ ५९ ७	७ २० ४० ०	९ १२ १० ३९	१० २१ २७ २१	६ १४ २७ ४७	−५ ९	+१८ २१	−२ १०	८

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टैं. टा.) (१ अप्रैल को अयनांश २३° । ४७' । ३७")

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
१९९५ ई०	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	१९९५ ई०
मार्च ९	१० २४ ९ २२	१ १९ ३१ ५७	३ २० ५६ ४०	९ २८ १४ ३२	७ २० ४४ २१	९ १३ २१ २६	१० २१ ३४ ४३	६ १४ २४ ३६	−४ ४६	+१९ २१	−३ १	९ मार्च
१०	१० २५ ९ २१	२ १ २३ २३	३ २० ४४ ५५	९ २९ ३१ ३९	७ २० ४८ ३२	९ १४ ३२ १७	१० २१ ४२ ५	६ १४ २१ २५	४ २२	१९ ३०	३ ५२	१०
११	१० २६ ९ १७	२ १३ २२ २९	३ २० ३३ ५७	१० ० ५० २६	७ २० ५२ ३२	९ १५ ४३ १२	१० २१ ४९ २६	६ १४ १८ १४	३ ५९	१८ ४६	४ ३०	११
१२	१० २७ ९ १२	२ २५ ३४ ३५	३ २० २३ ४४	१० २ १० ४९	७ २० ५६ २२	९ १६ ५४ १०	१० २१ ५६ ४७	६ १४ १५ ३	३ ३५	१७ १०	४ ५८	१२
१३	१० २८ ९ ४	३ ८ ३ १६	३ २० १४ २३	१० ३ ३२ ४३	७ २१ ० २	९ १८ ५ ११	१० २२ ४ ८	६ १४ ११ ५२	३ १२	१४ ४४	५ ८	१३
१४	१० २९ ८ ५४	३ २० ५१ ४१	३ २० ५ ४४	१० ४ ५६ ६	७ २१ ३ ३१	९ १९ १६ १६	१० २२ ११ २८	६ १४ ८ ४१	२ ४८	११ ३३	५ १४	१४
१५	११ ० ८ ४२	४ ४ १ १८	३ १९ ५७ ५७	१० ६ २० ५७	७ २१ ६ ५०	९ २० २७ २५	१० २२ १८ ४८	६ १४ ५ ३०	२ २४	७ ४३	४ ५७	१५
१६	११ १ ८ २८	४ १७ ३१ ५२	३ १९ ५० ५६	१० ७ ४७ १२	७ २१ ९ ५८	९ २१ ३८ ३६	१० २२ २६ ७	६ १४ २ १९	२ १	३ २४	४ १४	१६
१७	११ २ ८ १२	५ १ २१ २२	३ १९ ४४ ४१	१० ९ १४ ५०	७ २१ १२ ५६	९ २२ ४९ ५१	१० २२ ३३ २५	६ १३ ५९ ८	१ ३७	−१ ११	३ ३६	१७
१८	११ ३ ७ ५४	५ १५ २६ १५	३ १९ ३९ १३	१० १० ४३ ५०	७ २१ १५ ४३	९ २४ १ १०	१० २२ ४० ४३	६ १३ ५५ ५७	१ १३	५ ४९	२ ३४	१८
१९	११ ४ ७ ३४	५ २९ ४२ ०	३ १९ ३४ ३२	१० १२ १४ ११	७ २१ १८ १८	९ २५ १२ ३१	१० २२ ४८ ०	६ १३ ५२ ४६	० ५०	१० १०	−१ १०	१९
२०	११ ५ ७ १२	६ १४ ३ ४२	३ १९ ३० ३६	१० १३ ४५ ५१	७ २१ २० ४४	९ २६ २३ ५५	१० २२ ५५ १६	६ १३ ४९ ३५	० २६	१३ ५८	+० १०	२०
२१	११ ६ ६ ४८	६ २८ २६ ४५	३ १९ २७ २७	१० १५ १८ ५३	७ २१ २२ ५८	९ २७ ३५ २३	१० २३ २ ३१	६ १३ ४६ २४	−० २	१६ ५५	१ २०	२१
२२	११ ७ ६ २३	७ १२ ४७ २०	३ १५ २५ ३	१० १६ ५३ १०	७ २१ २५ २	९ २८ ४६ ५३	१० २३ ९ ४५	६ १३ ४३ १३	+० २१	१८ ४८	२ ३९	२२
२३	११ ८ ५ ५६	७ २७ २ ३२	३ १९ २३ २४	१० १८ २८ ४८	७ २१ २६ ५४	९ २९ ५८ २७	१० २३ १६ ५८	६ १३ ४० २	० ४५	१९ २७	३ ४०	२३
२४	११ ९ ५ २७	८ ११ १० १९	३ १९ २२ ३०	१० २० ५ ४४	७ २१ २८ ३५	१० १ १० ३	१० २३ २४ ११	६ १३ ३६ ५१	१ ९	१८ ५३	४ २९	२४
२५	११ १० ४ ५६	८ २५ ९ १३	३ १९ २२ २०	१० २१ ४३ ५९	७ २१ ३० ६	१० २ २१ ४२	१० २३ ३१ २१	६ १३ ३३ ४०	१ ३२	१७ १०	४ ५९	२५
२६	११ ११ ४ २४	९ ८ ५८ ७	३ १९ २२ ५४	१० २३ २३ ३२	७ २१ ३१ २५	१० ३ ३३ २३	१० २३ ३८ ३१	६ १३ ३० २९	१ ५६	१४ २८	५ १	२६
२७	११ १२ ३ ४९	९ २२ ३६ १	३ १९ २४ ११	१० २५ ४ २६	७ २१ ३२ ३३	१० ४ ४५ ७	१० २३ ४५ ४०	६ १३ २७ १८	२ २०	११ २	५ १२	२७
२८	११ २३ ३ १३	१० ६ १ ५२	३ १९ २६ ०५	१० २६ ४६ ३८	७ २१ ३३ २९	१० ५ ५६ ५२	१० २३ ५२ ४७	६ १३ २४ ७	२ ४३	७ ४	४ ४६	२८
२९	११ १४ २ ३६	१० १९ १४ ४२	३ १९ २८ ५४	१० २८ ३० १२	७ २१ ३४ १५	१० ७ ८ ४१	१० २३ ५९ ५२	६ १३ २० ५६	३ ७	−२ ४९	४ १६	२९
३०	११ १५ १ ५६	११ २ १३ ४२	३ १९ ३२ १९	११ ० १५ ५	७ २१ ३४ ४८	१० ८ २० ३१	१० २४ ६ ५६	६ १३ १७ ४५	३ ४०	+१ २९	३ २८	३०
३१	११ १६ १ १४	११ १४ ५८ २६	३ १९ ३६ २४	११ २ १ २२	७ २१ ३५ ११	१० ९ ३२ २३	१० २४ १३ ५९	६ १३ १४ ३४	३ ५५	५ ३९	२ २२	३१
अप्रैल १	११ १७ ० ३१	११ २७ २९ ३	३ १९ ४१ ११	११ ३ ४८ ५९	७ २१ ३५ २३	१० १० ४४ १७	१० २४ २० ५९	६ १३ ११ २३	४ १७	९ ३०	१ २४	१ अप्रैल
२	११ १७ ५९ ४५	० ९ २६ २४	३ १९ ४६ ३७	११ ५ ३८ १	६ २१ ३५ २२	१० ११ ५६ १३	१० २४ २७ ५९	६ १३ ८ १२	४ ४०	१२ ५३	+० २४	२
३	११ १८ ५८ ५७	० २१ ५२ ११	३ १९ ५२ ४३	११ ७ २८ २४	७ २१ ३५ ११	१० १३ ८ ११	१० २४ ३४ ५६	६ १३ ५ १	५ ३	१५ ३५	−० ४३	३
४	११ १९ ५८ ६	१ ३ ४८ ५३	३ १९ ५९ २७	११ ९ २० १३	७ २१ ३४ ४९	१० १४ २० १०	११० २४ ४१ ५१	६ १३ १ ५०	५ २६	१७ ४२	१ ५३	४
५	११ २० ५७ १४	१ १५ ३९ ४६	३ २० ६ ४९	११ ११ १३ २५	७ २१ ३४ १५	१० १५ ३२ ४	१० २४ ४८ ४५	६ १२ ५० ३१	५ ४९	१८ ५८	२ ५१	५
६	११ २१ ५६ २०	१ २७ २८ ४६	३ २० १४ ४९	११ १३ ८ २	७ २१ ३३ २९	१० १६ ४४ १०	१० २४ ५५ ३६	६ १२ ५५ २८	६ ११	१९ २३	३ ४३	६
७	११ २२ ५५ २३	२ ९ २० १५	३ २० २३ २५	११ १५ ४ ०	७ २१ ३२ ३२	१० १७ ५६ १६	१० २५ २ २६	६ १२ ५२ १७	६ ३४	१८ ५७	४ २४	७
८	११ २३ ५४ २३	२ २१ १८ ५७	३ २० ३२ ३७	११ १७ १ २५	७ २१ ३१ २५	१० १९ ८ २१	१० २५ ९ १५	६ १२ ४९ ६	६ ५७	१७ ४०	४ २	८
९	११ २४ ५३ २२	३ ३ २९ ४१	३ २० ४२ २४	११ १९ ० ५	७ २१ ३० ७	१० २० २० २७	१० २५ १५ ५८	६ १२ ४५ ५५	७ १९	१५ ३५	४ ५५	९
१०	११ २५ ५२ १८	३ १५ ५७ ०	३ २० ५२ ४६	११ २१ ० २९	७ २१ २८ ३७	१० २१ ३२ ३५	१० २५ २२ ४१	६ १२ ४२ ४४	७ ४२	१२ ४४	५ १६	१०
११	११ २६ ५१ १२	३ २८ ४४ ५१	३ २१ ३ ४१	११ २३ १ ३५	७ २१ २६ ५६	१० २२ ४४ ४५	१० २५ २५ ३३	६ १२ ३९ ३३	८ ४	९ १३	५ १	११
१२	११ २७ ५० ४	४ ११ ५६ ६	३ २१ १५ ९	११ २५ ३ ५६	७ २१ २५ ४	१० २३ ५६ ५५	१० २५ ३६ ०	६ १२ ३६ २३	८ २६	५ १०	४ ३६	१२
१३	११ २८ ४८ ५३	४ २५ ३२ ५	३ २१ २७ ६	११ २७ ७ ३०	७ २१ २३ १	१० २५ ९ ७	१० २५ ४२ ३६	६ १२ ३३ १२	८ ४८	+० ४३	−३ ४९	१३

भौमादि ग्रहों के क्रान्ति, शर (प्रातः ५ घं. ३० मि.) (भा. स्टैं. टा.)

तारीख	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि	
सन्	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर
१९९४ ई.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
११ अप्रै.	-२/९	-१/४	-१/२०	-२/२४	-१४/९	+१/२४	+१५/४	-०/१०	-९/५०	-१/३०
१७ "	-०/१६	१/३	+३/१०	२/३	१३/५६	१/२४	१७/२८	+०/६	९/३८	१/३२
२३ "	+१/३६	१/१	८/८	१/२४	१३/४३	१/२४	१९/३७	०/२२	९/२६	१/३३
२९ "	३/२७	०/५९	१३/१९	-०/३०	१३/२९	१/२४	२१/२७	०/३८	९/१६	१/३४
५ मई	५/१६	०/५७	१८/१२	+०/३३	१३/१४	१/२३	२२/५५	०/५४	९/६	१/३५
११ "	७/३	०/५५	२२/६	१/३१	१३/१	१/२३	२४/१	१/९	८/५८	१/३६
१७ "	८/४७	०/५२	२४/३४	२/९	१२/४८	१/२२	२४/४३	१/२२	८/५०	१/३८
२३ "	१०/२७	०/४९	२५/३४	२/१९	१२/३६	१/२१	२४/५९	१/३४	८/४४	१/३९
२९ "	१२/३	०/४६	२५/२४	१/५८	१२/२५	१/२०	२४/५०	१/४४	८/३९	१/४०
४ जून	१३/३४	०/४३	२४/२६	+१/०७	१२/१६	१/१९	२४/१५	१/५२	८/३४	१/४२
१० "	१५/१	०/४०	२२/५९	-०/१३	१२/८	१/१७	२३/१६	१/५६	८/३३	१/४३
१६ "	१६/२२	०/३६	२१/२१	१/५१	१२/३	१/१६	२१/५४	१/५८	८/३२	१/४४
२२ "	१७/३६	०/३२	१९/५३	३/२६	१२/०	१/१४	२०/१२	१/५७	८/३२	१/४६
२८ "	१८/४५	०/२८	१८/५६	४/३०	११/५९	१/१३	१८/११	१/५२	८/३४	१/४७
४ जुला.	१९/४६	०/२४	१८/४५	४/४१	१२/०	१/११	१५/५४	१/४४	८/३७	१/४९
१० "	२०/४१	०/१९	१९/२२	४/५	१२/३	१/९	१३/२५	१/३२	८/४१	१/५०
१६ "	२१/२८	०/१५	२०/२८	२/५६	१२/९	१/८	१०/४४	१/१६	८/४७	१/५१
२२ "	२२/८	०/१०	२१/३५	१/३३	१२/१६	१/६	७/५५	०/५७	८/५४	१/५३
२८ "	२२/४१	०/६	२२/१	-०/१०	१२/२५	१/५	५/१	०/३३	९/२	१/५४
३ अग.	२३/७	-०/१	२१/१०	+०/५६	१२/३६	१/३	+२/३	+०/७	९/१०	१/५५
९ "	२३/२५	+०/४	१८/४७	१/३५	१२/४९	१/२	-०/५६	-०/२३	९/२०	१/५६
१५ "	२३/३६	०/१०	१५/१०	१/४६	१३/४	१/०	३/५४	०/५६	९/३०	१/५७
२१ "	३३/४०	०/१५	१०/५२	१/३३	१३/१९	०/५९	६/४९	१/३२	९/४०	१/५८
२७ "	२३/३७	०/२१	६/१८	१/३	१३/३६	०/५८	९/३८	२/१०	९/५१	१/५८
२ सितं.	२३/२८	०/२६	+१/४५	+०/२३	१३/५४	०/५७	१२/२०	२/५०	१०/२	१/५९
८ "	२३/१३	०/३२	-२/३९	-०/२३	१४/३	०/५५	१४/५१	३/३२	१०/१२	१/५९
१४ "	२२/५३	०/३८	६/४४	१/११	१४/३३	०/५४	१७/११	४/१४	१०/२३	१/५९
२० "	२२/२७	०/४४	१०/२५	१/५९	१४/५३	०/५३	१९/१६	४/५६	१०/३२	१/५९
२६ "	२१/५७	०/५१	१३/३२	२/४३	१५/१४	०/५२	२१/३	५/३६	१०/४१	१/५९
२ अक्तू.	२१/२४	०/५७	१५/५१	३/१७	१५/३५	०/५१	२२/२८	६/१२	१०/४९	१/५९
८ "	२०/४८	१/४	१६/५७	३/३०	१५/५७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१४ "	२०/८	१/११	१६/४	३/३	१६/१८	०/५०	२३/५४	७/०	११/२	१/५८
२० "	+१९/२६	+१/१९	-१२/४०	१/३७	-१६/४०	+०/४९	-२३/३९	-७/०	-११/७	-१/५७

तारीख	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि	
१९९४.	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर
९५ ई.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
२६ अक्तू.	+१८/४४	+१/२६	-८/२३	+०/२४	-१७/१	+०/४९	-२२/३६	-६/३७	-११/१०	-१/५६
१ नवं.	१८/१	१/३५	६/३४	१/४८	१७/२२	०/४८	२०/४५	५/४६	११/१२	१/५६
७ "	१७/१९	१/४३	७/५०	२/१४	१७/४३	०/४८	१८/२४	४/३०	११/१२	१/५५
१३ "	१६/३७	१/५२	१०/४५	२/१	१८/३	०/४७	१५/५८	३/००	११/१२	१/५४
१९ "	१५/५८	२/२	१४/९	१/२९	१८/२३	०/४७	१३/५३	१/२९	११/९	१/५३
२५ "	१५/२२	२/१२	१७/२६	०/४९	१८/४२	०/४७	१२/२८	-०/७	११/५	१/५२
१ दिसं.	१४/५०	२/२३	२०/१७	+०/७	१९/०	०/४६	११/४३	+१/२	११/०	१/५२
७ "	१४/२२	२/३४	२२/३५	-०/३३	१९/१७	०/४६	११/३७	१/५६	१०/५४	१/५१
१३ "	१४/१	२/४६	२४/१३	१/९	१९/३४	०/४६	१२/१	२/३७	१०/४६	१/५०
१९ "	१३/४७	२/५९	२५/५	१/३९	१९/४९	०/४६	१२/४८	३/६	१०/३७	१/४९
२५ "	१३/४१	३/१२	२५/७	२/०	२०/४	०/४६	१३/५०	३/२६	१०/२७	१/४९
३१ "	१३/४४	३/२५	२४/१५	२/१०	२०/१८	०/४६	१५/१	३/३६	१०/१६	१/४८
६ जन.	१३/५७	३/३९	२२/२८	२/३	२०/३१	०/४६	१६/१६	३/३९	१०/४	१/४७
१२ "	१४/२०	३/४३	१९/४९	१/३५	२०/४२	०/४६	१७/३०	३/३५	९/५१	१/४७
१८ "	१४/५३	४/५	१६/३८	-०/३०	२०/५३	०/४६	१८/३८	३/२७	९/३७	१/४६
२४ "	१५/३४	४/१६	१३/४२	+०/५३	२१/३	०/४६	१९/३६	३/१३	९/२३	१/४६
३० "	१६/२१	४/२५	१२/२४	२/३७	२१/११	०/४६	२०/२०	२/५६	९/८	१०/४६
५ फर.	१७/१२	४/३१	१३/१९	३/३८	२१/१९	०/४६	२०/५०	२/३६	८/५२	१/४६
११ "	१८/१	४/३३	१५/१४	३/१८	२१/२६	०/४७	२१/१	२/१५	८/३६	१/४५
१७ "	१८/४७	४/३१	१६/४४	२/११	२१/३२	०/४७	२०/५२	१/५१	८/२०	१/४५
२३ "	१९/२५	४/२५	१७/२२	+०/५७	२१/३७	०/४७	२०/२४	१/२७	८/३	१/४५
१ मार्च	१९/५३	४/१६	१७/५	-०/१०	२१/४१	०/४८	१९/३५	१/३	७/४६	१/४६
७ "	२०/११	४/५	१५/५८	१/४	२१/४४	०/४८	१८/२६	०/३९	७/२९	१/४६
१३ "	२०/१९	३/५२	१४/१	१/४४	२१/४६	०/४८	१६/५९	+०/१५	७/१२	१/४६
१९ "	२०/१७	३/३८	११/१८	२/९	२१/४८	०/४९	१५/१४	-०/७	६/५६	१/४७
२५ "	२०/७	३/२४	७/५१	२/१९	२१/४९	०/४९	१३/१३	०/२७	६/३९	१/४७
३१ "	+१९/५०	+३/१०	-३/४१	-२/१३	-२१/४९	+०/४९	-१०/५९	-०/४५	-६/२३	-१/४८

शर–जिस वृत्त में (या यूं कहिए कि जिस वृत्त के धरातल में) सूर्य या पृथ्वी भ्रमण करती है, उस वृत्त को "क्रान्तिवृत्त" कहा जाता है। इस वृत्त को २७ समान भागों में बांट कर उन्हें अश्विनी आदि २७ नक्षत्रों के और इसी वृत्त को १२ समान भागों में बांट कर उन्हें मेष आदि राशियों के नाम दिए गए हैं। सूर्य को छोड़कर शेष सभी ग्रहों के बिम्ब हमेशा इस वृत्त के धरातल में नहीं रहते। वे आकाश में चलते-चलते इस वृत्त से उत्तर या दक्षिण की ओर कुछ-कुछ अंशों की दूरी पर अक्सर हटते रहते हैं। उन ग्रहों की इस वृत्त से उत्तर या दक्षिण की ओर दूरी को ही 'शर' कहा जाता है। धन (+) शर का अर्थ है कि वह ग्रह क्रान्तिवृत्त से उत्तर की ओर उतने (शर तुल्य) अंश हटा हुआ है, ऋण (-) शर उस ग्रह की क्रान्तिवृत्त से दक्षिण की ओर स्थिति एवं अन्तर बतलाता है।

–प्रियव्रत शर्मा

यूरेनस, नेप्च्यून, वेंकटेश (प्लूटो) के निरयण भोगांश (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख	यूरेनस	नेप्च्यून	वेंकटेश	तारीख	यूरेनस	नेपच्यून	वेंकटेश	तारीख	यूरेनस	नेप्च्यून	वेंकटेश
१९९४ ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	१९९४ ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	१९९४-९५ ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
१ जनवरी	८/२७/४९	८/२६/४२	७/३/१९	१५ जून	९/१/४७	८/२८/५७	७/२/११	१ दिसं.	९/०/३	८/२७/४३	७/४/३७
१५ "	८/२८/३९	८/२७/१४	७/३/४३	१ जुला.	९/१/१३	८/२८/३३	७/१/५१	१५ "	९/०/४५	८/२८/२०	७/५/९
१ फर.	८/२९/३८	८/२७/५२	७/४/४	१५ जुलाई	९/०/४०	८/२८/१०	७/१/३८	१ जनवरी	९/१/४१	८/२८/४७	७/५/४५
१५ "	९/०/२३	८/२८/२१	७/४/१५	१ अग.	८/२९/५९	८/२७/४३	७/१/३१	१५ "	९/२/३०	८/२९/१९	७/६/१०
१ मार्च	९/१/६	८/२८/४६	७/४/१८	१५ अग.	८/२९/२९	८/२७/२३	७/१/३२	१ फर.	९/३/३०	८/२९/५७	७/६/३३
१५ "	९/१/४१	८/२९/७	७/४/१५	१ सितं.	८/२८/५९	८/२७/३	७/१/४२	१५ "	९/४/१७	९/०/२६	७/६/४४
१ अप्रैल	९/२/१२	८/२९/२५	७/४/२	१५ सितं.	८/२८/४३	८/२६/५३	७/१/५७	१ मार्च	९/५/०	९/०/५२	७/६/४९
१५ "	९/२/२८	८/२९/३३	७/३/४६	१ अक्तू.	८/२८/३६	८/२६/४७	७/२/२२	१५ मार्च	९/५/३७	९/१/१४	७/६/४८
१ मई	९/२/३४	८/२९/३४	७/३/२३	१५ अक्तू.	८/२८/४०	८/२६/५०	७/२/४९	१ अप्रै.	९/६/११	९/१/३४	७/६/३७
१५ "	९/२/२९	८/२९/२८	७/३/०	१ नवं.	८/२८/५९	८/२७/२	७/३/२६				
१ जून	९/२/१०	८/२९/१४	७/२/३२	१५ नवं.	८/२९/२४	८/२७/१८	७/३/५९				

यूरेनस-नेप्च्यून वेंकटेश (प्लूटो) के क्रान्ति, शर (प्रातः ५ घं. ३. मि. भा. स्टै. टा.)

तारीख	यूरेनस		नेप्च्यून		वेंकटेश		तारीख	यूरेनस		नेपच्युन		वेंकटेश	
१९९४ ई.	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	१९९४	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर
	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	- ९५ ई.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
१ अप्रै.	- २१/२६	- ०/२९	- २०/५०	+ ०/३७	- ५/४२	+ १४/१९	१ नवं.	- २२/१	- ०/३०	- २१/१६	+ ०/३५	- ६/३३	+ १४/१९
१ मई.	२१/२२	०/३०	२०/४९	०/३७	५/२८	१४/२५	१ दिसं.	२१/४९	०/३०	२१/१०	०/३४	६/५१	१४/१६
१ जून	२१/२८	०/३१	२०/५२	०/३७	५/१९	१४/२३	१ जन.	२१/३४	०/३०	२१/१	०/३३	७/१	१४/१९
१ जुला.	२१/३९	०/३१	२०/५८	०/३७	५/१९	१४/१४	१ फर.	२१/११	०/३०	२०/४९	०/३३	७/१	१४/२९
१ अग.	२१/५१	०/३२	२१/६	०/३७	५/२९	१४/५९	१ मार्च	२०/५४	०/३०	२०/३९	०/३३	६/५४	१४/३९
१ सितं.	२२/२	०/३१	२१/१४	०/३६	५/४८	१४/४२	१ अपै.	- २०/४१	- ०/३१	- २०/३२	+ ०/३३	- ६/३९	+ १४/५३
१ अक्तू	- २२/५	- ०/३१	- २१/१७	+ ०/३५	- ६/१०	+ १४/२८							

ग्रहों की समकल युतियाँ (सं २०५१ वि.)

युतग्रह	तारीख	युतग्रह	तारीख	युतग्रह	तारीख	युतग्रह	तारीख	युतग्रह	तारीख	युतग्रह	तारीख	युतग्रह	तारीख	युतग्रह	तारीख
सू. मं.	×	सू. शु.	३ नवं. '९४	मं. गु.	×	बु. शु.	१३ नवं. '९४	गु. शु.	१५अक्तू '९४	शु. श.	×	श. रा.	×	के. यू.	×
" बु.	३१ अप्रै. '९४	" श.	६ मार्च '९५	" शु.	×	" श.	२६ मार्च '९५	" "	१५ जन. '९५	" रा.	४ अक्तू. '९४	" के.	×	" ने.	×
" "	२५ जून. '९४	" रा.	७ नवं. '९४	" श.	×	" रा.	२० नवं. '९४	" श.	×	" "	२५ अक्तू. '९४	" यू.	×	" वें.	×
" "	१३ अग. '९४	" के.	१५ मई '९४	" रा.	×	" के.	७ मई '९४	" रा.	७ अक्तू. '९४	" "	१८ दिसं. '९४	" ने.	×		
" "	२१ अक्तू. '९४	" यू.	१७ जन. '९५	" यू.	×	" यू.	४ जन. '९५	" के.	×	" के	२२ अप्रै. '९४	" वे.	×		
" "	१४ दिसं. '९४	" ने	१३ जन. '९५	" ने.	×	" ने.	२ जन. '९५	" यू.	×	" यू.	२ मार्च '९५	" रा. यू.	×		
" "	४ फर. '९४	" वे.	२१ नवं. '९५	" वें.	×	बु. वें.	२९ नवं. '९४	" ने.	×	" ने.	२६ फर. '९५	" ने.	×		
" गु.	१७ नवं. '९४	मं. बु.	५ अप्रै. '९४	बु. गु.	२८ नवं. '९४	गु. शु.	३० सितं '९४	,, वें.	२ दिसं. '९४	" वें.	७ जन. '९५	" वे.	×		

ग्रहों के निरयण राशि-नक्षत्र-चरण-चार (वि. सं. २०५१)

सूर्य चार

तारीख १९९४ ई.	नक्षत्र-चरण राशि	तारीख १९९४ ई.	नक्षत्र-चरण-राशि	तारीख १९९४.९५ ई.	नक्षत्र-चरण-राशि
अप्रै० १०	रे. ४	अग. १३	आश्ले ४	दिसं. १२	ज्ये. ४
१३	अश्वि. १ मेष	१६	मघा १ सिंह	१५	मूल. १ धनु
१७	२	२०	२	१९	२
२१	३	२४	३	२२	३
२४	४	२७	४	२६	४
२७	भर. १	३०	पू. फा. १	२९	पू. षा. १
मई १	२	सितं ३	२	जन. १	२
४	३	६	३	४	३
८	४	१०	४	८	४
११	कृति. १	१३	उ. फा. १	११	उ. षा. १
१४	२ वृष	१६	२ कन्या	१४	२ मकर
१८	३	२०	३	१७	३
२१	४	२३	४	२१	४
२५	रो. १	२७	हस्त १	२४	श्रव. १
२८	२	३०	२	२७	२
जून १	३	अक्तू. ३	३	३१	३
४	४	७	४	फर. ३	४
८	मृग १	१०	चित्रा १	६	धनि. १
११	२	१४	२	९	२
१५	३ मिथु.	१७	३ तुला	१२	३ कुंभ
१८	४	२०	४	१६	४
२२	आर्द्रा १	२४	स्वा. १	१९	शत. १
२५	२	२७	२	२३	२
२९	३	३१	३	२६	३
जुला. २	४	नवं. ३	४	मार्च १	४
६	पुन. १	६	विशा. १	४	पू. भा. १
९	२	९	२	८	२
१३	३	१३	३	११	३
१६	४ कर्क	१६	४ वृश्चि.	१४	४ मीन
२०	पुष्य १	१९	अनु. १	१८	उ. भा १
२३	२	२३	२	२१	२
२७	३	२६	२	२५	३
३०	४	२९	४	२८	४
अग. ३	आश्ले १	दिसं. २	ज्ये. १	३१	रे. १
६	२	६	२		
१०	३	९	३		

मंगल चार

तारीख १९९४	नक्षत्र-चरण राशि
अप्रै. ११	उ. भा. १
१५	२
१९	३
२३	४
२८	रे. १
मई २	२
७	३
११	४
१५	अश्वि. १ मेष
२०	२
२४	३
२९	४
जून २	भर १
७	२
११	३
१६	४
२०	कृ. १
२५	२ वृष
२९	३
जुला. ४	४
९	रो. १
१४	२
१९	३
२३	४
२८	मृग. १
अग. २	२
७	३ मिथुन
१२	४
१७	आर्द्रा १
२२	२
२८	३
सितं. २	४
७	पुन. १
१३	२
१८	३
[illegible]	[illegible]

तारीख १९९४.९५ ई	नक्षत्र-चरण राशि
सितं. २९	पुष्य १
अक्तू. ५	२
११	३
१७	४
२४	आश्ले १
३०	२
नवं. ६	३
१४	४
२२	मघा १ सिंह
दिसं. २	२
१४	३
जन. ३	वक्री
२१	मघा २
फर. १	१
९	व. आश्ले४कर्क
१८	३
२७	२
मार्च १४	१
२४	मार्गी

बुध-चार (१९९४ ई.)

अप्रै. १२	उ. भा. ३
१४	४
१५	रेव. १
१७	२
१९	३
२१	४
२२	अश्वि. १ मेष
२४	२
२६	३
२७	४
२९	भर १
३०	२
मई २	३
४	४
५	कृ. १

बुध चार

तारीख १९९४ ई.	नक्षत्र-चरण राशि
मई ६	कृति. २ वृष
८	३
१०	४
११	रोहि. १
१३	२
१५	३
१७	४
१९	मृग. १
२१	२
२३	३ मिथु.
२६	४
२९	आर्द्रा १
जून १	२
७	३
१२	वक्री
१८	व. आर्द्रा २
२५	१
जुला. १	व. मृग. १
६	मार्गी
११	आर्द्रा १
१६	२
२०	३
२२	४
२५	पुनः १
२७	२
२९	३
३१	४ कर्क
अग. १	पुष्य १
३	२
५	३
६	४
८	आश्ले. १
१०	२
११	३
१३	४
[illegible]	सिंह

तारीख १९९४	नक्षत्र-चरण राशि
अग. १६	मघा २
१८	३
२०	४
२१	पू. फा. १
२३	२
२५	३
२७	४
२९	उ. फा. १
३१	उ. फा. २ कन्या
सितं. २	३
४	४
६	हस्त १
९	२
११	३
१३	४
१६	चित्रा १
१८	२
२१	३ तुला
२४	४
२७	स्वा. १
अक्तू. २	२
९	वक्री
१५	व. स्वा. १
१८	व. चित्रा ४
२१	३
२४	व. चित्रा २
	कन्या
३०	मार्गी
नवं. ५	चित्रा३ तुला
८	४
१०	स्वा. १
१३	२
१५	३
१७	४
१९	विशा १
२२	२
२४	३

तारीख १९९४.९५	नक्षत्र-चरण राशि
नवं. २६	वि. ४ वृश्चि.
२८	अनु. १
३०	२
दिसं. २	३
४	४
६	ज्ये. २
९	२
११	३
१३	४
१५	मू. १ धनु
१७	२
१९	३
२१	४
२३	पू. षा. १
२६	२
२८	३
३०	४
जन. १	उ. षा. १
३	२ मकर
५	३
७	४
९	श्रव. १
११	२
१३	३
१६	४
१८	धनि. १
२३	२
२६	वक्री
२८	व. धनि १
फर. १	व. श्रव. ४
४	३
७	२
११	१
१६	मार्गी
२१	श्रव. २
२६	३

ग्रहों के निरयण राशि-नक्षत्र-चरण-चार (वि. सं. २०५१)

बुधचार

तारीख १९९५ ई.	नक्षत्र-चरण राशि
मार्च १	श्रव. ४
४	धनि. १
७	२
१०	३ कुंभ
१३	४
१५	शत. १
१७	२
१९	३
२२	४
२३	पू. भा. १
२६	२
२८	३
२९	४ मीन
३१	उ. भा. १

गुरुचार
१९९४.९५ ई.

तारीख	नक्षत्र-चरण राशि
अप्रै. २५	व. स्वा. ३
मई. २२	२
जुला. २	मार्गी
अग. ११	स्वा. ३
सितं. ४	४
२४	विशा. १
अक्तू. ११	२
नवं. ११	४ वृश्चि.
२६	अनु. १
दिसं. ११	२
२७	३
जन. १३	४
फर. १	ज्ये. १
२८	२
अप्रै. १	वक्री

शुक्रचार
१९९४ ई.

तारीख	नक्षत्र-चरण राशि
अप्रै. १३	भर. ३
१५	४

शुक्रचार

तारीख १९९४ ई.	नक्षत्र-चरण राशि	तारीख १९९४-९५ ई.	नक्षत्र-चरण राशि	तारीख १९९९५ ई.	नक्षत्र-चरण राशि
अप्रै. १८	कृत्ति १	जुला. २९	उ. फा. १	जन. १७	ज्ये. १
२१	२ वृष	अग. १	२ कन्या	२१	२
२३	३	४	३	२४	३
२६	४	८	४	२७	४
२९	रोहि. १	११	हस्त १	३०	मूल १ धनु
मई २	२	१४	२	फर. २	२
५	३	१७	३	५	३
७	४	२१	४	८	४
१०	मृग. १	२४	चित्रा १	११	पू. षा. १
१३	२	२८	२	१४	२
१५	३ मिथुन	३१	३ तुला	१७	३
१८	४	सितं. ४	४	२०	४
२१	आर्द्रा १	८	स्वा. १	२२	उ. षा. १
२४	२	१२	२	२५	२ मकर
२७	३	१६	३	२८	३
२९	४	२१	४	मार्च ३	४
जून १	पुन. १	२७	विशा. १	६	श्रव. १
४	२	अक्तू. ६	२	८	२
७	३	१३	वक्री	११	३
१०	४ कर्क	१९	व. विशा. १	१४	४
१२	पुष्य १	२७	व. स्वा. ४	१७	धनि. १
१५	२	नवं. २	३	२०	२
१८	३	८	२	२३	३ कुंभ
२१	४	१५	१	२६	४
२४	आश्ले. १	२३	मार्गी	२८	शत. १
२७	२	दिसं. १	स्वा. २	३१	२
३०	३	९	३		
जुला. २	४	१५	४		
५	मघा १ सिंह	१९	विशा. १		
८	२	२४	२		
११	३	२८	३		
१४	४	३१	४ वृश्चि.		
१७	पू. फा. १	जन. ४	अनु. १		
२०	२	८	२		
२३	३	११	३		
२६	४	१४	४		

शनिचार
(१९९४-९५ ई.)

तारीख	नक्षत्र-चरण राशि
मई ४	शत. ४
जून २३	वक्री
अग. १३	व. शत. ३
सितं. २८	२
नवं. ९	मार्गी
दिसं. २०	शत. ३
जन. २६	४
फर. २४	पू. भा. १
मार्च २३	२

राहु चार

तारीख	नक्षत्र चरण राशि
(१९९४-९५ ई.)	
मई १८	विशा. ३ तुला
जुला. २०	२
सितं. २१	१
नवं. २३	स्वा. ४
जन. २५	३
मार्च २९	२

केतु चार
(१९९४-९५ ई.)

तारीख	नक्षत्र चरण राशि
मई १८	कृति. १ मेष
जुला. २०	भर. ४
सितं. २१	३
नवं. २३	२
जन. २५	१
मार्च २९	अश्वि. ४

यूरेनस चार
(१९९४-९५)

तारीख	नक्षत्र चरण राशि
अप्रै. ३०	वक्री
जुला. ३१	व. उ. षा. १
अक्तू. २	मार्गी
नवं. २९	उ. षा. २
जन. २९	३

नेपच्यून चार
(१९९४-९५)

तारीख	नक्षत्र चरण राशि
अप्रै. २५	वक्री
अक्तू. २	मार्गी
फर. २	उ. षा. २

वेंकटेश (प्लूटो)चार
(१९९४-९५ ई.)

तारीख	नक्षत्र चरण राशि
अप्रै. ३०	व. विशा. ४
अग. ५	मार्गी
अक्तू. २९	अनु. १
फर. १२	२
मार्च ३	वक्री
२२	व. अनु. १

ग्रहों के वक्र-मार्ग

तारीख		नक्षत्र-चरण राशि
३ जन.	'९५	मंगल वक्री
२४ मार्च	'९५	मंगल मार्गी
१२ जून	'९४	बुध वक्री
६ जुला.	'९४	बुध मार्गी
९ अक्तू.	'९४	बुध मार्गी
३० अक्तू.	'९४	बुध वक्री
२६ जन.	'९५	बुध वक्री
१६ फर.	'९५	बुध मार्गी
२ जुला.	'९४	गुरु मार्गी
१३ अक्तू.	'९४	शुक्र वक्री
२३ नवं.	'९४	शुक्र वक्री
२३ जून	'९४	शनि वक्री
९ नवं.	'९४	शनि मार्गी
३० अप्रै.	'९४	यूरे. वक्री
२ अक्तू.	'९४	यूरे. मार्गी
२५ अप्रै.	'९४	नेप. वक्री
२ अक्तू.	'९४	नेप० मार्गी
५ अग.	'९४	वेंक. मार्गी
३ मार्च	'९५	वेंक. वक्री

ग्रहों के उदयास्त

१८ अप्रै.	'९४	बु. पू. अस्त
११ मई	"	" प. उदय
१६ जून	"	" प. अस्त
४ जुला.	"	" पू. उदय
३१ जुला.	"	" पू. अस्त
२७ अग.	"	" प. उदय
२४अक्तू.	"	" पू. उदय
२७ अक्तू	"	" पू. उदय
२० नवं.	"	" पू. अस्त
५ जन.	'९५	बुध प. उदय
२८ जन.	"	" प. उदय
१० फर.	"	" पू. उदय
२७अक्तू.	'९४	शुक्र. प.अस्त
७ नवं.	"	" पू. उदय
४ नवं.	"	" गुरु अस्त
२९ नवं.	"	" उदय
१७ फर.	'९५	शनि अस्त
२२ मार्च	"	" उदय

मंगल इस वर्ष (सं. २०५१ वि. में) अस्त नहीं हुआ है।

ग्रहों के उदयास्त

ग्रहों के उदयास्त दो प्रकार के होते हैं-(१) दैनिक उदयास्त, (२) सूर्य केन्द्रिक उदयास्त।

पृथ्वी के अक्षभ्रमण के कारण प्रत्येक ग्रह सूर्य एवं चन्द्र की भांति प्रतिदिन पूर्व क्षितिज में उदय होकर पश्चिम क्षितिज में अस्त होता रहता है इसे ही ग्रहों का 'दैनिक उदयास्त' कहा जाता है। सूर्य चन्द्र के दैनिक उदयास्त काल ही पंचांगों में देते हैं। मंगल आदि ग्रहों के दैनिक उदयास्तों का फलित एवं धार्मिक कृत्यों में कोई विशेष उपयोग न होने से इन्हें पंचागों में नहीं देते।

सूर्य के समीप मंगलादि पांच ताराग्रहों के कुछ दिनों के लिए सूर्य की प्रभा में लुप्त (अदृश्य) होने को 'सूर्य केन्द्रिक अस्त' कहा जाता है। जब वे अपनी एवं सूर्य की गति के कारण सूर्य के प्रभाक्षेत्र से बाहर निकल आते हैं, तब वे उदित (दृश्य) कहलाते हैं। उनके इस लोप और दर्शन को 'सूर्य केन्द्रिक उदयास्त' कहा जाता है। फलित शास्त्र एवं धार्मिक कृत्यों में ग्रहों के इस सूर्य केन्द्रिक उदयास्त का बहुधा प्रयोग होने से पंचांगों में इन पंचताराओं के सूर्य केन्द्रिक उदयास्त का निर्देश रहता है। इस पृष्ठ पर दी गई भौमादि ग्रहों के उदयास्त की तारीखें सूर्यकैन्द्रिक उदयास्त वाली ही हैं।

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्त काल (भा. स्टैं. टा.) (वि. सं. २०५१)

ता.	तिथि	चन्द्रास्त	ता.	तिथि	चन्द्रोदय	ता.	तिथि	चन्द्रास्त	ता.	तिथि	चन्द्रोदय	ता.	तिथि	चन्द्रास्त	ता.	तिथि	चन्द्रोदय	ता.	तिथि	चन्द्रास्त	ता.	तिथि	चन्द्रोदय
१९९४ ई.	चैत्र शु	घं. मि.	१९९४	वैशा. कृ.	घं. मि.	१९९४ ई.	वैशा. शु.	घं. मि.	१९९४ ई.	ज्येष्ठ कृ.	घं. मि.	१९९४ ई.	ज्येष्ठ शु.	घं. मि.	१९९४ ई.	आषाढ कृ.	घं. मि.	१९९४ ई.	आषा. शु.	घं. मि.	१९९४ ई.	श्राव. कृ.	घं. मि.
११ अप्रै.	१	१९/१२	२६ अप्रै	१	१९/४६	११ मई	१	१९।४६	२६ मई	१	२०।३९	१० जून	१	२०।१२	२४ जून	१	२०।१३	९ जुला.	१	१९।३९	२३ जु.	१	१९।३३
१२ "	१	२०/६	२७ "	२	२०/५४	१२ "	२	२०।३७	२७ "	३	२१।३५	११ "	२	२०।५८	२५ "	२	२१।०	१० "	२	२०।२०	२४ "	२	२०।१३
१३ "	२	२०/५९	२८ "	३	२१/५६	१३ "	३	२१।२७	२८ "	४	२२।२४	१२ "	३	२१।४१	२६ "	३	२१।३९	११ "	३	२०।५८	२५ "	३	२०।४९
१४ "	३	२१/४९	२९ "	४	२२/५६	१४ "	४	२२।१४	२९ "	५	२३।७	१३ "	४	२२।१९	२७ "	४	२२।१८	१२ "	४	२१।३६	२६ "	४	२१।२२
१५ "	४	२२/४०	३० "	५	२३/४७	१५ "	४	२२।५९	३० "	६	२३/४५	१४ "	५	२२।५८	२८ "	५	२२।५२	१३ "	५	२२।१४	२७ "	५	२१।५७
१६ "	५	२३।३०	१ मई	६	...	१६ "	५	२३।३९	३१ "	७	...	१५ "	६	२३।३५	२९ "	६	२३।२४	१४ "	६	२२।५२	२८ "	६	२२।३१
१७ "	६	...	२ "	७	०/३२	१७ "	६	...	१ जून	८	०/३०	१६ "	७	...	३० "	७	२३।५७	१५ "	७	२३।३१	२९ "	७	२३।५
१८ "	७	०।२६	३ "	८	१/१०	१८ "	७	०।१८	२ "	९	०/५३	१७ "	८	०।१२	१ जुला.	८	....	१६ "	८	...	३० "	८	२३।४२
१९ "	८	१।०	४ "	९	१/४६	१९ "	८	०।५५	३ "	१०	१/२५	१८	९	०।५०	२ "	९	०।३१	१७ "	९	०।१४	३१ "	८	...
२० "	९	१।४१	५ "	१०	२/२०	२० "	१०	१।३४	४ "	११	१।५७	१९	१०	१।३२	३ "	१०	१/६	१८ "	१०	१/२	१ अग.	९	०/२०
२१ "	१०	२/१९	६ "	११	२/५१	२१ "	११	२/१२	५ "	१२	२/३१	२०	११	२/१७	४ "	११	१/४४	१९ "	११	१/५४	२ "	१०	१/४
२२ "	११	२/५९	७ "	१२	३/२४	२२ "	१२	२/५३	६ "	१२	३/७	२१	१३	३/८	५ "	१२	२/२४	२० "	१२	२/५१	३ "	११	१/५१
२३ "	१२	३/३९	८ "	१३	३/५६	२३ "	१३	३/३७	७ "	१३	३/४५	२२	१४	४/४	६ "	१३	३/१०	२१ "	१३	३/५१	४ "	१२	२/४३
२४ "	१३	४/२०	९ "	१४	४/३१	२४ "	१४	४/२८	८ "	१४	४/२८	२३	१५	५/४	७ "	१४	३/५९	२२ "	१५	४/५५	५ "	१३	३/३८
२५ "	१५	५/४	१० "	३०	५/८	२५ "	१५	४/५२	९ "	३०	५।३५				८ "	३०	४/५२				६ "	१४	४/३६
																					७ "	३०	५/३५

ता.	तिथि	चन्द्रास्त	ता.	तिथि	चन्द्रोदय	ता.	तिथि	चन्द्रास्त	ता.	तिथि	चन्द्रोदय	ता.	तिथि	चन्द्रास्त	ता.	तिथि	चन्द्रोदय	ता.	तिथि	चन्द्रास्त	ता.	तिथि	चन्द्रोदय
१९९४ ई.	श्राव. शु.	घं. मि.	१९९४	भाद्र. कृ.	घं. मि.	१९९४ई.	भाद्र शु.	घं. मि.	१९९४ ई.	आश्वि. कृ.	घं. मि.	१९९४ ई.	आश्वि. शु.	घं. मि.	१९९४	कार्ति. कृ.	घं. मि.	१९९४ ई.	कार्ति. शु.	घं. मि.	१९९४ ई.	मार्ग कृ.	घं. मि.
८ अग.	१	१९/३९	२२ अग	१	१९/२२	६ सितं.	१	१८/४९	२०सि.	१	१८/२८	६ अक्तू	२	१८/४९	२०अक्तू	१	१८/१५	४ नवं.	१	१८/१८	१९ नवं.	१	१८/१८
९ "	२	२०/१४	२३ "	२	१९/५६	७ "	२	१९/२९	२१ "	२	१९/३	७ "	३	१९/४०	२१ "	२	१८/५४	५ "	२	१९/१६	२० "	२	१९/५
१० "	३	२०/५२	२४ "	३	२०/२८	८ "	३	२०/१२	२२ "	३	१९/३८	८ "	४	२०/३३	२२ "	३	१९/३५	६ "	३	२०/१८	२१ "	३	१९/५५
११ "	४	२१/३३	२५ "	४	२१/२	९ "	४	२१/०	२३ "	३	२०/१६	९ "	५	२१/३१	२३ "	४	२०/१९	७ "	५	२१/२०	२२ "	४	२०/५०
१२ "	६	२२/१५	२६ "	५	२१/४०	१० "	५	२१/४७	२४ "	४	२०/५७	१० "	६	२२/३१	२४ "	५	२१/९	८ "	६	२२/२४	२३ "	५	२१/४३
१३ "	७	२३/१	२७ "	६	२२/१९	११ "	६	२२/४२	२५ "	५	२१/३९	११ "	७	२३/३२	२५ "	६	२२/०	९ "	७	२३/२६	२४ "	६	२२/४०
१४ "	८	२३/५०	२८ "	७	२३/०	१२ "	८	२३/३८	२६ "	६	२२/२५	१२ "	८	- -	२६ "	६	२२/५५	१० "	८	- -	२५ "	७	२३/३९
१५ "	९	..	२९ "	८	२३/४४	१३ "	९	- -	२७ "	७	२३/१५	१३ "	९	०/३४	२७ "	७	२३/५०	११ "	९	०/२५	२६ "	८	- -
१६ "	१०	०/४५	३० "	९	- -	१४ "	१०	०/३९	२८ "	८	- -	१४ "	१०	१/३२	२८ "	८	-	१२ "	१०	१/२२	२७ "	९	०/३५
१७ "	११	१/४३	३१ "	१०	०/३३	१५ "	११	१/४०	२९ "	९	०/९	१५ "	११	२/३०	२९ "	९	०/४८	१३ "	११	२/१६	२८ "	१०	१/३४
१८ "	१२	२/४४	१ सितं.	११	१/२५	१६ "	१२	२/३९	३० "	१०	१/५	१६ "	१२	३/२५	३० "	१०	१/४८	१४ "	१२	३/१०	२९ "	११	२/३८
१९ "	१३	३/४६	२ "	१२	२/२२	१७ "	१३	३/३७	१ अक्तू	११	२/४	१७ "	१३	४/२०	३१ "	११	२/४९	१५ "	१३	४/३	३० "	१२	३/४३
२० "	१४	४/४६	३ "	१३	३/२०	१८ "	१४	४/३५	२ "	१२	३/४	१८ "	१४	५/१४	१ नवं.	१३	३/५३	१६ "	१३	४/५५	१ दिसं.	१३	५/४५
२१ "	१५	५/३५	४ "	१४	४/२१	१९ "	[illegible]	[illegible]	३ "	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२ "	[illegible]	४/५९	१७ "	१४	५/४८	२ "	१४	६/४५
			५ "	३०	५/२२				४ "	१४	५/११				३ "	३०	६/७	१८ "	१५	३/४१			
									५ "	३०	६/१६												

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्त काल (भा. स्टैं. टा.) (वि. सं. २०५१)

ता.	ति.	चन्द्रास्त	ता.	ति.	चन्द्रोदय	ता.	ति.	चन्द्रास्त	ता.	ति.	चन्द्रोदय	ता.	ति.	चन्द्रास्त	ता.	ति.	चन्द्रोदय	ता.	ति.	चन्द्रास्त	ता.	ति	चन्द्रोदय
१९९४ ई.	मार्ग. शु.	घं. मि.	१९९४-९५ ई	पौष कृ.	घं. मि.	१९९५ ई.	पौष शु	घं. मि.	१९९५ ई.	माघ कृ.	घं. मि.	१९९५ ई.	माघ शु.	घं. मि.	१९९५ ई.	फाल्गु. कृ.	घं. मि.	१९९५ ई.	फाल्गु. कृ.	घं. मि.	१९९५ ई.	चैत्र कृ.	घं. मि.
३ दिसं.	१	१६/५५	१९ दिसं.	१	१९/४८	२ जन.	१	१७/५२	१७जन.	१	१९/२०	३१ जन.	१	१७/२५	१६ फर.	१ "	१९/४०	२ मार्च	१	१९/०	१८ मार्च	२	२०/१
४ "	२	१७/५८	२० "	२	२०/४३	३ "	२	१८/५५	१८ "	२	२०/२०	१ फर.	२	१८/५६	१७ "	२ "	२०/४१	३ "	२	१९/५९	१९ "	३	२१/७
५ "	३	१९/५	२१ "	३	२१/३७	४ "	३	१९/५७	१९ "	३	२१/१७	२ "	३	१९/५९	१८ "	३ "	२१/४२	४ "	३	२०/५७	२० "	४	२२/११
६ "	४	२०/२५	२२ "	४	२२/३२	५ "	५	२०/५६	२० "	४	२२/१३	३ "	४	२०/५४	१९ "	४ "	२२/४२	५ "	४	२१/५३	२१ "	५	२३/१३
७ "	५	२१/४०	२३ "	५	२३/२७	६ "	६	२१/५५	२१ "	५	२३/९	४ "	५	२१/४४	२० "	५ "	२३/४१	६ "	५	२२/४९	२२ "	६	- -
८ "	६	२२/२०	२४ "	६	- -	७ "	७	२२/४८	२२ "	६	- -	५ "	६	२२/३८	२१ "	६ "	- -	७ "	६	२३/३९	२३ "	७	०/१३
९ "	७	२३/०	२५ "	७	०/२२	८ "	७	२३/४०	२३ "	७	०/५	६ "	७	२३/३३	२२ "	७ "	०/३८	८ "	७	- -	२४ "	८	१/८
१० "	८	२३/५८	२६ "	८	१/१८	९ "	८	- -	२४ "	८	०/५८	७ "	८	- -	२३ "	९ "	१/३५	९ "	८	०/२६	२५ "	९	२/३
११ "	९	- -	२७ "	९	२/१८	१०."	९	००/३१	२५ "	९	२/२	८ "	८	०/३०	२४ "	१० "	२/३५	१० "	९	१/१८	२६ "	१०	२/५३
१२ "	१०	०/५६	२८ "	१०	३/२०	११ "	१०	१/२२	२६ "	१०	३/४	९ "	९	१/९	२५ "	११ "	३/३२	११ "	९	२/८	२७ "	११	३/३९
१३ "	११	१/४७	२९ "	१२	४/२४	१२ "	११	२/२०	२७ "	११	४/६	१० "	१०	१/४५	२६ "	१२ "	४/३८	१२ "	१०	२/५५	२८ "	१२	४/२०
१४ "	१२	२/३८	३० "	१३	५/२९	१३ "	१२	३/१४	२८ "	१२	५/८	११ "	११	२/५२	२७ "	१३ "	५/२०	१३ "	११	३/४०	२९ "	१३	४/५८
१५ "	१३	३/३१	३१ "	१४	६/३३	१४ "	१३	४/४	२९ "	१३	६/५	१२ "	१२	३/५७	२८ "	१४ "	६/५	१४ "	१२	४/२५	३० "	१४	५/३६
१६ "	१४	४/२५	१ जन.	३०	७/३७	१५ "	१४	४/५४	३० "	३०	७/६	१३ "	१३	४/४२	१ मार्च	३० "	६/४६	१५ "	१३	५/७	३१ "	३०	६/१३
१७ "	१५	५/१५				१६ "	१५	५/४३				१४ "	१४	५/२७				१६ "	१४	५/४६			
१८ "	१५	६/४										१५ "	१५	६/९				१७ "	१५	६/२१			

अक्षांश-भेद से चन्द्रदर्शन की तारीखें और उन्नत शृंग के लगभग अंश (सं. २०५१ वि.)

भारतीय अक्षांश	चैत्र		वैशाख		ज्येष्ठ		आषाढ़		श्रावण		भाद्रपद		आश्विन		कार्तिक		मार्गशीर्ष		पौष		माघ		फाल्गुन	
	चन्द्रदर्शन १९९४ ई.	उन्नतशृंग अंश	चन्द्रदर्शन १९९४ ई.	उन्नतशृंग अंश	चन्द्रदर्शन १९९४ ई.	उन्नतशृंग अंश	चन्द्रदर्शन १९९४ ई.	उन्नतशृंग अंश	चन्द्रदर्शन १९९४ ई.	उन्नतशृंग अंश	चन्द्रदर्शन १९९४ ई.	उन्नतशृंग अंश	चन्द्रदर्शन १९९४ ई.	उन्नतशृंग अंश	चन्द्रदर्शन १९९४ ई.	उन्नतशृंग अंश	चन्द्रदर्शन १९९४ ई.	उन्नतशृंग अंश	चन्द्रदर्शन १९९५ ई.	उन्नतशृंग अंश	चन्द्रदर्शन १९९५ ई.	उन्नतशृंग अंश	चन्द्रदर्शन १९९५ ई.	उन्नतशृंग अंश
५°	१२ अप्रै.	द. २३	१२ मई	द. ५	१० जून	उ. १२	१० जुला.	उ. २८	९ अग.	उ. ३६	७ सितं.	उ. ३९	६ अक्तू.	उ. ३३	५ नवं.	उ. २०	४ दिसं.	उ. १	२ जन.	द. २०	१ फर.	द. २५	२ मार्च	द. ३४
१५°	" "	द. १३	" "	उ. ५	" "	उ. २२	" "	उ. ३८	" "	उ. ४६	" "	उ. ४९	" "	उ. ४३	" "	उ. ३०	" "	उ. ११	" "	द. १०	" "	द. १५	" "	द. २४
२५°	" "	द. ३	" "	उ. १५	" "	उ. ३२	" "	उ. ४८	" "	उ. ५६	" "	उ. ५८	" "	उ. ५३	" "	उ. ४१	" "	उ. २२	" "	०	" "	द. ५	" "	द. १४
३५°	" "	उ. ७	" "	उ. २६	" "	उ. ४२	" "	उ. ५८	" "	उ. ६६	" "	उ. ६८	" "	उ. ६३	" "	उ. ५०	" "	उ. ३२	" "	उ. १०	" "	उ. ६	" "	द. ४

– दैनिक लग्न सारणी से लग्न ज्ञान –

आगे दी गई दैनिक लग्न सारणी में अंग्रेजी तारीख और प्रविष्टों के अनुसार चण्डीगढ़ (पं.) में निरयण लग्नों का समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.) दिया गया है। किसी अंग्रेजी तारीख या प्रविष्टे को कौन सा लग्न कब समाप्त होता है–यह इस सारणी से तुरन्त जाना जा सकता है। कई बार सारणी में दिए गए प्रविष्टे और अंग्रेजी तारीखों में परस्पर एक दिन का अन्तर पाया जाएगा, इससे गणक को भ्रान्ति नहीं होनी चाहिए। अधिक सूक्ष्मता चाहने वाले गणक को इन सारणियों का प्रयोग अंग्रेजी तारीख के अनुसार ही करना चाहिए।

ध्यान रहे–लग्न सारणी में दुहरी लाईन से दाईं और छपे घं. मि. अगली अंग्रेजी तारीख के है। जैसे १३ अप्रै. के आगे धनु से मीन तक के घं. मि. १४ अप्रै. के हैं।

अयन चलन आदि के कारण दैनिक लग्न सारणी में दिए गए लग्न के समाप्ति कालों में प्रतिवर्ष थोड़ी २ स्थूलता आती जाती है। इस स्थूलता को दूर करने के लिए यहां दाईं ओर एक कोष्ठक (वार्षिक संस्कार कोष्ठक) दिया गया है। अपने अभीष्ट ईस्वी सन् के अनुसार इस कोष्ठक से लिया गया संस्कार दैनिक सारणी के लग्न समाप्ति काल में देने पर लग्न की समाप्ति का काल पर्याप्त सूक्ष्मता से ज्ञात हो जाएगा। इस संस्कार के अनन्तर लग्न के समाप्तिकाल में एक मिनट से कम ही स्थूलता रहेगी। इस वार्षिक संस्कार कोष्ठक में लीप इयर दो बार दिया गया है, एक के पहिले ‡ ऐसा और दूसरे के पहिले *ऐसा चिह्न लगाया गया है। ‡ इस चिह्न के आगे लिखा संस्कार १ जन. से २८ फर. तक के लिए तथा *इस चिन्ह के आगे लिखा संस्कार २९ फर. से ३१ दिसं. तक के लिए है। **२९ फर. के लिए दैनिक लग्न सारणी में २८ फर. को प्रयोग में लाइए।**

यहां वार्षिक संस्कार कोष्ठक द्वारा शुद्ध लग्न समाप्ति काल जानने के उदाहरण देते हैं:–

(I) १३ अप्रैल सन् १९७५ को चण्डीगढ़ में मिथुनलग्न का प्रारंभ काल, (दूसरे शब्दों में वृषलग्न का समाप्ति काल) बतलाइए ? –दैनिक लग्न सारणी में १३ अप्रै. को वृष का समाप्ति काल ९ घं. ३० मि. लिखा है। "वार्षिक संस्कार कोष्ठक" में सन् १९७५ के आगे वृष के नीचे + २ मिनट लिखा है। अतः ९ घं. ३० मि. में २ मि. जोड़ने पर ९ घं. ३२ मि. वृष लग्न का सूक्ष्म समाप्तिकाल ज्ञात हो गया।

(II) सन् १९७२ की १ जन. को चण्डीगढ़ में मकर लग्न कब समाप्त हुआ? –दैनिक लग्न सारणी में १ जन. को मकर का समाप्ति काल ९ घं. ५७ मि. लिखा है। "वार्षिक संस्कार कोष्ठक" में सन् १९७२ दो बार लिखा है। जैसा कि पहिले बतलाया गया है कि ‡ इस चिन्ह वाला संस्कार १ जन. से २८ फर. तक के लिए है। ‡ इस चिन्ह वाले सन् १९७२ के आगे मकर के नीचे + ३ मिनट दिए हैं। इन्हें चिन्हानुसार ९ घं. ५७ मि. में जोड़ने पर १० घं. ० मि. मकर का सूक्ष्म समाप्तिकाल हुआ।

(III) २९ फर. सन् १९७२ को चण्डीगढ़ में कुंभ लग्न कब समाप्त हुआ? –दैनिक लग्न सारणी में २९ फर. नहीं है, इसके लिए २८ फर. को प्रयोग में लाएंगे। २८ फर. के आगे कुंभ का समाप्ति काल ७ घं. ३४ मि. लिखा है। देखिए, "वार्षिक संस्कार

वार्षिक संस्कार कोष्ठक

ईस्वी सन् ↓	मेष	वृष	मिथुन कर्क सिंह कन्या तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ मीन
	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.
१९६५	०	०	०	०	०	०	०
१९६६	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९६७	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
‡१९६८	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
*१९६८	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१
१९६९	०	०	०	०	०	०	०
१९७०	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९७१	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
‡१९७२	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
*१९७२	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१
१९७३	०	०	०	०	०	०	०
१९७४	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९७५	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
‡१९७६	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
*१९७६	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१
१९७७	०	०	०	०	०	०	०
१९७८	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९७९	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
‡१९८०	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
*१९८०	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१

ईस्वी सन् ↓	मेष	वृष	मिथुन कर्क सिंह कन्या तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ मीन
	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.
१९८१	०	०	०	०	०	०	०
१९८२	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९८३	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
‡१९८४	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
*१९८४	−१	−१	०	०	−१	−१	−१
१९८५	०	०	+१	+१	०	०	०
१९८६	+१	+१	+२	+२	+१	+१	+१
१९८७	+२	+२	+३	+३	+२	+२	+२
‡१९८८	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
*१९८८	−१	−१	०	०	−१	−१	−१
१९८९	०	०	+१	+१	०	०	०
१९९०	+१	+१	+२	+२	+१	+१	+१
१९९१	+२	+२	+३	+३	+२	+२	+२
‡१९९२	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
*१९९२	−१	−१	०	०	−१	−१	−१
१९९३	०	०	+१	+१	०	०	०
१९९४	+१	+१	+२	+२	+१	+१	+१
१९९५	+२	+२	+३	+३	+२	+२	+२
‡१९९६	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
*१९९६	−१	−१	०	०	−१	−१	−१

कोष्ठक" में * इस चिह्न वाले सन् १९७२ के आगे कुम्भ के नीचे —१ मिनट लिखा है। इसे चिह्नानुसार ७ घं ३४ मि. में से घटाने पर ७ घं ३३ मिनट कुम्भ का सूक्ष्म समाप्तिकाल हुआ।

(यह "वार्षिक संस्कार कोष्ठक" मेरे "गणक मार्त्तण्ड" के लग्न प्रकरण में दिए गए एक बड़े कोष्ठक का एक भाग है जिसमें सन् १९०० से सन् २२०० तक का सूक्ष्मतम वार्षिक संस्कार दिया गया है।)

यह दैनिक लग्न सारिणी चण्डीगढ़ (पं.) के लिए है। समस्त पंजाब, हि. प्र., हरियाणा, दिल्ली, जम्मू काश्मीर के किसी भी नगर में लग्नों का लगभग समाप्तिकाल जानने के लिए इस सारणी को प्रयोग में लायी जा सकता है। इसी पंचांग में आगे दी गई "लग्न परिवर्तन सारणी" की सहायता से भारत के प्रसिद्ध ६५ नगरों में किसी भी दिन किसी भी लग्न का समाप्तिकाल पर्याप्त सूक्ष्मता से जाना जा सकता है।

दैनिक लग्न सारणी, चण्डीगढ़ (पं०) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा० स्टै० टा०]

मास	अंग्रेजी तारीख	वैशाख प्रविष्टे	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.
अप्रैल	१३	१	७।३६	९।३०	११।४४	१४। ७	१६।२७	१८।४४	२१। ६	२३।२६	१।३१	३।१२	४।३७	५।५९
	१४	२	७।३२	९।२६	११।४०	१४। ३	१६।२३	१८।४०	२१। २	२३।२२	१।२७	३। ८	४।३३	५।५५
	१५	३	७।२८	९।२२	११।३७	१३।५९	१६।१९	१८।३६	२०।५८	२३।१८	१।२३	३। ४	४।२९	५।५१
	१६	४	७।२४	९।१८	११।३३	१३।५५	१६।१५	१८।३३	२०।५४	२३।१४	१।१९	३। ०	४।२५	५।४७
	१७	५	७।२०	९।१४	११।२९	१३।५१	१६।११	१८।२९	२०।५०	२३।१०	१।१५	२।५६	४।२१	५।४३
	१८	६	७।१६	९।११	११।२५	१३।४७	१६। ७	१८।२५	२०।४६	२३। ६	१।११	२।५२	४।१७	५।३९
	१९	७	७।१२	९। ७	११।२१	१३।४३	१६। ३	१८।२१	२०।४२	२३। २	१। ७	२।४८	४।१३	५।३५
	२०	८	७। ८	९। ३	११।१७	१३।३९	१५।५९	१८।१७	२०।३८	२२।५८	१। ३	२।४४	४। ९	५।३१
	२१	९	७। ४	८।५९	११।१३	१३।३५	१५।५५	१८।१३	२०।३४	२२।५४	०।५९	२।४०	४। ५	५।२८
	२२	१०	७। ०	८।५५	११। ९	१३।३१	१५।५१	१८। ९	२०।३०	२२।५१	०।५५	२।३६	४। १	५।२४
	२३	११	६।५६	८।५१	११। ५	१३।२७	१५।४७	१८। ५	२०।२७	२२।४७	०।५१	२।३२	३।५७	५।२०
	२४	१२	६।५२	८।४७	११। १	१३।२३	१५।४३	१८। १	२०।२३	२२।४३	०।४७	२।२८	३।५३	५।१६
	२५	१३	६।४८	८।४३	१०।५७	१३।१९	१५।३९	१७।५७	२०।१९	२२।३९	०।४३	२।२४	३।४९	५।१२
	२६	१४	६।४४	८।३९	१०।५३	१३।१६	१५।३६	१७।५३	२०।१५	२२।३५	०।३९	२।२०	३।४५	५। ८
	२७	१५	६।४१	८।३५	१०।४९	१३।१२	१५।३२	१७।४९	२०।११	२२।३१	०।३५	२।१६	३।४२	५। ४
	२८	१६	६।३७	८।३१	१०।४५	१३। ८	१५।२८	१७।४५	२०। ७	२२।२७	०।३२	२।१३	३।३८	५। ०
	२९	१७	६।३३	८।२७	१०।४२	१३। ४	१५।२४	१७।४१	२०। ३	२२।२३	०।२८	२। ९	३।३४	४।५६
	३०	१८	६।२९	८।२३	१०।३८	१३। ०	१५।२०	१७।३७	१९।५९	२२।१९	०।२४	२। ५	३।३०	४।५२
मई	१	१९	६।२५	८।१९	१०।३४	१२।५६	१५।१६	१७।३४	१९।५५	२२।१५	०।२०	२। १	३।२६	४।४८
	२	२०	६।२१	८।१६	१०।३०	१२।५२	१५।१२	१७।३०	१९।५१	२२।११	०।१६	१।५७	३।२२	४।४४
	३	२१	६।१७	८।१२	१०।२६	१२।४८	१५। ८	१७।२६	१९।४७	२२। ७	०।१२	१।५३	३।१८	४।४०
	४	२२	६।१३	८। ८	१०।२२	१२।४४	१५। ४	१७।२२	१९।४३	२२। ३	०। ८	१।४९	३।१४	४।३६
	५	२३	६। ९	८। ४	१०।१८	१२।४०	१५। ०	१७।१८	१९।३९	२१।५९	०। ४	१।४५	३।१०	४।३२
	६	२४	६। ५	८। ०	१०।१४	१२।३६	१४।५६	१७।१४	१९।३५	२१।५६	०। ०	१।४१	३। ६	४।२८
	७	२५	६। १	७।५६	१०।१०	१२।३२	१४।५२	१७।१०	१९।३२	२१।५२	२३।५६	१।३७	३। २	४।२४
	८	२६	५।५७	७।५२	१०। ६	१२।२८	१४।४८	१७। ६	१९।२८	२१।४८	२३।५२	१।३३	२।५८	४।२१
	९	२७	५।५३	७।४८	१०। २	१२।२४	१४।४४	१७। २	१९।२४	२१।४४	२३।४८	१।२९	२।५४	४।१७
	१०	२८	५।४९	७।४४	९।५८	१२।२०	१४।४०	१६।५८	१९।२०	२१।४०	२३।४४	१।२५	२।५०	४।१३
	११	२९	५।४६	७।४०	९।५४	१२।१७	१४।३६	१६।५४	१९।१६	२१।३६	२३।४०	१।२१	२।४६	४। ९
	१२	३०	५।४२	७।३६	९।५०	१२।१३	१४।३३	१६।५०	१९।१२	२१।३२	२३।३७	१।१८	२।४३	४। ५
	१३	३१	५।३८	७।३२	९।४६	१२। ९	१४।२९	१६।४६	१९। ८	२१।२८	२३।३३	१।१४	२।३९	४। १
	१४	ज्ये.१	५।३४											

मास	अंग्रेजी तारीख	ज्येष्ठ प्रविष्टे	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.
मई	१४	१	७।२८	९।४३	१२। ५	१४।२५	१६।४२	१९। ४	२१।२४	२३।२९	१।१०	२।३५	३।५७	५।३०
	१५	२	७।२४	९।३९	१२। १	१४।२१	१६।३८	१९। ०	२१।२०	२३।२५	१। ६	२।३१	३।५३	५।२६
	१६	३	७।२०	९।३५	११।५७	१४।१७	१६।३५	१८।५६	२१।१६	२३।२१	१। २	२।२७	३।४९	५।२२
	१७	४	७।१७	९।३१	११।५३	१४।१३	१६।३१	१८।५२	२१।१२	२३।१७	०।५८	२।२३	३।४५	५।१८
	१८	५	७।१३	९।२७	११।४९	१४। ९	१६।२७	१८।४८	२१। ८	२३।१३	०।५४	२।१९	३।४१	५।१४
	१९	६	७। ९	९।२३	११।४५	१४। ५	१६।२३	१८।४४	२१। ४	२३। ९	०।५०	२।१५	३।३७	५।१०
	२०	७	७। ५	९।१९	११।४१	१४। १	१६।१९	१८।४०	२१। १	२३। ५	०।४६	२।११	३।३४	५। ६
	२१	८	७। १	९।१५	११।३७	१३।५७	१६।१५	१८।३६	२०।५७	२३। १	०।४२	२। ७	३।३०	५। २
	२२	९	६।५७	९।११	११।३३	१३।५३	१६।११	१८।३३	२०।५३	२२।५७	०।३८	२। ३	३।२६	४।५८
	२३	१०	६।५३	९। ७	११।२९	१३।४९	१६। ७	१८।२९	२०।४९	२२।५३	०।३४	१।५९	३।२२	४।५४
	२४	११	६।४९	९। ३	११।२५	१३।४५	१६। ३	१८।२५	२०।४५	२२।४९	०।३०	१।५५	३।१८	४।५०
	२५	१२	६।४५	८।५९	११।२२	१३।४१	१५।५९	१८।२१	२०।४१	२२।४५	०।२६	१।५१	३।१४	४।४७
	२६	१३	६।४१	८।५५	११।१८	१३।३८	१५।५५	१८।१७	२०।३७	२२।४२	०।२२	१।४८	३।१०	४।४३
	२७	१४	६।३७	८।५१	११।१४	१३।३४	१५।५१	१८।१३	२०।३३	२२।३८	०।१९	१।४४	३। ६	४।३९
	२८	१५	६।३३	८।४७	११।१०	१३।३०	१५।४७	१८। ९	२०।२९	२२।३४	०।१५	१।४०	३। २	४।३५
	२९	१६	६।२९	८।४४	११। ६	१३।२६	१५।४३	१८। ५	२०।२५	२२।३०	०।११	१।३६	२।५८	४।३१
	३०	१७	६।२५	८।४०	११। २	१३।२२	१५।४०	१८। १	२०।२१	२२।२६	०। ७	१।३२	२।५४	४।२७
	३१	१८	६।२२	८।३६	१०।५८	१३।१८	१५।३६	१७।५७	२०।१७	२२।२२	०। ३	१।२८	२।५०	४।२३
जून	१	१९	६।१८	८।३२	१०।५४	१३।१४	१५।३२	१७।५३	२०।१३	२२।१८	२३।५९	१।२४	२।४६	४।१९
	२	२०	६।१४	८।२८	१०।५०	१३।१०	१५।२८	१७।४९	२०। ९	२२।१४	२३।५५	१।२०	२।४२	४।१५
	३	२१	६।१०	८।२४	१०।४६	१३। ६	१५।२४	१७।४५	२०। ५	२२।१०	२३।५१	१।१६	२।३८	४।११
	४	२२	६। ६	८।२०	१०।४२	१३। २	१५।२०	१७।४१	२०। २	२२। ६	२३।४७	१।१२	२।३५	४। ७
	५	२३	६। २	८।१६	१०।३८	१२।५८	१५।१६	१७।३७	१९।५८	२२। २	२३।४३	१। ८	२।३१	४। ३
	६	२४	५।५८	८।१२	१०।३४	१२।५४	१५।१२	१७।३४	१९।५४	२१।५८	२३।३९	१। ४	२।२७	३।५९
	७	२५	५।५४	८। ८	१०।३०	१२।५०	१५। ८	१७।३०	१९।५०	२१।५४	२३।३५	१। ०	२।२३	३।५५
	८	२६	५।५०	८। ४	१०।२६	१२।४६	१५। ४	१७।२६	१९।४६	२१।५०	२३।३१	०।५६	२।१९	३।५१
	९	२७	५।४६	८। ०	१०।२३	१२।४३	१५। ०	१७।२२	१९।४२	२१।४६	२३।२७	०।५२	२।१५	३।४८
	१०	२८	५।४२	७।५६	१०।१९	१२।३९	१४।५६	१७।१८	१९।३८	२१।४३	२३।२३	०।४९	२।११	३।४४
	११	२९	५।३८	७।५२	१०।१५	१२।३५	१४।५२	१७।१४	१९।३४	२१।३९	२३।२०	०।४५	२। ७	३।४०
	१२	३०	५।३४	७।४९	१०।११	१२।३१	१४।४८	१७।१०	१९।३०	२१।३५	२३।१६	०।४१	२। ३	३।३६
	१३	३१	५।३०	७।४५	१०। ७	१२।२७	१४।४५	१७। ६	१९।२६	२१।३१	२३।१२	०।३७	१।५९	३।३२
	१४	आ.१	५।२६											

दैनिक लग्न सारणी चण्डीगढ़ (पं०) में लग्नों का समाप्तिकाल | मा० स्टै० टा० |

आषाढ़

अंग्रेजी तारीख		आषाढ़ प्रविष्टे	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.
जून	१४	१	७।४१	१०।३	१२।२३	१४।४१	१७। २	१९।२२	२१।२७	२३। ८	०।३३	१।५५	३।२८	५।२३
	१५	२	७।३७	९।५९	१२।१९	१४।३७	१६।५८	१९।१८	२१।२३	२३। ४	०।२९	१।५१	३।२४	५।१९
	१६	३	७।३३	९।५५	१२।१५	१४।३३	१६।५४	१९।१४	२१।१९	२३। ०	०।२५	१।४७	३।२०	५।१५
	१७	४	७।२९	९।५१	१२।११	१४।२९	१६।५०	१९।१०	२१।१५	२२।५६	०।२१	१।४३	३।१६	५।११
	१८	५	७।२५	९।४७	१२। ७	१४।२५	१६।४६	१९। ६	२१।११	२२।५२	०।१७	१।३९	३।१२	५। ७
	१९	६	७।२१	९।४३	१२। ३	१४।२१	१६।४२	१९। ३	२१। ७	२२।४८	०।१३	१।३६	३। ८	५। ३
	२०	७	७।१७	९।३९	११।५९	१४।१७	१६।३९	१८।५९	२१। ३	२२।४४	०। ९	१।३२	३। ४	४।५९
	२१	८	७।१३	९।३५	११।५५	१४।१३	१६।३५	१८।५५	२०।५९	२२।४०	०। ५	१।२८	३। ०	४।५५
	२२	९	७। ९	९।३१	११।५१	१४। ९	१६।३१	१८।५१	२०।५५	२२।३६	०। १	१।२४	२।५६	४।५१
	२३	१०	७। ५	९।२७	११।४७	१४। ५	१६।२७	१८।४७	२०।५१	२२।३२	२३।५७	१।२०	२।५३	४।४७
	२४	११	७। १	९।२४	११।४४	१४। १	१६।२३	१८।४३	२०।४८	२२।२८	२३।५४	१।१६	२।४९	४।४३
	२५	१२	६।५७	९।२०	११।४०	१३।५७	१६।१९	१८।३९	२०।४४	२२।२५	२३।५०	१।१२	२।४५	४।३९
	२६	१३	६।५३	९।१६	११।३६	१३।५३	१६।१५	१८।३५	२०।४०	२२।२१	२३।४६	१। ८	२।४१	४।३५
	२७	१४	६।५०	९।१२	११।३२	१३।४९	१६।११	१८।३१	२०।३६	२२।१७	२३।४२	१। ४	२।३७	४।३१
	२८	१५	६।४६	९। ८	११।२८	१३।४६	१६। ७	१८।२७	२०।३२	२२।१३	२३।३८	१। ०	२।३३	४।२७
	२९	१६	६।४२	९। ४	११।२४	१३।४२	१६। ३	१८।२३	२०।२८	२२। ९	२३।३४	०।५६	२।२९	४।२४
	३०	१७	६।३८	९। ०	११।२०	१३।३८	१५।५९	१८।१९	२०।२४	२२। ५	२३।३०	०।५२	२।२५	४।२०
जुलाई	१	१८	६।३४	८।५६	११।१६	१३।३४	१५।५५	१८।१५	२०।२०	२२। १	२३।२६	०।४८	२।२१	४।१६
	२	१९	६।३०	८।५२	११।१२	१३।३०	१५।५१	१८।११	२०।१६	२१।५७	२३।२२	०।४४	२।१७	४।१२
	३	२०	६।२६	८।४८	११। ८	१३।२६	१५।४७	१८। ८	२०।१२	२१।५३	२३।१८	०।४१	२।१३	४। ८
	४	२१	६।२२	८।४४	११। ४	१३।२२	१५।४३	१८। ४	२०। ८	२१।४९	२३।१४	०।३७	२। ९	४। ४
	५	२२	६।१८	८।४०	११। ०	१३।१८	१५।४०	१८। ०	२०। ४	२१।४५	२३।१०	०।३३	२। ५	४। ०
	६	२३	६।१४	८।३६	१०।५६	१३।१४	१५।३६	१७।५६	२०। ०	२१।४१	२३। ६	०।२९	२। १	३।५६
	७	२४	६।१०	८।३२	१०।५२	१३।१०	१५।३२	१७।५२	१९।५६	२१।३७	२३। २	०।२५	१।५७	३।५२
	८	२५	६। ६	८।२९	१०।४९	१३। ६	१५।२८	१७।४८	१९।५२	२१।३३	२२।५८	०।२१	१।५४	३।४८
	९	२६	६। २	८।२५	१०।४५	१३। २	१५।२४	१७।४४	१९।४९	२१।२९	२२।५५	०।१७	१।५०	३।४४
	१०	२७	५।५८	८।२१	१०।४१	१२।५८	१५।२०	१७।४०	१९।४५	२१।२६	२२।५१	०।१३	१।४६	३।४०
	११	२८	५।५५	८।१७	१०।३७	१२।५४	१५।१६	१७।३६	१९।४१	२१।२२	२२।४७	०। ९	१।४२	३।३६
	१२	२९	५।५१	८।१३	१०।३३	१२।५०	१५।१२	१७।३२	१९।३७	२१।१८	२२।४३	०। ५	१।३८	३।३२
	१३	३०	५।४७	८। ९	१०।२९	१२।४७	१५। ८	१७।२८	१९।३३	२१।१४	२२।३९	०। १	१।३४	३।२९
	१४	३१	५।४३	८। ५	१०।२५	१२।४३	१५। ४	१७।२४	१९।२९	२१।१०	२२।३४	२३।५७	१।३०	३।२५
	१५	३२	५।३९	८। १	१०।२१	१२।३९	१५। ०	१७।२०	१९।२५	२१। ६	२२।३१	२३।५३	१।२६	३।२१
	१६	श्रा १	५।३५											

श्रावण

अंग्रेजी तारीख		श्रावण प्रविष्टे	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.
जुलाई	१६	१	७।५७	१०।१७	१२।३५	१४।५६	१७।१६	१९।२१	२१। २	२२।२७	२३।४९	१।२२	३।१७	५।३१
	१७	२	७।५३	१०।१३	१२।३१	१४।५२	१७।१२	१९।१७	२०।५८	२२।२३	२३।४५	१।१८	३।१३	५।२७
	१८	३	७।४९	१०। ९	१२।२७	१४।४८	१७। ९	१९।१३	२०।५४	२२।१९	२३।४१	१।१४	३। ९	५।२३
	१९	४	७।४५	१०। ५	१२।२३	१४।४४	१७। ५	१९। ९	२०।५०	२२।१५	२३।३८	१।१०	३। ५	५।१९
	२०	५	७।४१	१०। १	१२।१९	१४।४१	१७। १	१९। ५	२०।४६	२२।११	२३।३४	१। ६	३। १	५।१५
	२१	६	७।३७	९।५७	१२।१५	१४।३७	१६।५७	१९। १	२०।४२	२२। ७	२३।३०	१। २	२।५७	५।११
	२२	७	७।३३	९।५३	१२।११	१४।३३	१६।५३	१८।५७	२०।३८	२२। ३	२३।२६	०।५८	२।५३	५। ७
	२३	८	७।३०	९।५०	१२। ७	१४।२९	१६।४९	१८।५३	२०।३४	२१।५९	२३।२२	०।५५	२।४९	५। ३
	२४	९	७।२६	९।४६	१२। ३	१४।२५	१६।४५	१८।५०	२०।३०	२१।५६	२३।१८	०।५१	२।४५	४।५९
	२५	१०	७।२२	९।४२	११।५९	१४।२१	१६।४१	१८।४६	२०।२७	२१।५२	२३।१४	०।४७	२।४१	४।५६
	२६	११	७।१८	९।३८	११।५५	१४।१७	१६।३७	१८।४२	२०।२३	२१।४८	२३।१०	०।४३	२।३७	४।५२
	२७	१२	७।१४	९।३४	११।५२	१४।१३	१६।३३	१८।३८	२०।१९	२१।४४	२३। ६	०।३९	२।३३	४।४८
	२८	१३	७।१०	९।३०	११।४८	१४। ९	१६।२९	१८।३४	२०।१५	२१।४०	२३। २	०।३५	२।३०	४।४४
	२९	१४	७। ६	९।२६	११।४४	१४। ५	१६।२५	१८।३०	२०।११	२१।३६	२२।५८	०।३१	२।२६	४।४०
	३०	१५	७। २	९।२२	११।४०	१४। १	१६।२१	१८।२६	२०। ७	२१।३२	२२।५४	०।२७	२।२२	४।३६
	३१	१६	६।५८	९।१८	११।३६	१३।५७	१६।१७	१८।२२	२०। ३	२१।२८	२२।५०	०।२३	२।१८	४।३१
अगस्त	१	१७	६।५४	९।१४	११।३२	१३।५३	१६।१३	१८।१८	१९।५९	२१।२४	२२।४७	०।१९	२।१४	४।२८
	२	१८	६।५०	९।१०	११।२८	१३।४९	१६।१०	१८।१४	१९।५५	२१।२०	२२।४३	०।१५	२।१०	४।२४
	३	१९	६।४६	९। ६	११।२४	१३।४६	१६। ६	१८।१०	१९।५१	२१।१६	२२।३९	०।११	२। ६	४।२०
	४	२०	६।४२	९। २	११।२०	१३।४२	१६। २	१८। ६	१९।४७	२१।१२	२२।३५	०। ७	२। २	४।१६
	५	२१	६।३८	८।५८	११।१६	१३।३८	१५।५८	१८। २	१९।४३	२१। ८	२२।३१	०। ३	१।५८	४।१२
	६	२२	६।३४	८।५४	११।१२	१३।३४	१५।५४	१७।५८	१९।३९	२१। ४	२२।२७	०। ०	१।५४	४। ८
	७	२३	६।३१	८।५१	११। ८	१३।३०	१५।५०	१७।५५	१९।३५	२१। १	२२।२३	२३।५६	१।५०	४। ४
	८	२४	६।२७	८।४७	११। ४	१३।२६	१५।४६	१७।५१	१९।३२	२०।५७	२२।१९	२३।५२	१।४६	४। ०
	९	२५	६।२३	८।४३	११। ०	१३।२२	१५।४२	१७।४७	१९।२८	२०।५३	२२।१५	२३।४८	१।४२	३।५७
	१०	२६	६।१९	८।३९	१०।५६	१३।१८	१५।३८	१७।४३	१९।२४	२०।४९	२२।११	२३।४४	१।३८	३।५३
	११	२७	६।१५	८।३५	१०।५३	१३।१४	१५।३४	१७।३९	१९।२०	२०।४५	२२। ७	२३।४०	१।३४	३।४९
	१२	२८	६।११	८।३१	१०।४९	१३।१०	१५।३०	१७।३५	१९।१६	२०।४१	२२। ३	२३।३६	१।३१	३।४५
	१३	२९	६। ७	८।२७	१०।४५	१३। ६	१५।२६	१७।३१	१९।१२	२०।३७	२१।५९	२३।३२	१।२७	३।४१
	१४	३०	६। ३	८।२३	१०।४१	१३। २	१५।२२	१७।२७	१९। ८	२०।३३	२१।५५	२३।२८	१।२३	३।३७
	१५	३१	५।५९	८।१९	१०।३७	१२।५८	१५।१८	१७।२३	१९। ४	२०।२९	२१।५१	२३।२४	१।१९	३।३३
	१६	भा १	५।५५											

दैनिक लग्न सारणी, चण्डीगढ़ (पं०) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा० स्टै० टा०]

भाद्रपद

अंग्रेजी तारीख	भाद्रपद प्रविष्टे	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.
१६	१	८।१५	१०।३३	१२।५४	१५।१५	१७।१९	१९।०	२०।२५	२१।४८	२३।२०	१।१५	३।२९	५।५१
१७	२	८।११	१०।२९	१२।५०	१५।११	१७।१५	१८।५६	२०।२१	२१।४४	२३।१६	१।११	३।२५	५।४७
१८	३	८।७	१०।२५	१२।४७	१५।७	१७।११	१८।५२	२०।१७	२१।४०	२३।१२	१।७	३।२१	५।४३
१९	४	८।३	१०।२१	१२।४३	१५।३	१७।७	१८।४८	२०।१३	२१।३६	२३।८	१।३	३।१७	५।३९
२०	५	७।५९	१०।१७	१२।३९	१४।५९	१७।३	१८।४४	२०।९	२१।३२	२३।४	०।५९	३।१३	५।३६
२१	६	७।५६	१०।१३	१२।३५	१४।५५	१६।५९	१८।४०	२०।५	२१।२८	२३।१	०।५५	३।९	५।३२
२२	७	७।५२	१०।९	१२।३१	१४।५१	१६।५६	१८।३६	२०।२	२१।२४	२२।५७	०।५१	३।५	५।२८
२३	८	७।४८	१०।५	१२।२७	१४।४७	१६।५२	१८।३३	१९।५८	२१।२०	२२।५३	०।४७	३।२	५।२४
२४	९	७।४४	१०।१	१२।२३	१४।४३	१६।४८	१८।२९	१९।५४	२१।१६	२२।४९	०।४३	२।५८	५।२०
२५	१०	७।४०	९।५७	१२।१९	१४।३९	१६।४४	१८।२५	१९।५०	२१।१२	२२।४५	०।३९	२।५४	५।१६
२६	११	७।३६	९।५४	१२।१५	१४।३५	१६।४०	१८।२१	१९।४६	२१।८	२२।४१	०।३६	२।५०	५।१२
२७	१२	७।३२	९।५०	१२।११	१४।३१	१६।३६	१८।१७	१९।४२	२१।४	२२।३७	०।३२	२।४६	५।८
२८	१३	७।२८	९।४६	१२।७	१४।२७	१६।३२	१८।१३	१९।३८	२१।०	२२।३३	०।२८	२।४२	५।४
२९	१४	७।२४	९।४२	१२।३	१४।२३	१६।२८	१८।९	१९।३४	२०।५६	२२।२९	०।२४	२।३८	५।०
३०	१५	७।२०	९।३८	११।५९	१४।१९	१६।२४	१८।५	१९।३०	२०।५२	२२।२५	०।२०	२।३४	४।५६
३१	१६	७।१६	९।३४	११।५५	१४।१६	१६।२०	१८।१	१९।२६	२०।४९	२२।२१	०।१६	२।३०	४।५२
सितम्बर													
१	१७	७।१२	९।३०	११।५२	१४।१२	१६।१६	१७।५७	१९।२२	२०।४५	२२।१७	०।१२	२।२६	४।४८
२	१८	७।८	९।२६	११।४८	१४।८	१६।१२	१७।५३	१९।१८	२०।४१	२२।१३	०।८	२।२२	४।४४
३	१९	७।४	९।२२	११।४४	१४।४	१६।८	१७।४९	१९।१४	२०।३७	२२।९	०।४	२।१८	४।४०
४	२०	७।०	९।१८	११।४०	१४।०	१६।४	१७।४५	१९।१०	२०।३३	२२।६	०।०	२।१४	४।३७
५	२१	६।५७	९।१४	११।३६	१३।५६	१६।०	१७।४१	१९।६	२०।२९	२२।२	२३।५६	२।१०	४।३३
६	२२	६।५३	९।१०	११।३२	१३।५२	१५।५७	१७।३८	१९।३	२०।२५	२१।५८	२३।५२	२।६	४।२९
७	२३	६।४९	९।६	११।२८	१३।४८	१५।५३	१७।३४	१८।५९	२०।२१	२१।५४	२३।४८	२।३	४।२५
८	२४	६।४५	९।२	११।२४	१३।४४	१५।४९	१७।३०	१८।५५	२०।१७	२१।५०	२३।४४	१।५९	४।२१
९	२५	६।४१	८।५९	११।२०	१३।४०	१५।४५	१७।२६	१८।५१	२०।१३	२१।४६	२३।४०	१।५५	४।१७
१०	२६	६।३७	८।५५	११।१६	१३।३६	१५।४१	१७।२२	१८।४७	२०।९	२१।४२	२३।३७	१।५१	४।१३
११	२७	६।३३	८।५१	११।१२	१३।३२	१५।३७	१७।१८	१८।४३	२०।५	२१।३८	२३।३३	१।४७	४।९
१२	२८	६।२९	८।४७	११।८	१३।२८	१५।३३	१७।१४	१८।३९	२०।१	२१।३४	२३।२९	१।४३	४।५
१३	२९	६।२५	८।४३	११।४	१३।२४	१५।२९	१७।१०	१८।३५	१९।५७	२१।३०	२३।२५	१।३९	४।१
१४	३०	६।२१	८।३९	११।०	१३।२१	१५।२५	१७।६	१८।३१	१९।५४	२१।२६	२३।२१	१।३५	३।५७
१५	३१	६।१७	८।३५	१०।५६	१३।१७	१५।२१	१७।२	१८।२७	१९।५०	२१।२२	२३।१७	१।३१	३।५३
१६	आ१	६।१३											

आश्विन

अंग्रेजी तारीख	आश्विन प्रविष्टे	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.
सितम्बर													
१६	१	८।३१	१०।५३	१३।१३	१५।१७	१६।५८	१८।२३	१९।४६	२१।१८	२३।१३	१।२७	३।४९	६।९
१७	२	८।२७	१०।४९	१३।९	१५।१३	१६।५४	१८।१९	१९।४२	२१।१४	२३।६	१।२३	३।४५	६।५
१८	३	८।२३	१०।४५	१३।५	१५।९	१६।५०	१८।१५	१९।३८	२१।१०	२३।५	१।१९	३।४२	६।१
१९	४	८।१९	१०।४१	१३।१	१५।५	१६।४६	१८।११	१९।३४	२१।७	२३।१	१।१५	३।३८	५।५८
२०	५	८।१५	१०।३७	१२।५७	१५।२	१६।४२	१८।८	१९।३०	२१।३	२२।५७	१।११	३।३४	५।५४
२१	६	८।११	१०।३३	१२।५३	१४।५८	१६।३९	१८।४	१९।२६	२०।५९	२२।५३	१।७	३।३०	५।५०
२२	७	८।७	१०।२९	१२।४९	१४।५४	१६।३५	१८।०	१९।२२	२०।५५	२२।४९	१।४	३।२६	५।४६
२३	८	८।३	१०।२५	१२।४५	१४।५०	१६।३१	१७।५६	१९।१८	२०।५१	२२।४५	१।०	३।२२	५।४२
२४	९	८।०	१०।२१	१२।४१	१४।४६	१६।२७	१७।५२	१९।१४	२०।४७	२२।४१	०।५६	३।१८	५।३८
२५	१०	७।५६	१०।१७	१२।३७	१४।४२	१६।२३	१७।४८	१९।१०	२०।४३	२२।३८	०।५२	३।१४	५।३४
२६	११	७।५२	१०।१३	१२।३३	१४।३८	१६।१९	१७।४४	१९।६	२०।३९	२२।३४	०।४८	३।१०	५।३०
२७	१२	७।४८	१०।९	१२।२९	१४।३४	१६।१५	१७।४०	१९।२	२०।३५	२२।३०	०।४४	३।६	५।२६
२८	१३	७।४४	१०।५	१२।२५	१४।३०	१६।११	१७।३६	१८।५८	२०।३१	२२।२६	०।४०	३।२	५।२२
२९	१४	७।४०	१०।१	१२।२२	१४।२६	१६।७	१७।३२	१८।५५	२०।२७	२२।२२	०।३६	२।५८	५।१८
३०	१५	७।३६	९।५७	१२।१८	१४।२२	१६।३	१७।२८	१८।५१	२०।२३	२२।१९	०।३२	२।५४	५।१४
अक्तूबर													
१	१६	७।३२	९।५४	१२।१४	१४।१८	१५।५९	१७।२४	१८।४६	२०।१९	२२।१४	०।२८	२।५०	५।१०
२	१७	७।२८	९।५०	१२।१०	१४।१४	१५।५५	१७।२०	१८।४२	२०।१५	२२।१०	०।२४	२।४६	५।६
३	१८	७।२४	९।४६	१२।६	१४।१०	१५।५१	१७।१६	१८।३८	२०।११	२२।६	०।२०	२।४३	५।३
४	१९	७।२०	९।४२	१२।२	१४।६	१५।४७	१७।१२	१८।३५	२०।८	२२।२	०।१६	२।३९	४।५९
५	२०	७।१६	९।३८	११।५८	१४।३	१५।४३	१७।९	१८।३१	२०।४	२१।५८	०।१२	२।३५	४।५५
६	२१	७।१२	९।३४	११।५४	१३।५९	१५।४०	१७।५	१८।२७	२०।०	२१।५४	०।८	२।३१	४।५१
७	२२	७।८	९।३०	११।५०	१३।५५	१५।३६	१७।१	१८।२३	१९।५६	२१।५०	०।५	२।२७	४।४७
८	२३	७।५	९।२६	११।४६	१३।५१	१५।३२	१६।५७	१८।१९	१९।५२	२१।४६	०।१	२।२३	४।४३
९	२४	७।१	९।२२	११।४२	१३।४७	१५।२८	१६।५३	१८।१५	१९।४	२१।४३	२३।५७	२।१९	४।३९
१०	२५	६।५७	९।१८	११।३८	१३।४३	१५।२४	१६।४९	१८।११	१९।४४	२१।३	२३।५३	२।१५	४।३५
११	२६	६।५३	९।१४	११।३४	१३।३९	१५।२०	१६।४५	१८।७	१९।४०	२१।३५	२३।४९	२।११	४।३१
१२	२७	६।४९	९।१०	११।३०	१३।३५	१५।१६	१६।४१	१८।३	१९।३६	२१।३१	२३।४५	२।७	४।२७
१३	२८	६।४५	९।६	११।२६	१३।३१	१५।१२	१६।३७	१७।५९	१९।३२	२१।२७	२३।४१	२।३	४।२३
१४	२९	६।४१	९।२	११।२३	१३।२७	१५।८	१६।३३	१७।५६	१९।२८	२१।२३	२३।३७	१।५९	४।१९
१५	३०	६।३७	८।५९	११।१९	१३।२३	१५।४	१६।२९	१७।५२	१९।२४	२१।१९	२३।३३	१।५५	४।१५
१६	का१	६।३३											

दैनिक लग्न सारणी, चण्डीगढ़ (पं.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा. स्टै. टा.]

कार्तिक

मास	अंग्रेजी तारीख	कार्तिक प्रविष्टे	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं.मि.	धनु घं.मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं.मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं.मि.	कन्या घं.मि.
अक्तूबर	१६	१	८।५५	११।१५	१३।१९	१५। ०	१६।२५	१७।४८	१९।२०	२१।१५	२३।२९	१।५१	४।११	६।२९
	१७	२	८।५१	११।११	१३।१५	१४।५६	१६।२१	१७।४४	१९।१६	२१।११	२३।२५	१।४७	४। ७	६।२५
	१८	३	८।४७	११। ७	१३।११	१४।५२	१६।१७	१७।४०	१९।१३	२१। ७	२३।२१	१।४४	४। ४	६।२१
	१९	४	८।४३	११। ३	१३। ८	१४।४८	१६।१४	१७।३६	१९। ९	२१। ३	२३।१७	१।४०	४। ०	६।१७
	२०	५	८।३९	१०।५९	१३। ४	१४।४५	१६।१०	१७।३२	१९। ५	२०।५९	२३।१३	१।३६	३।५६	६।१३
	२१	६	८।३५	१०।५५	१३। ०	१४।४१	१६। ६	१७।२८	१९। १	२०।५५	२३। ९	१।३२	३।५२	६। ९
	२२	७	८।३१	१०।५१	१२।५६	१४।३७	१६। २	१७।२४	१८।५७	२०।५१	२३। ६	१।२८	३।४८	६। ६
	२३	८	८।२७	१०।४७	१२।५२	१४।३३	१५।५८	१७।२०	१८।५३	२०।४७	२३। २	१।२४	३।४४	६। २
	२४	९	८।२३	१०।४३	१२।४८	१४।२९	१५।५४	१७।१६	१८।४९	२०।४४	२२।५८	१।२०	३।४०	५।५८
	२५	१०	८।१९	१०।३९	१२।४४	१४।२५	१५।५०	१७।१२	१८।४५	२०।४०	२२।५४	१।१६	३।३६	५।५४
	२६	११	८।१५	१०।३५	१२।४०	१४।२१	१५।४६	१७। ८	१८।४१	२०।३६	२२।५०	१।१२	३।३२	५।५०
	२७	१२	८।११	१०।३१	१२।३६	१४।१७	१५।४२	१७। ४	१८।३७	२०।३२	२२।४६	१। ८	३।२८	५।४६
	२८	१३	८। ७	१०।२८	१२।३२	१४।१३	१५।३८	१७। १	१८।३३	२०।२८	२२।४२	१। ४	३।२४	५।४२
	२९	१४	८। ३	१०।२४	१२।२८	१४। ९	१५।३४	१६।५७	१८।२९	२०।२४	२२।३८	१। ०	३।२०	५।३८
	३०	१५	८। ०	१०।२०	१२।२४	१४। ५	१५।३०	१६।५३	१८।२५	२०।२०	२२।३४	०।५६	३।१६	५।३४
	३१	१६	७।५६	१०।१६	१२।२०	१४। १	१५।२६	१६।४९	१८।२१	२०।१६	२२।३०	०।५२	३।१२	५।३०
नवम्बर	१	१७	७।५२	१०।१२	१२।१६	१३।५७	१५।२२	१६।४५	१८।१७	२०।१२	२२।२६	०।४८	३। ९	५।२६
	२	१८	७।४८	१०। ८	१२।१२	१३।५३	१५।१८	१६।४१	१८।१३	२०। ८	२२।२२	०।४५	३। ५	५।२२
	३	१९	७।४४	१०। ४	१२। ९	१३।४९	१५।१५	१६।३७	१८। ९	२०। ४	२२।१८	०।४१	३। १	५।१८
	४	२०	७।४०	१०। ०	१२। ५	१३।४६	१५।११	१६।३३	१८। ६	२०। ०	२२।१५	०।३७	२।५७	५।१४
	५	२१	७।३६	९।५६	१२। १	१३।४२	१५। ७	१६।२९	१८। २	१९।५६	२२।११	०।३३	२।५३	५।१०
	६	२२	७।३२	९।५२	११।५७	१३।३८	१५। ३	१६।२५	१७।५८	१९।५२	२२। ७	०।२९	२।४९	५। ७
	७	२३	७।२८	९।४८	११।५३	१३।३४	१४।५९	१६।२१	१७।५४	१९।४९	२२। ३	०।२५	२।४५	५। ३
	८	२४	७।२४	९।४४	११।४९	१३।३०	१४।५५	१६।१७	१७।५०	१९।४५	२१।५९	०।२१	२।४१	४।५९
	९	२५	७।२०	९।४०	११।४५	१३।२६	१४।५१	१६।१३	१७।४६	१९।४१	२१।५५	०।१७	२।३७	४।५५
	१०	२६	७।१६	९।३६	११।४१	१३।२२	१४।४७	१६। ९	१७।४२	१९।३७	२१।५१	०।१३	२।३३	४।५१
	११	२७	७।१२	९।३२	११।३७	१३।१८	१४।४३	१६। ५	१७।३८	१९।३३	२१।४७	०। ९	२।२९	४।४७
	१२	२८	७। ८	९।२९	११।३३	१३।१४	१४।३९	१६। २	१७।३४	१९।२९	२१।४३	०। ५	२।२५	४।४३
	१३	२९	७। ५	९।२५	११।२९	१३।१०	१४।३५	१५।५८	१७।३०	१९।२५	२१।३९	०। १	२।२१	४।३९
	१४	३०	७। १	९।२१	११।२५	१३। ६	१४।३१	१५।५४	१७।२६	१९।२१	२१।३५	२३।५७	२।१७	४।३५
	१५	मा १	६।५७											

मार्गशीर्ष

मास	अंग्रेजी तारीख	मार्ग. प्रविष्टे	वृश्चिक घं.मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं.मि.	कन्या घं.मि.	तुला घं.मि.
नवम्बर	१५	१	९।१७	११।२१	१३। २	१४।२७	१५।५०	१७।२२	१९।१७	२१।३१	२३।५३	२।१३	४।३१	६।५३
	१६	२	९।१३	११।१७	१२।५८	१४।२३	१५।४६	१७।१८	१९।१३	२१।२७	२३।५०	२।१०	४।२७	६।४९
	१७	३	९। ९	११।१३	१२।५४	१४।१९	१५।४२	१७।१५	१९। ६	२१।२३	२३।४६	२। ६	४।२३	६।४५
	१८	४	९। ५	११।१०	१२।५०	१४।१६	१५।३८	१७।११	१९। ५	२१।१९	२३।४२	२। २	४।१९	६।४१
	१९	५	९। १	११। ६	१२।४७	१४।१२	१५।३४	१७। ७	१९। १	२१।१६	२३।३८	१।५८	४।१५	६।३७
	२०	६	८।५७	११। २	१२।४३	१४। ८	१५।३०	१७। ३	१८।५७	२१।१२	२३।३४	१।५४	४।१२	६।३३
	२१	७	८।५३	१०।५८	१२।३९	१४। ४	१५।२६	१६।५९	१८।५३	२१। ८	२३।३०	१।५०	४। ८	६।२९
	२२	८	८।४९	१०।५४	१२।३५	१४। ०	१५।२२	१६।५५	१८।५०	२१। ४	२३।२६	१।४६	४। ४	६।२५
	२३	९	८।४५	१०।५०	१२।३१	१३।५६	१५।१८	१६।५१	१८।४६	२१। ०	२३।२२	१।४२	४। ०	६।२१
	२४	१०	८।४१	१०।४६	१२।२७	१३।५२	१५।१४	१६।४७	१८।४२	२०।५६	२३।१८	१।३८	३।५६	६।१७
	२५	११	८।३७	१०।४२	१२।२३	१३।४८	१५।१०	१६।४३	१८।३८	२०।५२	२३।१४	१।३४	३।५२	६।१३
	२६	१२	८।३३	१०।३८	१२।१९	१३।४४	१५। ७	१६।३९	१८।३४	२०।४८	२३।१०	१।३०	३।४८	६। ९
	२७	१३	८।३०	१०।३४	१२।१५	१३।४०	१५। ३	१६।३५	१८।३०	२०।४४	२३। ६	१।२६	३।४४	६। ६
	२८	१४	८।२६	१०।३०	१२।११	१३।३६	१४।५९	१६।३१	१८।२६	२०।४०	२३। २	१।२२	३।४०	६। २
	२९	१५	८।२२	१०।२६	१२। ७	१३।३२	१४।५५	१६।२७	१८।२२	२०।३६	२२।५८	१।१८	३।३६	५।५८
	३०	१६	८।१८	१०।२२	१२। ३	१३।२८	१४।५१	१६।२३	१८।१८	२०।३२	२२।५४	१।१४	३।३२	५।५४
दिसम्बर	१	१७	८।१४	१०।१८	११।५९	१३।२४	१४।४७	१६।२०	१८।१४	२०।२८	२२।५१	१।११	३।२८	५।५०
	२	१८	८।१०	१०।१५	११।५५	१३।२१	१४।४३	१६।१६	१८।१०	२०।२४	२२।४७	१। ७	३।२४	५।४६
	३	१९	८। ६	१०।११	११।५२	१३।१७	१४।३९	१६।१२	१८। ६	२०।२०	२२।४३	१। ३	३।२०	५।४२
	४	२०	८। २	१०। ७	११।४८	१३।१३	१४।३५	१६। ८	१८। २	२०।१७	२२।३९	०।५९	३।१६	५।३८
	५	२१	७।५८	१०। ३	११।४४	१३। ९	१४।३१	१६। ४	१७।५८	२०।१३	२२।३५	०।५५	३।१३	५।३४
	६	२२	७।५४	९।५९	११।४०	१३। ५	१४।२७	१६। ०	१७।५४	२०। ९	२२।३१	०।५१	३। ९	५।३०
	७	२३	७।५०	९।५५	११।३६	१३। १	१४।२३	१५।५६	१७।५१	२०। ५	२२।२७	०।४७	३। ५	५।२६
	८	२४	७।४६	९।५१	११।३२	१२।५७	१४।१९	१५।५२	१७।४७	२०। १	२२।२३	०।४३	३। १	५।२२
	९	२५	७।४२	९।४७	११।२८	१२।५३	१४।१५	१५।४८	१७।४३	१९।५७	२२।१९	०।३९	२।५७	५।१८
	१०	२६	७।३८	९।४३	११।२४	१२।४९	१४।११	१५।४४	१७।३९	१९।५३	२२।१५	०।३५	२।५३	५।१४
	११	२७	७।३५	९।३९	११।२०	१२।४५	१४। ८	१५।४०	१७।३५	१९।४९	२२।११	०।३१	२।४९	५।१०
	१२	२८	७।३१	९।३५	११।१६	१२।४१	१४। ४	१५।३६	१७।३१	१९।४५	२२। ७	०।२७	२।४५	५। ७
	१३	२९	७।२७	९।३१	११।१२	१२।३७	१४। ०	१५।३२	१७।२७	१९।४१	२२। ३	०।२३	२।४१	५। ३
	१४	३०	७।२३	९।२७	११। ८	१२।३३	१३।५६	१५।२८	१७।२३	१९।३७	२१।५९	०।१९	२।३७	४।५९
	१५	पौ. १	७।१९											

दैनिक लग्न सारणी, चण्डीगढ़ (पं.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा. स्टै. टा.]

पौष

अंग्रेजी तारीख		पौष प्रविष्ट	धनु घं.मि.	मकर घं.मि.	कुम्भ घं.मि.	मीन घं.मि.	मेष घं.मि.	वृष घं.मि.	मिथुन घं.मि.	कर्क घं.मि.	सिंह घं.मि.	कन्या घं.मि.	तुला घं.मि.	वृश्चिक घं.मि.
दिसम्बर	१५	१	९।२३	११। ४	१२।२९	१३।५२	१५।२४	१७।१९	१९।३३	२१।५६	०।१६	२।३३	४।५५	७।१५
	१६	२	९।१९	११। ०	१२।२५	१३।४८	१५।२१	१७।१५	१९।२९	२१।५२	०।१२	२।२९	४।५१	७।११
	१७	३	९।१६	१०।५६	१२।२२	१३।४४	१५।१७	१७।११	१९।२५	२१।४८	०। ८	२।२५	४।४७	७। ७
	१८	४	९।१२	१०।५३	१२।१८	१३।४०	१५।१३	१७। ७	१९।२२	२१।४४	०। ४	२।२१	४।४३	७। ३
	१९	५	९। ८	१०।४९	१२।१४	१३।३६	१५। ९	१७। ३	१९।१८	२१।४०	०। ०	२।१७	४।३९	६।५९
	२०	६	९। ४	१०।४५	१२।१०	१३।३२	१५। ५	१६।५९	१९।१४	२१।३६	२३।५६	२।१४	४।३५	६।५५
	२१	७	९। ०	१०।४१	१२। ६	१३।२८	१५। १	१६।५६	१९।१०	२१।३२	२३।५२	२।१०	४।३१	६।५१
	२२	८	८।५६	१०।३७	१२। २	१३।२४	१४।५७	१६।५२	१९। ६	२१।२८	२३।४८	२। ६	४।२७	६।४७
	२३	९	८।५२	१०।३३	११।५८	१३।२०	१४।५३	१६।४८	१९। २	२१।२४	२३।४४	२। २	४।२३	६।४३
	२४	१०	८।४८	१०।२९	११।५४	१३।१६	१४।४९	१६।४४	१८।५८	२१।२०	२३।४०	१।५८	४।१९	६।३९
	२५	११	८।४४	१०।२५	११।५०	१३।१२	१४।४५	१६।४०	१८।५४	२१।१६	२३।३६	१।५४	४।१५	६।३६
	२६	१२	८।४०	१०।२१	११।४६	१३। ९	१४।४१	१६।३६	१८।५०	२१।१२	२३।३२	१।५०	४।१२	६।३२
	२७	१३	८।३६	१०।१७	११।४२	१३। ५	१४।३७	१६।३२	१८।४६	२१। ८	२३।२८	१।४६	४। ८	६।२८
	२८	१४	८।३२	१०।१३	११।३८	१३। १	१४।३३	१६।२८	१८।४२	२१। ४	२३।२४	१।४२	४। ४	६।२४
	२९	१५	८।२८	१०। ९	११।३४	१२।५७	१४।२९	१६।२४	१८।३८	२१। ०	२३।२०	१।३८	४। ०	६।२०
	३०	१६	८।२४	१०। ५	११।३०	१२।५३	१४।२६	१६।२०	१८।३४	२०।५७	२३।१७	१।३४	३।५६	६।१६
	३१	१७	८।२०	१०। १	११।२६	१२।४९	१४।२२	१६।१६	१८।३०	२०।५३	२३।१३	१।३०	३।५२	६।१२
जनवरी	१	१८	८।१६	९।५७	११।२२	१२।४४	१४।१७	१६।११	१८।२५	२०।४८	२३। ८	१।२५	३।४७	६। ७
	२	१९	८।१२	९।५३	११।१८	१२।४०	१४।१३	१६। ७	१८।२२	२०।४४	२३। ४	१।२१	३।४३	६। ३
	३	२०	८। ८	९।४९	११।१४	१२।३६	१४। ९	१६। ३	१८।१८	२०।४०	२३। ०	१।१७	३।३९	५।५९
	४	२१	८। ४	९।४५	११।१०	१२।३२	१४। ५	१५।५९	१८।१४	२०।३६	२२।५६	१।१४	३।३५	५।५५
	५	२२	८। ०	९।४१	११। ६	१२।२८	१४। १	१५।५६	१८।१०	२०।३२	२२।५२	१।१०	३।३१	५।५१
	६	२३	७।५६	९।३७	११। २	१२।२४	१३।५७	१५।५२	१८। ६	२०।२८	२२।४८	१। ६	३।२७	५।४७
	७	२४	७।५२	९।३३	१०।५८	१२।२०	१३।५३	१५।४८	१८। २	२०।२४	२२।४४	१। २	३।२३	५।४३
	८	२५	७।४८	९।२९	१०।५४	१२।१६	१३।४९	१५।४४	१७।५८	२०।२०	२२।४०	०।५८	३।१९	५।३९
	९	२६	७।४४	९।२५	१०।५०	१२।१३	१३।४५	१५।४०	१७।५४	२०।१६	२२।३६	०।५४	३।१५	५।३६
	१०	२७	७।४०	९।२१	१०।४६	१२। ९	१३।४१	१५।३६	१७।५०	२०।१२	२२।३२	०।५०	३।१२	५।३२
	११	२८	७।३६	९।१७	१०।४२	१२। ५	१३।३७	१५।३३	१७।४६	२०। ८	२२।२८	०।४६	३। ८	५।२८
	१२	२९	७।३२	९।१३	१०।३८	१२। १	१३।३३	१५।२८	१७।४२	२०। ४	२२।२४	०।४२	३। ४	५।२४
	१३	मा. १	७।२८											

माघ

अंग्रेजी तारीख		माघ प्रविष्ट	मकर घं.मि.	कुम्भ घं.मि.	मीन घं.मि.	मेष घं.मि.	वृष घं.मि.	मिथुन घं.मि.	कर्क घं.मि.	सिंह घं.मि.	कन्या घं.मि.	तुला घं.मि.	वृश्चिक घं.मि.	धनु घं.मि.
जनवरी	१३	१	९। ९	१०।३४	११।५७	१३।२९	१५।२४	१७।३८	२०। ०	२२।२०	०।३८	३। ०	५।२०	७।२४
	१४	२	९। ५	१०।३०	११।५३	१३।२६	१५।२०	१७।३४	१९।५७	२२।१७	०।३४	२।५६	५।१६	७।२०
	१५	३	९। १	१०।२७	११।४९	१३।२२	१५।१६	१७।३०	१९।५३	२२।१३	०।३०	२।५२	५।१२	७।१७
	१६	४	८।५८	१०।२३	११।४५	१३।१८	१५।१२	१७।२६	१९।४९	२२। ९	०।२६	२।४८	५। ८	७।१३
	१७	५	८।५४	१०।१९	११।४१	१३।१४	१५। ८	१७।२३	१९।४५	२२। ५	०।२२	२।४४	५। ४	७। ९
	१८	६	८।५०	१०।१५	११।३७	१३।१०	१५। ४	१७।१९	१९।४१	२२। १	०।१९	२।४०	५। ०	७। ५
	१९	७	८।४६	१०।११	११।३३	१३। ६	१५। १	१७।१५	१९।३७	२१।५७	०।१५	२।३६	४।५६	७। १
	२०	८	८।४२	१०। ७	११।२९	१३। २	१४।५७	१७।११	१९।३३	२१।५३	०।११	२।३२	४।५२	६।५७
	२१	९	८।३८	१०। ३	११।२५	१२।५८	१४।५३	१७। ७	१९।२९	२१।४९	०। ७	२।२८	४।४८	६।५३
	२२	१०	८।३४	९।५९	११।२१	१२।५४	१४।४९	१७। ३	१९।२५	२१।४५	०। ३	२।२४	४।४४	६।४९
	२३	११	८।३०	९।५५	११।१७	१२।५०	१४।४५	१६।५९	१९।२१	२१।४१	२३।५९	२।२०	४।४१	६।४५
	२४	१२	८।२६	९।५१	११।१४	१२।४६	१४।४१	१६।५५	१९।१७	२१।३७	२३।५५	२।१६	४।३७	६।४१
	२५	१३	८।२२	९।४७	११।१०	१२।४२	१४।३७	१६।५१	१९।१३	२१।३३	२३।५१	२।१३	४।३३	६।३७
	२६	१४	८।१८	९।४३	११। ६	१२।३८	१४।३३	१६।४७	१९। ९	२१।२९	२३।४७	२। ९	४।२९	६।३३
	२७	१५	८।१४	९।३९	११। २	१२।३४	१४।२९	१६।४३	१९। ५	२१।२५	२३।४३	२। ५	४।२५	६।२९
	२८	१६	८।१०	९।३५	१०।५८	१२।३०	१४।२५	१६।३९	१९। २	२१।२२	२३।३९	२। १	४।२१	६।२५
	२९	१७	८। ६	९।३१	१०।५४	१२।२७	१४।२१	१६।३५	१८।५८	२१।१८	२३।३५	१।५७	४।१७	६।२२
	३०	१८	८। २	९।२८	१०।५०	१२।२३	१४।१७	१६।३१	१८।५४	२१।१४	२३।३१	१।५३	४।१३	६।१८
	३१	१९	७।५९	९।२४	१०।४६	१२।१९	१४।१३	१६।२८	१८।५०	२१।१०	२३।२७	१।४९	४। ९	६।१४
फरवरी	१	२०	७।५५	९।२०	१०।४२	१२।१५	१४। ९	१६।२४	१८।४६	२१। ६	२३।२३	१।४५	४। ५	६।१०
	२	२१	७।५१	९।१६	१०।३८	१२।११	१४। ५	१६।२०	१८।४२	२१। २	२३।२०	१।४१	४। १	६। ६
	३	२२	७।४७	९।१२	१०।३४	१२। ७	१४। २	१६।१६	१८।३८	२०।५८	२३।१६	१।३७	३।५७	६। २
	४	२३	७।४३	९। ८	१०।३०	१२। ३	१३।५८	१६।१२	१८।३४	२०।५४	२३।१२	१।३३	३।५३	५।५८
	५	२४	७।३९	९। ४	१०।२६	११।५९	१३।५४	१६। ८	१८।३०	२०।५०	२३। ८	१।२९	३।४९	५।५४
	६	२५	७।३५	९। ०	१०।२२	११।५५	१३।५०	१६। ४	१८।२६	२०।४६	२३। ४	१।२५	३।४५	५।५०
	७	२६	७।३१	८।५६	१०।१९	११।५१	१३।४६	१६। ०	१८।२२	२०।४२	२३। ०	१।२१	३।४२	५।४६
	८	२७	७।२७	८।५२	१०।१५	११।४७	१३।४२	१५।५६	१८।१८	२०।३८	२२।५६	१।१७	३।३८	५।४२
	९	२८	७।२३	८।४८	१०।११	११।४३	१३।३८	१५।५२	१८।१४	२०।३४	२२।५२	१।१४	३।३४	५।३८
	१०	२९	७।१९	८।४४	१०। ७	११।३९	१३।३४	१५।४८	१८।१०	२०।३०	२२।४८	१।१०	३।३०	५।३४
	११	३०	७।१५	८।४०	१०। ३	११।३५	१३।३०	१५।४४	१८। ६	२०।२६	२२।४४	१। ६	३।२६	५।३०
	१२	फा. १	७।११											

दैनिक लग्न सारणी, चण्डीगढ़ (पं.) में लग्नों का समाप्तिकाल | भा. स्टै. टा. |

फाल्गुन

मास	अंग्रेजी तारीख	फाल्गुन प्रविष्टे	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.
फरवरी	१२	१	८।३६	९।५९	११।३२	१३।२६	१५।४०	१८। ३	२०।२३	२२।४०	१। २	३।२२	५।२६	७। ७
	१३	२	८।३३	९।५५	११।२८	१३।२२	१५।३६	१७।५९	२०।१९	२२।३६	०।५८	३।१८	५।२३	७। ४
	१४	३	८।२९	९।५१	११।२४	१३।१८	१५।३२	१७।५५	२०।१५	२२।३२	०।५४	३।१४	५।१९	७। ०
	१५	४	८।२५	९।४७	११।२०	१३।१४	१५।२९	१७।५१	२०।११	२२।२८	०।५०	३।१०	५।१५	६।५६
	१६	५	८।२१	९।४३	११।१६	१३।१०	१५।२५	१७।४७	२०। ७	२२।२५	०।४६	३। ६	५।११	६।५२
	१७	६	८।१७	९।३९	११।१२	१३। ६	१५।२१	१७।४३	२०। ३	२२।२१	०।४२	३। २	५। ७	६।४८
	१८	७	८।१३	९।३५	११। ८	१३। ३	१५।१७	१७।३९	१९।५९	२२।१७	०।३८	२।५८	५। ३	६।४४
	१९	८	८। ९	९।३१	११। ४	१२।५९	१५।१३	१७।३५	१९।५५	२२।१३	०।३४	२।५४	४।५९	६।४०
	२०	९	८। ५	९।२७	११। ०	१२।५५	१५। ९	१७।३१	१९।५१	२२। ९	०।३०	२।५०	४।५५	६।३६
	२१	१०	८। १	९।२३	१०।५६	१२।५१	१५। ५	१७।२७	१९।४७	२२। ५	०।२६	२।४६	४।५१	६।३२
	२२	११	७।५७	९।२०	१०।५२	१२।४७	१५। १	१७।२३	१९।४३	२२। १	०।२२	२।४३	४।४७	६।२८
	२३	१२	७।५३	९।१६	१०।४८	१२।४३	१४।५७	१७।१९	१९।३९	२१।५७	०।१९	२।३९	४।४३	६।२४
	२४	१३	७।४९	९।१२	१०।४४	१२।३९	१४।५३	१७।१५	१९।३५	२१।५३	०।१५	२।३५	४।३९	६।२०
	२५	१४	७।४५	९। ८	१०।४०	१२।३५	१४।४९	१७।११	१९।३१	२१।४९	०।११	२।३१	४।३५	६।१६
	२६	१५	७।४१	९। ४	१०।३६	१२।३१	१४।४५	१७। ७	१९।२७	२१।४५	०। ७	२।२७	४।३१	६।१२
	२७	१६	७।३७	९। ०	१०।३३	१२।२७	१४।४१	१७। ४	१९।२४	२१।४१	०। ३	२।२३	४।२८	६। ८
	२८	१७	७।३४	८।५६	१०।२९	१२।२३	१४।३७	१७। ०	१९।२०	२१।३७	२३।५९	२।१९	४।२४	६। ५
मार्च	१	१८	७।३०	८।५२	१०।२५	१२।१९	१४।३३	१६।५६	१९।१६	२१।३३	२३।५५	२।१५	४।२०	६। १
	२	१९	७।२६	८।४८	१०।२१	१२।१५	१४।२९	१६।५२	१९।१२	२१।२९	२३।५१	२।११	४।१६	५।५७
	३	२०	७।२२	८।४४	१०।१७	१२।११	१४।२६	१६।४८	१९। ८	२१।२५	२३।४७	२। ७	४।१२	५।५३
	४	२१	७।१८	८।४०	१०।१३	१२। ९	१४।२२	१६।४४	१९। ४	२१।२२	२३।४३	२। ३	४। ८	५।४९
	५	२२	७।१४	८।३६	१०। ९	१२। ५	१४।१८	१६।४०	१९। ०	२१।१८	२३।३९	१।५९	४। ४	५।४५
	६	२३	७।१०	८।३२	१०। ५	१२। १	१४।१४	१६।३६	१८।५६	२१।१४	२३।३५	१।५५	४। ०	५।४१
	७	२४	७। ६	८।२८	१०। १	११।५७	१४।१०	१६।३२	१८।५२	२१।१०	२३।३१	१।५१	३।५६	५।३७
	८	२५	७। २	८।२४	९।५७	११।५२	१४। ६	१६।२८	१८।४८	२१। ६	२३।२७	१।४८	३।५२	५।३३
	९	२६	६।५८	८।२१	९।५३	११।४८	१४। २	१६।२४	१८।४४	२१। २	२३।२३	१।४४	३।४८	५।२९
	१०	२७	६।५४	८।१७	९।४९	११।४४	१३।५८	१६।२०	१८।४०	२०।५८	२३।१९	१।४०	३।४४	५।२५
	११	२८	६।५०	८।१३	९।४५	११।४०	१३।५४	१६।१६	१८।३६	२०।५४	२३।१५	१।३६	३।४०	५।२१
	१२	२९	६।४६	८। ९	९।४१	११।३६	१३।५०	१६।१२	१८।३२	२०।५०	२३।१२	१।३२	३।३६	५।१७
	१३	३०	६।४२	८। ५	९।३८	११।३२	१३।४६	१६। ८	१८।२८	२०।४६	२३। ८	१।२८	३।३२	५।१३
	१४	चै० १	६।३८											

चैत्र

मास	अंग्रेजी तारीख	चैत्र प्रविष्टे	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.
मार्च	१४	१	८। १	९।३४	११।२८	१३।४२	१६। ५	१८।२५	२०।४२	२३। ४	१।२४	३।२९	५। ९	६।३५
	१५	२	७।५७	९।३०	११।२४	१३।३८	१६। १	१८।२१	२०।३८	२३। ०	१।२०	३।२५	५। ६	६।३१
	१६	३	७।५३	९।२६	११।२०	१३।३४	१५।५७	१८।१७	२०।३४	२२।५६	१।१६	३।२१	५। २	६।२७
	१७	४	७।४९	९।२२	११।१६	१३।३१	१५।५३	१८।१३	२०।३०	२२।५२	१।१२	३।१७	४।५८	६।२३
	१८	५	७।४५	९।१८	११।१२	१३।२७	१५।४९	१८। ९	२०।२६	२२।४८	१। ८	३।१३	४।५४	६।१९
	१९	६	७।४१	९।१४	११। ९	१३।२३	१५।४५	१८। ५	२०।२३	२२।४४	१। ४	३। ९	४।५०	६।१५
	२०	७	७।३७	९।१०	११। ५	१३।१९	१५।४१	१८। १	२०।१९	२२।४०	१। ०	३। ५	४।४६	६।११
	२१	८	७।३३	९। ६	११। १	१३।१५	१५।३७	१७।५७	२०।१५	२२।३६	०।५६	३। १	४।४२	६। ७
	२२	९	७।२९	९। २	१०।५७	१३।११	१५।३३	१७।५३	२०।११	२२।३२	०।५२	२।५७	४।३८	६। ३
	२३	१०	७।२५	८।५८	१०।५३	१३। ७	१५।२९	१७।४९	२०। ७	२२।२८	०।४९	२।५३	४।३४	५।५९
	२४	११	७।२२	८।५४	१०।४९	१३। ३	१५।२५	१७।४५	२०। ३	२२।२५	०।४५	२।४९	४।३०	५।५५
	२५	१२	७।१८	८।५०	१०।४५	१२।५९	१५।२१	१७।४१	१९।५९	२२।२१	०।४१	२।४५	४।२६	५।५१
	२६	१३	७।१४	८।४६	१०।४१	१२।५५	१५।१७	१७।३७	१९।५५	२२।१७	०।३७	२।४१	४।२२	५।४७
	२७	१४	७।१०	८।४२	१०।३७	१२।५१	१५।१३	१७।३३	१९।५१	२२।१३	०।३३	२।३७	४।१८	५।४३
	२८	१५	७। ६	८।३८	१०।३३	१२।४७	१५।१०	१७।३०	१९।४७	२२। ९	०।२९	२।३३	४।१४	५।३९
	२९	१६	७। २	८।३५	१०।२९	१२।४३	१५। ६	१७।२६	१९।४३	२२। ५	०।२५	२।३०	४।१०	५।३६
	३०	१७	६।५८	८।३१	१०।२५	१२।३९	१५। २	१७।२२	१९।३९	२२। १	०।२१	२।२६	४। ७	५।३२
	३१	१८	६।५४	८।२७	१०।२१	१२।३६	१४।५८	१७।१८	१९।३६	२१।५७	०।१७	२।२२	४। ३	५।२८
अप्रैल	१	१९	६।५०	८।२३	१०।१७	१२।३२	१४।५४	१७।१४	१९।३२	२१।५३	०।१३	२।१८	३।५९	५।२४
	२	२०	६।४६	८।१९	१०।१३	१२।२८	१४।५०	१७।१०	१९।२८	२१।४९	०। ९	२।१४	३।५५	५।२०
	३	२१	६।४२	८।१५	१०।१०	१२।२४	१४।४६	१७। ६	१९।२४	२१।४५	०। ५	२।१०	३।५१	५।१६
	४	२२	६।३८	८।११	१०। ६	१२।२०	१४।४२	१७। २	१९।२०	२१।४१	०। १	२। ६	३।४७	५।१२
	५	२३	६।३४	८। ७	१०। २	१२।१६	१४।३८	१६।५८	१९।१६	२१।३७	२३।५७	२। २	३।४३	५। ८
	६	२४	६।३०	८। ३	९।५८	१२।१२	१४।३४	१६।५४	१९।१२	२१।३३	२३।५३	१।५८	३।३९	५। ४
	७	२५	६।२६	७।५९	९।५४	१२। ८	१४।३०	१६।५०	१९। ८	२१।२९	२३।५०	१।५४	३।३५	५। ०
	८	२६	६।२३	७।५५	९।५०	१२। ४	१४।२६	१६।४६	१९। ४	२१।२६	२३।४६	१।५०	३।३१	४।५६
	९	२७	६।१९	७।५१	९।४६	१२। ०	१४।२२	१६।४२	१९। ०	२१।२२	२३।४२	१।४६	३।२७	४।५२
	१०	२८	६।१५	७।४७	९।४३	११।५६	१४।१८	१६।३८	१८।५६	२१।१८	२३।३८	१।४२	३।२३	४।४८
	११	२९	६।११	७।४३	९।३८	११।५२	१४।१४	१६।३४	१८।५२	२१।१४	२३।३४	१।३८	३।१९	४।४४
	१२	३०	६। ७	७।४०	९।३४	११।४८	१४।११	१६।३१	१८।४८	२१।१०	२३।३०	१।३५	३।१५	४।४१
	१३	१	६। ३											

भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल

इस प्रकार से जो प्रचलित दैनिक लग्नसारणी दी गई है यह चण्डीगढ़ में लग्नों का समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.) बतलाती है। इसी सारणी से नीचे दिए गए कोष्ठक की सहायता से भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.) आसानी से इस प्रकार जाना जा सकता है :— दैनिक लग्नसारणी से अपनी अभीष्ट तारीख को चण्डीगढ़ में लग्न का समाप्ति काल जान लीजिए और उसमें अपने नगर के आगे और लग्न के नीचे इस कोष्ठक में लिखे मिनटों को चिन्ह के अनुसार जोड़ने या घटाने से उस नगर में लग्न का समाप्ति काल मालूम हो जाएगा। जैसे—मद्रास में ६ अप्रैल को मिथुन लग्न का समाप्तिकाल जानना है। ६ अप्रैल को चण्डीगढ़ में मिथुन का समाप्तिकाल १२ घं ० मि. है, यह हमने दैनिक लग्न सारणी से ज्ञात किया। नीचे कोष्ठक में मद्रास के आगे, मिथुन के नीचे + १६ मिनट लिखे हैं। होने से १६ मिनटों को १२ घ. ० मि. में जोड़ने पर १२ घं. १६ मि. मद्रास में ६ अप्रैल को मिथुनलग्न क समाप्ति काल (भा. स्टैं. टा.) बन गया।

लग्न / नगर	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुम्भ मि.	मीन मि.
अजमेर	+१७	+१८	+१७	+१४	+१०	+६	+१	−१	०	+४	+८	+१२
अम्बाला	०	०	०	०	०	०	−१	−१	−१	०	०	०
अमृतसर	+७	+६	+६	+७	+८	+९	+१०	+१०	+१०	+९	+८	+७
अलवर	+७	+८	+७	+५	+२	−२	−५	−६	−६	−३	०	+४
अलीगढ़	+१	+२	+१	−१	−४	−८	−११	−१२	−१२	−९	−६	−२
अहमदाबाद	+३०	+३३	+३१	+२५	+१८	+११	+४	−१	+१	+८	+१५	+२३
आगरा	+१	+३	+२	−१	−४	−८	−११	−१३	−१३	−९	−६	−२
उज्जैन	+१८	+२१	+१९	+१३	+६	−१	−८	−१३	−११	−४	+३	+११
उदयपुर	+२४	+२६	+२५	+२०	+१४	+८	+२	−२	०	+५	+१२	+१८
इन्दौर	+१८	+२२	+२०	+१४	+५	−३	−१०	−१५	−१३	−६	+३	+१०
करनाल	+१	+१	+१	०	०	−१	−२	−२	−२	−१	−१	०
कलकत्ता	−३२	−२८	−३०	−३९	−४५	−५३	−६०	−६५	−६३	−५६	−४७	−४०
कांगड़ा	०	−१	−१	+१	+२	+३	+५	+६	+५	+४	+३	+१
कानपुर	−९	−५	−६	−९	−१३	−१७	−२२	−२४	−२३	−१९	−१५	−११
काशी	−१५	−१३	−१४	−१८	−२४	−२९	−३४	−३७	−३६	−३१	−२५	−२०
कुरुक्षेत्र	+२	+२	+२	+१	+१	०	−१	−१	−१	०	०	+१
कोटा	+१४	+१६	+१५	+११	+५	०	−५	−८	−७	−२	+४	+९
गढ़वाल	+४	+४	+४	+२	०	−२	−४	−५	−५	−३	−१	+१
गुरदासपुर	+३	−२	−२	+४	+५	+६	+८	+९	+८	+७	+६	+४
गोरखपुर	−१८	−१७	−१८	−२१	−२५	−२९	−३४	−३६	−३५	−३१	−२७	−२३
ग्वालियर	+३	+५	+४	०	−४	−९	−१३	−१६	−१५	−११	−६	−२
गोआ	−१	−२	−१	०	+२	+५	+७	+८	+७	+६	+३	+१
जम्मू	+४	+३	+४	+५	+७	+१०	+१२	+१३	+१२	+११	+८	+६
जयपुर	+११	+१२	+११	+८	+५	+१	−३	−५	−४	०	+३	+७
जालन्धर	+५	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+५
जीन्द	+५	+६	+५	+४	+३	+१	०	−१	−१	+१	+२	+४
जामनगर	+३१	+३२	+३१	+२८	+२५	+२१	+१७	+१५	+१६	+२०	+२३	+२७
जोधपुर	+२३	+२५	+२४	+२०	+१६	+११	+७	+४	+५	+९	+१४	+१८
झांसी	+३	+५	+४	०	−६	−११	−१६	−१९	−१८	−१३	−७	−२
दिल्ली	+३	+३	+३	+१	−१	−३	−५	−६	−६	−४	−२	०
देहरादून	−५	−५	−५	−५	−५	−५	−६	−६	−६	−५	−५	−५
नागपुर	+८	+११	+१०	+२	−७	−१७	−२६	−३१	−२९	−२०	−११	−२
नाभा	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+२	+२	+२	+३	+३	+३

लग्न / नगर	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुम्भ मि.	मीन मि.
नैनीताल	−८	−७	−८	−९	−१०	−१२	−१३	−१४	−१४	−१२	−११	−९
पटियाला	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१	+१	+१	+२	+२	+२
पठानकोट	+१	+१	+१	+३	+४	+६	+८	+९	+८	+७	+५	+३
पटना	−२४	−२२	−२३	−२७	−३२	−३८	−४२	−४५	−४४	−३९	−३४	−२९
पुंछ	+४	+३	+४	+७	+१०	+१४	+१८	+२०	+१९	+१५	+१२	+८
प्रयाग	−११	−९	−१०	−१४	−१९	−२४	−२९	−३१	−३१	−२६	−२१	−१६
फरीदकोट	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८
फिरोजपुर	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९
बम्बई	+३६	+४१	+३८	+२९	+१८	+७	−४	−१०	−८	+३	+१४	+२५
बरेली	−६	−६	−६	−८	−१०	−१२	−१४	−१५	−१५	−१३	−११	−९
बंगलोर	+२६	+३३	+३०	+१७	०	−१६	−३२	−४०	−३७	−२२	−६	+११
बुलन्दशहर	०	०	०	−२	−४	−६	−८	−९	−९	−७	−५	−३
भटिण्डा	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+७	+७	+७	+८	+८	+८
भरतपुर	+३	+५	+४	+१	−२	−६	−९	−११	−११	−७	−४	०
भुवनेश्वर	−१८	−१४	−१६	−२४	−३४	−४४	−५४	−५८	−५७	−४८	−३८	−२८
भोपाल	+११	+१४	+१२	+६	−१	−८	−१५	−२०	−१८	−११	−४	+४
मद्रास	+१५	+२२	+१६	+६	−११	−२७	−४३	−५१	−४८	−३३	−१७	०
मथुरा	+३	+४	+३	+१	−२	−६	−९	−१०	−१०	−७	−४	०
मण्डी (हि.प्र.)	−२	−३	−३	−२	−१	०	+२	+२	+२	+१	०	−१
मालेरकोटला	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३	+३	+३	+४	+४	+४
मेरठ	−१	०	−१	−२	−३	−५	−६	−७	−७	−५	−४	−२
रोपड़	+१	+१	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१
रोहतक	+४	+५	+४	+३	+१	०	−२	−३	−३	−१	+१	+२
लखनऊ	−९	−८	−९	−१२	−१५	−१९	−२३	−२५	−२४	−२०	−१७	−१३
लुधियाना	+३	+३	+३	+३	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३
शिमला	−२	−२	−२	−२	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−२
श्रीनगर (क.)	+१	०	+१	+४	+७	+११	+१५	+१७	+१६	+१२	+९	+५
सहारनपुर	−१	−१	−१	−२	−२	−३	−४	−४	−४	−३	−३	−२
हरिद्वार	−४	−४	−४	−५	−५	−६	−७	−७	−७	−६	−६	−५
हिसार	+७	+८	+७	+६	+५	+३	+२	+१	+१	+३	+४	+६
हैदराबाद	+१५	+२१	+१८	+८	−५	−१७	−२८	−३५	−३१	−२२	−९	+३
होशियारपुर	+२	+१	+१	+२	+२	+४	+५	+५	+५	+४	+३	+२

अक्षांशादि सारणी (भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांश आदि)

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.
अकोला (म.)	२०।४२	७७। २	—२१।५२	ऊना (हि.प्र.)	३१।३२	७६।१८	—२४।४८	कोल्हापुर (न.)	१६।४२	७४।१६	—३२।५६	जोधपुर (राज.)	२६।१८	७३। ४	—३७।४४
अगरतल्ला (त्रि.)	२३।४९	९१।१८	+३५।१२	एकलिंगजी (रा.)	२४।४३	७३।४६	—३४।५६	कोहिमा (ना.)	२५।४१	९४। ७	+४६।२८	जौनपुर (उ.प्र.)	२५।४६	८२।४४	+ ०।५६
अंकलेश्वर (गु.)	२१।३८	७३। ३	—३७।४८	एटा (उ.प्र.)	२७।३५	७८।४०	—१५।२०	खन्ना (पं.)	३०।४२	७६।१३	—२५। ८	ज्वालाजी (हि.प्र.)	३१।५३	७६।२२	—२४।३२
अखनूर (का.)	३२।५४	७४।४५	—३१। ०	एर्नाकुलम् (के.)	१०। ०	७६।१५	—२५। ०	खुर्जा (उ.प्र.)	२८।१५	७७।५०	—१८।४०	जालना (म.)	१९।५१	७५।५६	—२६।१६
अजन्ता (म.)	२०।३३	७५।४८	—२६।४८	एलिचपुर (म.)	२१।१८	७७।३३	—१९।४८	गया (बिहार)	२४।४९	८५। १	+१०। ४	झरिया (बि.)	२३।५०	८६।३३	+१६।१२
अजमेर (रा.)	२६।२७	७४।४२	—३१।१२	एलेप्पे (के.)	९।३०	७६।२३	—२४।२८	गंगटोक (सि.)	२७।२०	८८।४०	+२४।४०	झांसी (उ.प्र.)	२५।२७	७८।३७	—१५।३२
अनन्तनाग (का.)	३३।४३	७५।१७	—२८।५२	ऐलोरा (म.)	२०। २	७५।१३	—२९। ८	गढ़शंकर (पं.)	३१।१३	७६।११	—२५।१६	झालरापाटन (रा.)	२४।३२	७६।१२	—२५।१२
अनामलै (ता.)	१०।३४	७६।५०	—२२।४०	औरंगाबाद (आं.)	१९।५३	७५।२३	—२८।२८	गाजियाबाद (उ.प्र.)	२८।४०	७७।२८	—२०। ८	झालावाड़ (रा.)	२४।३६	७४। ९	—३३।२४
अनूपशहर (उ.प्र.)	२८।२१	७८।१६	—१६।५६	कटक (उ.)	२०।२८	८५।५४	+१३।३६	गाजीपुर (उ.प्र.)	२५।३४	८३।३५	+ ४।२०	झुंझुनू (रा.)	२८। ६	७५।२५	—२८।२०
अमरावती (म.)	२०।५६	७७।४८	—१८।४८	कटनी (म.प्र.)	२३।५०	८०।२३	— ८।२८	गिलगित (का.)	३५।५५	७४।२२	—३२।३२	टांडाउरमुर (पं.)	३१।४०	७५।४१	—२७।१६
अमरेली (गु.)	२१।३६	७१।१५	—४५। ०	कठुआ (का.)	३२।१७	७५।१६	—२७।१६	गुड़गांव (हरि.)	२८।२७	७७। ४	—२१।४४	टिहरी (उ.प्र.)	३०।२०	७८।३०	—१६। ०
अमरोहा (उ.प्र.)	२८।५४	७८।३१	—१५।५६	कण्डाघाट (हि.प्र.)	३०।५७	७७। ६	—२१।३६	गुर्दासपुर (पं.)	३२। २	७५।२७	—२८।१२	टोंक (राज.)	२६।११	७५।५०	—२६।४०
अमृतसर (पं.)	३१।३७	७४।५५	—३०।२०	कन्नौज (उ.प्र.)	२७। ३	७९।५८	—१०। ८	गोंडा (उ.प्र.)	२७।१०	८१।५७	— २।१२	टोडारायसिंह (रा.)	२६। ०	७५।२९	—२८। ४
अमेठी (उ.प्र.)	२६। ८	८१।५०	— २।४०	कपूर्थला (पं.)	३१।२३	७५।२५	—२८।२०	गोरखपुर (उ.प्र.)	२६।४५	८३।२४	+ ३।३६	ट्रावनकोर	९। ०	७७। ०	—२२। ०
अम्बाला (ह.)	३०।२१	७६।५२	—२२।३२	करतारपुर (पं.)	३१।२७	७५।३२	—२७।५२	गोहाटी (आसाम)	२६।११	९१।४५	+३७। ०	डगशाई (हि.प्र.)	३०।५३	७७। ६	—२१।३६
अयोध्या (उ.प्र.)	२६।४८	८२।१४	— १। ४	करनाल (हरि.)	२९।४२	७७। २	—२१।५२	ग्वालियर (म.प्र.)	२६।१४	७८।१०	—१७।२०	डलहौजी (हि.प्र.)	३२।३२	७५।५९	—२६। ४
अरकोणम् (ता.)	१३। ५	७९।४३	—११। ८	करौली (रा.)	२६।३०	७७। ४	—२१।४४	चण्डीगढ़ (पं.)	३०।४४	७६।५२	—२२।३२	डिबाई (उ.प्र.)	२८।१२	७८।१५	—१७। ०
अर्की (हि.प्र.)	३१। ९	७६।५८	—२२। ८	कलकत्ता (बं)	२२।३४	८८।२४	+२३।३६	चन्दौसी (उ.प्र.)	२८।२७	७८।४९	—१४।४४	डिब्रूगढ़ (आ.)	२७।२९	९४।५६	+४९।४४
अल्मोड़ा (उ.प्र.)	२९।३७	७९।४०	—११।२०	कसौली (हि.प्र.)	३०।५३	७७। १	—२१।५६	चम्बा (हि.प्र.)	३२।२९	७६।१०	—२५।२०	डीडवाना (राज.)	२७।२४	७४।३४	—३१।४४
अलवर (रा.)	२७।३४	७६।३८	—२३।२८	कांगड़ा (हि.प्र.)	३२। ५	७६।१८	—२४।४८	चित्तौड़गढ़ (रा.)	२४।५४	७४।४२	—३१।१२	डीसा (गु.)	२४।१४	७२।१३	—४१। ८
अलीगढ़ (उ.प्र.)	२७।५४	७८। ६	—१७।३६	कांचीपुरम् (ता.)	१२।५०	७९।४५	—११। ०	चीरापूंजी (मे.)	२५।१७	९१।४७	+३७। ८	डूंगरपुर (राज.)	२३।५०	७३।४३	—३५। ८
अहमदनगर (म.)	१९। ५	७४।४८	—३०।४८	काठियावाड़ (गु.)	२२। ०	७१। ०	—४६। ०	चूरू (राज.)	२८।१९	७५। १	—२९।५६	तिरुपति (आंध्र.)	१३।४०	७९।२०	—१२।४०
अहमदाबाद (गु.)	२३। २	७२।३८	—३९।२८	कानपुर (उ.प्र.)	२६।२७	८०।२४	— ८।२४	छतरपुर (म.प्र.)	२४।५४	७९।३८	—११।२८	त्रिचनापल्ली (ता.)	१०।५०	७८।४६	—१४।५६
आगरा (उ.प्र.)	२७।१०	७८। ५	—१७।४०	कारगिल (का.)	३४।३०	७६।१३	—२५। ८	छपरा (बिहार)	२५।४७	८४।४१	+ ८।४४	त्रिचुर (के.)	१०।३०	७६।१५	—२५। ०
आजमगढ़ (उ.प्र.)	२६। ५	८३।१२	+ २।४८	कालका (ह.)	३०।५०	७७। १	—२१।५६	जबलपुर (म.प्र.)	२३।१०	७९।५९	—१०। ४	त्रिवेन्द्रम् (के.)	८।३०	७६।५७	—२२।१२
आनन्द (गु.)	२२।३२	७३। ०	—३८। ०	काशी (उ.प्र.)	२५।२०	८३। ०	+ २। ०	जम्मू (का.)	३२।४४	७४।५४	—३०।२४	थराड (गु.)	२४।२३	७१।३७	—४३।३२
आबू (राज.)	२४।४०	७२।४५	—३९। ०	किसनगढ़ (राज.)	२७।५३	७०।३७	—४७।३२	जयपुर (राज.)	२६।५५	७५।५२	—२६।३४	थानेसर (हरि.)	२९।५८	७६।५६	—२२।१६
आरा (बि.)	२५।३४	८४।३४	+ ८।१६	कुराली (पं.)	३०।५०	७६।३५	—२३।४०	जलगांव (म.)	२१। ५	७५।४०	—२७।२०	दतिया (म.प्र.)	२५।३९	७८।२७	—१६।१२
आसनसोल (बं.)	२३।४२	८७। १	+१८। ४	कुरुक्षेत्र (हरि.)	३०। ०	७६।४८	—२२।४८	जलपाईगुड़ी (बं.)	२६।३२	८८।४६	+२५। ४	दमोह (म.प्र.)	२३।५०	७९।२९	—१२। ४
इटारसी (म.प्र.)	२२।३७	७७।४५	—१९। ०	कुल्लू (हि.प्र.)	३१।५८	७७। ६	—२१।३६	जामनगर (गुज.)	२२।२७	७०। ७	—४९।३२	दरभंगा (बिहार)	२६।१०	८५।५७	+१३।४८
इटावा (उ.प्र.)	२६।४७	७९। २	—१३।५२	कुमारी अन्तरीप	८। ५	७७।३४	—१९।४४	जालंधर (पं.)	३१।१९	७५।३४	—२७।४४	दसूआ (पं.)	३१।४९	७५।४२	—२७।१२
इन्दौर (म.प्र.)	२२।४४	७५।५०	—२६।४०	कुम्भकोणम् (ता.)	१०।५८	७९।२५	—१२।२०	जालोर (राज.)	२५।२२	७२।३८	—३९।२८	दार्जिलिंग (बं.)	२७। ३	८८।१८	+२३।१२
इम्फाल (मणि.)	२४।४४	९३।५८	+४५।५२	कैथल (हु.)	२९।४८	७६।२६	—२४।१६	जलौन (उ.प्र.)	२६। ८	७९।२३	—१२।२८	दिल्ली	२८।३८	७७।१२	—२१।१२
उज्जैन (म.प्र.)	२३। ९	७५।४३	—२७। ८	कोचीन (के.)	९।५८	७६।१७	—२४।५२	जीन्द (हरि.)	२९।१९	७६।२३	—२४।२८	दीनानगर (पं.)	३२। ८	७५।३१	—२७।५६
उदयपुर (रा.)	२४।३५	७३।४२	—३५।१२	कोटखाई (हि.प्र.)	३१। ८	७७।३६	—१९।३६	जूनागढ़ (गु.)	२१।३१	७०।३६	—४७।३६	देवबन्द (उ.प्र)	२९।४२	७७।४३	—१९। ८
उन्नाव (उ.प्र.)	२६।३४	८०।३०	— ८। ०	कोटा (राज.)	२५।१०	७५।५२	—२६।३२	जैसलमेर (राज.)	२६।५५	७०।५७	—४६।१२	देवरिया (उ.प्र.)	२६।३३	८३।४५	+ ५। ०
ऊधमपुर (का.)	३२।५५	७५। ७	—२९।३२	कोडैकनाल (ता.)	१०।१३	७७।३२	—१९।५२	जोगिन्दर नगर (हि.)	३१।५०	७६।४५	—२३। ०	देवास (म.प्र.)	२२।५८	७६। ६	—२५।३६

अक्षांशादि सारणी (भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांश आदि)

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
देव प्रयाग (उ.प्र.)	३०। ६	७८।३७	—१५।३२	पाटन (गु.)	२३।५३	७२।१०	—४१।२०	बालासोर (उ.)	२१।३०	८६।५४	+१७।३६	मुगलसराय (उ.प्र.)	२५।१७	८३।११	+ २।४४
देहरादून (उ.प्र.)	३०।१९	७८। ४	—१७।४४	पांडिचेरी	११।५६	७९।५३	—१०।२८	बालोतरा (रा.)	२५।४९	७२।१५	—४१। ०	मुंगेर (बि.)	२५।२३	८६।३०	+१६। ०
द्वारिका (गु.)	२२।१४	६९। ७	—५२।३२	पालमपुर (हि.प्र.)	३२। ७	७६।३२	—२३।५२	बिजनौर (उ.प्र.)	२९।२३	७८।११	—१७।१६	मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)	२९।२८	७७।४४	—१९। ४
धनबाद (बि.)	२३।४७	८६।२०	+१६। ०	पाली (रा.)	२५।४६	७३।२५	—३६।२०	बिलासपुर (म.प्र.)	२२। ५	८२।१३	— १। ८	मुजफ्फरपुर (बि.)	२६। ७	८५।२७	+११।४८
धर्मशाला (हि.प्र.)	३२।१६	७६।२३	—२४।२८	पुंछ (का.)	३३।५१	७४। ८	—३३।२८	बिलासपुर (हि.प्र.)	३१।१९	७६।५०	—२२।४०	मुरादाबाद (उ.प्र.)	२८।५१	७८।४६	—१४।४४
धारवाड़ (क.)	१५।२७	७५। ५	—२९।४०	पुर्णिया (बि.)	२५।४६	८७।३१	+२०। ४	बीकानेर (रा.)	२८। १	७३।२२	—३६।३२	मेरठ (उ.प्र.)	२९। १	७७।४५	—१९। ०
धौलपुर (रा.)	२६।४२	७७।५३	—१८।२८	पुरी (उ.)	१९।४८	८५।५२	+१३।२८	बीजापुर (म.)	१६।५०	७५।४७	—२६।५२	मैनपुरी (उ.प्र.)	२७।१४	७९। ३	—१३।४८
नडियाद (गु.)	२२।४१	७२।५५	—३८।२०	पूना (म.)	१८।३०	७३।५३	—३४।२८	बुलन्दशहर (उ.प्र.)	२८।२४	७७।५४	—१८।२४	मोगा (पं.)	३०।४८	७५।१०	—२९।२०
नरैना (रा.)	२६।५०	७४।११	—३३।१६	पोरबन्दर (गु.)	२१।३७	६९।४९	—५०।४४	बूंदी (रा.)	२५।२७	७५।४१	—२७।१६	मोरार (म.प्र.)	२६।१३	७८।१४	—१७। ४
नवलगढ़ (रा.)	२७।५१	७५।१८	—२८।४८	पोर्टब्लेयर	११।४०	९२।४६	+४१। ४	वृन्दावन (उ.प्र.)	२७।३३	७७।४४	—१९। ४	मोरेना (म.प्र.)	२६।२९	७८। ४	—१७।४४
नसीराबाद (रा.)	२६।१८	७४।४६	—३०।५६	प्रतापगढ़ (उ.प्र.)	२५।५४	८१।५९	— २। ४	बुद्धगया (बि.)	२४।४२	८४।५९	+ ९।५६	यवतमाल (म.)	२०।२३	७८।११	—१७।१६
नागपुर (म.)	२१। ९	७९। ९	—१३।२४	प्रतापगढ़ (म.प्र.)	२४। २	७४।४०	—३१।२०	भद्रवाह (का.)	३३। १	७५।४३	—२७। ८	योल (हि.प्र.)	३२।११	७६।२२	—२४।२८
नागौर (रा.)	२७।११	७३।४०	—३५।२०	प्रयाग (उ.प्र.)	२५।२८	८१।५४	— २।२४	भटिण्डा (पं.)	३०।११	७५। ०	—३०। ०	रतलाम (म.प्र.)	२३।२०	७५। ७	—२९।३२
नाचना (रा.)	२७।२६	७१।४५	—४३। ०	फगवाड़ा (पं.)	३१।१४	७५।४६	—२६।५६	भरतपुर (रा.)	२७।१५	७७।३०	—२०। ०	रत्नागिरि (म.)	१७। २	७३।१९	—३६।४४
नाथद्वारा (रा.)	२४।५६	७३।५२	—३४।३२	फतेहाबाद (उ.प्र.)	२७। १	७८।१९	—१६।४०	भरूच (गु.)	२१।४१	७३। १	—३७।५६	राजकोट (गु.)	२२।१८	७०।५०	—४६।४०
नान्देड़ (म.)	१९। ९	७७।२७	—२०।१२	फतेहाबाद (ह.)	२९।३१	७५।३०	—२८। ०	भागलपुर (बि.)	२५।१४	८६।५९	+१७।५६	राजमहेन्द्री (आं.)	१७। ५	८१।४८	— २।४८
नाभा (पं.)	३०।२५	७६। ९	—२५।३६	फरीदकोट (पं.)	३०।४०	७४।४०	—३१।२०	भिवानी (ह.)	२८।४६	७६।१८	—२४।४८	रांची (बि.)	२३।२०	८५।२०	+११।२०
नारनौल (ह.)	२८। २	७६।१४	—२५। ४	फरीदाबाद (ह.)	२८।२५	७७।२२	—२०।३२	भीनमाल (रा.)	२५। ०	७२।१६	—४०।४४	रानीखेत (उ.प्र.)	२९।४०	७९।३०	—११।४८
नालागढ़ (हि.प्र.)	३१। ३	७६।४२	—२३।१२	फर्रुखाबाद (उ.प्र.)	२७।२४	७९।३७	—११।३२	भुज (गुज.)	२३।१६	६९।४४	—५१। ४	रापर (गु.)	२३।३२	७०।४०	—४७।२०
नाहन (हि.प्र.)	३०।३३	७७।२१	—२०।३६	फाजिल्का (पं.)	३०।२५	७४। ४	—३३।४४	भुवनेश्वर (उ.)	२०।१५	८५।५२	+१३।२८	रामपुर बुशहर (हि.)	३१।२७	७७।३८	—१९।२८
नासिक (म.)	२०। ०	७३।५०	—३४।४०	फिरोजपुर (पं.)	३०।५५	७४।४०	—३१।२०	भोपाल (म.प्र.)	२३।१६	७७।२३	—२०।२८	रायपुर (म.प्र.)	२१।१५	८१।४१	— ३।१६
निम्बाहेड़ा (रा.)	२४।३७	७४।४५	—३१। ०	फुलेरा (रा.)	२६।५२	७५।१६	—२८।५६	मऊ (उ.प्र.)	२५।५८	८३।३६	+ ४।२४	रायबरेली (उ.प्र.)	२६।१३	८१।१४	— ५। ४
नीमच (म.प्र.)	२४।२७	७४।५२	—३०।३२	फैजाबाद (उ.प्र.)	२६।४७	८२।१२	— १।१२	मछलीपट्टण (आं.)	१६। ९	८१। ८	— ५।२८	रामेश्वरम् (ता.)	९।१७	७९।२२	—१२।३२
नूरपुर (हि.प्र.)	३२।१८	७५।५६	—२६।१६	बंगलौर (क.)	१२।५८	७७।३८	—१९।२८	मण्डी (हि.प्र.)	३१।४३	७६।५८	—२२। ८	रिवाड़ी (ह.)	२८।१२	७६।४०	—२३।२०
नैनवा (रा.)	२५।४५	७५।५७	—२६।१२	बटाला (पं.)	३१।४९	७५।१४	—२९। ४	मद्रास (ता.)	१३। ४	८०।१७	— ८।५२	रीवां (म.प्र.)	२४।३१	८१।१९	— ४।४४
नैनीताल (उ.प्र.)	२९।२३	७९।३०	—१२। ०	बदायूं (उ.प्र.)	२८। २	७९।१०	—१३।२०	मथुरा (उ.प्र.)	२७।२८	७७।४१	—१९।१६	रोपड़ (पं.)	३०।५७	७६।३०	—२४। ०
नोहर (राज.)	२९।११	७४।४६	—३०।५६	बड़ोदा (गु.)	२२।१८	७३।१२	—३७।१२	मन्दसोर (म.प्र.)	२४। ४	७५। ५	—२९।४०	रोहतक (ह.)	२८।५४	७६।३८	—२३।२८
नौशेरा (का.)	३३।१३	७४।१७	—३२।५२	बम्बई (म.)	१९। ०	७२।५४	—३८।२४	मंसूरी (उ.प्र.)	३०।२७	७८। ६	—१७।३६	लखनऊ (उ.प्र.)	२६।५५	८०।५९	— ६। ४
पचपदरा (रा.)	२५।५५	७२।२१	—४०।३६	बद्रीनाथ (उ.प्र.)	३०।४४	७९।३२	—११।५२	महेसाणा (गु.)	२३।३५	७२।२७	—४०।१२	लाडवा (ह.)	२६।५६	७७। ५	—२१।४०
पंचमढ़ी (म.प्र.)	२२।३०	७८।२२	—१६।३२	बर्दवान (ब.)	२३।१६	८७।५२	+२१।२८	माछीवाड़ा (पं.)	३०।५५	७६।१५	—२५। ०	लुधियाना (पं.)	३०।५५	७५।५४	—२६।२४
पंचकूला (ह.)	३०।४६	७६।५६	—२२।१६	बलिया (उ.प्र.)	२५।४४	८४।११	+ ६।४४	महेन्द्रगढ़ (हरि.)	२८।१७	७६।१४	—२५। ४	लेह (का.)	३४।१०	७७।४०	—१९।२०
पंजिम (गोवा)	१५।२९	७३।४९	—३४।४४	बागलकोट (क.)	१६।१२	७५।४४	—२७। ४	माण्डवी (गु.)	२२।५१	६९।३०	—५२। ०	लोहारू (ह.)	२८।२६	७५।४७	—२६।५२
पटना (बि.)	२५।३७	८५।१३	+१०।५२	बांकीपुर (बि.)	२५।४०	८५।१२	+१०।४८	मारवाड़ जं. (रा.)	२५।४३	७३।४०	—३५।२०	वर्धा (म.)	२०।४५	७८।३६	—१५।३६
पटियाला (पं.)	३०।२०	७६।२५	—२४।२०	बांसवाड़ा (रा.)	२३।३०	७४।२४	—३२।२४	मालेगांव (म.)	२०।३०	७४।४०	—३१।२०	विजयवाड़ा (आं.)	१६।३१	८०।३६	— ७।३६
पटौदी (ह.)	२८।१८	७६।४८	—२२।४८	बांदा (उ.प्र.)	२५।३०	८०।२०	— ८।३२	मालेरकोटला (पं.)	३०।३१	७५।५९	—२६। ४	विशाखापट्टनम् (आं.)	१७।४२	८३।२०	+ ३।२०
पठानकोट (पं.)	३२।१७	७५।४२	—२७।१२	बाराबंकी (उ.प्र.)	२६।५६	८१।१३	— ५। ८	मिर्जापुर (उ.प्र.)	२५।१०	८२।३३	+ ०।१२	शाहदरा (दिल्ली)	२८।४०	७७।२०	—२०।४०
पन्ना (म.प्र.)	२४।४४	८०।१४	— ९। ४	बारामूला (का.)	३४।१२	७४।२०	—३२।४०	मीरपुर (का.)	३३।१२	७३।५१	—३४।३६	शाहाबाद (उ.प्र.)	२७।३०	८०। ०	—१०। ०

अक्षांशादि सारणी (भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांश आदि)

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टॅण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मि. से.
शिमला (हि.प्र.)	३१। ६	७७।१३	—२१। ८
शिलांग (आ.)	२५।३४	९१।५४	+३७।३६
श्रीनगर (का.)	३४। ६	७४।५१	—३०।३६
श्रीमाधोपुर (रा.)	२७।२५	७५।३२	—२७।५२
संगरूर (पं.)	३०।१२	७५।५३	—२६।२८
सतारा (म.)	१७।४२	७४। २	—३३।५२
सनावर (पं.)	३०।१८	७६।३०	—२४। ०
सरदार शहर (रा.)	२८।२७	७४।३२	—३१।५२
सरहिन्द (पं.)	३०।३८	७६।२५	—२४।२०
सवाईमाधोपुर (रा.)	२६। ०	७६।३०	—२४। ०
ससाराम (बि.)	२४।५७	८४। ३	+ ६।१२
सहारनपुर (उ.प्र.)	२९।५८	७७।३३	—१९।४८
सागर (म.प्र.)	२३।५०	७८।४५	—१५। ०

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टॅण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मि. से.
सांगली (म.)	१६।५२	७४।३६	—३१।३६
सांगानेर (रा.)	२६।४९	७५।४९	—२६।४४
साम्भर (रा.)	२६।५४	७५।१३	—२९। ८
सिकन्दराबाद (आं.)	१७।२७	७८।३३	—१५।४८
सिन्दरी (रा.)	२५।३३	७१।५५	—४२।२०
सिन्दरी (बं.)	२३।४५	८६।४२	+१६।४८
सिरसा (ह.)	२९।३२	७५। ४	—२९।४४
सिरोही (रा.)	२४।५३	७२।५४	—३८।२४
सिलीगुड़ी (बं.)	२६।४२	८८।२५	+२३।४०
सिवाना (रा.)	२५।३६	७२।२७	—४०।१२
सिहोरा (म.प्र.)	२३।२९	८०। ६	— ९।२४
सिंहभूम (बि.)	२२।२४	८५।३०	+१२।००

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टॅण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मि. से.
सीकर (रा.)	२७।३६	७५।१२	—२९।१२
सीतापुर (उ.प्र.)	२७।३२	८०।४३	— ७। ८
सुन्दर नगर (हि.प्र.)	३१।३२	७६।५३	—२२।२८
सूरत (गु.)	२१।१२	७२।५२	—३८।३२
सूरतगढ़ (रा.)	२९।१९	७३।५७	—३४।१२
सोजत (रा.)	२५।५६	७३।४२	—३५।१२
सोनहाट (म.प्र.)	२३।२९	८२।३०	— ०। ०
सोमनाथ (गु.)	२१। ४	७०।२६	—४८।१६
सोलन (हि.प्र.)	३०।५५	७७। ६	—२१।२४
हजारी बाग (बि.)	२३।५९	८५।२५	+११।४०
हमीरपुर (उ.प्र.)	२५।५८	८०।१२	— ९।१२
हमीरपुर (हि.प्र.)	३१।४१	७६।३१	—२३।५६

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टॅण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मि. से.
हनुमान गढ (रा.)	२९।३५	७४।२१	—३२।३६
हरदोई (उ.प्र.)	२७।२३	८०।१०	— ९।२०
हरिद्वार (उ.प्र.)	२९।५८	७८।१३	—१७। ८
हाथरस (उ.प्र.)	२७।३६	७८। ६	—१७।३६
हापुड़ (उ.प्र.)	२८।४३	७७।५०	—१८।४०
हांसी (ह.)	२९। ६	७६। ०	—२६। ०
हिसार (ह.)	२९।१०	७५।४६	—२६।५६
हुबली (क.)	१५।२०	७५।१२	—२९।१२
हैदराबाद (आं.)	१७।२०	७८।३०	—१६। ०
होशंगाबाद (म.प्र.)	२२।४६	७७।४५	—१९। ०
होशियारपुर (पं.)	३१।३२	७५।५७	—२६।१२
होसुर (ता.)	१२।४४	७७।५२	—१८।३२

राजस्थान के नगरों के अक्षांश आदि

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टॅण्डर्ड अन्तर (ऋण)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.
अकलेरा	२४।२३	७६।३६	२३।३६
अजमेर	२६।२७	७४।४२	३१।१२
अनूपगढ़	२९। ७	७३। ६	३७।३६
अमेट	२५।२०	७३।५९	३४। ४
अलवर	२७।३४	७६।३८	२३।२८
अलीगढ़	२५।५८	७६। ७	२५।३०
आबू	२४।४०	७२।४५	[illegible] ०
आबू रोड	२४।२९	७२।४७	३८।५२
आमेर	२६।५९	७५।५२	२६।३२
आसपुर	२३।५८	७४। ३	३३।४८
आहोर	२५।२३	७२।५२	३८।३२
इन्द्रगढ	२५।४४	७६।१२	२५।१२
उतारनी	२६। ६	७१।५८	४२। ८
उदयपुर	२४।३५	७३।४१	३५।१६
एकलिंगजी	२४।४३	७३।४६	३४।५६

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टॅण्डर्ड अन्तर (ऋण)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.
ओरिनपुरा	२५। ९	७३। ६	३७।३६
ओसिया	२६।४३	७२।५५	३८।२०
करौली	२६।३०	७७। १	२१।५६
काकरोली	२५। ४	७३।५४	३४।२४
कामन	२७।३९	७७।१६	२०।५६
किशनगढ़	२६।३४	७४।५२	३०।३२
कुशालगढ़	२३।१०	७४।२७	३२।१२
कुचामन	२७। ९	७४।५२	३०।३२
कूगी	२६।४२	७०।४०	४७।२०
ककूणी	२५।५६	७५।१०	२९।२०
कोटरा	२४।२२	७३।१०	३७।२०
कोटा	२५।१०	७५।५२	२६।३२
कोलायत	२७।५०	७२।५७	३८।१२
खण्डेला	२७।३६	७५।३२	२७।५२
खुईआला	२७। ६	७०।२५	४८।२०

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टॅण्डर्ड अन्तर (ऋण)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.
खेडब्रह्मा	२४। ५	७३। ३	३७।४८
खेरवाड़ा	२४। ०	७३।३५	३५।४०
गंगानगर	२९।४९	७३।५०	३४।४०
गंगापुर (भीलवाड़ा)	२५।१३	७४।१६	३२।५६
गंगापुर (टोंक)	२६।२९	७६।४६	२२।५६
गिराब	२६। २	७०।३५	४७।४०
गागरिया	२५।५४	७०।४२	४७।१२
गूढ़ा	२५।१२	७१।४८	४२।४८
घोटारू	२७।१८	७०। ४	४९।४४
चात्सू	२६।३९	७५।५९	२६। ४
चारनवाला	२७।५३	७२।१०	४१।२०
चित्तौड़गढ़	२४।५४	७४।४०	३१।२०
चिरावा	२८।१५	७५।३८	२७।२८
चीलो	२७।२२	७३।३०	३६। ०
चूरू	२८।१९	७५। १	२९।५६

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टॅण्डर्ड अन्तर (ऋण)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.
चोमू	२७। ८	७५।४७	२६।५२
छबरा	२४।४०	७६।५०	२२।४०
छोटी सादड़ी	२४।२४	७४।४२	३१।१२
जयपुर	२६।५५	७५।५२	२६।३२
जसरासर	२७।४५	७३।५०	३४।४०
जसवन्तपुरा	२४।४८	७२।३०	०। ०
जहाजपुर	२५।३८	७५।१२	२९।१२
जाएल	२७।१५	७४।१२	३३।१२
जालोर	२५।२२	७२।३८	३९।२८
जैसलमेर	२६।५५	७०।५४	४६।२४
जोधपुर	२६।१८	७३। ४	[illegible]
जोधासर	२८। ७	७३।५०	३४।४०
झालरापाटन	२४।३३	७६।१०	२५।२०
झालावाड़	२४।३६	७६। ९	२५।२४
झुंझुनु	२८। ६	७५।२५	२८।२०

राजस्थान के नगरों के अक्षांश आदि

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण) मि. स.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण) मि. स.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण) मि. स.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण) मि. स.
टाडगढ़	२५।४२	७४। ०	३४। ०	पिपलादा	२३।३५	७४।५०	३०।४०	भीम	२५।३६	७४। ६	३३।३६	शाहपुरा (जयपुर)	२७।२३	७५।५८	२६। ८
टोडाराय सिंह	२६। ०	७५।२६	२८। ४	पिरावा	२४।१३	७६। ३	२५।४८	भीलवाड़ा	२५।२१	७४।४०	३१।२०	शाहपुरा (भीलवाड़ा)	२५।४०	७४।५०	३०।४०
टोंक	२६।११	७५।५०	२६।४०	पिलानी	२८।२३	७५।३५	२७।४०	मकराना	२७। ३	७४।४३	३१। ८	शेओ	२६।११	७१।१५	४५। ०
डीग	२७।२८	७७।२०	२०।४०	पीपाड़ रोड	२६।२७	७३।२७	३६।१२	मण्डलगढ़	२५।१२	७५। ६	२९।३६	शेरगढ़ (जोधपुर)	२६।२५	७२।२१	४०।३६
डीडवाना	२७।२४	७४।३४	३१।४४	पुनासर	२७। २	७३। २	३७।५२	महलां	२६।५०	७५।३०	२८। ०	शेरगढ़ (झालावाड़)	२४।४०	७६।३२	२३।५२
डूंगरपुर	२३।५०	७३।४३	३५। ८	पुष्कर	२६।३०	७४।३३	३१।४८	महाजन	२८।४८	७३।५६	३४।१६	श्री गंगानगर	२९।५६	७३।५०	३४।४०
डेगाना	२६।५०	७४।१८	३२।४८	पूगल	२८।३१	७२।४७	३८।५२	मांगरोल	२५।२०	७६।३०	२४। ०	श्री डूंगरगढ़	२८। ६	७४। १	३३।५६
तिजारा	२७।५५	७६।५०	२२।४०	प्रसाद	२४।११	७३।४२	३५।१२	मारवाड़-जंक्शन	२५।४३	७३।४५	३५। ०	श्री माधोपुर	२७।२५	७५।३२	२७।५२
थाना कस्बा	२५।१३	७७।२०	२०।४०	फतेहपुर	२८। ०	७५। ०	३०। ०	मालपुरा	२६।१८	७५।२५	२८।२०	श्री मोहनगढ़	२७।१७	७१।१२	४५।१२
थाना गाजी	२७।२५	७६।१६	२४।४४	फलौदी	२७। ६	७२।२२	४०।३२	मावली	२४।४७	७३।५८	३४। ८	सम	२६।५०	७०।३१	४७।५६
दान्ता	२४।१२	७२।४७	३८।५२	फुलेरा	२६।५२	७५।१६	२८।५६	मेड़ता	२६।३९	७४। ६	३३।३६	समदड़ी	२५।४६	७२।३५	३९।४०
देओग	२६।३०	७०।४८	४७।१२	बड़ी सादड़ी	२४।२५	७४।२८	३२। ८	मेड़ता रोड	२६।४३	७३।५५	३४।२०	सरदार शहर	२८।२७	७४।३०	३२। ०
देचू	२६।४७	७२।२०	४०।४०	पोकरन	२६।५५	७१।५५	४२।२०	मियासजर	२६।१८	७०।५८	४६। ८	सरवाड़	२६। २	७४।५५	३०।२०
देवलिया	२४। ३	७४।४३	३१। ८	बनस्थली	२६।२३	७५।५०	२६।४०	मुकन्दवाड़ा	२४।४९	७५।५६	२६।१६	[illegible]	२६।२२	७३।३७	३५।३२
देवली	२५।४६	७५।२५	२८।२०	बयाना	२६।५४	७७।१७	२०।५२	मुनाबाओ	२५।४५	७०।१५	४९। ०	सवाई माधोपुर	२५।५८	७६।२५	२४।२०
देवीकोट	२६।४२	७१।१२	४५।१२	बान्दनवाड़ा	२६। ६	७४।४२	३१।१२	मोदरां	२४।२५	७२।२५	४०।२०	सहाड़ा	२५।१५	७४।१६	३२।५६
देशनोक	२७।४८	७३।२१	३६।३६	बस्सी	२७। ६	७६।३२	२३।५२	मोहनगढ़	२७।१७	७१।१८	४४।४८	सागवाड़ा	२३।४२	७४। १	३३।५६
देसुरी	२५।२०	७३।३७	३५।३२	बान्दीकुई	२७। ३	७६।३४	२३।४४	रतनगढ़	२८। ५	७४।३९	३१।२४	सांगानेर	२६।४९	७५।४९	२६।४४
धौलपुर	२६।४२	७७।५३	१८।२८	बाड़मेर	२५।४५	७१।२५	४४।२०	राजगढ़	२८।३९	७५।२९	२८। ४	सांगोद	२४।५५	७६।२१	२४।३६
नरैना	२६।५०	७४।११	३३।१६	बाड़ी	२६।३९	७७।३६	१९।३६	रानीवाड़ा	२४।४५	७२।१३	४१। ८	सांचोर	२४।४०	७१।५०	४२।४०
नवलगढ़	२७।५१	७५।१८	२८।४८	बाप	२७।२२	७२।२२	४०।३२	रामगढ़ (जयपुर)	२७।१५	७५।१०	२९।२०	साम्भर	२६।५४	७५।१०	२९।२०
नसीराबाद	२६।१८	७४।४६	३१।५६	बारन	२५। ६	७६।३०	२४। ०	रामगढ़ (जैसलमेर)	२७।२२	७०।३०	४८। ०	सादुलपुर	२८।३८	७५।२४	२८।२४
नागौर	२७।११	७३।४४	३५। ४	बांसवाड़ा	२३।३०	७४।२४	३२।२४	रामदेवरा	२७। ०	७१।५२	४२।३२	सिन्दरी	२५।३३	७१।५५	४२।२०
नावना	२७।२६	७१।४५	४३। ०	बाली	२५।५०	७४। ५	३३।४०	रायसिंह नगर	२९।३२	७३।२७	३६।१२	सिरमुटरा	२६।३१	७७।२२	२०।३२
नाथद्वारा	२४।५६	७३।५०	३४।४०	बालोतरा	२५।४६	७२।१४	४१। ४	रिखभदेव	२४। ४	७३।४०	३५।२०	सिरोही	२४।५३	७२।५४	३८।२४
निम्बहेड़ा	२४।३७	७४।४५	३१। ०	बिरसलपुर	२८।१०	७२।१५	४१। ०	रींगस	२७।२१	७५।३४	२७।४४	सिवाना	२५।३६	७२।२७	४०।१२
नीम का थाना	२७।४४	७५।४८	२६।४८	बिलाड़ा	२६।१०	७३।४२	३५।१२	रूप नगर	२६।४८	७४।५४	३०।२४	सूरतगढ़	२९।१९	७३।५७	३४।१२
नोखा	२७।३५	७३।२९	३६। ४	बीकानेर	२८। १	७३।२०	३६।४०	रेनी	२८।४१	७५। ५	२९।४०	सीकर	२७।३६	७५। ६	२९।३६
नैनवा	२५।४५	७५।५७	२६।१२	बून्दी	२५।२७	७५।४०	२७।२०	लक्ष्मणगढ़	२७।४५	७५। ४	२९।४४	सुजानगढ़	२७।४२	७४।३०	३२। ०
नोहर	२९।११	७४।४६	३०।५६	ब्यावर	२६। ६	७४।२०	३२।४०	लाठी	२७। ३	७१।३०	४४। ०	सोजत	२५।५६	७३।४२	३५।१२
पचपदरा	२५।५५	७२।२१	४०।३६	भरतपुर	२७।१५	७७।३०	२०। ०	लाडनूं	२७।३६	७४।२३	३२।२८	हनुमानगढ़	२९।३५	७४।२१	३२।३६
प्रतापगढ़	२४। २	७४।४७	३०।५२	भवानी	२५।४३	७२।५२	३८।३२	लालसोट	२६।३४	७६।२३	२४।२८	हिन्डौन	२६।४३	७७। १	२१।५६
पर्बतसर	२६।५२	७४।४७	३०।५२	भंवरगढ़	२५। ६	७६।५०	२३।४०	लूनी	२६। ०	७२।५२	३८।३२				
पल्लू	२८।५६	७४।१३	३३। ८	भादरा	२९।१५	७५।२०	२८।४०	लोहारिया	२३।४८	७४।१५	३३। ०				
पाली	२५।४६	७३।२०	३६।४०	भीनमाल	२५। ०	७२।१९	४०।४४	लाहगढ़	२७। ८	६९।५७	५०।१२				

—: दुनियाँ के कुछ देशों के स्टैं० टा० का भारतीय स्टैं० टा० से अन्तर :—

देश या प्रदेश के आगे लिखे घं० मि० को उस देश या प्रदेश के स्टैं० टा० में धन (+) ऋण (—) चिह्न के विपरीत घटाने या जोड़ने से उस समय का भा० स्टैं० टा० ज्ञात हो जायेगा।

देश तथा प्रदेश	देश या प्रदेश के स्टैं टा. का भा. स्टैं.टा. से अन्तर (घ. मि.)
अदन	— २।३०
अफगानिस्तान	— १।००
अर्जेण्टाइना	— ८।३०
आस्ट्रेलिया: कैपिटल टैरिटरी, विक्टोरिया, न्यू साऊथ वेल्स, क्वीन्स लैण्ड, तस्मानिया	+ ४।३०
साऊथ आस्ट्रेलिया, नार्दर्न टैरिटरी, ब्रोकन हिल एरिया	+ ४। ०
प. आस्ट्रेलिया	+ २।३०
आस्ट्रिया	— ४।३०
बेलिजियम	— ४।३०
बर्मा	+ १। ०
कनाडा	
न्यू फाउण्ड लैण्ड	— ६। ०*
एटलांटिक टाईम (A.T.)	— ६।३०*
ईस्टर्न टाईम (E.T.)	—१०।३०*
सैन्ट्रल टाईम (C.T.)	—११।३०*
माउण्टेन टाईम (M.T.)	—१२।३०*
पैसिफिक टाईम (P.T.)	—१३।३०*
सिलोन	०। ०
चीन	+ २।३०
कोलम्बिया	—१०।३०
क्यूबा	-- १०।३०*
चैकोस्लावाकिया	— ४।३०
डेन्मार्क	— ४।३०
इजिप्ट (मिस्र)	— ३।३०*
इथोपिया	— २।३०

देश तथा प्रदेश	देश या प्रदेश के स्टैं.टा. का भा. स्टैं.टा. से अन्तर (घं. मि.)
फिन्लैण्ड	— ३।३०
फ्रांस	— ४।३०
जर्मनी	— ४।३०
घाना	— ५।३०
ग्रीस	— ३।३०
हांग कांग	+ २।३०
हंगरी	— ४।३०
इन्डोनेशिया	
सुमात्रा, जावा, बाली, बांगका, बिलीटान	+ १।३०
बोर्नियो, सेलीबिस, टिमोर, फ्लोर्स	+ २।३०
भारु, केई, टनिमबर, मोलुक्कास प० इरियन	+ ३।३०
ईरान (पर्सिया)	— २। ०
इराक	— २।३०
आयरलैंड (उ.)	-- ५।३०*
इजरायल	— ३।३०
इटली, सिसिली	— ४।३०*
जापान	+ ३।३०
जार्डन	— ३।३०
केन्या	— २।३०
कोरिया	+ ३।३०
कुवैत	— २।३०
मलयेशिया गणतन्त्र	
मलाया	+ २। ०
सरवक	+ २।३०
मारिशस	— १।३०

देश तथा प्रदेश	देश या प्रदेश के स्टैं. टा का भा. स्टैं. टा. से अन्तर (घ. मि.)
मैक्सिको	
सैन्ट्रल टाईम (C.T.)	--११।३०
माउण्टेन टाईम (M.T.)	—१२।३०
पेसिफिक टाईम (P.T.)	—१३।३०
नीदर लैण्ड्स (हालैण्ड)	— ४।३०
न्यूजीलैण्ड	+ ६।३०
पाकिस्तान	— ०।३०
बंगला देश	+ ०।३०
फिलिप्पाइन गणतन्त्र	+ २।३०
पोलैण्ड	— ४।३०*
पुर्तगाल	— ४।३०*
राडेशिया, न्यासालैण्ड	— ३।३०
रोमानिया	— ३।३०
सऊदी अरब	
जेद्दा	— २।३०
धहरान, कतर	— १।३०
सिंगापुर	+ २। ०
सोमाली लैण्ड, सोमालिया	— २।३०
साऊथ अफ्रीकन गणतन्त्र	— ३।३०
स्पेन	— ४।३०
सूडान	— ३।३०
स्वीडन	— ४।३०
स्विट्जरलैण्ड	— ४।३०
सीरिया	— ३।३०*
थाईलैण्ड (स्याम)	+ १।३०
टर्की	— ३।३०*
युगाण्डा	— २।३०
इंग्लैण्ड	— ५।३०*
अमेरिका (U.S.A.)	
ईस्टर्न टाईम (E.T.)	—१०।३०*
सैन्ट्रल टाईम (C.T.)	—११।३०*

देश तथा प्रदेश	देश या प्रदेश के स्टैं.टा. का भा. स्टैं.टा. से अन्तर (घ. मि.)
अमेरिका	
माउण्टेन टाईम (M.T.)	—१२.३०*
पेसिफिक टाईम (P.T.)	—१३।३०*
रूस (U.S.S.R.)	
मास्को,	— २।३०
'व्हाईट सी, से कैस्पियन सी' तक	-- १।३०
स्वेर्दलोवस्क, प. कजक	— ०।३०
ओम्स्क, पू. कजक	+ ०।३०
क्रस्नोयास्र्क न्यू साईबेरिया	+ १।३०
इर्कुत्स्क	+ २।३०
याकुत्स्क, चितिन्स्क द. सकलिन	+ ३।३०
खबरोव्स्क, ब्लादिवोस्तक उ. सखलिन	+ ४।३०
मगदन	+ ५।३०
पेत्रोपव्लोव्स्क	+ ६।३०
वियतनाम	
उत्तरी	+ १।३०
दक्षिणी	+ २।३०
वेनेजुएला	— ६।३०
युगोस्लाविया	— ४।३०
नेपाल	०। ०
सिक्किम	०। ०
भूटान	०। ०

* इन स्थलों पर Summer time (ग्रीष्मकालीन समय) प्रचलित है। ग्रीष्मकालीन समय स्टैं. टा. से एक घण्टा आगे रहता है।

जिन देशों में Summer time प्रचलित है वहां गर्मी के दिनों में घड़ियां एक घण्टा आगे कर दी जाती हैं। इसी 'एक घण्टा आगे किये गए' टाईम को Summer time कहा जाता है।

प्राचीन पद्धति द्वारा लग्न एवं दशम का साधन

जन्मपत्री एवं वर्षफल आदि की गणित में शुद्ध लग्न का साधन सबसे अधिक महत्वपूर्ण एवं श्रमसाध्य विषय है। इसके लिए ज्योतिषी को स्थानीय-काल का ज्ञान होना चाहिए, नगरों के अक्षांश-रेखांश की प्रामाणिक सूची भी उसके पास होनी चाहिए किंच भिन्न २ अक्षांशों की लग्न सारणियां उसके पास होना नितान्त आवश्यक है, क्योंकि किसी स्थान पर लग्न स्पष्ट करने के लिए उस स्थान के अक्षांश की लग्न सारणी का ही प्रयोग होता है। आगे १२३ पृष्ठ पर हमने साम्पातिक काल द्वारा लग्न दशम स्पष्ट करने की नवीन विधि दी है। यह विधि अपेक्षाकृत अधिक सूक्ष्म और सुविधाजनक है। इस विधि में अभीष्ट नगर का सूर्योदय, सूर्योदयात् इष्टकाल, दिनमान और इष्ट-कालिक स्पष्ट की जरूरत नहीं होती जब कि प्राचीन विधि में इन सबकी जरूरत रहती है। यहां हम लग्न एवं दशम साधन की प्राचीन विधि दे रहे हैं।

लग्न-साधन विधि

जिस नगर में लग्न स्पष्ट करना है, उस नगर में उसदिन का सूक्ष्म सूर्योदय काल ज्ञात कीजिए। सूर्योदय काल से अभीष्ट समय का सूर्योदयात् इष्ट (घ. प.) बना लीजिए और इष्ट कालिक सूर्य स्पष्ट कर लीजिए। इस पञ्चांग में दी गई "अक्षांशादि सारणी" से अपने अभीष्ट नगर का अक्षांश ज्ञात कीजिए। अब इस अक्षांश वाली लग्न सारणी द्वारा इस प्रकार लग्न स्पष्ट कीजिए :—

पीछे २९, ३०, ३१, अक्षांशों की तीन लग्न सारणियां दी गई हैं जो दिल्ली, पंजाब तथा हरियाणा के लगभग सभी नगरों के लिए पर्याप्त हैं। अपने अभीष्ट नगर के अक्षांश वाली लग्न सारणी में इष्ट कालिक स्पष्ट सूर्य की राशि के आगे और अंश के नीचे लिखे घड़ी पलों को लेकर अलग लिख लीजिए। सारणी में इन घड़ी पलों के दाईं ओर अगले अंश के नीचे जो घड़ी पल दिए गए हैं, उनसे इन अलग लिखे गए घड़ी पलों का अन्तर जानिए। अन्तर के इन पलों को सहायक सारणी (जो आगे दी गई है) के बाईं ओर पहिले कालम में देखिए। इसके आगे इस सारणी में जहां स्पष्टसूर्य की कला-विकलाओं के बराबर या लगभग बराबर कला-विकलाएं लिखी हों उनके बिल्कुल ऊपर सारणी की पहली लाईन में जो पल लिखें हों उन्हें लेकर अलग लिखे हुए घड़ी पलों में जोड़ दीजिए और उसमें इष्टकाल के घड़ीपल भी जो दीजिए। इसे हम "अभीष्ट घड़ी पल" कहेंगे। "अभीष्ट घड़ी-पल" यदि ६० घड़ी से अधिक हों तो उनमें से ६० घड़ी घटा कर शेष ग्रहण करना चाहिए। "अभीष्ट घड़ी-पलों" के बराबर (बराबर न मिले तो उनसे कुछ कम) घड़ीपल लग्नसारणी में ढूंढिए जिन्हें "सारणीस्थ घड़ी पल" कहा जाएगा। "सारणीस्थ घड़ी पलों" के बाईं ओर लग्न सारणी के पहले कालम में लिखी राशि और सबसे ऊपर लिखे अंशों को अलग लिख लीजिये। 'सारणीस्थ घड़ीपलों' के दाईं ओर सारणी के अगले अंश के नीचे दिए गए घड़ीपलों का "सारणीस्थ घड़ीपलों" से अन्तर कीजिए। इसे "सारणीस्थ अन्तर" कहेंगे। "सारणीस्थ घड़ीपलों" और "अभीष्ट घड़ी पलों" का भी अन्तर कीजिए। अन्तर के ये पल "सहायक सारणी" के बिल्कुल ऊपर वाली लाईन में जहां मिले हैं। उसके नीचे "सारणीस्थ अन्तर" के बराबर पलों के आगे जो कला-विकला मिलें, उन्हें अलग लिखे राशि-अंशों में जोड़ दें। अब इसमें आगे दी गई "अयनांश संस्कार सारणी" से अपने संवत् के आगे दी गई कलाओं को लेकर चिह्न के अनुसार जोड़ने या घटाने पर निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

उदाहरण—मान लीजिए,—वि. सं. २०२९ के वैशाख प्रविष्टे ३ का ५८ घ. ४५प. इष्ट पर शिमला (हि. प्र.) में लग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य ० रा. २ अंश ३७ क. ४७ वि. है। शिमला के अक्षांश ३१ अं. ६क. (उत्तर) है, अतः ३१ अक्षांश वाली लग्न सारणी में स्पष्ट सूर्य की० (मेष) राशि के आगे २ अंश के नीचे २ घ. ५५प. हैं, इन्हें अलग लिखा। सारणी में २ घ. ५५प. के दाईं ओर ३ अंश के नीचे ३ घ. २प. लिखें हैं। इनका २ घ. ५५ प. से अन्तर ७ पल है। "सहायक सारणी" के बाईं ओर पहिले कालम में लिखे हुए ७ पल के आगे वाली पंक्ति में स्पष्टसूर्य की ३७ क. ४७वि. नहीं मिली। अतः सारणी में इनके लगभग बराबर ३४ क. १७ वि. देखें जिनके बिल्कुल ऊपर ४ पल लिखे हैं। इन्हें अलग लिखे २ घ. ५५ प. में जोड़ा और इष्टकाल के घ. प. भी इसमें जोड़े तो ६१ घ. ४४प. (६० घड़ी घटाने पर १ घ. ४४ प.) 'अभीष्ट घड़ी पल' हुए। लग्न सारणी में "अभीष्ट घड़ी पल" १ घ. ४४ प. नहीं हैं, अतः इस से कुछ कम १ घ. ४० प. सारणी में देखे जो "सारणीस्थ घड़ी पल" हैं। इनके बाईं ओर सारणी के पहिले कालम में ११ राशि और बिल्कुल ऊपर की लाईन में २१ अंश लिखे हैं। इन ११ रा. २१ अं. को अलग लिखा। लग्न सारणी में "सारणीस्थ घड़ी पलों" (१ घ. ४० प.) के दाईं ओर २२ अंश के नीचे १ घ. ४६ प. का १ घ. ४० प. से अन्तर ६ प. "सारणीस्थ अन्तर" है। "अभीष्ट घड़ीपल" (१ घ. ४४ प.) और "सारणीस्थ घड़ी पल" (१ घ. ४० प.) का अन्तर ४ पल है। "सहायक सारणी" की ऊपर वाली लाईन में लिखे गए ४ पल के नीचे "सारणीस्थ अन्तर" बराबर ६ पल के आगे ४० क. ० वि. लिखा है। इन्हें ११ रा. २१ अं. में जोड़ने पर ११ रा. २१ अं. ४० क. ० वि. हुआ। "अयनांश संस्कार सारणी" में वि. सं. २०२९ के आगे +१ कला लिखा है। इसे चिह्नानुसार ११ रा. २१ अं. ४० क. ० वि. में जोड़ने पर ११ रा. २१ अं. ४१ क. ० वि. निरयण लग्न स्पष्ट हुआ।

दशम लग्न साधन

पीछे साम्पातिक काल द्वारा दशमलग्न साधन की सरल पद्धति दी है, जिससे अभीष्ट स्थल का सूर्योदय, दिनमान तथा तत्कालिक सूर्यस्पष्ट जानने की आवश्यकता नहीं होती है। प्राचीन पद्धति से, जिसका निर्देश यहां किया जा रहा है, इन सबकी आवश्यकता रहती है।

दशम-साधन विधि :—इष्टकाल के घ. प. में से दिनार्ध (अभीष्ट नगर के दिन-मान का आधा) घटाएं। यदि दिनार्ध से इष्ट कम हो तो इष्ट में ६० घड़ी जोड़कर दिनार्ध घटाएं, जो शेष बचे वह 'नतकाल' होगा। नतकाल के घ. प. को इष्ट के घ. प. समझकर तात्कालिक स्पष्टसूर्य द्वारा दशम लग्नसारणी से ठीक उसी तरह दशमलग्न स्पष्ट कीजिए, जैसे कि ऊपर लग्न सारणी से लग्न स्पष्ट किया गया है। **दशम लग्न सारणी सभी नगरों के लिए एक ही होती है।**

लग्न सारणी (अक्षांश २९ उत्तर)

(पलभा ६।३९।६)

अंश—		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष	घ.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
०	प.	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	११	१९	२७	३५	४४	५२	०	८	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	३९	४८
वृष	घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
१	प.	४८	५६	४	१२	२१	२९	३७	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७
मिथुन	घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
२	प.	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१६	२५	३७	४८	०	११
कर्क	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
३	प.	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०
सिंह	घ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	[illegible]	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४	प.	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	३	६	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४
कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५	प.	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१४	२६
तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६	प.	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५१	२	१४
वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
७	प.	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९
धनु	घ.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
८	प.	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
९	प.	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३०	३८	४६	५५	३	११	१९	२८	३९	४४	५२	१	९	१७	२६	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३२
कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
१०	प.	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१४
मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११	प.	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७

दिल्ली, मेरठ, रोहतक, हिसार के, जीन्द, नैनीताल, मुरादाबाद आदि के लिए

लग्न सारणी (अक्षांश ३० उत्तर)

(पलभा ६।५५।४२)

अंश—		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष	घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
०	प.	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४०
वृष	घ.	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१	प.	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
मिथुन	घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
२	प.	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२
कर्क	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३	प.	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४
सिंह	घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४	प.	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३
कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५	प.	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०
तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६	प.	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३६	४७	५९	११	२३	३५	४६	५८	१०	२२
वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६
७	प.	२९	३४	४५	५७	९	२१	३३	४६	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०
धनु	घ.	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८	प.	१९	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०
मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
९	प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	२०	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८
कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१०	प.	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१५
मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११	प.	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	[illegible]	[illegible]

अम्बाला, करनाल, कुरुक्षेत्र, देहरादून, नाभा, पटियाला, भटिण्डा, जैसलमेर, अल्मोड़ा, सहारनपुर और हरिद्वार आदि के लिए।

लग्न सारणी (अक्षांश ३१ उत्तर)

(पलभा ७।१२।३७)

अंश →		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष	घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
०	प.	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३०	३८	४७	५५	३	११	१९	२७	३५
मिथुन	घ. ०	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१	प.	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४१	[illegible]	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१
मिथुन	घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
२	प.	२१	३१	४१	५१	१	१०	२०	३०	४२	५४	५	१७	२८	[illegible]	५१	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६
कर्क	घ.	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३	प.	५३	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१७	२८	४०	५२	४	१६	२८	४०	५२	४	१५	२७	३९	५१	३	१५	२७	३८	५०
सिंह	घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४	प.	५०	२	१४	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२
कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५	प.	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२
तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
६	प.	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५२	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२७	३९	५१	३	१४	२६
वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
७	प.	२६	३८	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	४	१५
धनु	घ.	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८	प.	१५	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
९	प.	२६	३६	४६	५६	६	१५	२५	३५	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५३	१	९	१७	२५	३३	४१
कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१०	प.	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२५	३२	३९	४६	५३	०	७	१४	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	८	१५
मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११	प.	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३४	४१

कपूरथला, चण्डीगढ़, जालन्धर, फरीदकोट, फिरोजपुर, रोपड़, लुधियाना, शिमला आदि के लिए

दशम लग्न सारणी (सर्वत्र उपयोगी)

अंश →		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष	घ.	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८
०	प.	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृष	घ.	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३
१	प.	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
मिथुन	घ.	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९
२	प.	४६	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२
कर्क	घ.	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४
३	प.	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
सिंह	घ.	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२९
४	प.	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३१	४०	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
कन्या	घ.	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३
५	प.	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८
तुला	घ.	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८
६	प.	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृश्चिक	घ.	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३
७	प.	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२४	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
धनु	घ.	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९
८	प.	४६	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२
मकर	घ.	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४
९	प.	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
कुम्भ	घ.	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
१०	प.	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३१	४१	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
मी	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३
११	प.	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८

दशम लग्न साधन का उदाहरणः-वि. सं २०२९ के वैशाख प्रविष्टे ३ को शिमला मे ५८ घ. ४५ प. इष्ट पर दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य ० रा. २ अं. ३७ क. ४७ वि. है। इस दिन शिमला में दिनमान ३१ घ. ५६ प. हैं. अत: दिनार्ध १६ घ. ० प हुआ। इष्ट काल ५८ घ. ४५ प० में मे दिनार्ध घटाने पर ४२ घ.४५ प. नतकाल हुआ. जो दशमसाधन के लिए इष्टकाल है।

दशमलग्न सारिणी में स्पष्ट सूर्य की० राशि के आगे २ अंश के नीचे ३ घ. ५६ प. मिला। इसे पृथक् लिखा। सारिणी में ३ घ. ५६ प. के दाई ओर (३ अं के नीचे) ४ घ. ६ प. लिखा है। ३।५६ और ४।६ का अन्तर १० पल है। सहायक सारिणी मे १० पल के आगे स्पष्ट सूर्य की ३७ क. ४७ वि. के लगभग बराबर -३६ क. ० वि. है। इसके ऊपर सारिणी में ६ पल लिखा है। इन ६ पलो को अलग लिखे ३घ. ५६ प. में जोड़कर इसमें नतकाल जोड़ा तो ४६ घ. ४७ प 'अभीष्ट घड़ी पल'' हुए। ''दशम लग्न सारणी'' में इन ''अभीष्ट घटी पलों'' से कुछ कम घ. प. ४६।४२ 'सारणीस्थ घ. प.'' धनु (८) राशि के आगे १६ अंश के नीचे लिखे है अत: ८ रा. १६ अं. को अलग लिखा। सारणी में ४६।४२ के दाईं ओर (१७ अं. के नीचे) लिखे ४६।५२ का ४६।४२ से अन्तर १० पल "सारणीस्थ अन्तर" हुआ। ''सारणीस्थ घड़ी पल'' ४६।४२ और 'अभीष्ट घड़ी पल'' ४६।४७ का अन्तर ५ पल है। अब 'सहायक सारणी' में १० प. के आगे ५ प. के नीचे ३० क. ० वि. मिली. इन्हे अलग लिखे ८ रा. १६ अं. मे जोड़ने पर ८ रा. १६ अं. ३० क. ० वि. हुई। इसमें ''अयनांश संस्कार सारणी'' में वि. सं. २०२९ के आगे दिया गया. अयनांश संस्कार + १ क. चिह्नानुसार जोड़ने पर ८ रा. १६ अ. ३१ क. ० वि. निरयण दशम लग्न स्पष्ट हुआ।

सहायक सारणी

पल →	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.
६	१०।०	२०।०	३०।०	४०।०	५०।०	६०।०							
७	८।३४	१७।९	२५।४३	३४।१७	४७।५१	५१।२६	६०।०						
८	७।३०	१५।०	२२।३०	३०।०	३७।३०	४५।०	५२।३०	६०।०					
९	६।४०	१३।२०	२०।०	२६।४०	३३।२०	४०।०	४६।४०	५३।२०	६०।०				
१०	६।०	१२।०	१८।०	२४।०	३०।०	३६।०	४२।०	४८।०	५४।०	६०।०			
११	५।२७	१०।५५	१६।२२	२१।४९	२७।१६	३२।४४	३८।११	४३।३८	४९।५	५४।३२	६०।०		
१२	५।०	१०।०	१५।०	२०।०	२५।०	३०।०	३५।०	४०।०	४५।०	५०।०	५५।०	६०।०	
१३	४।३७	९।१४	१३।५१	१८।२८	२३।५	२७।४२	३२।१९	३६।५६	४१।३३	४६।१०	५०।४७	५५।२३	६०।०

अयनांश संस्कार सारणी

विक्रम संवत	संस्कार कला	वि. संवत्	संस्कार कला	वि. संवत्	संस्कार कला	वि. संवत	संस्कार कला	वि. संवत्	संस्कार कला	वि. संवत्	संस्कार कला
२०१६	+१३	२०२२	+७	२०२८	+२	२०३४	—३	२०४०	—८	२०४६	–१३
२०१७	+१२	२०२३	+७	२०२९	+१	२०३५	—४	२०४१	—९	२०४७	–१४
२०१८	+११	२०२४	+६	२०३०	+१	२०३६	—४	२०४२	—९	२०४८	–१४
२०१९	+१०	२०२५	+५	२०३१	०	२०३७	—५	२०४३	—१०	२०४९	–१५
२०२०	+९	२०२६	+४	२०३२	—१	२०३८	—६	२०४४	—११	२०५०	–१६
२०२१	+८	२०२७	+३	२०३३	—२	२०३९	—७	२०४५	—१२	२०५१	–१७

दुनिया के किसी भी नगर में सूक्ष्म लग्न-दशम जानने के लिए हमारी 'गणक मार्त्तण्ड' पुस्तक की प्रतीक्षा करें. जो शीघ्र ही प्रकाशित होने वाली है। इस पुस्तक में दुनिया के सभी प्रसिद्ध नगरों (लगभग १७ हजार नगरों) के अक्षांश रेखांश तथा अन्य अनेक लग्नोपयोगी सारणियों के साथ सभी अक्षांशों की सूक्ष्मतम शुद्ध लग्न सारणियां दी गई है, जिनकी मदद से लग्न आदि सभी भाव बिना गुणा भाग के जुबानी ही तुरन्त जाने जा सकते हैं।

सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की नवीन सरल विधि

यहां हम सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की नवीन सरल विधि दे रहे हैं। स्पष्ट सूर्य द्वारा लग्न स्पष्ट करने में अधिक परिश्रम होता है, इसलिए इस विषय में पाश्चात्य ज्योतिषियों ने 'साम्पातिककाल' (*Sidereal Time*) की पद्धति को अपनाया है। यहां हम "साम्पातिककाल क्या है"—इस विषय का कुछ सैद्धान्तिक-विवेचन न करते हुए, इससे लग्न स्पष्ट करने की सर्व-साधारणोपयोगी विधि प्रस्तुत कर रहे हैं।

विधि :-- सां.का. (साम्पातिककाल) से लग्न स्पष्ट करने के लिए सर्वप्रथम नीचे लिखे उपकरण (चीज़ें), जो इस पंचांग में दिए गए कोष्ठकों (सारणियों) से बिना किसी परिश्रम के तैयार किए जा सकते हैं, तैयार करें—

(१) अभीष्ट नगर के अक्षांश (उत्तर या दक्षिण)
(२) अभीष्ट नगर के रेखांश (पूर्व या पश्चिम)
(३) अभीष्ट नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर (+ या—)
} ये तीनों उपकरण 'अक्षांशादि सारणी' से उठाइये।

विशेष---यदि "अक्षांशादि सारणी" में अभीष्ट नगर न मिलें तो उसके निकटतम किसी अन्य नगर के अक्षांशादि प्रयोग में लाए जा सकते हैं।

ध्यान रहे— भारत के सभी नगरों के अक्षांश उत्तर और रेखांश पूर्व ही हैं।

(४) अभीष्ट नगर का स्थानीय मध्यमकाल—जिस समय लग्नस्पष्ट करना हो उस समय के स्वदेशीय स्टैण्डर्ड-टाईम में अभीष्ट नगर (जहां का लग्न स्पष्ट करना हो वहां) के स्टैण्डर्ड-अन्तर के मिनटादि (या घण्टादि) को चिन्हानुसार जोड़ने या घटाने से अभीष्ट नगर का "स्थानीयमध्यमकाल" बन जाता है। '+' यह चिन्ह जोड़ने की एवं '—' यह चिन्ह घटाने की प्रक्रिया को बतलाता है।

जैसे - चण्डीगढ़ में दोपहर के १२ घं. ५७ मि. (भा. स्टै. टा.) पर स्थानीयमध्यमकाल जानने के लिए हम (भा. स्टै. टा.) में से चण्डीगढ़ का स्टैण्डर्ड अन्तर—२२ मिनट ३२ सैकण्ड चिन्हानुसार घटाया, तो १२ घं. ३४ मि. २८ सै. स्थानीयमध्यमकाल बना।

१ सितं. १९४२ ई. से १५ अक्तू. १९४५ ई. तक भारत में युद्ध के कारण घड़ियां एक घण्टा आगे की गई थीं। अतः इन दिनों में घड़ियों द्वारा जाने गए टाईम में से १ घण्टा घटा कर उसे भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम समझना चाहिए।

जैसे—सन् १९४४ को २० अग. को कोई बच्चा भारत में युद्ध के समयानुसार दिन के १२ बजकर ४५ मि. पर पैदा हुआ। इसका जन्मपत्र बनाने के लिए हमें इस बच्चे का जन्मकाल भा.स्टै.टा. के अनुसार ११ घं. ४५ मि. मानना होगा।

(५) अभीष्ट तारीख का अयनांश--आगे दो [नं. (१) और नं. (२)] अयनांश-सारणियां दी गई हैं। अयनांशसारणी नं. (१) में से अभीष्ट सन् के आगे लिखे अंशादि अयनांश लें और 'अयनांशसारणी' सारणी नं. (२) में से अभीष्ट मास की अभीष्ट तारीख का विकलादि फल लेकर उसमें जोड़ दें;—यह अयनांश होगा।

जैसे—१५ जुलाई १९६६ ई. को अयनांश जानने के लिए **"अयनांशसारणी" नं. (१)** में से सन् १९६६ ई. के आगे लिखा अयनांश २३ अं. २५ क. २६ वि. प्राप्त किया। इसमें "**अयनांशसारणी**" नं. (२) से प्राप्त की गई १५ जुलाई की २७ वि. जोड़ने पर २३ अं. २५ क. ५३ वि. हमारा अभीष्ट अयनांश हुआ।

(६) इष्टकालिक साम्पातिककाल—आगे साम्पातिककाल के चार कोष्ठक दिए गए हैं। इनके आधार पर 'इष्टकालिक साम्पातिककाल' इस प्रकार सरलता से बनाया जा सकता है—

सा. का. कोष्टक नं. (१) में से अभीष्ट सन का सां. का. उठाएं। उसमें साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२) से अभीष्टमास की अभीष्ट तारीख का (लीपईयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख की जगह उससे एक आगे की तारीख का) सां. का. लेकर जोड़ें। इसमें सां. का. कोष्ठक नं. (३) से अभीष्ट नगर के रेखांशों द्वारा सैकण्डात्मक संस्कार उठाकर चिन्हानुसार जोड़ें या घटाएं। इस प्रकार मिले सां. का. के घं. मि. में अभीष्ट स्थानीयमध्यमकाल (जिसका साधन पहले बताया जा चुका है) के घण्टा-मिनटादि जोड़ें और फिर इस योगफल में स्थानीयमध्यमकाल के घण्टा-मिनटों द्वारा सां. का. कोष्ठक नं. (४) से प्राप्त किए गए मिनटादि जोड़ देने से इष्टसमय का घण्टादि सां. का. बन जाएगा। इस प्रकार बना सां. का. यदि २४ घं से अधिक हो तो उसमें से २४ घटा कर शेष ही ग्रहण करना चाहिए।

साम्पातिककाल साधन का उदाहरण—यहां हम १५ जुलाई १९६६ को भा.स्टैं.टा. के अनुसार प्रातः १० घं. ४५ मि. पर चम्बा (हि.प्र.) में सां.का. स्पष्ट करेंगे। अक्षांशादि सारणी में चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २६ क. (उत्तर), रेखांश ७६ अं. १० क. (पूर्व) एवं स्टैं. अन्तर—२५ मि. २० सै. है। स्टैण्डर्डअन्तर ऋण चिह्न वाला है, अतः इसे १० घण्टे ४५ मि. में से घटाने पर १० घं. १९ मि. ४० सै. चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल हुआ। सां.का. कोष्ठक नं. (१) से सन् १९६६ ई. का सां.का. (६ घं. ४१ मि. २ सै.) लिया। इसमें कोष्ठक नं. (२) से लिया गया १५ जुला. का सां.का. (१२ घं. ४८ मि. ४९ सै.) जोड़ा तो १९ घं. २९ मि. ५१ सै. हुआ। चम्बा के रेखांश ७६ अं. १० क. के लिए कोष्ठक नं. (३) वाला संस्कार तो ० है। अब १९ घं. २९ मि. ५१ सै. में चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल १० घं. १९ मि. ४० सै. जोड़ा तो २९ घं. ४९ मि. ३१ सै. हुए। इसमें कोष्ठक नं. (४) से स्थानीयमध्यमकाल के १० घं. २० मि. से उठाए गए १ मि. ४२ सै. जोड़ने पर २९ घं. ५१ मि. १३ सै. हुए। यहां घण्टे २४ से अधिक हैं अतः २४ घं. घटाएं तो ५ घं ५१ मि. १३ सै. अभीष्ट साम्पातिककाल हुआ।

साम्पातिककाल बनाते समय नीचे लिखी इन तीन बातों को भी ध्यान में रखें :—

[१] यदि धन (+) चिह्न वाले स्टैण्डर्डअन्तर (स्टैं. अं.) के मिनटों को स्टैण्डर्ड टाईम में जोड़ने पर स्थानीयमध्यमकाल २४ घं. या इससे ज्यादा हो जाए तब उसमें २४ घण्टा घटा दें और ऊपर बतलाई विधि से प्राप्त साम्पातिककाल में २४ मि. जोड़ कर उसे शुद्ध साम्पातिककाल समझें। जैसे—कलकत्ता में २ जन. १९७४ ई. को २३ घंटा ५५ मि. (रात के ११ बजकर ५५ मि.) भा.स्टैं.टा. पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है। कलकत्ता का रेखांश

८८ अं. २४ क, (पूर्व) और स्टैं अन्तर+२३ मि. ३६ सै. है। स्थानीयमध्यमकाल बनाने के लिए २३ घं. ५५ मि. में २३ मि. ३६ सै. जोड़े तो २४ घं. १८ मि, ३६ सै. हुए। यह २४ घं. से ज्यादा हो गया है, अत: इसमें से २४ घं. घटाने पर ० घं. १८ मि. ३६ सै. स्थानीय-मध्यमकाल हुआ। अब सां.का. बनाने के लिए कोष्ठक नं. (१) से १९७४ के आगे लिखे ६ घं. ४० मि. १२ सै. में कोष्ठक नं. (२) से लिए गए २ जन के ० घं. ३ मि. ५७ सै. जोड़ने पर ६ घं. ४४ मि. ९ सै. हुए। इसमें कोष्ठक नं० (३) से कलकत्ता के रेखांश ८८ से प्राप्त—८ सै. चिह्न के अनुसार घटाए, तो ६ घं. ४४ मि. १ सै. हुए। इसमें स्थानीयमध्यमकाल जोड़ने पर ७ घं, २ मि. ३७ सै. हुए। इसमें कोष्ठक नं. (४) से स्थानीयमध्यमकाल के ० घं. १९ मि. द्वारा प्राप्त ३ सै. जोड़ने पर ७ घं. २ मि. ४० सै. हुए। क्योंकि स्टैं. टा. में स्टैं. अन्तर के मिनट जोड़ने पर स्थानीयमध्यमकाल २४ घं. से ज्यादा हो गया था। अत: उपरोक्त नियमानुसार इसमें ४ मि. और जोड़ने पर ७ घं. ६ मि. ४० सै. हमारा अभीष्ट साम्पातिककाल बना। लग्न और दशम को स्पष्ट करने के लिए इसी सां. का. का प्रयोग में लाइए।

[२] सां. का. बनाते समय दूसरी बात यह भी ध्यान में रखें, कि यदि स्टैं. टा. से (—) ऋण चिह्न वाले स्टैं. अन्तर के मिनटादि अधिक हों तो स्थानीयमध्यमकाल बनाने के लिए स्टैं. टा. में २४ घंटे जोड़ कर स्टैं. अन्तर घटाना चाहिए और ऐसी स्थिति में सां. का. कोष्ठक नं. (४) का प्रयोग नहीं करना चाहिए। जैसे—जयपुर में १५ मार्च १९७० को ० घं. १५ मि. (भा.स्टैं.टा.) पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है। जयपुर के रेखांश ७५ अं. ५२ क. (पूर्व) और स्टैं. अं.—२६ मि. ३२ सै. है। यहां स्टैं. टा. के घं मि. से स्टैं. अं. ज्यादा है, अत: स्टैं.टा. में २४ घं जोड़ कर स्टै. अं. घटाने पर २३ घं. ४८ मि. २८ सै. स्थानीयमध्यमकाल बना। सां. का. के कोष्ठक नं. (१) से प्राप्त १९७० ई. के ६ घं. ४० मि. ५ सै. में कोष्ठक नं. (२) से प्राप्त १५ मार्च के ४ घं. ४७ मि. ४९ सै. जोड़ने पर ११ घं. २७ मि. ५४ सै. हुए। जयपुर के रेखांश ७६ (पूर्व) का कोष्ठक नं. (३) वाला संस्कार लगभग ० है। अब ११ घं. २७ मि. ५४ सै. में स्थानीयमध्यमकाल जोड़ा तो ३५ घं. १६ मि. २२ सै. हुए। क्योंकि हमारा स्टैं. टा. हमारे नगर के ऋण स्टैं. अं. से कम था, अत: यहाँ साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (४) का प्रयोग हम नहीं करेंगे। इसलिए हमारा अभीष्ट साम्पातिककाल ११ घं. १६ मि. २२ सै. ही हुआ। यहां घंटे २४ से अधिक होने से उसमें से २४ घंटे घटा दिए गए।

[३] जैसाकि हम पहिले भी लिख चुके हैं—लीपइयर (२९ फरवरी वाले साल) में फ़रवरी के बाद के महीनों की किसी तारीख का सां. का. बनाना हो तो उस तारीख में एक जोड़ कर "साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२)" को प्रयोग में लाना चाहिए। जैसे—मान लीजिए, १५ मार्च सन् १९४४ को किसी नगर में सां. का. स्पष्ट करना है। "साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (१)" में सन् १९४४ के आगे लिखे ६ घं. ३७ मि. १७ सै. मिले। क्योंकि हमारा सन् लीपइयर है और हमारी तारीख (१५ मार्च) फरवरी के बाद की भी है, इसलिए "साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२)" में से हम १५ मार्च की जगह १६ मार्च के घं. मि. सै. (४ घं. ५१ मि. ४५ सै.) ही लेंगे और इन्हें ही ६ घं. ३७ मि. १७ सै. में जोड़ेंगे। ध्यान रहे—यदि सन् १९४४ की १० फर. को हमें सां. का. स्पष्ट करना हो तो "साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२)" से १० फर. के घं. मि. सै. ही उठाने होंगे।

साम्पातिककाल से लग्नसाधन की विधि :—

ऊपर दी गई विधि से जाने गए अभीष्ट सां. का. (साम्पातिककाल) के घं. मि. को आगे दी गई लग्नसारणी के बाईं ओर वाले पहिले कालम में देखें। इसके आगे अभीष्ट नगर के अक्षांश के नीचे जो लग्न की अंश-कला लिखी है, उन्हें अलग नोट कर लें। क्योंकि सारणी में सां. का. ३०-३० मिनटों के अन्तर पर और लग्नसारणी ३-३ अंक्षांशों के अन्तर पर ही हुई है। अत: अधिकतर यहां सम्भव है कि आपको लग्नसारणी में अभीष्ट सां. का. के घं. मि. न मिलें, और यह भी अधिकतर सम्भव है कि आपको अभीष्ट अक्षांश वाली लग्नसारणी न मिले। ऐसी स्थिति में सारणी में अभीष्ट सां. का. के समीपतम (अभीष्ट सां. का. से कम) सां. का. के आगे और अपने अभीष्ट अक्षांश के समीपतम (अभीष्ट अक्षांश से कम) अक्षांश वाली लग्नसारणी में लिखी लग्न की अंश-कलाएं नोट करें—यह "स्थूलतम लग्न" है। अब ३० मि. में लग्न की गति सारणी से ही ज्ञात कीजिए, (अर्थात् यह ज्ञात कीजिए कि ३० मि. में लग्न कितना आगे बढ़ता है)। ३० मि. की लग्नगति की कलाओं को सां. का. के शेष मिनटों से गुणा करके ३० से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी। इन्हें "स्थूलतम लग्न" में जोड़ देने से "स्थूललग्न" बन जाएगा। अब सारणी से ही ३ अक्षांशों की लग्न की गति मालूम करें। ३ अक्षांशों में लग्न घटता है तो यह "३ अक्षांशों की लग्नगति" ऋण, अन्यथा धन होगी। अपने अक्षांश की शेष अंश-कलाओं की कलाएं बना कर उन्हें "३ अक्षांशों की लग्नगति" की कलाओं से गुणा करके १८० से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी। इन्हें "३ अक्षांशों की लग्नगति" के धन-ऋण चिह्न के अनुसार स्थूललग्न में जोड़ने या घटाने से सायनलग्न स्पष्ट होगा। इसमें से उस दिन के अयनांश घटा देने पर फलितोपयोगी निरयण लग्न स्पष्ठ हो जाएगा।

दशमलग्न स्पष्ट करने की विधि :—लग्नसारणी के दूसरे कालम में दशम (दशमलग्न) दिया गया है। इससे सभी नगरों में दशमलग्न स्पष्ट किया जा सकता है (अर्थात्—दशम स्पष्ट करने के लिए अक्षांशों की जरूरत नहीं होती।) अभीष्ट सां. का. के घं.मि. के आगे सारणी में दशम (दशमलग्न) की अंश-कलाएं उठा लें। यह "स्थूलदशमलग्न" है। सां. का. के शेष मिनटों से दशमलग्न की ३० मि. की गति की कलाओं को गुणा करके ३० से भाग देने पर कलाएँ मिलेंगी। इन्हें 'स्थूलदशमलग्न" में जोड़ने पर इष्टकालिक सायनदशम होगा। इसमें से उसदिन का अयनांश घटा देने पर निरयण दशमलग्न स्पष्ट हो जाएगा।

लग्नसाधन का उदाहरण :—चम्बा (हि. प्र.) में १५ जुलाई सन् १९६९ को प्रात: १० घं. ४५ मि. (भा. स्टै. टा.) पर लग्न स्पष्ट करना है।

ऊपर हमने चम्बा में १५ जुलाई १९६९ को प्रात: १० घंटे ४५ मि. (भा. स्टैं. टा.) पर सां. का. ५ घं. ५१ मि. १३ सै. स्पष्ट किया है। चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. हैं। लग्नसारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां. का. ५ घं. ३० मि.के आगे लग्न १७३ अं. ३४ क. लिखा है। यह "स्थूलतम लग्न" है। लग्नसारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां. का. ५ घं. ३० मि.के आगे १७३ अं. ३४ क. और सां. का. ६ घं ० मि. के आगे १८० अं. ० क. लिखा है। इन दोनों का अन्तर ६ अं. २६.क. (=३८६ क.) लग्न की ३० मि. की गति है। हमारे अभीष्ट सां. का. ५ घं. ५१ मि. और ५ घं. ३० मि. का अन्तर २१ मि. है। इन २१ मि. (सां. का. के शेष मिनटों) से लग्न की ३० मि० की गति कलाओं (३८६) को गुणा करके ३० का भाग देने पर [illegible] क. (=[illegible] अं. ३० क.) मिलीं। इन्हें "स्थूलतमलग्न" में जोड़ने पर १७८

लग्नसारणी (पूरे भारत के लिए) भाग १-अ)

साम्पातिक काल	सभी स्थानों के लिए दशम	अक्षांश ८° (उ.)	अक्षांश ११° (उ.)	अक्षांश १४° (उ.)	अक्षांश १७° (उ.)	अक्षांश २०° (उ.)	साम्पातिक काल	सभी स्थानों के लिए दशम	अक्षांश ८° (उ.)	अक्षांश ११° (उ.)	अक्षांश १४° (उ.)	अक्षांश १७° (उ.)	अक्षांश २०° (उ.)
घं मि	अं क	लग्न अं क	लग्न अं क	लग्न अं क	लग्न अं क	लग्न अं क	घं मि	अं क	लग्न अं क	लग्न अं क	लग्न अं क	लग्न अं क	लग्न अं क
०।०	०।०	९३।१२	९४।२५	९५।४०	९६।५६	९८।१४	१२।०	१८०।०	२६६।४८	२६५।३५	२६४।२०	२६३।४	२६१।४६
०।३०	८।१०	१००।३	१०१।१५	१०२।२७	१०३।४१	१०४।५७	१२।३०	१८८।१०	२७३।४१	२७२।२७	२७१।११	२६९।५३	२६८।३३
१।०	१६।१७	१०६।५४	१०८।३	१०९।१३	११०।२४	१११।३६	१३।०	१९६।१७	२८०।३९	२७९।२५	२७८।९	२७६।५०	२७५।२९
१।३०	२४।१८	११३।४७	११४।५३	११५।५९	११७।६	११८।१४	१३।३०	२०४।१८	२८७।४३	२८६।३०	२८५।१५	२८३।५७	२८२।३५
२।०	३२।११	१२०।४३	१२१।४५	१२२।४७	१२३।५०	१२४।५२	१४।०	२१२।११	२९४।५७	२९३।४६	२९२।३३	२९१।१६	२८९।५५
२।३०	३९।५५	१२७।४५	१२८।४३	१२९।४०	१३०।३६	१३१।३३	१४।३०	२१९।५५	३०२।२१	३०१।१४	३००।४	२९८।५०	२९७।३२
३।०	४७।२८	१३४।५४	१३५।४५	१३६।३६	१३७।२७	१३८।१८	१५।०	२२७।२८	३०९।५८	३०८।५६	३०७।५१	३०६।४२	३०५।२८
३।३०	५४।५१	१४२।१०	१४२।५५	१४३।३९	१४४।२२	१४५।९	१५।३०	२३४।५१	३१७।४९	३१६।५४	३१५।५५	३१४।५३	३१३।४५
४।०	६२।१५	१४९।३३	१५०।१०	१५०।४९	१५१।२३	१५२।५८	१६।०	२४२।१५	३२५।५४	३२५।७	३२४।१७	३२३।२३	३२२।२५
४।३०	६९।१२	१५७।३	१५७।३१	१५८।०	१५८।२७	१५८।५५	१६।३०	२४९।१२	३३४।१२	३३३।३५	३३२।५५	३३२।१२	३३१।२६
५।०	७६।११	१६४।३८	१६४।५८	१६५।१७	१६५।३६	१६५।५४	१७।०	२५६।११	३४२।४१	३४२।१५	३४१।४८	३४१।१८	३४०।४५
५।३०	८३।७	१७२।१८	१७२।२८	१७२।३८	१७२।४७	१७२।५७	१७।३०	२६३।७	३५१।१८	३५१।५	३५०।५१	३५०।३६	३५०।१९
६।०	९०।०	१८०।०	१८०।०	१८०।०	१८०।०	१८०।०	१८।०	२७०।०	०।०	०।०	०।०	०।०	०।०
६।३०	९६।५३	१८७।४२	१८७।३२	१८७।२२	१८७।१३	१८७।३	१८।३०	२७६।५३	८।४१	८।५५	९।९	९।२४	९।४१
७।०	१०३।४९	१९५।२२	१९५।२	१९४।४३	१९४।२४	१९४।६	१९।०	२८३।४९	१७।१९	१७।४५	१८।१२	१८।४२	१९।१५
७।३०	११०।४८	२०२।५७	२०२।२९	२०२।०	२०१।३३	२०१।५	१९।३०	२९०।४८	२५।४८	२६।२५	२७।५	२७।४८	२८।३४
८।०	११७।५५	२१०।२७	२०९।५०	२०९।१४	२०८।३७	२०८।२	२०।०	२९७।५५	३४।६	३४।५३	३५।४३	३६।३७	३७।३५
८।३०	१२५।९	२१७।५०	२१७।५	२१६।२१	२१५।३८	२१४।५४	२०।३०	३०५।९	४२।११	४३।६	४४।५	४५।७	४६।१४
९।०	१३२।३२	२२५।६	२२४।१५	२२३।२४	२२२।३३	२२१।४२	२१।०	३१२।३२	५०।२	५१।१४	५२।९	[illegible]	५४।३२
९।३०	१४०।५	२३२।१५	२३१।१७	२३०।२०	२२९।२४	२२८।२७	२१।३०	३२०।५	५७।३९	५८।४६	५९।५६	६१।१०	६२।२८
१०।०	१४७।४९	२३९।१७	२३८।१५	२३७।१३	२३६।१०	२३५।८	२२।०	३२७।४९	६५।३	६६।१४	६७।२७	६८।४४	७०।५
१०।३०	१५५।४२	२४६।१३	२४५।७	२४४।१	२४२।५४	२४१।४६	२२।३०	३३५।४२	७२।१७	७३।३०	[illegible]	७६।३	७७।२५
११।०	१६३।४३	२५३।६	२५१।५७	२५०।४७	२४९।३६	२४८।२४	२३।०	३४३।४३	७९।२१	८०।३५	[illegible]	८३।१०	८४।३१
११।३०	१७१।५०	२५९।५७	२५८।४५	२५७।३३	२५६।१९	२५५।३	२३।३०	३५१।५०	८६।१९	८७।३३	८८।४९	९०।७	९१।२०
१२।०	१८०।०	२६६।४८	२६५।३५	२६४।२०	२६३।४	२६१।४६	२४।०	०।०	९३।१२	९४।२५	९५।४०	९६।५६	९८।१४

अं ४ क. "स्थूल लग्न" हुआ। अब लग्न सारणी में ३२ अक्षांश और ३५ अक्षांश वाले कालमों में सां. का. ५ घं. ३० मि. के आगे क्रमशः १७३ अं. ३४ क. और १७३ अं. ४४ क. लिखा है। इन दोनों का अन्तर १० क. हुआ. यह लग्न की "३ अक्षांश की गति" है। क्योंकि लग्न ३५ अक्षांश में बढ़ रहा है, अतः यह गति धन है। ३२ अक्षांश और चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. का अन्तर २९ क. है। इससे ३ अक्षांश की लग्न की गतिकलाओं (१०) को गुणा करके १८० से भाग देने पर लब्धि २ क. मिली। क्योंकि ३ अक्षांशों की लग्नगति धन है अतः इसे "स्थूललग्न" में जोड़ने पर १७८ अं. ५ क. सायनलग्न हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३ अं. २६ क. घटा देने पर १५४ अं. ३९ क. (=५ रा. ४ अं. ३९ क.) निरयणलग्न बन गया।

दशमलग्नसाधन का उदाहरण :— १५ जुला. १९६६ ई. को प्रातः १० घं. ४५ मि. (भा. स्टै. टा.) पर ही चम्बा (हि. प्र.) में दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय चम्बा में सां. का. ५ घं. ५१ मि. है। लग्नसारणी के दूसरे कालम में सां. का. ५ घं. ३० मि. के आगे दशमलग्न ८३ अं ७ क. है, यह "स्थूलदशमलग्न" है। सारणी में सां. का. ५ घं ३० मि. और ६ घं. ० मि. के आगे दशमलग्न क्रमशः ८३ अं. ७ क. एवं ९० अं. ० क. है। इन दोनों का अन्तर ६ अं. ५३ क. (=४१३ क.) है, यह ३० मि. की दशमलग्न की गति है। इन कलाओं को सां. का. के शेष मि. (५ घं. ५१ मि.—५ घं. ३० मि.=२१ मि.) से गुणा करके ३० का भाग देने पर २८९ क. (=४ अं. ४९ क.) मिली। इन्हें "स्थूल दशमलग्न" में जोड़ने पर ८७ अं ५६ क. सायनदशमलग्न स्पष्ट हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३ अं. २६ क. घटा देने पर ६४ अं. ३० क. (=२ रा. ४ अं. ३० क.) इष्टकालिक निरयण दशमलग्न हुआ।

ध्यान दें :—यहां हमने सां. का. के सैकण्ड और अयनांश की विकलाओं को अनावश्यक समझ कर छोड़ दिया है। क्योंकि लग्न और दशम में विकलाओं तक की सूक्ष्मता लाने का प्रयास वस्तुतः अर्थहीन है। कला तक की सूक्ष्मता भी लग्न में सम्भव नहीं है; इस तथ्य का विस्तारपूर्वक स्पष्टीकरण गणित द्वारा "गणकमार्तण्ड" में हमने किया है—वहां पढ़ें।

लग्नसारणी (पूरे भारत के लिये) [भाग २ य]

साम्पातिक काल घं. मि.	सभी स्थलों के लिए दशम अं. क.	अक्षांश २३° (उ.) लग्न अं. क.	अक्षांश २६° (उ.) लग्न अं. क.	अक्षांश २९° (उ.) लग्न अं. क.	अक्षांश ३२° (उ.) लग्न अं. क.	अक्षांश ३५° (उ.) लग्न अं. क.
०।०	०।०	९९।३५	१००।५९	१०२।२६	१०३।५७	१०५।३४
०।३०	८।५०	१०६।१४	१०७।३४	१०८।५७	११०।२४	१११।५३
१।०	१६।१७	११२।४९	११४।४	११५।२२	११६।४३	११८।७
१।३०	२४।१८	११९।२२	१२०।३३	१२१।४५	१२३।०	१२४।१७
२।०	३२।११	१२५।५६	१२७।०	१२८।७	१२९।१७	१३०।२५
२।३०	३९।५५	१३२।३१	१३३।२९	१३४।२९	१३५।३०	१३६।३२
३।०	४७।२८	१३९।९	१४०।०	१४०।५२	१४१।४५	१४२।४०
३।३०	५४।५१	१४५।५०	१४६।३४	१४७।१८	१४८।४	१४८।५०
४।०	६२।५	१५२।३४	१५३।१०	१५३।४७	१५४।२४	१५५।१
४।३०	६९।१२	१५९।२२	१५९।५०	१६०।१७	१६०।४६	१६१।१४
५।०	७६।११	१६६।१३	१६६।३२	१६६।५०	१६७।९	१६७।२८
५।३०	८३।७	१७३।६	१७३।१५	१७३।२५	१७३।३४	१७३।४४
६।०	९०।०	१८०।०	१८०।०	१८०।०	१८०।०	१८०।०
६।३०	९६।५३	१८६।५४	१८६।४५	१८६।३५	१८६।२६	१८६।१६
७।०	१०३।४९	१९३।४७	१९३।२८	१९३।१०	१९२।५१	१९२।३२
७।३०	११०।४=	२००।३८	२००।१०	१९९।४३	१९९।१४	१९८।४६
८।०	११७।५५	२०७।२६	२०६।५०	२०६।१३	२०५।३६	२०४।५९
८।३०	१२५।९	२१४।१०	२१३।२६	२१२।४२	२११।५६	२११।१०
९।०	१३२।३२	२२०।५१	२२०।०	२१९।८	२१८।१५	२१७।२०
९।३०	१४०।५	२२७।२९	२२६।३१	२२५।३१	२२४।३०	२२३।२८
१०।०	१४७।४९	२३४।४	२३३।०	२३१।५३	२३०।४५	२२९।३५
१०।३०	१५५।४२	२४०।३८	२३९।२७	२३८।१५	२३७।०	२३५।४१
११।०	१६३।४३	२४७।११	२४५।५६	२४४।३८	२४३।१७	२४१।५३
११।३०	१७१।५०	२५३।४६	२५२।२९	२५१।३	२४९।३६	२४८।७
१२।०	१८०।०	२६०।२५	२५९।१	२५७।३४	२५६।३	२५४।२६

साम्पातिक काल घं. मि.	सभी स्थलों के लिए दशम अं. क.	अक्षांश २३° (उ.) लग्न अं. क.	अक्षांश २६° (उ.) लग्न अं. क.	अक्षांश २९° (उ.) लग्न अं. क.	अक्षांश ३२° (उ.) लग्न अं. क.	अक्षांश ३५° (उ.) लग्न अं. क.
१२।०	१८०।०	२६०।२५	२५९।१	२५७।३४	२५६।३	२५४।२६
१२।३०	१८८।१०	२६७।१०	२६५।४३	२६४।१२	२६२।३१	२६०।५४
१३।०	१९६।१७	२७४।३	२७२।३४	२७१।०	२६९।२१	२६७।३३
१३।३०	२०४।१८	२८१।९	२७९।३९	२७८।२	२७६।१९	२७४।२९
१४।०	२१२।११	२८८।३०	२८६।५९	२८५।२२	२८३।३६	२८१।४५
१४।३०	२१९।५५	२९६।९	२९४।४०	२९३।४	२९१।२०	२८९।२६
१५।०	२२७।२८	३०४।१०	३०२।४४	३०१।१२	२९९।२८	२९७।३८
१५।३०	२३४।५१	३१२।३३	३११।१५	३०९।४८	३०८।१३	३०६।२५
१६।०	२४२।५	३२१।२२	३२०।१३	३१८।५६	३१७।३०	३१५।५४
१६।३०	२४९।१२	३३०।३५	३२९।३९	३२८।३६	३२७।२९	३२६।४
१७।०	२५६।११	३४०।९	३३९।३०	३३८।४५	३३७।५४	३३६।५५
१७।३०	२६३।७	३५०।०	३४९।४०	३४९।१६	३४८।४९	३४८।१९
१८।०	२७०।०	०।०	०।०	०।०	०।०	०।०
१८।३०	२७६।५३	१०।०	१०।२०	१०।४४	११।११	११।४१
१९।०	२८३।४९	१९।५१	२०।३०	२१।१५	२२।६	२३।४
१९।३०	२९०।४८	२९।२५	३०।२१	३१।२४	३२।३५	३३।५६
२०।०	२९७।५५	३८।३८	३९।४७	४१।४	४२।३०	४४।९
२०।३०	३०५।९	४७।२७	४८।४५	५०।१२	५१।४७	५३।३५
२१।०	३१२।३२	५५।५०	५७।१९	५८।४८	६०।३२	६२।२२
२१।३०	३२०।५	६३।५१	६५।२०	६६।५६	६८।४०	७०।३४
२२।०	३२७।४९	७१।३०	७३।१	७४।३८	७६।२४	७८।१५
२२।३०	३३५।४२	७८।५१	८०।२१	८१।५८	८३।४१	८५।३१
२३।०	३४३।४३	८५।५६	८७।२६	८९।०	९०।३९	९२।२६
२३।३०	३५१।५०	९२।५०	९४।१७	९५।४८	९७।२४	९९।६
२४।०	०।०	९९।३५	१००।५९	१०२।२६	१०३।५७	१०५।३४

साम्पातिक काल कोष्ठक नं. 1.

सन्	सां. का. घं. मि. सै.	सन्	सां. का. घं. मि. सै.	सन्	सां. का. घं. मि. सै.	सन्	सां. का. घं. मि. सै.	सन्	सां. का. घं. मि. सै.	सन्	सां. का. घं. मि. सै.	सन्	सां. का. घं. मि. सै.	सन्	सां. का. घं. मि. सै.
१९४१	६।४०।१०	१९४८	६।३७।२५	१९५५	६।३८।३८	१९६२	६।३९।५०	१९६९	६।४१।२	१९७६	६।३८।१७	१९८३	६।३९।२९	१९९०	६।४०।४१
१९४२	६।३९।१२	१९४९	६।४०।२५	१९५६	६।३७।४१	१९६३	६।३८।५३	१९७०	६।४०।५	१९७७	६।४१।१६	१९८४	६।३८।३२	१९९१	६।३९।४४
१९४३	६।३८।१५	१९५०	६।३९।२७	१९५७	६।४०।४०	१९६४	६।३७।५६	१९७१	६।३९।७	१९७८	६।४०।१९	१९८५	६।४१।३२	१९९२	६/३८/४७
१९४४	६।३७।१७	१९५१	६।३८।३०	१९५८	६।३९।४३	१९६५	६।४०।५५	१९७२	६।३८।१०	१९७९	६।३९।२२	१९८६	६।४०।३५	१९९३	६/४१/४६
१९४५	६।४०।१६	१९५२	६।३७।३३	१९५९	६।३८।४५	१९६६	६।३९।५७	१९७३	६।४१।१०	१९८०	६।३८।२४	१९८७	६ ३९।३८	१९९४	६/४०/४९
१९४६	६।३९।१९	१९५३	६।४०।३३	१९६०	६।३७।४७	१९६७	६।३९।०	१९७४	६।४०।१२	१९८१	६।४१।२३	१९८८	६।३८।४०	१९९५	६/३९/५२
१९४७	६।३८।२२	१९५४	६।३९।३५	१९६१	६।४०।४७	१९६८	६।३८।३	१९७५	६।३९।१५	१९८२	६।४०।२६	१९८९	६।४१।३९	१९९६	६/३८/५४

*साम्पातिक काल कोष्ठक नं. २

ता ↓	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर	ता ↓
	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	
१	०। ०। ०	२। २।१३	३।५२।३७	५।५४।५०	७।५३। ७	९।५२।२१	११।५३।३८	१३।५५।५०	१५।५८। ४	१७।५६।२१	१९।५८।३४	२१।५६।५०	१
२	०। ३।५७	२। ६। ९	३।५६।३३	५।५८।४७	७।५७। ४	९।५६।१७	११।५७।३४	१३।५९।४७	१६। २। ०	१८। ०।१७	२०। २।३१	२२। ०।४७	२
३	०। ७।५३	२।१०। ६	४। ०।३०	६। २।४३	८। १। ०	१०। ३।१४	१२। १।३१	१४। ३।४४	१६। ५।५७	१८। ४।१४	२०। ६।२७	२२। ४।४३	३
४	०।११।५०	२।१४। २	४। ४।२६	६। ६।४०	८। ४।५७	१०। ७।१०	१२। ५।२७	१४। ७।४०	१६। ९।५३	१८। ८। १	२०।१०।२४	२२। ८।४०	४
५	०।१५।४६	२।१७।५९	४। ८।२३	६।१०।३६	८। ८।५३	१०।११। ७	१२। ९।२४	१४।११।३६	१६।१३।५०	१८।१२। ७	२०।१४।२०	२२।१२।३६	५
६	०।१९।४३	२।२१।५५	४।१२।१९	६।१४।३३	८।१२।५०	१०।१५। ३	१२।१३।२१	१४।१५।३३	१६।१७।४६	१८।१६। ३	२०।१८।१७	२२।१६।३३	६
७	०।२३।३९	२।२५।५२	४।१६।१६	६।१८।२९	८।१६।४६	१०।१९। ०	१२।१७।१७	१४।१९।२९	१६।२१।४३	१८।२०। ०	२०।२२।१३	२२।२०।३०	७
८	०।२७।३६	२।२९।४८	४।२०।१२	६।२२।२६	८।२०।४३	१०।२३।५६	१२।२१।१४	१४।२३।२६	१६।२५।४०	१८।२३।५७	२०।२६।१०	२२।२४।२७	८
९	०।३१।३२	२।३३।४५	४।२४। ९	६।२६।२२	८।२४।३९	१०।२६।५३	१२।२५।१०	१४।२७।२३	१६।२९।३७	१८।२७।५४	२०।३०। ६	२२।२८।२३	९
१०	०।३५।२९	२।३७।४२	४।२८। ५	६।३०।१९	८।२८।३६	१०।३०।४९	१२।२९। ६	१४।३१।२०	१६।३३।३३	१८।३१।५०	२०।३४। ३	२२।३२।२०	१०
११	०।३९।२५	२।४१।३९	४।३२। २	६।३४।१६	८।३२।३२	१०।३४।४६	१२।३३। ३	१४।३५।१९	१६।३७।३०	१८।३५।४७	२०।३८। ०	२२।३६।१६	११
१२	०।४३।२२	२।४५।३५	४।३५।५९	६।३८।१३	८।३६।२९	१०।३८।४२	१२।३६।५९	१४।३९।१३	१६।४१।२६	१८।३९।४३	२०।४१।५६	२२।४०।१३	१२
१३	०।४७।१८	२।४९।३२	४।३९।५६	६।४२। ९	८।४०।२५	१०।४२।३९	१२।४०।५६	१४।४३। ९	१६।४५।२३	१८।४३।४०	२०।४५।५२	२२।४४। ९	१३
१४	०।५१।१५	२।५३।२८	४।४३।५२	६।४६। ६	८।४४।२२	१०।४६।३५	१२।४४।५२	१४।४७। ६	१६।४९।१९	१८।४७।३७	२०।४९।४९	२२।४८। ६	१४
१५	०।५५।१२	२।५७।२५	४।४७।४९	६।५०। २	८।४८।१८	१०।५०।३२	१२।४८।४९	१४।५१। २	१६।५३।१६	१८।५१।३३	२०।५३।४५	२२।५२। २	१५
१६	०।५९। ८	३। १।२१	४।५१।४५	६।५३।५९	८।५२।१५	१०।५४।२८	१२।५२।४५	१४।५४ ५९	१६।५७।१२	१८।५५।३०	२०।५७।४२	२२।५५।५९	१६
१७	१। ३। ४	३। ५।१८	४।५५।४२	६।५७।५५	८।५६।११	१०।५८।२५	१२।५६।४२	१४।५८।५५	१७। १। ९	१८।५९।२६	२१। १।३९	२२।५९।५६	१७
१८	१। ७। १	३। ९।१४	४।५९।३८	७। १।५२	९। ०। ८	११। २।२१	१३। ०।३८	१५। २।५२	१७। ५। ५	१९। ३।२२	२१। ५।३६	२३। ३।५३	१८
१९	१।१०।५७	३।१३।११	५। ३।३५	७। ५।४८	९। ४। ४	११। ६।१८	१३। ४।३५	१५। ६।४८	१७। ९। २	१९। ७।१९	२१। ९।३२	२३। ७।४९	१९
२०	१।१४।५४	३।१७। ८	५। ७।३१	७। ९।४५	९। ८। १	११।१०।१५	१३। ८।३२	१५।१०।४५	१७।१२।५८	१९।११।१५	२१।१३।२९	२३।११।४६	२०
२१	१।१८।५१	३।२१। ५	५।११।२८	७।१३।४१	९।११।५८	११।१४।१२	१३।१२।२९	१५।१४।४१	१७।१६।५५	१९।१५।१२	२१।१७।२५	२३।१५।४२	२१
२२	१।२२।४८	३।२५। १	५।१५।२५	७।१७।३८	९।१५।५५	११।१८। ८	१३।१६।२५	१५।१८।३८	१७।२०।५१	१९।१९। ८	२१।२१।२२	२३।१९।३९	२२
२३	१।२६।४४	३।२८।५८	५।१९।२२	७।२१।३४	९।१९।५१	११।२२। ५	१३।२०।२२	१५।२२।३४	१७।२४।४८	१९।२३। ५	२१।२५।१८	२३।२३।३५	२३
२४	१।३०।४१	३।३२।५४	५।२३।१८	७।२५।३१	९।२३।४८	११।२६। १	१३।२४।१८	१५।२६।३१	१७।२८।४४	१९।२७। १	२१।२९।१५	२३।२७।३२	२४
२५	१।३४।१७	३।३६।५१	५।२७।१५	७।२९।२८	९।२७।४४	११।२९।५८	१३।२८।१५	१५।३०।२७	१७।३२।४१	१९।३०।५८	२१।३३।११	२३।३१।२८	२५
२६	१।३८।३४	३।४०।४७	५।३१।११	७।३३।२४	९।३१।४१	११।३३।५४	१३।३२।११	१५।३४।२४	१७।३६।३७	१९।३४।५४	२१।३७। ८	२३।३५।२५	२६
२७	१।४२।३०	३।४४।४४	५।३५। ८	७।३७।२०	९।३५।३७	११।३७।५१	१३।३६। ८	१५।३८।२०	१७।४०।३४	१९।३८।५१	२१।४१। ४	२३।३९।२१	२७
२८	१।४६।२७	३।४८।४०	५।३९। ५	७।४१।१७	९।३९।३४	११।४१।४७	१३।४०। ४	१५।४२।१७	१७।४४।३१	१९ ४२।४८	२१।४५। १	२३।४३।१८	२८
२९	१।५०।२३	३।५२।३७	५।४३। १	७।४५।१३	९।४३।३०	११।४५।४४	१३।४४। १	१५।४६।१४	१७ ४८।२८	१९।४६।४५	२१।४८।५७	२३।४७।१४	२९
३०	१।५४।२०		५।४६।५८	७।४९।१०	९।४७।२७	११।४९।४१	१३।४८।५७	१५।५०।११	१७।५२।२४	१९।५०।४१	२१ ५२।५४	२३।५१।११	३०
३१	१।५८।१६		५।५०।५४		९।५१।२४		१३।५२।५४	१५।५४। ७		१९।५४।३८		२३।५५। ७	३१
		*लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख में एक जोड़ कर कोष्ठक नं.२ को प्रयोग में लाइए।										२३।५९। ३	३२

साम्पातिक काल कोष्ठक नं. ३

पूर्व रेखांश →	३०°	३६°	४२°	४८°	५४°	६०°	६६°	७२°	७८°	८४°	९०°	९६°	१०२°	१०८°
सा. का. संस्कार (सैकण्ड)	+३१	+२७	+२३	+१९	+१५	+११	+७	+३	—१	—५	—९	—१३	—१७	—२१

साम्पातिककाल कोष्ठक नं. ४

मि. →	०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५
घं ↓	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.
०	०। ०	०। १	०। २	०। २	०। ३	०। ४	०। ५	०। ६	०। ७	०। ७	०। ८	०। ९
१	०।१०	०।११	०।११	०।१२	०।१३	०।१४	०।१५	०।१६	०।१६	०।१७	०।१८	०।१९
२	०।२०	०।२१	०।२१	०।२२	०।२३	०।२४	०।२५	०।२५	०।२६	०।२७	०।२८	०।२९
३	०।३०	०।३०	०।३१	०।३२	०।३३	०।३४	०।३४	०।३५	०।३६	०।३७	०।३८	०।३९
४	०।३९	०।४०	०।४१	०।४२	०।४३	०।४४	०।४४	०।४५	०।४६	०।४७	०।४८	०।४८
५	०।४९	०।५०	०।५१	०।५२	०।५३	०।५३	०।५४	०।५५	०।५६	०।५७	०।५७	०।५८
६	०।५९	१। ०	१। १	१। २	१। २	१। ३	१। ४	१। ५	१। ६	१। ७	१। ७	१। ८
७	१। ९	१।१०	१।११	१।११	१।१२	१।१३	१।१४	१।१५	१।१६	१।१६	१।१७	१।१८
८	१।१९	१।२०	१।२०	१।२१	१।२२	१।२३	१।२४	१।२५	१।२५	१।२६	१।२७	१।२८
९	१।२९	१।३०	१।३०	१।३१	१।३२	१।३३	१।३४	१।३४	३५	१।३६	१।३७	१।३८
१०	१।३९	१।३९	१।४०	१।४१	१।४२	१।४३	१।४३	१।४४	१।४५	१।४६	१।४७	१।४८
११	१।४८	१।४९	१।५०	१।५१	१।५२	१।५३	१।५३	१।५४	१।५५	१।५६	१।५७	१।५७
१२	१।५८	१।५९	२। ०	२। १	२। २	२। २	२। ३	२। ४	२। ५	२। ६	२। ६	२। ७
१३	२। ८	२। ९	२।१०	२।११	२।११	२।१२	२।१३	२।१४	२।१५	२।१६	२।१६	२।१७
१४	२।१८	२।१९	२।२०	२।२०	२।२१	२।२२	२।२३	२।२४	२।२५	२।२५	२।२६	२।२७
१५	२।२८	२।२९	२।२९	२।३०	२।३१	२।३२	२।३३	२।३४	२।३४	२।३५	२।३६	२।३७
१६	२।३८	२।३९	२।३९	२।४०	२।४१	२।४२	२।४३	२।४३	२।४४	२।४५	२।४६	२।४७
१७	२।४८	२।४८	२।४९	२।५०	२।५१	२।५२	२।५२	२।५३	२।५४	२।५५	२।५६	२।५७
१८	२।५७	२।५८	२।५९	३। ०	३। १	३। २	३। २	३। ३	३। ४	३। ५	३। ६	३। ६
१९	३। ७	३। ८	३। ९	३।१०	३।११	३।११	३।१२	३।१३	३।१४	३।१५	३।१५	३।१६
२०	३।१७	३।१८	३।१९	३।२०	३।२०	३।२१	३।२२	३।२३	३।२४	३।२५	३।२५	३।२६
२१	३।२७	३।२८	३।२९	३।२९	३।३०	३।३१	३।३२	३।३३	३।३४	३।३४	३।३५	३।३६
२२	३।३७	३।३८	३।३८	३।३९	३।४०	३।४१	३।४२	३।४३	३।४३	३।४४	३।४५	३।४६
२३	३।४७	३।४८	३।४८	३।४९	३।५०	३।५१	३।५२	३।५२	३।५३	३।५४	३।५५	३।५६

अयनांश सारणी नं. १

ईस्वी सन्	अयनांश अ. क. वि.	ईस्वी सन्	अयनांश अ. क. वि.	ईस्वी सन्	अयनांश अ. क. वि.
१९२५	२२।४८।३४	१९४९	२३। ८।४१	१९७३	२३।२८।४७
१९२६	२२।४९।२५	१९५०	२३। ९।३१	१९७४	२३।२९।३७
१९२७	२२।५०।१५	१९५१	२३।१०।२१	१९७५	२३।३०।२७
१९२८	२२।५१। ५	१९५२	२३।११।११	१९७६	२३।३१।१८
१९२९	२२।५१।५५	१९५३	२३।१२। २	१९७७	२३।३२। ८
१९३०	२२।५२।४५	१९५४	२३।१२।५२	१९७८	२३।३२।५८
१९३१	२२।५३।३६	१९५५	२३।१३।४२	१९७९	२३।३३।४८
१९३२	२२।५४।२६	१९५६	२३।१४।३२	१९८०	२३।३४।३९
१९३३	२२।५५।१६	१९५७	२३।१५।२३	१९८१	२३।३५।२९
१९३४	२२।५६। ७	१९५८	२३।१६।१३	१९८२	२३।३६।१९
१९३५	२२।५६।५७	१९५९	२३।१७। ३	१९८३	२३।३७। ९
१९३६	२२।५७।४७	१९६०	२३।१७।५३	१९८४	२३।३८। ०
१९३७	२२।५८।३७	१९६१	२३।१८।४४	१९८५	२३।३८।५०
१९३८	२२।५९।२८	१९६२	२३।१९।३४	१९८६	२३।३९।४०
१९३९	२३। ०।१८	१९६३	२३।२०।२४	१९८७	२३।४०।३०
१९४०	२३। १। ८	१९६४	२३।२१।१५	१९८८	२३।४१।२०
१९४१	२३। १।५८	१९६५	२३।२२। ५	१९८९	२३।४२।११
१९४२	२३। २।४९	१९६६	२३।२२।५५	१९९०	२३।४३। २
१९४३	२३। ३।३९	१९६७	२३।२३।४५	१९९१	२३/४३/५२
१९४४	२३। ४।२९	१९६८	२३।२४।३६	१९९२	२३/४४/४३
१९४५	२३। ५।१९	१९६९	२३।२५।२६	१९९३	२३/४५/३३
१९४६	२३। ६।१०	१९७०	२३।२६।१६	१९९४	२३/४६/२३
१९४७	२३। ७। ०	१९७१	२३।२७। ६	१९९५	२३/४७/१४
१९४८	२३। ७।५०	१९७२	२३।२७।५७		

अयनांश सारणी नं. २

तारीख →	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८
	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.
जनवरी	०	१	१	१	२	२	३	३	३	४
फरवरी	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८
मार्च	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२
अप्रैल	१३	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६
मई	१७	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०
जून	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२३	२४	२४	२५

तारीख →	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८
	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.
जुलाई	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२८	२९
अगस्त	२९	३०	३०	३१	३१	३१	३२	३२	३३	३३
सितम्बर	३४	३४	३४	३५	३५	३६	३६	३६	३७	३७
अक्तूबर	३८	३८	३९	३९	३९	४०	४०	४१	४१	४१
नवम्बर	४२	४२	४३	४३	४४	४४	४४	४५	४५	४६
दिसम्बर	४६	४७	४७	४७	४८	४८	४९	४९	४९	५०

श. रा. शु.	रा	बु. रा.	च.	बु. शु.	र.
मेष १०	वृष ३	मकर २८	कन्या १५	कर्क ५	मीन २
तुला १०	वृश्चिक ३	कर्क २८	मीन १५	मकर ५	कन्या २
सिंह	कर्क	मि. वृश्चि	मि. क.	ध. मी.	वृष.
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	वि
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री
मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपरा
पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्ने
सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण	कांस्य	सुवर्ण	रौप्य
चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद
उग्र	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ
सत्व	सत्व	तम	रज	सत्व	रज
स्थिर	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	चर
तिक्त	क्षार	कटु	सर्व रस	मधुर	अम्ल
पशु	जनभु.	दुग्ध	श्मशान	वाणी	जल
पित्त	श्लेष्म	पित्त	समधातु	समधातु	कफ
वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	
पाटल	गौरश्वेत	रक्त	नील	पीत	श्वेत
मूल	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल
वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम

जन्मपत्री न हो तो वर्ष बनाने की
स्पष्ट प्रश्न लग्न की राशि को छोड़कर अंशादिक को
१५०(डेढ़ सौ) का भाग देना। लब्ध जो राश्यादि चार फल
में प्रश्न लग्न की राशि अंक मिलाना. यहमुंथा का स्पष्ट लग
से चतुर्थ राशि का स्वामी जन्म लग्नेश जानना अर्थात् पंच
पति के स्थान में प्रश्न लग्न से चतुर्थ राशि का स्वामी जो हो
पर वर्ष बनाने में इतना ही विशेष जानना।अन्य सर्व रीति मे

शिवोक्त योगिनी-दशाऽन्तर्दशा ज्ञानार्थं चक्रमिदम्

मंगला व. १			पिंगला व. २			धान्या व. ३			भ्रामरी व. ४			भद्रा व. ५			उल्का व. ६			सिद्धा व. ७			संकटा व. ८			दशा तथा वर्ष
चन्द्र			सूर्य			गुरु			मंगल			बुध			शनि			शुक्र			केतु			दशेश ग्रह
आर्द्रा चि. श्र.			पुन. स्वा. ध.			पुष्य. वि. श.			अ. श्ले. अनु. पू.भा.			भ. म. ज्ये. उ.भा.			कृ. पू.फा. मू. रे.			रो. उ.फा. पू.षा.			मृ. ह. उ.षा.			जन्म नक्षत्र
मं.	०	१०	पि.	१	१०	धा.	३	०	भ्रा.	५	१०	भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	सं.	२१	१०	अन्तर्दशा मासादि शुभदशा—मं.धा.भ.सि. कष्टदशा—पि.भ्रा.उ.सं.
पिं.	०	२०	धा.	२	०	भ्रा.	४	०	भ.	६	२०	उ.	१०	०	सि.	१४	०	सं.	१८	२०	मं.	२	२०	
धा.	१	०	भ्रा.	२	२०	भ.	५	०	उ.	८	०	सि.	११	२०	सं.	१६	०	मं.	२	१०	पि.	५	१०	
भ्रा.	१	१०	भ.	३	१०	उ.	६	०	सि.	९	१०	सं.	१३	१०	मं.	२	०	पि.	४	२०	धा.	८	०	
भ.	१	२०	उ.	४	०	सि.	७	०	सं.	१०	२०	मं.	१	२०	पि.	४	०	धा.	७	०	भ्रा.	१०	२०	
उ.	२	०	सि.	४	२०	सं.	८	०	मं.	१	१०	पि.	३	१०	धा.	६	०	भ्रा.	९	१०	भ.	१३	१०	
सि.	२	१०	सं.	५	१०	मं.	१	०	पि.	२	२०	धा.	५	०	भ्रा.	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०	
सं.	२	२०	मं.	०	२०	पि.	२	०	धा.	४	०	भ्रा.	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०	

दशा का भुक्तभोग्य

गत नक्षत्र की घट्यादि को ६० में से घटाकर इष्ट घटी पल जोड़ने से भयात होता है। ६० में से घटाए हुए अकों में प्रवेश नक्षत्र घट्यादि जोड़ने से भभोग होता है। भयात और भभोग की घटियों को ६० से गुणा कर पल बना लें. भयात के पलों को दशा के वर्ष से गुणाकर भोग के पलों से भाग देवें। लब्धांक वर्ष, होगा। फिर शेषांक को १२ से गुणा करें, और भभोग के पलों से भाग दें। लब्धांक मास होगा। फिर ३० से गुणाकर करके भभोग के पलों से भाग दें, लब्धांक दिन होगें। तत्पश्चात् ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें, लब्धांक घटी, होगी। फिर शेष को ६० से गुणा कर भभोग के पलों का भाग दे लब्धि पल होगी। यह वर्षादि दशा का भुक्त होता है। इसको दशा के वर्षों में से घटाने पर भोग्य दशा प्राप्त होती है।

अथ वर्षकुण्डल्यां तन्वादिभावफल

ग्रहा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य	चिन्ता	नृप भी:	धनलाभ:	हानि:	कष्टम्	शत्रुनाश:	पीड़ा	कष्टम्	धर्मनाश:	सुखम्	धनला.	पीड़ा
चन्द्र	पीड़ा	धनलाभ:	हर्ष:	शत्रुनाश:	सुखम्	पीड़ा	कष्टम्	दुःखम्	भाग्योदय:	विजय:	धनला.	व्यय
भौम	वज.	धननाश:	जय:	ध्वसनं	दुर्गति:	शत्रुनाश:	स्त्रीकष्टम्	पीड़ा	पुण्योदय:	राज्यला.	धनला.	विरोध
बुध	सौख्यम्	धनलाभ:	सुखम्	द्रव्यलाभ:	पुत्रलाभ:	कलह:	धनलाभ:	व्यग्रता	सुखम्	मानला.	सुखला.	विग्रह
गुरु	सुखम्	धनलाभ:	जय:	वाह. ला.	पुत्रप्रा	कष्टम्	सुखम्	रोग:	धर्मलाभ	राज्यला.	धनला.	शोक
शुक्र	मानप्रा	धनप्राप्ति	कीर्तिला.	सुखला.	धनलाभ:	शत्रुभीति:	स्त्रीसुखम्	कष्टम्	धर्मोदय	मानला.	धनला.	व्यय
शनि	वातार्ति	पीड़ा	धनलाभ:	दुःखम्:	पुत्रप्री.	जय:	स्त्रीकष्टम्	रोग:	भाग्यहा.	धनहा:	धनला.	चिन्ता
राहु	शिरार्ति	राजभी.	सुखम्	दुःखम्:	बुद्धि नाश	शत्रुनाश:	रोगभी:	कष्टम्	धर्महा.	विजय:	सुलाभ:	व्याधि
केतु	चिन्ता	क्लेश:	आरोग्यं	राजभी:	दुर्बुद्धि	मृत्युम्	क्लेश:	पीड़ा	भाग्यला.	धनला.	लाभ:	शोक:
मन्था	सुनाम्	यशोऽर्थ:	पुष्टि:	दुःखम्:	सन्ताप्ति:	कष्टम्	व्यसनम्	दुःखम्	भाग्योद.	राज्यप्रा:	लाभ	कष्टम

सूर्यसिद्धान्तीय वर्ष-प्रवेश सारिणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	१	२	३	५	६	०	१	२	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१
घटी	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५
घटी	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४१
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

सूचना—वर्षसिद्ध वर्तमान सूर्यसिद्धान्तीय वर्तमान से ८।। पल कम है। अतः सक्षम-वर्ष-प्रवेश-कालिक इष्ट निकालने के लिए गताब्दों को ८।। से गुणा करके पलात्मक फल को सारिणी से साधित इष्ट में से घटा देना चाहिए। यही सक्षम वर्षमानानुसारी इष्ट होगा, चाहो तो इस इष्ट पर भी फल अनुभव करें।

वर्षफल-साधन प्रकार:—(१) अभीष्ट संवत् (जिस संवत् का वर्ष करना हो) में से जन्म समय का संवत् हीन करने से जो शेष बचे वह गत वर्ष (गताब्द) जानें। स्मरण रहे कि मेषार्क प्रवेश के प्रथम और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अनन्तर का यदि वर्ष करना हो तो पिछाड़ी संवत से करना (सर्वोपनन्दसंवत्सरमास सौरगत) इस प्रकार गतवर्ष लाकर उसी गताब्द अंक के नीचे सारिणी में वारादि अंक हैं उनमें जन्म का वार, इष्ट, घड़ी पल जोड़ने से वर्षप्रवेश कालिक वारादि इष्ट

४।५।६।१०।११।१२ वें स्थानों में ५ बल देते हैं। दिनरात्रिबल—दिन के वर्षेष्ट में पुरुषग्रह ५ बल देते हैं और रात्रि के इष्ट में स्त्रीग्रह ५ बल देते हैं।

त्रिराशिपति चक्र

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	राशि
सू.	शु.	श.	शु.	गु.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	बु.	च.	दिनलग्नेश
बृ.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	गु.	चं.	रात्रिलग्नेश

वर्ष में दृष्टि-ज्ञान और फल

वर्ष में जो ग्रह जिस भाव में पड़ा हो उस भाव से पांचवें ९वें भाग का प्रत्यक्ष

१८	२।५७	२।५८	२।५९	३। ०	३। १	३। २	३। २	३। ३	३। ४	३। ५	३। ६	३। ६
१९	३। ७	३। ८	३। ९	३।१०	३।११	३।११	३।१२	३।१३	३।१४	३।१५	३।१५	३।१६
२०	३।१७	३।१८	३।१९	३।२०	३।२०	३।२१	३।२२	३।२३	३।२४	३।२५	३।२५	३।२६
२१	३।२७	३।२८	३।२९	३।२९	३।३०	३।३१	३।३२	३।३३	३।३४	३।३४	३।३५	३।३६
२२	३।३७	३।३८	३।३८	३।३९	३।४०	३।४१	३।४२	३।४३	३।४३	३।४४	३।४५	३।४६
२३	३।४७	३।४८	३।४८	३।४९	३।५०	३।५१	३।५२	३।५२	३।५३	३।५४	३।५५	३।५६

१९४२	२३। २।४९	१९६६
१९४३	२३। ३।३९	१९६७
१९४४	२३। ४।२९	१९६८
१९४५	२३। ५।१९	१९६९
१९४६	२३। ६।१०	१९७०
१९४७	२३। ७। ०	१९७१
१९४८	२३। ७।५०	१९७२

सफलता, सुख, प्रेम लाभ और जिन प्रेम होता है। तीसरे ग्यारहवें शत्रुमित्र सम भाव से साफल्य हो पहले सातवें करे, मित्र से वैर, धन हानि, बनते काम को बिगाड़ते हैं। फल—कार्य बड़ी कठिनता से सफल

र्ष लग्नेश २, मुन्थेश ३, त्रैराशीश ४, राशि पर हो उस राशि का स्वामी और मों अधिकारियोंमें से जो सबसे बलवान हो में से कोई भी लग्न को न देखता हो तो होगा ॥ कई ग्रहों का बल समान हो तो दृष्टि, अधिकार यह तीनों समान हों तो प्राप्त हो तोजिससे वह इत्थशाल करे वा । फल—वर्षेश ६।८।१२ व अस्तंगत हीन वशेष होगा । यदि बलिष्ठ होकर शुभ स्थान यें कीवृद्धि हो ।

ी में लग्नेश-ततीयेश या चतुर्थेश-नवमेश एक तो उसवर्ष तबदीली होगी । अगर वर्ष- ी भी तबदीली होगी ।

अयनांश सारणी नं. २

तारीख →	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८
	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.
जनवरी	०	१	१	१	२	२	३	३	३	४
फरवरी	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८
मार्च	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२
अप्रैल	१३	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६
मई	१७	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०
जून	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२३	२४	२४	२५

तारीख →	१	४	७	१०
	वि.	वि.	वि.	वि.
जुलाई	२५	२५	२६	२६
अगस्त	२९	३०	३०	३१
सितम्बर	३४	३४	३४	३५
अक्तूबर	३८	३८	३९	३९
नवम्बर	४२	४२	४३	४३
दिसम्बर	४६	४७	४७	४७

ग्रहशील-चक्र

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	
३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	०	३।१०	३।१०	एकपाद दृष्टि
५।६	५।६	५।६	५।६	०	५।६	५।६	५।९	५।९	द्विपाददृष्टि
४।८	४।८	०	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	त्रिपाददृष्टि
७	७	४।७।८	७	५।७।९	७	३।७।१०	७	७	सम्पूर्ण दृष्टि
च. मं. गु.	र. बु.	र. वृ. च.	र. रा. शु.	र. चं. मं.	बु. रा. श.	बु. रा. शु.	बु. श. शु.	बु.	मित्र-ग्रहाः
बु.	मं. श. गु. शु.	शु. श.	मं. श. गु.	रा. श.	मं. गु.	गु.	गु.	०	समग्रहाः
श. रा. शु.	रा	बु. रा.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र. चं. मं.	र. चं. मं.	०	शत्रुग्रहाः
मेष १०	वृष ३	मकर २८	कन्या १५	कर्क ५	मीन २७	तुला २०	मिथुन १५	धनु १५	उच्चराशयः परमोच्चांशाः
तुला १०	वृश्चिक ३	कर्क २८	मीन १५	मकर ५	कन्या २७	मेष २०	धनु १५	मिथुन १५	नीचराशयः नीचांशाः
सिंह	कर्क	मे. वृश्चि	मि. क.	ध. मी.	वृष. तु.	म. कु	कन्या	मीन	स्वगृहाणि
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	कर्क	मकर	मूलत्रिकोण
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	शूद्र निषाद	निषाद	निषाद	वर्ण
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुसक	पुरुष	पुरुष	पुं. स्त्री. नपुसक
मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपराह्न	अपराह्न	अपरा.	अपरा.	समय
पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैऋत्य	नैऋत्य	दिशा
सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण	कांस्य	सुवर्ण	रौप्य	लोह	लोह	लोह	धातु
चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजगपद	अपद	अपद	पाद
उग्र	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप	सौम्यादि
सत्व	सत्व	तम	रज	सत्व	रज	तम	तम	तम	गुण
स्थिर	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	चर	अतिस्थिर	चर	पक्षी	चरादि
तिक्त	क्षार	कटु	सर्व रस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय	रस
पशु	जलभु.	दुर्ग	श्मशान	वाणी	जल	उत्कट	ऊषर	ऊषर	भूमि
पित्त	श्लेष्म	पित्त	समधातु	समधातु	कफशुक्र	वायु	धूम्र	वायु	पित्तादि
वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अतिवृद्ध	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था
पाटल	गौरश्वेत	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	धूम्र	धूम्र	रंग
मूल	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु	धात्वादि
वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	विवर	विवर	स्थान

वर्ष में योगिनी के लिए जन्म-नक्षत्र संख्या में गताब्द जोड़े : और जोड़े : में आठ का भाग देने से जो बचे तो मंगलादि योगिनी दशा होती है।

वर्षेशाधिकारिनोमतेन मुद्दादशा

मं.	पि.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
०	०	१	१	१	२	२	२
१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०

गर्भ योग–वर्ष कुण्डली में लग्नेश पांचवें या सातवें पड़ा हो वा पञ्चमेश और सप्तमेश लग्न में पड़ा हो तो उस वर्ष गर्भयोग होता है।

मुंथेश और चन्द्रमा बली होकर पांचवें हो और पंचमेश भी बली हो तो गर्भ होता है।

जन्मपत्री न हो तो वर्ष बनाने की रीति

स्पष्ट प्रश्न लग्न की राशि को छोड़कर अंशादिक की कला करना, फिर उसमें १५०(डेढ़ सौ) का भाग देना। लब्ध जो राश्यादि चार फल आवें उसकी राशि के अंक में प्रश्न लग्न की राशि अंक मिलाना. यहमुंथा का स्पष्ट लग्न जानना। और प्रश्नलग्न से चतुर्थ राशि का स्वामी जन्म लग्नेश जानना अर्थात् पंचाधिकारियों मे जन्म लग्न पति के स्थान में प्रश्न लग्न से चतुर्थ राशि का स्वामी जो हो वह लिखना। प्रश्न पत्र पर वर्ष बनाने मे इतना ही विशेष जानना।अन्य सर्व रीति मे कुछ न्यूनाधिक नही है।

अरिष्ट योग–यदि जन्म लग्न ही वर्ष लग्न हो और जन्म नक्षत्र भी वर्ष में वही आ जाए तो यह द्विजन्मा वर्ष अशुभ है। वर्ष में गुरु चन्द्र शुभ नहीं तो अशुभ कष्ट भयप्रद होता है। वर्ष में गुरु चन्द्र शुभ हो तो अशुभ फल नहीं होगा।

आवश्यक मुहूर्त

कोई भी कार्य हो, वह शास्त्र-समस्त शुभ-मुहूर्त में करें, तो अवश्य सफल हो कर सुखप्रद होता है। गया-गोदावरी यात्रा में, नवरात्र कृत्य में एवं चातुर्मास्य व्रत में गुरु-शुक्रास्त का दोष नहीं होता। शुक्ल पक्ष की द्वितीया एवं कृष्णपक्ष की प्रतिपदा सर्व-कार्यों में शुभ मानी है। प्रथम बार देव दर्शन एवं प्रथम तीर्थयात्रा में गुरु शुक्रास्त अवश्य विचार्य है।

गर्भाधान संस्कार का मुहूर्त

शुभ तिथियां—१, २, ३, ५,७, १०,११,१२,१३। **शुभ-नक्षत्र**—तीनों उत्तरा, मृ. ह.अनु.रो.स्वा.श्र.ध.श.। **शुभ लग्न**—जब लग्न और ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ-ग्रह हों, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, सूर्य मंगल या गुरु लग्न को देखते हों, विषम राशि के नवांशक में चन्द्रमा हो, रजोदर्शनकाल से पहली चार रात्रि छोड़ १६ रात्रि तक समरात्रि में गर्भ हो तो पुत्र, विषम में कन्या होती है।

चित्रा, पुन., पुष्य, अश्विनी गर्भाधान के लिए मध्यम है।

गर्भाधान के लिए अशुभ-काल

भद्रा, ४, ६, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां, संक्रांति का दिन। सन्ध्याकाल, मंगल, रवि, शनिवार, रजोदर्शनकाल की पहली चार रात्रियां, ज्येष्ठा, रेवती और आश्लेषा नक्षत्रों के अन्त की दो घड़ी, मूल, अश्विनी और मघा के आदि की २ घड़ी ४, ८, १२ लग्नों के अन्त की आधी घड़ी, ५, ९, १, लग्नों की आधी घड़ी, ५, १, १५ तिथियों के अन्त की एक घड़ी, ६, ११, १ तिथियों के आदि की एक घड़ी, निधन तारा, जन्म नक्षत्र मूल, भरणी, अश्विनी, रेवती, मघा-नक्षत्र, ग्रहण के दिन व्यतिपात वैधृतियोग, माता-पिता के श्राद्ध का दिन, दिन का समय, परिघ योग का आधा भाग, उत्पात से हत-नक्षत्र, जन्मराशि से अष्टमलग्न, पापयुक्त-लग्न तथा नक्षत्र गर्भाधान के लिए वर्जित हैं।

गर्भ के मासों के स्वामी

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चन्द्रमा	शनि	बुध	गर्भाधान समय का लग्नेश	चन्द्रमा	सूर्य

स्त्री पुरुष के चन्द्रबल की विशेषता

विवाह और गर्भाधान संस्कार में स्त्री का चन्द्रबल रखना चाहिए, और अन्य कर्मों में पति का चन्द्रबल देखना चाहिए, यह सदा स्मरण रखे।

पुंसवन का मुहूर्त—यह गर्भाधान के तीसरे मास में गुरु, रवि, मंगलवार को मृ. पुन. पु. ह. मूल और श्रवण नक्षत्र में १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथियों में जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९ और १० स्थानों में शुभग्रह और ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों तब शुभ होता है। तीनों उत्तरा, रोहणी और रेवती नक्षत्र तथा सोम, बुध और शुक्रवार भी शुभ हैं।

सीमन्त संस्कार का मुहूर्त—गर्भाधान से छठे या आठवें मास में, जब मास का स्वामी बली हो तब पुंसवन के मुहूर्त में कही गई तिथियों, वारों नक्षत्रों और लग्नों में सीमन्त शुभ होता है।

सीमन्तजातकादीनि प्राशनान्तानि यानि च। न दोषोमलमासस्य मौढ्यस्य गुरु-शुक्रयोः॥

गर्भ-रक्षा के लिए विष्णुपूजा—गर्भाधान के आठवें मास में श्रवण, रोहिणी और पुष्य नक्षत्र में, शुभलग्न, वार और तिथियों में जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध हो तब विष्णु की पूजा करनी चाहिए।

मेधा-जनन संस्कार—बालक उत्पन्न होने के अनन्तर नाल काटने से पहले दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली के अग्रभाग में सुवर्ण लगाकर सुवर्ण सहित अंगुली से शहद और गौ के घी को मिलाकर 'ॐ भूस्त्वयि दधामि, ॐ भुवस्त्वयि दधामि, ॐ स्वस्त्वयि दधामि, ॐ, भूर्भुवः स्वः सर्वं त्वयि दधामि" इन चारों मन्त्रों से बालक को थोड़ा-थोड़ा चार बार मधु चटावें। ऐसा करने से बालक बुद्धिमान् और यशस्वी होता है।

स्तन पान कराने या सूतिका पथ्य का मुहूर्त—रिक्तामा, भद्रा, व्यतिपात, वैधृति को छोड़कर शुभ तिथियां हों, वार चं. बु. गु. श. हों, नक्षत्र-मृग. पुन. पु. श्र. रे. म. हों, तब स्तनपान कराना शुभ है। आगे अन्नप्राशन में कही गई तिथि नक्षत्रों में सूतिकापथ्य शुभ है।

प्रसूता स्त्री के स्नान का मुहूर्त—रेवती, तीन-उत्तरा, रो, मृ, ह, स्वा, अश्विनी और अनुराधा नक्षत्रों में रवि गुरु और भौम वारों में, १,२,३,५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथियां शुभ हैं। आर्द्रा पुन. पु. श्र. म. भ. कृ. वि. मू. और चित्रा नक्षत्र तथा शनि और बुधवार त्याज्य हैं अन्य नक्षत्र और वार मध्यम हैं।

प्रसूतास्त्री के जलपूजन का मुहूर्त—मास समाप्त होने पर बुध, गुरु या चन्द्रवार की ४, ९, १४ तिथियों को छोड़ कर अन्य तिथियों में, श्र. पुन. पु. मृ. ह. मू. अनु. नक्षत्रों में जलपूजन उत्तम है। परन्तु गुरु और शुक्र के अस्त में चैत्र, पौष या अधिक मास में (मास पूरा होने पर भी) जलपूजन नहीं करना चाहिए।

जातकर्म और नामकरण का मुहूर्त—संक्रान्ति का दिन, भद्रा और व्यतिपात को छोड़कर १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ तिथियों में जन्मकाल से ११वें या १२वें दिन सोम, बुध और शुक्रवार को मृ. रे. चि. अनु. तीनों उत्तरा. रो. ह. अश्विना पुष्य, अभि, स्वा. पुन. श्र. ध. श. नक्षत्रों जब लग्न से १, ४, ५, ७, १० स्थानों में शुभग्रह तथा ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, तब शुभ होता है।

अथ दोला (झूला) आरोहण मुहूर्त

सूर्यनक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गिनें				
५	५	५	५	७
नैरुज्य	मरण	कृशता	व्याधि	सौख्य

जन्मदिन से १०।१२।१६।१८।३२ दिन शुभवार में, मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. तीनों उत्तरा. रो. नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इनसे रहित तिथियों में १।४।५।६।७।९।१० इन लग्नों में शुभग्रह से युक्त होने पर १।४ ११वें शुभ ग्रह हों ३।६।११वें पापग्रह हों तो उत्तम होता है।

निष्क्रमण मुहूर्त—स्वा. अश्वि. पुन. ह. मू. पु. अनु. श्र. रो. ध. नक्षत्रों में भौम.-शनि को छोड़ कर अन्य वारों में, रिक्ता अमा भद्रादि से रहित शुभ दिन में तीसरे चौथे मास में शुभ है। शीघ्रता होवे तो १२वें दिन बालक का निष्क्रमण करें। इसी दिन सूर्य और नक्षत्र पूजन पूर्वक सूर्य नक्षत्रों का दर्शन करावें।

भूम्युपवेशन मुहूर्त—पांचवें महीने में पृथ्वी वराह का पूजन करके भौम के पर्वोत्तर में तीनों उत्तरा. रो. मृ. ज्ये. अनु. अश्वि. ह. पुष्य. अभि. इन नक्षत्रों में, ४।६।१४।३० इन तिथियों को छोड़कर स्थिरलग्न में शुभदिन में बालक के करधनी का द्विसूत्र बांध कर पृथ्वी पर बैठावें।

भूम्युपवेशन के लिए मन्त्र—"रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभे। आयुः प्रमाण सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये! इति ॥" इसी समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, वस्त्र, शस्त्र, स्वर्ण, चांदी, तुला आदि वस्तु रखे, जिसको बालक ग्रहण करे, उससे उसकी आजीविका होती है।

अन्नप्राशन का मुहूर्त—जन्ममास से ६, ८, १० या १२वें मास में पुत्र का और ५, ७, ९ या ११वें में कन्या का भद्रादि-दोष रहित १, २, ५, ७, १०, १३, १५ तिथियों में सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को म. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पु. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. तीनों उत्तरा, रोहिणी नक्षत्रों में, जन्मराशि या जन्मलग्न से आठवें लग्न या नवांशक तथा मेष वृश्चिक और मीन लग्न को छोड़ कर ऐसे लग्न में कि १, ३, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह हों या शुभग्रह की दृष्टि हो, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों दशम स्थान पापग्रह-रहित हो, १, ६, ८ स्थान में चन्द्रमा न हो तो शुभ होता है। किसी किसी के मत से जन्म-नक्षत्र अनु. शत-तारका और स्वाती अशुभ हैं।

कर्णवेध का मुहूर्त—चैत्र पौष देवशयन (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक) जन्ममास, जन्मनक्षत्र ४, ६, १४ तिथियां, जन्मतारा क्षयतिथि और समवर्षों को छोड़कर जन्म से १२वें दिन या १६वें दिन, ६ठें ७वें, ८वें मास या विषम वर्षों में सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को, श्र. ध. पुन. मृ. रे चि. अनु. ह. अश्वि. पु. अभि. नक्षत्रों में जब लग्न से अष्टम स्थान शुद्ध हो, १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों, ३, ६, ११ स्थानों में पाप ग्रह हों तुला, वृष, धनु, या मीन लग्न में बृहस्पति हो तो कर्णछेदन श्रेष्ठ है। इस संस्कार के समयपर करने से मनुष्य के हार्निया (आन्त्रवृद्धि) जैसे भयानक रोग की जड़ ही कट जाती है।

कन्या का नासिका छेदन का मुहूर्त—कर्णवेधोक्त नक्षत्रों में तथा उत्तरा ३, शत. स्वा. में शुभ तिथ्यादिक शुक्लपक्ष में दिनके प्रथमप्रहर के समय नासिका-वेध शुभ है।

मुण्डन मुहूर्त—गर्भाधानकाल से या जन्मकाल से विषम अर्थात् ३ रे ५वें, ७वें वर्ष में (मनु जी के मत से प्रथम वर्ष में भी) चैत्र को छोड़कर उत्तरायण सूर्य में चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार, लग्न तथा नवांशक में, जन्मराशि या जन्मलग्न से अष्टम लग्न को छोड़ २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में संक्रांति के दिन को छोड़ कर जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध (ग्रह रहित) हो, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, ज्ये. मृ., रे. चि. स्वा. पुन. श्र. ध. शत. ह. अश्वि. पुष्य और अभिजित नक्षत्रों में शुभ है। लड़के की माता को पांचमास का गर्भ हो तो मुण्डन निषिद्ध है, परन्तु ५ वर्ष में अधिक अवस्था के बालक के लिए निषेध नहीं है। जेठे लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिए।

मुण्डन कर्म में विशेष—स्व-कुल शिष्टाचारानुसार पूर्वोक्त नक्षत्र तिथ्यादि शुभ समय में अपने अपने इष्टदेव के स्थानों में मुण्डन तथा कर्णवेध का होना देखा जाता है, सो "यथाकुलधर्मं वः" इस स्मृति के स्मरण से ठीक ही है।

क्षौर बनवाने का मुहूर्त—मुण्डन के लिए जो तिथियां और नक्षत्र शुभ बतलाए गये हैं, वे ही हजामत बनवाने के लिए शुभ हैं। वर्जित काल शनि, रवि, भौमवार, हजामत में नौवें दिन, संध्याकाल, ४, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां, संक्रान्ति का दिन, रात्रि में बिना आसन, संग्राम में, यात्रा करने के दिन, स्नान करके, शरीर में उबटन लगवाकर या भोज के पीछे हजामत बनवाना अशुभ है।

विशेष फल—यज्ञ विवाह, मृतक कर्म में, कारागार से छूटने पर, ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से किसी भी समय हजामत बनवाई जा सकती है। किसी आचार्य का मत है कि जो लोग राजकार्य से नियुक्त हैं वे रूपजीवी जैसे नट, भाड आदि किसी दिन हजामत बनवा सकते हैं। वर्णभेद से क्षौर का वार—ब्राह्मण रविवार को, क्षत्रिय सोमवार को, वैश्य और शूद्र शनिवार को क्षौरोक्त तिथ्यादि में हजामत बनवा सकते हैं।

अक्षरारम्भ का मुहूर्त—जन्म से ५वें या ७वें वर्ष में उत्तरायण सूर्य में गणेश, विष्णु सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन करके सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को ह., अश्वि., पुष्य, अभि. श्र. स्वा. रे. पुन. आर्द्रा. चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों के बुरे योगों और भद्रा को छोड़ कर २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में (शुक्लपक्ष उत्तम) अक्षरारम्भ शुभ होता है। लग्न में मेष, कर्क, तुला, और मकर राशियां नहीं होनी चाहिएं।

विद्यारम्भ का मुहूर्त—उत्तरायण में (कुम्भ का सूर्य छोड़कर) रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार को २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में म., आर्द्रा, पुन., हस्त, चि., स्वा., श्र ध. शत., अश्विनी, मू., तीनों उत्तरा, रो, पुष्य, आश्ले., अनु., रेवती नक्षत्रों में, जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० स्थान में शुभ ग्रह हों तो विद्यारम्भ शुभ है।

फारसी अंग्रेजी विद्यारम्भ का मुहूर्त—सूर्य, भौम, शनिवार हों, ४।६।१४ तिथि हों, ज्ये. आश्ले. म. तीनों पूर्वा. भ. कृ. वि. आर्द्रा उ. षा. शत. नक्षत्र शुभ है।

सीने पिरोने (सूचि-कर्म) का मुहूर्त—अश्वि. पु. चि. अनु. ध. ये नक्षत्र, सूर्य, बुध, चन्द्र. बृ. श. ये वार, १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१३।१५ ये तिथियां शुभ हैं।

यज्ञोपवीत संस्कार का मुहूर्त—यज्ञ और उपवीत इन दो शब्दों से यज्ञोपवीत बना है। देवताओं की पूजा, संगति (सम्मेलन या कान्फ्रेंस) और जिसमें दान हो, उसे यज्ञ कहते हैं। उपवीत का अर्थ है पिरो देने वाला अर्थात् देवपूजा, सम्मेलन और दान के साथ पुरुष को मिला देने वाला संस्कृत (तन्तु-धागा-विशेष) यह यज्ञोपवीत का अर्थ हुआ। बालक की गुरु, चन्द्र शुद्धि देखकर जन्म से या गर्भ से (गर्भाज्जनेर्वा इति पारस्करमन्वादीनां मते विकल्पः) ब्राह्मण आठवें वर्ष, क्षत्रिय ११वें, वैश्य १२वें, इन वर्षों में यदि न किया जाए तो ब्राह्मण १६ तक, क्षत्रिय २२ तक और वैश्य २४ वर्ष तक संस्कार कर सकते हैं। उसके बाद सावित्री पतित व्रात्य संज्ञा वाले होते हैं। माघादि पांच मासों में देवशयनी से पूर्व ह. अश्वि. पुष्य. अभि. ३उत्तरा, रो., आश्ले., स्वा., श्र., ध., मू., मृ., रे., चि., अनु., तीनों पूर्वा, आर्द्रा वेध रहित इन नक्षत्रों में (क्षत्रिय वैश्यों के लिए पुनर्वसु भी ग्राह्य हैं) सू. चं. बु, (बुधास्त हो तो बुधवार त्याज्य) श. गुरुवार को, शुक्ल २।३।१०।११।१२ तथा कृष्ण २।३।५ तिथियों में शुभ है। किन्तु सोपपदा तिथी जैसे आषाढ़ शुक्ल १०, ज्येष्ठ शुक्ल २, पौष शुक्ल ११, माघशुक्ल १२ को और संक्रांति दिन को तथा रोग बाण को छोड़कर मध्यान्ह से पहले शुभ है। शु. गु. चं. और लग्नेश, ६।८ वे स्थान में, चं. शु. १२वें स्थान में, और १।५।८वें में पापग्रह अशुभ है। शुभग्रह ६।८।१२ स्थानों के सिवाय अन्य स्थानों में, पापग्रह ३।६।११ स्थानों में, वृष या कर्क का सम्पूर्ण चन्द्रमाः लग्न में हो तो शुभ होता है। गुरु शुक्र के बाल्य, वृद्धत्व, अस्त के समय को छोड़कर उपनयन शुभ है। यदि गोचराष्टक वर्ग से बालक से उपनयन संस्कार के लिए समय शुद्धि न मिले। अथवा सिंह, मकर किसी अशुभ स्थान में गुरु हो तो सौर चैत्र में उपनयन संस्कार किया जा सकता है ऐसी शास्त्र की आज्ञा है।

योनि-नाड्यादि-ज्ञान चक्र

नक्षत्र	योनि	महावैर योनि	नाड़ी	गण	मुख	नेत्र	संज्ञा	स्वरूप	कितने तारा साप में	पंच शलाका में विद्ध	सप्त शलाका में विद्ध
अ.	अश्व	महिष	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्रलघु	अश्वमुख	३	पू.फा.	पू.फा.
भ.	गज	सिंह	मध्य	मनुष्य	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	योनि	३	अनु.	म.
कृ.	मेष	वानर	अन्त्य	राक्षस	अधो.	सुलो.	मिश्रसाधा	क्षुर	६	वि.	श्र.
रो.	१ पं	नकुल	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व.	अंध	ध्रुवस्थिर	शकट	५	अभि.	अभि.
मृ.	सर्प	नकुल	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मृदुमैत्र	मृगमुख	३	उपा.	उपा.
आ.	श्वान	मृग	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व.	मध्य	तीक्ष्णदारु	मणि	१	पूपा	पूपा.
पुन.	मार्जार	मूषक	आदि	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	गृह	४	मू.	मू.
पुष्य	मेष	वानर	मध्य	देव	ऊर्ध्व.	अंध	क्षिप्रलघु	बाण	३	ज्ये.	ज्ये
आश्ले.	मार्जार	मूषक	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मंद	तीक्ष्णदारु	चक्र	५	ध.	अनु.
म.	मूषक	मार्जार	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	गृह	५	श्र.	भ.
पू.फा.	मूषक	मार्जार	मध्य	मनुष्य	अधो.	सुलो.	उग्रक्रूर	मंचक	२	अश्वि	अश्वि.
उ.फा.	गौ	व्याघ्र	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व.	अंध	ध्रुवस्थिर	शय्या	२	रे.	रे.
ह.	महिष	अश्व	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्रलघु	कर	५	उभा	उभा
चि.	व्याघ्र	गौ	मध्य	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	मृदुमैत्र	मुक्ता	१	पूभा	पूभा
स्वा.	महिष	अश्व	अन्त्य	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	मूंगा	१	श.	श.
वि.	व्याघ्र	गौ	अन्त्य	राक्षस	अधो.	अंध	मृदुमैत्र	तोरण	४	कृ.	ध.
अनु.	मृग	श्वान	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मिश्रसाधा.	बलिनिभ	४	म.	आश्ले.
ज्ये.	मृग	श्वान	आदि	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	तीक्ष्णदारु	कुंडल	३	पुष्य	पु.
मू.	श्वान	मृग	आदि	राक्षस	अधो.	सुलो.	तीक्ष्णदारु	सिंहपुच्छ	११	पुन	पुन.
पू. षा.	वानर	मेष	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व.	अंध	उग्रक्रूर	गजदन्त	२	आ	आ.
उ. षा.	नकुल	सर्प	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व.	मंद	ध्रुवस्थिर	मंचक	२	मृ.	मृ.
अभि.	नकुल	सर्प	०	०	०	मध्य	क्षिप्रलघु	त्रिकोण	३	रो.	रो,
श्र.	वानर	मेष	अन्त्य	देव	ऊर्ध्व.	सुलो.	चरचल	वामन	३	म.	कृ.
ध.	सिंह	गज	मध्य	राक्षस	ऊर्ध्व.	अंध	चरचल	मर्दुल	४	आश्ले	वि.
श.	अश्व	महिष	आदि	राक्षस	ऊर्ध्व.	मंद	चरचल	बर्तुल	१००	स्वा.	स्वा.
पू. भा.	सिंह	गज	आदि	मनुष्य	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	मंचक	२	चित्रा.	चित्रा.
उ. भा.	गौ	व्याघ्र	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व.	सुलो.	ध्रुवस्थिर	यमलाम	२	ह.	ह.
रे.	गज	सिंह	अन्त्य	देव	तिर्यक्	अंध	मृदुमैत्र	मृदंग	३२	उफा.	उफा.

नामाक्षरों के वर्ग देखने का कोष्ठक ।

स्वकीय वर्ग से पंचम वर्ग वैरी और चतुर्थ मित्र समझना चाहिए ।

अ ई उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुड़	मार्जार	सिंह	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

वर्ण ज्ञान चक्र

वर्ण→	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
राशि→	१२।४।८	१।५।९	२।६।१०	३।७।११

मेलापक सारिणी देखने की रीति

मूहूर्त शास्त्रोक्त गुण दोषों के अनुसार आगे वर-कन्या मेलापक सारिणी एकत्र की हुई दी जाती है। देखने वाले को वर-कन्या के नक्षत्र और चरणमात्र के जानने की आवश्यकता है। कन्या के नक्षत्र पड़े और वर के खड़े स्तम्भ में मिलेंगे। जब नक्षत्र और चरण दोनों के मिलें तो देखिये कि खड़े और पड़े स्तम्भ किस कोष्ठक पर जाकर मिलते हैं। जिस कोष्ठक में मिले उस में गुणों की संख्या दी हुई है। बस उतने ही गुण मिलते है। गुणों वाली संख्या के नीचे उसी खाने में प्रायः कोई संख्या या चिन्ह भी है। उसका विवरण यह है, कि—नाड़ी दोष की जगह (३), गण महादोष की जगह (१), भकूट महादोष षड़ष्टक में (६), नवपञ्च में (५), द्विर्द्वादश मे (४), और योनिवैर में (२), जहां कन्या का नक्षत्र वर के नक्षत्र से पहले है वहां शून्य (०) रखा है। जहां थोड़ा दोष समझा गया, वहां ऋण का (—) और जहां अधिक समझा गया वहां धन का चिन्ह (+) दिया गया है। गुणों की संख्या के नीचे कोई अंक व चिह्न नहीं है। वहां निर्दोष समझना चाहिए। जैसे वर का जन्म शतभिषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में और कन्या का जन्म आर्द्रा के दूसरे चरण में हुआ हो तो इन नक्षत्रों के पड़े और खड़े स्तम्भ जहां मिलते हैं वहां ऊपर १२ और नीचे १३५ लिखा है, जिससे यह समझना चाहिए कि ३६ गुण में केवल १२ मिलते हैं और गण महादोष, नाड़ीदोष और भकूट का नवम पञ्चम दोष हैं इसलिए सम्बन्ध अशुभ हैं। यदि भकूट दोष न हो तो २० गुण मिलने पर मध्य और इसमें अधिक मिले तो श्रेष्ठ है। परन्तु दुष्ट भकूट मे २५ गुण तक मध्यम और उसके ऊपर श्रेष्ठ समझना चाहिए। शुभ भकूट में १६ गुण से कम हों और दुष्ट भकूट में २० गुण से कम हों तो विवाह के लिए विचार नहीं करना चाहिए। क्योंकि अशुभ हैं।

नाड़ी-दोष-परिहार—यदि वर कन्या की राशि एक हो और जन्म नक्षत्र भिन्न हो; अथवा दोनों का जन्मनक्षत्र एक हो राशि भिन्न हो तो नाड़ीदोष एवं गणदोष नहीं होता। यदि दोनों का नक्षत्र एक हो, परन्तु चरणभेद हो तो भी नाड़ीदोष नहीं होता। आवश्यके दोष शान्ति—द्विर्द्वादश दोष होने पर ताम्र-सुवर्ण, वर्णादि दोष में अन्न वस्त्र, सुवर्ण, नव पंचम में कांसी चांदी, अशुभ षडष्टक में गोमिथुन अथवा गाय अन्न वस्त्र सुवर्णादि का दान करने पर पाणिग्रहण करें। "गावोऽन्नं वसनं हेम सर्वं दोषापहारकम्।—(गुरुः)। महादोष एकनाड़ी हो तो अत्यावश्यकता में शान्त्यर्थं महामृत्युंजय का जप तथा कम से कम ३१ रत्ती स्वर्ण की नाड़ी एवं गोदान करने पर ही पाणिग्रहण करें अन्यथा नहीं।

अपवाद—न वर्गवर्णो न गणो न योनिर्द्विर्द्वादशे नैव षड़ष्टके वा। तारा विरुद्धे नव पञ्चमे वा राशीशमैत्री शुभदा विवाहे ॥ राशीशयोः सुहृद्भावे मित्रत्वे वांशनाथयोः। गणादि दोष्टयेऽप्युद्वाहः पुत्रपौत्रप्रवर्धनः ॥

मिलान के बिना ही विवाह—जो कन्या स्वयं वर का वरण करे, अथवा जहां वर-कन्या को परस्पर देखने से ही वर-कन्या के मन एवं नेत्रों को सन्तोषानुभूति हो, अथवा पुनर्भू एव क्रीता—स्त्री के साथ सम्बन्ध स्थापित करने के लिए गुण-ग्रह मेलापकादि विचार शास्त्र विहित नहीं है।

कन्याराशि	वरराशि →	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
	भानि	अ ॥॥	भ ॥॥	कृ ।	कृ ॥।	रो ॥॥	मृ ॥	मृ ॥	आ ॥॥	पुन ॥।	पुन ।	पु ॥॥	श्ले ॥॥	म ॥॥	पूफा ॥॥	उफा ।	उफा ॥।	ह ॥॥	चि ॥	चि ॥	स्वा ॥॥	वि ॥।	वि ।	अनु ॥॥	ज्ये ॥॥	मू ॥॥	पूषा ॥॥	उषा ।	उषा ॥।	श्र ॥॥	ध ॥	ध ॥	शत ॥॥	पूभा ॥।	पूभा ।	उभा ॥॥	रे ॥॥
मेष	अ ॥॥	२८ ३	३३ ०	२७॥	१७॥ ४	२३॥ -४	२२॥ -४	२५॥	१६॥ ३	१७॥ ३	२२॥ ३	३०॥	२७	२० +५	२४ ५+	१४॥ ३५	९॥ ३६	१०॥ २३६	१२॥ ६	२२	२८ -२	२२	१८॥ -६	२४॥ -६	१३ ३६	१२॥ ३५	२४॥ +५	२३ ५+	२५	२६	२०	२६॥	१४॥ ३	१५॥ ३	१४॥ ३४	२३॥ ४+	२६ ४+
	भ ॥॥	३३	२८ ३	२८ ०१	१८ ७४१	२६॥ -८	१४॥ ३८	१७॥ ३	२५॥	२५॥	३०॥	२२॥ ३	२४॥ १	१९ -१५	१७ ३५	२४ ५+	१९ ६	१०॥ ६	३॥ १३६	१३ १३	२८	२१ -१	१८॥ -१६	१७॥ ३६	१९॥ -१६	१९॥ -१५	१७॥ ३५	२५। ५+	२७॥	२६	१० १२३	६॥ १३२	१६॥ -१	२३ -२	२२॥ २४+	१९॥ ३४	२५॥ ४+
	कृ ।	२६॥	२८ १	२८ ३	१८ ३४	१० ०१३४	१६॥ ४	१६॥	१६॥ १	१६॥	२४॥	२६॥	२२॥ ३	१५॥ ३५	१९ १५	२० १५	१५ १६	१४ ६	१७॥ ६	२७	१४ ३	१६ ३	१६॥ ३६	१६॥ -६	२५॥ -६	२५ ५+	१६ १२५	११॥ ३१५	१३॥ १३	१३॥ २३	२५	२४॥	२५॥	१८॥ १	१७॥ १४	१६॥ १४	१०॥ ३४
वृष	कृ ॥।	१९ ४	१६ १४	१६ ३४	२८ ३	१८॥ १३	२६।	१७ ४+	१७ १४	१७ ४+	२१	२३	१६ ३	१६ ३	२१ १	२२ १	२० १५	१८ ५+	२३ ५+	२२ -६	६ ३६	१४ ३६	२१॥ ३	२४॥	३०॥	२२ ६	१५ १२६	७ १३६	१२ १३५	१०॥ ३५२	२४॥ +५	२६	३०	२३ १	२० १	२२ १	१३ ३
	रो ॥॥	२३॥ -४	२३॥ -४	१९ ३४१	२० ३१	२८ ३	१६ ०	२६॥ ०४	२३ ४+	२२ ४	२६	२७	१२ ३१	१०॥ ३१	२४॥	२७	२५॥ ५+	२५॥ ५+	१८॥ -१५	१७॥ -१६	१५ ३६	८ ११६	१४॥ ३१	२६॥	२३॥ १	१९॥ १६	१६॥ ६	११ ३६२	१६ ३५२	१८ ३४	१६ -१४	२५॥ -१	२८ -१	२६	२६	२७	१९ ३
	मृ ॥	२३॥ -४	१४॥ ३४	१८॥ -४	२७॥	३५	२८ ३	१८॥ ३४	२३॥ ०४	२२॥ ४+	२६	१६ ३	२१	१६॥	१५॥ ३	२४॥	२३ ५+	२५॥ ५+	११॥ ३५	१०॥ ३६	२४॥ -६	१७ -६	२३॥	२१॥ ३	२४॥	१४॥ ६	१०॥ ३६	१६॥ २६	२१॥ २५+	२६ ५+	१२ ३५	१७॥ ३	२६॥	२८	२५	१८ ३	२७
मिथुन	मृ ॥	२६॥	१७॥ ३	२१॥	१६ +४	२६॥ ४+	१६॥ ३४	२८ ३	३३ ०	३१॥	१८॥ -४	११॥ ३४	१३॥ ४	२२॥	१८॥ ३	२७॥	३१॥	२४	२० ३	१३ ३५	२७ +५	१६॥ ५+	१३ ६	१३ ३६	१४ ६	२३	१६ ३	२५ २+	१६॥ -२६	२४ -६	१० ३६	१२ ३५	२१ ५+	२२॥ ५+	२४	१७ ३	२६
	आ ॥॥	१८॥ ३	२६॥	२१॥ १	१६ +१४	२४ +४	२५॥ ४	३४	२८ ३	२५ ३०	१२ ०३४	२०॥ -४	१२॥ १४	२१॥ १	२७॥	२०॥ ३	२४॥ ३	२४॥ ३	२७ १	२० -१५	२७ ५+	२० १५	१३॥ १६	१९ २६	५ १३६२	१५ १३	२८	२७	२१॥ -६	२२॥ -६	१७ -१६	१६ १५+	१२ १३५	१७ ३५	१८॥ ३	२६	२६
	पुन ॥।	१८॥ ३	२५॥	२१॥	१९ ४+	२२ ४+	२३ ४	३१॥	२८ ३	२८ ३	१४ -३४	२१ ४०	१५॥ -४	२१॥ +२	२५॥ +२	१९॥ ३	२३॥ ३	२४॥ ३	२६॥	१६॥ ५+	२७ ५+	२१ ५+	१४॥ ६	२०॥ ६	६ ३६	१४ ३	२७	२७	२१॥ -६	२२॥ -६	१६॥ -६	१८॥ +५	१३ ३५	१६ ३५	१७॥ ३	२६॥	२६
कर्क	पुन ।	२१॥ ३	२८॥	२४॥	२१	२४	२५	१६ ४	१० ३४	१३ ३४	२८ ३	३४ ०	२८॥	१६॥ +२४	२०॥ २४	१४॥ ३४	२६॥ ३	१७॥ ३	१६॥	२९	२६॥	२०॥	१६ ५+	२५ ५+	२०॥ ३५	७॥ ३६	२०॥ -६	२०॥ -६	२६	२७	२१	१२ ६	५॥ ३६	६॥ ३६	१६ ३५	२५ ५+	२४॥ १+
	पु ॥॥	२१॥	२०॥ ३	२६॥	२३	२५	१८ ३	१०॥ ३४	१८॥ ४	२४ ४	३४	२८ ३	२६ ०	१८॥ +४	१४॥ ३४	२३॥ ४+	२५॥	२५॥	११॥ ३	११ ३	२५	२०॥	१६ -५	१७ ३५	२० -५	१७ ६.	१२॥ २३६	२०॥ ६	२६	२७ -२	१३ ३	४ ३६	१३ ६	१७॥ ६	२६ ५+	१८ ३५	२६ ५+
	श्ले ॥॥	२५	२३ १	२१॥ ३	२२॥ ३	११ ३१	१६	११॥ ४	११॥ १४	१३ ४	२७॥	२८	२८ ३	१५ ०१४२	१५॥ १४२	१७॥ १४	१६॥ १	१६॥	२४॥	२४	११ ३	१६ ३	२४॥ ३५	१६ -५	२५ -५	२२॥ ६	१५॥ १६	७॥ ३१६	१३ १३	१३ ३	२६	१७ ६	१८ ६	११ १६	१७॥ १५	२० १५	१२ १५
सिंह	म ॥॥	१९ +५	१९ १५	१५॥ ३५	१६॥ ३	९॥ ३१	१७॥	२०॥	२०॥ १	१६॥ -२	१६ +२४	१८॥ ४+	१६ ३४२	२८ ३	३० ०१	२६॥ १	१४॥ १४	१४॥ ४+	१६॥ ४	२३॥	१०॥ ३	१५॥ ३	२४॥ ३	२४॥	३२	२४ -५	१९ १५	८॥ १३५	३॥ ३१६	४॥ ३६	१७॥ ६	२३॥	२४॥	१७॥ १	१७॥ २६	१८॥ १६	१३ ३६
	पूफा ॥॥	२५ ५+	१७ ३५	१६ -१५	२० १	२३॥	१५॥ ३	१८॥ ३	२६॥	२५॥ -२	२२॥ २४	१६॥ ३४	१६॥ -१२४	३० -१	२८ ३	३४ ०	२४ ०४	२०॥ ४+	५॥ १३४	९॥ १३	२४॥	१७॥ १	२३॥ -१	२२॥ ३	२४॥ -१	२० १५+	१७ ३५	२४ ५+	१९ ६	१८॥ ६	५॥ १३६	९॥ १३	१०॥ १.	२३॥	२३॥ -६	१६॥ ३६	२४॥ -६
	उफा ।	१५॥ ३५	२५ ५+	२१ -१५	२१ १	२६	२४॥	२७॥	१९॥ ३	१७॥ ३	१४॥ ३४	२५॥ ४+	१८॥ -१४	२६॥ -१	३४	२८ ३	१६ ३४	१५ ०३४	१२॥ १४२	१६॥ १२	२५॥	१६॥ १२	२२॥ -१२	२०॥	१६॥ १३	९॥ १३५	२५ ५+	२५ ५+	२० ६	२० ६	११॥ १६	२७॥ १	१०॥ १३	१५॥ ३	१५॥ ३६	२६॥ -६	२४॥ ६-
कन्या	उफा ॥।	११ ३६	२१ ६	१६ १६	२०॥ +१५	२५॥ ५+	२४. ५+	३१॥	२३॥ १	२३॥ ३	१७॥ ३	२७॥	२०॥ १	१५॥ १४	२३ ४+	१७ ३४	२८ ३	२७ ३०	२४॥ १२+	१६॥ २२४	२४॥ ४+	१६॥ १२४	१८ १२	२६	१२ १३	१४ १३	२६॥	२६॥	२४ +५	२४ ५+	१५॥ +१५	१६॥ -१६	६॥ ३१६	१४॥ ३६	२७ ३	२८	२६
	ह ॥॥	११ २३६	१८॥ ६	१७॥ १६	२०॥ +५	२३॥ ५+	२४॥ ५+	३२	२२॥ ३	२३॥ ३	१८॥ ३	२६॥	२१॥	१६ ४	२०॥ ४	१५ १४	२६ ३	२८ १	२८ ०	२० ०४	२६॥ ४+	१८॥ ४+	२०	२६	१३॥ ३	१५ ३	२७	२८॥	२३ १+	२४ ५+	१८ ५+	१६ -६	१०॥ ३६२	१३॥ ३६	१६ ३	२६	२६
	चि ॥	१२॥ १	४॥ १३६	१८॥ ६	२१ ५+	१८॥ १५	१०॥ ३५	१८ ३	२२ १	२४॥	१६॥	११॥ ३	२५॥	२०॥ -४	६॥ १३४	१३॥ १२४	२४॥ १३	२७	२८ ३	१९ ३४	१२ ०४	२५॥ ४+	२७	११	२५	२७	१३ १३	२१ १	१५॥ १५	१७ ५+	१५ ३५	१६ १६	२४ -६	१६॥ १६	१६ १	१० ११३	१६

मेलापक सारणी

	वरस्य →	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
कन्या	भाग	म १	भ १	कृ ।	कृ ।।।	रो १	मृ ॥	मृ ॥	आ १	पुन ।।।	पुन ।	पु १	श्ले १	म १	पूफा १	उफा ।	उफा ।।।	ह १	चि ॥	चि ॥	स्वा १	वि ।।।	वि ।	अनु १	ज्ये १	मू १	पूषा १	उषा ।	उषा ।।।	श्र १	ध ॥	ध ॥	शत १	पूभा ।।।	पूभा ।	उभा १	रे १
तुला	वि ॥	२२	१४ १३	२८	२३ ६	१८॥ १६	१०॥ ३६	१२ ३५	२० १५	१८॥ ५+	२९	११ ३	२५	२४॥	१०॥ १३	१७॥ १२	१७॥ १२४	२० ४+	२० ३४	२८ ३	२७॥ ०	३३॥	२॥ ४	६॥ ३४	२०॥ ४	२७	१३ १३	२१ १	२३॥ १	२५	२३ ३	१८ ३५	२६ ५+	१८॥ १५	२२ २६	३ १३६२	१२ ६
	स्वा १	२६ २	२८	१६ ३	११ ३६	१४ ३६	२४ -६	२६ ५+	२६ ५+	२७ ५+	२७॥	२६	२३ ३	२२॥ ३	२४	२५॥	२५॥ ४	२७॥ ४+	२१ ४+	२८	२८ ३	२० ०३	९ १४०	२१॥ ४	१६॥ ४	२३	२७	१८ ३	२१॥ ३	२२॥ ३	२९	२१ ५+	२२ ५२+	२५ ५+	१८॥ ६	१६ ६	११ ३६
	वि ।।।	२१	२२ १	२० ३	१५ ३६	९ १३६	१७ -६	१८॥ ५+	२० १५	२० ५+	२०॥	२०॥	१७ ३	१६॥ ३	१८॥ १	१७॥ १२	१७॥ १४२	१८॥ ४+	२६ ४-	३३॥	१९ ३	२८ ३	१६ ३४	१६ ०४	२१॥ ४	२७	२१ १	१३ १३	१५॥ १३	१५॥ ३	२९॥	२४ ५+	२६ ५+	२० १५	१३॥ १६	१२॥ १६२	४ ३६
वृश्चिक	वि ।	१६। ६+	१६॥ १६	१४॥ ३६	१९॥ ३	१३॥ १३	२१॥	११ ६	१२॥ १६	१२॥ ६	१८ -५	१८ ५-	१४॥ -३५	२४॥ ३	२२॥ १	२१॥ १२	१७ १२	१८	२६	२१॥ ४	७ ३४	१५ ३४	२८ ३	२७ ०	३१॥	२१॥ ४+	१५॥ ४१	७॥ १३४	११ १३	११ ३	२५	२४	२५॥	१६॥ १	१६ १५	१८ १५२	९॥ ३५
	अनु १	२३॥ ६	१४॥ ३६	१८॥ -६	२३॥	२७॥	२०॥ ३	१० ३६	१५ २६	१७॥ ६	२५ -५	१७ ३५	२० -५	२४॥	२०॥ ३	२८॥	२४	२५	२१ ३	६॥ ३४	२०॥ ४	१६ ४	२८	२८ ३	३१ ०	१५॥ २४+	१३॥ ३४	२१॥ ४+	२५	२६	१२ ३	११ ३	२०	२४॥	२४ ५+	१७ १५	२९ ५+
	ज्ये १	१० ३६	१७॥ १६	२३॥ -६	२८॥	२२॥ १	२६॥	१२ ६	२ ३१६२	४ ६३	१९॥ ५३	१६ ५+	२५ -५	३१	२३॥ १	१५॥ १३	११ १३	११ ३	२४	१६॥ ४	१४॥ ४	१६ ४	३१॥	३०	२८ ३	१४ ०२३४	१६॥ १४	१६॥ १४	२० १	२०	२५	२४	१७ ३	१० १३	९॥ १३५	२० १५	२० +५
धनु	मू १	११॥ ३५	१६ १५	२५ ५+	१६॥ ६	१२॥ १६	१२॥ ६	२१	१४ १३	१२ ३	७॥ ३६	१७॥ ६	२३ ६	२४ ५+	१८ १५	१६॥ १५३	१३ ३१	१३ ३	२६	२६	२१	२६	२२॥ ४+	१६॥ +२४	१९ ३४	२८ ३	२८ ०१	१५॥ १	१३॥ १४	१४॥ ४	१६॥ ४	२८॥	२१॥ ३	१४॥ १३	१९॥ १३	२४॥ १	२६
	पूषा १	२५॥ ५	१७॥ ३५	१९॥ -१२५	१४ १६२	१८॥ ६	१०॥ ३६	१६ ३	२६	२७	२२॥ ६	१४॥ २३६	१६॥ १६	१६ -१५	१७ ३५	२५ ५+	२८॥	२७	१२ १३	१२ १३	२७	२० १	१६॥ -१४	१५॥ ३४	१७॥ -१४	२७ १+	२८ ३	३४ ०	२२ ०४	२२॥ ४	५॥ १३४	४॥ ३	२३॥ १	२८॥	२९॥	२२॥ ३	३०॥
	उषा ।	२४ ५	२५॥ ५	११॥ १३५	६ १३६	१० २३६	१६॥ २६	२५ २+	२६	२७	२२॥ ६	२२॥ ६	८॥ १६३	८॥ १५३	२४ ५+	२ ५+	२८॥	२८॥	२० १	२० १	१६ ३	१२ १३	८॥ १३४	२३॥ ४+	१७॥ -१४	२५ -२	१५	२८ ३	१६ ३४	१५ ०३४	१३॥ १४	२३॥ १	२३॥ १	२८॥	२९॥	१०॥	२२॥ ३
मकर	उषा ।।।	२७	२८॥	१४॥ १३	१२ १३५	१६ २३५	२२॥ २५+	१६॥ २६+	२४॥ -६	२१॥ -६	२८	२८	१४ १३	४॥ १३६	२० ६	२१ ६	२४ ५+	२४ ५	१५॥ १५	२२॥ -१	२१॥ ३	१४॥ १३	१२ ३१	२७	२१ १	१४॥ १४	२४ ४	१७ ३४	२८ ३	२७ ०३	२५॥ १+	१५॥ +१४	६॥ १+	२१॥ ४+	२९॥	१०॥	२२॥ ३
	श्र १	२८	२७	१४॥ ३२	१२ ३५२	१७ ३५	२६ ५+	२३ -६	१६॥ -६	२१॥ -६	२८	२८ २+	१४ ३	५॥ ३६	१८॥ ६	२० ६	२३ ५+	२४ ५+	१६ ५	२४	२१॥ ३	१४॥ ३	१२ ३	२७	२१	१४ ४	२२॥ ४	१५ ३४	२६ ३	२८ ३	२७ -०	१७ ०४	१७॥ ४+	२०॥ ४+	२८॥	२६॥	२३ ०
	ध ॥	२०	११ १३२	२६	२३॥ ।५॥	१५ १५	११ ३५	८ ३६	१६ १६	१४॥ -६	२२	१३ ३	२७	१८॥ ६	४॥ १३६	१०॥ १६	१५॥ १५	१७ ५+	१५ ३५	१९ १	२४	२८॥	२६	१२ ३	२६	२०॥ ४	६॥ ३४१	१४॥ ४१	२५॥ १	२७	२८ ३	१७ ३४	२३ ०४	१७॥ १४	२४॥ १	१५ १३	२२॥ +२
कुम्भ	ध ॥	१९॥	१०॥ १३२	२५॥	३०	२५॥ १	१७॥ ३	११ ३५	१८ १५	१७ +५	१२ ६	५ ३६	१८ ६	२४॥	१०॥ १३	१८॥ १	१७॥ १६	१६ ६+	१७ ३६	१८ ३५	२० -५	२४॥ -५	२५	११ ३	२५	२९॥	१५॥ १३	२३॥ १	१६॥ १४	१८ ४+	१८ ३४	२८ ३	३३ ०	२७॥ १	१६॥ १४	६॥ १३४	१३॥ ४२
	शत १	१४॥ ३	२०॥ १	२६॥	३१	२५ १	२९॥	२० ५+	१२ १३५	१२ ३५	६॥ ३६	१३ ६	१६ ६	२५॥	१९॥ १	१९॥ १३	२०॥ १३६	२०॥ २३६	२५ ६	२६ +५	२१ २५+	२६ ५+	२६॥	२०	१८ ३	२२॥ ३	२४॥ १	२४॥ १	१७ १४	१७॥ ४+	२४ ४+	३३	२८ ३	१६ ०१३	८ १३४०	१४॥ १४	१५॥ ४
	पूभा ।।।	१७॥ ३	२४॥ २+	१६॥ -१	२४ -१	३०	३०	२३॥ ५+	१७ ३५	१७ ३५	११॥ ३६	१९॥ ६	१२ १६	२८॥ १	२४॥	१६॥ ३	१५॥ ३६	१५॥ ३६+	१७॥ १६	१८॥ १५-	२६ ५+	२० -१५	२०॥ १	२६॥	११ १३	१५ १३	२१॥	२९॥	२३॥ +४	२३॥ --४	१८॥ -१४	२८¾ -१	२६ १३	२८ ३	२६ ३४	२२ ०४	१६॥ ४२
मीन	पूभा ।	१४॥ ३४	२१॥ ४२	१६॥ -१४	१६ १	२५	२५	२४	१७॥ ३	१७॥ ३	१७ ३५	२५ ५	१७॥ १५	१६॥ -१६	२२॥ ६+	१४॥ ३६	१६ ३	१६ ३	१८ १+	११ १६	१८॥ ६	१२॥ १६	१६ -१५	२५ +५	६॥ १३५	१४ १२	२८॥	२८॥	२८॥	२८॥	२४॥ १	१५॥ १४	७ १३४	१५ ३४	२८ ३	३३ ०	३०॥ +-
	उभा १	२३॥ ४+	१५॥ २८	१८॥ -१४	२१ १	२६	१८ ३	२७ ३	२५	२६॥	३६ ५	१६ ३५	२० १५	१७॥ -१६	१५ ३६	२५॥ ६+	२७	२६	९ १३२	२ १३६२	१६ ५	१९॥ १६२	१८ १५२	१८ १५	२० -१५	२९॥ -२	२१॥ ३	२६॥	२९॥	२६॥	१४॥ १३	५॥ १३४	१६ १४	२१ ४	३३	२८ ३	३३ ०
	रे १	३५ ४+	२३॥ ४	१०॥ ३४	१३ ३	१७ ३	२६	२५	२४	२५	२४॥ ५	२६ ५	१३ ३५	२२ ३६	२३॥ ६+	२३॥ ६+	२४	२५	१३	१२ ६	१० ३६	४ १६	२०॥ ३५	२६ ५+	२९ ५+	२६	२८॥	२०॥ ३	२६॥ ३	२१॥ ३	२३॥ -२	१३॥ ४२	१५॥ ४	१७॥ ४२	२६॥ +२	३३	२८ ३

ग्रह-मेलापक-विचार—वर की कुण्डली में जन्मलग्न, चन्द्रमा से यदि १।४।७।८।१२ इन स्थानों में मंगल पड़ा हो तो कन्या का नाशक जानना, यदि कन्या के जन्मलग्न अथवा चन्द्रमा से १।४।७।८।१२ स्थानों में मंगल हो तो वर का नाशक होता है।

अपवाद—वर की कुण्डली में यदि पूर्वोक्त स्थानों में मंगल हो और कन्या की जन्म-कुण्डली में उन्हीं स्थानों में मंगल पड़ा हो तो उसका दोष नहीं होता। यदि एक की कुण्डली में मंगल हो दूसरे की कुण्डली में उन स्थानों में से किसी स्थान में शनि पड़ जाय तो भी मंगल का दोष दूर हो जाता है और जितने ग्रह कन्या की कुण्डली में अशुभ होकर पड़े हों उतने या उनसे ज्यादा वर की कुण्डली में अशुभ ग्रह पड़े हों तो शुभ जानें। इसी प्रकार कन्या के जन्मलग्न में ७।८ स्थान तथा वर का २।७ स्थान अवश्य विचार लेना चाहिए और दोनों का पंचम भाव विशेषता से देखना चाहिए। कन्या के सप्तमेश तथा शुक्र आदि शुभ ग्रहों के शुभ स्थान में होने तथा शुभ ग्रहों की उन पर दृष्टि होने से सौभाग्य योग का विचार अत्यावश्यक है। अथवा—वैधव्ययोग वाली कन्या को शालिग्राम या कुम्भ से यथाविधि विवाह करके दीर्घायु वाले वर के साथ विवाह करे।

विवाहार्थ वर के गुण—कुल, शीलस्वभाव, अवस्था, शरीर का रूप, विद्या, धन, सनाथता ये सात गुण जिस वर में उत्तम मिलें उसको कन्या देनी चाहिए।

वर के दोष—दूरदेश वाला, द्वीपान्तरवासी, अत्यन्त समीपस्थ, जाति से पतित, आचारहीन नास्तिक, आजीविका से रहित अत्यन्त गरीब, अत्यन्त धनाढय, मूर्ख, शूर, मोक्ष की चाह वाला, संसार से विरक्त, वृद्ध, कन्या से छोटा ऐसे २ दोषों से युक्त वर कन्या नहीं देनी चाहिए।

विवाहार्थ कन्या के दोष—अत्यन्त चौड़े मस्तक वाली, कुबड़ी, लज्जाहीन, झूठ बोलने वाली, रोगग्रस्त, अंगहीन, अतिस्थूल अथवा अतिदुर्बल लम्बी व पतली झगड़ालू अन्धी तथा बहिरी (बोली) ऐसे व किसी भी दोषवाली कन्या को सुखार्थी वर्जित करे।

गोत्र में विवाह निषेध—समान गोत्रप्रवर में विवाह से उत्पन्न सन्तान चाण्डाल होती है तथा वर-वधु जाति से च्युत हो जाते हैं तुल्यसपिण्ड मातृगोत्र या तुल्य पितृगोत्र का सम्बन्ध भाई-बहन का सा होता है।

वाग्दान—(कुड़माई सगाई) से पहले नीचे लिखी बातों का विचार कर लेना जरूरी है—सपिण्डता, ऋषिगोत्रशुद्धि, शील, सामुद्रिक तथा ज्योतिष-शास्त्र में कहे हुए दोषा दिका मेलापक सारिणी से विचार लेना, और कुण्डली मिलान के समय निम्नलिखित पांच महादोष भी यत्नपूर्वक वर्जित करने चाहिएं—(१) दारिद्र्य, (२) मृत्यु, (३) वैधव्य, (४) व्यभिचार (५) सन्तान का अभाव।

वर-वरण मुहूर्त—उ. ३, रो. कृ. पूर्वा ३, रिक्ता-अमावस्या को छोड़कर शुभ तिथि तथा शुभवार में चन्द्रबल देखकर शुभलग्न में पुरोहित अथवा कन्या का भ्राता वर के घर पर उत्तर वा पश्चिमाभिमुख बैठकर पूर्वाभिमुख बैठे वर के मस्तक पर केशर चन्दनादि से तिलक लगाये। तदनन्तर वस्त्र यज्ञोपवीत तथा यथोचित द्रव्य से वर को संस्कृत करे और वर के मुख में एक छुवारा या मीठा, (गुड़, बतासा) देकर यह मन्त्र पढ़े "तस्मिन कालेऽग्नि सान्निध्ये स्नात: स्नाते स्वरोगिणे। अव्यंगेऽपतितेऽक्लीबे पिता तुभ्यं प्रदास्यति ॥" यदि भ्राता से भिन्न पुरोहितादि वाग्दान करे तो "पिता तुभ्यं प्रदास्यति" के स्थान में "दाता तुभ्यं प्रदास्यति" कहे।

कन्या-वरण मुहूर्त—उ. फा., स्वा., श्र., पूर्वा. ३, अनु., ध., कृ. विवाहोक्त नक्षत्रों मे शुभ समय देखकर वस्त्रालंकार फलपुष्पों से कन्यावरण (सगाई) करना चाहिए।

विवाह काल-निर्णय—२० वर्ष पहले पुरुष का और ८ वर्ष से पहले तथा रजोदर्शन के पीछे कन्या का विवाह करने में दोष लगता है। अत: रजोदर्शन पूर्व (कुचों के प्रादुर्भाव से रजोदर्शन का अनुमान कर) ८ वर्ष से लेकर १६ वर्ष तक सर्वसम्मत श्रीपतिनिबन्धोक्त वर्षों में गुरुचन्द्र शुद्धि देखकर विवाह कर देवें। तद्यथा "मासत्रया-दूर्ध्वमयुग्म वर्षे युग्मे तु मासत्रयमेव यावत्। विवाहशुद्धिं प्रवदन्ति सन्तो वात्स्यादयो गर्गवराहमुख्या: ॥ द्विरागमन रजोधर्म होने पर करना योग्य है। यदि किसी योग्य वर के अन्वेषण में पिता के लगे रहने से देर हो जाने पर कन्या रजस्वला होने लगे तो माता पितादि को कोई विशेष दोष नहीं लगता। वात्स्य:—रजस्वलाया: कन्याया: गुरु-शुद्धि न चिन्तयेत्। वशिष्ठ:-तस्यास्तारेन्दुलग्नानां शुद्धौ पाणिग्रहोमत: ॥ विवाह लग्न के समय कन्या ऋतुमती हो तो—स्नापयित्वा तु तां कन्यामर्चयित्वा यथाविधि:। युंजानामाहुतिं हुत्वा तत: कर्मणि योजयेत्।

आजकल वर से कितनी कम उमर कन्या की हो—विवाह के समय पति की उमर को दो से भाग देवें जो आवे उसमें ६ जोड़ने से जो वर्ष आवे वह विवाह के समय पत्नी की उमर होनी चाहिए। यथा वर की उमर यदि ३० वर्ष की हो तो वधु की उमर २१ वर्ष की होनी चाहिए, यह सुखी विवाह का फार्मूला है।

विवाह के पहले कन्या का नाम बदलना—यदि कन्या और वर के नाम परस्पर मिलान में शुभ न हों तो आवश्यकता में कन्या का नाम बदला जा सकता है, वर का नहीं कन्या का नाम रखने के लिए मेलापक सारिणी में वर के नक्षत्र के नीचे जहां दोषांक का अभाव हो या दोष थोड़ा समझ कर ऋण (—) का चिह्न लिखा हो उसी खाने में ऊपर गुण संख्या भी १८ से अधिक मिले उसी के बाईं ओर जो नक्षत्र लिखा हो उसी अक्षर के अनुसार निर्दोष शुद्ध नाम रख लेना चाहिए। बहुत से विद्वान् कन्या संकल्प के समय "वरस्य पञ्चमे कन्या कन्याया: नवमे वर" बोलते हुए नाम बदल देते हैं। ऐसा नाम बदलना व्यर्थ है अत: पहिले सारिणी आदि देखें।

प्रयोग चक्रम्

सूर्य के नक्षत्र से प्रयोग प्रारम्भ नक्षत्र तक गणना करें।

स्थान	नक्षत्र	फलानि
शीर्षे	३	कार्यसिद्धि:
मुखे	३	सुमंत्रसिद्धि:
कंठे	३	मृत्युदायक:
हस्ते	४	शत्रुभीति:
हृदि	४	इष्टाप्ति:
उदरे	३	धनहानि:
कट्यां	३	साधनादर्य:
चरणे	४	साधनाद्धित:

मंत्र-दीक्षा मुहूर्त—अधिकमास रहित वै. श्रा. आश्वि. का. मार्ग मा. फा. इन मासों में, शुक्लपक्ष की २।३।५।७।१०।११।१३ तिथियों में तथा कृष्णपक्ष की २।३।५ तिथियों में, शुभवार में वृष मि. सिंह. क. तु. ध. मी. लग्न हो, लग्न से १।५।७।१० में शुभग्रह हों, ३।६।११ में पापग्रह हों तब मंत्रदीक्षा लेना उत्तम है। विशेष—तीर्थ पर सूर्य ग्रहण के साथ तथा श्रावणीपर्व में मंत्रदीक्षा लेते समय मास तथा पञ्चांगशुद्धि का विचार नहीं करना चाहिए।

अनुष्ठानारम्भ मुहूर्त—चै. श्रा. आश्वि. का. मार्ग. मा. फा. मासों की २।६।७।१०।१३।१५ तिथियों में अथवा या तिथि-र्यस्य देवस्य तस्यां वा) रो. मृ. पुन. पु. उ. ३, ह. स्वा. चि. अनु. ज्ये. श्र. ध. श. रे. (स्वस्वामि नक्षत्रे वा) चन्द्रतारा अनुकूल होने पर गुरु शुक्र के उदय में शुभ लग्न से १२वां स्थान शुद्ध होने पर (विष्णुमन्त्रे स्थिरे, शिवस्य चरे, दुर्गाया: द्विस्वभावे लग्ने) प्रारम्भ करना श्रेष्ठ है।

लग्न-गण्डान्त—कर्क सिंह वृश्चिक धनु मीन और मेष के अन्त एवं आदि की आधी घड़ी लग्न-गण्डान्त होता है। वह भी जन्म में भयप्रद होता है।

अथ विवाह मासः—(निबन्धकार)-मीनार्कं बिना प्रोक्तमुत्तरायणमुत्तमम्। त्याज्यो धनुष्यन्ये मध्यमाः स्युः करग्रहे ॥ वर्षासु पाणिग्रहणं न कीर्तितं केचिद् वदन्तीत्यपरो विशेषः। तस्मात्सदाचार इह प्रमाणं देशे यथा यत्र तथैव तत्र ॥१॥ केशवेन यदि नोररीकृतं श्रावणादिषु च पाणिपीडनम्। तेन चोक्तमपरैरुदाहृतं तद्विकल्प इति मन्यते मया ॥२॥

अथ जन्म-मासादिषु निषेधः—सबसे बड़े (जेठे) लड़के अथवा सबसे बड़ी लड़की (जेठी) के जन्ममास(अर्थात् जन्मतिथि से ३० दिन), जन्मनक्षत्र अथवा जन्म तिथि में विवाह करना शुभ नहीं है। द्वितीयादि गर्भोत्पन्न को दोष नहीं। अत्यावश्यके परिहारः—जातं दिनं दूषयते वसिष्ठः पञ्चैव गर्गस्त्रिदिनं तथात्रिः। तज्जन्मपक्षं किल भागुरिश्च व्रते विवाहे गमने क्षुरे च ॥

यदि दो कार्यों की आवश्यकता हो तो—एक घर में दो शुभ काम करना निषिद्ध है परन्तु अति आवश्यकता में ६ दिन का अन्तर देकर दो घरों में अलग २ मण्डप बनाकर जो पुरोहित पहला कार्य करा चुका है, उसी से दूसरा कार्य न करावें, दूसरे आचार्य से करावें। इसी प्रकार जिस गृह में पहला कार्य हुआ हो तो दूसरे कार्य में दूसरे घर में मंडप गाड़ कर कार्य को करे।

अथ ज्येष्ठ विचार—ज्येष्ठ पुत्र व कन्या का ज्येष्ठ मास में विवाह करना अशुभ है। अत्यावश्यकता में कृत्तिका सूर्य को छोड़कर दानादिपूर्वक करें।

षट्मास के भीतर दो विवाह आदि का निर्णय—दो सगी बहिनों का विवाह एक साथ या छः मास के अन्दर करे तो निस्सन्देह ३ वर्ष के अन्दर अशुभ फल हो। पुत्र के विवाह के पीछे षट्मास तक कन्या का विवाह न करे और कन्या व पुत्र के पीछे छः मास तक यज्ञोपवीत न करे अर्थात् पहले करने और मंगल कार्य के पीछे अमंगल अर्थात् श्राद्धतिलतर्पण भी न करे और मुण्डन भी विवाह जनेऊ के पीछे न करे। वर्ष पलटने पर फिर भले ही शुभ कार्य करलें। वहां छः मास का विचार नहीं है। यह ६ महीने का निषेध तीन पीढ़ी तक ही है।

विवाहादि शुभकार्यों में मरणाशौच—साहेचिट्ठी (कुकुमपत्रिका) आने पर विवाह दिन निश्चय हो जाने पर किसी की मृत्यु हो जावे तो माता के मरण से ६ मास, पिता के मरण से १ साल, स्त्री के मरण से ३ मास, भाई व पुत्र के मरण से १॥ मास कुलवालों के मरण से २२॥ दिन तक कोई शुभ कार्य न करे। अति संकट में ३० दिन के बाद शान्ति करके अथवा विशेष शान्ति और गोदान करके अशौच के बाद करे।

विवाह के शुद्ध मूहूर्त पंचांग के अन्त में दिये गये हैं। उनमें से उत्तम मुहूर्त देखकर **और उसी दिन वर की राशि में सूर्य चन्द्र देखिए और कन्या राशि से चन्द्र गुरु देखिए, बस इसी को त्रिबलशुद्धि कहते हैं।** यह त्रिबलशुद्धि जिस उत्तम विवाहलग्न के दिन मिले वही विवाह-दिन उत्तम है। यदि रवि—गुरु पूज्य हो तो मध्यम है, यदि सूर्य नेष्ट हो तो विवाह नहीं बनेगा, ऐसा कहना। इसी प्रकार कुमार के उपनयन में भी त्रिबल (गु. सू. चं.) शुद्धि प्रथम देखें। "झष-चाप-कुलीरस्थो जीवोप्यशुभगोचरः। अतिशोभनतां दद्याद्विवाहोपनयनादिषु ॥ वृहस्पतिः ॥ अत्यावश्यकता में "द्विरच्यों द्वादशस्तुर्योऽथाष्टमस्त्रिगुणार्चनात्। उच्चे उच्चांशके ग्राह्यः चन्द्रादष्टमगो रविः। नीचे नीचांशके त्याज्यः अरिक्षा भादिगोऽपि नेत् ॥ (रणवीर ज्यो. ति.)

तुलाराशौ अपूज्यःरविः—धर्म-धी-धन-गतो दिवाकरस्तौलिराशि-जनितस्य शोभनः। आवश्यके पूज्यरवि-परिहारः—गार्ग्याङ्गिरोवत्स-वशिष्ठ गौतम-पराशराद्या मुनयो वदन्ति। द्वितीयपञ्चांकगतो दिवाकरस्तथोःशाङ्गारस्तः शुभावहः। (मु० प० मा०)।

विवाहादौ त्रिबल-शोधनम्

पूज्यगुरुः—१०।६।३।१ ध. मी. कर्क
श्रेष्ठगुरुः—६।५।११।२।७ राशि में
नेष्टगुरुः—४।८।१२ हो तो नेष्ट
श्रेष्ठरविः—३।६।१०।११ गुरु भी
पूज्यरविः—२।५।६ श्रेष्ठ है।
त्रिशेष पूज्य रविः—१।७
नेष्टरविः—४।८।१२
नेष्टचन्द्रः—४।८
श्रेष्ठचन्द्रः—१।२।३।५।६।७।६।१०।११।१२

कन्या-वरयोः तैलादि-लापन (बन्न) दिन संख्या

राशि →	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
तैल ग. →	७	१०	५	१०	५	७	७	५	५	५	५	७

अथ विवाहे तिथि वार नक्षत्राणि

रो. मृ. उत्तरा ३, भ. ह. स्वा. अनु. मू., रे. एतद्वेध-रहितेषु शुभेऽह्नि अमाक्षय-रहित-तिथिषु कात्यायन-मते अश्वि. चि. श्र. धनिष्ठास्वपि शुभम् ॥

सभी कार्यों में लग्नशुद्धि—जन्म राशि से आठवीं, बारहवीं राशि न हो तथा लग्न से आठवें बारहवें कोई ग्रह न हो तो लग्न शुद्धि समझें।

अथ विवाहाङ्गकृत्यारम्भ मुहूर्त—वर कन्या की चन्द्रशुद्धि विचार कर विवाह दिन से पहिले ३।६।९ इन दिनों को छोड़कर विवाह के नक्षत्रों में चन्द्रशुद्धि वाली सौभाग्यवती स्त्री के प्रयमोद्योग से हल्दी हाथ, दलना, पसीना, कूटना, मंगल कलशादि स्थापन करना, घर लीपना, आंगन सफाई, भूषण घड़ाना, वस्त्र सिलाना, वेदी रचना चन्दोया बांधना, गणेशादि पूजन और नान्दीश्राद्ध मंगल स्नानादि सर्वकार्य का आरम्भ करना शुद्ध होता है।

विवाह-मुहूर्त में दस दोषों का विचार

विवाह के मुहूर्त में लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, पञ्चबाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य और दग्धातिथि—इन दस दोषों का विचार करना आवश्यक है। इन सब का विचार करके इसवर्ष के विवाह मुहूर्त लग्न दिये गये हैं। इन दसों दोषों में जो जिस मुहूर्त में हैं वे क्रमानुसार टेढ़ी रेखा से सूचित किये गये हैं। उक्त दसों दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है—

(१) लत्तादोष-ज्ञानाय चक्रम्

सूर्य	पूर्णचन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहा
१२ दक्षिण धननाशः	२२ वाम भयम्	३ दक्षिण मृत्युः	७ वाम भयम्	६ दक्षिण बन्धुनाशः	५ वाम कार्यहानिः	८ दक्षिण कुलक्षय	९ वाम मरणं	लग्ननक्षत्र दिशा फलम्

यथा—सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ. फा. का हो, सूर्यस्थित अश्विनी नक्षत्र से गिना तो, उ. फा. १२वां हुआ यह सूर्य की लत्तादोषयुक्त साहा हुआ। इसी प्रकार अन्य ग्रहों की लत्ता भी जानें।

(२) पातदोष-ज्ञानार्थ चक्र

रा.	मृ.	मघा	उफा	ह.	स्वा.	अनु	मू.	उषा	उभा.	रे	वि.	नक्षत्र	हर्षण वैधृति साध्य व्यतिपात गंड और शूल योगों का अन्त जिस नक्षत्र में हो वह पात से दूषित होता है। इन नक्षत्रों में विवाह करने से पात दोष होता है।
आर्द्रा पुन. शत. पूफा चि. मू.	मृ. आ ज्ये घ. म. ह.	अ. मृ. ज्ये पुष्य ह. रे.	कृ आ वि पूफा उभा पूभा	भ मृ श पूभा स्वा म.	कृ श्र ध पुष्य ह रे	अ आ. उषा पूभा पूषा पूफा.	रो ज्ये ध श्ले मू उभा.	भ पुन श वि अनु उषा	भ श वि उफा. पूफा. मृ.	अ ज्ये ध म पूफा स्वा.		पातदूषित नक्षत्र	

(३) **युति**—जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो उस ग्रह की युति का दोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च मित्र वा स्वक्षेत्री हो तो युति दोष नहीं होता किन्तु श्रेष्ठ है। सू. मं. शु. श. रा. के. की युति दारिद्रय मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है। शुक्र की युति विशेष करके वर्जित है।

(४) वेधदोष चक्रम्

रो.	भ.	म.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा.	उभा.	रे.
अभि.	उषा	श्रवण.	रे.	उभा.	श्व.	अ.	पुन.	मृगा.	ह.	उफा.

ऊपर के नक्षत्र का विवाह हो और नीचे के नक्षत्र पर ग्रह हो तो वेधदोष होता है। यह सर्वत्र अवश्य ही त्याग करना चाहिए।

(५) जामित्र दोष चक्रम्

रो	मृ.	म.	उफा	ह.	स्वा	अनु	मू.	उषा.	उभा. रे.	विवाह न.
अनु	ज्ये.	ध.	पू. भा.	उ. भा	अ.	कृ.	मृ.	पुन	उफा. ह.	ग्रह नक्षत्र

विवाह लग्न से सातवें ग्रह होने पर जामित्र दोष होता है। ऊपर वैवाहिक नक्षत्र है और नीचे ग्रह नक्षत्र है, याने १४वें नक्षत्र में पापीग्रह का जामित्र दोष वर्जनीय है।

(७) एकार्गल-दोष

व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कुम्भ शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगण्ड ये योग हों और सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित् सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गल दोष होता है।

(८) उपग्रह

सूर्य के नक्षत्र से ५वें ७वें, ८वें, १०वें, १४वें, १५वें, १८वें, १९वें, २१वें, २२वें, २३वें, २४वें और २५वें नक्षत्र पर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

(९) स्थूल-क्रांतिसाम्य-दोष चक्रम्

मे०	वृ०	मि०	क०	क०	तुला
सिंह०	म०	ध०	वृश्चि०	मी०	कु०

नीचे और ऊपर की राशि पर सूर्य एवं चन्द्रमा हों तो स्थूल रूप से क्रांति-साम्य दोष होता है यह सर्वत्र वर्जित है। जैसे मेष के सूर्य, सिंह के चन्द्रमा में वा सिंह के सूर्य, मेष के चन्द्रमा में। सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य ही सर्वत्र वर्जित है, जिसका निर्णय महापात गणित से करना चाहिए।

(६) बाणदोष ज्ञानार्थं चक्रम्

बाण नाम	गतांशा: प्रति राशौ अर्कस्य	कर्मसु वर्ज्या:	बाण: वर्ज्या:	समयपरत्वेन वर्ज्या:
रोग	८।१७।२६	व्रतबन्ध	रवौ	रात्रौ त्याज्यम्
अग्नि	२।११।२०।२९	गेहगोपे	भौमे	सदैव वर्ज्यम्
नृप	४।१३।२२	नृपसेवायां	मन्दे	दिवा त्याज्यम्
चोर	६।१५।२४	यात्रायां	भौमे	रात्रौ वर्ज्यम्
मृत्यु	१।१०।१९।२८	विवाहे	बुधे	संध्ययो: वर्ज्यम्

(१०) दग्धातिथि दोष:

९	२	४	६	५	१० सूर्य
१२	११	१	३	८	७ राशय:
२	४	६		८	१० तिथय

इन संक्रांतियों में ये तिथियां दग्धा होती हैं। विशेषत: ये मध्य प्रदेश में ही वर्ज्य हैं।
—कश्यप

भुजंगं क्रान्तिसाम्यञ्च बाणवेधं तथैव च। लग्नहीनं विवाहन्तु कलौ पञ्च विवर्जयेत् ॥

लत्तादि-दोषाणां परिहार वाक्यानि—लत्ता मालवके (उज्जैन प्रान्त) दशे, पातश्च कुरु (कुरुक्षेत्र, बांगर) जांगले (फ़िरोजपुर; भटिण्डा प्रान्त)। एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत्।॥ उपग्रहर्क्षं कुरु वाह्लीकेषु (आगरा प्रान्त) कलिंगवंगेषु (जगन्नाथपुरी बंगाल अयोध्या) च पातितं भम्। सौराष्ट्र (काठियावाड़) शाल्वे (उज्जैन प्रान्ते) च लत्तितं भं त्याज्यंतुविद्धं किल सर्वदेशे॥ युतिदोषो भवेद् गौडे (बंगाले) यामित्रस्य च यामने (मथुरादि प्रान्ते)। मासदग्धाश्च तिथयो मध्यदेशे विवर्जिता: ॥

विशेष-परिहार—चित्रा गते पातयिनित्रदेशे मैत्रे मघा मालवके निषिद्धा।
पौष्णश्रुतिश्चोत्तरदेशजातं सर्वत्र वर्ज्यश्च भुंजगपात: ॥

युति-परिहार—स्वक्षेत्रग: स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधु:। युतिदोषाय न भवेद्दाम्पत्यो: श्रेयसे तदा॥ **अत्यावश्यके वेधपरिहार:**—पादमेकं शुभैर्विद्धमशुभेनैव कृत्स्नत: (नारद:)॥ ग्रह प्रथम चरण में हो तो दूसरे नक्षत्र के चतुर्थ चरण में वेध होता है, यदि चतुर्थ चरण में हो तो प्रथम चरण विद्ध होता है। द्वितीय में हो तो तृतीय, तथा तृतीय चरण में ग्रह हो तो द्वितीय चरण विद्ध होता है। आवश्यकता में चरणमात्र का त्याग किया जाता है। भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धे पापग्रहेण च। शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नत: ॥ **अस्यापवाद:**—ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरयुक्तादिकानि च। भुक्त्वा चन्द्रेण युक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते।—एकार्गलोपग्रहपात-लत्ता-जामित्रकर्तयुं दयास्त दोषा:। नश्यन्ति चन्द्रार्क-बलोपपन्ना लग्ने यथार्काभ्युदये तु दोषा: ॥ मु. चि.।

उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरु:।
केन्द्रसंस्थ: सितो वाऽपि पन्नगान् गरुडो यथा ॥

विवाहे लग्न-शुद्धि चक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	भावेषु
चं पाप	०	शु	रा.	०	चं. शु. लग्नेश:	सर्वे	चं. मं. शुभा: लग्नेश:	०	मं.	०	श.	त्याज्या:
चं. मं.	कुलिकं क्रांतिसाम्यञ्च				चं.	म.	वं. मं.	विद्धंभञ्च				गोधूलौ त्याज्या:

लग्न-भंग योगा—व्यये शनि भेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखला न शस्ता: । लग्नेट् कविग्लौ च रिपौ मृतौ ग्लौ लग्नेट् शुभाराश्च मदे च सर्वे (अस्तेऽब्जगुरूसमौ) ।। वर्गोत्तमं विनान्त्यांशो विवाहो न शुभप्रद: । वर्गोत्तमश्चेदन्त्यांश: पुत्रपौत्रादि वृद्धिद: ।। दम्पत्योरष्टमं लग्नं त्वष्टमो राशिरेव च । यदि लग्नगत: सोऽपि दम्पत्योर्निधनप्रद: ।। पवन्धादिलग्नानां गौडमालवयोरेव त्याग:, बादरायण:—माराशून्याह्वयास्तारा राशयो बधिरादय: । गौडमालवयोस्त्याज्यास्त्वन्यदेशे न गर्हिता: ।

कर्तरी दोष:—लग्नस्य पृष्ठाग्रगयोश्च साध्वो: सा कर्तरी स्यादृजु-वक्रगत्यो: । तावेव शीघ्रौ यदि वक्रचारौ न कर्तरी चेति पितामहोक्ति: ।। इयं कर्तरी चन्द्रस्यापि द्रष्टव्या" केषांञ्चिल्लग्नदोषाणां परिहार:—पापौ कर्तरीकारकौ रिपुगृहनीचास्तगौ कर्तरी दोषो नैव सितेऽरिनीचगृहगे तत्षष्ठदोषोऽपि न । भौमेऽस्ते रिपुनीचगे नहि भवेद् भौमोऽष्टमो दोषकृन्नीचे नीच नवांशके शशिनि रिःफाष्टारिदोषोऽपि न ।।

दोषापवादा: ज्योतिर्निबन्धे—दोषाश्च बहव: सन्ति गुणा: स्वल्पा: कलौ युगे । तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगणै: सह ।। अपवादान्तरम्—उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरु: । केन्द्रसंस्थ: सितो वापि पन्नगान्गरुडो यथा ।। मुहूर्तलग्न-षड्वर्गकुनवांश ग्रहोद्भवा: । ये दोषास्तान्निहन्त्येव यत्रैकादशग: शशी ।। अब्दायनर्तु भा-सोत्था पक्षतिथ्यर्क्ष सम्भवा: । ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे ।। लग्नाधिपो यदा केन्द्रेलग्नादेकादशालये । सर्वग्रहकृतं रिष्टमेकोपि विलयं नयेत ।। बलवान् केन्द्रग: सौम्यो हन्ति दोषशतत्रयम् । द्यूनं विहाय दैत्येज्य: सहस्रं लक्षमंगिरा ।। स्मरण रहे, कि—पूर्वोक्त अपवाद-वाक्यों में सप्तम रहित केन्द्र (१।४।१०) ही ग्रहण करना ।

तारा शुद्धि—अपने जन्मनक्षत्र से अभीप्सित दिन के नक्षत्र तक की संख्या गिन कर ९ से भाग दें । यदि २, ४, ६, ८ या ९ शेष बचे तो तारा शुद्धि समझें ।

विवाहे ग्रहाणां रेखाप्रद स्थानानि

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	केतु	ग्रहा.	मुहूर्त गणपतौ
३ ६ ८ ११	२ ३ ११	३ ६ ११	१ २ ३ ४ ५ ६ ९ १० ११	१ २ ३ ४ ५ ६ ९ १० ११	१ २ ४ ५ ९ १० ११	३ ६ ८ ११	३ ६ ८ ११	३ ६ ८ ११	स्थानानि	लग्नं शुभं विवाहे स्याद्दश विशोपकाधिकम् ।
३।।	५	१।।	२	३	२	१।।	१।।	।।		विशोपका बलम्

अथ गोधूलि-लग्न विचार—यत्र चैकादशश्चन्द्रो द्वितीयो वा तृतीयक: । गोधूलिक: स: विज्ञेय: शेषा: धूलिमुखा: स्मृता: ।। लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी । । तदा वै सर्वं वर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम ।। लग्नं यदा नास्ति विशुद्धमन्यद् गोधूलिकं साधु तदा वदन्ति । लग्नं विशुद्धे सति वीर्ययुक्ते गोधूलिकं नैव फलं विधत्ते ।। माघ, पौ,

फाल्गुन में संध्या समय सूर्य गोलार्क समान दृष्टिगोचर होने पर, चै. वै. में गौओं की धूलि से आकाश आच्छादित होने पर ज्येष्ठ आषाढ़ में सूर्य आधा अस्त होने पर, श्रा. भा. अश्वि. का. में सूर्य पूर्ण अस्त होने पर गोधूलि लग्न होता है ।

गोधूलिके त्याज्य दोष:—कुलिकं क्रांतिसाम्यञ्च लग्ने षष्टेऽष्टमे शशी । तथा गोधूलिके त्याज्य: पञ्चदोषैस्तु दूषित: । "अस्तं याते गुरुदिवसे सौरे सार्के" अर्थात् बृहस्पतिवार को सूर्य अस्त होने के पीछे (क्योंकि सूर्य अस्त में पहले वारवेला होगी) और शनिवार को सूर्य अस्त से पहले (क्योंकि सूर्य अस्त हो जाने में कुलिक मुहूर्त होगा) गोधूलि समझना ।

संकीर्ण वर्णसंकर चाण्डालादि जाति का विवाह मुहूर्त:—कृष्णपक्ष क्रूरवार निषिद्ध नक्षत्र योगों में संकीर्ण जाति वालों का विवाह धन, पुत्र, आयु, प्रीति लाभ देता है । ऐसा शौनकादि मुनि कहते हैं ।

पुनर्विवाहे (रौत) सूर्यभात् शुभाशुभज्ञानाय चक्रम् ।

३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
मृत्यु	धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	मृत्यु	दुर्भग	श्री	उन्नति	फल

अन्यच्च—सूर्यभात् ४।११।१८।२५ संख्यक साभिजिद्भेषु पुनर्विवाहे मृत्यु: । अत्र तिथि-मासवेध भृगु-गुर्वस्तादि दोषोऽपि नावलोकनीय: ।

वधू प्रवेश का मुहूर्त—जब वधू विवाह होने पर पति के घर पहले आती है वह वधूप्रवेश कहा जाता है । विवाह से १६ दिन के भीतर सम दिनों में अथवा ५, ७, ९वें दिन, इनके उपरान्त एक मास तक विषम दिनों में, एक वर्ष के भीतर विषम मास में और एक वर्ष के उपरान्त ३रे, ५वे वर्ष में भी स्थिर लग्न में वधूप्रवेश शुभ है । ५ वर्ष के उपरान्त जब चाहे तब शुभ मुहूर्त में हो सकता । १६ दिन के भीतर पूर्वोक्त दिनों में तिथ्यादि पंचांगशुद्धि चन्द्रबल गुरुशुक्र के मूढ़त्व का भी विचार नहीं करना । व्यतिपाते क्षयतिथौ ग्रहणे वैधृतौ तथा । अमासंक्रांति-तिथ्यादौ प्राप्तकालेऽपि नाचरेत् ।। रे. अश्वि रो. मृ. श्र. ध. ह. चि. स्वा. म. मू. उत्तरा ३, पुष्य, अनु. इन नक्षत्रों में और च. बु. बृ. शु. श. इन वारों में १। २। ३। ५। ६। ७। ८। १०। ११। १२। १३। १५ तिथियों में ५। ८। ११ लग्नों में चतुर्थाष्टम शुद्ध हो तो वधुप्रवेश शुभ है ।

वधु-प्रवेश-समय :—वधूप्रवेशो न दिवा प्रशस्त: राजप्रवेशो न निशि प्रशस्त: ।
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेश: सत्कीर्तिद: स्यात्त्रिविध: प्रवेश: ।

विवाहत: प्रथमे वर्षे वधू-निवास फलम्—विवाह के बाद आषाढ़ मास में कन्या पति के घर रहे तो अपनी सास को, क्षयमास में अपने शरीर को, ज्येष्ठ में ज्येष्ठ को, पौष में श्वसुर को, अधिक मास में पति को नाश करती है । विवाह के बाद चैत्र मास में पिता के घर है तो पिता को अशुभ है, सास आदि के अभाव में उसमास का कोई दोष नहीं ।

द्विरागमन का मुहूर्त—प्योके (पितृगृह) से दूसरी बार पति के घर जाने को द्विरागमन कहते हैं । विवाह से एक वर्ष के भीतर अथवा तीसरे या पांचवें वर्ष वृश्चिक, कुम्भ, मेष के १४ में जब सूर्य और बृहस्पति शुद्ध हो तब सोम. बुध. गुरु. शुक्रवार को, २. ३. ६, ७ या १२ वीं राशि के लग्न में ह. अश्वि. पु. अभिजित्. तीनों उत्तरा. रो. स्वा. पुन. श्र. ध. श. म. मृ. रे. चि. अनुराधा नक्षत्रों में शुभ है । शुक्र सामने या दाहिने हो तो अशुभ है ।

विशेष:—द्विरागम: षोडशवासरान्ते एकादशाहे समवासरेषु ।
न चात्र ऋक्षं न तिथिर्नयोगो न वारशुद्ध्यादि विचारणीयम् ।

मतान्तरेण शुक्रस्य सम्मुखे दक्षिणे निषेध :—जिस दिशा में शुक्र उदय हो, वह दिशा 'सम्मुख' होती है । अथवा मेष, सिंह, धनु में शुक्र हो तो पूर्व में; वृष, कन्या, मकर में हो तो दक्षिण में; मिथुन, तुला, कुम्भ में हो तो पश्चिम में; कर्क, वृश्चिक, मीन में हो तो उत्तर में शुक्र का वास माना जाता है । ऐसे सम्मुख या दक्षिण शुक्र में यदि युवति वधु जावे तो वन्ध्या हो, छोटे बालक को साथ लेकर जावे तो बालक की मृत्यु हो, गर्भिणी जावे तो गर्भ का सुख न पावे । यदि ऐसे समय राजविद्रोह राजपीडन आदि उपद्रव या दुर्भिक्ष के दुःख से यात्रा करनी पड़े एवं विवाहसम्बन्धी यात्रा में या देवतीर्थ यात्रा के सम्बन्ध में जाना पड़े तो सम्मुख या दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता । यदि रेवती से मृगशिर तक के चन्द्रमा में भी जावे तो दोष नहीं, क्योंकि तब तक शुक्र अन्धा होता है ।

नोट—यात्रा के समय शुक्र की पूर्व-पश्चिम कपाल में स्थिति के अनुसार ही पूर्व पश्चिम समझें ।

विशेष:—सिंहस्थे वा गुरौ शुक्रे सम्मुखेऽस्तंगतेऽपि वा । शुभो दीपोत्सवे वध्वा: प्रवेश: पतिमन्दिरे ।। अत्यावश्यकेऽभिमुखे शुक्रदोषनाशाय शान्ति:—राजते वाऽथ सौवर्णे कांस्यपात्रेऽथवा पुन: । शुक्लपुष्पांबरयुते श्वेततण्डुलपूरिते ।। निधाय राजतं शुक्रं मौक्तिमुक्ताफलान्वितम् । सहाश्वेतगवा युक्तं ब्राह्मणाय निवेदयेत् ।

प्रथम स्त्रीसंगम मुहूर्त—रजोदर्शनानन्तर १६ रात्रि पर्यन्त ४ रात्रि के बाद समरात्रि में, (पञ्चदशवर्षोपरि रजोदर्शनाभावेऽपि) रो. मृ. पुष्य ह. चि. अनु. ध. उत्तरा ३, रिक्ता अमावस रहित तिथि में, शुभवार, रात्रि में प्रथम पहर को छोड़कर शुभ समय में चित्त को प्रसन्न कर प्रथम दिन स्त्रीसंगम करे । मनुष्य का स्त्री के प्रति कर्त्तव्य—स्त्री का अपमान या तिरस्कार न करे, आदर-सत्कार करे । विशेष गुप्त बात न कहे । और विशेषाधिकार भी न दें, क्योंकि स्त्री जाति पुरुष की समान कोटि में नहीं आ सकती । अपवाद में एक दो हो सकती हैं । प्रभुकृत शरीर रचना भी कोई वस्तु है, उसे समझना चाहिए । उनका दिल और दिमाग तथा ओज प्रकृति ने पुरुष से न्यून बनाया है । पशु-पक्षियों में भी तोता, चिड़ा तथा बन्दर आदि अपनी स्त्री पर पूर्ण प्रभुत्व रखते हैं ।

नववध्वा: पाक-कर्म मुहूर्त:—द्विरागमनोत्तरं म. उत्तरा. पुष्य. कृ. ज्ये. श्र.ध.श. रो. वि. रे. एषु नक्षत्रेषु शुभावसरे (रविभौमवर्जिते), रिक्ताक्षयरहिततिथौ, २।५।८।११ लग्नेषु, चतुर्थाष्टशुद्धे सप्तमभावे च बलान्विते सति पाककर्म शुभम् ।

सधवा-स्त्रीणां वस्त्रसुवर्णरत्नभूषण विधारण मुहूर्त:—ह: चि. स्वा. अनु. धनि. रे. अश्वि, एषु भेषु बु. गु. शु. वारेषु रिक्तामावस्यारहित तिथिषु, नूतनवस्त्र सौवर्णरत्नरजतदन्तादिभूषणानां धारणं प्रशस्तम् ।।

चूड़ीचक्रम्—सूर्यनक्षत्राद् गणना ८ अशुभ । ११ तक श्रेष्ठ, १३ तक नेष्ट, २० तक श्रेष्ठ, २२ तक नेष्ट, २६ तक श्रेष्ठ, २७ तक नेष्ट । गुरुशुक्रोदय में शुभ वार भी हो ।

वस्त्रधारणे विशेष:—विप्रादेशात्तथोद्वाहे क्ष्मापालेन समर्पितम् ।
निन्द्येऽपि धिष्ण्य वारादौ धारयेच्च नवाम्बरम् ।

भूषण घट्टन मुहूर्त—ह. अ. पुष्य अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. उत्तरा ३. रो. एषु नक्षत्रेषु रिक्तामाक्षयरहित तिथौ, शुभवासरे द्विपुष्करत्रिपुष्करयोगे वा भूषणं कार्यम् ।।

दुकान खोलने का मुहूर्त:—ह. चि. रो. रे. उत्तरा ३, पुष्य. अश्वि. अभि. इन नक्षत्रों में ४।६।१४।३० इन तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, मंगलवार को छोड़कर अन्य वारों में कुम्भ लग्न को छोड़कर अन्य लग्नों में, २।१०।११ स्थानों में शुभ ग्रह बैठे हों, ३।६ में पापग्रह हों, ८।१२ वां स्थान पाप रहित हो, अपनी शुभदशा भी चलती हो तो दुकान खोलना शुभ है । चन्द्र लग्न में हो तो अत्यन्त शुभ है ।

भर्तृगृहात्पितृगृहागमन मुहूर्त:—पूर्वा ३ भ., मू., म., ज्ये., आ., आश्ले. एतद्भिन्नेषु, चं. बु. शु. वारेषु सत्तिथौ शुभलग्ने कुयोगादिराहित्ये प्रशस्त: ।।

घोड़े पर चढ़ने का मुहूर्त:—भ. आर्द्रा. आश्ले. म. पु. ३ ज्ये. मू. इन नक्षत्रों को छोड़ कर शेष नक्षत्रों में रविवार को शुभ है ।

हट्टचक्र—सूर्य नक्षत्र से दुकान खोलने के दिन तक नक्षत्र अभिजित सहित गिनकर चक्र से शुभाशुभ फल जाने ।

गुरुपुष्य एवं रविपुष्य में व्यापार प्रारम्भ करना शुभ है । सांझे व्यापार में गुण दोष एवं अशुभ षडष्टक न हो, देव-राक्षस में वैर, अपने गण में परम प्रीति जाने ।

नक्षत्र	२	३	४	४	३	४	४	४
स्थान	आसन	मुख	अग्नि	नैऋत	मुख	वायव्य	ईशान	मध्य
फल	सौख्य	विक्रयनाश	अर्थनाश	सुख	महाश्रेष्ठ	चोर भय	सर्वहानि	शुभप्रद

सेवाक्रम (नौकरी)—मुहूर्त:—अ.मृ.चि.ह. पुष्य.अनु. रे. एषु भेषु रिक्तामा रहित-तिथौ.र.बु.बृ.शु. वारेषु शुभ: । लग्नस्थे, १०।११ सूर्य भौमे वा स्वामिसेवकयो: राशीश-योनि-मैत्र्यां सत्यां शुभ: ।

व्यवहार (बही)—पत्रारम्भ मुहूर्त:—अश्वि.रो.मृ. पुन. पु. उत्तरा ३ .. चि. अनु. श्र.रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, सू.चं.बु.बृ.श. वारेषु शुभयुते शुभे लग्ने चरे द्विस्वभावे च व्ययाष्टरहिते पापै: केन्द्र कोणगः शुभ: स्यात् ।

द्रव्यप्रयोग मुहूर्त:—पुन. स्वा. मृग. रे. चि. अनु. त्रि. पुष्य. श्र. ध. श. अश्वि एषु नक्षत्रेषु, १।४।७।१० लग्नेषु ६।५।८ शुद्धरहिते द्रव्यप्रयोग: शुभ: । अवावसरे ६।४ शुभ:, ग्रहाणां तु न कोऽपि दोष: ।

ऋण लेने के लिए वर्जित काल—मंगलवार संक्रान्ति दिन, वृद्धियोग, हस्तनक्षत्रयुक्त रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्त न हो । मंगलवार को ऋण चुकाना अच्छा है । बुध वार को धन नहीं देना चाहिए । कृ. रो. आर्द्रा. श्ले. उ. ३, वि. ज्ये. मू. नक्षत्रों में भद्रा व्यतिपात और अमावस में गया धन फिर मिलता नहीं, या झगड़े आदि पर उतारू होना पड़ता है ।

ईंट के भट्टा में आग देने का मुहूर्त—शाम का समय शुभ चौघड़िया तथा मंगल रवि और शनैश्चर वार शुभ माने जाते हैं । बुधवार नई ईंट बनाने में विशेष शुभ है ।

श्रीकाशीनाथ-मते क्रयविक्रय मुहूर्त:—पुष्य., पू.भा., अनु. श्र.ह.म. स्वा. उत्तरा ३, आश्ले.रे. एषु भेषु, सत्तिथौ शुभदिने उत्तमशकुनं विचार्य क्रयविक्रयणं कार्यम् ।

वस्तु खरीदने का नक्षत्र—रे. शत. अश्वि. स्वा. श्र. चि., वारों में बुध और रवि श्रेष्ठ माने गए हैं ।

वस्तु बेचने का नक्षत्र—पू. फा. पु. भा., पू. षा., वि., कृ., श्ले., म. ये ७ नक्षत्र और गुरुवार, चन्द्रवार श्रेष्ठ माने गये हैं ।

नोट—बेचने के नक्षत्रों में खरीदना और खरीदने के नक्षत्रों में बेचने वालों को ९५ फीसदी नुकसान रहेगा, इसमें संशय नहीं । सट्टे में भी प्रथम बार व्यापार करने वाले व्यापारी

अवश्य ध्यान करें तभी मालूम होगा कि ऋषियों के वाक्य कहां तक सच हैं।

नालिश (अर्जी) का मुहूर्त—४।१।१४ तिथि हो, मं. श. वार हो, कृ. आर्द्रा. भ. अ. श्ले. म. ज्ये. मू. वि. पूर्वा ३ नक्षत्र हो, भद्रा होवे तो अत्युत्तम हैं।

गृहादि निर्माण में आयविचार

ग्रामभात् वासकर्तुर्नक्षत्रं यावद् गणना कार्या

स्थान	नक्षत्र	फलम्
मस्तके	७	धनलाभः
पृष्ठे	७	हानिःनैःस्वम्
हृदये	७	सुखलाभः
पादे	७	पर्यटनम्

गृहस्वामी के हस्तादि लम्बाई चौड़ाई को परस्पर गुणा कर आठ का भाग देवे, जो शेष रहे वह क्रम से ध्वजादि आय होते हैं। १ ध्वजा, २ धूम्र, ३ सिंह, ४ स्वान, ५ वृषभ, ६ गदर्भः, ७ हस्ती, ८ (०)। इनमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ और दो आदि समसंख्या को अशुभ जानना। गृह की भूमि को अन्दर से मापना चाहिए और देवस्थान की भूमि को बाहर से मापना चाहिए। ३२ हाथ लम्बे चौड़े घर में आयादि विचार की आवश्यकता नहीं है, और न चार द्वार वाले घर में ही। ब्राह्मण को ध्वजाय क्षत्रिय को सिंहाय, वैश्य को गजाय और शूद्र को वृषभाय विशेष शुभ होती है। अन्य आय नीच जाति के लिए शुभ हैं।

घर का नक्षत्र और व्ययज्ञान.

घर के क्षेत्रफल (हस्तादि लम्बाई चौड़ाई के गुणन) को आठ से गुणा कर २७ का भाग दे। जो अंक शेष रहे तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जाने। इस नक्षत्र को ८ से भाग देवे। शेषांक तुल्य व्यय जाने। आय से व्यय कम हो तो शुभ अन्यथा अशुभ।

वास्तुभूमि का शुभाशुभ जानना

नई बस्ती में गृहादि बनाना हो तो भूमिपूजनपूर्वक शाम को एक हाथ चौड़ा, एक हाथ लम्बा, एक हाथ गहरा गड्ढा बनाकर उसको जल से भर देवें। प्रातःकाल उसको देखें। यदि जलयुक्त हो तो शुभ, निर्जल मध्यम, निर्जल फटा हुआ हो तो अशुभ है!

मकान बनाने के लिए पृथ्वी की शुभाशुभ परीक्षा

सूर्य राशि के अनुसार खात दिशा देख मकान की नीव को इतना गहरा खोदे कि दूसरी मिट्टी निकल आवे। अथवा साढ़े तीन हाथ गहरी खोदे। खोदते समय जो जमीन में पत्थर वा काली ईट निकले तो धन आयु की वृद्धि हो और जो गुठली निकले तो धन नाश हो और जो हाड़ राख कोला बाल निकले तो मकान बनाने वाले को व्याधि पीड़ा हो।

गृहारम्भ मूहूर्त—वैशा. श्रा. मार्ग. माघ. फाल्गुन और सोर महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं, भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम हैं। २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ और कृष्णपक्ष की प्रतिपदा इन तिथियों में, चं. बु, गु. शु. श. वारों में, रो. म. चित्रा ह. स्वा. अनु. उत्तरा ३. ध. श. रे वेधरहित नक्षत्रों में, २।३।५।६।८।११।१२ लग्नों में, पञ्चबाण और भूमिशयन से रहित दिनों में लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभग्रह और ३।६।११वें स्थान में पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त शुभ होता है। केवल तृणमय गृहारम्भ में वत्सचक्र व वासादि का विचार नहीं करना।

गृहारम्भे वत्सचक्रम्

सूर्यनक्षत्र से गृहारम्भ नक्षत्र तक अभिजित सहित गणना करें।

स्थानानि	न.	फलानि
शीर्षे	३	अग्निदाह
अ. पादे	४	शून्यमसत्
पृ. पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्ति।
द कुक्षौ	४	लाभः शुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाशः
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुखे	३	पीड़ा असत्

विशेष—पुष्य. उ. ३ रो. म. आश्ले. पू. षा. इनमें से जिस पर बृहस्पति हो उस नक्षत्र में और बृहस्पति वार को गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्तिदायक होता है। रो. ह. अ. उफा. चि इनमें से जिस पर बुध हो उस नक्षत्र में बुधवार को गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते है। वि. बु. चि. ध. श. आर्द्रा इनमें से जिस पर शुक्र हो उस नक्षत्र में और शुक्रवार को गृहारम्भ हो तो धनधान्यदायक होता है।

प्रसुप्त-भूमि-ज्ञानम्—'संक्रांति मिति दिन पांचवें सप्तम् नवम जोय। दस इक्कीस २४ में षट् दिन पृथ्वी साय। तत्रात्यावश्यके क्रमात् ५।११।७।६।२।१०एताः घटिका भूमिकर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः। अन्यच्च—सूर्य के नक्षत्र से ५।७।६।१२।१६।२६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वीशयन के कारण मकान की नींव, तड़ाग, वापी, कूपादि का खोदना उत्तम नहीं होता।

गृहमध्ये कूप-विचारः

मध्ये	ई.	पू.	आ.	द.	नै.	प.	उ.	वा.
अर्थहानि	सुपुष्टि	सुप्राप्तिः	पुत्रनाशः	स्त्रीनाशः	गृहेशनाशः	संपत्	सुखम्	शत्रुभयम्

नक्षत्रवारौ तिथिसंप्रयुक्तौ वेदाहृतं तद्गणकेन कार्यम्। एकावशिष्टे च जलं हि नागे द्वाभ्यां च शेष सलिलं च स्वर्गे। त्रिशून्यशेषभुवि संस्थितं च भूसंस्थितं सुष्टु वदन्ति विज्ञाः॥

अथ चुल्लिचक्र विचारः

सूर्य के नक्षत्र से ६ नक्षत्र पीठ के सुखप्रद। ४ मस्तक के मृत्युप्रद। ८ बाहु के सुन्दर-सुख भोगदायक। ५ गर्भ के नाशक। २ भुज के भोगदायक। २ चरण के नाशक। यह चुल्लिचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डितजन विचार करें। उपरोक्त शुभ नक्षत्रों में चूल्हा तंदूर, स्टोव, गैस, चूल्हा बनावे तथा इन्हीं शुभ नक्षत्रों में प्रथम अग्नि जलावे।

नूतन-गृहप्रवेश मुहूर्त

माघ-फाल्गुन-वैशाख-ज्येष्ठमासेषु शोभनः। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेयः सौम्य (मार्ग) कार्तिकमासयोः॥ (यहां चान्द्रमास लेना)। उत्तरा ३., अनु., रो., मृ., चि., रे इन नक्षत्रों में रिक्तामा रहित तिथियों में च.वृ. श. इन वारों में २।५।८।११ लग्नों में, अत्यावश्यकता में ३।६।६।१२ लग्न में भी, लग्न से १।२।३।५।७।६।१० इन स्थानों में शुभग्रह हों, ३।६।११ में क्रूर हों, १।६।८।१२ में चन्द्रमा न हो, चौथा ८वां स्थान शुद्ध हो, जन्म लग्न या जन्म राशि से ८वीं राशि लग्न में न हो, चन्द्र तारा शुभ हों और कुम्भ चक्र की भी शुद्धि हो तो आगे गौ कन्या जलपूर्ण-पुष्पमालायुक्त-कलश शंखध्वनि मंगलगान के साथ दम्पति को गृहप्रवेश शुभ है।

गृहप्रवेश का विशेष मुहूर्त—पुराने अर्थात् जीर्ण या तृण कुटीर अथवा अग्नि वर्षा इत्यादि के भय से बनवाये हुए नए घर में भी वै. श्रा. का. मार्ग. फा. मास में शत. पुष्य. स्वा. और ध. नक्षत्रों में तथा गुरु शुक्र के अस्त में भी गृहप्रवेश हो सकता है।

सूर्यराशि-वश-खात-ज्ञान

देयालय की नींव खोदनी हो तो सौर चैत्र. वैशा०. ज्ये० में आग्नेय, आषा., श्रा., भा. में ईशान, आश्वि. कार्ति., मार्ग. में वायव्य, पौ० माघ० फा० में नैऋत्यकोण में शुभ है।

जलाशयारम्भ समय—वैशा. ज्ये. आषा. ईशान, भा. भा. आश्वि. में वायव्य कार्तिक मार्ग. पौष में नैऋत्य, माघ फा. चैत्र में आग्नेय कोण में नींव खोदना।

गृहारम्भ समय—वैशाख में वायव्य, ज्येष्ठ श्रावण में नैऋत्य. भादों कार्तिक में आग्नेय, मार्ग, माघ, में ईशान, में और फाल्गुन में वायव्य कोण में नींव खोदना शुभ है।

द्वारशाखा (देहली) चक्रम् सूर्यनक्षत्रात्

स्थानं.	नः	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्ति
कोण	८	उद्वसनं
शाखा	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	गृहेशनाश
मध्ये	४	सौख्यम्

चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम्।

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम् सूर्यभात्

५.	८	८	७
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

नलकूप, तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त—अनु.ह. तीनों (उ., रो. ध. श. म., पू. षा., रे. पुष्य, मृ. नक्षत्र हों, लग्न में बुध या गुरु हो, शुक्र १० वें स्थान में हो पापग्रह निर्बल हों तो शुभ है। यदि २।१०।४।११।१२ लग्न हों तो अत्युत्तम है: और जलाशयखात सूर्य राशि से देखें।

सूर्यनक्षत्रात्कूप-नल चक्रम्

ईशान ३ क्षार जल	पूर्व ३ खण्डितजल	आग्ने. ३ सुजल
उत्तर ३ उत्तम जल	मध्य ३ स्वादु तथा शीघ्रजल	दक्षिण ३ निर्जल
वायव्य ३ मिश्रितजल	पश्चिम ३ जल	नैऋत्य ३ अमृत जल

गणना क्रम—मध्यपूर्व आग्नेय दक्षिणादिक्रमेण बोध्यम्, जल का वास भी "गृहमध्ये कूप विचार" से भूमि पर विचारे।

सूर्यभात्तडागचक्रम्

ई. २ जलनाश	पूर्व २ शोक	आ. २ जलाधिक्य
उ. २ अमृत जल	मध्य ५ बहुजल	द. २ जलनाश
वा. २ जलनाश	प. २ बहुजल	नै. २ अमृतजल

अवशिष्टानि ६ नक्षत्राणि 'वारिवाह' संज्ञकानि सन्ति। तत्फलम्-वारिवाहे वारिहानिः। गणनाक्रम—पूर्व आग्नेय द० नै० प० वा० उ० ई० मध्ये वारिवाहः।

रोहिणीभात् वापी चक्रम्

ईशान अ. भ. कृ. मध्यजल	पूर्व पुन.पु.श्ले. जलाभाव	आग्नेय म.पूफा.उफा. मध्य जलम्
उत्तर पूभा.उभा.रे. मिष्ठ जलम्	मध्य रो.मृ.आर्द्रा शीघ्र जलम्	दक्षिण ह.चि.स्वा जलाभाव
वायव्य श्र.ध.श. क्षार जलम्	पश्चिम मू.पू.षा.उषा. अमृत जलम्	नैऋत्य वि.अनु.ज्ये बहुजलम्

जलाशयाराम देव-प्रतिष्ठा मुहूर्त

देवतारामवाप्यादि प्रतिष्ठामुत्तरायणे।
माघादि-पञ्च मासेषु कृष्णेऽप्यापञ्चमीदिने ॥
मातृभैरव वाराहनारसिंह त्रिविक्रमाः।
महिषासुर हंत्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने ॥

गुरु-शुक्र के अस्तादि रहित शुद्ध समय में शुक्लपक्ष उत्तरायण में रिक्ता-अमा. शनि-मंगल तिथि वार छोड़ कर शुभ तिथि वारों में, अश्वि. रो. मृ. पुन. पु. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. तीनों उत्तरा एवं रेवती नक्षत्र में, स्थिर लग्न में केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह हो तथा ३।६।११ में पापग्रह हो, कृष्णपक्ष में पंचमी तक देव-प्रतिष्ठा तथा जलाशय बाग आदि की प्रतिष्ठा भी शुभ है।

अपने अपने मास तिथि नक्षत्र में दक्षिणायन में भी प्रतिष्ठा के लिए शास्त्राज्ञा है। जैसे चतुर्दशी में शङ्कर की, चतुर्थी में गणेश की, भाद्रपद में कृष्ण की, आश्विन में देवी प्रतिष्ठा प्रशस्त है।

॥ श्री रामायणादि कथा प्रारम्भ का मुहूर्त ॥

गुरु के नक्षत्र में दिन नक्षत्र १६ तक अर्थलाभ सिद्धि, २४ तक मृत्यु. राजभय २७ तक मोक्षप्रद होता है। शुभवार तिथ्यादि विचारपूर्वक देवप्रीत्यर्थं शुक्ल पक्ष में और पितृ व प्रेतशान्त्यर्थं कृष्णपक्ष में करे।

वास्तुशान्ति मुहूर्त—श्र० ध० मृ० अनु० रे० ह० चि० स्वा० उत्तरा ३, पुन. पु. रो० अश्वि० एषु भेषु शुभेऽह्नि सत्तिथौ बलिदान पुरस्सरं वास्त्वर्चनं कार्यम्।

अग्नि का वास किस लोक में है—जिसदिन हवन करना हो उसदिन तिथि और वार की संख्या जोड़ कर एक ओर जोड़ना। पुनः ४ का भाग देना। यदि पूरा भाग लग जाए (० शेष रहे) अथवा ३ शेष रहे तब अग्नि का वास पृथ्वी पर सुख कारक होता है. शेष १ बचने पर आकाश में प्राणहानिकारक शेष २ बचने पर पाताल में धनहानि करता है। तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से, वार गणना रविवार से करनी। इसके बाद आहुति-चक्र जरूर देखिए।

ग्रहमुखे होमाहुति ज्ञानाय चक्रम्
(सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

सू.	बु०	शु०	श०	चं०	मं०	गु०	रा०	के०	ग्रहाः
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट	फलम्

विशेष—यात्रा-विवाह-व्रत-गोचरेषु चोलोपनीताद्यखिल व्रतेषु। दुर्गाविधानेषु सुत-प्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम्। महारुद्रव्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कस्यराहुणा। नित्य-नैमित्तिके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत् ॥ दिग्दाहेष्वथवा घोरे ग्रहास्ते भूमिकम्पने। केतना-मुदये शान्तौ चक्रं यत्नेन चिन्तयेत् ॥ लक्षकोटिहवने मखेऽखिले चाभिचारकरणे महाविधौ। देवखातभवने सुरालयादग्निचक्रमयमीक्षयेत्सुधीः ॥ दुर्भग गृहे वाऽग्नि विवादे शत्रुविग्रहे। शान्तिकार्ये नृपक्रोधे चक्रं तत्र निरीक्षयेत् ॥

हवन में शाकल्य-विचार—तिल का आधा चावल, चावल का आधा यव, यव का आधा शक्कर और सब का आधा घृत, असमर्थता में यथाशक्ति घृत लेना चाहिये।

पापग्रहमुखे हवने कृते शान्तिः—क्रूरग्रहमुखे चेत् सञ्जाते हवने शुभे। शांति विधाय गां दद्याद् ब्राह्मणाय कुटुम्बिने। आयसीं प्रतिमां कृत्वा निक्षिप्तेतामधोमुखीम्॥ गोमूत्र-मधुगन्धाद्यैरर्चितां प्रतिमां ततः। कुण्डे निधाय संपूज्य तत्र होमो विधीयते॥

अथ ऋणी-धनी विचारः—स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत्। अष्टभिश्च हरेद् भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत्॥

यथा—अपने नाम के 'अ' वर्गादिवर्ग को दूना कर दूसरे वर्ग को जोड़ना, फिर ८ से भाग देना। फिर दूसरे का वर्ग दुगुना करके अपना वर्ग जोड़ना, फिर ८ का भाग देना; जिसका भाग शेषांक अधिक बचे वह ही कम बचने वाले का ऋणी जानना। ऋणी नौकर रखना हितकर होता है। राशि के अनुसार आने से उच्च वर्ण की राशि का नौकर रखना निषिद्ध है, समान वर्ण प्रीतिकारक है।

भूमि का लेन-देन—गुरु, शुक्रवार १,५,६,११,१५, तिथि, मृग. पुन. ऽश्ले. म., पू. फा., वि., ऽनु., मूल, पू. षा., उ. भा. नक्षत्र में-घर जमीन का सौदा करना शुभ है।

हल-प्रवहण मुहूर्तः—मृ.रे.चि. अनु.रो. उत्तरा. ३. ह. अश्वि. पुष्य. अभि.स्वा. पु.श्र. ध.श.म.मू.वि.एषु भेषु रिक्ताषाष्ठ्यष्टमीरहित सत्तिथौ शुभग्रहस्य वासरे, १।५।७।१०।११ लग्नेषु भूमिशयन-भद्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशुद्धौ सत्यां हलप्रवहणं शुभम्।

हलचक्रम् सूर्य-मुक्त नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिने					बीजवपने राहुचक्रम् राहु नक्षत्रात् दिनभं यावत् गणना कार्या								
३	८	९	८	नक्षत्र	८	३	१	३	१	२	१	३	४
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	फलम्	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

बीज वपने मुहूर्तः—ह. अश्वि. पुष्य. उत्तरा ३. चि. अनु. मृ. र. स्वा. ध. एषु भेषु सत्तिथौ भौमातिरिक्त-वारेषु सुशकुने राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभः।

विशेषः-रवौ रौद्रा (आर्द्रा) चपादस्थे भूमौ संजायतेरजः। तस्माद्दिनत्रयं तत्तु बीजवापे परित्यजेत्

नवान्न भक्षण मुहूर्त:—मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. विषघटी रहित नक्षत्रों में शुभ है; नन्दा रिक्ता तिथियों और पौष चैत्र को छोड़कर सू. बु. चं. गु. शुक्रवार शुभ है।

गाय बैल आदि पशु लेने का मुहूर्त

उ. फा. नक्षत्र से वर्तमान नक्षत्र तक गणना करे। यदि वर्तमान नक्षत्र, उ. फा. नक्षत्र से चतुर्थ पंचम छब्बीसवां या सत्ताईसवां हो, तो गाय लेना अशुभ है। उ.फा. नक्षत्र से गणना करने पर उल्लिखित (४,५,२६,२७ वें) नक्षत्रों को छोड़कर शेष सभी नक्षत्रों में गाय लेना शुभ है। भैंस लेने के लिए भी यही क्रम है, परन्तु वहां उ.फा. से न गिनकर सूर्य नक्षत्र से गणना करे, नक्षत्रों की शुभाशुभ व्यवस्था पूर्ववत् ही है। बैल खरीदना हो तो भी उ. फा. से वर्तमान नक्षत्र तक गणना करे, परन्तु यहां उ.फा. से तीसरे चौथे २६वें एवं २७वें नक्षत्र में बैल लेना अशुभ है, शेष नक्षत्रों में बैल लेना लाभदायक समझें।

"नौमी चौदस चौथ चौपाया। मंगल हानि करे घर आया॥"

सूर्यनक्षत्रात्मकाष्ठादि (गुहारा आदि) संस्थापन चक्रम्							
५ उत्तमपात्र शुभ	२ धनदहन नेष्ट	४ सर्पभय नेष्ट	४ मित्रलाभ शुभ	४ रोगभय नेष्ट	४ यथाथकर्म नेष्ट	४ सुख शुभ	नक्षत्र संख्या फलम्

लता-वृक्षाद्यारोपण मुहूर्तः—मृ. रे. चि. अनु. उत्तरा ३, रो ह- पुष्य, अश्वि- श. मू. वि. नक्षत्रों में रिक्तामा रहित शुभ तिथियों में और चं. बु. वृ. शुक्रवार हों, शुक्लपक्ष में ४।१०।११।१२ लग्न में शुभ है तृणकाष्ठावितानग्रहनिर्माणः—तृणकाष्ठ का सञ्चय और पलंग बुनवाना आदि काम कुम्भ मीन के चन्द्रमा में नहीं करने चाहिए।

सिंगी (फस्त) लगाने का मुहूर्त—कृष्णपक्ष में रिक्ता तिथि एवं क्रूरवार को सिंगी (फस्त) और जोंक लगवाना रोगी के लिए आरोग्यप्रद होता है।

कुलदेवता-स्थापन मुहूर्त—शुभ वार, तिथि, अश्वि. रो. मृ. पुष्य, उफा. ह. चि. स्वा ऽनु. उषा. उभा. रे. नक्षत्र स्थिर लग्न भद्रादिदोष-रहित समय में शुभ है।

मशीनरी चालू करने का मुहूर्त—धनि., अश्वि., हस्त., चित्रा., अनु., पुष्य., ज्ये., पुन., एवं रेवती नक्षत्र में शनि की होरा में तथा मशीनरी चालू करने के लग्न में श. मं. शु.च. शुभ स्थान में हों तब चालू करनी चाहिए, इसके लिए वारों में बुधवार उत्तम है।

औषध सेवन का मुहूर्त—ह. अ. पुष्य. अभि. मृ. रे, चि. अनु. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मूल और जन्म नक्षत्र को छोड़कर इन नक्षत्रों में ४।९।१४ को छोड़ कर शुभ तिथियों में, भौम, शनि को छोड़कर अन्य वारों में शुभ है।

अथ यात्रा मुहूर्तः—

ह. मृ. श्र. अश्वि. पुष्य. पुन. ध. अनु. रे. एषु भेषु यात्रा अत्युत्तमा, रो, उत्तरा ३, पूर्वा ३. एषु भेषु मध्या; भ. कृ. आर्द्रा, आश्ले. म. चि. स्वा. वि. ज्ये. एषु भेषु निन्द्या। तत्रात्यावश्यकत्वेऽपि यात्रायां भरण्यादिभानां क्रमात् ७।२१।१४।१४।११।४०।१४।१४।१४ एता घटिका गमन-कर्मणवश्यं वर्जनीयाः, २।३।५।७।१०।११।१२ कृष्णपक्षस्य प्रतिपत्सु दिग्द्वारलग्नेषु वा यात्रा शुभा।

दिग्द्वारलग्नानि				
१।५।९	२।६।१०	३।७।११	४।८।१२	शुभम्
२।२।१०	३।७।११	४।८।१२	१।५।९	मध्यम
४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	३।७।११	भयम्
३।७।११	४।८।१२	१।५।९	२।६।१	ग०म०

यात्रा में शुभाशुभ लग्न—जन्मलग्न और जन्मराशि से अष्टमलग्न तथा कुम्भ या कुम्भ के नवांश में यात्रा कदापि न करें। शुभ लग्न वह है जब १।४।५।७।९।१० स्थानों में शुभ ग्रह और ३।६।१०।११ वें पापग्रह हों। अशुभ लग्न वह है जब १।६।८।१२ वें चन्द्रमा १० वें शनि, ६ वें शुक्र, १२।६।८ वें लग्नेश हो। अन्यच्च, यात्रायामष्टम शुद्धं विवाहे सप्तमं तथा। दशमं तु गृहारम्भे चतुर्थं तु प्रवेशने॥

जन्म लग्नेश दशमेश अस्त हों या मारक दशा हो तो सुमुहूर्त में भी दूर की यात्रा न करे, प्रथम तीर्थ-यात्रा या देव-दर्शन गुरुशुक्रास्त में वर्जित है।

विक्शूल-ज्ञानाय चक्रम्							नक्षत्र-शूल चक्रम्			
पूर्व. आ.	दक्षि.	नैऋ.	पश्चि.	वाय	उत्तर.	ईशा.	दिशा पू०	द.	प.	उ.
चं.श. च.श.	गुरु	सू.शु.	सू. शु.	भौम	मं.बु.	बु.श.	नक्ष. ज्ये.	पू.भा.	रोहि.	उ. फा.

विक्शूल-परिहारः—न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्य दैत्येज्य-दिवाकराणाम्।
दिवा शशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोषः॥१॥

आवश्यकता में दिक्शूल शान्त्यर्थ-रविवार को घृत, सोमवार को दूध, मंगल को गुड़, बुध को तिल, गुरु को दधि शुक्र को यवान्न, शनि को उड़द तैलकी वस्तु खाकर जाए तो शुभ है।

यात्रा में काल ज्ञान	
शनौ	पूर्वे
शुक्रे	आग्नेय्यां
गुरौ	दक्षिणे
बुधे	नैऋत्ये
भौमे	पश्चिमे
चन्द्रे	वायव्ये
रवौ	उत्तरे
सम्मुखेनष्टः पृष्ठे शुभः	

योगिनी-वास चक्रम्

पू०	अग्नि०	दक्षि०	नैऋ०	पश्चिम	वाय०	उत्तरे०	ईशा०दिशा
१।९	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०तिथि

योगिनी साधारण यात्रा में सामने और दाहने अशुभ होती है, पीछे और बाएं की शुभ, युद्ध यात्रा की बाएं ओर की ओर सम्मुख की विशेष त्याज्य है। समयशूल :—उषाकाल में पूर्व को, गोधूलि में पश्चिम को, अर्द्ध रात्रि में उत्तर को और मध्याह्नकाल में दक्षिण को नहीं जाना चाहिए। गर्गगुरु अङ्गिरामूहूर्त गर्ग जी के मत से ५ या ४ घड़ी रात रहे, गमन करे। बृहस्पति के मत से अच्छा शकुन मिलने पर यात्रा करे। अङ्गिरा के मत से जब मन प्रफुल्लित हो तब ही चला जाए। भगवान् के मत से ब्राह्मण की आज्ञा लेकर यात्रा करने से शुभ होता है। पञ्च पञ्च (५५) उषाकालः सप्तपञ्च (५७) अरुणोदयः। अष्टपञ्च (५८) भवेत्प्रातः शेषं सूर्योदयो भवेत्।

चन्द्र-वास चक्रम्

पूर्व	दक्षि.	पश्चि.	उत्तर
मेष सिंह धनु	वृष कन्या मकर	मिथुन तुला कुम्भ	कर्क वृश्चिक मीन

एकस्मिन् राशौ आवश्यके तात्कालिक यात्रायां घट्यात्मक चन्द्र-वास चक्रम्

पू.	द.	प.	उ.	पू	द.	पू.	उ.	दिशा
१७	१५	२१	१६	१७	१५	१०	१४	घटी

घट्यात्मक चन्द्रवास — जिस दिशा का चन्द्र होवे उस दिशा से गिनना चाहिए। कुम्भ और मीन के चन्द्रमा में दक्षिण को कदापि न जावे।

चन्द्रफलम्—सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुखसम्पदः। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः ॥१॥ सम्मुखे चन्द्रप्रशंसा— सर्वे दोषाःलयं यान्ति पूर्णचन्द्रे हि सम्मुखे ॥इति॥
करण-भगणदोषं, वारसंक्रान्ति-दोषं, कुतिथिकुलिकदोषं, यामयामार्धदोषम्।
कुजशनिरविदोषं राहुकेत्वादिदोषं हरति सकलदोषं चन्द्रमा सम्मुखस्थः।

सर्वाङ्क सिद्धि योगः—शुक्लादि तिथि वार की संख्या के जोड़ को तीन जगह रखे क्रमशः ७।८।३ का भाग दे। शेष प्रथम स्थान में शून्य हो तो क्लेश, मध्य में हो तो धनक्षति और अन्त में हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्रअंक आने से सौख्य, जय, लाभ हो। विजयादशमी को बिना सर्वाङ्कादि मुहूर्तों के भी यात्रा सफल होती है। बायां स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को, दायां चलते समय दक्षिण व नैऋत को मत जाओ हानि होती है। जाने वाले का अच्छे मुहूर्त और अच्छे शकुन में भी जाने को मन न चाहे तो कदापि न जावे, क्योंकि मुहूर्त शकुन से मन की इच्छा प्रबल है। नोट—श्वास खींचते हुए सवारी पर पैर रखें तो यात्रा सुरक्षित होती है।

वर्ण क्रमेण प्रस्थान विधानम्—यदि यात्रा मुहूर्त में किसी अत्यावश्यक कार्यवश विलम्ब हो जाये तो उसी मुहूर्त में ब्राह्मण जनेउ माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य मधु घृत व रुपया और शूद्र खट्टे फल को अपने वस्त्र में बांध किसी घर के या नगर के बाहर जाने की दिशा में प्रस्थान से पूर्व रक्खे। अथवा सब लोग मन की सबसे प्यारी वस्तु को रख दें। प्रस्थान (पैता) रखने के दिन से तीन दिन के अन्दर ही चल देना चाहिए।

यात्रा से पहले त्याज्य वस्तु—यात्रा के तीन दिन पहले दूध त्याग दें, पांच दिन पूर्व हजामत, तीन दिन पूर्व तैल, सात दिन पूर्व मैथुन, समर्थ न हो तो एक दिन पहले सो सब त्याज्य वस्तुओं का त्याग अवश्य करें। अशुभ मुहूर्त में यात्रा करने पर हानि का भय रहता है। यदि यात्रा का मुहूर्त शुभ न हो और यात्रा भी न टाली जा सकती हो तो चतुर्घटिका या होरा मुहूर्त देख यात्रा करें।

दिने चतुर्घटिका मुहूर्तम्							रात्रौ चतुर्घटिका मुहूर्तम्							
सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह.	शुक्र	शनि	घटी	सू.	चं.	मं	बु.	गु	शु.	श.
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	३।।	शु.	च	का.	उ.	अ.	रो.	ला.
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	७।।	अ.	रो	ला.	श.	च.	का.	उ.
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	११।	च.	का	उ.	अ	रो.	ला,	श.
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	१५	रो.	ला	शु	चं.	का.	उ.	अ.
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	१८।।	का.	उ	अ	रो	ला.	शु.	च.
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	२२।।	ला.	शु.	च	का.	उ.	अ.	रो.
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	२६।	उ	अ	रो	ला.	शु.	च.	का.
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	३०	श.	च.	का	उ.	अ.	रो.	ला.

चतुर्घटिका मुहूर्त में चर लाभ अमृत शुभ हैं शेष अशुभ हैं।

सूचना—यदि ३० घटी से न्यूनाधिक दिन या रात्रि का मान हो तो उसमें ८ का भाग देने से एक भाग घटी पल ज्ञात होंगे।

यात्रायां शुभ शकुनानि—मृग बायते दाहिने जो आवे तत्काल। अन्न धन लक्ष्मी बहु मिले चलते प्रातःकाल। विप्र, दो अश्व, गजमद, फल, अन्न, दुग्ध, शीशा, श्वेत वृषभ गोदधि सर्षप, कमल निर्मलवस्त्र, वाद्य, वैश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस दीप्ताग्नि, मत्स्य, रोदनरहित मृतक, मंगल गान, वेदध्वनि ससुतस्त्री, गोरी कन्या, धोबी, कार्यसिद्ध वाक्य, सजलपूर्णघट, पश्चाद्रिक्त घट यात्रा समय देखने शुभ हैं। **अशुभ शकुनानि**—वन्ध्या स्त्री, चर्म अस्थि, इन्धन, सन्यासी, रिक्त-घट भैंसों का युद्ध, सर्प, शत्रु, मार्जार-युद्ध, कटुम्बकलह, विधवा, जातिभ्रष्ट, अंगहीन छिक्का, दुष्ट-वाणी, दुखिया का रोना, भैंस पर सवार, नंगा-मनुष्य, दक्षिण में गर्दभ शब्द, यात्रा समय देखना अशुभ तथा कष्टप्रद है।

रामदैवज्ञोक्त आवश्यक यात्रा मुहूर्त चक्रम्

पौ.	मा	फा	चै.	वै	ज्ये	आ	श्रा	भा	आ	का	मा.	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौम्य	क्लेश	भीति	लाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	दारिद्र्य	दारिद्र्य	मिश्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	हानि	दुःख	लाभ	लाभ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	शुभ	लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	लाभ	कष्ट	सौख्य
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय	लाभ	मृत्यु	लाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	सिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	सिद्धि	लाभ	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	लाभ	शुभ
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शुभ	सौख्य	मृत्यु	कष्ट

दिशा शूल ले जावे वामे । राहु योगिनी पूठ ।।
सन्मुख लेवे चन्द्रमा । लावे लक्ष्मी लूट ।।

यात्रा से सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पांव आगे उठाकर चले इसी तरह सवारी पर चढ़े, कार्यसिद्धि, यात्रा सफल होगी।

नौका यात्रा मुहूर्त—चि. ह. पु. मृ. पूर्वा. ३, अनु. श्र. घ. एषु भेषु सत्तिथौ शुभेऽह्नि चन्द्रताराकृत्ये सति शुभम् ।

यात्रा निवृत्तौ प्रवेश मुहूर्त—म.रे.चि.अनु.रो.,उ. ३, ह.अ. पुष्य, स्वा. श्र. घ. श. एषु भेषु चं. बु. गु.शु.श. वारेषु १।२।३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु ३।५।६।८।६।११।१२ एषु लग्नेषु, १।४।७।१०।५।६ स्थानेषु शुभैः ३।६।११ स्थानेषु पापैः ४।८ शुद्धौ शुभः । वि. कृ. पू. ३ भ. म. मू. ज्ये. आर्द्रा आश्ले, नक्षत्राणि ।४।६।१४।६।१२।८।३० तिथयः सू. मं. वारौ १।४।७।१० लग्नानि सर्वदा वर्जनीयानि । मंगल का मिलाप कष्टप्रद सिद्ध होता है । विशेष :—प्रवेशान्निर्गमश्चैव निर्गमाच्च प्रवेशनम् ।
नवमे जातु नो कुर्याद्दिनेवारे तिथाविति ।।

घातचन्द्र, घातवार आदि का चक्र

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशयः
मे.	क.	कु.	सि	मं.	मि.	ध.	वृष	मीन	सिंह	धनु	कुम्भ	घातचन्द्र
र.	श.	चं.	बु,	श.	श	गु.	शु.	शु.	मं.	वृ.	शु.	घातवार
मं.	ह.	स्वा	अनु	मू.	श्र.	श	रे	भ.	रो.	आ.	श्लेषा	घातनक्षत्र
मे.	ध.	ध.	मि.	वृश्चि	वृश्चि.	मी.	ध.	कन्या	वृश्चि.	मि.	मेष	स्त्रीचं.घात
का.	मार्ग	पौ.	माघ	फा.	चैत्र	वै.	ज्ये.	अ.	श्राव	भा.	आ.	घातमास
वि.	शु.	प.	धृ	प्री.	शु.	अ.गं.	वृद्धि	वैधृ.	गं.	व्या	य.	घातयोग
१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५	घातलग्न
१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५	घाततिथि
६	१०	७	७	८	१०	९	६	८	९	८	१०	,,
११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	१४	१३	१५	,,

कार्य सिद्ध्यर्थ यात्रा में, युद्ध, विवाद, राजदर्शन, वाहन तथा रोगादि कार्यों में घातचन्द्र देखें । तीर्थयात्रा, विवाह एवं उपनयन आदि शुभ कार्यों में घाततिथि आदि देखने की आवश्यकता नहीं । **"घात-तिथिर्घात-वारः घात-नक्षत्रमेव च । यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञस्त्वन्य कर्मसु शोभनम् ।।"** कार, स्कूटर, बाईसाइकिल आदि की खरीद घातचन्द्र में वर्जित है ।

छिपकली कोढ़-किरली गिरने का फल

अग्रिम चक्रोक्त सर्वफल पुरुषों के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वामांग में विचार **करना, पुरुषों के वाम भाग में** और स्त्रियों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ भयकारी फल **होता है** । जो फल पल्लीपात का कहा है, वही फल सरट (गिरगिट) के चढ़ने का जाने । **सरट के गिरने का तथा पल्ली के चढ़ने का** फल वृथा होता है ।

अथांग-विभागे पल्ली-(छिपकली कोढ़ किरली) पतन फलम्

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	भ्रूमध्ये	राज्य सम्बन्धः	वामपादे	नाशः
नासाग्रे	व्याधिः	वामकर्णे	बहु लाभः	अधरोष्टे	ऐश्वर्य लाभः
वामभुजे	राज्यभयम्	स्तनयोः	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृप तुल्यता
जानुद्वये	शुभागमः	हस्तयोः	वस्त्र लाभ	पृष्टदेशे	बुद्धिनाशः
कटिभागे	अश्व लाभः	वाममणिबंधे	कांति नाशः	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम	मुखे	मिष्ठान्न भोजनम्
ललाटे	बन्धुदर्शनम्	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्री नाशः
दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धि	नेत्रयोः	धन प्राप्ति	पादान्ते	मृत्युः
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	मरण
जंघयोः	शुभम्.	स्कन्धयोः	विजयः	नखेषु	धान्य लाभ;
द. मणिबंधे	मनस्तापः	हृदये	धनलाभः	दक्षांगुष्ठे	धन लाभः

पल्ली-पतने प्रशस्त वार-तिथ्यर्क्षाणि—यदि छिपकली १।२।३।५।६।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक है । तथा चं. बु. गु. शु. इन वारों में भी शुभ फल देती है । पु, अश्विनी. रो. मृ. पुन: उफा. ह. चि. स्वा. ध. रे. अनु. श. ये नक्षत्र शुभ फलदायक है । अतोऽन्येषु भेषु निन्द्याः ।

पल्लीपाते कर्त्तव्यं कर्म—पली (किरली) तथा सरट (गिरगिट) स्पर्श होने पर वस्त्र सहित स्नान करें । जन्म नक्षत्र, मृत्युयोग, दग्धा दिन भद्रा आदि से दूषित दिन को पाप-ग्रह युक्त लग्न में तथा अष्टम चन्द्रमा से पल्ली आदि के स्पर्श होने में अरिष्ट होता है । उसकी शान्ति के लिए जप, होम, मृत्युञ्जय का जप वा तिल-स्वर्ण दान पञ्चगव्य से स्नान तथा घृत का छाया पात्र दान करना भी उत्तम है ।

छिपका फलम्—छिक्का प्रायः सब दिशाओं की नेष्ट होती है, गौ की छिक्का मरण करती हैं । मदिरा के योग अथवा—छींक सूंघनी छल कर लीन्हीं पीन सरदी घास फल हीनी । छीकि पीठि की कुशल उचारे, बाईं कारज सब सवारे ।।१।। सम्मुख छींक लड़ाई मारे । छींक दाहिनी द्रव्य विनाशे ।।२।। ऊंची छींक कहे जयकारी । नीची छींक होय भय कारी । अपनी छींक महा दुखदाई । ऐसे छींक विचारे भाई ।।३।। कन्या विधवा मालन धोबिन रजस्वला वैश्या चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है । भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले ।

अथ शुभ छिक्का—आसने शयने शौचे दाने चैव तु भोजनं । वामांगे पृष्ठतश्चैव षट् छिक्कास्तु शुभावहा ।। सन्ध्या वन्दन जपादि के आरम्भ में भी छिक्का शुभ है । एक नाक दो छींक काम बने सब ठीक ।।

यात्रा में प्रथम बार अपशकुन होवे तो ११ स्वास तक ठहर कर चले द्वितीय बार १६ स्वास तक ठहरे और तीसरी बार के अपशकुन में कदापि न जावे । यदि एक कोस के बाद शुभाशुभ शकुन हो तो उसका कुछ फल न समझें ।

अंग-स्फुरण-फलम्

पुरुषों का दायां अंग और स्त्रियों का बायां अंग फरकना शुभ है।
मस्तक का स्फुरण (फड़कना) स्त्री पुरुष दोनों के लिए शुभ है।

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
मस्तक	पृथ्वीलाभ	वक्षःस्थल	विजय	ओष्ठ	प्रियवस्तु
ललाट	स्थानलाभ	हृदय	इष्टसिद्धि	हनु	महाभाग
स्कन्ध	भोगसमृद्धि	कटि	प्रमाद	कण्ठ	ऐश्वर्यलाभ
भ्रूमध्य	सुखप्राप्ति	कटिपार्श्व	प्रीति	ग्रीवाधः	शत्रुभय
भ्रूयुग्म	महत्सौख्य	नाभि	स्त्रीनाश	पृष्ठ	पराजय
कपोल	शुभाप्ति	आंत्रिक	कोपवृद्धि	मुख	मित्रप्राप्ति
नेत्र	धनाप्ति	भग	पतिप्राप्ति	भुज	मधुरभोजन
नेत्रकोण	लक्ष्मीलाभ	कुक्षि	सुप्रीति	भुजमध्य	धनागम
नेत्रसमीप	प्रियसंगम	उदर	कोपलाभ	बस्तिदेश	अभ्युदय
नेत्रपक्ष्म	राज्यलाभ	लिंग	स्त्रीलाभ	ऊरु	वस्त्रलाभ
हस्त	सद्द्रव्यलाभ	गुदा	वाहनलाभ	जानु	शत्रुवृद्धि
नेत्रोर्ध्व	विजय	वृषण	पुत्रलाभ	जंघा	स्वामीप्रीति
पादोपरि	स्थानलाभ	पादतल	नृपत्व-बुद्धि		

इन्हीं अंगों में तिल, लसन, मस्सा हो व खुजली उठे तो भी चक्रोक्त फल जानना। पैर के तलुओं में खुजली उठे तो यात्रा हो। राजाओं के हाथ में तिल या खाज हो तो जय होती है। साधारण व्यक्ति को लाभ होता है।

उत्पात-फल-चक्रम्

उत्पात	फल	उत्पात	फल	उत्पात	फल
दिग्दाह	वर्षा न हो	भूकम्प	प्रजा को भय	सर्वग्रहअतिचार	शुभ फल
धूल वर्षे	दुर्भिक्ष पड़े	पहाड़ टूटे	राजा की मृत्यु	मूसल निकले	युद्ध महर्घता
पत्थर वर्षे	अकाल हो	वृक्ष टूटे	राजा का भय	धूम्रकेतु उदय	राजभंग करे
तारे टूटें	जनक्षय	उलटी ऋतु	रोग विशेष	२।३।४ शूलोद	राजनाश
बिजली टूटे	जल सूखे	आदलीकेपशुहो	राजविघ्न	सुवर्ण पंक्ति	राजनाश
दिन अंधेरा	प्रजाक्षय	गहयुद्ध	राजाओंमेंविग्रह	त्रिकोणतारा	प्रजानाश
ग्रहसंयुति	अकाल	सूर्यचंद्रमंद पड़ें	देश क्षय	वनपशुगांव बसें	मनु. शून्य
श्वेतमण्डल	भय हो	कृष्ण मंडल	राज नाश	घर उल्लू बोले	गृह शून्य
पीतमंडल	रोग हो	धूम्र मंडल	बर्फ पत्थर पड़े	बांबी कबूतर घर में बसे	गृहस्वा. ना.
नीलमंडल	वर्षा हो	बिना ऋतु फल	अन्न नाश		
रक्तमंडल	युद्ध हो	सूखीभूमीगीली	बहुत वर्षा	सू. चं. बिम्ब	रोगभय
स्त्री वध हो	दुर्भिक्ष पड़े	विप्रबालक वध	दुर्भिक्ष पड़े	अधिक देख पड़े	राजनाश
देवध्वंस	राजनाश	सर्वग्रास	सबवस्तु महंगी	भूमिकम्प	दुर्भिक्ष
ग्रहास्तोदय	भयंकर वर्षा	भौमादिक वक्र	दुर्भिक्ष पड़े	१३ दिन का पक्ष	प्रजानाश

अथ वारपरत्वेन तैलाभ्यंगे फलं-विधिश्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वाराः
तापम्:	सुकान्ति	मृति	श्रीः	वित्त हानि	विपत्ति	सुख सुयोग	फलम्
पुष्पं	०	मृत्तिका	०	दूर्वा	गोमय	०	पातनम्

तैलाभ्यंगे वर्ज्यानि

रवौ भौम व्यतीपाते
संक्रांतौ वैधृतावपि।
षाठ्यष्टम्योश्च विष्ट्यां च
तैलाभ्यंगो न पर्वसु।

विशेष—यदि प्रतिदिन तेल लगाने का स्वभाव हो तब अथवा उत्सव के दिन व वातारोग में तेल लगाने में दोष नहीं है। अभिमन्त्रित औषधि में पकाया हुआ सरसों का तेल व सुगंधित तेल लगाने से किसी दिन दोष नहीं है।

काक-स्पर्शादौ फलम्—मस्तक पर काक स्पर्श धननाश, मरण तथा कलह करता है। कमर, कन्धे पर अशुभ होता है। स्त्री के मस्तक पर काक बैठना पति पुत्र का नाश करता है। वृक्ष के नीचे दही आदि के उत्तम भोजन के कारण काक का स्पर्श दोषकारक नहीं होता, किन्तु अकस्मात् स्पर्श दोष करता है। काकमैथुन देखना छः मास में मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट वा इष्टकार्य नाश करता है। विशेषकर दक्षिण दिशा में कुयोग के समय इसके दोष को दूर करने के निमित्त उड़द के आटे की काक प्रतिमा मृण्मय पात्र में स्थापना कर उड़द, पायस, घी, मीठा, नैवेद्य देवे, ग्राम से दक्षिण की ओर बाहर चौरास्ते पर गन्ध पुष्प, धूप, चतुर्मुख दीप, दक्षिणादि से पूजन कर मृत्युञ्जय का यथाशक्ति जप करे (या करादे)। घृतच्छाया पात्र दान और पञ्चगव्य से स्नान भी करे, यह विधान के करने से सम्पूर्ण दोष नाश होते हैं।

काकविष्ठा विचार—शिरसि—मृत्युः वा कष्टम्। स्कन्धयोः-रोगः। भुजयोः—प्रियार्तिः। उदरे-शोकः। गुह्ये-सन्तान-कष्टम्। जंघयोः—वाहनपीड़ा। पादयोः-प्रवासः।

कौवा उड़ता हुआ या किसी सूखे पेड़ पर बैठा हुआ, या पूर्व की तरफ बैठा हुआ अथवा दक्षिण दिशा की ओर मुंह किये किसी के ऊपर काली बीठ कर देवे तो अशुभ जानो। यदि किसी हरे भरे या फूले फले या पीपल, वड़ आदि श्रेष्ठ पेड़ पर बैठा हुआ सफेद बीठ करदे तो शुभ जानो।

घर में उल्लू आदि—घर में उल्लू गिरे तो स्थान, मान, आयु की हानि हो। जंगली कबूतर घर में बसे-यह भी अशुभ है। शान्त्यर्थं हवन पूजन जप-दान आदि करना चाहिए।

अंकप्रश्न तथा फल वर्णन—प्रश्नकर्ता से एक सौ आठ अंक के भीतर कोई एक अंक मुख से कहलावें या लिखावें। उसमें बारह का भाग देकर पीछे यदि १।६।७ बचे तो देर से कार्यसिद्धि होवे। यदि ४।५।८।१० बचे तो कार्य नाश होवे। ११ बचे तो सिद्धि २ बचने से वृद्धि, ३।६।१२ (०) बचने से शीघ्र सिद्धि होवे यह फल कहे।

अथ स्वप्न-विचार

स्वप्न ७ प्रकार का होता है, प्रथम दृष्ट (दिन में देखे हुए को देखना), द्वितीय श्रुत (सुने हुए को सुनना), तृतीय अनुभूत (जागृतावस्था में परीक्षा की हुई वार्ता को स्वप्न मे देखना), चतुर्थ प्रार्थित (जागृतावस्था में इच्छा की हुई बात को देखना), पञ्चम कल्पित

(दिन में कल्पना की हुई वस्तु को देखना), षष्ट भाविक (न देखी न सुनी उससे विलक्षण), सप्तम दोषज (वात, पित्त, कफ के दोष से)। पूर्वोक्त सात प्रकारों में से ।'दृष्ट श्रुत, अनुभूत प्रार्थित, कल्पित' ये पांच प्रकार के स्वप्न प्रायः निष्फल होते हैं। छठे भाविक स्वप्न का फल उत्तम मिलता है। सप्तम दोषज का फल रोगी के उत्तम मध्यम देखने में आता है। इतना विशेष है कि—बहुत बड़ा तथा बहुत छोटा स्वप्न निष्फल होता हैं। शुभ जन देखकर पुनः स्नानादि से शुद्ध हो देव या गुरु आदि के शुभ स्थान में जाकर किसी पूर्ण दैवज्ञ के सामने फल, पुष्प दक्षिणा रखे, स्वस्थचित्त से स्वप्न का वर्णन करे, शुभाशुभ तथा सामान्य फल का विचार करावे।

शुभस्वप्न—राजा हाथी, गौ, बैल, विप्र, देवता, अनेक बालक, वृद्ध, गुरु, श्वेत-वस्त्र वाली स्त्री, रत्न, इनका दर्शन तथा आशीर्वाद मिलना, महल पर्वत, सिंह, अश्व एवं अन्न की ढेरी पर चढ़ना व दर्शन करना, रक्त से स्नान रथ शय्यादि का ज्वलन; स्व-शिर का छेदन, स्व-रुदन, अपना मरण, वेद-ध्वनि श्रवण, रक्त पीत पुष्प दर्शन, दर्पण, प्राप्ति दही चावल भोजन, जुआ, रण विवाद में अपनी जय, इन्द्रधनुष का देखना, छाछ, अस्थि कपास, नमक, इन चार वस्तुओं को छोड़कर अन्य सर्व श्वेत वस्तु, स्वप्न में देखना धनैश्वर्य की प्राप्ति तथा कष्ट की निवृत्ति करता है। यदि कोई क्लर्क वा मुन्शी यह स्वप्न देखे कि उसने दफ्तर के रजिस्टरों वा बहियो में गल्तियां की हैं तो उसे उसके मालिक से अच्छा काम करने की शाबाश या तरक्की मिलेगी।

दर्पण में मुख देखें तो प्रेमी से मिलाप हो। यदि स्वप्न में फल-पुष्प सहित वृक्ष पर अथवा श्वेत वृषभ पर चढ़कर जाग जाय अथवा दक्षिण हाथ में श्वेत सर्प काट जाय तो निश्चय शीघ्र विशेष धन मिले। स्वप्न में बिच्छु, या सर्प के जल में पैर पर काटने से रक्त निकल आवे तो विपत्ति दूर होकर सुख हो। श्वेतवस्त्र वाली स्त्री का स्नान करना, हाथों में हथकड़ी पैरों में जंजीर का बन्धन पड़ना, नर या नारी के हाथ से जूता व खड़ाऊ छत्र, तीक्ष्ण तलवार का मिलना, टट्टी में सर्प का दीखना, अपने पैर व भुजा के मांस को खाना, अगर कपूर पान का मिलना, ऐसे स्वप्न दीखे तो लक्ष्मी की प्राप्ति व सुख मिले। मणि आदि पात्रों में भोजन करना, अपने शिर के मांस को खाना राज्यलाभ करता है। गौ का ताजा दूध उसी वक्त पीना, सूर्यमण्डल का दीखना, अपना मरना दीखे तो रोगी पुरुष का रोगनाश और नीरोग पुरुष को लाभ होता है। बगला, मुर्गी, कुब्ज का दीखना चतुर स्त्री प्राप्ति का सूचक है। स्वप्न में रक्त व मद्य का पीना, विप्र को उत्तम विद्या लाभ, क्षत्रियादि को धन प्राप्ति करता है। मांस, चरबी का खाना, विष्ठा अपने अंग में लगाना, श्वेत चन्दन, श्वेत वस्त्र पुष्प से सुसज्जित अपनी देह व अन्य पुरुष की देह देखना, लाभ करता है। हरी सब्जी व सुन्दर अन्न कोई घर पर दे जाय तो भी लाभ हो। नदी समुद्र में तैरना, तालाब में तैर कर पार जाना, सूर्योदय का देखना कोष्ट-पूर्ति करता है। ऊंचे मन्दिर पर चढ़कर आग लगी देखना या तारों का देखना भाग्योदय करता है। राजा, गौ, ब्राह्मण को प्रसन्न देखना, पर्वत, वृक्ष, बगीचे, हरे सुन्दरफल संयुक्त देखना पिछड़े काम सिद्ध होंगे, ऐसा जानना। घर में किसी की मृत्यु पर सब रो रहे हों तो लक्ष्मी और सुख मिले। बेड़ी पर चढ़कर पार होने से परदेश गमन हो। अगर कोई दुकानदार स्वप्न में देखे कि ग्राहक उसके बिल चुकाए बिना भाग गया है तो उसका समझ लेना चाहिए कि रुपया कहीं से शीघ्र मिलेगा और नये ग्राहक भी बनेंगे, यदि किसी की बहन स्वप्न देखे कि उसके भाई पर भारी विपत्ति पड़ा है और उसकी जान खतरे में है तो यदि वह कुमारी है तो उसका किसी बड़े आदमी के साथ विवाह हो जाएगा और यदि वह विवाहित है तो उसके घर में सब प्रकार से सुख शान्ति रहेगी।

शुभ स्वप्न के बाद सोने से स्वप्न निष्फल हो जाता है अतः सोवे नहीं।

अशुभ स्वप्न—लालवस्त्र पहिनना, सूर्य-चन्द्र का निस्तेज दीखना, तारों का चढ़ना अपने घर में हंस हंस के किसी स्त्री को मंगल गाते देखना, नीम पलास के वृक्ष पर चढ़ना, रुई, कपास, भस्म, तेल, लोहा मिलना या देखना इससे संकट व मृत्यु हो। शरीर में तेल मलना या किसी के द्वारा तेल से स्नान का होना मृत्यु व भारी कष्ट को सूचित करता है। शिर के सारे बालों का या मुख के दांतों का गिरना, द्रव्य या पुत्र का नाश करता है। मरे मनुष्य का अपने स्थान में भोजन करना व किसी वस्तु को मांगकर ले जाना द्रव्य हानि व कष्ट करता है। तैलपक्व गुलगुले तथा तांबे के पैसे मिलना रोग संकट सूचक है। अपनी स्त्री की कमीज को मरी स्त्री ले जावे तो पुत्र कष्ट या मृत्यु हो। हाथ, नाक का काटना, कीच (पंक) में फंसना, ऊंट, गधे, भैंस पर चढ़कर तैल मलकर दक्षिण दिशा को जाना और विवाह-गीत मंगल सुनना, अपने घर को किसी के द्वारा गिराते हुए देखना, काले तथा रक्तवस्त्र वाली स्त्री का आलिंगन करना, बन्दर सर्प पर चढ़ना, श्राद्ध आदि पितृकार्यों का करना, भूतप्रेत चांडालों के साथ मिलना, अथवा भूतादि द्वारा पकड़ा जाकर दक्षिण दिशा में जाना इत्यादि स्वप्न मृत्यु कारक होते हैं। नदी में डूबना अथवा नदी के प्रवाह में बह जाना, बिना ऋतु के वर्षा देखना, बाघ, रीछ गीदड़ बिलाव, भैंस, सर्प मक्खी का दर्शन, पर्वत शिखा का तथा बड़ी महल-ध्वजा का गिरते देखना अशुभ कष्ट व चिन्ताकारक है। गौ, हस्ती, देव, विप्र इन के सिवा सब काले रंग की वस्तु देखना अशुभ व चिन्ताकारक है। अगर "विधवा स्त्री" यह स्वप्न देखे कि उससे शादी करने का किसी ने सवाल किया है तो उस पर कोई सख्त बीमारी आवे या मृत्यु होवे। कुत्ता शरीर पर कूदकर दांत से मांस काटे तो शत्रु गुप्तभाव से अनिष्ट करेगा। यदि स्वप्न में कोई कुत्ता प्रेम से आपके साथ खेलता दिखाई दे तो लाभ हो। यदि अपने को कैद में देखे तो दुःख से छूटे। बकरी को चरती देखे तो शुभ दिन नजदीक समझे। तूफान देखे तो दुःख के अन्त की सूचना समझें। घर में आग लगी देखे तो जीवन में कोई विशेष परिवर्तन हो। स्वप्न में बिडाल (बिल्ला) दिखाई दे तो किसी से ठगा जाए। दीपक बहुत टिमटिमाता दिखाई दे तो नीरोग व्यक्ति के लिए रोग की सूचना तथा रोगी व्यक्ति के लिए मृत्यु की सूचना देता है। मुण्डित-केश नर, भिक्षुक तथा सूखी-नदी, सूखा पेड़ आदि का दिखाई देना भी रोग कष्ट एवं मृत्यु सूचक है।

स्वप्न का फल कब मिलेगा

रात्रि के प्रथम प्रहर का एक वर्ष में, द्वितीय का ८ मास में, तृतीय का ३ मास में तथा रात्रि के चतुर्थ प्रहर का एक मास में, अरुणोदय का १० दिन में तथा सूर्योदय से कुछ पहले का स्वप्न तत्काल ही फल देता है। अथवा—रात्रि में जिस समय स्वप्न दिखाई दे, उस समय से जितनी घड़ी रात्रिशेष रहे, उस घटी को चार से गुणा करे, जितनी संख्या हो उतने ही दिनों में स्वप्नफल मिलेगा।

अशुभस्वप्न के दोष की शान्ति

दुष्ट स्वप्न के दोष को दूर करने के निमित्त मृत्युञ्जय का जप, होम, यथाशक्ति स्वर्ण तथा गोदान, अश्वत्थ-पूजन, विष्णुसहस्र नाम, गजेन्द्रमोक्ष व चण्डीपाठ, ब्राह्मण भोजनादि करवाना चाहिए। अशुभ स्वप्नों को देखकर फिर तत्काल सो जाना भी दुःस्वप्न के अनिष्ट फल को दूर करता है।

सिद्ध होरा मुहूर्त :—यस्य ग्रहस्य वारेषु कर्म किञ्चित्प्रकीर्तितम्
तस्य ग्रहस्य होरायां सर्वं कर्म विधीयते ॥

सूर्य की होरा—टैण्डर देने, नौकरी व राजकार्य के चार्ज लेने-देने के लिए अच्छी होती है।

चन्द्र की होरा—सब कार्यों के लिए अच्छी होती है।

मंगल की होरा—युद्ध, द्यूत, यात्रा, कर्ज देना, सभा सोसाइटी में जाना, मुकद्दमा के कार्यों में उत्तम होती है।

बुध की होरा—विद्या (कला काव्य) का आरम्भ, कोष संग्रह करना, नवीन व्यापार करना, नवीन-लेख पुस्तक प्रकाशन, प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत करने के लिए शुभ होती है।

गुरु की होरा—विवाह सम्बन्धी कार्यक्रम, बड़ों से मिलन, कोष संग्रह, नवीन काव्य लेखन प्रकाशन आदि अनेक शुभ कार्यों के लिए शुभ है।

शुक्र की होरा—यात्रा, भूषण, नवीन वस्त्र धारण, सौभाग्य-वर्धक कार्य व सिनेमा शूटिंग के लिए शुभ होता है। **शनि की होरा**—द्रव्य संग्रह, भूमि मकान की नींव, नूतन गृहारम्भ, मशीनरी मिल्स कार्यारम्भ, समस्त स्थिर कार्यों के लिए शुभ होती है।

सम्पूर्ण कार्यों की सिद्धि के लिए ज्योतिशशास्त्र में होरा (क्षणवार) मुहूर्त पूर्ण फलदायक माना है। सात ग्रहों की सात ही होरा हैं। प्रत्येक वार को एक घण्टे की सूर्योदय के समय उसी वार की पहली होरा होती है। फिर दिन रात के २४ घंटों में २४ होरे व्यतीत होने से अगले वार के सूर्योदय के समय उसी वार के स्वामी की होरा आ जाती है। होरा का समय ढाई घटी, यानि एक घण्टा का होता है। दूसरे वार की होरा उसी वार के छठे छठे वार के क्रम से स्वामी की होती है। इसी प्रकार प्रत्येक घण्टे की होरा समझनी चाहिए।

ध्यान रहे कि प्रत्येक व्यक्ति को स्वराशि के स्वामी ग्रह के शत्रु ग्रहों की होरा में यात्रा-विवाहादि तथा शुभ कार्यों का त्याग कर देना चाहिए, अन्यथा अशुभफल मिलेगा। स्वराशि के मित्र ग्रहों की होरा में कार्यारम्भ श्रेयस्कर रहेगा।

निम्नलिखित चक्र द्वारा दिन-रात के जिस किसी घण्टे की अभीष्ट कार्य-सिद्ध्यर्थं ग्रह होरा देखनी हो, सहज में ज्ञात हो सकेगी।

वार →	हो. १	हो. २	हो. ३	हो. ४	हो. ५	हो. ६	हो. ७	हो. ८	हो. ९	हो. १०	हो. ११	हो. १२	हो. १३	हो. १४	हो. १५	हो. १६	हो. १७	हो. १८	हो. १९	हो. २०	हो. २१	हो. २२	हो. २३	हो. २४
सू.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.
चं.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.
मं.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.
बु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.
बृ.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.
शु.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.
श.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.

उदाहरण—कल्पना करो, कि—आज मंगलवार है। आपने कार्य-सिद्ध्यर्थं किसी बड़े पुरुष से मिलने जाता है। तो इसके लिए उपरोक्त पंक्तियों में गुरु की होरा उत्तम होती है—ऐसा लिखा है। अतः उस दिन गुरु की होरा मालूम करनी है कि—किस-किस समय पर होता है। उपरोक्त चक्र में मंगलवार के सामने खाने में देखा तो उस दिन सातवें चौदहवें और इक्कीसवें घण्टे में गुरु की होरा मिली। अतः मंगलवार को स्थानीय सूर्योदय से छठे व तेरहवें अथवा बीसवें घन्टे के बाद एक-एक घण्टे तक की गुरु होरा में आपको बड़े व्यक्ति से मिलने जाना फलप्रद है। इसी प्रकार अन्य दिनों में अन्य कार्यों के लिए भी समझ कर कार्य करना चाहिए। जिस वार को जो कार्य करना है, वह वार न मिले तो वह कार्य उस वार की होरा में कर सकते हैं। जैसे—दक्षिण में जरूरी यात्रा करनी है परन्तु उस दिन शुक्रवार है। इस दिन दिक्शूल के कारण दक्षिण दिशा की ओर प्रस्थान अशुभ माना जाता है। ऐसी स्थिति में उस दिन गुरु की होरा छोड़ कर शुक्र की होरा में जाए तो शुभ रहेगा।

ठेकेदारों का टंडर देने का समय—सू. चं. बु. गु. शु. की होरा में टंडर देना लाभप्रद रहता है।

सद्य: नई गद्दी स्थापना व नई बही लगाने का मुहूर्त—दीपमाला के दिन या जब भी समय नियत हो, प्रातः सूर्योदय के बढ़ते सूर्य में मध्याह्न तक मंगलवार ४।९।१४ तिथि तथा भद्रा को छोड़ कर शुभ लाभ व अमृत के चोघड़ियों में या शुभग्रहों की होरा में करें, मध्याह्नोत्तर उतरते सूर्य में नहीं।

सूर्यादि वारेषु कुयोग-सारिणी—

	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
सर्वकार्येषु वर्ज्या	ति. ५ न. ह.	ति. ५ न. मृ.	ति. ७ न. अ.	ति. ८ न. अनु.	ति. ९ न. पु.	ति. १० न. रे.	ति. ११ न. रो.
मृत्युयोग (अधमाः तिथयः)	१।६।११	२।७ १२	१।६।११	३।८ १३	४।९ १४	२।७ १२	५।१०।१५
क्रकच योग	ति. १२	ति. ११	ति. १०	ति. ६	ति. ८	ति. ७	ति. ६
दग्धा तिथि	१२	११	५	३	६	८	९
विषाख्य तिथि	४	६	७	२	८	९	७
हुताशन तिथि	१२	६	७	५	९	१०	११
व्या जन्म तिथि	७	१४	१०	१२	९	८	१५
दग्ध नक्षत्र	भ	चि	उपा	घ.	उफा.	ज्ये.	रे.
कुलि मुहूर्त	१४	१२	१०	८	६	४	२
कालवेलामुहुर्त	८	६	४	२	१४	१२	१०
यमघंटकमुहूर्त	१०	८	६	४	२	१४	८
कण्टकमुहूर्त	६	४	२	१४	१२	१०	२१
दुर्मुहूर्त	१४	९।१२	४।७	८	६	९	१।२
यमघण्टयोगः	म	वि.	आ.	म.	कृ.	रो.	ह.

सुगम प्रश्न विचार

जब कभी आपको किसी भी प्रश्न के पूछने की इच्छा हो तब शुद्धता पूर्वक 'ॐश्री कीर्ति भवान्यै नमः' इस मन्त्र को श्रद्धा पूर्वक सात बार पढ़ कर नीचे दिये गए चारों यन्त्रों पर क्रमशः अंगुली रक्खे। फिर यन्त्रों के उन चारों अंकों को, जिन पर अंगुली रक्खी गई हो, जोड़कर ९ से भाग दें। शेष बचे हुए अंक के सम्मुख अपनी अभीष्ट प्रश्नावली उत्तरावली में (अर्थात् यदि मुकदमे का प्रश्न हो तो "मुकदमा का फल" वाली उत्तरावली में, नौकरी का प्रश्न हो तो "नौकरी का फल" वाली उत्तरावली में... इत्यादि) अपना उत्तर देखें। उदाहरण लीजिए—आपका प्रश्न मुकदमे के विषय में है कि जीत होगी कि नहीं? आपने चारों यन्त्रों में क्रमशः ४, ३, ७ एवं ९ पर अंगुली रक्खी, जिनका योग २३ हुआ। २३ को ९ से भाग देने पर ५ शेष बचा। अब आप अपना उत्तर "मुकदमे का फल" शीर्षक वाली उत्तरावली में ५ संख्या के सम्मुख देखिये। उत्तर है—"विशेष खर्च करके जीत होगी"। यहां पर यह स्मरण रहे कि यदि शेष ० बचे तो उसे ९ समझें।

नोट—प्रश्न एक ही बार करना चाहिए बार-बार दिल्लगी से प्रश्न करने पर फल नहीं मिलेगा।

अंगुल रखने के लिए चार यन्त्र

यन्त्र सम्मुख

४	३	८
९	५	१
२	७	६

यन्त्र ऊर्ध्वमुख

६	१	८
७	५	३
२	९	४

यन्त्र अधोमुख

४	९	२
३	५	७
८	१	६

यन्त्र विमुख

८	३	४
१	५	९
६	७	२

उत्तरावली

मित्र मिलाप फल (१)
१ मित्र शीघ्र ही मिलेगा।
२ मित्र विश्वासघाती है।
३ मित्र कुछ विलम्ब से मिले।
४ मित्र धोखा देगा।
५ मित्र बड़ा सज्जन प्रेमी है।
६ मित्र बड़ा कष्टभय युक्त है।
७ मित्र अच्छा है शीघ्र मिलेगा।
८ मित्र मतलबी है।
९ मित्र दूसरे से मिलावट रखता है।

मुकद्दमे का फल (२)
१ मुकद्दमा देर से होगा।
२ मुकद्दमे में जीत होगी।
३ हाकिम ठीक न्याय नहीं करेगा।
४ कुछ कुछ जीत होगी।
५ विशेष खर्च करके जीत होगी।
६ कष्ट अधिक होगा।
७ तुम्हारी हार होगी।
८ सुलह हो जायेगी।
९ पंचायत मिलकर फैसला करेगी।

यात्रा का फल (३)
१ गमन मत करो, लाभ नहीं है।
२ देशाटन में हानि लाभ बराबर है।
३ भूल कर भी मत जाओ हानि होगी।
४ शुभ दिन में जाओ लाभ होगा।
५ देशाटन में कोई चमत्कार है।
६ शकुनविचार कर गमनकरो लाभहोगा
७ यात्रा पीड़ाकारक होगी।
८ यात्रा में आराम मिलेगा।
९ यात्रा सफल हो पर खर्च विशेष होगा।

पशु लेने का फल (४)
१ पशु से पूरा लाभ होगा।
२ पशु से हानि लाभ सम।
३ पशु मत खरीदो भला नहीं।
४ तेरा विचार ठीक नहीं है।
५ फायदा रहेगा तो सही।
६ आज कल पशु लेना देना बुरा है।
७ पशु संग्रह मत करो पछताओगे।
८ तेरा विचार विलम्ब से फलेगा।
९ लेना देना ठीक नहीं हानि लाभ सम

लाभालाभ का फल (५)
१ इस माल से लाभ उत्तम होगा।
२ इस माल से लाभ कुछ न होगा।
३ यह काम घाटे का है।
४ चोरी या नुकसान का भय है।
५ साझी या व्यापारी दगा करेगा।
६ माल से सवाया लाभ होगा।
७ माल कुछ देर से लाभ देगा।
८ खरीदो मत, पड़ा है तो बेचो।
९ माल में गहरा नफा मिलेगा।

नौकरी का फल (६)
१ नौकरी जरूर मिलेगी।
२ देर से मिलेगी धीरज धरो।
३ काम नहीं बनेगा, सचेत रहो।
४ खर्च करने से कार्य बनेगा।
५ यहां कुछ नहीं और फिकर करो।
६ शत्रु रुकावट करेंगे ग्रह दान दो।
७ किसी की सहायता से काम बनेगा।
८ इस विचार में अनेक विघ्न होंगे।
९ काम सिद्ध न होगा।

विद्या परीक्षा का फल (७)
१ अभी उत्तीर्ण होना दूर है।
२ विद्या से कुछ लाभ नहीं।
३ मनोकामना पूरी होगी।
४ विद्या सामान्य सफलता देगी।
५ विद्या हो परम लाभकारी होगी।
६ उत्तीर्ण होने में कष्ट होगा।
७ अच्छे दरजे में पास होगा।
८ विद्या में विशेष लाभ न हो।
९ विद्या लाभकारी न होगी।

परदेसी प्रश्न फल (८)
१ परदेशी शीघ्र ही आएगा।
२ बीमारी से लाचार है।
३ मार्ग में चला आ रहा है।
४ दूर देशान्तरों में विचरता है।
५ रास्ते से ठगा गया है।
६ अभी मन में लौटने का नहीं है।
७ वह परदेश में ही प्रसन्न है।
८ खर्च में तंग है कैसे आवे।
९ परदेशी पराधीन हो गया।

शत्रुनाश प्रश्न फल (९)
१ शत्रु दुष्ट है दमन न होगा।
२ शत्रु से तुम्हारी जीत होगी।
३ शत्रु द्वारा विशेष हानि होवे।
४ मित्र की सहायता से जय हो।
५ शत्रु निर्बल हो गया डरो मत।
६ विश्वास न करो उससे भय है।
७ राज्य की सहायता से भय मिटे।
८ सुलह की जायेगी।
९ शत्रु के कारण द्रव्यनाश होगा।

मंत्र सिद्ध करने का फल (१०)
१ इस साधना में उपद्रव होगा।
२ मन निश्चित चंचल होगा।
३ यह साधना शुभ नहीं।
४ साधना गुरुकृपा से पूर्ण होगी।
५ प्रारम्भ करने पर कष्ट होगा।
६ साधना सफल नहीं होगी।
७ देरी बाद सिद्धि होगी।
८ परिणाम अच्छा नहीं होगा।
९ इस सिद्धि को खेल मत समझो।

बाग लगाने का फल (११)
१ बाग लगाने से अच्छा लाभ है।
२ बाग देर से फल देगा।
३ बाग लगाने में लाभ नहीं।
४ बाग अधिक रुपया खा जावेगा।
५ जंगली जन्तु बाग को नष्ट करेंगे।
६ बाग सुरक्षित नहीं रहेगा।
७ बाग लाभप्रद होगा।
८ बाग अमराई कलह का मूल होगा।
९ मनोरथ सफल होगा।

शासक के दर्शन का फल (१२)
१ विचार छोड़ दो कुछ लाभ नहीं।
२ राजा के दर्शन में हानि है।
३ राजा के दर्शन से मनोरथ पूर्ण होगा।
४ राजा का दर्शन विलम्ब में फल देगा।
५ लाभ हुआ चाहता है, वैरी रोकता है।
६ राजा के दर्शन में कोई लाभ नहीं है।
७ राजा आदर करे जगत् मे नाम हो।
८ इस झगड़े में मत पड़ो पश्चाताप होगा।
९ राजा का दर्शन अफल होगा।

बन्ध-मोक्ष का फल (१३)
१ खर्च करने से सत्य छूटेगा।
२ नहीं छूटेगा, कितनी ही कोशिश करो
३ जल्दी छूटेगा, देर नहीं होगी।
४ रुपया खर्च करने से छूटेगा।
५ धन खर्च करने से छूटेगा।
६ देर से छूटेगा, सत्य मानो।
७ सिफारिश से छूटेगा।
८ जल्दी छूट जाएगा।
९ अभी नहीं छूटेगा।

मकान बनाने में हानि-लाभ (१४)
१ मकान बनाओ सुख मिलेगा।
२ अधिक दिनों में पूरा होगा।
३ इस कार्य में लाभ नहीं, मत करो
४ द्रव्य का खर्च विशेष होगा।
५ इस कार्य में शत्रु उपद्रव करेगा।
६ मकान निर्बल खराब बनेगा।
७ इस मकान से लाभ होगा।
८ इस मकान पर सदा झगड़े रहेंगे।
९ पृथ्वी का भाग पृथ्वी में रहेगा।

इच्छा पूरी होगी कि नहीं (१५)
१ इच्छा शीघ्र ही पूर्ण होगी।
२ अधूरी इच्छा पूर्ण होगी।
३ इच्छा पूर्ण होने में विघ्न।
४ निष्फलता है।
५ देर से होगी।
६ इच्छा पूर्ति में कुछ विघ्न, बाधाएं।
७ इच्छा पूर्ण होगी।
८ इच्छा पूर्ण न होगी।
९ किसी की सहायता से पूर्ण होगी।

दुकान करूं या नहीं (१६)
१ दुकान करने से लाभ अच्छा है।
२ दुकान करने से लाभ नहीं।
३ दुकान करो, लाभ बहुत होगा।
४ दुकानसे लाभ है, परन्तु खर्च बहुतहोगा
५ दुकान मत करो, हानि है।
६ लाभ-हानि समान है न करो।
७ लाभ अच्छा होगा, दुकान करो।
८ दुकान में लाभ न होगा
९ दुकान में लाभ अच्छा होगा

खेती करूं या नहीं (१७)
१ खेती में लाभ रहेगा।
२ वर्षा थोड़ी होने का डर है।
३ खेती को कीड़े का भय है।
४ मनोकामना सिद्ध होगी।
५ जितनी मेहनत उतना लाभ।
६ खेती करो पर सावधानी से।
७ खेती में ओले का भय है।
८ वायु के कारण कुछ हानि होगी।
९ खेती में हानि रहेगी मत करो।

रोगी का प्रश्न फल (१८)
१ यह रोग अधिक दिन तक रहेगा।
२ ग्रहदशा खराब है, शांति करो।
३ यह रोग ईश्वर प्रकोप का फल है।
४ चिन्ता न करो आराम होगा।
५ रोगी की आबोहवा बदली करो।
६ रोगी को पथ्य से रखो।
७ चिन्ता न करो, कुछ दिन भारी हैं।
८ आराम हो जायेगा, पर खर्च अधिक है
९ होनहार में किसी का वश नहीं चलता

संतान भाग्य में क्या है फल (१९)
१ संतान आपके भाग्य में नहीं।
२ प्रेमशांति से होगी।
३ सन्तान होगी कमजोर।
४ अपने इष्टदेव की पूजा से।
५ नेमव्रत से होगी।
६ गया या विहोत विधि से।
७ होकर नष्ट होने का भय है।
८ संतान की आशा छोड़ो।
९ सप्ताह श्रवण से होगी।

धर्म दीक्षा-फल (२०)

१ धर्म में प्रीति थोड़ी हो।
२ धर्म में अधिक प्रीति हो।
३ धर्म करते रोग हो।
४ धर्म में यश बढ़े।
५ धर्म से आकुलता हो।
६ धर्म से नाम स्थिर रहे।
७ धर्म करते मृत्यु हो।
८ धर्म से कीर्ति उभरे।
९ धर्म-दीक्षा से शांति मिले।

अनाज खरीद फल (२१)

१ अनाज में भारी लाभ होगा।
२ नफा टोटा समान रहेगा।
३ घाटा रहेगा।
४ अन्न के खराब होने का भय है।
५ साझी व्यापार न करें।
६ देर से बिकेगा।
७ अनाज में सवाये होंगे।
८ बेचना ठीक है, लेना मत।
९ प्रश्न फल अशुभ है।

पुत्र गोद में लेने का फल (२२)

१ गोद लेने से नाम रहेगा।
२ यह लड़का वफादार नहीं।
३ लड़का खर्च करायेगा।
४ लड़का अच्छा नहीं है।
५ अच्छी निभेगी।
६ सावधानी से गोद लेना।
७ बे-मुहब्बत निकलेगा।
८ घर में अनबन रहेगी।
९ मुबारक नहीं है

तबादले का प्रश्न (२३)

१ तबादला होगा।
२ कुछ रुकावट के साथ होगा।
३ तबादले में विघ्न आवे।
४ तबादला अभी नहीं।
५ तबादला होगा।
६ तबादले में देर है।
७ तबादला जरूर होवे।
८ अभी ठहरो।
९ देरी से होगा।

कर्ज लेने देने का परिणामक्याहै(२४)

१ यहां से कर्ज लेना देना अच्छा है।
२ जैसा प्रेम अब है आगे नहीं रहे।
३ लेने देने का नतीजा खराब रहेगा।
४ अन्त में मुश्किल होगी।
५ दिया सो खोया, लिया सो कमाया।
६ इस जगह हानि-लाभ समान है।
७ लेने देने में कोई हर्ज नहीं।
८ अन्त समय अदालत में जाना होगा।
९ नफा नुकसान बराबर रहेगा।

गर्भ में क्या है ? फल (२५)

१ इस गर्भ की मुबारक नहीं।
२ पुत्री का जन्म होगा।
३ शुभ लक्षण वाला पुत्र है।
४ लड़की होगी पर आयु कम।
५ गर्भ अधूरा रहे या बच्चा मरे।
६ पुत्र का जन्म होगा।
७ दीर्घायु पुत्र होगा।
८ कन्या जन्मेगी।
९ जोड़े बालक होंगे।

विवाह शादी का फल [२६]

१ विवाह देरी से होगा।
२ विवाह होगा पर स्त्री अच्छी नहीं।
३ विवाह न होगा।
४ विवाह जरूर होगा।
५ विवाह में रुकावटें होंगी।
६ किसी की खुशामद करो।
७ खर्च करो काम बनेगा।
८ थोड़ी विलम्ब से होगा।
९ स्त्री गुण वाली मिलेगी।

रोजगार प्रश्न फल [२७]

१ रोजगार जल्दी ही अच्छा होगा
२ विशेष परिश्रम करने से रोजगारहोगा
३ किसी प्रकार की ठेकेदारी करो।
४ जल मिट्टी, कोयला से लाभ होगा।
५ अब इस व्यापार में हानि होगी।
६ दुश्मन नुकसान करेंगे, सावधान।
७ रोजगार ठीक होने में देर है।
८ खोटे ग्रह की दशा है! अभी चुप रहो
९ जो विचार है वह पूर्ण नहीं होगा।

चोरी गई का फल [२८]

१ वस्तु शीघ्र मिलेगी।
२ खर्च करने पर माल मिलेगा।
३ पता पूरा लगे पर माल न मिलेगा।
४ चोर पक्का है माल न मिलेगा।
५ किसी की मदद से माल मिलेगा।
६ चोर ने तेरी वस्तु और को दे दी है।
७ माल आधा नष्ट हो गया है।
८ माल नहीं मिलेगा आशा छोड़ दो।
९ चोर छोटी आयु का है माल मिलेगा।

गुप्त चिन्ता का फल [२९]

१ मन की इच्छा पूर्ण होगी।
२ काम बनने में कुछ देर है।
३ काम का नतीजा खराब होगा।
४ किसी का भरोसा मत करो।
५ चिन्ता न करो काम बनेगा।
६ मन की मन ही में रहेगी।
७ तेरा दुष्ट से वास्ता पड़ा है।
८ देरी से काम बनेगा।
९ चिन्ता रखो ? किसी की मदद लो।

क्या मुझे साझा व्यापार से लाभ होगा [३०]

१ साझे में लाभ होगा।
२ साझे में लाभ कम होगा।
३ साझे में हानि का भय है।
४ लाभ होगा परन्तु ठहर कर।
५ हानि का भय है।
६ लाभ होगा।
७ लाभहोगा, परन्तु अंतमेंगड़बड़ी कासयहै।
८ लाभ की आशा व्यर्थ है।
९ लाभ होगा विश्वास रखो।

खोया पशु किधर मिलेगा [३१]

१ पशु दक्षिण में है, नहीं मिलेगा।
२ पश्चिम में गया है, मिलेगा।
३उत्तर-पश्चिमकेकोणमेंगयाहै,नहीमिलेगा
४ उत्तर दिशा में ढूंढो, मिलेगा।
५ पूर्वकी ओर गयाहै,जल्दीढूंढनेसेमिलेगा
६ उत्तर में ही मिलेगा।
७ पूर्वोत्तरकोण में गया है, मिलनाकठिनहै
८ दक्षिण में गया है मिलेगा।
९ पश्चिम में गया है, वर्षों में मिलेगा।

मेरा यह वर्ष कैसा है [३२]

१ यह वर्ष शुभ रहेगा।
२ वर्ष कष्टप्रद है।
३ वर्ष मध्यम है।
४ वर्ष अधिक कठिनाइयों वाला है।
५ वर्ष शुभ लाभप्रद है।
६ वर्ष साधारण है।
७ वर्ष शुभ है।
८ वर्ष हानिकारक है ग्रहशान्ति करो।
९ इस वर्ष भाग्यवृद्धि होगी।

वह प्राणी जीवित है या नहीं [३३]

१ जीवित नहीं।
२ वह जीवित है।
३ जीवित नहीं है।
४ जीवन में सन्देह है।
५ जीवित है।
६ जीवित नहीं।
७ जीवित है।
८ जीवित नहीं।
९ जीवित है।

यह व्यक्ति विश्वास-योग्य है कि नहीं (३४)

१ विश्वास-योग्य है।
२ विश्वास-योग्य कम है।
३ विश्वास योग्य नहीं।
४ ईमानदार है।
५ भरोसा कर सकते है।
६ भरोसा मत करो।
७ विश्वास-पात्र है।
८ विश्वास योग्य नहीं है।
९ विश्वास-पात्र है।

इस काम में लाभ है कि नहीं [३५]

१ इस काम से शुभ लाभ होगा।
२ इस काम में दुःख एवं हानि होगी।
३ इस काम में हानि-लाभ समान होगा।
४ इस काम में हानि दुःख होगा।
५ इसमें लाभ सुख है।
६ लाभ सुख मध्यम है।
७ सुख लाभ होगा।
८ सावधान, हानि दुःख होगा।
९ सुख लाभ होगा।

मुझे यहां लाभ होगा या अन्य स्थान पर [३६]

१ अन्य स्थान पर जाओ, लाभ होगा।
२ इसी स्थान पर लाभ होगा, धैर्य करो।
३ अन्य स्थान पर जाना लाभप्रद है।
४ अन्य स्थान पर लाभ रहेगा।
५ यहींठहरो,कुछदिनबाद लाभहोनेलगेगा।
६यहीं पर ठहरो, दूसरी जगहभीकष्टहोगा
७ यह स्थान मत छोड़ो देर से लाभहोगा।
८ दूसरी जगह जाना ठीक है।
९ यहींपरिश्रमकरो ग्रहशान्तिसे लाभ होगा

यह खबर झूठी है या सच्ची [३७]

१ यह खबर ठीक सच्ची है।
२ यह बात झूठी है।
३ बात सच्ची है।
४ बात झूठी है।
५ बात सत्य है।
६ सत्य है।
७ कुछ कुछ सत्य है।
८ निराधार, झूठी है।
९ सच्ची है।

मेरा आज का दिन अच्छा है या बुरा ? [३८]

१ आज का दिन अच्छा है।
२ आज सावधान रहें।
३ अच्छा दिन है।
४ खराब है।
५ अच्छा दिन है।
६ अशुभ चिन्ताप्रद है।
७ शुभ दिन है।
८ बहुत ज्यादा खराब है।
९ मध्यम है।

इसे कोई रोग है या ग्रह-दोष या कोई और पीड़ा [३९]

१ कर्मजन्य शारीरिक कष्ट है।
२ रोग से ही पीड़ित है।
३ ग्रहकृत मानसिक रोग है।
४ प्रेतपीड़ा है, शान्ति करावें।
५ शत्रुकृत टोना आदि कष्ट है।
६ ग्रहपीड़ा है, शान्ति करावें।
७ शत्रु ने कुछ कराया है, रामरक्षा पढ़ें।
८ रोग कष्टसाध्य है, शिवार्चन करें।
९ कर्मजन्य फल से विवश है।

क्या जलकूपादि लगाना ठीक है[४०]

१ शीघ्र जल मिलेगा।
२ खण्डित जल मिलेगा।
३ सुन्दर जल मिलेगा।
४ जल नहीं मिलेगा।
५ अमृत जल मिलेगा।
६ जल मिलेगा।
७ मिश्रित कम जल मिलेगा।
८ अभी जल नहीं मिलेगा।
९ जल कम या क्षार मिलेगा।

इस व्यक्ति से मेरा कार्य सिद्ध होगा कि नहीं [४१]

१ इस व्यक्ति द्वारा सफलता होगी।
२ इसके द्वारा कार्य सिद्ध नहीं होगा।
३ कार्यसिद्धि में सहायता मिलेगी।
४ इससे काम सिद्ध न होगा।
५ इसके द्वारा कार्य सिद्ध हो जाएगा।
६ यह दिल से काम नहीं करेगा।
७ बड़ी खुशामद से सिद्ध होगा
८ इससे कुछ आशा न करो।
९ मिलो, कार्य बनेगा।

मुझे इस काम में सफलता मिलेगी कि नहीं ? [४२]

१ सफलता की कम आशा है।
२ बड़े परिश्रम से सफलता मिलेगी।
३ सफलता मिलेगी।
४ सफल होना मुश्किल है।
५ सफल हो जाओगे, डटे रहो।
६ सफलता देर से मिलेगी।
७ किसी की सहायता से सफलता मिलेगी
८ सफलता की आशा नहीं।
९ निराशा के बाद सफलता मिलेगी।

विवाहादि मुहूर्त्त (सं. २०५१ वि.)

(११ अप्रैल १९९४ ई. से ३१ मार्च १९९५ ई. तक)

समय शुद्धि

शुक्रास्त – इस वर्ष शुक्र कार्तिक कृ. ७ गुरुवार (कार्त्तिक प्रविष्टा ११, २७ अक्तू. '९४) को पश्चिम में अस्त होकर कार्ति. शु ५ चन्द्रवार (कार्त्तिक प्रविष्टा २२, ७ नवं. '९४) को पूर्व में उदित होगा।

गुरु अस्त– इस वर्ष गुरु कार्तिक शु. १ शुक्रवार (कार्त्तिक प्रविष्टा १९, ४ नवं '९४) को अस्त होकर मार्ग. कृ. ११ मंगलवार (मार्ग. प्रविष्टा १४, २९ नवं. '९४) को उदित होगा।

गुरु और शुक्र के अस्त होने से तीन दिन पहिले उनका 'वार्धक्य' और इनके उदय होने के बाद तीन दिन तक इनका 'बाल्य' माना जाता है। 'वार्धक्य' और 'बाल्य' के दिन भी सभी शुभकार्यों में वर्जित हैं।

अक्षांश-भेद से भारत के विभिन्न स्थलों पर गुरु-शुक्रास्त–

अक्षांश	+ १०°	+ २०°	+ ३०°	+ ३५°
शुक्र पश्चिमास्त	२१ अक्तू. '९४	२४ अक्तू. '९४	२७ अक्तू. '९४	२८ अक्तू. '९४
शुक्र पूर्व में उदित	७ नवं. '९४	७ नवं. '९४	७ नवं. '९४	७ नवं. '९४
गुरु अस्त	४ नवं. '९४	४ नवं. '९४	४ नवं. '९४	४ नवं. '९४
गुरु उदित	२९ नवं. '९४	२९ नवं. '९४	२९ नवं. '९४	२९ नवं. '९४

ध्यान रहे–यहां नीचे दिये गये विवाहादि मुहूर्त्तों में गुरु-शुक्रास्त की तारीखें पंजाब, हरियाणा, हि. प्र., दिल्ली आदि की ही ली गई है। अन्य प्रान्तों के लिए विवाहादि मुहूर्त्तों का विचार करते समय अक्षांश के आधार पर उन प्रान्तों में उदयास्त की तारीखों का ध्यान रखना जरूरी है।

मुहूर्त्तों में जिस लग्न का कुछ भाग किसी विशेष दोष के कारण वर्जित है, उस लग्न के आगे कोष्ठक में भारतीय स्टैंडर्ड टाइम के अनुसार यह निर्देश दिया गया है कि इस लग्न को इस टाईम के बाद अथवा पहले ही मुहूर्त्त में स्वीकार करें।

यहां मूहूर्त्तों में क्रान्तिसाम्य (महापात) दोष का विचार सूक्ष्म गणित से किया गया है। सूर्य एवं चन्द्र की राशियों के आधार पर निर्णीत क्रान्तिसाम्य नितान्त स्थूल होता है। भास्कर आदि आचार्यों ने इसके निर्णय के लिए एक विशेषगणितप्रक्रिया निर्दिष्ट की है। कई पंचांगकार इसकी जटिल गणित-प्रक्रिया से डरकर स्थूल क्रान्तिसाम्य के आधार पर ही मुहूर्त्तों का निर्णय कर देते हैं, जो सर्वथा भ्रामक है।

यहां दिए गए मुहूर्त्तों में जहां युति, वेध, कर्त्तरी, दग्धातिथि, अष्टमस्थ भौम, षष्ठाष्टमस्थ चन्द्र-शुक्र आदि दोषों के परिहार मिल गए है, उन मुहूर्त्तों को शास्त्रानुसार शुद्ध माना गया है और वहां लग्न लगा दिए गए हैं।

ध्यान दें– यहां मुहूर्त्तों में दी गई अंग्रेजी तारीखें सूर्योदय कालिक हैं। जहाँ मुहूर्त्त काल (लग्न) रात के १२ बजे के बाद और सूर्योदय से पहिले पड़ता है, वहां अंग्रेजी तारीख अग्रिम (परवर्त्ती) समझनी चाहिए।

यहां 'प्रविष्टा' वाले स्तंभ में दी गई तारीखें पंजाब, हरियाणा, हि. प्र., आदि में प्रचलित देशी सौर तारीखें हैं।

शुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०५१ वि.)

मास-तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख १९९४ ई.	विवाह-नक्षत्र	विवाह लग्न के समय			लत्ता आदि दश दोष रेखाएं	शुद्ध लग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				चन्द्रराशि	सूर्य राशि	गुरु राशि		
चैत्र शु० ३ गु.	वैशा. २	अप्रै. १४	रोह.	वृष	मेष	तुला	ऽ श. ।।।।।।।।!	ल. १० (२६/४६ तक)
" " ५ श.	" ४	" १६	मृग.	वृष/मिथुन	"	"	।।।।।ऽ अ. ऽऽ ।।	दि. ल. ३ (मं. दा.), ४ गोधू., ९ (२३/२१ से २४/५४ तक), (चं. दा.),
" " १० गु.	" ९	" २१	मघा	सिंह	"	"	। ऽ ।।।।। ऽ ।।	दि. ल़. ३ (मं. दा.), ४, गोधू. , ९
" " १२ श.	" ११	" २३	उ. फा.	कन्या	"	"	ऽ सू. ।।।।।।।।।	दि. ल. ४ (१२/२५ बाद), गोधू.,
वैशा. कृ. २ बु.	" १५	" २७	अनु.	वृश्चिक	"	"	।ऽ।।ऽ शु. के. ऽ नृ. ऽ ।।।	दि. ल. ४ (१२/१५ बाद), गोधू., (२०/२३ बाद सूर्य वेध)
" " ४ शु.	" १७	" २९	मूल.	धनु	"	"	।।।।ऽ चौ. । ऽ ।।	दि. ल. ३ (चं. मं. दा.), गोधू., १०
" " ६ र.	" १९	मई १	उ. षा.	"	"	"	ऽ चं. ऽ ।।।।।।। ऽ	दि. ल. ३ (८/४० तक), (चं. मं. दा.),
" " ८ मं.	" २१	" ३	धनि.	मकर	"	"	ऽ बु. ।।।।।ऽऽ।।	दि. ल. ४ (चं. दा.), गोधूलि और मकर लग्न में मृत्युबाण है।
" " ११ शु.	" २४	" ६	उ. भा.	मीन	"	"	।ऽ।।ऽ नृ. ।ऽ।।	ल. १०,
" " १२ श.	" २५	" ७	उ. भा.				।ऽ।।ऽ नृ. ।ऽ।।	दि. ल. ३ (मं. दा.), ४,

शुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०५१ वि.)

मास-तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख १९९४ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय चन्द्रराशि	सूर्य राशि	गुरु राशि	लत्ता आदि दश दोष रेखाएं	शुद्ध लग्न, ग्रह दान-पूजा आदि विवरण (कोष्ठकों में सर्वत्र भा. स्टें. टा. दिया गया है)
वैशा. शु. २ गु.	वैशा. ३०	मई १२	रोहि.	वृष	मेष	तुला	ऽ श. ।ऽ बु. ।।।।।।	दि. ल. ३ (मं. दा.), ४, (मकर में मृत्युबाण)
" " ७ बु.	ज्ये. ५	" १८	मघा	सिंह	वृष	'	।।।।।।।ऽ ।।	ल. गोधू.
" " ८ गु.	" ६	" १९	'	'	'	'	।।।।।ऽ नृ. ।ऽ ।।	दि. ल. ३, ४, (१०/१८ तक), (मं. रा. दा.),
" ' १० शु.	" ७	" २०	उ. फा.	'	'	'	।ऽ ।।।।।ऽ ।।	दि. ल. ४ (१०/२४ बाद) (मं. रा. दा.)
" " ११ श.	" ८	" २१	" "	कन्या	'	'	।ऽ ।।।।।ऽ ।।	दि. ल. ३ (७/३१ तक)
" " ११ श.	" ८	" २१	हस्त	'	'	'	।।।।।ऽ चौ. ऽ ।।।	दि. ल. ३ (८/४३ बाद), ४ (रा. मं. दा.)
" " १२ र.	" ९	" २२	चित्रा	'	'	'	ऽ ।।।।ऽ चौ. ।।।।	दि. ल. ३, ४ (११/१४ तक), (रा. मं. दा.)
" " १५ बु.	" १२	" २५	अनु.	वृश्चिक	'	'	।।।।ऽ सू. के. ।ऽऽ।।	दि. ल. ३, ४ (१०/४५ तक) रा. मं. दा., (१०/४५ बाद मृत्युबाण)
ज्ये. कृ. १ गु.	" १३	" २६	मूल.	धनु	'	'	।ऽ ।।ऽ बु. ऽ अग्नि ।।।।	ल. गोधू.,
" " ३ शु.	" १४	" २७	'	'	'	'	।ऽ ।।ऽ बु. ऽ अ. ।।।।	दि. ल. ३, (चं. दा.)
" " ५ र.	" १६	" २९	उ. षा.	मकर	'	'	।।।ऽ बु. ।ऽ नृ. ।ऽ ।।	दि. ल. ४, (चं. मं. रा. दा.)
" " ५ र.	" १६	" २९	श्रवण	'	'	'	।।।।।।।ऽ ।।	ल. गोधू.
" " ६ चं.	" १७	" ३०	'	'	'	'	।।।।।।।ऽ ।।	दि. ल. ४ (चं. मं. रा. दा.)
" " ६ चं.	" १७	" ३०	धनि.	'	'	'	ऽ चं. ।।।।ऽ चौ. ।।।।	ल. गोधू.,
" " ९ गु.	" २०	जून २	उ. भा.	मीन	'	'	।।।।।।।ऽ ।।	ल. गोधू.
" " १० शु.	" २१	" ३	" "	'	'	'	।।।।।।।ऽ ।।	दि. ल. ३, ४, (रा. मं. दा.)
" " १२ र.	" २३	" ५	अश्वि.	मेष	'	'	।।।।।ऽ अग्नि ऽ ।।।	दि. ल. ३,४ (रा. मं. दा.)
ज्ये. शु. ८ शु.	आषा. ३	" १७	हस्त.	कन्या	मिथुन	'	।ऽ ।।।ऽ अग्नि ऽ ।।।	ल. २
" " ९ श.	" ४	" १८	" "	'	'	'	।ऽ।।।ऽ अग्नि. ऽ ।।।	दि. ल. ४ (रा. मं. दा.)
" " ९ श.	" ४	" १८	चित्रा	'	'	'	।।।।।। ।।।।	ल. गोधू
" " १० र.	" ५	" १९	" "	तुला	'	'	।।।।।।।।।।।	दि. ल. ४ (रा. मं. दा.)
" " १३ मं.	" ७	" २१	अनु.	वृश्चिक	'	'	।।।।ऽ मं. के. ऽ चौर ऽ ।।।	दि. ल. ४ (८/२२ बाद) (रा.मं.दा.), गोधू., २ (चं. दा.)
आषा. कृ. २ श.	" ११	" २५	उ. षा.	मकर	'	'	।।।।।।। ।।।	दि. ल. ४ (चं. मं. रा. दा.)
" " ३ र.	" १२	" २६	श्रव.	'	'	'	।ऽ ।।।।।।।।	ल. गोधू.,
" " ४ चं.	" १३	" २७	धनि.	'	'	'	।।।ऽ शु. ऽऽ अग्नि ऽऽ ।।	दि. ल. ४ (चं. मं. रा. दा.), (शुक्र का पादवेध नहीं है)
" " ७ गु.	" १६	" ३०	उ. भा.	मीन	'	'	।।।।।।।ऽ ।ऽ	दि. ल. ४ (रा. दा.), ६ (चं. दा.), गोधू.,
" " ८ शु.	" १७	जुला. १	रेव.	'	'	'	ऽ बु. ।।।।ऽ चौर ।।ऽ ।	दि. ल. ४ (रा. दा.), ६ (१३/३० तक) (चं. दा.), गोधू.,
" " ९ श.	" १८	" २	अश्वि.	मेष	'	'	।।।।।।।ऽ ।।	दि. ल. ४ (७/१७ बाद) (रा. दा.) गोधू.,
आषा. शु. ४ मं.	" २८	" १२	मघा	सिंह	'	'	।।ऽ शु. ।।।।।।	दि. ल. ४ (रा. दा.), ६ (१२/२७ तक) (रा. दा.),
" " ७ गु.	" ३०	" १४	उ. फा.	कन्या	'	'	।।।।।।।।।।	दि. ल. ४ (८/५ तक), (रा. दा.), (गोधू. मकर में मृत्युबाण)
" " ११ मं.	श्राव. ४	" १९	अनु.	वृश्चिक	कर्क	'	।।।।ऽ के ऽ अग्नि ऽ ।।।	दि. ल. ६.,
" " १२ बु.	" ५	" २०	मूल	धनु	'	'	ऽ सू. ।।।।ऽ नृप ।।।	ल. गोधू., ३ (चं. शु. दा.)
श्राव. कृ. १ श.	" ८	" २३	श्रव.	मकर	'	'	।।।।ऽ सू. ऽ चौर ।ऽ ।।	दि. ल. ६,
" " २ र.	" ९	" २४	धनि.	मकर/कुंभ	'	'	।।।।।।ऽ ।।।	दि. ल. ६, रा. ल. ३ (शु. दा.)
" " ६ गु.	" १३	" २८	उ. भा.	मीन	'	'	।।।।।ऽ अग्नि ।ऽ।ऽ	दि. ल. ६ (११/२१ तक) (चं. दा.),

शुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०५१ वि.)

मास-तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख १९९४ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय चन्द्रराशि	सूर्य राशि	गुरु राशि	लत्ता आदि दशा दोष रेखाएं	शुद्ध लग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (कोष्ठकों में सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)
श्राव. कृ. ६ गु.	श्राव. १३	जुला. २८	रेवती	मीन	कर्क	तुला	ऽ चं. बु. ।।।। ऽ अग्नि ऽ ।। ऽ	ल. गोधू.,
" " ७ शु.	" १४	" २९	अश्वि.	मेष	'	'	।।।।।।।।।।	ल. गोधू., ३ (शु. दा.)
" " १० मं.	" १८	अग. २	रोहि.	वृष	'	'	ऽ श. ।।।।। ऽ ऽ ।।	ल. गोधू.,
" " ११ बु.	" १९	" ३	मृग.	'	'	'	।। ऽ मं. ।।। ऽ ।।।	दि. ल. ६,
श्राव. शु. ३ बु.	" २६	" १०	उ. फा.	सिंह/कन्या	'	'	।। ऽ शु. ।।।।।।	दि. ल. ६ (१०/२ तक) (मं. दा.), ८, गोधू.,
" " ४ गु.	" २७	" ११	हस्त	कन्या	'	'	।। ऽ शु. ।। ऽ चौर ऽऽ ।।	दि. ल. ८, गोधू., २,
" " ६ शु.	" २८	" १२	चित्रा	तुला	'	'	। ऽ ।।।।।।। ऽ	दि. ल. ८, गोधू.,
" " १३ शु.	भाद्र. ४	" १९	उ. षा.	मकर	सिंह	'	ऽ सू. ।।।। ऽ अग्नि. ।।।।	दि. ल. ६ (मं. दा.), ८,
" " १४ श.	" ५	" २०	धनि.	'	'	'	।।।।।। ऽऽ ।।	ल. २ (२४/३५ बाद), ४ (२८/४२ तक) (चं. रा. दा.)
" " १५ र.	" ६	" २१	"	कुंभ	'	'	।।।।। ऽ नृप ऽऽ ।।	दि. ल. ८,
भाद्र कृ. २ मं.	" ८	" २३	उ. भा.	मीन	'	'	।।। ऽ शु. । ऽ चौर ।।।।	ल. २,
" " ३ बु.	" ९	" २४	" "	'	'	'	।।। ऽ शु. ।।।।।	दि. ल. ८ (१३/५६ बाद),
" " ४ गु.	" १०	" २५	अश्वि.	मेष	'	'	। ऽ । ऽ बु. ऽ शु. ऽ रोग । ऽ ।।	ल. २ (२३/१६ बाद), ४ (रा. दा.), (बुध पादवेध नहीं है)
" " ५ शु.	" ११	" २६	'	'	'	'	। ऽ । ऽ बु. ऽ शु. ।। ऽ ।।	दि. ल. १०, गोधू., २, (बुध पादवेध नहीं है)
" " ८ चं.	" १४	" २९	रोहि.	वृष	'	'	।।।।। ऽ अग्नि ऽऽ ।।	दि. ल. ६ (८/२० बाद) (मं. दा.), ८ (चं. दा.) १०, गोधू., ४ (रा. दा.),
" " ९ मं.	" १५	" ३०	'	'	'	'	।।।।।। ऽऽ ।।	दि. ल. ६ (मं. दा.)
" " ९ मं.	" १५	" ३०	मृग.	वृष/मिथुन	'	'	। ऽ ।।। ऽ नृप ।।।।	दि. ल. ८ (चं. दा.), १०, गोधू., ४ (रा. दा.)
" " १० बु.	" १६	" ३१	'	मिथुन	'	'	।।।।। ऽ नृप ।।। ऽ	दि. ल. ६ (मं. दा.)
भाद्र शु. १ मं.	" २२	सितं. ६	उ. फा.	कन्या	'	'	।।।।। ऽ अग्नि ।।।।	ल. ४ (रा. दा.)
" " २ बु.	" २३	" ७	हस्त	'	'	'	।। ऽ बु. ।। ऽ अग्नि ऽ ।।।	दि. ल. ८, रा. ल. ४ (रा. दा.), (मकर लग्न में क्रान्तिसाम्य)
" " ३ गु.	" २४	" ८	चित्रा	कन्या/तुला	'	'	।।।।। ऽ नृप ।।।।	दि. ल. ८ (११/३० बाद), १०, रा. ल. ४ (२६/३७ तक), (रा. दा.), (११/३० तक शुक्रयुति)
" " १३ श.	अश्वि. २	" १७	धनि.	मकर/कुंभ	कन्या	'	ऽ सू. ।।।।। ऽ ।।।	दि. ल. ८, १०, गोधू.,
अश्वि. शु ६ चं.	" २५	अक्तू १०	मूल	धनु	'	'	।।।।।। ऽऽ ।।	ल. गोधू., ३ (चं. दा.)
" " ८ बु.	" २७	" १२	उ. षा.	मकर	'	'	ऽ गु. ।।।।।। ऽ ।।	ल. गोधू.,
" " ९ गु.	" २८	" १३	श्रव.	'	'	'	।।।। ऽ मं. ऽ रोग ।।।।	दि. ल. ९, गोधू.,
" " १४ मं.	कार्ति. २	" १८	उ. भा.	मीन	तुला	'	।।।।।।।।।।	दि. ल. ८ (९/५१ तक), (आवश्यके)
" " १४ मं.	" २	" १८	रेव.	'	'	'	।।।।।। ऽऽ ।।	दि. ल. ९, (कन्या लग्न में मृत्युबाण)
" " १५ बु.	" ३	" १९	अश्वि.	मेष	'	'	। ऽ ।। ऽ सू. बु. ऽ अग्नि ।।।।	ल. ३ (२२/२५ तक)
कार्ति. कृ. १ गु.	" ४	" २०	'	'	'	'	। ऽ ।। ऽ सू. बु. ऽ अग्नि ।।।।	दि. ल. ९, (वृश्चिक लग्न निर्बल है)
" " ३ श.	" ६	" २२	रोहि.	वृष	'	'	ऽ चं. श. ऽ ।।।। ऽ ऽ ।।	ल. ६,
" " ४ र.	" ७	" २३	'	'	'	'	ऽ चं. श. ऽ ।।। ऽ चौर ऽऽ ।।	दि. ल. ८ (चं. दा.) (आवश्यके), गोधू., ३
मार्ग. शु. ४ मं.	मार्ग. २१	दिसं. ६	उ. षा.	मकर	वृश्चिक	वृश्चिक	।।।।। ऽ अग्नि ।।।।	ल. गोधू.,
" " ५ बु.	" २२	" ७	धनि.	'	'	'	ऽ रा. ।।।।। ऽ ।।।	ल. ४ (चं. रा. दा.), ६
" " ६ गु.	" २३	" ८	"	कुंभ	'	'	ऽ रा. ।।।। ऽ नृप ऽ ।।।	दि. ल. ९ (आवश्यके), गोधू.,
" " ८ श.	" २५	" १०	उ. भा.	मीन			।।।।। ऽ चौर ।।।।	ल. [illegible] (रा. दा.), ६ (चं. दा.),

शुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०५१ वि.)

मास-तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख १९९४-९५ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय चन्द्रराशि	सूर्य राशि	गुरु राशि	लत्ता आदि दश दोष रेखाएं	शुद्ध लग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (कोष्ठकों में सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
मार्ग. शु. १० चं.	मार्ग. २७	दिसं. १२	रेव.	मीन	वृश्चिक	वृश्चिक	।ऽ।।ऽ रोग ऽऽ।ऽ	दि.ल. ९ (आवश्यके), गोधू., ४ (रा. दा.), ६ (२४/४२ तक) (चं. दा.),
" " ११ मं.	" २८	" १३	अश्वि.	मेष	"	"	।।।।।।।।।	दि. ल. ९ (७/५२ तक) (आवश्यके), ४ (२१/२२ बाद) (रा. दा.)
माघ कृ. २ बु.	माघ ५	जन. १८	मघा	सिंह	मकर	"	।।ऽ मं. ।ऽ बु. ऽ नृप ।।।।	ल. ९ (२९/४५ बाद),
" " ३ गु.	" ६	" १९	"	"	"	"	।।ऽ मं. ।ऽ बु. ।।।।।	ल. ८ (२६/५७ बाद), (मं. दा.) ९ (२९/१ तक), (ल. ९ आवश्यके)
" " ४ शु.	" ७	" २०	उ. फा.	"	"	"	ऽ मं. ।।।ऽ चौर ।ऽ।।	ल. ९ (३०/२१ बाद) (आवश्यके)
" " ५ श.	" ८	" २१	" "	कन्या	"	"	ऽ मं. ।।।।।ऽ।।	दि. ल. ३, गोधू., ८ (मं. दा.), (धनु निर्बल लग्न है)
" " ५ श.	" ८	" २१	हस्त	"	"	"	ऽ चं. ।।।।ऽ।।।	ल. ९ (३०/१० बाद)
" " ६ र.	" ९	" २२	"	"	"	"	ऽ चं. ।।।ऽ रोग ऽ।।	दि. ल. १२ (चं. श. दा.), ३, गोधू.,
" " ७ चं.	" १०	" २३	चित्रा	कन्या/तुला	"	"	ऽ शु. ।।।।।ऽ।।	दि. ल. ३, गोधू., ८ (२७/३९ तक), (मं. दा.),
" " ११ शु.	" १४	" २७	मूल	धनु	"	"	।।।।ऽ नृपऽऽ ।।	ल. ६ (२२/४३ बाद), ८ (मं. दा.)
" " १२ श.	" १५	" २८	"	"	"	"	।।।।ऽ नृप ऽऽ ।।	दि. ल. १२ (श. दा.)
माघ शु. १ मं.	" १८	" ३१	धनि.	मकर/कुंभ	"	"	ऽ रा. ऽऽ बु. ।।ऽ रोग ।।।।	ल. ८ (२६/२१ बाद) (मं. दा.), ९,
" " २ बु.	" १९	फर. १	"	कुंभ	"	"	ऽ रा. ऽऽ बु. ।।।।।।	दि. ल. १२ (श. दा.)
" " ४ शु.	" २१	" ३	उ. भा.	मीन	"	"	।।।।ऽ अग्नि ऽऽ ।।	ल. ८ (मं. दा.), ९,
" " ५ श.	" २२	" ४	रेव.	"	"	"	।।।।।।।।।	ल. गोधू., ६ (चं. दा.), ८ (मं. दा.) ९
" " ६ र.	" २३	" ५	अश्वि.	मेष	"	"	।ऽ।।।ऽ नृप ऽऽ ।।	ल. गोधू., ९,
" " ७ चं.	" २४	" ६	"	"	"	"	।ऽ।।।।ऽऽ ।।	दि. ल. १२ (श. दा.), गोधू.,
" " ८ बु.	" २६	" ८	रोहि.	वृष	"	"	ऽ श. ।।।।ऽ।।।	ल. ८ (२५/५८ बाद), (चं. मं. दा.)
" " ९ गु.	" २७	" ९	"	"	"	"	ऽ श. ।।।।।ऽ रो. ऽ।।।	दि. ल. १२ (श. दा.), गोधू., ६ (२२/१६ तक)
" " १५ बु.	फाल्गु. ४	" १५	मघा	सिंह	कुंभ	"	।।।ऽ बु. ऽ सू. ऽ अग्नि ऽऽ।।	ल. ६ (२०/२६ तक), ८, ९ (बुध का पादवेध नहीं है)
फाल्गु. कृ २ शु.	" ६	" १७	उ. फा.	कन्या	"	"	।।।।ऽ नृप ऽ।।।	ल. ८, ९ (२७/२० तक)
" " ३ श.	" ७	" १८	हस्त	"	"	"	।।।।।।।।ऽ	ल. गोधू., ८,९,
" " ४ र.	" ८	" १९	"	"	"	"	।।।।ऽ चौर ।।ऽ	दि. ल. १२ (श. चं. दा.)
" " १० शु.	" १३	" २४	मूल	धनु	"	"	।।।।ऽ अग्नि ऽऽ।।	दि. ल. १२ (श. दा.), रा. ल. ८ (२५/२६ से २६/३६ तक)
फाल्गु. शु. १ गु.	" १९	मार्च २	उ. भा.	मीन	"	"	।ऽ।।ऽ रोग ऽ।।।	ल. ८, (शु. दा.), ९
" " २ शु.	" २०	" ३	"	"	"	"	।ऽ।।।ऽ।।।	दि. ल. २ (गु. दा.), रा. ल. ६ (चं. दा.)
" " ३ श.	" २१	" ४	अश्वि.	मेष	"	"	।।।।ऽ अग्नि ।।।ऽ	ल. ९ (२६/१४ बाद)
" " ४ र.	" २२	" ५	"	"	"	"	।।।।।।।।।	ल. ९ (२७/१४ तक)
" " ७ बु.	" २५	" ८	रोहि.	वृष	"	"	।।।।।।ऽ।।	ल. गोधू., ६, ८ (शु. चं. दा.)

आगामी वर्ष (वि. सं. २०५२) में गुरु, शुक्रास्तः—अगले वर्ष (सं. २०५२ वि. में) शुक्र लगभग श्रावण शुक्ल प्रतिपदा (२८ जुलाई '९५) को अस्त होकर आश्विन शुक्ल द्वादशी (५ अक्तू. '९५) को उदित होगा। गुरु लगभग पौष कृष्ण द्वितीया (९ दिसम्बर '९५) को अस्त होकर पौष शुक्ल दशमी (३१ दिसम्बर '९५) को उदित होगा।)

सं. २०५१ में भिन्न-भिन्न राशि वाले वरों और कन्याओं के विवाह-निर्णय के लिए त्रिबल-शुद्धि

(अर्थात् किस राशि वाले वर और कन्या के लिए सं. २०५१ में कुल कितने विवाह-मुहूर्त्त किन-किन तारीखों को बनते हैं)

लोग अपनी सुविधा के अनुसार किसी खास महीने में या किसी खास तारीख के आस-पास ही विवाह-मुहूर्त्त (साहा) निकालने के लिए ज्योतिषों से अनुरोध किया करते हैं। ऐसी स्थिति में ज्योतिषी को विवाह मुहूर्त्तों में त्रिबल-शुद्धि जानने का झंझट करना पड़ता है। इस झंझट से ज्योतिषी लोगों को छुटकारा देने के लिए यहां नीचे "त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक" दे रहे हैं। सं० २०५१ के शुद्ध विवाह-मुहूर्त इस पंचांग में पहले दिए गए हैं। किस-किस महीने की किस-किस तारीख वाले विवाह मुहूर्त्त में किस-किस राशि वाले लड़के-लड़कियों के विवाह हो सकते हैं, यह त्रिबल-शुद्धि के अनुसार नीचे दिए गए "त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक" में लिख दिया गया है। अमुक राशि वाले लड़के (वर) और अमुक राशि वाली कन्या के लिए इस वर्ष कुल कितने विवाह मुहूर्त्त किन-किन तारीखों को बनते हैं-यह इस कोष्ठक द्वारा साधारण व्यक्ति भी एक ही नजर में तुरन्त जान सकता है। इस कोष्ठक से यह भी तुरन्त जाना जा सकता है कि अमुक राशि वाले लड़कियों और लड़कों का विवाह इस वर्ष की किन-किन तारीखों को हो सकता है। वर के लिए "सूर्य की पूजा" और कनया के लिए 'गुरु की पूजा' वाले दिन भी इस कोष्ठक में दिए गए हैं। लड़का-लड़की की राशियों वाले कालमें में जो-जो तारीखें समानरूप से मिलती हों उन तारीखों में उस लड़के और लड़की का विवाह हो सकता है। जैसे-मिथुन राशि वाले लड़के और मेष राशि वाली लड़की का विवाह सं. २०५१ में मई के महीने में किन-किन तारीखों को हो सकता है-यह मालूम करना है। नीचे 'त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक' देखें। लड़के वाले कालम में मिथुन के आगे मई की केवल १, ६, ७, १२ तारीखें हैं, जबकि लड़की वाले कालम में मेष के आगे मई की १, ३, ६, ७, १२, १८, १९, २०, २१, २२, २६, २७, २९, ३० तारीखें हैं। इसलिए यह समझना चाहिए कि मई में मिथुन राशि वाले लड़के और मेष राशि वाली लड़की का विवाह मई की केवल १, ६, ७, १२ तारीखों को ही हो सकता है, क्योंकि मई की केवल यही तारीखें दोनों में एक सी मिलती हैं। उपरोक्त प्रकार से विवाह की तारीखों का निश्चय करके शुद्ध विवाह-मुहूर्त्तों से उस दिन विवाह के लग्न का निर्णय कर लीजिए। क्योंकि आजकल लड़कियों का विवाह बड़ी अवस्था में होता है, अतः चतुर्थ-अष्टम-द्वादशस्थ गुरु को नेष्ट न मानकर पूज्य मानना चाहिए। (यहां कोष्ठकों में दिया काल भा. स्टै. टा. है।)

त्रिबल शुद्धि कोष्ठक (सं. २०५१ वि.)

(११ अप्रै. १९९४ ई. से ३१ मार्च १९९५ तक के लिए)

जन्म या नाम राशि	लड़का	लड़के के लिए पूज्य सूर्य	लड़की	लड़की के लिए पूज्य गुरु
मेष	अप्रै. १४, १६,२१, २३, २९, मई १. ३, ६, ७, १२, १८, १९, २०, २१, २२, २६, २७, २९, ३०, जून २. ३. ५, १७, १८, १९, २५, २६, २७, ३०, जुला. १, २, १२, १४, अग. १९, २०, २१, २३, २४, २५, २६, २९, ३०. ३१, सितं. ६, ७, ८, १७, अक्तू. १०, १२, १३, १८, १९, २०, २२, २३, जन. १८, १९, २०, २१, २२ २३, २७. २८, ३१, फर. १, ३, ४, ५, ६. ८, ९, १५, १७, १८, १९, २४, मार्च २, ३, ४, ५, ८,	१३ अप्रै. से १३ जून १६ अग. से १५ सितं. १६ अक्तू. से १४ नवं. १५ दिसं. से १२ जन.	अप्रै. १४, १६, २१, २३, २९ मई १, ३, ६, ७, १२, १८, १९, २०, २१, २२, २६, २७, २९, ३०, जून २, ३, ५, १७, १८, १९, २५, २६, २७, ३०, जुला. १, २, १२, १४, २०,२३, २४, २८, २९, अग. २ ३, १०, ११, १२, १९, २०, २१, २३, २४, २५, २६, २९, ३०, ३१ सितं. ६, ७, ८, १७ अक्तू. १०, १२, १३, १८, १९, २०, २२, २३, दिसं. ६, ७, ८, १०, १२, १३, २१,जन. १८, १९, २०, २१, २२, २३, २७, २८, ३१, फर. १, ३, ४, ५ ६, ८, ९, १५, १७, १८, १९, २४, मार्च २, ३, ४, ५, ८,	११ नवम्बर बाद
वृष	मई २१, २२, २५, २९, ३०, जून २, ३, ५, १७, १८, १९, २१, २५, २६, २७, ३०, जुला. १, २ १४, १९, २३, २४, २८, २९, अग. २, ३, १० (१०।२ बाद), ११, १२, सितं. १७, अक्तू. १२, १३, १८, १९, २०, २२, २३, दिसं. ६, ७, ८, १०, १२, १३, जन. २१, २२, २३, ३१, फर. १, ३, ४, ५, ६, ८, ९, १७, १८. १९, मार्च २, ३, ४, ५, ८,	१४ मई से १५ जुला. १६ सितं से १६ अक्तू. १५ नवं. १४ दिसं. १३ जन. से ११ फर.	अप्रै. १४, १६, २१. २३, २७, मई ३, ६, ७, १२, २२ २५, २९, ३०, जून २, ३, ५, १७, १८, १९, २१, २५, २६, २७, ३०, जुला. १, २ १४, १९, २३, २४, २८, २९, अग. २, ३, १०, (१०।२ बाद), ११, १२, १९, २०, २१, २३, २४, २५, २६, २९, ३०, ३१, सित. ६, ७, ८, १७, अक्तू. १२, १३, १८, १९, २०, २२, २३, दिसं. ६, ७, ८, १०, १२, १३, जन. २१, २२, २३, ३१, फर. १, ३, ४, ५, ६, ८, ९, १७, १८, १९, मार्च २, ३, ४, ५, ८,	११ नवम्बर तक
मिथुन	अप्रै. १४, १६, २१. २७, २९, मई १, ६, ७, १२, जून १९, २१. ३०, जुला. १, २, १२, १९, २०, २४ (२०।१५ बाद), २८, २९, अग. २, ३. १० (१०।२ तक), १२, २१, २३, २४, २५, २६, २९, ३०, ३१ सितं. ८ (१९।४३ बाद), अन्न्‌१८, १९, २०, २२, २३, दिसं. ८, १०, १२, १३, फर. १५, २४, मार्च २, ३, ४, ५, ८,	१४ जून से १५ अग. १६ अक्तू. से १४ नव. १५ दिसं. से १२ जन. १२ फर. से १३ मार्च	अप्रै. १४, १६, २१. २७, २९, मई १, ६, ७, १२, १८, १९, २०, २५, २६, २७, जून २, ३, ५ १९, २१, ३०, जुला. १, २, १२, १९, २०, २४ (२०।१५ बाद), २८, २९, अग. २, ३, १० (१०।२ तक), १२, २१, २३, २४, २५, २६, २९, ३०, ३१, सितं. ८ (१९।४३ बाद), १७ (११।३३ बाद), अक्तू. १०, १८, १९, २०, २२, २३, दिसं. ८, १०, १२, १३ जन. १८, १९, २०, २३ (१७।१६ बाद), २७, २८, ३१, फर. १, ३, ४, ५, ६, ८, ९, १५, २४, मार्च २, ३, ४, ५, ८,	११ नवम्बर बाद
कर्क	अप्रै.. १४, १६, २१, २३, २७, २९, मई १, ३, ६, ७, १२, १८, १९, २०, २१. २२, २५, २६, २७, २९, ३०, जून. २, ३, ५, जुला. १९, २०, २३, २४ (२०।१५ तक), २८, २९, अग. २, ३, १०, ११, १९, २०, २३, २४, २५, २६, २९, ३०, ३१. सित. ६, ७, ८ (१९।४३ तक), १७ (११।३३ तक), अक्तू. १०, १२, १३, दिसं. ६, ७, १०, १२, १३, जन. १८, १९, २०, २१, २२ २३, (१७।१६ तक), २७, २८, ३१ (२६।५५ तक),फर. ३, ४, ५, ६, ८, ९,	१६ जुला. से १५ सितं. १५ नवं. से १४ दिसं. १३ जन. ११ फर. १४ मार्च से १२ अप्रै.	अप्रै. १४, १६, २१, २३, २७, २९, मई १, ३, ६, ७, १२, १८, १९, २०, २१, २२, २५, २६, २७, २९, ३०, जून २, ३, ५, १७, १८, २१, २५, २६, २७, ३०, जुला. १, २, १२, १४, १९, २०, २३, २४(२०।१५ तक), २८, २९, अग. २, ३, १०, ११, १९, २०, २३, २४, २५, २६, २९, ३०, ३१, सित. ६, ७, ८ (१९/४३ तक), १७ (११/३३ तक), अक्तू. १०, १२, १३, १८, १९, २०, २२, २३, दिसं. ६, ७, १०, [illegible] १६ तक), २७, २८, ३१ (२६।५५ तक), फर. ३, ४, ५, ६, ८, ९, १५, १७, १८, १९, २४, मार्च २, ३, ४, ५, ८,	११ नवम्बर तक

त्रिबल शुद्धि कोष्ठक (सं. २०५१ वि.)

(११ अप्रै. १९९४ ई. से ३१ मार्च १९९५ तक के लिए)

जन्म या नाम राशि	लड़का	लड़के के लिए पूज्य सूर्य	लड़की	लड़की के लिए पूज्य गुरु
सिंह	अप्रै. १४, १६, २१, २३, २९, मई १, ३, १२, १८, १९. २०, २१, २२, २६, २७, २९, ३०, जून ५, १७, १८, १९. २५, २६, २७, जुला. २, १२, १४, अग. १९, २०, २१, २५, २६, २९, ३०, ३१ सिंत ६, ७, ८, १७, अक्तू. १०, १२, १३, १९, २०, २२, २३, जन. १८, १९, २०, २१, २२, २३, २७, २८, ३१, फर. १. ५. ६, ८, ९, १५, १७, १८, १९, २४, मार्च ४, ५. ८,	१३ अप्रै. से १३ मई १६ अग. से १६ अक्तू. १५ दिसं. से १२ जन. १२ फर. से १३ मार्च	अप्रै. १४, १६, २१, २३, २९, मई १, ३, १२, १८, १९, २०, २१ २२, २६, २७, २९ ३०, जून ५, १७, १८, १९, २५, २६, २७, जुला. २, १२, १४, २०, २३, २४, २९, अग. २, ३, १०, ११, १२, १९, २०, २१, २५ २६, २९, ३०, ३१, सितं. ६, ७, ८, १७, अक्तू. १०, १२, १३, १९, २०, २२ २३, दिसं. ६, ७, ८, १३, जन. १८, १९, २०, २१, २२, २३, २७, २८, ३१, फर. १, ५, ६, ८, ९, १५, १७, १८, १९, २४, मार्च ४, ५, ८,	सारा साल
कन्या	मई १८, १९, २०, २१, २२, २५ २९, ३०, जून २, ३. १७, १८, १९, २१, २५, २६, २७, ३०, जुला. १, १२. १४, १९, २३, २४, २८, अग. २, ३, १०, ११. १२, सितं. १७, अक्तू. १२, १३, १८, २२, २३, दिसं. ६, ७, ८, १०, १२, जन. १८, १९. २०, २१, २२, २३, ३१, फर. १, ३, ४, ८, ९, १५, १७, १८, १९, मार्च २, ३, ८,	१४ मई से १३ जून १६ सितं से १४ नवं. १३ जन. से ११ फर. १४ मार्च से १२ अप्रै.	अप्रै. १४, १६, २१, २३, २७, मई ३, ६, ७, १२, १८, १९ २०, २१, २२, २५, २९, ३०, जून २, ३, १७, १८, १९ २१, २५, २६, २७, ३०, जुला. १, १२. १४, १९, २३, २४, २८, अग. २, ३. १०, ११, १२, १९, २०, २१, २३, २४, २९, ३०, ३१, सितं. ६, ७, ८, १७, अक्तू. १२, १३, १८, २२, २३, दिसं. ६, ७, ८, १०, १२, जन. १८, १९ २०, २१, २२, २३, ३१, फर. १, ३, ४, ८, ९, १५, १७, १८, १९, मार्च २, ३, ८,	११ नवम्बर बाद
तुला	अप्रै. १६, (१२।५६ बाद), २१, २३, २७, २९, मई १, ६, ७, जून १७, १८, १९, २१, ३०, जुला. १, २. १२, १४, १९, २०, २४ (२०।१५ बाद), २८, २९, अग. १०, ११, १२, २१, २३, २४, २५, २६, ३० (२४।२७ बाद), ३१, सितं. ६, ७, ८, अक्तू. १८, १९, २०. दिसं. ८. १०, १२, १३, फर. १५, १७, १८, १९, २४, मार्च २, ३, ४, ५,	१४ अप्रै. से १३ मई १४ जून से १५ जुला. १६ अक्तू. से १४ दिसं. १२ फर. से १३ मार्च	अप्रै. १६ (१२।५६ बाद), २१, २३, २७, २९, मई १, ६, ७, १८, १९, २०,२१, २२, २५, २६, २७, जून २, ३, ५, १७, १८, १९, २१, ३०, जुला. १, २, १२, १४, १९, २०, २४ (२०।१५ बाद), २८, २९, अग. १०, ११, १२, २१, २३, २४, २५, २६, ३० (२४।२७ बाद), ३१, सिंत. ६, ७, ८, १७ (११।३३ बाद), अक्तू. १०, १८, १९, २०, दिसं ८, १०, १२, १३, जन. १८, १९, २०, २१, २२, २३, २७, २८, ३१ (२६।५५ बाद), फर. १, ३, ४, ५, ६, १५, १७, १८, १९, २४, मार्च २, ३, ४, ५,	११ नवम्बर तक
वृश्चिक	अप्रै. १४, १६ (१२।५६ तक), २१, २३, २७, २९, मई १. ३, ६, ७, १२, १८. १९, २०, २१. २२, २५, २६, २७, २९, ३०, जून २, ३, ५, जुला. १९, २०, २३, २४ (२०।१५ तक), २८, २९, अग. २, ३, १०, ११, १२, १९, २०, २३,२४, २५, २६, २९, ३० (२४।२७ तक), सितं. ६, ७, ८, १७ (११।३३ तक), अक्तू. १०, १२, १३, दिसं. ६, ७, १०, १२, १३, जन. १८, १९, २०, २१, २२, २३, २७, २८, ३१ (२६।५५ तक), फर. ३, ४, ५, ६, ८, ९,	१४ मई से १३ जून १६ जुला. से १५ अग. १५ नवं. से १२ जन १४ मार्च से १२ अप्रै	अप्रै. १४, १६ (१२।५६ तक), २१, २३, २७, २९, मई १, ३, ६, ७, १२, १८, १९, २०, २१, २२, २५, २६, २७, २९, ३०, जून २, ३, ५, १७, १८, १९, २१, २५, २६, २७, ३०, जुला. १, २, १२, १४, १९, २०, २३, २४ (२०।१५ तक), २८, २९, अग. २, ३, १०, ११, १२, १९, २०, २३, २४, २५, २६, २९, ३० (२४।२७ तक), सितं. ६, ७, ८, १७ (११।३३ तक), अक्तू. १०, १२, १३, १८, १९, २०, २२, २३, दिसं. ६, ७, १०, १२, १३, जन. १८, १९, २०, २१, २२, २३, २७, २८, ३१ (२६।५५ तक), फर. ३, ४, ५, ६, ८, ९, १५, १७, १८, १९, २४, मार्च २, ३, ४, ५, ८,	सारा साल
धनु	अप्रै. १४, १६, २१, २३, २७, २९, मई १, ३, १२, १८, १९, २०, २१, २२ २५, २६, २७, २९, ३०, जून ५, १७, १८, १९, २१, २५, २६, २७, जुला. २, १२, १४, अग. १९, २०, २१, २५, २६, २९, ३०, ३१. सिंत. ६, ७, ८, १७, अक्तू. १०, १२, १३, १९, २०, २२, २३, जन. १८, १९, २०, २१, २२, २३, २७, २८. ३१, फर. १, ५, ६, ८, ९, १५, १७, १८, १९, २४, मार्च ४, ५, ८,	१३ अप्रै. से १३ मई १४ जून से १५ जुला. १६ अग. से १५ सितं. १५ दिसं से ११ फर.	अप्रै. १४, १६, २१, २३, २७, २९, मई १, ३, १२, १८, १९, २०, २१, २२, २५, २६, २७, २९, ३०, जून ५, १७, १८, १९, २१, २५, २६, २७, जुला. २, १२. १४, १९, २०, २३, २४, २९, अग. २, ३, १०, ११, १२, १९, २०, २१, २५, २६, २९, ३०, ३१ सितं. ६, ७, ८, १७, अक्तू. १०, १२, १३, १९, २०, २२, २३, दिसं. ६, ७, ८, १३, जन. १८, १९, २०, २१. २२ २३, २७, २८, ३१, फर. १, ५, ६, ८, ९, १५, १७, १८, १९, २४, मार्च ४, ५, ८,	११ नवम्बर बाद
मकर	मई २१, २२, २५, २६, २७, २९, ३०, जून २, ३, १७, १८, १९, २१, २५, २६, २७, ३०, जुला. १, १४, १९, २०, २३, २४, २८, अग. २, ३, १० (१०।२ बाद), ११, १२, सिंत. १७, अक्तू १०, १२, १३, १८, २२, २३, दिसं. ६, ७, ८, १०, १२, जन. २१, २२, २३, २७, २८, ३१, फर. १, ३, ४, ८, ९, १७, १८, १९, २४, मार्च २, ३, ८,	१४ मई से १३ जून १६ जुला. से १५ अग. १६ सितं. से १५ अक्तू. १३.जन. से १३ मार्च	अप्रै. १४, १६, २३, २७, २९, मई १, ३, ६, ७, १२, २१, २२ २५, २६, २७. २९, ३०, जून २, ३, १७, १८, १९, २१, २५, २६, २७, ३०, जुला. १, १४, १९, २०, २३, २४, २८, अग. २, ३, १० (१०।२ बाद), ११, १२, १९, २०, २१, २३, २४, २९, ३०, ३१, सितं. ६, ७, ८, १७, अक्तू. १०, १२, १३, १८, २२, २३, दिसं. ६, ७, ८, १०, १२, जन. २१, २२, २३, २७, २८, ३१, फर. १, ३, ४, ८, ९, १७, १८, १९, २४, मार्च २, ३, ८,	११ नवम्बर तक
कुंभ	अप्रै. १६ (१२।५६ बाद),२१, २७ २९, मई १, ३, ६, ७, जून १९, २१, २५, २६, २७, ३०, जुला. १, २, १२, १९, २०, २३, २४, २८, २९, अग. १० (१०।२ तक), १२, १९, २०, २१, २३, २४, २५, २६, ३०, (२४।२७ बाद), ३१, सिंत. ८ (१९।४३ बाद), अक्तू.१८, १९, २०, दिसं. ६, ७, ८, १०, १२, १३, फर. १५, २४, मार्च २, ३, ४, ५	१४ जून से १५ जुला. १६ अग. से १५ सितं. १६ अक्तू. से १४ नवं. १२ फर. से १३ मार्च १४ मार्च से १२ अप्रै	अप्रै. १६ (१२।५६ नाद), २१, २७, २8, मई १, ३, ६, ७, १८, १९, २०, २५, २६, २७, २९, ३०, जून २, ३, ५, १९, २१, २५, २६, २७, ३०, जुला. १, २, १२, १९, २०, २३, २४, २८, २९, अग. १० (१०।२ तक), १२, १९, २०, २१, २३, २४, २६, ३०, (२४।२७ बाद), ३१, सितं. ८ (१९।४३ बाद), १७, अक्तू. १०, १२, १३, १८, १९, २०, दिसं. ६, ७, ८, १०, १२, १३, जन. १८, १९, २०, २३ (१७।१६ बाद), २७, २८, ३१, फर. १, ३, ४, ५, ६, १५, २४, मार्च २, ३, ४, ५,	११ नवम्बर बाद
मीन	अप्रै. १४, १६ (१२।५६ तक), २१, २३, २७, २९, मई १, ३, ६, ७, १२, १८, १९, २०, २१, २२, २५, २६, २७, २९, ३०, जून २, ३, ५ जुला. १९, २०, २३, २४, २८, २९, अग. २, ३, १०, ११, १९, २०. २१, २३, २४, २५, २६, २९, ३० (२४।२७ तक), सिंत. ६, ७, ८ (१९।४३ तक), १७, अक्तू. १०, १२, १३, दिसं. ६, ७, ८, १०, १२, १३, जन. १८, १९, २०, २१, २२, २३ (१७।१६ तक), २७, २८, ३१, फर. १, ३, ४, ५, ६, ८, ९,	१४ मार्च से १३ मई १६ जुला. से १५ अग. १६ सितं से १६ अक्तू. १५ नवं. से १४ दिसं.	अप्रै. १४, १६ (१२।५६ तक), २१, २३, २७, २९, मई १, ३, ६, ७, १२, १८, १९, २०, २१, २२, २५, २६, २७, २९, ३०, जून २, ३. ५, १७, १८, २१. २५, २६, २७, ३०, जुला. १, २, १२, १४, १९, २०, २३, २४, २८, २९, अग. २, ३, १०, ११, १९, २०, २१, २३, २४, २५, २६, २९, ३० (२४।२७ तक), सितं. ६, ७, ८ (१९।४३ तक), १७, अक्तू. १०, १२, १३, १८, १९, २०, २२, २३, दिंस. ६, ७, ८, १०, १२, १३, जन. १८, १९, २०, २१, २२, २३ (१७।१६ तक), २७, २८, ३१, फर. १, ३, ४, ५, ६, ८, ९, १५, १७, १८, १९, २४, मार्च २, ३, ४, ५, ८,	११ नवम्बर तक

अशुद्ध विवाह मुहूर्त (संवत् २०५१ विक्रमी)

प्रतिवर्ष हमारे कार्यालय में ज्योतिषियों एवं अन्य लोगों के ऐसे अनेक पत्र हमें उपलब्ध होते हैं जिनसे वे ऐसे अनेक विवाहमुहूर्तों के बारे में हमसे स्पष्टीकरण चाहते हैं, जिन्हें हमने अपने पंचांग में तो अशुद्ध विवाहमुहूर्तों की कोटि में रखा होता है, लेकिन किसी अन्य पंचांग में उन्हें शुद्ध विवाहमुहूर्त मानकर उनमें विवाहलग्न लगाए होते हैं। इस समस्या को दृष्टि में रखकर अशुद्ध विवाह मुहूर्तों का स्पर्ष्टीकरण हम इस स्तम्भ में दिया करते हैं। विश्वास है, यह स्तम्भ ज्योतिषियों को शुद्ध और अशुद्ध विवाहमुहूर्त-सम्बन्धी दुविधा को दूर करने में काफी हद तक समर्थ है, और वे इससे स्वयं यह भली भांति जान सकते हैं कि अमुक दिन या अमुक समय में विवाह करना शास्त्र विरुद्ध क्यों है। यहां साथ-साथ उन दोषों का निर्देश भी किया गया है जिनके कारण विवाहनक्षत्र होते हुए भी वहां विवाह नहीं किया जा सकता।

ध्यान रहे—यहाँ जिन युति, वेध आदि दोषों का निर्देश किया गया है, वे सभी ऐसे हैं जिनका कोई परिहार नहीं है।

तिथि-वार	तारीख १९९४ ई.	विवाह-नक्षत्र	दोष
चैत्र शु. ४ शु.	अप्रै. १५	रोहि.	लग्नाभाव
" " ४ शु.	" १५	मृग	मृत्युवाण
" " ९ बु.	" २०	मघा	लग्नाभाव
" " ११ शु.	" २२	उ. फा.	" "
" " १२ श.	" २३	हस्त.	भौमवेध
" " १३ र.	" २४	"	" "
" " १३ र.	" २४	चित्रा	मृत्युबाण
" " १५ चं.	" २५	"	लग्नाभाव
" " १५ चं.	" २५	स्वा.	शनिवेध
वैशा. कृ. १ मं.	" २६	"	" "
" " ३ गु.	" २८	अनु.	भद्रा, सूर्यवेध
" " ५ श	" ३०	उ. षा.	लग्नाभाव
" " ६ र.	मई १	श्रव.	" "
" " ७ चं.	" २	"	" "
" " ७ चं.	" २	धनि	" "
" " ९ बु.	" ४	"	" ".
वैशा. शु. १ बु.	" ११	रोहि.	" "
" " २ गु.	" १२	मृग.	" "
" " ३ शु.	" १३	"	मासान्त
" " ४ श.	" १४	"	संक्रान्ति
" " १२ र.	" २२	हस्त	नक्षत्रान्त
" " १२ र.	" २२	स्वा.	व्यतीपात, शनिवेध
" " १३ चं.	" २३	"	शनिवेध
" " १४ मं.	" २४	अनु.	लग्नाभाव
ज्ये. कृ. ४ श.	" २८	उ. षा.	गोधूलि में बुधपाद वेध
" " ७ मं.	" ३१	धनि.	वैधृति
" " १० शु.	जून ३	रेव.	लग्नाभाव
" " ११ श.	" ४	"	मृत्युबाण

तिथि-वार	तारीख १९९४ ई.	विवाह-नक्षत्र	दोष
ज्ये. कृ. ११ श.	जून ४	अश्वि.	लग्नाभात
ज्ये. शु. १ शु.	" १०	मृग.	क्षीणचन्द्र, भुजंगपाल
" " ५ मं.	" १४	मघा.	मासान्त
" " ६ बु.	" १५	"	संक्रान्ति
" " ७ गु.	" १६	उ. फा.	भद्रा, व्यतीपात
" " ८ शु.	" १७	"	व्यतीपात
" " १० र.	" १९	स्वा.	शनिवेध
" " १२ चं.	" २०	"	" "
" " १४ बु.	" २२	अनु.	नक्षत्रान्त
" " १४ बु.	" २२	मू.	भद्रा
" " १५ गु.	" २३	"	लग्नाभाव
आषा. कृ. १ शु.	" २४	उ. षा.	" "
" " २ श.	" २५	श्रव.	वैधृति, भद्रा
" " ३ र.	" २६	धनि.	लग्नाभाव
" " ६ बु.	" २९	उ. भा.	" "
" " ७ गु.	" ३०	रेव.	" "
" " ९ श.	जुला. २	"	" "
" " १० र.	" ३	अश्वि.	" "
" " १२ मं.	" ५	रोहि.	भुजंगपात
आषा. शु. ३ चं.	" ११	मघा.	लग्नाभाव
" " ५ बु.	" १३	उ. फा.	" "
" " ६ गु.	" १४	हस्त.	" "
" " ७ शु.	" १५	"	मासान्त
" " ७ श.	" १५	चित्रा	भद्रा, मासान्त
" " ८ श.	" १६	"	संक्रान्ति
" " ८ श.	" १६	स्वा.	संक्रान्ति, शनिवेध
" " ९ र.	" १७	"	शनिवेध
" " [illegible]	[illegible]	अनु.	[illegible]

तिथि-वार	तारीख १९९४ ई.	विवाह-नक्षत्र	दोष
आषा. शु. १३ गु.	जुला २१	मूल	लग्नाभाव
" " १५ शु.	" २२	उ. षा	" "
श्राव. कृ. १ श.	" २३	"	" "
" " २ र.	" २४	श्रव.	" "
" " ३ चं.	" २५	धनि.	" "
" " ५ बु.	" २७	उ. भा.	मृत्यु बाण
" " ७ शु.	" २९	रेव.	भद्रा
" " ८ श.	" ३०	अश्वि	लग्नाभाव
" " ९ चं.	अग. १	रो.	भद्रा
" " १० मं.	" २	मृग.	व्याघात नवनाडी
श्राव. शु. १ चं.	" ८	मघा	क्षीणचन्द्र, परिधार्ध
" " २ मं.	" ९	उ. फा.	लग्नाभाव
" " ३ बु.	" १०	हस्त	भद्रा
" " ४ गु.	" ११	चित्रा	लग्नाभाव
" " ६ शु.	" १२	स्वा	शनिवेध
" " ७ श.	" १३	"	" "
" " ८ र.	" १४	अनु.	केतुवेध
" " ९ चं.	" १५	"	मासान्त, केतुवेध
" " १० मं.	" १६	मूल	संक्रान्ति
" " ११ बु.	" १७	"	भद्रा, नक्षत्रान्त
" " १२ गु.	" १८	उ. षा.	मृत्युबाण
" " १३ शु.	" १९	श्रव.	सूर्यवेध
" " १४ श.	" २०	"	" "
भाद्र कृ. ३ बु.	" २४	रेव.	भुजंगपात
" " ४ गु.	" २५	"	" "
भाद्र शु. २ बु.	सितं. ७	उ. फा.	लग्नाभाव
" " ३ गु.	" ८	हस्त.	" "
" " ४ श.	" ९	चित्रा	नक्षत्रान्त, भद्रा

अशुद्ध विवाह मुहूर्त (संवत् २०५१ विक्रमी)

तिथि-वार	तारीख १९९४ ई.	विवाह-नक्षत्र	दोष
भाद्र शु. ४ शु.	सिंत. ९	स्वा.	शनिवेध, शुक्रयुति
" " ५ श	" १०	अनु.	वैधृति, केतु वेध
" " ६ र.	" ११	"	केतुवेध
" " ८ चं.	" १२	मूल	भौमवेध
" " ९ मं.	" १३	"	" "
" " १० बु.	" १४	उ. षा.	लग्नाभाव
" " ११ गु.	" १५	"	मासान्त
" " ११ गु.	" १५	श्रव	" "
" " १२ शु.	" १६	"	संक्रान्ति
" " १२ शु.	" १६	धनि	" "
" " १५ चं.	" १९	उ. भा.	प्रौष्ठपदी श्राद्ध
श्राद्ध पक्ष (२० सितं. '९४ से ५ अक्तू. '९४ तक)			
आश्वि. शु. २ गु.	अक्तू. ६	चित्रा	वैधृति
" " २ गु.	" ६	स्वा.	शनिवेध
" " ३ शु.	" ७	"	" "
" " ४ श.	" ८	अनु.	केतुवेध
" " ५ र.	" ९	"	" "
" " ७ मं.	" ११	उ. षा.	लग्नाभाव
" " ८ बु.	" १२	श्रव.	" "
" " ९ गु.	" १३	धनि.	भुजंगपात
" " १० शु.	" १४	"	" "
" " १३ चं.	" १७	उ. भा.	संक्रान्ति
" " १५ बु.	" १९	रेव.	मृत्युबाण
कार्त्ति. कृ. ४ र.	" २३	मृग.	लग्नाभाव

तिथि-वार	तारीख १९९४-९५ई.	विवाह-नक्षत्र	दोष
शुक्रअस्त एवं शुक्र का वार्धक्य और बाल्य (कार्त्ति. कृ. ५चं., २४ अक्तू. '९४ से कार्ति. शु. ८ गु., १० नवं. '९४ तक) गुरु अस्त एवं गुरु का वार्धक्य और बाल्य (कार्ति. कृ. १३ मं., १ नवं. '९४ से मार्ग कृ. १४ शु., २ दिसं. '९४ तक)			
मार्ग शु. १ श.	दिसं. ३	मूल	भुजंगपात
" " २ र.	" ४	"	" "
" " ३ चं.	" ५	उ. षा.	मृत्युबाण
" " ४ मं.	" ६	श्रव.	भौमवेध
" " ५ बु.	" ७	"	" "
" " ९ र.	" ११	उ. भा.	व्यतीपात
" " ९ र.	" ११	रेव.	" "
" " १० चं.	" १२	अश्वि.	लग्नाभाव
धनु. स्थ सूर्य (मार्ग शु. १३ गु., १५ दिसं. '९४ से पौष शु. १२ शु., १३ जन '९५ तक)			
माघ कृ. ६ र.	जन. २२	चित्रा	भद्रा
" " ७ चं.	" २३	स्वा.	भुजंगपात, राहुयुति, शनिवेध
" " ८ मं.	" २४	"	" " " " " "
" " ९ बु.	" २५	अनु.	केतुवेध
" " १० गु.	" २६	"	" "
माघ. शु. १ मं.	" ३१	श्रव.	क्षीणचन्द्र, व्यतीपात, भौमवेध
" " ५ श.	फर. ४	उ. भा.	लग्नाभाव
" " ६ र.	" ५	रेव.	" "
" " ९ गु.	" ९	मृग	वैधृति

तिथि-वार	तारीख १९९४-९५ ई.	विवाह-नक्षत्र	दोष
माघ शु. ११ श.	फर. ११	मृग	भद्रा, नक्षत्रान्त, मासान्त
फाल्गु. कृ. १ गु.	" १६	मघा	लग्नाभाव
" " ३ श.	" १८	उ. फा.	भद्रा
" " ४ र.	" १९	चित्रा	भुजंगपात
" " ५ चं.	" २०	"	" "
" " ५ चं.	" २०	स्वा.	राहयुति, सूर्य-शनिवेध
" " ६ मं.	" २१	"	" " " " "
" " ७ बु.	" २२	अनु.	केतुवेध
" " ९ गु.	" २३	मूल	लग्नाभाव
" " ११ श.	" २५	उ. षा.	व्यतीपात, शुक्रयुति
" " १२ र.	" २६	"	शुक्रयुति
फाल्गु. शु. २ शु.	मार्च ३	रेव.	क्रान्ति साम्य, मृत्युबाण
" " ३ श.	" ४	"	मृत्युबाण
होलाष्टक (९ से १७ मार्च '९५ तक)			
मीनस्थसूर्य (१४ मार्च '९५ के बाद)			

ध्यान रहे—भद्रा, व्यतीपात, वैधृति, क्षीणचन्द्र, आदि दोषों से रहित विवाहनक्षत्र के शुद्ध काल में जहां षष्ठ, अष्टम, सप्तम में स्थित निषिद्ध ग्रहस्थिति के कारण विवाहलग्न नहीं बनता वहां "लग्नाभाव" दोष लिखा गया है।

मुण्डन आदि के मुहूर्त्त (सं. २०५१ वि.) (सर्वत्र भा. स्टै. टा. दिया गया है)

मुण्डन मुहूर्त्त

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्ध काल
		१९९४ ई.		
वैशा. कृ. ९ बु.	वैशा.२२	मई ४	शत	९/६ बाद
ज्ये. कृ. १ गु	ज्ये. १३	मई २६	ज्ये.	५/४८ से १६/२४ तक

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्ध काल
		१९९५ ई.		
माघ कृ. ११ शु.	माघ १४	जन. २७	ज्ये.	
माघ शु. २ बु.	माघ १९	फर १	घनि.	
" " ३ गु.	" २०	" २	शत.	९/५१ से १२/५० तक

अक्षरारंभ

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्ध काल
		१९९४ ई.		
वैशा. शु. ५ चं.	ज्ये. ३	मई १६	पुन.	९/५८ तक
ज्ये. कृ. ६ चं.	" १७	" ३०	श्रव.	१२/२३ तक
ज्ये. शु. १२ चं.	आषा. ६	जून २०	स्वा.	९/२२ तक

उपनयन मुहूर्त्त

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्ध काल
		१९९४ ई.		
वैशा. शु. २ गु.	वैशा. ३०	मई १२	रोहि.	
" " ५ चं.	ज्ये. ३	" १६	पुन.	९/५८ तक
" " ५ चं.	" ३	" १६	पुष्य	११/१० बाद
" " १२ र.	" ९	" २२	चित्रा	६/३५ से ११/१४ तक
ज्ये. कृ. ५ र.	" १६	" २९	उ. षा.	
ज्ये. शु. १० र.	आषा. ५	जून १९	चित्रा	६/२२ तक
		१९९५ ई		
माघ शु. ६ र.	माघ २३	फर. ५	रेव.	
फाल्गु. कृ. ५ चं.	फाल्गु ९	" २०	चित्रा	९/२ बाद
फाल्गु. शु. २शु.	" २०	मार्च ३	उ. भा.	

विद्यारम्भ मुहूर्त्त

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्ध काल
		१९९४ ई.		
चैत्र शु. ६ र.	वैशा. ५	अप्रै. १७	आर्द्रा	
वैशा. शु. १० शु.	ज्ये. ७	मई २०	पू. फा.	९/१२ तक
" " १२ र.	" ९	" २२	चित्रा	६/३५ से ११/१४ तक
ज्ये. कृ. ३ शु.	" १४	" २७	मूल	१३/३० तक
" " १२ र.	" २३	जून ५	अश्वि.	
ज्ये शु. ३ र.	" ३०	" १२	पुन.	
" " १० र.	आषा. ५	" १९	चित्रा	६/२२ से ११/२४ तक
		१९९५ ई.		
माघ कृ. ६ र.	माघ ९	जन. २२	हस्त	
" " १३ र.	" १६	" २९	पू. षा.	९/१८ तक
माघ शु. ३ गु.	" २०	फर. २	शत.	९/५१ से १२/५० तक

द्विरागमन मुहूर्त्त

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्ध काल
		१९९४ ई.		
चैत्र शु. ७ चं.	वैशा ६	अप्रै. १८	पुन.	
" " १५ चं.	" १३	" २५	चित्रा	१५/१० से १६/२० तक
वैशा. कृ. २ बु.	" १५	" २७	अनु.	१२/१५ बाद
" " ७ चं.	" २०	मई २	श्रव.	८/४ तक

द्विरागमन मुहूर्त्त

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्ध काल
		१९९४ ई.		
वैशा. शु. २ गु.	वैशा. ३०	मई १२	रोहि.	
मार्ग. शु. ५ बु.	मार्ग २२	दिसं. ७	श्रव.	११/९ तक, १४/४५ से १७/४१ तक
" " ७ शु.	" २४	" ९	शत	१४/१९ तक
" " १० चं.	" २७	" १२	रेव.	
		१९९५ ई.		
फाल्गु कृ. ५चं.	फाल्गु. ९	फर. २०	स्वा.	१०/१४ से ११/२१ तक
" " १० शु.	" १३	" २४	मूल.	१४/२८ तक
" " १३ चं.	" १६	" २७	श्रव.	१०/५९ तक
फाल्गु. शु. २शु.	" २०	मार्च ३	उ. भा.	

गृहारम्भ मुहूर्त्त

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्ध काल
		१९९४ ई.		
वैशा. कृ. २ बु.	वैशा. १५	अप्रै. २७	अनु.	१२/१५ बाद
वैशा. शु. २ गु.	" ३०	मई १२	रोहि.	
" " ११ श.	ज्ये. ८	" २१	उ. फा.	७/३१ तक
" " ११ श.	" ८	" २१	हस्त	८/४३ से १२/१९ तक
श्राव कृ. १ श.	श्राव. ८	जुला. २३	उ. षा.	७/३३ तक
" " १ श.	" ८	" २३	श्रव.	८/४५ बाद
मार्ग शु. १० चं.	मार्ग. २७	दिसं. १२	रेव.	
		१९९५ ई.		
माघ कृ. ५ श.	माघ ८	जन. २१	उ. फा.	
माघ शु. ९ गु.	" २७	फर. ९	रोहि.	१०/२७ बाद

नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त्त

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्ध काल
		१९९४ ई.		
वैशा. कृ. ९ बु.	वैशा. २२	मई ४	शत.	९/६ बाद
		१९९५ ई.		
माघ शु. ७ चं.	माघ २४	फर. ६	अश्वि.	१८/४२ तक
" " १३ चं.	फाल्गु. २	" १३	पुन.	१०/२४ तक
फा. कृ. १० श.	फाल्गु. १३	फर. २४	मूल	१४/२८ तक
" " १३ चं.	" १६	" २७	श्रव.	१०/५९ तक

विपणि (दुकान खोलने) का मुहूर्त्त

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्ध काल
		१९९४ ई.		
चैत्र शु. ५ श.	वैशा. ४	अप्रै. १६	मृग	
" " १३ र.	" १२	" २४	हस्त	८/४६ तक
वैशा. कृ. १३र.	" २६	मई ८	रेव.	१६/३१ तक
वैशा. शु. २ गु.	" ३०	" १२	रोहि.	
" " १२ र.	ज्ये. ९	" २२	चित्रा	६/३५ से ११/१४ तक
ज्ये. कृ. ५ र.	" १६	" २९	उ. षा.	१२/२० तक
" " १० शु.	" २१	जून ३	उ. भा.	१३/८ तक
" " १२ र.	" २३	" ५	अश्वि.	
ज्ये. शु. १० र.	आषा. ५	" १९	चित्रा	६/२२ से ११/२४ तक
आषा. कृ. २ श.	" ११	" २५	उ. षा.	१७/३७ तक
" " १३ बु.	" २२	जुला. ६	रोहि.	१७/३३ तक
आषा. शु. २ र.	" २६	" १०	पुष्य	
" " ६ गु.	" ३०	" १४	उ. फा.	
" " १० चं.	श्राव. ३	" १८	अनु.	१५/५१ बाद
श्राव. कृ. ५ बु.	" १२	" २७	उ. भा.	१०/२७ बाद
" " ७ शु.	" १४	" २९	रेव.	१३/५९ तक
" " ११ बु.	" १९	अग. ३	मृग	१३/५३ बाद
श्राव. शु. ३ बु.	" २६	" १०	उ. फा.	९/१४ तक
" " ४ गु.	" २७	" ११	हस्त	७/६ बाद
" " १३शु.	भाद्र ४	" १९	उ. षा.	१५/३५ तक
भाद्र कृ. ४ गु.	" १०	" २५	रेव.	१५/४० बाद
" " ५ शु.	" ११	" २६	अश्वि.	१७/५२ तक
" " १० बु.	" १६	" ३१	मृग.	१२/१३ तक
" " १३ श.	" १९	सितं. ३	पुष्य	१०/२ तक
भाद्र शु. ३ गु.	" २४	" ८	हस्त	७/३१ तक
" " ३ गु.	" २४	" ८	चित्रा	८/४३ से १६/०० तक
आश्वि. शु. ५र.	अश्वि.२४	अक्तू. ९	अनु.	७/१७ तक
मार्ग. शु. १० चं.	मार्ग २७	दिसं. १२	रेव.	
		१९९५ ई.		
माघ कृ. ५ श.	माघ ८	जन २१	उ. फा.	
" " ७ चं.	" १०	" २३	चित्रा	१२/०० बाद
माघ शु. ५ श.	" २२	फर. ४	उ. भा.	१४/१९ तक

विपणि (दुकान खोलने का मुहूर्त्त)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्ध काल
		१९९५ ई.		
माघ शु. ५ श.	माघ २२	फर. ४	रेव.	१५/३१ बाद
" " ७ चं.	" २४	" ६	अश्वि.	१८/४२ तक
फाल्गु. कृ. २शु.	फाल्गु. ६	" १७	उ. फा.	१२/४८ बाद
" " ५ चं.	" ९	" २०	चित्रा	९/२ तक
" " १२ र.	" १५	" २६	उ. षा.	१३/३८ बाद
फाल्गु. शु. २शु.	" २०	मार्च ३	उ. षा.	
" " ३ श.	" २१	" ४	रेव.	

सात्त्विक देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त

		१९९४ ई.		
चैत्र शु. ७ चं.	वैशा. ६	अप्रै. १८	पुन.	
वैशा. कृ. ६ र.	" १९	मई १	उ. षा.	८/४० तक
" " ९ बु.	" २२	" ४	शत.	९/६ बाद
" " १३ र.	" २६	" ८	रेव.	
वैशा. शु. २ गु.	" ३०	" १२	रोहि.	
" " ५ चं.	ज्ये. ३	" १६	पुन.	९/५८ तक
" " १० शु.	" ७	" २०	उ. फा.	१०/२४ बाद
" " १२ र.	" ९	" २२	चित्रा	६/३५ बाद
ज्ये. कृ. ५ र.	" १६	" २९	उ. षा.	
" " ८ बु.	" १९	जून १	शत.	
" " १० शु.	" २१	" ३	उ. भा.	
" " १२ र.	" २३	" ५	अश्वि.	
ज्ये. शु. ३ र.	" ३०	" १२	पुन.	
" " १० र.	आषा. ५	" १९	चित्रा	६/२२ से ११/२४ तक
		१९९५ ई.		
माघ कृ. ६ र.	माघ ९	जन. २२	हस्त	
माघ शु. २ बु.	" १९	फर. १	धनि	
" " ६ र.	" २३	" ५	रेव.	
" " ७ चं.	" २४	" ६	अश्वि.	

सात्त्विकदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्ध काल
		१९९५ ई.		
माघ शु. १३ चं.	फाल्गु २	फर. १३	पुन.	१०/२४ तक
फाल्गु. कृ. ५चं.	" ९	" २०	चित्रा	९/२ तक
" " १३ चं.	" १६	" २७	श्रव.	१०/५९ तक
फाल्गु. शु. २शु.	" २०	मार्च ३	उ. भा.	

तामसदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (१९९४ ई.)

आषा. कृ. ७ गु.	आषा. १६	जून ३०	उ. भा.	
" " ८ शु.	" १७	जुला. १	रेव.	
" " १३ बु.	" २२	" ६	रोहि.	
आषा. शु. २ र.	" २६	" १०	पुष्य	
" " ६ गु.	" ३०	" १४	उ. फा.	
मार्ग शु. ५ बु.	मार्ग २२	दिसं. ७	श्रव.	
" " ६ गु.	" २३	" ८	धनि.	
" " १० चं.	" २७	" १२	रेव.	

श्री गणेश प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (१९९५ ई.)

माघ कृ. ४ शु.	माघ ७	जन. २०	पू. फा.	संकष्ट चतुर्थी

श्री विष्णु, राम, कृष्ण प्रतिष्ठा मुहूर्त्त

		१९९४ ई.		
चैत्र शु. १२ श	वैशा ११	अप्रै. २३	उ. फा.	
वैशा. कृ. १२ श	" २५	मई ७	उ. भा.	
वैशा शु. १२ र.	ज्ये. ९	" २२	चित्रा	११/१४ तक
ज्ये. कृ. १२ र.	" २३	जून ५	अश्वि.	
ज्ये शु. १२ चं.	आषा. ६	" २२	स्वा.	९/२२ तक
आषा. कृ. १२मं.	" २१	जुला. ५	कृत्ति.	
		१९९५ ई.		
माघ कृ. ११ श.	माघ १९	जन. २८	मूल	

श्री दुर्गा प्रतिष्ठा मुहूर्त्त

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्ध काल
		१९९४ ई.		
वैशा. कृ. ४ शु.	वैशा. १७	अप्रै. २९	मूल	७/७ बाद
ज्ये. कृ. ३ शु.	ज्ये. १४	मई २७	"	
ज्ये. शु. ९ श.	आषा. ४	जून १८	हस्त	१०/२२ तक
" " १५ गु.	आषा. ९	जून २३	मूल	६/३० बाद
आषा. शु. ९ र.	श्राव. २	जुला. १७	स्वा.	
मार्ग शु. २ र.	मार्ग. १९	दिसं. ४	मूल	
		१९९५ ई.		
माघ शु. ९ गु.	माघ २७	फर. ९	रोहि.	

श्री शिव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त

		१९९४ ई.		
चैत्र शु. ६ र.	वैशा . ५	अप्रै. १७	आर्द्रा	
वैशा. शु. ४ र.	ज्ये. २	मई १५	"	६/१५ से ८/३२ तक
ज्ये. कृ. १४ बु.	" २६	जून ८	रोहि.	९/१० बाद
ज्ये. शु. २ श.	" २९	" ११	आर्द्रा	
		१९९५ ई.		
फाल्गु कृ १४मं.	फाल्गु १७	फर २८	धनि	

श्री गौरी प्रतिष्ठा मुहूर्त्त

		१९९४ ई.		
चैत्र शु. ३ गु.	वैशा. २	अप्रै. १४	कृत्ति	
ज्ये. शु. ३ र.	ज्ये. ३०	जून १२	पुन.	
आषा. शु. ३ चं.	आषा. २७	जुला. ११	आश्ले.	
मार्ग. शु. ३ चं.	मार्ग. २०	दिसं. ५	पू. षा.	
		१९९५ ई.		
माघ शु. ३ गु.	माघ २०	फर. २	शत.	९/५१ बाद
फाल्गु. शु. ३श.	फाल्गु. २१	मार्च ४	रेव.	

दशावतार प्रतिष्ठा—श्रीराम, कृष्ण आदि देवताओं की मूर्त्ति-प्रतिष्ठा इन देवताओं की अपनी अपनी अवतार तिथियों के दिन भी पूर्वाह्णकाल में बिना पंचांग-शुद्धि के भी की जा सकती है। इनके अवतार की तिथि यदि गुरु-शुक्रास्तकाल में पड़े तब तो इनकी मूर्त्ति-प्रतिष्ठा नहीं करनी चाहिए।

सर्वार्थ सिद्धि योग (सं. २०५१ वि.) (भा. स्टै. टा. दिया गया है)

प्रारंभ		समाप्त	
१९९४ ई.	घं. मि.	१९९४ ई.	घं. मि.
(१२ अप्रै.	सू. उ.	१२ अप्रै.	१४/४८) मं
१९ "	४/५७	१९ अप्रै.	सू. उ.
२२ "	सू. उ.	२३ "	१/४१
(२४ "	सू. उ.	२४ "	२०/३१) र.
(२७ "	११/४३	२८ "	सू. उ.) बु.
१ मई	सू. उ.	२ मई	४/५९
२ "	" "	३ "	५/४४
८ "	१७/४३.	९ "	सू. उ.
१० "	२३/५७	११ "	" "
११ "	सू. उ.	१२ "	" "
१६ "	११/१०	१७ "	" "
१७ "	११/५२	१८ "	" "
२० "	सू. उ.	२० "	१०/२४
(२२ "	" "	२२ "	६/३५) र.
२९ "	" "	२९ "	१३/३२
३० "	" "	३० "	१३/३५
५ जून	" "	६ जून	३/१५
७ "	६/२०	८ "	सू. उ.
८ "	सू. उ.	९ "	" "
१२ "	१६/३७	१३ "	" "
१३ "	सू. उ.	१३ "	१७/२२
१४ "	" "	१४ "	१७/३८
(२२ "	" "	२२ "	६/६/) बु.
२५ "	२३/१५	२६ "	सू. उ.
१ जुला.	४/२४	१ जुला.	" "
(१ "	सू. उ.	२ "	सू. उ.) शु.
३ "	" "	३ "	१०/२४
५ "	" "	५	१६/१९
६ "	" "	७ "	सू. उ
८ "	२२/५	९ "	" "
१६ "	१८/५२	१७ "	" "
१८ "	१५/५१	१९ "	" "
२३ "	८/४५	२४ "	" "
२८ "	१२/३३	२९ "	" "
(२९ "	सू. उ.	२९ "	१५/११) शु.

प्रारंभ		समाप्त	
१९९४ ई	घं. मि.	१९९४ ई.	घं. मि.
२ अग	०//१४	२ अग.	सू. उ.
३ "	सू. उ.	४ "	४/४४
५ "	६/७	६ "	सू. उ.
११ "	३/४	११ "	" "
१५ "	सू. उ.	१५ "	२०/१६
१९ "	१६/४७	२० "	सू. उ.
२० "	सू. उ.	२० "	१६/३५
२३ "	१८/५४	२४ "	सू. उ.
२५ "	सू. उ.	२६ "	" "
२६ "	" "	२७ "	२/९
३१ "	" "	३१ "	१३/२५
१ सितं.	१५/२	२ सितं.	सू. उ.
२ "	सू. उ.	२ "	१५/५३
७ "	१०/४४	८ "	सू. उ.
१६ "	सू. उ.	१६ "	२३/१६
२०. "	" "	२१ "	४/२६
२२ "	" "	२२ "	६/५२
२३ "	" "	२३ "	९/४१
२६ "	" "	२६ "	१८/५८
(३० "	१/५	३० "	सू. उ.) गु.
२० अक्तू.	सू. उ.	२० अक्तू.	१६ । २९
(२२ "	२२/४२	२३ "	सू. उ.)श.
(२४ "	सू. उ.	२५ "	४/४२)चं.
२७ "	" "	२७ "	९/६
(२७ "	९/६	२८ "	सू. उ.) गु.
६ नवं	१५/२४	७ नवं.	सू. उ.
१३ "	१४/३६	१४ "	" "
(१५ "	१९/४३	१६ "	सू. उ.)मं.
(१९ "	सू. उ.	२० "	" ")श.
(२१ "	" "	२१ "	१०/४८) चं.
(२४ "	" "	२४ "	१७/९)गु.
२७	१८/२१	२८ "	सू. उ.
४ दिसं.	सू. उ.	४ दिसं.	२३/४१
११ "	[illegible]	[illegible]	[illegible]
(१३ "	" "	१४ "	४/५६)मं

प्रारंभ		समाप्त	
१९९५.९५	घं. मि.	१९९४.९५	घं. मि.
(१७ दिसं.	सू. उ.	१७ दिसं.	१४/१०) श.
२४ "	०/४२	२४ "	सू. उ.
२५ "	सू. उ.	२६ "	०/४१
२९ "	१८/३७	३० "	सू. उ.
१ जन.	सू. उ.	१ जन.	१०/५६
३ "	६/२८	३ "	सू. उ.
(१० "	सू. उ.	१० "	११/५४)मं.
११ "	१५/२	१२ "	सू. उ
१७ "	३/३९	१७ "	" "
१८ "	४/५५	१८ "	" "
२० "	सू. उ.	२१ "	६/२१
(२२ "	सू. उ.	२३ "	५/४०/)र.
(२६"	२/१८	२६ "	सू. उ.) बु.
२६ "	सू. उ.	२७ "	०/३७
२९ "	१८/४४	३० "	सू. उ.
३० "	१६/५५	३१ "	" "
५ फर.	१७/२४	६ फर.	" "
७ "	२२/५१	८ "	" "
८ "	सू. उ.	९ "	" "
१३ "	११/३६	१४ "	" "
(१४ "	१२/३९	१५ "	" ")मं.
(१७ "	सू. उ.	१७ "	१२/४८
(१९ "	सू. उ.	१९ "	११/१६)र.
(२३ "	५/३४	२३ "	६/३२)बु.
२६ "	सू. उ.	२७ "	१/१६
२७ "	सू. उ.	२८ "	०/१६
(४ मार्च	०/३९	४ मार्च	सू. उ.)शु.
५ "	सू. उ.	६ "	१४/२६
७ "	७/८	८ "	सू. उ.
८ "	सू. उ.	९ "	" "
१२ "	२०/३०	१३ "	" "
१३ "	सू. उ.	१३ "	२१/४३
१४ "	" "	१४ "	२२/१५
(२२ "	" "	२२ "	१२/१)बु
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]/१९
२७ मार्च	सू. उ.	२७ मार्च	६/४९

रवियोग

प्रारंभ		समाप्त	
१९९४	घं. मि.	१९९४	घं. मि.
१४ अप्रै.	२०/५८	१५ अप्रै.	२३/४५
१७ "	२/६	१८ "	३/५२
२० "	५/१६	२२ "	३/३४
२३ "	२३/१७	२४ "	२०/३०
१ मई	४/५९	२ मई	४/५९
१४ "	७/५२	१५ "	९/४४
१६ "	११/१०	१७ "	११/५२
१९	११/३०	२१ "	८/४३
२३	३/५	२४ "	१/५५
३०	१३/३५	३१ "	१४/२६
१२ जून	१६/३७	१३ जून	१७/२२
१४	१७/३८	१५ "	१७/२८
१७	१५/४८	१९ "	१२/३६
२१	८/२२	२२ "	६/६
२२	७/३७	२३ "	३/५४
२९	०/१०	३० "	१/५८
११ जुला.	२३/१७	१२ जुला.	२२/५४
१३ "	२२/१३	१४ "	२१/१८
१६ "	१८/५२	१८ "	१५/५१
२१ "	११/३	२२ "	९/४४
२८ "	१२/३३	२९ "	१५/११
१० अग.	४/२२	११ अग.	३/४
१२ "	१/३९	१३ "	०/१४
१४ "	२१/३०	१६ "	१९/८
१७ "	३/१४	१७ "	१८/८
१९ "	१६/४७	२० "	१६/३५
२७ "	२/९	२८ "	५/१५
८ सितं.	८/४३	९ सितं.	६/४२
१० "	४/४८	११ "	३/६
१३ "	०/३१	१३ "	१७/२
१३ "	२३/४१	१५ "	२३/३
१७ "	२३/५४	१९ "	०/५७

रवियोग (भा. स्टै. टा)

प्रारंभ		समाप्त	
१९९४-९५ ई.	घं. मि.	१९९४-९५ ई.	घं. मि.
२५ सितं	१५/५६	२६ सितं.	१८/५८
७ अक्तू.	१३/२	८ अक्तू.	१०/३७
९ "	८/२९	१० "	६/४४
१० "	२१/३९	११ "	५/२८
१३ "	४/३०	१५ "	५/४१
१७ "	८/५०	१८ "	११/३
२६ "	७/११	२७ "	९/६
६ नवं.	१६/६	७ नवं	१३/२०
८ "	११/४९	९ "	१०/५०
११ "	११/२७	१३ "	१४/३६
१५ "	१९/४३	१६ "	२२/४२
५ दिसं.	२१/२७	६ सितं.	१९/४९
७ "	१८/५३	८ "	१८/४६
१० "	२०/५९	१३ "	१/५४
१६ "	११/१४	१७ "	१४/१०
२४ "	०/४२	२५ "	०/५७
४ जन.	४/५८	५ जन.	४/९
६ "	४/९	७ "	५/०
९ "	९/२	१२ "	१८/१२
१४ "	२३/४६	१६ "	१/५७
२२ "	६/१०	२३ "	५/४०
२ फर.	१४/२	३ फर.	१४/२३
४ "	१५/३१	५ "	१७/२४
९ "	१/५८	११ "	७/४४
१३ "	११/३६	१४ "	१२/३९
२१ "	९/५	२२ "	७/५१
५ मार्च	२/१४	६ मार्च	४/२६
७ "	७/८	८ "	१०/९
१० "	१६/७	१२ "	२०/३०
१४ "	२२/१५	१५ "	२२/७
२२ "	१२/१	२३ "	१०/३१

सिद्धियोग (भा. स्टै. टा)

प्रारंभ		समाप्त	
१९९४-९५ ई.	घं. मि.	१९९४-९५ ई.	घं. मि.
१३ अप्रै	१७/५६	१४ अप्रै.	सू. उ
२२ "	सू. उ	२३ "	१/४१
२ मई	" "	३ मई	५/४४
११ "	" "	१२ "	२/५२
२० "	" "	२० "	१०/२४
३० "	" "	३० "	१३/३५
८ जून	" "	८ जून	९/१०
१३ अग.	" "	१३ अग.	२२/५०
२३ "	१८/५४	२४ "	सू. उ.
१ सितं	१५/२	२ सितं.	" "
२० "	सू. उ.	२१ "	४/२६
२९ "	" "	३० "	१/५
१८ अक्तू.	" "	१८ अक्तू.	११/३
२५ "	" "	२७ "	९/६
६ नवं.	१५/२४	७ नवं.	सू. उ
४ दिसं.	सू. उ.	४ दिसं.	२३/४१
२४ "	०/४२	२४ "	सू. उ.
१ जन	सू. उ०	१ जन.	१०/५६
३ "	६/२८	३ "	सू. उ
११ "	१५/२	१२ "	" "
२० "	सू. उ.	२१ "	६/२१
३० "	१६/५५	३१ "	सू. उ
८ फर.	सू. उ.	९ फर.	१/५८
१७ "	" "	१७ "	१२/४८
२७ "	" "	२८ "	०/१६
८ मार्च	" "	८ मार्च	१०/९
२७ "	" "	२७ "	६/४९

त्रिपुष्कर योग (भा. स्टै. टा.)

१७ अप्रै.	३/५२	१८ अप्रै	सू. उ.
२३ "	सू. उ.	२३ "	१२/९
२६ "	२१/३०	२७ "	सू. उ.
१ मई	८/४०	२ मई	४/५९
२५ जून	सू. उ.	२५ जून	१२/२१

त्रिपुष्कर योग (भा. स्टै. टा)

प्रारंभ		समाप्त	
१९९४-९५ ई.	घं. मि.	१९९४-९५ ई.	घं. मि.
५ जुला.	सू. उ	५ जुला	१६/१९
२८ अग.	" "	२८ अग.	२२/५८
६ सितं.	२१/३३	७ सितं	सू. उ.
१६ अक्तू.	७/२	१६ अक्तू.	१२/३६
९ नवं	१/७	९ नवं.	सू. उ.
२० दिसं	सू. उ.	२० दिसं.	११/२७
२५ दिसं.	" "	२५ "	१३/८
१२ फर	९/५७	१२ फर.	१६/४१
२१ "	९/५७	२२ "	सू. उ.
२६ "	सू. उ.	२६ "	२१/२७
७ मार्च	२३/४९	८ मार्च	सू. उ.

द्विपुष्कर योग (भा. स्टै. टा.)

१९९४ ९५ ई.

२२ मई	६/३५	२२ मई	१९/४४
३१ "	सू. उ	३१ "	१४/२६
२४ जुला.	८/१४	२४ जुला.	२३/२७
२७ सितं.	सू. उ.	२७ सितं	१७/०
२० नवं.	७/५७	२० नवं.	१७/४०
२९ "	१९/२	३० "	सू. उ.
२३ जन.	५/४०	२३ जन.	" "
१ फर.	२/२१	१ फर.	" "
१८ मार्च	१८/५०	१९ मार्च	२/४०
२८ "	सू. उ.	२८ "	६/३९

अमृतसिद्धि योग (भा. स्टै. टा.)

१९९४ ई.

(१२ अप्रै.	सू. उ.	१२ अप्रै.	१४/४८)मं.
(२४ "	" "	२४ "	२०/३०) र.
(२७ "	११/४३	२८ "	सू. उ.) बु.
(२२ मई	सू. उ.	२२ मई	६/३५) र.
२२ जून	" "	२२ जून	६/६) बु.
(१जुला.	" "	२ जुला.	सू. उ.) शु.
(२९ "	" "	२९ "	१५/११)शु.

अमृतसिद्धि योग (भा. स्टै. टा)

प्रारंभ		समाप्त	
१९९४-९५ ई.	घं. मि.	१९९४-९५ ई.	घं. मि.
(३० सितं	१/५	३० सितं.	सू. उ.) गु.
(२२ अक्तू.	२२/४२	२३ अक्तू.	सू. उ.) श
(२४ "	सू. उ.	२५ "	४/४२)चं.
(२७ "	९/६	२८ "	सू. उ.) गु
(१५ नवं.	१९/४३	१६ नवं.	" ")मं.
(१९ "	सू. उ.	२० "	" ")श.
(२१ "	" "	२१ "	१०/४८) चं.
(२४ "	" "	२४ "	१७/९) गु.
(१३ दिसं	" "	१४ दिसं	४/५६) मं.
(१७ "	" "	१७ "	१४/१०) श.
(१० जन.	" "	१० जन.	११/५४) म.
(२२ "	" "	२३ "	५/४०) र.
(२६ "	२/१८	२६ "	सू. उ.) बु.
(१४ फर.	१२/३९	१५ फर.	" ") मं.
(१९ "	सू. उ.	१९ "	११/१६) र.
(२३ "	५/३४	२३ "	६/३२) बु.
(४ मार्च	०/३९	४ मार्च	सू. उ.) शु.
(२२ "	सू. उ.	२२ "	१२/१) बु.

गुरुपुष्यामृत योग (भा. स्टै. टा.)

१९९४ ई.

३० सितं	१/५	३० सितं.	सू. उ.
२७ अक्तू.	९/६	२८ अक्तू.	" "
२४ नवं.	सू. उ.	२४ नवं.	१७/९

ध्यान रहे–इन उपरोक्त योगों का प्रयोग उसी समय करना चाहिए, जबकि किए जाने वाले कार्य के लिए समय बहुत थोड़ा बचा हो। उदाहरणार्थ–यदि किसी पद या परीक्षा आदि के लिए प्रार्थना पत्र भरने की अन्तिम तिथि समीप ही आ पहुंची हो तो इन योगों में प्रार्थना पत्र भरकर भेजा जा सकता है। ऐसी स्थिति में श्राद्धपक्ष, मलमास, गुरुशुक्रास्त आदि का विचार भी नहीं करना चाहिए।